

दिगम्बर जैन

THE DIGAMBAR JAIN

नाना कलाभिविविधश्च तत्त्वः सत्योपदेशैस्तुगवेषणाम् ॥

संक्षेपमप्यभिदे प्रवर्तताम्, दिगम्बर जैन समाज-गीतम् ॥

प्रीत संवत् २४४६ वैशाख, विक्रम सं० १९७६

अंक

“नमः कर्ण”

नाथ दयालय । धन्य धन्य है करुणा तेरी,
प्रेम, हृदय, ज्ञानेन्द्र-जुन्य है करुणा तेरी ।
तेरी करुणा कीर ज्योति, रवि, शशि, तारामें,
बन उपवनमें फैल रही है वह सरीमें ।
वही मधुर करुणा-मरी कृपा प्रभो ! हम पर रहे,
पत्र ‘दिगम्बर जैन’ जो पथपर नित दृढ़तर रहे ॥ ३ ॥

नव चत्सर भगवान् हमारा, सुखमय होवे,
पारपरिक विद्वेष भाव, मुतलमे खोवे ।
डटा रहे कर्तव्य मार्ग पर अविचल होकर,
गिर न पड़े यह कभी लाख भी साकर ठोकर ।
बन निर्मिक सत्य यह पथ दिखलाता ही रहे,
कभी सीध सुखदा सदा यह सितलाता ही रहे ॥ २ ॥

जैसा यह गत वैप, समुक्त पत्र रहा है,
जिस प्रकाश दृष्ट बने दुःख सुख समी सदा है ।
वैसा ही अमृदित अचल यह रहे सदा ही,
जो कुछ भी आपड़े दृष्टमें सदा सदा ही ।
ऐसप स्नेह समतादिका करता रहे प्रचार यह,
स्वार्थ-रहित रह कर सदा करे स्वपर उपकार यह ॥ १ ॥
जैन जाति नम जाये ज्योतिमें, ज्ञानारण्यकी,
जोक फटे छल, कपट, स्वार्थ हिरा, वृण्णकी ।

पांच वर्षकी विना न्यायकी नज

सेठीजी ।

अर्जुनलालजी वंदीसे पं लेश भी बलेश नहीं हो,
६० तीन चार ही वीरों तक असत्यावेश नहीं हो ।
मुक्त हुए हैं और हुए हैं स्वयं इसको शुभ सन्देश दे,
अजमेरमें निवास कर रहे हैं और आप से प्रेम-दान प्रेमेश दे

॥ ४ ॥

आंदोलनमें योग देने लगे हैं वर्ष हर्ष उत्कर्ष पूर्ण हो,
और विना कारण बताये १०००) का पृष्ठका हृदय चूर्ण हो ।

मांगने लगी उपको अस्वीकार उसे यह करे सुसेवा,
आपने जयपुर रहना छोड़ दिया आलता-फटका मेवा ।
स्वास्थ्य अब ठीक है और सार्व यदि सुधा-सिञ्चित रहे ।

॥ ५ ॥

कि साथ २ आपको जैनसमान ग्रंथोंका निश्चित रहे
य भी करना चाहिये । आप बडे ज्येष्ठ सुदी ही मिलेगा ?
हैं और आपकी निःस्वार्थ सेवाका भंडार खोल में मिलेगा ?

लं पाठकोंके हृदयमें अहर्निश रहे इसीलिये जिनको गते मिलेगा ?
आपका चित्र जो इस अंकके साथ ७ माहका यदि ग्रन्थोंकी में मिलेगा ?
जैन तिथि दर्पण भेजा गया है उसमें प्रकट कर लीजिये और फलें फलें,
दिया है । आगामी कार्तिक मासमें वीर सं० शास्त्रोंको विचार
२४४७ का तिथि दर्पण प्रकट होगा ही इसी- कस्तुरी ।
लिये दिवाली तकका ही प्रकट किया है जिससे स्कंध विषय-
नवीन वर्ष फिर कार्तिकसे ही प्रारंभ होसके । नोंको एक-
जो २ शास्त्रोंको अपने मंदिरमें न हो वे नंदसे

॥ ६ ॥

आगामी ज्येष्ठ सुदी ५ को हमारा महान

पर्व " श्री श्रुतपंच-

श्रुतपंचमी । श्री पर्व " आता है ।

कोई १५ वर्ष हुए जैन-

समान सेदक बाल ब्रह्मचारी पं० पन्नालालजी
बाकलीवालने इस पर्वको माननेकी चर्चा प्रारंभ
की थी तबसे इस पर्वको माननेकी परिपाटी
पुनः चालू हुई है । श्रुतस्कंध विधान (शास्त्र-
पूजा) करनेका यह वार्षिक पर्व है । इसी निमि-

प्रबंध उत्तीर्ण कीजिये । शामको या
एक सभा में दोषों करके सब भाई और वा
श्रुतपंचमी और हमारे कर्तव्यपर व्या
करके सब ध्यान पाचीन ग्रन्थ जीर्णो
तरफ खोज चाहिये । अब बहुतसे ग्रन्थ
लुके हैं इन्हे छपे हुए ग्रन्थकी एक
हर एक में होनी चाहिये क्योंकि छपे
ग्रन्थको भी पढ़ लेते हैं और आज
मुनि के अभावमें न्यायाय करनेसे
हम जो बहुत कुछ परिचय पा सकेंगे ।

મારે સ્વર્ગીય દાનવીર જૈનકુલમુષ્ણ સેઠ
માણિકચંદજીકે સ્મરણમે
માણિકચંદ ગ્રન્થ-વર્ણનમે એક 'માણિકચંદ
માલા' ગ્રન્થમાલા' નામક સંસ્કૃત
ગ્રન્થમાલા ચાર પાંચ વર્ષમે
સ્થાપિત કરી ગઈ છે જેસકી ઓરસે આનંદક
૧૪ ગ્રન્થ પ્રકટ થો ચુકે છે ઓર લગતકે
મૂલ્ય પર સ્વકો દિયે જાતે છે । ઇસને ફંડકી
કમી હોનેસે ગત વર્ષમે શ્રીમાન્ બ્ર૦ શીતલપ્ર
સાદનીને વહુત કુલ પરિશ્રમ કરકે ઇસમે
૧૦૦૦૦) ઓર ભરવા દિયે છે જેસમે અ
સકા કાર્ય લગાતાર ચાલુ રહેવા । હરબ્રહ્મ
મંદિરમે ઇસ ગ્રન્થમાલાકે ગ્રન્થ સંગ્રહ કરગે
ચાહિયે તથા સંસ્કૃતકે વિદ્યાર્થીયોકો નંગાકર
બાંઠને ચાહિયે । વર્ણનમે ઓર હમારે પુસ્તકાલયસે
મી રમ ગ્રન્થમાલાકે મગી ગ્રન્થ મિલ સકને છે ।

યોડા લામ મળે તો તેથી સતોપ માનગેજ એમ
આશા છે હવે પછીના બધા અડા દર મહિને
નિર્ધારિત બદાગ પાડવામા આવશેજ દિવાળી
સુધી લવાગમ માગ ચાલુ આના દરેક આહરે
માનગોઈથી મોહલી આવવા નહિ તો આવતો
અક પદર આતાની વી. પી. થી મોહવામા
આશે

x x x
આપણી ગુણાત દિગંધર જૈન પ્રતિષ્ઠા
૨૫ (સમા) ની વાર્ષિક એક
પાચાગડના મન માલ માસમા મિલશેજ શ્રી
કંચોલા પાચાગડમા એક તરુત સખાગમ
દોસી મોવાપુર નિવાસીના પ્રમુખ-
પર મગી હતી જે સમયે વિગેષ આદોલનના
અભામે તથા 'દિગંધર જૈન' બધ હોવાથી જો કે
વિગેષ સખાગની હાગરી નહોતી તોપણ તેમા
પસાર થયેલા પછી કંચોલા અતિ મહત્વના હોવાથી
તેનો કુલ માર નીચે આપણે છીએ-

(૧) આવતા શિષ્યાગામા નામદાર પ્રિન્સ
ગોધ પેરસ હિંદુસ્તાન આનંદાર છે ત્યારે તેમને
દિગંધર જૈનો તરફથી માનવન આપણુ આ
ગામત આપણી મહામગાએ અતારથીજ પ્રવાસ
કરો જોઈએ અને મોથામમા આપણા તરુતના
માનવપતો મમય નક્કી કરી લેવો જોઈએ. (૨)
બધ બધા ન હોય ત્યાં દરેક મળે જૈન પાંચાગા
અને કન્યા પાંચાગા સ્થાપરી જોઈએ ગુરુત્તરમા
આગળીના વેદા પર પણ ગણાય એટલી પાંચાગાઓ
નથી રહે નહોતે તો ચાલુ પાંચાગાઓ પાંચ
પડી છે તો બધ થયેલી પાંચાગાઓ ચાલુ કરી
જોઈએ નથા ન હોય ત્યાં સ્થાપરી જોઈએ. ઉપ-
રના અમારે જ્ઞાન મેળવનારો ઉત્તમ પાંચ
પાંચાગા છે મારે એ તરુત ગુરુગતના બાલગોતુ
અને લામ જે આજે છીએ (૩) ગુરુગતમા ગુરુગતની
બાસા બાલુનાર એક પણ પડિનાર નથી નથી
ગુરુગતની પડિનાર ઉત્તમ કરના મારે ગુરુગતમા
એક મંચુર દિવાળય પુલવાની અલગ તરુત છે
જે પાંચાગડ કે અમલવાર જેવે સ્થળે સ્થપાન તો
મળે લામ જ્ઞાન (૪) સગાઈ દિવાળય જૈન



धर्मशाश बनानेके लिये दिगम्बर जैन सज्जनसे अपील करते हैं ।

देहलीकी—जैन एंग्लो संस्कृत हाईस्कूलको करीब एक लाख रुपये स्व० सोहनलालजीकी ओरसे दिये गये और स्कूलका नाम अब हीरालाल जैन एं० सं० हाईस्कूल पड़ा है । लाल जग्गीमलजीका प्रयास अतीव पशंसनीय है ।

खंडेलवाल—दि० जैन महासभाकी स्थापना हो चुकी है और प्रारम्भिक अधिवेशन इन्दौर या बम्बईमें होनेकी कोशिश हो रही है । महामंत्री पं० घनालालजी चंदावाडी गिरगाम बम्बई है ।

गोपाल विद्यालय—स्वर्गीय पं० गोपालदासजी बरैया द्वारा स्थापित मुरनाके जैन सिद्धांत विद्यालयको एक लाख रु० का स्थायी फंड हो गया और अब विद्यालयके साथ पंडितजीका नाम जोड़ा गया है ।

अकलतरा—और जबलपुरके मेलेमें परवार महासभाकी बैठक हुई थी जिसमें औद्योगिक विद्यालय खोलनेके लिये १०००) का चंदा हुआ था ।

सागवाड़ा—(डुंगरपुर) में विद्यालय और बोर्डिंगकी स्थापना हो गई है ।

महासभा—मगसर मासमें अजमेरमें भारत दि० जैन महासभाका अधिवेशन रा० व० शेठ टीकमचंदजी सोनीके समायोजितमें सफलतासे हुआ था । सभापतिजीने १९०१) सभाको दिये थे तथा राजपूताना दि० जैन प्रांतिक सभा स्थापित हुई थी ।

फीरोजपुर—में एनीमलस फ्रेंड सोसकृत स्थापित हुई है जिसका उद्देश प्राणियों हो । मैत्रीभाव और सुवर्तत्व बढ़ानेका है । सबका इसका सभासद बनना चाहिये । मंत्री भगतलामजी फीरोजपुर हैं ।

आसाममें धर्म प्रभावना—खास आमंत्रण होनेसे श्रीमान व० शीतलप्रसादजी और पं० कस्तूरचन्दजी गत मासमें आसाम प्रांतमें करीब एक माह तक स्थान२ पर घूमे थे और हरएक स्थानपर आम सभाएं करके उसमें अंग्रेजी तथा हिन्दी भाषामें जैन धर्मके सिद्धांत पर व्याख्यान दिये थे जिसमें बड़े २ ओफिसर तथा अनेक प्रतिष्ठित अज्ञेयोंने हजारोंकी संख्यामें योग दिया था । प्रथम डिब्रुगढ़की सभामें जाति-सुधारके प्रस्ताव पास हुए थे तथा आसाम दि० जैन प्रा० सभा स्थापित हुई थी । ब्रह्मचारीजीके प्रयाससे दानकी वर्षा भी इस प्रान्तमें अच्छी हुई है यानि करीब ४०००) काशी, हस्तिनापुरकी संस्था, मालवा समाना औपचाल्य और महासभा इन चार संस्थाओंको पलासवाड़ी, डिल्ली, मनीपुर, कोहीमा और डिब्रुगढ़से मिले थे तथा हिलीमें चेत्यालयके लिये १७०१), कोहीमामें चेत्यालय बनानेको ४७१२), डीमापुरमें मंदिरके लिये २१९४, का चंदा हुआ था । इस भ्रमणसे आसाममें जैन धर्मकी अच्छी प्रभावना हुई है और वहाँके जैनियोंमें धर्म नागृत्तिका बीज बोया गया है ।

आपदासय—कतली निमगांवगां वैशाख शुद्ध १३ ने दिने भेदा भाषिध्यां नयलना नामयी जैन आपदासयनी स्थापना यच्छे नये १४०००) नी २३म श्रीमती लडगाई भाषिध्यां आपादि-

जैन समाजकी आवश्यकताएँ ।

(लेखक—श्री सत्यभक्त)

यह किसीसे छुपा नहीं है कि वर्तमान समयमें जैनसमाज घोर अनवृत्ति पूर्ण दशामें पड़ा हुआ है । सामाजिक दृष्टिसे, राजनैतिक दृष्टिसे, धार्मिक दृष्टिसे सभी प्रकार वह हीन हो गया है और दिन पर दिन गिरता जाता है । यद्यपि आज कल संसारमें युगान्तरकारी परिवर्तन हो रहे हैं, जगतकी अवस्था क्षण क्षणमें बदल रही है, पराधीन लोग स्वाधीन होनेका उद्योग कर रहे हैं, दुर्बल सत्त्व होनेकी चेष्टामें, नीचे गिरे हुये ऊपर चढ़नेका प्रयत्न कर रहे हैं, सोते हुये आँखें खोल कर सावधान हो रहे हैं; पर जहाँ तक मालूम पड़ता है जैन समाज पर इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ा, उसमें कोई खास परिवर्तन, बदलाव, उन्नतिके लिये उद्योग, सुधारकी चेष्टा देखनेमें नहीं आती ।

कारण है कि जब समस्त जगत अवन-
पतिसे छुटकारा पानेको व्याकुल है, आगे
लिये हाथ पैर मार रहा है, अपनी
शुभशक्तिको उन्नति, सुधारके लिये खर्च
करे, तब जैन जाति अपनी दशाकी
प्रकार बेखबर है, लापरवाह और
है । क्या उसे अपने भले बुरेका
नेहो, अथवा उसे अपने नाश होनेकी
हो नहीं; या उसमें ऊपर उठने सुधार कर-
की शक्ति नहीं ? क्यों इस युग परिवर्तन-

कारी कालमें भी वह इस प्रकार आँखें बंद
करके पड़ी है; नाना प्रकारकी प्राचीन थोथी,
हानिकारिणी प्रथाओंका पट्टा पकड़े हुये है,
नाशकारिणी कुरीतियों पर मोहित है ?

जहाँ तक जाना जा सकता है इस समय
अवाञ्छनीय, अनुचित, असामायिक, नाशक
व्यवस्थाका प्रचलन कारण जैनियोंमें फैला हुआ
अज्ञानान्धकार है । कोई भी समाज, जाति,
देश, राष्ट्र उस समय तक उन्नति पथपर अग्रसर
नहीं हो सकता जब तक उसमें फैला हुआ
अज्ञान दूर करके ज्ञानका प्रचार नहीं किया
जाता । ज्ञान, विद्या आदिके द्वारा ही
मनुष्य अपनी दशा, संसारकी गति, कालकी
चल, उन्नतिके उपाय, सुधारका मार्ग आदि
प्राप्तोंको जान सकता है । जब तक मनुष्यकी
आँखोंके सामने अज्ञानका पर्दा पड़ा रहता है तब
तक उससे अपने भले बुरे समझ सकनेकी आशा
करना एकदम बेकार है । अतएव जिस जाति,
समाजको अपनी उन्नति, सुधार, तरकीकी अमि-
लाषा-आकांक्षा हो उसका कर्तव्य है कि,
सबसे प्रथम अपनेमें फैले हुए अज्ञानको
दूरकर ज्ञान फैलानेका उद्योग करे । जब
ज्ञानका सूर्य प्रकाशित होगा तो स्व अपने आप
हृदयमेंसे अज्ञानान्धकार निकल भागेगा और
लोग अपनी भलाई बुराईको समझने हुये ठीक

ठीक संपार देव सकनेमें समर्थ हो सकेंगे । तैसी दीजे ।” संसारके विरुद्ध चल कर

यद्यपि संमाज, जातिमेंसे अज्ञानको दूर करके न आज तक कोई सफलता प्राप्त कर सका

उसे उन्नति पथ पर अग्रसर हो, सकने योग्य है न आगे प्राप्त कर सकना संभव है ।

इस प्रकार विचार करनेसे पता चलता है कि, इस क्रांतिकारी कालमें जैनियोंको इन पुराने

दर्रेकी नौ दिनमें ढाई कोस कर मार्ग तय करनेवाली, दूषित नियमों—प्रणालियोंसे भरी हुई

पाठशालाओं आदिके द्वारा अज्ञानको दूर करके ज्ञान फैलनेकी उम्मेद रखना बुद्धिमत्ताके विरुद्ध है।

क्या इन तोतूकी तरह बालकों इधर उधरके श्लोक रटा देनेवाली पाठशालाओंकी शिक्षासे जैन नव

युवकोंके मस्तिष्क बुद्धिका विकास हो सकता है ? क्या इनमें पढ़कर वे प्रकृत बुद्धिमान बन सकते हैं ?

क्या इन पाठशालाओंसे निकले हुये विद्यार्थी वर्तमान समयके कंटका कीर्ण-दुरुल जीवन-संग्राममें सफलता प्राप्त कर सकते हैं ?

यदि जैनियोंको वास्तवमें उन्नति सुधारकी अभिलाषा है, यदि वे अवन्ति अन्धकारके गहरे गडेमेंसे निकल कर उन्नति, ज्ञानकी चोटी

पर चढ़ना चाहते हैं; यदि उनकी इच्छा है कि संसारकी जातियोंकी दौड़में हम दूसरोंके बराबर

रहें; यदि वे चाहते हैं कि, हम कुछ समय तक संसारा में स्थित कायम रहें, तो सबसे पहली

वस्तु यह करनी आवश्यक है कि, अपने बाल-कोंको आधुनिक ढंगकी, लाभजनक, जीवन-संग्रामके योग्य बनानेवाली उत्कृष्ट शिक्षा

लिनेका उपाय करें । खेदकी बात है कि, जैनियोंका ध्यान इस ओर बिल्कुल नहीं है । नव हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, आर्यसमाजी,

धियोत्तमिस्त तथा अन्यान्य सभी छोटी बड़ी

अज्ञानको दूर करनेका मुख्य उपाय विद्याका प्रचार है । जिस जातिमें विद्याके प्रति प्रेम होता है, जिसके बच्चोंको आरम्भ ही से बुद्धि-

मान सच्चरित्र सुशील बनानेकी चेष्टा की जाती है उसमें अज्ञानका स्थिर रह सकना सम्भव नहीं । यद्यपि आजकल जैनी लोग विद्याके प्रति, कुछ प्रेम प्रगट कर रहे हैं और सैकड़ो हजारों जगह पाठशाला विद्यालय आदि भी खोले जा रहे हैं पर वास्तवमें इनसे कोई विशेष लाभदायक फल प्राप्त कर सकनेकी आशा नहीं की जा सकती । संसारमें सदा समयानुकूल बाहोंका अवलम्बन करनेसे ही सफलता प्राप्त होती है । संसारकी गतिके विरुद्ध किसी बातको प्राचीनता अथवा अन्य किसी दृष्टि महत्व दे कर ग्रहण करनेसे विटम्बनाके सिवाय और कुछ नहीं मिलता । इसीमें कचिने कहा है कि “जसी चले बपार, पीठ तव

जातिवाले अपने अपने बच्चों, युवकों की शिक्षा के लिये स्कूल, कालिग खोल रहे हैं वहाँ जैनी लोग इस ओर दृष्टिपात भी नहीं करते । ऐसी दशा में अज्ञान के दूर होने तथा उन्नति और सुधार होने की आशा किस प्रकार की जा सकती है ।

हमारे कदनेका आशय यह नहीं कि, आधुनिक स्कूल और कालिगों की शिक्षा प्रणाली सर्वथा निर्दोष, लाभदायक और उत्तम है । वरन् हम यह भली भाँति जानते हैं कि, कमसे कम भारतवर्ष के कालिग और स्कूलों में जिन प्रकार की शिक्षा दी जाती है उसमें बड़े बड़े दोष मौजूद हैं और जहाँ उसे विद्यार्थियों को कुल लाभ पहुंचता है वहाँ हानि भी कम नहीं होती । यह कौनसी जरूरी बात है कि आधुनिक स्कूल, कालिगों की बिरकुल नकल की जाय । बुद्धिमान मनुष्य सदा गुणको ग्रहण और औगुणको त्याग करते हैं । हमको भी, वर्तमान शिक्षा-प्रणाली से अच्छी अच्छी बातें लेकर तथा अन्य आवश्यक चीजों, उसमें सम्मिलित करके अपने बच्चों की शिक्षा का प्रबन्ध करना चाहिये । यदि ऐसा किया जाय तो जैन समाज के सुवर्क निस्तन्देह प्रवृत्त शिक्षा प्राप्त करके वास्तविक मनुष्य बन सकते हैं और फिर जैनियों के उत्थान में भी विशेष विट्ठ न लगेगा ।

यदि जैनी लोग इन कार्य की उपयोगिता को समझ कर इसे पूरा करना चाहें तो इसका हो सकना भी कुछ कठिन नहीं है । क्योंकि जैनियों की घनाश्रय की बात सारे देश में प्रसिद्ध है और यदि चाहें तो एक एक सेठ एक एक कालिग चला सकते हैं । पर हमारा निवेदन

है कि अब वह जमाना गया जब कि लोग प्रत्येक छोटे बड़े कार्य के लिये सेठों, बड़े लोगों के मुँह की ओर ताका करते थे । यह युग सर्व साधारण श्रमजीवियों की प्रधानता का युग है । अब धनी लोगों का पतन, अवनति और गरीबों का उत्थान, उन्नति सर्वथा निश्चित है । अतएव साधारण लोगों का कर्तव्य है कि स्वयं चन्दे द्वारा एक दो नहीं अनेकों आधुनिक ढंग के कालिग खोल कर अपने बालकों को सच्चा मनुष्य बनानेवाली, जीवनसंश्राम में विजयी बनने का मंत्र सिखलानेवाली शिक्षा देने का प्रयत्न करें ।

दूमरी आवश्यकता सुस्पष्टादित निर्भीक समाचारपत्रों की है । यद्यपि इस समय भी जैनियों के पत्रों की संख्या कम नहीं है तथापि वे बिचारे शायद ही कभी, धर्म और समाज के दायरे से बाहर निकलते हों । उनको नहीं गालूम कि संसार में क्या हो रहा है और दुनियाँ किस तरफ की जा रही है, न वे इसका ज्ञान रखते हैं कि हमारी जाति में संसार की अन्य उन्नत जातियों के मुकाबले में कौन कौनसी ज़ुटियाँ हैं और उनको दूर करके किस प्रकार वह अन्य जातियों के साथ साथ कदम रख कर चल सकती है । इस लिये आवश्यक है कि जैनियों में इस प्रकार के दो चार पत्र निकले जो इधर उधर की थोड़ी निष्कम्भी बातों को छोड़कर लोगों को कुछ काम की बातें बतलायें जो प्राचीन रुढ़ियों का भय न करके समाज-सुधार के सम्बन्ध में उचित संमति दें सकें और आन्दोलन कर सकें जो बिना तनिक भी डरे, हिचके राजनैतिक समस्याओं तथा घटनाओं की स्पष्ट आलोचना कर सकें ।

જો આધુનિક જગતકે નૂતન ભાવપૂર્ણ, યુગ પરિવર્તનકારી, ક્રાંતિજનક સંદેશોનો જૈન જાતિકે કાનો તક પહુંચા સકે । જો જાતિમેં હોનેવાલે અન્યાયો, અત્યાચારોનો વિના કિસી વડે છોટે, સેઠ સાહુકાર અમીર ગરીબકા ધ્યાન કિયે નિર્ભયતા પૂર્વક તીવ્ર વિરોધ પ્રતિવાદ કર સકે । જિનકે સમ્પાદકોનો આધુનિક સંસારકા જ્ઞાન હો તથા જિનકે હૃદય કિસી પ્રકારસે ઘેરેવાલે, મયમીત હોનેવાલે પક્ષપાતી ઔર સંકીર્ણ ન હો । યદિ હસપ્રકારકે દો-ચાર પત્ર મી પ્રકાશિત હોકર સોયે હુયે જૈનિયોંકી આંખોંકો ચોલ કર સંસારકી ગતિકી ઔર આકર્ષિત કરને લાગે, ડનકે મુરજાયે હુયે હૃદયોંમેં નવે યુગકી વાણી પહુંચાવે, ડનકો વાસ્તવિક ધર્મ અર્ધર્મકી પહિચાને ચત્તલયે; ડનકો કુરીતિયોં, કુપ્રથાઓં તથા સામાજિક ઔર ધાર્મિક અન્ધ વિશ્વાસકે ફન્દેસે છુટ્ટા કર સ્વાધીનચેતા, આત્મનિર્ભર, પ્રકૃત, ધાર્મિક તથા સચ્ચે ધર્મે નિયમોં પર ચલનેવાલા બનાયે, ડનકો સંસારમેં હોનેવાલે પરિવર્તનો, સુધારોંકી સૂચના દેકર કર્તવ્ય માર્ગ દિસલાયે; ફૂટ, કલહ, અનૈક્યકો નટ કર જાતિમેં એક્ય, પ્રેમ ફેલાયે, તથા લોગોંકો ડન્નતિ પથપર અગ્રસર હોનેકો ડત્તેજિત કરે ઔર એસા ચત્તલયે તો થોડે હી સમયમેં વહુત કુછ કાર્ય હો સકતા હૈ ઔર દિન પર દિન ગિરતી હુઈ નટપ્રાયઃ જૈન જાતિ પુનઃ ડન્નતિપથકી પથિક બન સકતી હૈ । પરમાત્માસે પ્રાર્થના હૈ કિ વહ જાતિકે નેતા, વિદ્વાનો, હિતચિત્તકોંકો સુબુદ્ધિ પ્રદાન કરે જિસસે વે જાતિકી ડન્નતિકે સચ્ચે માર્ગનો દેખ સકે । ઔર હસ વિષયમેં પૂર્ણ રૂપસે પ્રયત્ન કર સકે ।



(લેખક-નાનથંદ પુર્ણભાઈ ખી. એ. વડોદરા)

વડોદરાની કલાદૈશશ્ય અને હુનર શીખવતી કલામવન નામની સંસ્થા લગભગ ત્રીસ વર્ષથી ચાલે છે. પણ તેની વીરાતવાર માહિતી ઘણા યોજાનેજ હોય એમ લાગે છે. ખુદ વડોદરાના કેટલાક વતનીઓને નામ સિવાય વિશેષ માહિતી હોય એમ જણાવું નથી, આની હુનરશાળાઓમાં શુ અભ્યાસ થાય છે તે દરેક જણવાની જરૂર છે. હાલ કેટલાક પાંચ છ ધોરણ ધરેજનનાં કરી કારકુની કરે છે, કેટલાક સાત ધોરણ (મેટ્રીક) પાસ કરી સરકારી નોકરી રૂ. ૨૦ વીસની કમુલ કરે છે, તેઓની અંગ્રી માસિક રૂ. ૧૫૦૦ થી સુધી સમા પુરી થઈ જાય છે. કેટલાક માખાપને માહિતી નથી હોતી કે અમારા દીકરાને માટે કોઈ રસ્તા સારો છે. ત્રણ ચાર ધરેજ યોપડી બાણી હોઈ જાય છે, રજગતા કરે છે, ખરાબ સોજતે ચડે છે અને પછી દશ ખારની શુમાસ્તીમાં અંગ્રી ગાળે છે. આવા છોકરાઓ માટે અને જેઓને યોડા ખર્ચમાં આટાપણું હોય તેમને માટે પણ આવી કલામવન જેવી સંસ્થા ઉત્પન્ન છે.

આ બવનમાં શિક્ષણની છ શાખાઓ છે. (૧) શિક્ષણશાળા, આમાં સીવીલ એન્જનીયરીંગનો અભ્યાસ થાય છે. આ અભ્યાસ ત્રણ વર્ષનો છે. તેમાં સુધારીકામ, ફરનિચર બનાવવાનું કામ અને લાકડાનું કોટરકામ શીખવવામાં આવે છે. શિક્ષક શાસ્ત્ર, મકાનનું બાંધકામ, મેવેઈંગ, લેવલીંગ, પબ્લિક વર્કસ, રસ્તા અને માટીકામ વગેરેનો પણ આ શાખામાં સમાવેશ થાય છે. આ શાખામાંથી પસાર થયેલા વિદ્યાર્થીઓ સર્વેઈયર, ડ્રાફ્ટ્સમેન, સજ ઓવરસીઅર અને મકાન બાંધવા માટે



મીન્ત્રી અને ઈન્ડ્રાક્ટરના ધંધા માટે લાયક થાય છે.

(૨) યંત્રશાળા. Mechanical engineering-આ શાખામાં જુદા જુદા સાધના કામની સમજ ને તેના ઉપયોગ શીખવવામાં આવે છે. અભ્યાસક્રમ ત્રણ વર્ષનો છે. ત્રણ વર્ષનો અભ્યાસ પૂરો થયે થઈ કલાસ એન્જીનીયર (મુ'અઈ)ની પરીક્ષામાં ખેસી સફાય છે. એવે વર્ષે જેઓની ધુમ્મસ હોય તેઓને ઇલેક્ટ્રીકલ એન્જીનિયરીંગ, ઇલેક્ટ્રીકલ ડ્રોઇંગ, મોટોરકાં, એન્જીનીયરીંગ વીગેરેનું કામ બતાવવામાં આવે છે.

(૩) રંગશાળા Chemical technology-આ શાખામાં મુતર, ઉન, રેશમ વીગેરે ઉપર નીતબનના કાસા અને પાકા રંગ ચડાવવાનું, ઝાપવાનું તથા રંગ કાઢવાનું શીખવવામાં આવે છે. આ અભ્યાસ બે વર્ષનો છે. આ શાખામાં શીખેલા વિદ્યાર્થી કોઈ પણ પ્રકારના રંગવા ઝાપવાના કારખાનામાં મેનેજર અથવા ડાઇંગ માનર તરીકે પણ સારા પગાર મેળવી શકે છે. કોઈ પણ રસાયણિક ઉદ્યોગ સ્વતંત્ર રીતે ખીલવી શકે છે.

(૪) ઔદ્યોગિક રસાયણ Industrial Chemistry-આ શાખામાં સોડા, ગંધકનો તેનમ બનાવવાનું, તેલ, ચરબીઓ, સાબુ બનાવવાનું, મિલખત્તી, ગીસીટ કામ વીગેરે શીખવાય છે.

(૫) વણતરશાળા Textile Manufacture-આ શાખાનો અભ્યાસક્રમ ત્રણ વર્ષનો છે. વણતરનો હુનર, વણતરની જુદી જુદી ભાત, ચોળાના, ડીકાકન વીગેરે શીખવાય છે. આ શાખાના ત્રણ વર્ષના અભ્યાસ પછી વીર્ધીંગ માસતર તરીકે મીલોમાં કામ કરી સફાય છે અથવા પોતે સ્વતંત્ર કારખાનું પણ ઉઘાડી શકે છે.

(૬) ચિત્રશાળા Art School આ શાખામાં ચિત્રકળા, આર્કિટેક્ચર, મોડેલીંગ, રીપ્રેઝન્ટેશન, પ્રોપર્સ વર્ક શીખવાય છે. આ પાચામનો કોઈ પણ વિભાગ શીખતા પહેલાં પ્રેગલું કામ એ વરસ શીખવું પડે છે. પછી આ દરેક કામ ચાર વરસ સુધી શીખવાડવામાં આવે છે.

(૭) વ્યાપારશાળા Commerce-

શાખાનો અભ્યાસક્રમ ત્રણ વર્ષનો છે. ઇંગ્રેજી છઠ્ઠું ધોરણ પાસ કરેલાનેજ દાખલ કરવામાં આવે છે. આ વ્યાપારી શિક્ષણ આપનારો વખત ૭-૧૦ અને સાબના ૪-૬ રાખવામાં આવ્યો છે. કે જેથી કોઈ પણ હાઈસ્કૂલમાં બહુતો વિદ્યાર્થી અથવા નોકરી કરતો લાભ લઈ શકે. હાઈસ્કૂલના વિદ્યાર્થીઓ માટે દરેક ટર્મની શી રૂ. ૬ રાખી છે બ્યારે ખીલેલો માટે રૂ. ૧૦ છે. આ શાખામાં પાસ થયેલાઓ, એકાઉન્ટન્ટ, સેક્રેટરી, ટાઈપીસ્ટ, શોર્ટહેન્ડ રાઇટર તર્જિ બગા મેળવી શકે છે.

યંત્રશાળામાં દાખલ થતા માટે મેટ્રીક પસાર થયેલાને પ્રવેશક પરીક્ષા વગર અને મેટ્રીક સુધી અભ્યાસ કરેલાને પ્રવેશક પરીક્ષા લઈને દાખલ કરવામાં આવે છે. શિક્ષકશાળા, ટ્રાયર્મ અને આર્કિટેક્ચર માટે ઇંગ્રેજી છઠ્ઠું ધોરણ પાસ કરેલું હોય તેવાઓને પ્રવેશક પરીક્ષા સિવાય અને નાપાસ થયેલાઓને પ્રવેશક પરીક્ષા લઈને દાખલ કરવામાં આવે છે. રંગ, વણતર અને રસાયન શાખામાં અંગ્રેજી પાચમું ધોરણ પાસ થયેલાને દાખલ કરવામાં આવે છે. વધુ માહિતી માટે કલામંત્રવનના પ્રિન્સિપાલને લખવું. કેટલાક વિદ્યાર્થી માસીમાં પણ રાખવામાં આવે છે. વળી કલામંત્રવનમાં કેટલીક સ્ટોવર્શિપી પણ છે. આજ દબરે રૂપીઆ ખરચી માડમાડ થી. એ. થઈ ચાલીમ પચામ રૂપીઆની નોકરી કરવા કમ્તાં આવા કોઈ હુનરમાં નિપુણતા મેળવવી વધારે લાભદાયક છે.

દો અમૂલ્ય રત્ન—

પવિત્ર દશાંગ ચૂપ ૨૥) રત્ન

અગરકી અગરવત્તી ૨) ”

વૈદ્ય પોસેસે નમૂના મુક્ત મેળા જાતા હૈ ।

સરૈયા વ્રધર્સ જૈની—હરત ।



(लेखक— जैन कवि उद्योतिप्रसादजी, देवबन्द)

प्रातःकाल उठ कर ईश्वर परमात्मासे यह प्रार्थना की जाती है कि हे परमात्मन् ! हमारी नाककी रक्षा करना क्योंकि नाक बड़ी ही कोमल वस्तु है। सरदी लग जाय तो जुकाम हो जाय और गरमी लग जाय तो नज़ला। और जो कहीं सरदी गरमी दोनों एक साथ लग गईं तो बेचारी नाककी और भी मुसीबत आगई। वैसे तो नाक एक जरासी मांसकी इली है। और वह भी पतली दुबली और खोखली, परन्तु जीवनका सहारा है। जिस दमको आदमका दम बतलाया जाता है वह नाकके ही द्वारा लिया जाता है। आँखें तो केवल सांसारिक वस्तुओंके रंग और रूपको ही देखती हैं, लेकिन नाक उनके सत्य स्वभाव अर्थात् सुगन्ध दुर्गन्ध आदि बातोंका पता देती है। स्वास्थ्यके लिये नाक एक माना हुआ यंत्र है। जिस वस्तुसे स्वास्थ्यके विगड़नेका मय होता है उसके सेवनसे नाक तत्काल रोक देती है। वैसे तो इस नाक जैसी कोमल और हावभाव बनाने-वाली चीजमें प्रत्येक समय एक दुर्गन्धित मेल भरा रहता है जिसके कारण भले मनुष्योंका तो नाकमें ही दम आ जाता है, लेकिन अपने घरकी दुर्गन्धिका विचार न करके नाक दूसरोंकी दुर्गन्धियों पर सदैव नाक मौं सिकोड़ती है।

कन्नौज और जौनपुर अदिकके इत्र और रूडोंके कारखाने केवल इस नाकके ही लिये खोले गये हैं। बड़े बड़े बहुमूल्यरूमाल यद्यपि फेशनमें गिने जाने लगे हैं, पर सच पूछो तो उनको भी नाककी सेवाके ही वास्ते अपना अमूल्य जीवन अर्पण करना पड़ा है। बाग बगीचोंके सुन्दर और सुगन्धित फूलोंको देख कर सम्भव है कि आँखें दूरसे ही अपना कठेन ठण्डा कर लेतीं, परन्तु नाक कब माननेवाली थी। उसने उन बेचार फूलोंको पुष्पवाटिकासे जुदा कराकर ही छोड़ा। इसकी इस कार्रवाईसे वे बेचारे अपने अमूल्य जीवनसे बहुत ही शीघ्र हाथ धो बैठे। और खाकमें मिल गये। आपने तो बहुत बार देखा होगा कि किसी व्यक्तिने ज्योंही नाक चढाया और त्योंही गन्ध हो गया अर्थात् नाकका चढ़ना कमानके चढ़नेसे भी अधिक हानिकर है। जिस प्रकार नाक बहुतसी बातोंके लिये लाभदायक है उस ही प्रकार मुखकी शोभाके लिये भी शरीरका एक आवश्यक अंग है। यदि किसीके मुखपर नाक हो तो वह अपने मुखको घिसे हुये पैसेकी गांति लिये फिर जाय—कोई भी पसन्द न करेगा, परन्तु नाकवाला और वह भी सुडौल नाकवाला चेहरा सचमुच ऐसा प्यारा होता है कि जैसे मुकट सहित शिशु। नाक लम्बी भी होती है और गोल भी। उमरी हुई भी होती है और चपटी भी, लेकिन लम्बी और उमरी हुई नाक अच्छी मादम होती है। लोग कह दिया करते हैं कि अमुक पुरुषकी नाक विघाताने स्वयं अपने ही हाथोंसे बनाई

है। वाह वाह ! क्या ही सुन्दर है अर्थात् जादू भर दिया है। जो देखता है उस ही-की महिमा गाता है, परन्तु किसी २ की नाक बहुत ही बड़ी और बुरी मालूम हुआ करती है। उस पर दृष्टि तो कोई क्या डालेगा? वहां तो दृष्टिका पहुंचना तक भी कठिन होता है। जिम्माके अपराधका फल जिस प्रकार सरकी गरीब खोपरीको चखना पड़ता है अर्थात् बुरे भले शब्द तो जिम्मा कह बैठती है और चांदनारी बेचारी खोपरीकी होती है। इस ही प्रकार मनुष्योंके कुकर्मोंका फल बेचारी नाकको भोगना पड़ता है क्योंकि दुखी मनुष्यका हाथ दुःख देनेवालेके नाक पर पड़ता है। दुःखी मनुष्य कह उठता है कि बच्चा नाककी खर न मानना। मेरा हाथ होगा और तेरा नाक। ऐसी अनोखी बात है! अपराध तो करें मनुष्या-का मारा शरीर और पड़े गरीब नाकके। यह भी एक प्राकृतिक नियम ही समझो अर्थात् मुसी-बतके मुलमें मर्याद निर्बलकोंकी ही पड़ना पड़ता है। जैसे देवताओंकी भेंट बकरीका बच्चा ही दिया जाता है—बेहरीसिंह कहाँ भी नहीं, इस बेचारी नाकको वर्तमान समयके मनुष्योंकी ही बुरी भलीसे अपनी रक्षा करनी पड़ती हो ऐसा नहीं है किन्तु इन पर तो प्राचीन समयके ऋषि मुनि भी कटाक्ष कर गये हैं और दृष्टांत दे दे कर इसके विरुद्ध आन्दोलन (एनी-टेशन) फैला गये हैं—वे कह गये हैं कि नाक भी एक इंद्रि है जो मनुष्यके प्राणोंकी मृत्युके मुलमें डाल देती है। जैसे गरीब जालि (भौरे) की नाक अम्बुन (कमल)की सुगन्ध लेनेके लिये

बेचारे भौरेकी जीवन लीला समाप्त करा देती है, बात असत्य नहीं है परन्तु भौरेकी रस्ती भर नाकसे मनुष्यकी तीन चार तोले वाली नाककी क्या समानता? बड़े आदमी फिर भी बड़े होते हैं। भला सामर्थ्यवान भी कभी दोषी माने गये हैं। यह तो एक साधारणसी बात है अर्थात् समर्थको नहि दोष शुभाह। यह तो कोई कह नहीं सकता कि ऋषि मुनियोंमें नाककी निन्दा करके कुछ भूल की हो या नाकसे द्वेष किया हो क्योंकि वे तो धीतानी थे और ज्ञानवान थे परन्तु यही क्या ठीक बात है कि एक नियम सब ही जगह काम देनाय। यदि अनेकान्त नयसे देखा जाय तो एक बात जो एक समयमें अनुकूल होती है वही बात किसी दूसरे समयमें प्रतिकूल भी हो जाती है। खैर, जाने दो। अब यह देखो कि मनुष्य देवता नाकका कितना सम्म न करते हैं और जो करते हैं वह बनावटी होता है या सत्यताको लिये हुये। हम तो और हम ही क्यों सारा संसार यह देख रहा है कि गरीब नाकको गरमी सरदीसे बचनेके लिये एक अङ्गलका चूँथड़ा भी नहीं जड़ता। चाहिये तो यह था कि ऐसी लाभदायक और काम आनेवाली कोमल चीजको बहुमूल्य मोतियोंकी तरहसे किसी सोने चान्दीकी डिब्बामें रेशमी रूमालोंकी तह लगाकर बड़े भारी प्रबन्धके साथ रखा जाता, परन्तु इसके विरुद्ध जो कुछ किया जा रहा है उसे मालूम करके आप आश्चर्य मानेंगे अर्थात् उपकारके बदले अपकार किया जा रहा है। भला कितने आश्चर्यकी बात है कि जो नाक जरासी गरमी



सरदी तकको न उठा सकी हो उसको लोहेकी सुइयोंसे चींघा जाता है और विंधे हुये सुराखमें नथ, लटकन, बुलाक आदिक लटकाये जाते हैं अर्थात् नाकका भी नाकमें दम किया जाता है। कमलके फूलकी डण्डीसे हाथी बांधना यही तो कहलाता है, लेकिन नाक ऐसी निर्लज्जतासे जीवित है कि जिसका कुछ भी ठिकाना नहीं। अन्यथा ऐसे जीवित रहनेसे तो मर जाना ही लाख दरजे अच्छा है।

आप कहेंगे कि जनाव्र नाकको यह कष्ट तो अनपढ़ स्त्रियों या मूर्ख मनुष्य दे रहे हैं अन्यथा शिक्षित समान तो नाककी हर तरहसे प्रतिष्ठा ही करती है। भारत देशके इत्र फुलेल ही नहीं किन्तु इसके वास्ते इङ्ग्लैंड तकसे तेल और तबैण्डर मंगा रही है। पुराने फटे कपड़ोंके टुकड़ोंको काममें न लाकर इसके वास्ते मूलायम और उम्दा रूमाल काममें ला रही है अर्थात् बहुतसा रूपिया खर्च कर रही है।

चात वास्तवमें सही है और यह हम ही क्या सब कोई देख भी रहे हैं, परन्तु भाई नाककी कोमल और नन्हीसी नोक पर चश्मों और ऐनकोंकी कमानियोंका बोझ रखते हैं तब बेचारी नाककी चीं चोल जाती है और वह बहुत ही बेचैन हो जाती है। यदि नाकके ऊपर इतनी कठोरता सीधे साधे मनुष्य करते तो इन भले आदमी नाकका पक्ष लेकर उनको बुझा मचा भी कह डालते परन्तु पश्चिमी शिक्षाके पण्डितोंको कौन कुछ कहे ? यहां तो नाक भी मौन धारण किये हुए कान विंधवा रही है।

“रानीसे कौन कहे कि तू परदा कर” सब

जानते हैं कि हम पश्चिमी शिक्षाके पंडितोंसे पहिले ही फटकार खाये बैठे हैं। यदि नाकका पक्ष लेकर जरा भी जवान खोली तो न हमारी खैर है और न नाककी, दोनोंका बायकाट जरासी देरमें हुआ रखा है। अब बेचारी नाक अपनी जगह पर खड़ी हुई बोझ ही तो उठा रही है और यदि कहीं सब आन्दोलनके अपराधमें देश निकालेकी सजा पागई तो फिर क्या होगा इस वास्ते सब मौन साधे हुये हैं और कष्टको सहन कर रहे हैं।

बाबा नाक बनी रही। घर रहे या जाय। विरादरीमें नाक रखनेके वास्ते क्या कुछ करना पड़ता है। क्या इससे आप परिचित नहीं हैं। मुरारीलालने छोटे बेटेके विवाहमें रहनेवाला मकान बन्धक करके विरादरीकी ज्योंगार केवल नाक रहनेके लिये की है। चान्दनगयणने बापके मर जाने पर अपनी कुल आमदनीका मार्ग बन्द करके विरादरीका नुकता नाककी ही रक्षाके लिये किया है और मन्गूलालने बेटेके होनेकी खुशीमें लाल कोठीके दाम उठाकर रण्डियोंका नाच नाकके ही बचे रहनेको कराया है। यदि यह लोग ऐसा न करते तो फिर इनकी नाक कहां थी और यह इन्होंने ही थोड़ा किया है। यह तो विरादरीके सब ही मनुष्य करते हैं और कहा करते हैं कि साहब क्या करें। आखीर विरादरीमें नाक भी तो रखनी ही है। यदि नाक कट गई तो फिर जीना ही निष्फल है अर्थात् नाकका ख्याल यहां तक है कि चाहे दाल और रोटी भी मांग कर खाना पड़े परन्तु नाक बच जाय—भाई नाक ! कहो



कोई लाख, लेकिन पुण्य तूने खूब किया है । क्या हुआ जो त एक दो तोले मांसकी डली है परन्तु भाग्य तो तेरा बहुत ही ऊँचा है । शरीरके अन्दर और जितने भी अङ्गोपाङ्ग हैं वे बड़े हैं या छोटे, हल्के, या भारी, बुरे हैं या भले, लाभदायक हैं या हानिकार परन्तु उन सबसे तेरा ही दरजा ऊँचा है । तेरे ऊपर संसारके मनुष्य तन-मन-धन सब न्यौछावर किये बैठे हैं और कदा करते हैं कि जाँय लाख और रहे नाक-यह सब तेरे सौभाग्यकी ही बात है । वस यही तो कारण है कि यह अमरदेव भी सदैव तेरी ही खैर मनाता रहता है-

शेर ।

परमै ऐ यार मेरे धूल रहै-खाक रहै ।

पर यह रत्नाहिश है मेरी मुंह पे मेरे नाक रहै ॥

नवीन ग्रंथ-

हमारे यहांके उत्तम ग्रंथ ।

आदि पुराण	१६)
उत्तर पुराण	१०)
दीनों एक साथ	२५)
पञ्चाध्यायी टीका	५॥)
धर्म-प्रश्नोत्तर	२)
जिनशतक	॥)
दिवाली पूजन	३)

मिलनेका पता—

लालाराम जैन,

मल्हारगंज इंदौर ।



आत्म निधि ।

ले०-५० लेकमणि जैन, मोटेगाव ।

समस्त संसारकी बाहरी भीतरी आस्थाओंको अश्लोकन करनेवाले हम ही तो हैं क्योंकि वह हमारी आत्मनिधि है । सांसारिक अथवा आत्मभिन्न पदार्थोंमें हमारी सत्ता नहीं है और न वह आत्मनिधि ही है । जिन २ पदार्थोंमें हमारी सत्ता है वे सब हमारे हैं । इसी लिए वे हमारी निधि स्वरूप हैं । जिन २ पदार्थोंको हम उत्पन्न और नाश होते देखते हैं उनका अस्तित्व हमारी आत्मामें नहीं है । हमारी और अमर आत्मा क्षणिक (नाशमान) पदार्थोंसे प्रीति नहीं करती क्योंकि वे आत्माके अस्तित्वसे भिन्न और अल्प समय साथ देनेवाले हैं । इसी लिए सदा आत्मामें रहनेवाली अनित्य, अविनाशी गुणवाली ही सच्ची आत्मनिधि है ।

कभी नर्कमें, कभी स्वर्गमें, कभी तिर्यचोंमें और कभी देवोंमें आत्मदेव, क्रीडार्थ जाते हैं पर तत्रस्थ पदार्थोंको निजनिधि नहीं मानते, यह एक बड़ी विलक्षणता है । आत्मदेव हमारे इतने पवित्र और अकथनीय गुणोंके भण्डार हैं, निरन्तर अनेक पर पदार्थोंके साथ रहने पर भी अपनी उज्ज्वलता पदार्थोंमें नहीं पहुँचने देने, और न उनसे कुछ लेकर आत्मनिधि



बनाते हैं। हमारे आत्मदेव कभी क्रोधाग्निमें धंस जाते हैं। कभी मानगिरिकी सैर करने चले जाते हैं, कभी मायाकी संगतिसे अपने कहने विचारने और करनेमें भेद कर लिया करते हैं और कभी लोभकी चुंगलमें फंस बाह्य धनको अपना समझने लगते हैं, इतने पर भी जब निज निधिका अवलोकन करते हैं तब क्रोध, मान, माया और लोभ इनमेंसे एकको भी आत्मनिधिमें नहीं पाते हैं। क्यों न हो, आत्मदेव ही तो ठहरे। सबमें रह कर भी सबसे प्रथम अपनेको रखना यही तो आत्मदेवकी आत्मनिधि है।

आत्मदेवकी संपत्ति छीननेके लिए इस जगत्में कर्मने अनेकानेक ठगिया भेज दिए। आत्मदेवके साथ उन डाकुओंका मेल मिलाप भी रहने लगा है। आत्मदेव इनकी करामत देखनेके लिए अपनी निधिका ताला बंद कर इनहीकी हामी हा मिलने लगे। कर्म दूतोंने अपनी सफलता समझ आत्मदेवकी निधि छूटनेका प्रयत्न किया। आत्मदेवने निधिको न बतलाया। आत्मदेव बोले, भाई मैं तो गरीब हूँ। तुम्हारे दिए ही पशार्थीसे लग निकालता हूँ। तुमने यह शरीर रहनेको दिया, यह जीभ चाबके लिए दी। यह नाक सूंघनेको दी। नेत्र देखनेको और कान सुननेके लिए दिए। हम जब घाव दलनेको कहते हो शीघ्र दूसरे घावकी तलाशी कर लिया करता हूँ। कभी तुम अकेला शरीर ही देते हो तो सादर ग्रहण कर लिया करता हूँ। यदि साथमें कुछ २

इंद्रिया दे देते हो तो मैं ले लिया करता हूँ। मेरे पास तुम्हारे देने लायक है ही क्या जो तुम्हें समर्पण करूँ। कर्मोंके दूतोंने समझा कि सचमुचसे आत्म देव गरीब हैं, इनके पास कुछ नहीं है, यदि कुछ होता तो ए रखते कहां? आत्मदेव इतने गरीब हैं तो हमें इनकी निधि छूटनेको क्यों भेजा? कर्म दूत घबड़ाए और अपने राजा “मोह” के पास आत्मदेवकी शिकायत मनमानी करने लगे।

मोहराज भी आत्मदेवके पास अनेक सेवकोंको साथ लेकर आए, बोले—आत्मदेव, तुम अपना स्वरूप छिपाते हो। तुम्हारे पास अगणित रत्न हैं, तुम शीघ्र ही दे दो नहीं तो हम तुमको तीव्र यातनाएँ देंगे। यह सुन कर आत्मदेव किंचित हसे पर बोले कुछ नहीं। आत्मदेवकी भेद मुस्कान मोहराजके लिए तीरका काम कर गई। उन्हें भारी क्रोध आया। सेवकोंसे बोले—इसी वक्त इसको कैद कर तीव्र दुःख दो। बिना टिढ़ाईके यह अपनी आत्मनिधि न बतायेगा। मोहराजका हुक्म हुवा कि आत्मदेव कैद हो गए। कोई आत्मदेवको मारने लगा, कोई घसीटने और कोई उलटा टांगने लगा। आत्मदेवको कोई चक्की पिसाने लगा, कोई स्त्रियोंको उनके पास रख गया, कोईने उनको झंझटके लिए बच्चे लाकर दिए, कोईने तान तैल ऊपर सिंचन किया, इतने पर भी आत्मदेव कुछ न बोले। जब सतानेसे आत्मदेवसे कुछ न पाया तब स्वयं मोहराज आए। आत्मदेवको अचेत कर दिया, फिर मैं



किया, कभी भोगनेको स्त्री दी, कभी धन दिया, कभी शरीर सुख दिया और कभी २ पुत्र छीनकर रखाया, कभी धन विहीन कर भीख मंगवाई, कभी कुछ और कभी कुछ उपसर्ग आत्मदेवके किये पर आत्मदेव किंचित भी न बोले । आत्मदेव जब कर्मोंकी सब कगमात देख चुके-जलमें उलझ कमलकी तरह अपने ऊपर कुछ भी कर्मोंकी सत्ता न देख बोले—कर्मों, तुम टार गए अनतानंत काठ साथ रहने पर भी तुम मेरे स्वरूपको न जान सके । तुम्हारा पराक्रम भी मैं समझ गया । तुम समझते होगे आत्मदेवको हम सत्ता रहे हैं, लुभा रहें-खिला रहें हैं, आत्मदेव हमारे होगए, हमारे राज्यमें ए निवास करने लग गए, इनका खानाना हमें मिल गया, हमने इन्हें मटियामें ट कर चक्का चूर कर दिया, पर यह सब जानना तुम्हारी भूछ है, तुम्हारे सेवक मेरेको स्पर्श भी नहीं कर सके । तुम्हारे द्वारा दिए गए दुःख मेरे पास तक आ ही नहीं सके । जो तुम प्रहार करते थे वे सब तुम्हारी दी हुई वस्तुओं पर ही आकर चोट पहुंचाते थे । तुमने रागद्वेष वशने वाली चीजें जो मेरे पास भेजी थीं उनको मैंने स्पर्श भी नहीं किया । तुम समझते होगे आत्मदेवको हमने दद्रिद कर दिया, समस्त निधि छीन ली पर यह सब कुछ भी हुआ । मेरी निधि तुम्हें नजर भी नहीं आई । मेरी निधि अक्षय-अनंत-और तुम्हारे अगोचर है ही और रहेगी ।

कर्मों, तुमने मेरे प्रति अनेक उपसर्ग किए तथा मेरे साथ बहुत समय तक रहे । तुमने अपणित अपराध किए । अच्छा, लो मैं अपनी

निधिमैका एक अमौलिक रत्न निकाल क्षमा नामक तुम्हें वितरण करता हूँ । इस रत्नके माहात्म्यसे संसार वशमें हो जाता है, वैरी वैर छोड़ देता और विपत्तियां पास नहीं आती । इस रत्नके प्रकाशमें सूर्य चन्द्रकी रोशनी छिप जाती है । इसका गुण अपार है । सप्तारी जीव यदि तुम्हारी नगरीसे पृथक् होना चाहें तो इसके प्रभावमें अलग हो सकेंगे । यह तो मेरा एक रत्न है । ऐसे २ अनन्त रत्न मेरे पास हैं । मैं कभी किसीको मारता नहीं । किसीसे मैं मरता नहीं । मैं सनपर समदृष्टि रखता हूँ । मैं क्षमा, मार्दव, आर्गव, सत्य, शौचादि दश धर्मोंका स्वामी हूँ । सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यग्चारित्र्य इनका प्रभुजी मैं हूँ । मैं सद्गुणोंका भंडार हूँ, और यही मेरी आत्मनिधि है ।

जितने भी सद्गुण हैं, जिससे प्राणी समस्त पाप मियाओंसे रहित हो सकते हैं, जिनसे सुख और शान्ति का अनुभव प्राणियोंको होता है, वे सब रत्न आत्मनिधि स्वरूप हैं । जो प्रयोग प्राणियोंकी रक्षा करते हैं, जिन उपायोंसे कर्मवधन टूटने हैं वे सब आत्मनिधिके सुमन (पुण्य) हैं । आत्मदेव स्वच्छी आत्मनिधिसे विभूषित हो स्वपर कल्याण करें । यही आत्मदेवकी भावना है ।

सुखसागर भजनावली ।

नैवर्त्ममूषण द्र० शतितलप्रसादजीके बताये हुये इस नवीन भजन संग्रहमें कोई २९० उपदेशात्मक भजनोंका संग्रह है । मूल्य ॥=) **मैनेजर-दि० जैन पुस्तकालय-सुरत ।**

दक्षिण भारतमें-

जैन पुरातन शिल्प ।

(लेखक-एम. एम. पेरिस)

पाठकों ! आपको यह बता देना आवश्यक है कि इस लेखमें जैन धर्मके प्राचीनता विषयक इतिहासका कुछ संबंध नहीं है । इस लेख-द्वारा केवल दक्षिण कनाराके जैन स्तूप आदिका वर्णन ही किया जायगा । इस प्रांतकी विशेष डीलडौलकी पत्थरकी चट्टानोंकी मूर्तियां मिश्र देशके "पैरामिड" (Pyramids) के समान ही हैं । सुतरां इस प्रकारकी मूर्तियोंमें सबसे बड़ी हैं । दर्शनीय वस्तुओंमें इनकी गणना होनेके कारण अनेकों पथिक, दर्शक यूरोप, अमेरिका आदि दूरस्थ देशोंसे आते हैं ।

पाठक ! इन अनोखी मूर्तियोंके निर्मापित कर्ताओंके विषयमें लिखना नितान्त योग्य और मनोरंजनदायक होगा । कनारा, जहां दक्षिण भारतमें भी जैनधर्म कालके प्रभासे हास अस्थाको प्राप्त है, जनवरी सन् १९११ की मनुष्य गणनाके अनुसार केवल ९००० जैन जन संख्या मंगलोर, उप्पिननगड़ी, और उदीपी तालुकोंमें हैं । इस पर भी इस संख्याका कुछ विशेष कारणोंवस हास होता जाता है । और यदि इसी वेगसे हासका पहिया दुलकता रहा तो जैनियोंकी भी अस्तित्वका अन्त इस शताब्दिके अन्तके साथ हो जायगा ।

जातिकी अपेक्षा दक्षिण कनाराके जैन मुख्यतः दो दलोंमें विभक्त हैं । अर्थात् 'इन्द्र'

पुजारी, जो अपने अन्तराधिकारमें साधारण रीतिको व्यवहारमें लाते हैं और 'श्रावक' जो 'अलिया-सन्तान'की रीति व्यवहारमें लाते हैं । जैनियों और बूटों-जो सदैवके निवासी हैं-के सामाजिक रीतियोंमें, रिवाजोंमें, और जीवनकी क्रियाओंमें विशेष सदृशता है । ब्राह्मणोंकी तरह जैनी भी यज्ञोपवीत धारण करते हैं । और इसीसे वे बूटोंसे भिन्न प्रतिभासित होते हैं । जैनी मांमभोजन और मांदक वस्तुओंका भी व्यवहार नहीं करते हैं । जैनियोंकी मृत्यु-पातक विषयक रीतियां १६ दिवस पश्चात् मंदिरजीमें 'अभिषेक' करनेसे पूर्ण हो जाती हैं ।

* * *

वास्तविकतामें बौद्धधर्मका दक्षिण भारत पर आक्रमण विदित नहीं होता है । ऐसी ही उपलब्ध ऐतिहासिक व्याख्याओंसे, यही विदित होता है कि सबसे प्राचीन अवस्थामें कनाराके राजा नास्तिक धर्मी थे । मैसोरके हिन्दूबछ्छाल राजाओंने और उनके पड़ोसी जैन कारकलके वैराट्ट बोडियर राजाओंने भी अपनी स्वतंत्रता प्राप्तार्थ प्रयत्न किए थे । और अन्तमें जैनराजाओंकी विजय हुई । जैन मेमारीके कर्ता राज मैसोरमेंसे उठ कर कनारामें अपना कार्य करने लगे । समस्त प्रांत मंदिरों, मूर्तियों, स्तूपों द्वारा परिपूर्ण हो गया । इनमें वरकुर सन् १६०८में मैसोरके लिंगायत राजाओं द्वारा विध्वंस कर दिये गए थे । मैसोरके उपयुक्त मेमारोंने एक हिन्दु और जैन भावोंसे मिश्रित रीतिसे उपयुक्त मंदिर, आदि बनाए थे ।



कारण कि एक समय दोनो जातियोंमें पूर्ण प्रेम था। बरकूरके खंडहर अनुमानतः दो वर्गमीलोंमें फैले हुए हैं। और उनमें समय समय पर अच्छे २ निकासीके कामके नमूने निकले हैं। उनमें गढ़ा हुआ खनाना भी अनुमान किया जाता है। कारण वहांसे ग्रामवासियों द्वारा कुछ निकाला भी गया था। दक्षिण कनारामें जैन राज्यवंश इस प्रकार थे कि मूड़वद्रीमें चौतार नन्दावरमें बनगर अलदनगद्दीमें अजालर, वदनगद्दीमें मौज्जर और मुल्लीमें सावन्त, जो अन्तमें टीपु सुल्तान द्वारा विध्वंस कर दिए गए थे। वर्तमान समयमें भी बहुतेरे घराने उपर्युक्त राज्योंके वंशज मिलेंगे और उन्हें उनके पूर्वजोंकी जमीनके कुछ भाग पर अधिकार मिला हुआ है।

* * *

कनारामें पुरातन जैन शिल्पके मुख्य चार स्थान हैं। अर्थात् (१) कारकल (२) चेनूर (३) मूड़वद्री (४) और गुरुचंकेरी। प्रथम दो स्थानोंमें मंदिरोंके अतिरिक्त दो विशाल मूर्तियां भी हैं। समस्त संसारमें विशाल मूर्ति श्रवणबेलगोलकी है। यह मूर्तियां साधारणतया “बद” के नामसे इस कारण प्रसिद्ध हैं कि वे एक पत्थरकी दिवाल द्वारा वेष्टित हैं। “घस्ती” अथवा मंदिर और स्तंभ शेष दो स्थानोंमें हैं। तीनों ही विशाल मूर्तियां प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेवके पुत्र बाहुबलिकी मूर्तियां हैं। कनाराकी मूर्तियोंमें कारकलकी जो ४१ फीट ५ इंच ऊंची है, सबसे

बड़ी है। यह सन् १४३२ ई०में बनी थी। बेलगोलाकी मूर्तिके निकट यह छोटी है। बेलगोलाकी मूर्ति ५७ फीट ऊंची है और राजा चागुण्डरायद्वारा सन् ९७७ से ९८४में बनवाई गई थी।

कारकल—की मूर्ति एक विल्लोरी पत्थरके चट्टानके ऊपर उपस्थित है। और कोत्तों दूरसे दृष्टिगोचर होती है। कारकलकी मूर्तिकी मुद्रा देखनेसे शैतिका अनुभव होता है। और जैसा ही दर्शक उसके निकट पहुँचता जाता है वैसे ही उसकी विशालता बढ़ती जाती है। वह चट्टान भी एक तालाबके निकट खड़ा है। यह तालाब अथाढ़ है, और पुराने मच्छोंसे पूर्ण है, ऐसा कहा जाता है। और यह भी प्रसिद्ध है कि यह मूर्ति चंद्रवंशीय भैरवेन्द्रके पुत्र वीरपाण्ड्या द्वारा श्री बाहुबली स्वामीके रूपमें बनवाई गई थी।

निम्नलिखित मूर्तिका वर्णन ‘फ्रेजरस मैगज़िन’ (Fraser's Magazine) के मई सन् १८७५ के अंकसे दिया जाता है। वर्णन चाहे बौद्धिक चीन और लंकाकी मूर्तियोंका हो यथार्थ है। कारण कि गौमटेश्वरका भी यथार्थ वर्णन है। कारकलके ही निकट एक पथरीली, विशेषतया गोलाकार पहाड़ी है। पहाड़ीकी जड़ तो पत्थरों और झाड़ियोंसे भरी पड़ी है। परन्तु ऊपरकी चढ़ाई चिकनी और सीधी है। कुछ दूरीसे पहाड़ीकी चोटीकी ओर देखनेसे वही बहानियोंके बिले आदि दृष्टिके सन्मुख नाचने लगते हैं कारण कि चोटी पर एक दुर्गके समान



दिवाल है - जिसमें महारावदार दरवाना है । और उन दिवालोंने ऊँचा एक मूर्तिका धड़ इतना शरीर निकला दिखाई पड़ता है । यह मूर्ति इस प्रान्तकी अन्य मूर्तियोंके समान हैं । विशालता मिश्रदेशीय है । और भारतवर्षमें केवल येही मूर्तियाँ ऐसी हैं । पहाड़ीकी चोटी पर चौतरफा दिवालसे वेष्टित चबूतरा ५ फीट ऊँचा है उसी परसे यह मूर्ति ४५ फीट ऊँची बनी हुई है । नम्र विलोरी पत्थरकी एक ही सावित चट्टानसे उभरी हुई, शताब्दियोंके पानी हवासे काली पड़ी हुई, विशाल मूर्ति बिल्कुल सीधी सुयोग्य रीतिमें दोनों बगलोंमें हाथ लटकाए हुए खड़ी है । हैं । उनकी आकृति कुछ बक्रता लिए हुए है परन्तु एकसादे गौरव-प्रभावकी छटाको दर्शा रही है । स्वरूप और आकृति वैसे ही हैं जैसे कि लंकासे चीन तक अधिकतर तातारी जातिके रूपमें गौतमबुद्धकी हैं । और यह भी एक अद्भुत बात है कि मूर्तिका ढंग-रूप हिन्दुओंकी मूर्तियोंसे कुछ भी भिन्न नहीं है । वाल घुंघरवाले और घने हैं । बड़े भरे हुए कपालोंसे मुखकी आकृति भारी हो जाती यदि उनके शांतिपूर्ण और सम्मुख-दृष्टि-आरोपित नेत्र और लम्बी, नुकीली नाकसे उनकी सुखाकृति प्रभावशाली और गौरवान्वित न होती । मस्तक आकृतिके योग्य ही है । ओंठ भरे हुए और मोटे हैं । ऊपरका ओंठ कुछ लम्बा है जिससे अच्छी, निकली हुई डुब्डी आच्छादित हो जाती है । रोगों तक नीची मुजाएँ कुछ लम्बी हैं । और

सुयोग्य हाथ और उंगलियाँ घुटनों पर ही रखी हैं । मूर्तिकी स्थितिके कारण कंधे बहुत चौड़े हैं । प्रत्येक चरण ४ फीट ९ इंच लम्बे हैं । और उसी चट्टानमेंसे उकरे हुए चबूतरे पर स्थिति हैं । और यह चबूतरा मूर्तिकी विशाल आकृति और बोझ ८० टनके अयोग्य है । एक कमलकी डंडी, प्रत्येक चरणसे निकली हुई टांगों और भूनाओंमें लिपटी हुई है । तिस पर भी मूर्ति, जोखम सहित है । सात वर्षमें एक दके सर्वत्रके जैनी मूर्तिका नारियलके क्षीरसे अभिषेक करने अर्थ एकत्रित होते हैं । जैनियोंने अपने ही खर्चसे दर्शकों और यात्रियोंके लाभार्थ सीड़ियाँ उकरवा दी हैं जिससे चढ़ाईमें सरलता हो गई है । गोमट स्वामीके अतिरिक्त कारकलमें दो वस्तिवाँ एक स्तम्भ है । हिलंगगदी वस्ती ग्रामसे अनुमानतः २ मीलकी दूरी पर है । और एक ऊँची पहाड़ीकी तट्टहटीमें बना हुआ है । इस पहाड़ी परसे समुद्र जो १५ मील है, का पूर्ण दृश्य दिखलाईपड़ता है । वस्तीमें मुख्य दर्शनीय वस्तु एक ९० फीट ऊँचा पत्थरका स्तम्भ है । जो कि उसके दरवाजे पर बना हुआ है । और अच्छी चाँदी और धातुकी प्रतिमाएँ भीतर विराजमान हैं । स्तम्भ समस्त कलागमोंसे सुन्दर माना जाता है । डीलडौलकी अपेक्षा वह अवश्य सबसे बड़ा है परन्तु कारीगरीमें यह मूड़वट्टीके और-खास कर वेनूरके एक स्तम्भसे अच्छा नहीं है । कारकलमें सप्तोत्तम मंदिर 'चतुर्मुख' नामक है । जो गोमट



स्वामीसे कुछ दूरी पर है। वह मंडपके रूपमें बनाया गया है। और उसके बीचमें एक बड़ा द्वार है। और उसके चारों तरफ एक बरान्डा है। छत वेलोरी पत्थरके चौकोंसे पटी हुई है। किसी समयमें वह मठके तौर पर समझा जाता होगा। बाहरी दीवाल और स्तंभों पर सुन्दर नकाशीका काम है। नकाशीमें देवताओंकी मूर्तियां चंद्र सूर्यादि बहुत ही महीन और मनोज्ञ हैं। जैसे कि चीनी हथीदांतका काम होता है स्तंभोंके आसपास बैसी ही नकाशीके कामके झाड आदि हैं। और विशेषतया दोवालके पत्थर पर सैकड़ों नाग एकत्रित लिपटे हुए अथवा एक हास्यमय स्तिर फलपत्तोंसे शोभित उक्रे हुए हैं और भीतर बाहर धातुकी बह्मसासन जैन मूर्तियां विराजमान हैं।

घेनूर-वेनूरके गोमटस्वामी २९ फीट ऊंचे हैं। और एक इंचोंके चबूतरे पर खड़े हुए हैं। यह मूर्ति भी कारकलकी मूर्तिके समान उत्तरी ओर मुख किए हुए हैं। इस कारण सूर्यका प्रकाश उनके धुंधले मुखकी आकृतिको नहीं चमका सकता। वह मूर्ति गुप्तपुर नदीके बाएं तट पर उपस्थित हैं। मूर्ति पर एक बिगडा हुआ लेख है। जहां तक वह पढ़ा गया है उसका सारांश यही है कि चामुण्ड वंशीय शिम्भरा-जाने बेलगोलके भट्टारक चारुकीर्तिके कहनेपर यह मूर्ति बनवाई थी। चारुकीर्ति शिम्भरा-जके धर्माचार्य थे। मूर्ति सन् १९०४ ई०में निर्मापित की गई थी।

वेनूरमें एक जातिश्वर नामक जैन मंदिर और है उसमें भी एक मानस्तंभ है। यह स्तंभ भी

कनारामें सर्वोत्तम समझा जाता है। उसीके निकट एक वेदी है जिसके द्वारकी चौखट नकाशीका एक अद्भुत नमूना है। यह चौखट एक प्रकारके पत्थरमें उकेरी हुई है। अनुमानतः मैसूरसे लाई गई होगी। वेदीमें काले पापा-णकी २ फीट ऊंची एक ही पंक्तिमें २४ तीर्थ-करोंकी प्रतिमाएं विराजमान हैं। प्रत्येक प्रतिमा एक गोलाकार महिरावमें विराजमान हैं।

मूडचट्टी-मूडचट्टी विशेषतया जैन मेमारीके कामका चन्द्रनाथके मंदिरके कारण सर्वोत्तम नमूना है। यह मंदिर कारकलको आनेवाली मुख्य सड़ककी एक शाखा पर प्रायः १० मीलकी दूरीपर है। भीतर जानेके द्वार पर एक अति सुंदर नकाशीका काम है। उसके पीछे मानस्तंभ हैं। उन पर भी नकाशीका काम अच्छा है। मंदिरकी आकृति चीनाइयों (chinese) की तरह तीन खंडी है। छत एक दूसरेके ऊपर एक अद्भुत रीतिमें बनी हुई है। और पत्थरके चौकोंसे लदी हुई है, परन्तु सबसे ऊपरी खंडमें पत्थरके चौकोंकी जगह तांबेके चौके हैं। मंदिर एक सहज स्तंभोंके नामसे प्रसिद्ध है। कारण कितने ही स्तंभ अनेकों प्रकारकी सुंदरताको लिए हुए बने हैं। भीतर जानेकी मनाई है। परन्तु दर्शकोंके लिए द्वार खोल दिया जाता है। एक बत्ती अंधेरेमें टिमटिमाती हुई और तब तीर्थंकर श्री चंद्रनाथकी धातुकी प्रतिमा दृष्टिगोचर होती है।

मृतक स्थानोंपर-स्मृतिमें बनाए हुए चबूतरे अंग्रेजी मृतकस्थानके सदृश दशक वहीं निकटमें दूसरे स्थान पर देखेगा। स्मृति-चिन्ह प्रदर्शक

ત્રવૃત્તિ-જો જીર્ણ હો રહે હૈં-જૈન મુનિયોંકે
ત્રક સ્થાન પર એક પ્રકારકે પથરં ઔર બિલોરી
ત્રથરકે બનાવે ગણે હૈં । આવતાકાર રૂપમેં
ચિહ્નત હિન્દુઓંકે કઠાકે મંદિરકે સદશ હૈં ।
મૂઢવત્રી મેંગલોરકે ઉત્તર પૂર્વમેં-એક મૈદાનકી
ત્રહટીમેં ૨૨ મીલ પર હૈ ।

ગુરુચંકેરી-વેલ્લનગદીમેં દો મીલ ગુરુ-
કેરીકે સંહર અધિક પ્રસેસનીય નહીં હૈં ।
ફેવલ દો મંદિર શાંતેશ્વર ઔર ચંદ્રનાથકે હૈં ।
ઔર એક સુંદર મંડપ ઊંચે ૨ સ્તંભોંકા હૈ ।
ત્રીનોં ઈમારતેં એક દૂસરેકે નિકટ હૈં । ઉનકે
બાહર માનસ્તંભ હૈં । ઈસકી નકાશીકા કામ
જિલે મરમેં અતિ સુંદર હૈ ।

ઇસ પ્રકાર કનારામેં જૈનિયોંકે સ્તૂપ હૈં ।*

અનુવાદક-“મારત” અલીગંજ (ઘટા)

* અંગ્રેજી જૈન ગઝટકે લેખસે અનુવાદિત ।

જૈન સમાજ સુધાર ।

હરિગીત છંદ.

જાગે બ્રહ્મા ? જાગે ખ્યાસ ? તિમિર અધ દૂર ભાગવા,
તમ સ્થિતિને સુધારીને, નિજ ગાતિને ઉદ્ધારવા.
પૂર્વ દિશાને સ્વર્ગ આપી, એમ કહે હે ? બાધજો ? વળી વિર લાગ્યે સાચબ્યાનું, પુપ્પ તમને લાગશે;
પણ પક્ષી બી સખ ઉઠે ચાલે, શયન કરે કેમ જોનીજો ? મિત્ર વર્ગનું શ્રેય દેખી, સુખ મોહન જાણશે.
તમ બધુજો પીણ છે, સંકટ તણા પરતાપથી,
સ્તૂતીને વળગી રહી, નિર્ધન બન્યા તે ખંતથી.
વળી જાન વિશુ દલકા ઈમાં, તે જૈન શબ્દ ત્યજવતા,
નિજ દરજ ત્યજ ખંતથી, નિજ માત તાત લગવતા.
તેજ જનને બોધ દેવા, ખંત રાખી આવજો,
એમ કંઈ ને આતમે, હમંગ યદી સુધારજો.
તમ કુળમાં કલંકે કુડાં, બાળ લગ્ન સમાન જે,
નાની વયની બાળા સાથે. જદ પરણી નય તે.
વળી યોગ્ય અવિયોગ્ય જોડાં, ગાંતિમાં જોડાય જે,
નિજ કન્યાનું દ્રવ્ય લઇ, સુખમાં સમાવે તાત તે;
વળી કુળનું અભિમાન રાખી સુત શત્રુ થાય જે,
નાની વયમાં મોટી કન્યા, લાવી પુત્ર પરતાપ તે.
જે અને મિત્ર ધણા ક્યાલ, જે છે ગાંતિમાં,
કમ્મર ઈસીને દૂર ભગાવો, સુખ થાયે જાતિમાં;
તોજ જનની વિકૃતા, આવી ખરા પ્રભાશુની,

જો જાતિ બધું યોગ્ય રસ્તે, ચાલે પુરુષ ખ્યાસી.
હું અને તમે બધાજો, પુત્ર વિરના છે ખરે,
પણી મિનતા શી રાખવી, છે ધિક્ક તેથી આજરે;
શ્વેત વસ્ત્ર ધારણ કરે-ધેતાંખરે પેખાય છે,
નગ્ન મુદ્રા ધારવે, દિગંખરે દેખાય છે.
મેદ બાવ છે કલ્પનાજો, શાસ્ત્ર બનને એક છે,
નામ રાખ્યાં હસરં એ, શરૂનો નિજ દેક છે;
ગામવિશુ જમ છંદગી, હતી તમારા લોકની,
ત્યાહરે બુદ્ધ પડ્યા તમ, જૈન એ શુભ સંપત્તી.
ગાન પામ્યા ચાલુ કાળે, લાગીયા કંઈ જાણવા,
તો મિત્રતા સો છોડી દો, રૂપિ ધર્મ ઉદ્ધારવા.
તમ ગાંતિલા સેવે ધણા, મિત્ર્યાત્વે જેવા દેવતા;
ઉપદેશ આપો તેમને, તે થાય જેથી દેખતા.
પાત્રાત્ર વિધા પામેલા, સુવાન વર્ગો માનજો,
નિજ ગાંતિલાને રહાય આપી, પ્રેમ ધરી ઉદ્ધારજો;
આ સમય કહેવાનો નથી, પણ કરી બતાવા દારજો,
કરી બતાવો કામ ઉડાં, આવી ધરથી બારજો.
તોજ આ જૈનો તણો, ઉદય યશે આવેશથી,
તમ બધુજો ધર્મે રહી, ધન ધાન્ય ધાન્ય પામે પ્રેમથી;
વળી વંશની વૃદ્ધિ થઇ, બળવાન પુરો પાકશે;
નિજ આતમજળથી, રહાય આપી જૈનને ઉદ્ધારશે.
ગાંતિની ચરતી યદ, સંસારમાં સુખ પામશે,
જદ જન આનંદથી, આશીસ્વદો આપશે.
કામ્ય થમાજો ચાલજો, સુત-સુખ અવધાર,
મોટી ઉમરમાં કરો, હરત શ્રદ્ધા નિજ બાળે.
વર મોટા કન્યા લગુ, એક સંબંધમાં સાર,
જદાને બાળા દીધો, જો એક સંસાર.
કન્યા અપો આપશે, માતતાતને શિર,
અનર્થ પેતે આદરે, માટે સમજને વીર.
સંબંધ એવા નવ કરો, જેથી થાયે કુખ,
લાખકે જોડાં મેળવો, મોહન પામે સુખ.

કાળીસા મિત્ર મંડળી.



कैरि करस्तुफल !

" Lives of great men all remind us,
We can make our lives sublime ! "
hence:—

" Live to some purpose; catch time as it flies "

For time is a taper that burns,

A gem of great value, a rich floating prize,

Once departed it never returns "

यह बात निर्विवाद है कि जिस-मार्गको प्रति-
ष्ठित-उदार आत्माओंने ग्रहण किया हो उस
ही मार्गके अनुयायी अन्यान्य श्रेणीके महत्त्व
हो जाते हैं। हम अपने पूर्वके महान पुरुषोंके
जीवनसे अपने जीवनसंग्रामको सुदृढ़ बना
सक्ते हैं। इस व्याख्याकी सत्यतामें इतिहास
तो है ही परन्तु यह स्वतः प्रमाण है। आपके
समक्ष उदाहरण उपस्थित है कि आज कर्मचर-
म० गांधीके प्रखर-प्रचुर चरित्रने हजारों हृद-
योंको अपनी ओर आकर्षित ही नहीं कर
लिए है सुतरां बहुतेरे तद्विरुद्ध आचरण भी करने
लगे हैं। भारतवर्षमें सदैवसे ऐसे ही रत्न पैदा
होते आए हैं जिनसे भारत-सन्तानका गौरव
बढ़ता रहा है परन्तु खेद है कि हमारी लापर-
वाहीसे पूर्वकी कितनीक महान आत्माएँ लुप्त हो
गई हैं। जैनियोंमें अनेको भारत रत्नोंने जन्म
ले इसके अब तकके कलंक-अकर्मण्यताके कलं-
कको धो दिया है। परन्तु आश्चर्य कि हमारी
समाजने इन महात्माओंके जीवनचरित्ररूपी
शक्तिसे अपने सन्तानके हृदय बलवान नहीं
किए हैं। आवश्यकता है शीघ्र ही दिगं-
जैन रत्नोंसे हमदमाते हुए एक रत्न-
कारकी ! अतएव समाजमें मि० उदरावसिद्ध

ठाकुरने रामपूतानेके प्रसिद्ध जैन महान् आत्मा-
ओंका चरित्र अंग्रेजी भाषामें प्रकाशित किया
है। उसीके अनुसार आज हम एक प्रसिद्ध
महात्माका जीवन आपके समक्ष उपस्थित करते
हैं। जैन संन्यासियों, सेनापतियों, हमारे चरित्र-
नायककी जीवनी विशेष मनोरंजन कारक है।
वस्तुपाल सर्वगुणसम्पन्न थे—वे निपुण राननी-
तिज्ञ, वीर योद्धा, अध्यात्मिक कविताके प्रेमी
थे। आपके दानशीलताकी सीमा नहीं थी
और उदारता भेदभाव जानती ही न थी।
आप जैन धर्मानुयायी थे परन्तु आप सर्व संप्र-
दायों पर कृपा रखते थे। आपने सुसलमानोंके
लिए मसजिदें बनवाई और आपसी प्रेमको बढ़ा
किया। ऐसे ही-वीरोंके चरित्र हिंदू सुसलमा-
नोंमें समभाव पैदा करनेको कार्यकारी हैं और
इसीसे आशा है कि:—

हिंदू, सुसलमान जैन ईसाई, परस्पर चखेंगे प्रेम मिठाई !

'मेरू विजय'के अनुसार वस्तुपाल और उनके
भ्राता तेजपालका जन्म सन् १२०९ ई०
(वि० सं० १२६२)में उनकी माता कुमारदेवीसे
और उनके द्वितीय पति षषेलोंके सेनापति
असराज द्वारा हुआ था। कुमारदेवी अति रूप-
वान और अलखिलवद पट्टनकी निवासिनी थी।
इनकी अल्प अवस्थामें ही इनके पतिका देहांत
हो गया। एक दिवस यह हरिमद्र सूरिका
व्याख्यान सुनने गई थी और वहां असराज
इस परम सुंदरीके लावण्यमयि रूपके प्रेमवाणों
द्वारा वीधे गए। कुमारदेवी पूर्ण सती साध्वी
थी, परन्तु असराज अति कामातुर हो रहे थे,
परन्तु सतीका शील डिगाना देदी स्त्री थी।



अन्तमें वह बलात्कार उस सुंदरीको वहासे लेकर रातों रात असापल्ली (अहमदाबाद) पहुंच गया। अब इधर असराजका तीव्र अनुरोध और उधर कुमारदेवीकी चढ़ती अवस्था ! अंतमें दोनोंकी लक्ष्म शुभ महीर्तमें हो गई। और कुछ दिनोंमें उसके चार पुत्र रत्न उत्पन्न हुए—लुनिगा, मछुदेव, वस्तुपाल, और तेजपाल। ई० १२१७ में वस्तुपाल ललितादेवीसे प्रेम—विवाह बंधनमें बंध गए। और थोड़े समय पश्चात् तेजपालने अनुपमा देवीसे विवाह संस्कार कर लिया। चालुक्य साम्राज्यके अधिपतन—खंडहरों पर ही बघेलोंका वंश खड़ा हुआ था। द्वितीय भीम (ई० ११७८—१२४१) एक अयोग्य सम्राट इस चालुक्य वंशमें हुए। इन्हींके राज्यकालमें चालुक्य साम्राज्य जो पहिले ही एकता राक्षिने नष्ट कर चुका था अधःपतनकी ओर अग्रसर हुआ। जब भीम अपने अधिकारमें उत्तर भाग लानेका प्रयत्न कर रहे थे उस समय दक्षिणमें लवणप्रसाद धोलकामें एक स्वतंत्र राज्याधिकारी बन बैठा। और अपने साम्राज्यको खूब फैलाया—इतने पर भी वे अनिहल्लबड़के सम्राटके आधिन रहे। वस्तुपाल और तेजपाल वीरधवल महाराजके विख्यात मंत्री रहे थे। वीरधवल महाराजके सुयोग्य—सौनेके पिंवारोंको शीघ्र ही इन भाइयोंने अपना लिया। और महाराजने उनके महत्वको जान उन्हेंके सुपुर्दे राज्यकार्य कर दिया। वास्तवमें विद्वान ही विद्वानोंकी परीक्षा और मान कर सका है। गुणी ही सर्व ठीक मान्य है। वे भी उधर पूर्ण मुचाल राज्य प्रबन्धक और रणनीतिनिपुण

सेनापति निकले—जिससे महाराजके और भी विश्वासपात्र हो गए। उन्होंने स्वतंत्रतासे विचारपूर्वक न्याययुक्त वर्ताव किया और संम-यानुसार महाराजके अयोग्य काय्योंके करनेसे वर्जित रखनेमें संकोच न किया। एक समय दिल्लीके सुल्तानके मुल्ला—धर्माचार्य मक्का शरीफ भी ज्यारतको ज ते हुए धोलकामेंसे निकले इस समय महाराज वीरधवल इनको पकड़कर अपना बंधी बनाना चाहता था, परन्तु इन भ्राताओंने महाराजको उसके शरीर तकको न छूने दिया। इतनाही नहीं बल्कि उन्होंने—इस यात्रीका न्योताकर राज्य नियमानुसार अतिथि सत्कार किया। इस कृतज्ञ यात्रीने लौटने पर सुल्तानसे इन भ्राताओंकी विशेष तारीफ की और इन्हीं द्वारा सुल्तान और धोलका नरेशमें मैत्रीपूर्ण संधि हो गई। उस समय एक निवासी आंखो देखी तौर पर वस्तुपालका राज्य प्रबंध इस प्रकार वर्णन करता है:—

‘वस्तुपालके राज्य प्रबंधमें नीच मनुष्योंने—शत्रोंने घृणित कार्यों द्वारा जनवगोपाजन करना छोड़ दिया था। बदमाश पीले पड़ जाते थे और सुचरित्र दिनदूनी उन्नति करते थे। वस्तुपालने समुद्रकी लकड़ीका अन्त कर दिया और दूधली दुकानों (Diary)में चतूरे बनवा हर एक जातिकी छुआछुतसे बचा दिया। इन्होंने पुरानी इमारतोंकी मरम्मत की, वृक्ष लगवाए, कुए खुदवाए, बगीचे लगवाए और शहरको फिरसे बनवाया।” इन भ्राताओंके सुयोग्य कार्योंका अंत यहीं न समाप्ति है। उन्होंने अपने सम्राटके साथ रणस्थलोंके दुःखोंको भी सहं कर



महाराजको विजयलक्ष्मीसे शोभित किया। उनके वीरतापूर्ण कार्य रूपी कमलों पर कवि भ्रमर मुग्ध हो उस समय भजाते-कविता कते रहे थे। कैम्बे (Cambay) के बछवान सरदारको परास्त करना दिल्लीके मुहम्मद घोरी सुल्तान मुरुजुद्दीन बहरामशाह ऊपर उनकी विनय, और उनके द्वारा गोघाके अधिकारी घुघुलका कैद होना-यही इन भ्राताओंके वीरतापूर्ण कार्य उनकी भारतमाताके महान् योद्धाओंकी श्रेणीमें रखनेको बाध्य करते हैं। ए जैन भ्राता-ओं ! वीर पराक्रमी नर महावीर संतानके अतिरिक्त कोई अन्य व्यक्ति नहीं हैं। परन्तु वर्तमानकी हम सदृश संतानके समान भीरु-कायर नहीं हैं। इन्हींमें वास्तविक "जैनत्व" था। सन् १९२० में वस्तुपालने श्री शंजुंनयजी व गिरनारजीका पवित्र संध चला 'संधपति' की पदवीसे अपनेको विभूषित किया था। सन् १९२८ में सुधारक नागचव्दने तप-गच्छको अवतीर्ण किया। इन भाइयोंने इस कार्यको अपनाया। पुन्यवान् जीव अपनी लक्ष्मीको भी मुफल करनेके हेतु उसको उत्तम कार्योंमें लगानेसे नहीं चुकते। इन दोनों भाइयोंने भी मन्दिर धर्मशालादि बनवा अपनी लक्ष्मीको सार्थक बनाया। सुप्रसिद्ध मेमार सोमदेवने उनके आबूके मन्दिर बनाए थे। यह मन्दिर विमलशाह द्वारा निर्मापित मन्दिरके निकट है और सन् १९३० में बनकर तैयार हुआ था। जैसे निम्न श्लोकसे विदित होता है:-

"वैकुंठे यसुवत्पाशा १०८८ मितेव्दे भूरि-
रद्वयपाशे । सत्पासादं सविमलवत्पाशाद्वं व्यपा-

पयत् ॥ ४० ॥ वैकुंठे वसुवत्स्वर्क १२८८
मितेऽव्दे नेमिगदिरम् । निर्ममे ह्यणिगवसत्पाद्वयं
सचिवेन्दुना ॥ ४१ ॥ कपोपलमयं धिषं श्रीतेजः
पाल मंत्रिरात् । तत्र न्यास्थत्संतमतीर्थ निष्पन्नं
द्वक्सुधाजनम् ॥ ४४ ॥ मूर्त्तिः स्वपूर्ववश्यानां
हस्तिशालं च तत्र सः । न्यवीविशद्विशांपत्युः
श्रीसोमस्य निदेशतः ॥ ४५ ॥ अहो शोभनदेवस्य
सूत्रधार शिरोमणेः । तच्चैत्यरचनाशिल्पाज्जाम
लेभे यथार्थताम् ॥ ४६ ॥ तीर्थ द्वेयेऽपि भग्नेऽस्मिन्
देवान्लेच्छे प्रचक्रतु । अस्पोद्धारं द्वीशकाव्दे
बह्निवेदार्क संमिते १२४९ ॥ ४८ ॥ तत्रादयतीर्थं
स्योद्धर्त्ता हेरुओ महजसिंहभूः । पीथडीस्त्रतरस्याम्
द्वयवहृच्चंड सिंहजः ॥ ४९ ॥ कुमारपालभूपाल-
श्रीलुग्य कुल चन्द्रमाः । श्रीवीर चैत्यमस्योचैः
शिखरे निरमीमपत् ॥ ५० ॥

श्री अर्जुनकल्पः समाप्तः ।

यह मंदिर अति सुंदर और मेमारीके कामका नमूना है। और मि० फरग्युसनके वाक्योंमें इसकी उकारनेकी तरतीय और हवाला देनेकी ग्लवसुरती अक्सर इस मुलकमें भी लासानी है। इसी वर्ष वस्तुपालने १ मंदिर गिरनार पर और शंजुंनय गिरि पर बनाये। वस्तुपालकी कवित्वशक्ति भी कुछ ऐसी वैसी न थी। आपका कवि नाम वसंतपाल था। सोमेश्वरने इनकी विद्या-निपुणता पर मुग्ध हो इन्हें "सरस्वती-पुत्र" कह कर लिखा है। मेरुतुनामें इनकी कवित्वशक्तिके उपलक्षमें इन्हें एक महान कवि कह कर पुकारा है। 'नरनारायणावंद' नामक इनकी पुस्तकोंमें जिसमें इन्होंने महाराजा कृष्ण और अर्जुनके गिरनार पर्वतपर विचरन और अर्जुन



द्वारा सुपद्रा हरणका वर्णन है। अत्युत्तम है।
 इन्होंने अनुमान तीनके अति विशाल पुस्तकालय
 स्थापित किए थे। वीरधवल सन् १२३८ में
 स्वर्गवासी हो गए। इनकी मजाकी इनसे इतनी
 भक्ति थी कि ११० मनुष्योंने उन्हींकी चिता-
 पर स्वप्राण विसर्जन कर दिए। इससे बढ़
 कर राज्यभक्ति शायद ही और कहीं उपलब्ध
 होगी। मातवासी सदैवसे न्याय, राजा और
 धर्मके लिए अस्ता 'सर्वस्व' अर्पण करनेको
 तैयार रहे हैं। दोनों भ्राता इस समय भी स्थि-
 रचित थे। उन्होंने अंतमें चिताके और पास एक
 सरल पहिरा खड़ा कर दिया जिससे कोई अन्य
 मनुष्य अपने अमूल्य जीवनका अंत न कर दे।
 वीरधवलकी मृत्युसे उनके दो पुत्रों वीरम् और
 विसलमें शगड़ा हुआ, परन्तु वस्तुपालकी कृपासे
 विसलको ही गद्दी मिली। और विसलदेवके
 ही राज्यकालमें दोनों भ्राताओंके मंत्रीकालका
 अन्त हुआ। एक दंतकथासे यह इस प्रकार है
 कि राजाके मामासे वस्तुपालने कुछ शगड़ा कर
 लिया था अर्थात् एक समय राजाके मामा सिंहने
 एक निर्दोषी मुनिको विशेष दुःख पहुँचाया था।
 जब वस्तुपालको यह मालूम हुआ तो उन्होंने
 सिंहकी उंगलियाँ काट लीं। सिंहने राजासे
 शिकायत कर इन्हें माणदंड आज्ञा दिलाई परन्तु
 सोमेश्वरके बीचमें पड़नेसे राजाने क्षमा कर दिया।
 वस्तुपालको इस अकारण अपमानसे हृदयमें
 अति दुःख हुआ। कुछ ही समय पश्चात् इनका
 शरीर अस्वस्थ हुआ और इन्हें उबरने आ घेरा।
 कारणवश एक स्थान परिवर्तनकी राय ठहरी।
 अतः वस्तुपाल शत्रुमयकी यात्रार्थ रवाना हुए

परन्तु रास्तेमें इनकी हालत विशेष खराब होनेसे
 इन्हें साधु अकेवलयकी कुटियामें ले गए। वहाँ
 इन्हें एक ग्रामीण चौपारमें ठहरा दिया। इनके
 पुत्र जित्रेपाल और भ्राता तेजपाल इनकी सेवामें
 उपस्थित थे, परन्तु इनकी स्थिति चिन्तानेक
 होती गई। अंतमें एक साधुने इन्हें सम्बोधा
 और अन्त समय श्री ऋषभदेवका नाम लेते
 हुए यह निम्न श्लोक पढ़ा था:—जिसका अर्थ
 होता है कि मैंने कोई साधुनर्तकी प्रशंसाजनक
 कार्य नहीं किए हैं, इसी प्रकार मेरा जीवन
 पूर्ण होता है। थोड़े समयके खामोशीके पश्चात्
 मृत्युदुःखा पर पड़े हुए मंत्रीने अरहंतोंको नम-
 स्कार कर प्राण त्याग दिये। यह समय सन्
 १२४१में था। मृत्युके मनुष्यको इस अस्वामयिक
 मृत्युसे असीम दुःख हुआ। अंतमें इनके पुत्रादिने
 अन्त समयकी क्रिया की थीं। और जहाँ पर
 इनकी दग्ध किया हुई थी वहाँ पर इनके पुत्रने
 श्री ऋषभदेव मूलनायकका मंदिर निर्मापित
 कराया था। पाठको! समयकी महिमा विचित्र है।
 उसीकी महिमासे हम भी आपसे विदा होते
 हैं जिसने वीर-वस्तुपालके तेजमय-ओजपूर्ण
 जीवन लीलाको क्षणोंमें नष्ट कर दिया।
 रोजान्गी इषरकी सावित है, यहाँसे दिल उठा
 अपना।
 किसीके घरमें शादी है कहीं हंगामा मगम है॥
 परन्तु मित्रो! इससे दुनिया सारपूर्ण है
 यही समझिए क्योंकि वस्तुपालने इसी दुनियामें
 ही रहकर अपनी जीवनलीला ओजपूर्ण बनाई
 थी। इस लिये कुछ वास्तविक कार्य करके
 दिखाएँ। इति शुभम्।
 विनीतः—कामताप्रसाद जैन, अलीगंज (फा.)

“વિદ્યાર્થીગૃહ” યાને વોટિંગ હાઉસ ।

—(લેખક—નામચંદ્ર સ. ન. સંઘવી, કેરવાડા)

‘વોટિંગ હાઉસ’ આપણામાં પૂર્વજાતના શુદ્ધ-કૃત્ય રૂપાન્તર છે. શુદ્ધકૃત્યોમાં સચવાતી આર્થિક પરિવ્રતતા અને સાદા રંગે પોતાનું રૂપ એ રૂપાન્તર સાથે, પ્રાચીન સ્વચ્છતા અને આત્મ એક (સાધ્ય)માં દેવની નામધું છે. કેટલાક ઈસીય ભાષા ગ્રંથ સંગ્રહો એમ માને છે કે આ તો ઉગતિક્રમનો પરિવર્તન કાળ છે. કેટલાક જુના વિચારના વિદ્વાન પુરૂષો એને અધોગતિની સીડી કહે છે. આ વિચાર મુક્ત પ્રવ્રતનું તિલકરૂપ રહેલું નથી. સ્વાય તેમ હોય, પરંતુ જે સ્થિતિમા આપણે છીએ, તે સ્થિતિને સુધારી દેવા કાળને અનુસરતા જે, જે, સાધનો આપણી પાસે નાવ હોય તેમનો સદુપયોગ કરવા સજ્જ થી વિચાર કરવો ખામ જરૂરી છે.

આપણી વોટિંગઝોને એવા ધોરણ ઉપર મુક્તિ જોઈએ કે, પોતાની મેળે પોતાનો નિર્માન કરી શકે. આ કાર્પ જે રીતે ચક્ર શકે એમ છે-એક તો જાહેર મદદથી અને બીજું એમા રહેતા વિદ્યાર્થીઓની મદદથી. પહેલાંના સમયમા માવના શુક્રા, પુરાણુદિ ઉપરથી માવુમ પડે છે કે, તે રૂપ રૂપથી વિદ્યાર્થીઓની પરસ્પર સહાયથીજ આશનાં હતાં. કાલમાં નવો જામલ કરવામાં આવેલી

યોગમાં આવતું બંધ થયું હોય તો પણ કાંઈક વખત આપણા ઉપયોગમાં આવવાનું છે, અને એવીજ રીતે હમેશ આપણું જ રહેવાનું છે. આ સ્વતંત્રિતા સત્તા આપણે જાણીએ છીએ તોપણ અમલમાં મુશ્કેલી આપણું હૃદય આનાકાની કરે છે અને પાશુ દરી જાય છે. આવી ભાવનાઓ વિદ્યાર્થી સમાજમા દાખલ થાય તો અનેક રીતે આ દાર્થ સાધી શકાય છે.

અમેરિકામાં વિદ્યાર્થીસ કરવા જતા દેશના એક માધ્યમી દિલી વિદ્યાર્થીઓ સ્કૂલમાંથી રજા વગેરેના અવકાશના વખતે જોઈના સાધન પેશ દરીને ત્યાં આર્થિક ખર્ચાળ છાત્રન ચલાવે છે; અને વિદ્યાર્થીસ કરે છે. આમાં કેટલેક અંશે એ દેશનું સામ્ય બંધારણ અને સામાજિક બંધારણ મન કર્યાં વગુ દરો ખાત અને તે દેશના લોકોએ પેતાના સ્વસ્થોપ સોદાના કિતને માટે એવી અનુ-કૂળતાઓ કરી આપી દશે અને તેનો લાભ પરં-ત્રીય વિદ્યાર્થીઓને પણ મળતો દશે. આ કાંઈ નેકાક ત્યના વિદ્યાર્થી સમાજની કુશળતા જતાવ છે.

આપણી વર્તમાન સ્થિતિ, ધીમે ધીમે પુરોષ અમેરિકા દેશના જેવી ખર્ચાળ ગતી જાય છે. એક આખા કુટુંબના ભણત પેટનુને મીટી થતા ખર્ચ જેટલી રકમનો ખામ એકાદ વિદ્યાર્થીને હવું સિદ્ધાન્ત આપનાના કાર્યમાં કરેલો પડે છે. હવે જે આપણે તેમની સ્થિતિનું એક રીતે અનુકરન કર્યું છે, તે હવે બીજી રીતે પણ ખાત જરૂરીઆતવાળી સ્થિતિમા એમની સ્વાસ્થી પરનિનું અનુકરણ કિં-ત્રવાનને (અપિણને) કરું પડશે, નહિ તો આપ-જોજ આપણું બચિવર સાથે દરીને ખમાડનાર નીતીનું જો નિઃસંશય છે.



એટલું જ નહિ પરંતુ એક શુભામ પ્રાન્તને અમેરિકાના શહેરીઓની સમાનતામાં લાવી મુકી.

એજ મહાશયે રચાવન કરેલી ટસ્ટેજ સંસ્થામાં હાલ કેવી શિક્ષણ પ્રણાલિકા ચાલુ છે, તે નીચેના હિંદી લેખ ઉપરથી લીધેલી હકીકત ઉપરથી માલુમ પડે એમ છે એ લેખ 'અમેરિકાના એક યાત્રી' લેખકે 'સરસ્વતિ' માસિકના જુન માસના અંકમાં લખી મોકલ્યો છે. ત્યાં જે શિક્ષણ આપવાના આવે છે તેમાંથી, વિદ્યાર્થીને ઔદ્યોગિક શિક્ષણ મળે છે અને તેની સાથે સંસ્થાનું કાર્ય ચલાવવાને અને વિદ્યાર્થીને પોતાને પોતાનું બચત પોષણ કરવાનું સાધન પેદા થાય છે. " ટસ્ટેજ સંસ્થાના કાયદાને માટે જે વર્તમાન પત્ર અને ચાર માસીક પત્ર ત્યાંથી છાપીને પ્રગટ કરવામાં આવે છે. આ વિના ખીજું પણ કેટલું દુરકર કાર્ય પાસેના નગરો તથા પાકાલાને માટે કરવામાં આવે છે. આ વિભાગમાં ચતા કાર્યનું મૂલ્ય શને ૧૯૧૧ માં ૧૬૨૧૭ ડોલરનું અનુમાન કરવામાં આવે છે.

પાકાલાનું મુખ્ય મકાન શને ૧૮૮૧ માં બનાવવામાં આવ્યું હતું એ વખતે પાકાલાની સમીપમાં બહુ મોટી જાડી હતી. એ જાડીને કાપીને લાકડાં વેચવામાં આવે તો બહુ મોટા ફાયદો થાય એમ માલુમ પડવાથી તે જાડીને કાપી શને ૧૯૧૦માં મકાન વગેરેના ખર્ચમાં લાગે એવાં કુટ ૭૮૦૦૦ લાકડાને વહેરીને તૈયાર કરવામાં આવ્યાં, કુટ ૧૫૩૪૦૦ લાકડાનાં પીડ પાટીયાં વગેરે બનાવવામાં આવ્યાં અને ૧૦૫૦૦૦૦ કુટ ઘડીને તૈયાર કરવામાં આવ્યાં અને બીજા ઘણા લાકડાં બલતલુના ઉપયોગમાં આવ્યાં.

પાકાલામાં કામ કરનાર એક મજૂરે બહારની ટેલોક વસ્તુઓની મદદથી એક સામાન્ય જાડી બનાવી. અને ત્યાર પછી શન ૧૮૮૮માં જાડી અને પેડાં બનાવવાનું કારખાનું એ સંસ્થાને અંગ્રેજ ખોલવામાં આવ્યું. એવીજ રીતે ખેતીના કામમાં વડર પટ્ટાં યંત્રો અને સડકો બનાવવા

વગેરેનું કામ પણ એ સંસ્થામાં રહેતા વિદ્યાર્થીઓ કરતાં હતા.

સંસ્થાને. માટે ધાતુનાં વાસણનું ખર્ચ ઘણું પડતું હતું. એ ધાતુના વાસણો બનાવવાનું કારખાનું સંસ્થાને અંગે ખોલવામાં આવે તો ઘણું ફાયદો થાય એમ જણાવવાથી હુદય આદમ નામના એક સીધીને નોકર તરીકે રાખવામાં આવ્યો. આ માણસ મોચીનું કામ પણ જાણતો હતો. એની મારફતે વિદ્યાર્થીઓને એ કામ શીખવાડવામાં આવ્યું.

હાલમાં એ વિભાગમાંથી ઘણે ભાગે જુનાં નવાં મશીને ૩૦૦૦ વાસણ તૈયાર થાય છે. મોટી મોટી ઇમારતોને માટે અહિં આં ઢોળ ચડાવેલાં પતરા છત વગેરે જડવામાં કામ લાગે તેવાં તૈયાર કરવામાં આવે છે. કેદા જેટલ પતરાં (છપરાં ઉપર જડી થકાય એવાં) પણ ત્યાં તૈયાર કરવામાં આવે છે.

મોચીઓના કારખાનામાં જુના જોડાઓને ચોગડાં મારવાનું કામ તથા નવા જોડા બનાવવાનું કામ કરાવવામાં આવે છે. તે સાથે ઘોડાની સર-સામાન, ગાડીઓની ગાડી વગેરેનું કામ પણ કરાવવામાં આવે છે. આ કામથી એ સંસ્થાએ શને ૧૯૧૧મા ડોલર ૩૯૬૪ પેદા કર્યાં હતાં.

સોડું ગાળવાનું યંત્ર પણ ત્યાં રાખવામાં આવ્યું છે. તેમા દર્બાજ, ખાટલા તથા બીજા જુદા જુદા પ્રકારનાં યંત્ર વગેરે પણ બનાવવામાં આવે છે.

આ સંસ્થા તરફથી ૯૫૪૫ કુટ બચાવના તથા ૩૦૯૩૭ કુટ પાણીના નળ નાખવામાં આવ્યા છે. આ વિભાગમાં શને ૧૯૧૧માં ડોલર ૬૧૭૫ નું કામ કરવામાં આવ્યું હતું. આ સંસ્થામાં રહેતા ૧૬૦૦ માણસોના તમામ કપડાં ધોવાનું કામ એ સંસ્થામાં અબચાસ કરતી વિદ્યાર્થીનીઓજ કરે છે. દર વર્ષ ૧૪૩૨૦૨૩ કપડા તેમને ધોખીખાનામાં ધોનાં પડે છે.

લેખન વાંચનનું શિક્ષણ.

પાકાલામાં સામાન્ય શિક્ષણ આપવાની શાળા 'હાલીસ પી. હનરોગટન મેસોરીઅલ બીદરગિ'ના નામે

૧ અકવાદિક કે દૈનિક તે મૂળ લેખમાં લખ્યું નથી.



થી ઝોળખાઈ છે. આ મકાન મહાશય હનરીગિટનની પત્નિએ પોતાની પત્નીની ચાદગીરી જળવવા બંધાવી આપ્યું છે. એક બાજુએ સાધારણ શિક્ષાતું કામ આદ્યોગીક શિક્ષાને અતુસરીને આપવામા આવે છે. અને લીધે આદ્યોગીક શિક્ષણુ ભાર ૩૫ માણુમ નદિ પડતા હિસાબની સાથે ખાસ ઉપદેશ સચરાય છે. ખીજ બાજુએ નિદાતોતુ શિક્ષણુ આપવામા આવે છે. આમા મેળવેલા જ્ઞાનને વાસ્તવીક ઉપયોગ આદ્યોગિક વિભાગમા થઈ જાય છે.

સાધારણ શિક્ષા વિભાગમા, દીવસની શાળા અને રાત્રીશાળા છે બે ભાગના હોકરા દિવસે શિક્ષણુ લે છે, અને એક ભાગના રાત્રીએ શિક્ષણુ લે છે. દર અઠવાડીઆમાં ચાર દીવસ રાત્રે ૬ાા થી ૮ાા વાગ્યા સુધી અને એક દીવસ રાત્રે ૬ાા થી ૮ વાગ્યા સુધી શાળામા જવાતું હોય છે.

દીવસમાં અભ્યાસ કરનારા વિદ્યાર્થીઓને અઠવાડીઆમા ૩ દીવસ ૬ા થી ૧૨ વાગ્યા સુધી અને ૧ા થી ૪ વાગ્યા સુધી શાળામા રહેવું પડે છે. રાત્રીશાળા એટલા માટે રાખવામા આવે છે કે જે યોદી હી દીવસની શાળામા અભ્યાસ કરનાગ પામેથી લેવામાં આવે છે, તેટલી પણ હી જેઓ આપી ન શકે તેમને માટે છે. આ ત્રી ગત્રીશાળામા મહત્ત શિક્ષણુ આપવામા આવે છે.

સાધારણ વિભાગને માટે શિક્ષકો તેમાર કરવાને ગર્ભની રજામા દર વર્ગે શિક્ષણુ આપવાની ગોઠવણુ કરવામા આવે છે. આ પાયાવા ચાર અઠવાડીઆ આવે છે.

ધર્મ શિક્ષણુ આપવાને માટે 'કુલેસ બાલ-બલ' પાઠશાળા છે. તેમા રાત્રે ૧૮૯૨ થી આજ સુધી પુરૂષ ૬૧૧, સ્ત્રી ૬ એ આ શિક્ષણુ લીધું છે તેમથી પુરૂષ ૮૪ ને અને સ્ત્રી ૬ ને ઉપાધિક્ષેત મળી છે.

ધર રંગવાતું, ખુરશીઓ પોતીત કરવાનું, સાઇનબોર્ડ બનાવવા વિગેરેનું કામ કરવામા આવે છે. દરેક બાનામા વિદ્યાર્થીઓના પોસાક બનાવવામા આવે છે. આ વિભાગમા ૬૫ વિદ્યાર્થી હાજર છે. એનીવાડીને માટેના યંત્રોના નકશા

બનાવવા, મકાનોના નકશા બનાવવા વગેરેનું કામ કરવાથી એ વિષયમાં વિદ્યાર્થીઓની ખાસ નિપુણતા વધતી જાય છે.

સ્ત્રીને માટે કામ કરવાની સંત્યા અલગ રાખવામા આવે છે. રાત્રે ૧૯૦૮મા 'ડોરોથીહાલ' નામનું અલાયક મકાન તેમને માટે બાંધવામાં આવ્યું હતું. તેમા એક ધોખીખાનું, એક પાકશાળા (રોટીકું), દરજખાનું અને ટોપીઓ બનાવવાનું કારખાનું છે. એ ઉપરાંત અહીંઆ સાદડીઓ, સાવરણીઓ અને શાણુ વગેરે પણ બનાવવામા આવે છે.

પહેલા વિદ્યાર્થીનીઓ પોતાનો ખોરાક જાતે બનાવતી હતી પણ હવે શિક્ષણુ લીધા પછી રક્ત પીરસવાનું કામ કરવું પડે છે. ખીજ ઉંચી જાતની પાક તથા ગૃહ-વ્યવસ્થાની શિક્ષા જુદા રથાનમા આપવામા આવે છે. શિક્ષણુ લીધા પછી રક્ત એક માસ તેમને સરથાના રક્ષકોમા કામ કરવું પડે છે. ત્યાં પછી એ રોટીડાની પામે નાતું એક ઘર છે તેમા જાંચા ધોરણની હાકરીઓ પોતાની મેળે પોતાનું ધર ચલાવે છે. આ ગૃહ વ્યવસ્થાના કામને માટે એમને યોડા ધનની મદદ પાકશાળામાથી મળે છે તેમથી કર કસર કરીને ધર ચલાવવું પડે છે.

પોસાક તથા ટોપી વગેરે બનાવવાનું કારખાનું હમથામ ખોલવામા આવ્યું છે. એનો હેતુ વિદ્યાર્થીઓને માટે ધધાદારોતી ગોઠવણુ કરવાનો છે. પહેલુ જે કારખાનું હતું તેમા રક્ત સાધારણ કામ કરવામા આવતું હતું. અને ૧૯૧૦મા સ્ત્રી વિભાગમા નીચે મુજબ માસ તેમાર કરવામા આવ્યો હતો.

- સપ્થા વસ્તુઓનું નામ .
- ૧૮૪૯ ઝાડ (સાવરણીઓ)
- ૧૨૫ ગાંધા
- ૧૦ માદડીઓ
- ૪૮૪ પડદા
- ૧૫૩ ટેમલ કલોય
- ૨૩૩ બીજનાના જોતિયા
- ૨૦૧૧ તટીયાનાં
- ૧૨૩ બાગેના પડદા
- ૮૯ જુદી જુદી જાતના પડદા

બધા મળીને કાલર ૨૫૭૫ તું કામ કરવામાં આવ્યું હતું.

સાન્યદારી શિક્ષણ આપવાને એક શાસન-ભૂતન પણ એ સંસ્થાના વહીવટ ચલાવવામાં ઉપ-યોગી થાય એવું સ્થાપવામાં આવ્યું છે. આપધા-લય પણ એ સંસ્થાનું પોતાનું આગરું છે તેમાં કોઈકરો અને નરો તૈયાર કરવામાં આવે છે.

આખા સમાજના વિચાર કેળવવાને દર વર્ષે નોંધે કોન્ટ્રસ્ટ બોલાવવામાં આવે છે. ખાસ કરીને કૃષી વિદ્યા ઉપર પ્રીતી ઉપજે એવા આદ-યધી એ કોન્ટ્રસ્ટ કામ કરે છે અને પ્રદ્યોતો વગેરેથી એ શાળાને કોન્ટ્રસ્ટ આપે છે. આ સિવાય આખા સમાજની રીતિતિ સુધારવાને જુદા જુદા રૂપમાં અનેક મહાન કાર્યો થાય છે. અને એ બધામાં આ સંસ્થા (મોટું બોર્ડિંગ હાઉસ)ના વિદ્યાર્થીઓ વગેરે પ્રધાન ભાગ લે છે.

સંતીક શિક્ષણ પણ સંસ્થાના વિદ્યાર્થીઓને આપવામાં આવે છે, તેમાં શિક્ષણ લઈ નૈવાર શ્યેલા વિદ્યાર્થીઓ પોતીશ તથા ચોળીદારનું કામ સંસ્થાને અંગે કરે છે.

મહાશય કારનેશની કોલર ૨૦૦૦૦ની મદદથી રાત્રે ૧૯૦૨ માં એક પુસ્તકાલય ખોલવામાં આવ્યું છે. તેમાં હાલ પુસ્તક ૧૫૦૦૦ છે.

આ બધી વિગતો ઉપરથી જણાય છે કે વિદ્યાર્થીઓ પોતાને માટે કેટલું કરી શકે છે ?

મહાશય વોશીંગ્ટન આયોજવાના મહાન ઉત્સા-હ દત્ત પરંતુ કાર્ય નો એ સંસ્થાના વિદ્યાર્થી-ઓએ કર્યું છે. ધર્મી લોકો સુલામગીરીમાંજ કો-રેલી પ્રગળે પોતાનું કાર્યસિન ખુશ્કું કર્યું નેતીજ રીતે આપજને એનુકૂળ કાર્ય કરવાનાં સેવ પણ આપજોજ દેવન કરવાં પડશે. સ્વામી સત્યાનંદ એમના અમેરિકાના પ્રયાસમાં વિદ્યાર્થીય કરવાના ખર્ચ માટે મ્યુનિશીપાલિટીના મંત્રુરો સાથે કામ કરવાની, ખેતરોમાં મંત્રુરોની સાથે ખેડવાની અને એવાં એવાં અનેક પ્રકારનાં મંત્રુરોનાં કામ કરવાની વાતો લખી છે. એક કોમેન્ટમાં અભ્યાસ કરનાર વિદ્યાર્થીઓને મંત્રુરો સાથે કામ કરવામાં

હલકાઈ ન જણાય તો, આપણા સામાન્ય હાઈસ્કૂલોમાં બહુતા વિદ્યાર્થીઓને એથી શું લીધુપદ લાગવું જોઈએ ?

આપણે જો એકદમ એટલે સુધી જઈ ન શકીએ તો કેટલાક શુદ્ધ દિવાળીથી પણ કાંઈક પેટા કરી શકાન. આપણે ત્યાંની અંગ્રેજ સ્કૂલો વર્ષમાં આઠ મહીના કામ કરે છે બાકીના ચાર મહીના વિદ્યાર્થીઓ રમકવામાં મુખાવી નાખે છે. આ ચાર મહીના દરમ્યાન આપણી હાલની બોર્ડિંગોને અંગે વજીરકામને અનુસરતાં, છાપવા કામને અનુ-સરતાં, ખેતીના કામને અનુસરતાં કામ મેળવવાની યોજના કરવામાં આવે, અને વિદ્યાર્થી બંધુઓ દત્તાદયી એવાં કાર્ય કરી સ્વતંત્ર કમાણી કરતાં શીખે તો, દેશ તેમજ આપણી કેળવણીની પ્રગ-તીમાં ઘણા મોટા લાભ થવાનો સંભવ છે.

મહાત્મા ગાંધીએ અમલમાં મુકેલી રાષ્ટ્રીય-યુજ્જાતી શિક્ષણની યોજના ક્ષેત્રમંદ નીવડે તો આ દેશમાં ઘણું અન્યાયનું પડે એમ છે. એમાં વિદ્યાર્થીઓના કામમાંજ વજીરકામ અને ખેતીનું કામ શીખવવાનું દાખલ કરેલું છે. કેટલાંએકનું એમ માનવું થાય કે વિદ્યાર્થીઓના અમ પછી, એવા જોઈતા આરામના વખતમાં કામ કરવાથી સરીર નળાનું સડી જાય. આ માન્યતા અનુભવ થવા પછી ભુલ ભરેલી માણસ પડશે. દત્તાદયી નિયમીત કામ કરનારની તંદુરસ્તિ વધે છે. ઉલટા જોએ તદન નીલકમી રહીને રત્નના વખતમાં ઉંચ-વામાં અને રેલ ટપ્પા મારવામાં વખત પુરો કરે છે, તેમની તંદુરસ્તી બગડે છે.

આપણા હાલના, વર્ષમાં ચાર મહીનાના આરામ લેનારા અંગ્રેજ બહુતા વિદ્યાર્થી બંધુઓની શારીરિક રીતિતિ એમાં ખાસ દાખલા રૂપ છે. બપો-રના ચાર પાંચ કલાકે કલાશમાં કામ કર્યા પછી જે જે બાઈઓ, ચિનકાઓ અથવા કસરત રજો રેતો વધારાનો અભ્યાસ કરવાનો કલાક ભરતા દરો, તેમને અનુભવ થયો હશે કે, ચિત્ર કાટવાનું શીખવવામાં બપોરના એકલા મગજના કામથી કંટાળેલા મગજનો કામ એક કલાકમાં તદન નાશ

दिगंबर जैन

THE DIGAMBAR JAIN.

नाना कलाभिरिविविधं तत्त्वं सत्योपदेशैस्तु गन्धर्वनाभि ।

मंत्रोपपत्तयश्चैव प्रसूतताम्, दिगम्बर जैन समाज माधवम् ॥

वर्ष १३ बौ.

वीर सप्त २४४६ अष्ट. विक्रम सं० १९७६.

अंक २.



इसी मासमें अमरके रात्र सेठ दीकमचदनी के पुत्र भागचदनीका घड़ोंकी श्राद्ध। विवाह इंदौरमें रात्र सर सेठ हुक्मचदनीकी पुत्रीके साथ अतीव धूमधामके साथ हो गया जिसमें कमसे कम तीन लाख रुपये खर्च हुए होंगे। वाराणसीकी सख्या लगभग १२०० थी। सेठ दीकमचदनीकी ओरसे इस मौकेपर वेद्व नृत्य लेश मात्र भी नहीं कराय गया और करीब १०००० घर्माव निकाले गये हैं। आपको क्या वद्वेमान ज्ञान प्र. मगाकी ओरसे मानपत्र भी दिया गया था उस नक्त भी आपने इंदौर रकी इच्छाओंको १२०० का दान किया था।

सेठ दीकमचदनी हमारी महासभाके सभापति इस वर्ष हुए थे और आपके कथनानुसार आपने इस मौके पर वेद्व नृत्य नेमी निच कुंति नहीं की परंतु यह लिखने हमें दुःख और सेठ होता है कि क्या पक्षपाते सर सेठ हुक्मचद-

नी जो कि हमारी महासभाके स्थयी सभापति है और दि. जैन समाजके अग्रगण्य नेता है तथा आपने ही शिरारनी तथा पालीवानाके अधेशानमें वेद्व नृत्यका निशेध किया था तभी पुत्र हीरालालजीकी शादीके समय वेद्व नृत्य कराया था जब समाजमें कई टीका टिप्पणी होने लगी थी तब सेठजीने इन्दौरमें एक सभामें रात्र प्रतिज्ञा ली थी कि मैं अबसे वेद्व नृत्य नहीं करूंगा, क्या सेठजी इस प्रतिज्ञाको भी भूल गये ? या मानउज्जर कर ही प्रतिज्ञा पर दृढ़ न रह सके ? इस श्राद्धीमें यह बात बड़ी मोर्केकी हुई थी कि जब वाराणसी आई थी वहा तक तो वेद्व नृत्य हाता रहा था परंतु वाराणसी आते ही वह नद करना पड़ा था क्योंकि वर पक्षके सेठ 'दीकमचदनी' इसमें मामिल भी नहीं होनेवाले थे क्योंकि आपको वेद्व नृत्य न देखनेकी भी प्रतिज्ञा थी इससे आप ही न आवे तो सेठजीको बुरा लगे इससे ही बंद रब्जना पड़ा था ! सेठ हुक्मचदनीने भी इस श्राद्धीकी खुशालीमें बची भारी रकम दानकी निजली है ऐसा सुना है वह स्वयं मिलनेसे मकट करेंगे, परंतु यह तो कहना पड़ेगा कि समाज जगुपके पीछे २

चलती है इसलिये अगुओंको तो समाजके सुधारनेका प्रयत्न करते रहना चाहिये और अपनी प्रतिज्ञापर दृढ़ रहना चाहिये । अन्यथा ऐसे समापतियोंके व्याख्यानका असर कभी भी न पड़ सकेगा । हर्ष है कि इस मौकेपर इंदौरमें १२ वर्ष हुए खंडेलवालोंमें झंघड़ा था वह मिट कर एका हो गया ।

*

*

*

बम्बईमें सेठ माणिकचंदजीकी एक 'हीराबाग', धर्मशाला तो है और एक यमईमें धर्म-दूसरी आलीशान धर्मशाला और शालाके लिये सेठ गुरुसरस्वति भवन । सुखराय सुखानंदजीने तीन लाख रुपयेका मकान खरीद किया है जिसकी उद्घाटन क्रिया दिवाली तक होनेवाली है । इसमें सेठजी पुस्तकालय भी खोलनेवाले हैं । अभी श्रीमान् त्यागी ऐलक पन्नालालजी महाराज तथा ब्र० शीतलप्रसादजी बम्बई पपारे थे तब सबका विचार हुआ कि शालापाटनमें बड़ा भारी परिश्रम करके त्यागी जीने सरस्वति भवन स्थापित कराया है जिसमें करीब २००० ग्रंथ हैं और इसके लिये करीब रु. ३५०००) का चंदा भी त्यागीजीने एकत्र करवाया है परंतु इसके लिये झालरापाटन स्थान योग्य नहीं है इस लिये बम्बईमें ही यह भवन लाया जाय और बड़े भारी रूपमें इस धर्मशाला में यह सरस्वति भवन स्थापित हो तो अतीव उपयोगी और दृढ़ हो सके । त्यागीजीने इस बातकी स्वीकारता की और सेठ सुखानंदजीने भी भवनके लिये दो बड़े २ कमरे देना स्वीकार किया है और कार्तिकमें बहुत करके इतका

मुहूर्त होनेवाला है । यह बड़ी भारी खुशीके समाचार है और साथमें हम एक सूचना सेठ सुखानंदजीसे यह भी करते हैं कि भवनके साथ इस धर्मशालामें एक बड़ा भारी वाचनालय भी खोलना चाहिये और उसमें अंग्रेजी, हिंदी, मराठी आदि भाषाके जैन और अजैन अच्छे २ समाचारपत्र और मासिक आदि भगाने चाहिये । इस वाचनालयको भी बड़े भारी रूपमें खोलना चाहिये क्योंकि इससे जनोंके साक्षर अंजनोंको भी बड़ा भारी लाभ पहुंच सकेगा । क्योंकि अजनों भी अन्य पत्रोंके साथ २ जैन पत्र भी वांचेंगे और जैन पुस्तकें आदि भी वांचनेका उन्हें मौका मिलेगा । इस भवनके लिये योग्य मंत्रीकी बड़ी भारी आवश्यकता है तब ही अच्छे दृगपर भवन और वाचनालय उत्तरोत्तर उन्नतिपर चल सकेगा । आशा है सेठ सुखानंदजी साहब हमारे इस निवेदन पर अवश्य ध्यान देंगे ।

कलकत्ता-में जैन हाईस्कूल, बोर्डिंग, संस्कृत विद्यालय और एक बड़ी धर्मशाला बानेके लिये ब्र० शीतलप्रसादजीके परिश्रम और उपदेशसे ४ लक्ष रुपयेका फंड बनना निश्चित हुआ है और उसके लिये कमेटी भी बन गई है । इसमें रामचंद बलदेवदासने (१९००१) और किशोरीलालजी पाटनी मंत्रीने (१९००१) भरे हैं और विशेष रकम भरी जा रही है । आशा है कि कलकत्तेके भाई इस कार्यकी शीघ्र ही पूर्ति करेंगे । कलकत्ता बड़ा भारी केन्द्र है । और यहां धनिकोंकी कमी नहीं है । यदि धनिक लोग इस बातपर लक्ष देवे तो ४ पचा १८ लाखका चंदा सहजमें हो सकता है ।

हर्षकीर्तिकी लीला ।

हमारे प्रायः सर्व पाठकगण दाहौदवाले हर्षकीर्तिसे परिचित हैं ही । तो भी ऐसे बहुतसे भोले भाई हैं जो कि हर्षकीर्तिकी मीठी और ठगनेवाली बातोंमें आकर फँस जाते हैं और भ्रोखा पाते हैं । समाचारपत्रोंमें अनेक बार लिखा गया है, तो भी उसकी नवीन धूर्नता पुनः अकालशून्य कर सर्व भाइयोंको सावधान रहनेके लिये प्रार्थना है ।

यह हर्षकीर्ति कौन है ? बहुतसे भाई हर्षकीर्तिको दिगम्बर जैन धर्मका अनुयायी मुनि समझते हैं, परन्तु वास्तविक यह मुनि नहीं है । शालाकारोंने मुनिका लक्षण इस प्रकार कहा है—

विषयाशब्दज्ञातीतो निराशो परेग्रहः ।

शानध्यानतपोरक्ष स्तरस्थो सः प्रशस्यते ॥

अर्थात्—नो विषय—आशा—आरम्भ और परिग्रह रहित हो । जब तक उसने समस्त परिग्रहसे मूर्छा नहीं त्याग की हो, और बाह्य मुद्रा यथावत् नग्न दिगम्बर न धारण की हो, तब तक वह मुनि नहीं हो सकता ।

मुनिकी खाम पहिचान ही यही है कि जिसकी बाह्य मुद्रा (नग्न दिगम्बरपना) दयावान्त हो फिर मुनियोंके मूलगुण पालन करे । सैद्धांतिक अर्थोंमें मुनिका लक्षण बाह्य यथावत् मुद्रा कही है । वह मुद्रा नियमित यावज्जीवन पर्यन्त पालनी चाहिये । उस मुद्रामें किसी भी प्रकार अतिचार व अनाचार नहीं होना चाहिये । न वह मुद्रा कभी कथंचित् भी भंग करनी

चाहिये । जिस समय वह मुद्रा (नग्न दिगम्बरपना) भंग हुई कि, उसका मुनिपना भी सर्वदा लोप हो गया ।

दिगम्बर जैन इस शब्दकी व्याख्यासे भी यही अर्थ प्रतीत होता है कि जिसका मूल नग्न दिगम्बरपना ही उस धर्मका चिन्ह है । वह धर्म कभी भी त्याज्य नहीं हो सकता । इसलिये सर्व भाईको ध्यानसे विचारना चाहिये कि, दिगम्बर जैन धर्म जिसका मुख्य उद्देश्य वीतराग अवस्था प्राप्त करनेका है और वह वीतराग अवस्था जब तक हम वीतराग (वीरः दूरीकृतः रागो मोहो यस्मान् स वीतरागः) अर्थात् मोहको नश करनेवाले कारणोंको नहीं प्राप्त होंगे तब तक उसका मिलना असंभव है । मोह पर पदार्थोंसे होता है, और उसका मुख्य कारण परिग्रह है । जब तक परिग्रहका पूर्ण त्याग नहीं होगा तब तक वीतराग अवस्थाका प्रत्यक्ष कारण—मुनिपना कभी भी, किसी भी प्रकार, कैसे भी नहीं हो सकता । इसलिये मुनि होनेके लिये परिग्रह (वस्त्र लंगोटी आदि सर्वका सर्वदा त्याग करना चाहिये ।

यह बात आम तौरसे सर्वत्र प्रसिद्ध भी है कि दिगम्बर जैन साधु नग्न ही होते हैं । सर्व मत मतान्तरोंमें भी यही बात प्रसिद्ध है । तो फिर हर्षकीर्ति जिसके मर्यादा रहित परिग्रह हैं, चाग हैं, बगीचा हैं, महल हैं, स्त्री होती हैं, फल फूलोंकी विक्री होती हैं, सर्व प्रकारका आरम्भ और परिग्रह अपरिमत हैं, जिन भाइयोंको संदेह हो दाहौद जिला पंचमहलमें जाकर स्टेशनके पास स्वयं देखलें । वह



मुनि कैसे हो सक्ता है ? जहां पर वह जाता है वस्त्र पहन कर जाता है, यज्ञ वस्त्रादिकोंका भी तो त्याग नहीं, बाह्य मुद्रा नहीं, नग्न दिगंबरपना नहीं, विषयकषायोंका त्याग नहीं, पापाचरणका त्याग नहीं, ऐसेको मुनि कंडना कैसे मजेकी बात है ! क्यों साहब ! क्या मुनि चेली रख सके हैं ? मुनि बाग बगीचा रख सके हैं ? तो क्या हर्षकीर्ति भट्टारक है ? हर्षकीर्ति भट्टारक भी नहीं है और न भट्टारकोंके ऐसे घुर आचरण हो सके हैं । भट्टारकोंको चेली चाउंटसे क्या म लभ ? बाग बगीचासे क्या लाभ ? भट्टारकका पद भी महान है । भट्टारक लोग जितेन्द्रिय-धर्म रक्षक, व्रती धर्माचार्य होते हैं । और वे किसी पदके अधिकारी होते हैं । हर्षकीर्ति भट्टारक है तो किस पदका अधिकारी है ? क्या उसके पास इसका प्रमाण (सबूत) है ? यदि है तो समाजके सम्मुख पेश करे ? क्यों नहीं करता है ? गुप्तगुप्त बगलोंके समान क्यों समाजको ठगता है ? परन्तु यह बात नहीं है । वह भट्टारक भी नहीं है, और न उसके पास किसी प्रकारका प्रमाणपत्र है । न वह किसी पद (गादी)का अधिकारी है । और भट्टारकोंकेसे पवित्र आचरण भी उसके नहीं है । इसलिये भट्टारक सर्वथा नहीं है । तो क्या हर्षकीर्ति झुल्लक है ? नहीं नहीं सर्वथा नहीं । वह झुल्लक भी नहीं है । झुल्लकके परिग्रह कहाँसे होय ? झुल्लकका ऐसा निध स्वयं नहीं हो सक्ता ? तो क्या हर्षकीर्ति ब्रह्मचारी है ? नहीं, नहीं, ब्रह्मचारीके चेली चाउंटसे क्या मतलब ? ब्रह्मचारी तो सर्व प्रकारकी

स्त्रियोंका त्याग करता है । इसके तो एक भी प्रतिमा नहीं है । फिर ब्रह्मचारी कैसे होसक्ता ! तो हर्षकीर्ति है कन ? ये ठगोरा है, भेष धारण कर ठगता है । कभी झुल्लक बनता है, कभी मुनि बन जाता है । किसीके यहांसे पैसा लाता है, तो किसीके यहांसे आभूषण, किसीके यहांसे जो हाथ पड़ा सो । सुना है देहली (दिल्ली)से स्फटिक प्रतिमा चुराई थी । यह दिगम्बरी जैनी भी नहीं है । ठगनेके लिये दिगंबर जैन बन रहा है, समाजको धोखा देता है, भेष बदल कर छलता है । दिगंबर जैन नहीं है ।

जब दिगंबर जैन श्रावक ही नहीं है तो दिगंबर जैनियोंके पूज्य मुनि ऐसे ढोंगी-धुतारा-ठगी पुरुषको कहना और उसकी बातोंमें फसकर पैसा, रुपया, आभूषण, और सामान देना जैन धर्मकी हँसी करना है । भला मुनि तो इसका त्याग करचुके हैं तो फिर मुनि बन कर द्रव्यका क्या प्रयोजन ? और क्यों ले ? इनको लेनेकी क्या जरूरत ? बहुतसे भाइयोंको यह कह पैसा और द्रव्य लेता है कि मुझे मेरे मंदिरका जीर्णोद्धार करना है ? परन्तु यह सब ठगनेकी बदमासी है । दाहोदके पंच (जहांपर यह रहता है) इसके साथ बिल्कुल वृत्तिव नहीं करते हैं, और उनके इसके साथ किसी भी प्रकारका सरोकार नहीं रखा है । इसके पास घर चेत्यालय है उसके यद्धानेसे ठगता है । अस्तु । भाइयोंको आदिये इसको एक पाई भी न देकर धोखेसे बचें और अधिक ढोंग करें तो पुलिसके आधिन करें । हर्षकीर्ति है कौन ? जब यह दिगंबर भेष धारण करता है तो है कौन ? यह है

श्वेतांबर । प्रथम इसने श्वेतांबर सधमें दीक्षा ली थी, परंतु मन और इन्द्रिय अपने कानूमें न रहा, समय न पाल सके, श्वेतांबर साधुओंके विरुद्ध अनेक मले पुरे आचारण किये इस लिये वहासे निकाल दिये गये। श्वेतांबर सधको भी ऐसे आचरणवाला साधु पसंद नहीं आया और श्वेतांबर सधने त्याग कर दिया। श्वेतांबर सधसे आश्रय टूट जानेसे उसने फिर अपनी यह वृद्ध माया दिगंबर जैनमें फेलायी । और भावनगरमें ज्येष्ठ सुदी १० स. १९६१ गुरुवारके दिनगसे अपनेको दिगंबर धर्मका मुनि प्रकट करने लगा । भावनगरके भाइयोंसे सर्व भाई खुशीसे पूछ सकते हैं। वे भी एक बार इस की मायामें फस कर पड़ताये थे। अब वहाके पंच इसको क्या समझते वह उनसे दरियापस्त कर निर्णय कर लें ।

जबसे हर्षकीर्ति अपनेको दिगंबरी जाहिर करने लगा तबसे उसने क्या-काम किये इस विषयकी सूची बहुत बड़ी होगी, वह हम सर्वथा पूर्ण रूपसे गहापर देनेमें असमर्थ हैं और वे भी नहीं सकते, उसके लिये एक स्वतंत्र ग्रन्थ बनाना पडे तब पूर्ण रूपसे आपके कर्माँकी सूची बन सके तोभी थोड़े बहुतसे इनके कार्य ये हैं जो जन दिगंबर धर्मसे सर्वथा विरुद्ध और शास्त्र विरुद्ध हैं । लश्करमें आपने अटेके मुर्गा-बकरो पाडा और जीव बनाकर हवन किये । आपने सुना है कि यशोधरके जीवने एक मुर्गा ओझा चढ़ाने पर कितना दुःख उठाया था । जैन धर्मका मुख्य तत्व अहिंसा है और जो

कोई मनुष्य इत्रिम अथवा अरुत्रिम जीवकी हिंसाकर हवन करे वह जैनी नहीं हो सका । वैदिक अनुयायीमें अहिंसाकी ठाप पाडनेवाला जैन धर्म ही है ऐसा महात्मा तिलकका मत है । इसी प्रकार अनेक जगह आटे आदि-के जीव बनाकर होम करनेवाले हर्षकीर्ति महा राज है क्या ये जैन हैं ? धुलियासे को किस प्रकार जुगलमें फसाई ? मदसोर प्रताप गढमें क्या किया ? वडनगरमें कितना मात्र फलाया, मारवाडा (चापलपुर)में प्रतिदिन माटी के जलभरे १०० घडोंसे स्नान करना और सब चीज खाकर मस्त रहना यह मुनि धर्म है क्या ? विचारे भोले भाइयोंको मंत्र तंत्रके बहानेसे ठगना अच्छा नहीं ? हम हरएक बातको लिखना पसंद नहीं करते । क्या वह देवी आर्यका बनकर द्रव्य नहीं ठगती है ? और वह द्रव्य नोकर चाकर ऐसीवाडीमें नहीं लगता है ? क्या यही मुनिव्रत है ? अस्तु ।

आप बहापर विहार करते हैं महापर वीस पथ और तेरह पथका झगडा हो ? बहा एक दूसरेको लडाकर अपना काम बना लेते हैं इस तरहके मोठे २ जादू फेंके जाते हैं । एक भाई अपने दूसरे भाईसे विरुद्ध करे बस आपकी झगडेमें बनआती है और मतझब गाठकर पौनार हुऐ ।

वीमपथी भाइयोमें हैवन, फूड चढाना, व शर चढाना आदि विषयोंसे उश्नेरणी करते हैं । मंत्र तंत्र टोना टपकाका लोम दिया जाता है बस काम हुआ ? शास्त्रकारोंने यह विषय खुडी



रीतिसे स्पष्ट वर्णन किया है उसको कोन नहीं मानता है ? शास्त्रकी आज्ञा सबको प्रमाण हैं । परंतु वीसपथी भाई वस्त्रधारीको मुनि नहीं कहते । स्वयं भट्टारकोसे मुनिका लक्षण पूछा जाय तो वे विचारे स्पष्ट कहते हैं कि मुनि निर्ग्रन्थ होते हैं, परिग्रह धारी मुनि नहीं हैं ।

मैंने सुना है और उदयपुरके भाई साहबान् (जहांसे वह हाठमें पांचसे रुपया ले आया) उसको पुलाक जातिका मुनि बतलाते हैं ।

पुलक मुनिका लक्षण शास्त्रकारोंने यह लिखा है—

अपरिपूर्णव्रता उत्तरगुणहीनाः

पुलाकाः उत्तरगुणेष्वनापेतमनसो व्रतेश्वपि कश्चित्कचित् परिपूर्णतामपरि प्राप्नुवंतः अविशुद्धे पुलाक सादृश्यात्पुलाक व्यपदेश मर्हति निर्ग्रन्थरूपं भूषणेशामुधविरहितं तत्सामान्य योगात् सर्वेषु हि पुलाकादिषु निर्ग्रन्थ शब्दो युक्तः । ननु भग्न व्रत वृत्तावति प्रसंग इति चेन्न रूपाभावात् यदि भग्नव्रतेऽपि निर्ग्रन्थ शब्दो वर्तते श्रावकेऽपि स्यादिति चेन्न रूपाभावात् निर्ग्रन्थ रूपमत्र नः प्रमाणं न च श्रावके तदस्तीति" (रोजवार्तिके भट्टाकलंक देवाः)

जिसके उत्तर गुण नहीं परंतु व्रतमें कभी क्षेत्र और कालकी अनुकूलतासे अपरिपूर्णता हो यह पुलाक है । और उसका वास्तव निर्ग्रन्थ रूप (भग्न दिगंबरपना) ही प्रमाण है । बिना निर्ग्रन्थताके मुनि नहीं कहला सकता है । उदयपुरके भाइयो! सीचो, मला परिग्रहधारीको कहा मुनि

कहा है ? आप भी रामवार्तिकका प्रमाण चाहते थे । उपरोक्त वाक्य रामवार्तिकके ही हैं, देख लें और ब्राह्मण पंडितजीसे अर्थ करावें । इसका खुलासा श्लोकवार्तिकमें इस प्रकार है—

"पुलाकाया मताः पञ्च निर्ग्रन्था व्यवहारातः

निश्चयाद्यापि नैर्ग्रन्थ सामान्यस्याविरोधतः

ये वस्त्रादि ग्रहेष्वहर्निर्ग्रन्थत्वं यथोदितं

मूर्च्छावृद्धतितस्तेषां कथाशदानेपि किं न तत्

वस्त्रादि ग्रन्थ संपन्न एताऽन्येति गम्बजे

यत्न ग्रन्थस्य सद्भावे ह्यन्तर्ग्रन्थो न नश्यति

विषयमप्यत्र कार्यं मूर्च्छा स्यात्तस्य कारणं

न च कारण विधत्ते जातु कार्यस्य तत्त्वः

विषय कारण मूर्च्छा तत्कार्यमिति यो वदेत्

तस्य मूर्च्छादयेऽप्येवं विषयस्य न सिद्ध्यति

तस्मान्मोहोदयान्मूर्च्छा स्यात्तं तस्य ग्रहस्ततः

स यस्यास्ति स्वयं तस्य न नैर्ग्रन्थं कदाचन ॥

अर्थात्—पुलाकादि मुनि सर्वथा निर्ग्रन्थ दिगंबर हैं । पुलाकादि मुनिके वस्त्रादि परिग्रह रहनेसे अंतरंग परिग्रहका भी नाश नहीं होता है । जो लोग वस्त्रादि परिग्रह रखकर पुलाकादिकोंको निर्ग्रन्थ मुनि कहे तो खी आदि कुटुंब रखकर मुनि होनेमें क्या हानि है ? और धर्म केवलज्ञान प्राप्त करनेमें क्या कठिन्ता है ? क्यों दीक्षा ली जाय ? जब तक विषयोंमें मूर्च्छा है, मोह है, तब तक मुनिपना किसी भी प्रकार नहीं हो सकता है । और दिगंबर मुनिका यह चिन्ह है ।

पाठकगण, समझे, हर्षकीर्ति श्रेतांवरी है इस लिये वस्त्रादि परिग्रह धारण करनेपर भी मुनि कहे जाते हैं, दिगंबर जैन नहीं हैं, ठगनेको दिगंबर जैन बने हो । दिगंबर मुनि तो मूर्च्छा रहित हो निर्ग्रन्थ होगा । विचारो भाइयो,

कौनसे शास्त्रमें, पुलाक मुनिको बख्ख रखना कहा है ? और आहारके समय नग्न होना कहा है ? इसी प्रकार एकवार श्रीमान लाला जगदीशजी रंहीस देहलीको यह बोला दिया कि पुलाक मुनि बख्ख रख सकते हैं और आहारके समय नग्न हो जाते हैं । प्रमाण मागा तो नद्वारत ? कभी कभी आप श्वेतांबर आचार सुन्नकी गाथाका पाठ कर (योंकि आप श्वेतांबर हैं) साबित करते हैं कि गृहस्थ भोजनके समय नग्न हो जाता है परन्तु उनके यहां भी ऐसा नहीं माना है और हो भी तो हमें प्रमाण नहीं है । आप किसी दिगम्बर जैन ग्रन्थका प्रमाण बतला कर साबित करें तो आपकी गृही है । हां, भोले लोगोंको ठगना दूसरी बात है । आप शास्त्रार्थकी कई बार डाँग मार चुके हैं । यदि आपको शास्त्रार्थकी अधिकतमज्ञ है तो साम सामने मैदानमें आ जाइये । हमेशा तैयार हैं । देहलीमें मैं आपके-शास्त्रार्थकी परीक्षा कर चुका हूँ । फिर भी आइये । हा, पुलाक मुनिके बख्ख पहरेना बगीचा बनवाना नोरु चारकर रखना सिद्ध कीजिये ! देखें तो सही क्या करते हैं ?

मुझे हालमें उदयपुरके भाई साहिबान मिले थे । और श्रीमान पूज्य ६० घन्तालालजी कांलो-बाय मुंबई, व लाला भगवानदासजी बडनगरके समस्त उदयपुरके पंचोंका रहना सुना, सबने सपनाया भी । इससे सत्य घटना सबकी मालूम हो गई है । तो भी कोई हर्षकीर्तिके मीठे मंत्र-जादूमें फँसकर दृष्टिसे यह कहे कि पुलाक मुनि बख्खादि सब परिग्रह रखते हैं तो कृपाकर शा-

स्त्रकी आज्ञा बतलावें । अस्त्रधारोंमें वह प्रमाण प्रसिद्ध करें । अन्यथा बिना पंड लिखे, भोले लोगोंको इधर किधरके मनगढ़त श्लोकोंका झूठा साचा अर्थकर बहकाकर ठगना दूसरी बात है । एक लेख उदयपुरका हमें देखनेमें आया है उसमें भी शास्त्रार्थकी डाँग मारी है, केवल बक-बक करनेमें कुछ भी लाभ नहीं, आइये, प्रमाण बतलाइये, हम सहर्ष तैयार हैं । यदि शास्त्राज्ञा होगी तो मान लेंगे इसमें क्या, हानि है परन्तु एक बार समझ आकर अपनी करतब दिखलाइये ।

श्रुत मागरीमें स्पष्ट कहा है कि "निर्ग्रन्थव्य-वन्थिताः इति" इसका तो अर्थ खुलासा यही है कि पुलाक निर्ग्रन्थ ही होते हैं । गृहस्थ पुलाक नातिके मुनि नहीं कहलाते । यदि गृहस्थ भी साली आहार लेने समय नग्न हो जाय और समस्त विषय कपाय और परिग्रहका भक्षण करते हुए भी मुनि कहलावे तो मुनि और गृहस्थमें क्या भेद है ? आप साबित करें । अंतमें भाद्योंमें पार्थना करूंगा कि हर्षकीर्तिके फंदमें न फंसे, पूरा ठग है ।

मदनलाल जैन वैद्य, डंडर ।

रुक्मिणीका कलकत्ता

रुक्मिणीका कलकत्ता

रुक्मिणीका कलकत्ता

रुक्मिणीका कलकत्ता

रुक्मिणीका कलकत्ता

रुक्मिणीका कलकत्ता

रुक्मिणीका कलकत्ता

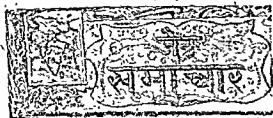
रुक्मिणीका कलकत्ता

स्वदेशी—

पवित्र काश्मीरी केशर

मुख्य १॥) तोला

पता—मैनेजर दि. जैन पुस्तकालय—सुरत।



સહાયતા મળી—એરાણી દિ. જૈન પાઠશાળાને લગનની ખુશાલીમાં ગાંધી બહેચર પુંછરામ સોનાસજુવાળા તરફથી ૨૫), ચામચંદ કરપુરચંદ ધનીયાળ ૨૧), મગનલાલ બહેચર ૨૧) તથા મણીલાલ છગનલાલ તરફથી ૨૧) સહાયતા મળી છે.

સોશલિસ્ટ—માં આ વર્ષે વૈશાખ માસમાં લગભગ ૫૦ લગ્નો વીસા મેવાડા બાધયોમાં થયા હતા જેમાં માત્ર બેજ લગન જૈન વિધિથી થયા હતા. અબજ જેવું છે કે જે લોકોમાં જેમ ભરાઈ ગયો છે કે જૈન વિધિથી લગન કરીએ તે “વર દન્યા મુખી થતાં નથી!” ગુજરાતના ભોળા બાધયો, ગણપતિ વગેરેની પૂજા કોઈ દિવસે તો તમે કરો નહિ ને લગન જેવે શુભ પ્રસંગે તમે હાથે દરીને મિથ્યાત્વી દેવોને પૂજો અને તે કદિને આપ દાહના વારસાની માફક ન છોડો તથા જૈન શાસ્ત્રાનુસાર પૂજન હોમ વગેરે કરવામાં જેમ માતો એ કેટલે હાંસીને પાત્ર છે ?

સુરત—માં નરસિંહપુરા ગાંધીના યા. ખીમચંદ સવર્ધચંદ આમેદામાં સમાન ગોદમાં લગન કર્યા છે જેમ તેમની ન્યાતને માલમ પડવાથી એ લગન ધર્મે વિરૂદ્ધ ગણી એ ન્યાતે એ બાહ્ય બહેવાર બંધ કર્યો છે અને તેની રહેમાં તણાઈ જાતને પાંગરોડે (દિ. જૈન મંથ) પણ એમનો બહેવાર બંધ કર્યો છે. !

સુત પંચમી ઉત્સવ—આ વર્ષે ગાદરા-પાટન, લલિતપુર, મોર્સી, સોલાપુર, મિંડ, દક-કતા, રોડતક, સંગવી, મુસારી, સાદુમલ વગેરે રથને ઉજવાયાના સમાચાર આવ્યા છે પણ એક છે કે ગુજરાતમાં એક પણ રથને આ પર્વ ઉજવા-

યાના સમાચાર મળ્યા નથી. ગુજરાતના બાધયો વેાર નિગ્રમાંથી હજુ ક્યારે જાગત થશે ? મોટા મોટા શાસ્ત્ર બંધારોની સાર સંભાળ ને ઉદાર હજુ પછુ નહીં કરશે તો પછી સડીને ઉધાઈ ખાઈને નાશ થઈ જશે ત્યારે જાગશે !

શ્રાવિકશ્રમ—મુંબાઈ ગરમીની રમ પછી તા. ૭ વૃત્તથી પ્રસ્યું છે.

લલિતપુર—કે સેઠ મથરાદાસજી રૂઢેયાંકો વેહાન્ત હો ગયા । આપકે પીછે પાઠશાળા, ઔ-પધાલય તથા પુરાને મંદિરોંકી મરમતકે લિયે ૧૧૦૦૦) નિકાઢે ગયે હૈં ।

સ્વર્ગવાસ—આદિસાગરજી નામક દક્ષિણકે એક નિર્ગ્રથ મુનિ મહારાજકા પૂનામેં જ્યેષ્ઠ વડી રકો સ્વર્ગવાસ હો ગયા ।

મટારક વિદ્યાર્થી—લાતુરકી ગાદી પર વિશાલકીર્તિ નામક ૧૦ વર્ષકે અપદ્ બાલકકો મટારક કરકે બેઠા દિયા હૈં ઔર જિસકો વહુ-તસે સેતગાલ મોઈ નહીં માનતે હૈં ડનકે અનુ-યાયી મિત્રોંને મિલકર ૧૦ આદમીકો કમેટી નિયત કરકે ડનકો પઢાનેકા પ્રવેશ કિયા હૈં ઔર વે ઔરંગાબાદ પાઠશાળામેં પઢ રહે હૈં ।

પહેલે સો બાલકકો મટારકની વના વિચે ઔર અવ વિદ્યાર્થી વનાયે ગયે યહ કૈસી ડલ્હી વાત હૈં ?

બઢૌત (મેઠ)—મેં તા. ૩૦-૪-૨૦કો વ્ર. શીતલપ્રસાદમીકે હસ્તસે જૈન હાઈસ્કૂલકે દારોહાટનકા ઉત્તવ હુવા યા જિસ સમય વ્રહ્મચારીનીકો એક અમિનદન વ્ર દિયા ગયા યા જિસમેં વ્રહ્મચારીનીકી અપાર જાતિ સેવાકા વર્ણન કિયા ગયા હૈં । યહાં દો આમ વ્યાખ્યાન-મેં વ્રહ્મચારીનીને જૈન ધર્મકા મહત્વ ઔર અર્હિસા ધર્મે પર અચ્છા પ્રકાશ પાડા યા ।



समाज नेताओंसे प्रार्थना ।

(लेखक-प. नंदनलाल जैन, इंदौर ।)

इस वर्ष श्रीमती दिगंबर जैन प्रांतिक समा सुबर्द्धने अपने पाचागढके वार्षिकोत्सवमें एक बड़े ही महत्त्वका प्रस्ताव पास किया है वह यह है कि "गुजरात देशमें एक दिगंबर जैन संस्कृत महाविद्यालय स्थापित करना चाहिये । गुजरातमें दिगंबर जैन भाईयोंकी संख्या ठीक है, परंतु अज्ञान इस देशमें सबसे अधिक है। इस देशकी स्थिति सुधारनेके लिये सबसे प्रथम दानवीर नररत्न सेठ माणक-चंदजीकी दृष्टि इस तरफ हुई थी । और आपने रतलाम तथा अहमदाबादमें इसी उद्देश्यसे वेडिंगकी स्थापना की, किन्तु खेद है कि उक्त बोर्डिंगोंसे आन तक एक भी विद्वान पंडित निष्पन्न नहीं हुआ और न धार्मिक कार्यकी जाग्रति करानेवाला एक धर्मात्मा समाज-नेता उत्पन्न हुआ । अस्तु, यहां पर इस ऊहापोहकी आवश्यकता नहीं है कि बोर्डिंगोंसे लाभ होगा या नहीं ?

भारतवर्षके प्रत्येक प्रान्तमें प्रायः संस्कृत विद्यालय होना चाहिये जिसमें समग्र भारत-वर्षमें धार्मिक जाग्रति नियमित बनी रहे । भारतवर्षमें अनेक भाषाएँ हैं । एक प्रान्तसे दूसरे प्रान्तकी भाषा भिन्न होनेसे शिक्षामें बड़ा व्याघात पहुंचता है । बालकोंके हृदयमें जितनी सरलता और सुगमताके साथ अपनी अपनी मातृ भाषामें जो ज्ञान हो सक्ता है वह बहुत व्यय करने पर और धीरे परिश्रम करने पर भी

उतने समयमें अन्य भाषासे नहीं होता है । यह एक सिद्धान्त बात है कि ज्ञानकी श्रेणी मातृ भाषा है । शिशु वर्गकी शिक्षा हृदयमें व्याघात पहुंचानेवाली न होनी चाहिये किन्तु जिस प्रकार बन सके उस प्रकार आनंद और शुशीमें हसते खेलते हुए धार्मिक अंशों (वातों) की शिक्षा बालकोंके कोमल हृदयमें देनी चाहिये । वही शिक्षा आत्तर्पण करनेवाली जीवन पर्यन्त स्थिर रहनेवाली होती है उसका उपाय यही कि मातृ भाषामें धार्मिक शिक्षा उत्तम होनी चाहिये जिससे धीरे २ बालकोंको इतना मना आता है कि वे उच्च धार्मिक ज्ञानके अध्ययन में लीन होजाने हैं । साथमें यह भी कहना पड़ेगा कि सिद्धान्तोंका असली मर्म (ज्ञान) बिना संस्कृत पढ़े आ ही नहीं सक्ता । कारण न्याय-शास्त्रका आप किसी भाषामें ट्रांसलेशन (अनुवाद) कीजिये, नहीं होता है । एक तो संस्कृत सिवाय-अन्य भाषाओंमें वे शब्द ही नहीं हैं जिनसे न्याय शास्त्रोंके अपनी भाषाओंका अनुवाद कर सकें । दूसरे नितने दार्शनिक ग्रंथ हैं वे प्रायः संस्कृतमें ही हैं । संस्कृत भाषामें वह खूबी है कि एक २ शब्दके प्रसंगोपात अनेक अर्थ स्वयमेव प्रतिभास होते हैं वे इतर भाषासे नहीं हो सके । मिन धार्मिक गूढ़ सिद्धान्तोंका रहस्य संस्कृत पढ़नेसे निकलता है वह अनुवाद किये हुए भाषाके ग्रन्थसे कल्पांतकाल पर्यन्त नहीं निकलता है । इस लिये बिना संस्कृत पढ़े धार्मिक तत्वोंकी खोज व सच्चा ज्ञान न हो कर यह भी कभी २ होता है कि भाषामें बितने ही शब्दोंके न होनेसे विपरीत ज्ञान हो



ज्ञाता है । अनुमान-अनुमानाभास-हेतु-हेत्वा ही परम आवश्यक है । थोड़ेसे नागरिक भास आदिका ज्ञान भाषामें होना असंभव है । लोग सुधरनेसे राष्ट्र और धर्म उन्नत और जब तक इनका ज्ञान न हो तब तक पदा- नहीं हो सके हैं । धर्मकी व्यापकताके थोँका सच्चा ज्ञान नहीं हो सका है । इस लिये धार्मिक तत्वोंके जाननेके लिये संस्कृत भाषाका ज्ञान होना अत्यन्त आवश्यक है ।

गुर्जरदेशमें- एक भी संस्कृतका ज्ञाता विद्वान नहीं है । हर समय सर्वत्र यही जोर शोरसे पुकार मची रहती है कि हमें पंडित चाहिये । हमारी पाठशाला बंद है । क्या करें पंडित नहीं मिलता है । अभी थोड़े दिन पहले नवागांवमें एक लुहारको धर्मशिक्षा देनेके लिये नियत किया था वह विचारा धर्मशिक्षाको पया समझे ? जैन धर्म क्या है ? इस नाम तकको नहीं जानता है फिर जैन धर्मके तत्वोंकी शिक्षा किस प्रकार दे सका है ? यह आप ही निर्धारित कीजिये परन्तु किया क्या जाय ? जैन पंडित मिलते कहाँ है ? और मिलते भी हैं वे हिन्दी भाषाके ज्ञाता जिससे लाभ कम होता है । ग्राम २ में उपदेशकोंकी अतिशय आवश्यकता है परन्तु उपदेशकोंकी भाषा हिन्दी होती है इसलिये उपदेशकोंका असर उतना नहीं होता है और खर्च बहुत ही अधिक पड़ता है । सिवाय उपदेशक बड़े २ शहरमें जहाँ पर रेलगा साधन हैं भ्रमण करते हैं किन्तु छोटे २ ग्रामोंमें नहीं जाते हैं । समाजकी आवश्यकता है ग्रामीण भाषाओंके सुधार करनेकी । कारण नागरिक (शहरी) जनतामें संसर्गसे भी बहुत कुछ शिक्षा मिलती है परन्तु जिनको जमीनकार मंत्र तक नहीं आता ऐसे भाषाओंका सुधारना

ही परम आवश्यक है । थोड़ेसे नागरिक लोग सुधरनेसे राष्ट्र और धर्म उन्नत नहीं हो सके हैं । धर्मकी व्यापकताके लिये ग्रामीण जनताका सुधार करना सबसे अधिक जरूरी है । इस लिये भिन्न २ प्रांतोंके लिये तद्देशीय उपदेशकोंकी जरूरत है जो कि वे अपने प्रांतकी भाषा जानते हों, साथमें संस्कृत भाषाके भी जानकारी हों तो ग्रामीण जनता उन उपदेशकोंके हृदयंगम भावोंको समझकर अपना कल्याण कर सकती है और समाजका द्रव्य भी व्यर्थ व्यय नहीं होगा । गुजरातमें न तो कोई पंडित ही है और न उपदेशक । काम करनेवाला गुजराती भाई है । बोर्डिंगोंसे पढ़े लिखे मनुष्य इस तरफ ध्यान ही नहीं देते हैं या बोर्डिंगोंमें ऐसे विद्वान पैदा करनेकी शक्ति ही नहीं है । समाजसेवी मनुष्योंकी आवश्यकता है वह अंगरेजी पढ़े लिखे मनुष्य करते नहीं है । कदाचित कोई करनेको तैयार भी होता है तो उसके विचार जैन धर्मसे कम मिलते हैं । ऐसा करनेसे परिणाम यह निकला है कि कोई ऐसा वक्ता (उपदेशक) एक ग्राममें जाकर विधवा विवाह करनेका उपदेश देने लगा । उसको सुनकर ग्राममें परस्पर विरोध फैल गया । धर्म कार्यकी उन्नति एक तरफ रही । अवगतिके बीज पैदा हो गये । यहां पर मेरा ऐसा अभिप्राय नहीं है कि अंगरेजी विद्या पढ़ना ही नहीं चाहिये । किन्तु हमें समाजसेवी मनुष्योंकी जरूरत है । यदि ये लोग (अंगरेजी पढ़े लिखे) इस कार्यको करें तो अधिक लाभ दे परंतु धर्म



सिद्धान्तको अच्छी तरह समझकर ही इन लोगोंको इस तरफ अपना कर्तव्य करना चाहिये नहीं तो हानि विशेष होनेकी संभावना है ।

गुजरे देशमें अधिक अज्ञान है, शहरोंको छोड़कर (गुजरातमें शहरोंमें प्रायः दिगंबर जैनी भाईयोंकी बस्ती बहुत ही कम है) ग्रामोंमें दिगंबर जैनी भाईयोंकी स्थिति अतिशय खराब है ! शिक्षा प्राप्त करनेके साधन ग्रामोंमें प्रायः होते नहीं । गुजरात, वागट, मेवाड़ प्रांत (जिनमें दिगम्बर जैन भाईयोंकी संख्या विपुल है) देशी रियासतमें अधिक भाग होनेसे शिक्षा नाम मात्रको भी नहीं मिलती है । न तो स्कूली शिक्षा ही है, और न चटशालाएँ हैं । ऐसे बहुतसे ग्राम हैं जहाँ पर शिक्षाका साधन कुछ भी नहीं है । जहाँ पर शिक्षा ही नहीं है, ऐसे देशमें धर्म ज्ञान कहाँसे हो सकता है ? प्रजाकीय आग्रतिका तो कोई नाम तक नहीं जानता है । इस प्रांतके निवासी अपना लेनदेन व्यापार आदि भीतोंके साथ करते हैं, रात्रि दिवस इनकी ही संगति मिलती है जिससे यह फल निकलता है कि बाह्यवृत्ति भी बुरी संगतिसे खराब हो रही है, और अंतरंगवृत्ति भी ज्ञान विना मलिन है फिर धर्म कर्मका ज्ञान कहाँसे रहे ? इन लोगोंके आचरण भी ऐसे मलिन हो रहे हैं कि शुद्धता बहुत ही कम मिलती है, उच्छिष्टताका ज्ञान ही नहीं है । दर्शन पूजन किसी कोहीको आता ही, नहीं तो भगवानको चरणारविंद पर केसर चड़ाई कि पूजनकी इतिथ्री समाप्त हुई । शुद्ध णमोकार मंत्रका उच्चारण करना नहीं आता है । हे समान नेताओ !

जरा तो चेतिये । आपके भाईयोंकी इस शोचनीय अवस्थाको देखिये । ये अपने गुर्जर देश निवासी भाई (खास कर वागड़ प्रांतवासी) कितने अज्ञ हैं । इनका जीवन किम प्रकार निरर्थक नाश होता है यह भी एक बार सोचिये । जैन धर्म क्या है ? इस छोटीसी बातका भी उत्तर विचारे नहीं दे सके हैं । यह कितने खेदकी बात है ! सुधरी हुई नागरिक जनताकी तरफ हमारे समान नेताओंका ध्यान आकर्षित रहता है परंतु जिनको सुधारनेकी खास जरूरत है उन तरफ किसी नेताने लक्ष नहीं लिया ।

जैनधर्ममूषण श्रीमान् पुज्य ब्रह्मचारी शीलप्रसादजीका कुछ समयसे इस तरफ ध्यान आकर्षित हुआ है । आपके परिश्रमसे वांत्तवाडामें एक विद्यालय स्थापित हुआ है जिसके लिये समान चिर आभारी हैं ।

गुर्जरदेश अतिशय भोला है, उदार है, धर्म भीरु है, परन्तु अज्ञ है इसका कारण यह है कि गुजरात देशमें बहुत समयसे भट्टारकोंका प्रचल साम्राज्य रहा है । पूर्व समयके भट्टारक सदगुणी-सदाचारी-ज्ञानी और धर्मरक्षक होते थे । इनका जीवन धर्मरक्षार्थ ही व्यतीत होता था । पूर्व समयके भट्टारकोंका समय अपने कर्तव्योंको पूर्ण करनेमें, धर्म रक्षा करनेमें और सामाजिक व्यवस्था रखनेमें ही व्यतीत होता था । भट्टारक सुरेन्द्रकीर्तिने अपने जीवनमें तीन हजार ग्रामोंमें भ्रमण किया था । असंख्य ब्राह्मण और क्षत्रियोंको जैन बनाया था तथा शिथिल हुए जैनियोंको पुनः जैन धर्ममें दृढ़ किया था जिसके दस्तावेज मिलते हैं । एक एक भट्टार



कोकि पास कमसे कम १०-१५ पंडित और ८-१० ब्रह्मचारी रहते थे । ये सब मिल कर धर्मकी जाग्रति करते थे, ग्रंथ रचना करते थे, सामाजिक व्यवस्थाका सुधार करते थे परन्तु कुछ समयसे ऐसे भट्टारक होने लगे जो कि समाजको सुधारनेके बदले समाजके बिगाड़नेमें ही अपना हित समझने लगे कारण वे विचारते हैं कि समाज यदि पढ़ी लिखी ज्ञानवान होगी तो हमें कोई भी नहीं पूछेगा इसलिये इन लोगोंने समाजमें शिक्षा और सदाचारके ऊपर पूरा २ अंकुश रखा है । एक भट्टारकने अपने चौड़ा (वही) में भक्तानरका पाठ सुनानेके ४५) रुपया जमा किये हैं । वर्तमानमें इस बागड प्रांतमें ४ भट्टारक मौजूद हैं । (ईडर, डुंगरपुर, सूरत और नरसिंहपुरा भाइयोंके भट्टारक इस प्रकार ४ भट्टारक) जिनमें एक एकका मासिक खर्च १००) रुपयासे अधिक है। ये खर्च गाडी घोड़े और पालकीको उठानेवाले भोई सिपाई आदिमें व्यर्थ खर्च होता है । वर्तमान भट्टारकोंकी दशासे समाज परिचित है । मौज-शोख और मगामें समाजका द्रव्य खर्च होता है । धर्म सेवनके बदले ये लोग मौज मनाके लिये समाजको छूट रहे हैं । क्या इनकी तरफ आपका ध्यान कभी गया है ? ये लोग स्वयं नहीं पढ़ते और न समाजको ही पढ़ने दते हैं । इन भट्टारकोंका यही विचार है कि अधिक पढ़नेसे क्या फायदा ? हिसाब और व्यापारी आना चाहिये । इसका अर्थ यही है कि यदि समाज सुधर गई तो हमें कीन मानेगा ?

समाज रुढ़ियोंकी, गुलाम स्त्री हुई है ।

इस गुजरात प्रांतके भोले भाइयोंका पुगना ख्याल अभी तक वैसा ही बना है । गुरु बिना ज्ञान नहीं है । चाहे गुरु पाखंडी-ढोंगी-छटेरा और पापी ही क्यों न हो ! बिना गुरुके रहना ठीक नहीं है । समाजका जितना द्रव्य इन पाखंडी गुरुओंके मौज मजामें खर्च होता है उतना द्रव्य यदि समाज सुधारनेके काम लगाया जाय तो कितना लाभ होगा, परन्तु इस प्रांतकी समाज बहुत ही भोले हैं, धर्म भीरु हैं, सरल हैं, अपने भले बुरेक नहीं जानती हैं । धर्मके बहानेसे धूर्तोंकी इस देशमें बड़ी मजा है । गुजरात देशमें एक भी विद्यालय नहीं है जिससे गुजराती भाई शिक्ष लें और देश तथा समाज सुधारें । धर्मके बहानेसे होनेवाले अत्याचारोंको जाने । अपनी रक्षा अपने आप कर सके । धर्मकी हंसी न हो ऐसे कायोंका त्याग करे । ऐसे धूर्तोंसे बाज आये जो विषयोंके लिये समाजको छूट रहे हो ।

इन धर्मके बहानेसे होनेवाले अत्याचारोंक व (जिनसे धर्मकी हंसी होती है) दूर करनेके लिये जनतामें ज्ञानके प्रसारकी अतिशय आवश्यकता है । जब तक जनतामें ज्ञान नहीं होगा ये अत्याचार कभी भी दूर नहीं हो सके हैं । इस प्रांतमें हरएक ग्रामके दिगंबर जैन मंदिरोंमें प्रतिमाओंपर आंगी (सोनेचांदीके वस्त्र आभूषण विगैरः) चढ़ाई जाती है, समझने पर भी इस प्रांतके भाई अपनी अज्ञानता नहीं छोड़ते हैं । कारण यही है कि इन भाइयोंमें देव शास्त्र और गुरुका ज्ञान नहीं है । श्रुतांवर इस देशमें अधिक बस्ती होनेसे उनकी



रिवाजकी प्रवृत्तियां अपनी दिगंबर समाजमें विशेषतासे हो रही हैं। इसका परिणाम यह होता है कि अनेक मंदिर श्वेतांबर भाइयोंके अधीन हो जाते हैं। देशकी अज्ञानता बिना ज्ञानके प्रसारके सिवाय और किसी प्रकार दूर नहीं हो सकेगी।

गुर्जर दर्शमें दिगंबर जैनोंका साहित्य प्रचुर भरा हुआ है। म्यान २ पर भंडार हैं। इंडर सागवाडा सोमित्रा कर्मसठ-डुंगरपुर प्रभृति ग्रामोंमें भंडार हैं परंतु कोई भी जिसकी मातृभाषा गुजराती हो और संस्कृतका ज्ञाता हो ऐसा दिगंबर जैनी विद्वान इस साहित्यका विकास कर जैन धर्मको उत्तत बनाये नहीं हैं। गुजरातीके साथ २ संस्कृत ज्ञाननेवाले विद्वान पंडितकी इतनी कमी है कि जिसके कारण जैन समाजकी बड़ी भारी हानि होनेके सिवाय अनेक कार्य अव्यवस्थित हो रहे हैं। इसलिये गुजरातमें संस्कृत विद्यालयकी कितनी जरूरत है यह पाठकगण ही स्वयं अनुभव कर सकते हैं। गुजराती भाइयोंको पग २ पर पंडितोंके लिये पराधीन होना पड़ता है। विवाहादि संस्कार मिथ्यापद्धतिसे होते हैं कारण जैन विधिसं करानेवाला पंडित नहीं मिलता है। समाजोंके प्रस्ताव हमेशा यही होते हैं कि संस्कारोंका प्रचार होना चाहिये परंतु अमली कारवाई नहीं होती है। अमली कारवाई हो कैसे? करानेवाले पंडित नहीं मिलते हैं? विदेशसे बुलानेमें खर्च अधिक होता है इससे प्रत्येक गरीब और साधारण स्थितिवाले मनुष्य इतना खर्च कर

विधि करवा नहीं सके। श्रीमानोंको इतना लक्ष नहीं है। मभा अपने प्रस्ताव पास कर एक वर्षकी रात्रि मानकर निश्चिन्त गाढ़ निद्रागत होती है। जबतक प्रत्येक प्रांतमें अपनी अपनी रीति रिवाजके जाननेवाले समानसेवी निःस्वार्थ विद्वान न उत्पन्न होंगे तब तक समानका अभ्युत्थान होना असंभव है। समानमें विद्वान बनानेके लिये प्रत्येक प्रांतमें एक २ संस्कृत महा विद्यालयकी जरूरत है। इन संस्कृत महाविद्यालयोंमें राजकीय भाषा भी नियमित पढ़ाई जाय। साथमें देशोन्नतिके लिये वाणिज्य शिक्षाका प्रचार किया जाय तो समानका अभ्युदय अल्प कालमें हो सकेगा। वर्तमान कालमें संस्कृत विद्यालयोंकी अतिशय आवश्यकता है। समान नेताओंको इस तरफ पूर्ण ध्यान देना चाहिये।

गुजरातमें "संस्कृत दिगंबर जैन विद्यालयों"की जरूरत ऐसा प्रस्ताव मुंबई दिगंबर जैन प्रांतिक सभाने पास किया है। सुनते हैं कि प्रथम प्रांतिक सभाका विद्यालय संबंधी प्रवक्तृ भी है। यदि है तो उसका उपयोग अवश्य करना चाहिये। दानवीर नररत्न सेठ माणिकचंदजीके फंड (२३ लाख) मेंसे जो कुछ भाग २३ टका प्रमाण निकाला है उसका उपयोग इस विद्यालयमें सेठ साहबके उद्देश्योंको पूर्ण करनेके लिये होना चाहिये। अवशेष खर्च जन्तासे लिया जाय। मुझे आशा है कि श्रीमान सेठ ठाकुरभाई भगवानदासजी-जोहरी, सेठ ताराचन्द नवलचन्द, सेठ लखभाई लखमीचन्द प्रभृति गणमान्य सज्जन इस तरफ



लक्ष लेंगे । यह विद्यालय बागड़ और गुजरातकी सीमापर स्थापित किया जाय । मेरी रायसे निम्न-लिखित स्थानोंमेंसे एक स्थानमें होना चाहिये । अमदावाद, पावागढ़, ईडर, डुंगरपुर, सागवाडा, उदेपुर या दाहोद । आशा है आप इस विज्ञप्ति पर ध्यान देंगे ।



भाषा और भाव ।

(लेखक:-पं. दीपचंदजी परवार नरसिंहपुर)

संसारके सभी देश जो उन्नत हुये दृष्टिगोचर होते हैं सब हीने सर्व प्रथम अपने देशमें साहित्यका प्रचार किया और उसके द्वारा प्राचीन (भूत) और वर्तमान स्थितिको देख कर भावी दुःखोंका आदर्श निश्चिन करके अपने सम्मुख रखता । तत्पश्चात् जिसे उन्होंने आदर्श बनाया उसे प्राप्त करनेको जो जो साधन आवश्यक समझे गये उन पर गंभीरतासे विचार करके आरुढ़ हो साधनेमें दत्तचित्त हो गये और 'श्रेयांसि बहु विघ्नानि' की कहावतको विचार करके विघ्नोंसे न डर कर उन्हें अपने प्रारंभित कार्यमें जो यत्किंचित् सफलता दृष्टिगोचर हुई उससे अधिकाधिक उत्साहित होकर कार्यमें अग्रसर होठे गये । उसीका फलस्वरूप यह बात देखी जाती है कि वे देश जो कि किसी समय अपनेको मनुष्य जातिकी गणनामें गिना-नेकी योग्यता नहीं रखते थे आज सम्पूर्ण संसारके सम्मुख अपनेको आदर्श बता रहे हैं ।

ठीक ही है "दिन दूतां तिन पाइया, गहरे पानी पैठ" अर्थात् जिन्होंने खोज की उन्होंने सफलता भी पाई इसमें आश्चर्य ही क्या है ? उद्यम करनेसे क्या नहीं हो सकता है ? पुरुषार्थी पुरुषोंको संसारमें कुछ भी अशक्य नहीं है, कुछ भी दूर नहीं है, कुछ भी दुर्लभ नहीं है "वास्तवमें दैवेन देयमिति का पुरुषा वदन्ति" अर्थात् दैव (कर्म) में होगा तो मिलेगा ऐसा कथन कायर मनुष्योंका ही है क्योंकि "नहीं सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगाः" अर्थात् सोते हुये सिंहके मुखमें अपने आप कोई भी पशु (शिकार) नहीं पड़ जाता है किंतु उसे अपने भोजनकी चिन्ता करना पड़ती है और ज्यों ही वह पुरुषार्थको आगे करके निकलता है कि बातकी बातमें अपना भोजन कहाँसे प्राप्त करके सुखपूर्वक अपने स्थान पर जा कर सो जाता है । क्या सिंहकी भोजनके लिये कोई स्थान नियत है ? जहाँसे वह ले आता है परन्तु उसमें पुरुषार्थही उसका नियत है । जिस समय वह अपनी गुफासे निकल कर दहाड मारता है कि सारा वन कांप जाता है, फिर वह स्वेच्छा पूर्वक जिस दिशामें चला जाता है वही उसका अभीष्ट सिद्ध हो जाता है । पुरुषार्थके संसार सर्वत्र संपत्ति ही संपत्ति दिखाई देती है, सब संसार आनन्ददायक प्रतीत होता है । भय क्लेश उनके हृदय तक पहुंच ही नहीं सकता है । हम क्या करें ? यह प्रश्न उनके कोप (डिपसनरी) में ही नहीं मिलता है । वे डफ़ीरके फकीर नहीं होते हैं, वे अपना मार्ग अपने आप बना लेते हैं । एक भाषा कविने क्या ही अच्छा कहा है ?



“लीक लीक गाड़ी चले लीक हि चले कपूत,
लीक छोड़ तीनों चले, शायर सिंह सपूत”
अर्थात् लीक (रूढ़ि पर गाड़ी और कुपूत चलते
हैं परन्तु पुरुषार्थी पुरुष अपना मार्ग स्वयम्
बनाते हैं। सिंह, कवि और सुपुत्र ये तीनों
उच्छिष्ट नहीं खाते हैं किसीके मुँहका भोजन
नहीं छीनते हैं, उनके मस्तिष्कमें नवीन २
विचार उत्पन्न होते रहते हैं। वे अनेकोंको मार्ग
सूचना देते हैं। हमारे इस भारत देशमें इतिहास
और पुराणोंके देखनेसे पूर्व कालकी स्थितिका
पता लगता है कि किसी समय यह देश धन
धान्यादि संपत्तिसे परिपूर्ण था। यहाकी सभ्यता
जगद्विख्यात थी। बल वीर्यादिके दृष्टान्तमें
रामचन्द्र लक्ष्मण रावण कौरव पांडवादिके पुराण
प्रसिद्ध हैं। शिल्पकलामें भी किसी प्रकार यह
देश पीछे नहीं था। इसके नमूने आबू आदिके
मन्दिर, ताजमहल आदि भी होते जागते
दृष्टान्त हैं। अध्यात्मिक विषयका तो यह म
हासागर था। जहा बड़े-२ योगीश्वर आदि वि
चरते थे, जिनके बनाये हुये ग्रन्थ आज भी
इस भारतमें अचल कीर्तिको हरीभरी कर रते
हैं इत्यादि सब कुछ होते हुये भी जन भारत-
की वर्तमान स्थितिकी ओर दृष्टिपात करते हैं
तो हमको सिक्का उड़ासीके और कुछ नहीं
दौरता है। धन धान्यादिकी तो बात यों हो
गई है कि बड़े बड़े गृहस्थोंके घरोंमें प्राय
नित्यकी भोजन सामग्री बाजारसे आती है। यदि
भोजनके समय कोई आगन्तुक आजावे, तो
बाजारके हलवाईयोंकी दुकानें देखना पड़ती हैं।
साधु व व्रती श्रावक उदासीन त्यागी महात्मा

तो उनका चौका देव ही नहीं सके क्योंकि वे
लोग बाजारका सामान खानेवाले और व्रती
जन घरका बना हुवा शुद्ध भोजन ग्रहण कर
देव ले, तो उनको तो इन श्रीमानोंके यहा तक
जान भोजन करनेका ऋण ही नहीं दिया जाता
है और दीन दुखी दरिद्रीको भी जब कुछ मिल
सके कि जन चौकेमें कुछ बचे। यहा तो
जीमते २ ही दूसरी वार आटा मुदना पड़ता
है। ग्यामा उपरका लिफाफा देखा जाता है। अच्छे
धोबीके धुले हुये कलकदा वपडे, लुम्हार बूट,
चिल्लेदार पंगड़ी या फेलेट केप हेट आदि, जरीका
दुपट्टा या काफटेर कंधे पर, हाथमें कोई कम्प-
नीका सुचीपत्र, बैठकमें कुर्सी टेबिल या गादी
आदि, सिगरेटका स्टब्बा या लम्बा हुक्का और
घरके भीतरका हाल तो चूहे जाने जो घरकी
खोद २ कर मूखके मोरे मर जाते हैं और
लोगोंको प्लेगकी आशंका पैदा कर देते हैं
इत्यादि कहनेका तात्पर्य यह है कि लोगोंकी
आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं है, शारीरिक बल
हो ही कहासे? प्रथम निर्धन माता पितावोंसे
उत्पत्ति तो जड़ ही पत्थर पर जमी है फिर
बाह्यावस्थामें व्याह करके सत्तान उत्पन्न करना,
फिर धी दूध आदि पौष्टिक पदार्थोंकी तो बात
क्या, भरणे भोजन भी न मिलना, तिस पर
भी चिंतावोंकी नितामें निरंतर जलते रहना।
अब बल कहासे आवे? उन्हे तो जीवनके शेष
दिन भी मार रूप हो रहे हैं। अब साहसका
हल यह है कि रातकी सोते हुये यदि बाहरसे
पत्तेकी सी खरराट सुनी जावे तो और भी
सुपकी मार कर सो जावे, चाहे यों ही शकाके



कारण नींद न आवे परन्तु इतना साहस कहाँ कि वे किवाड़ खोल कर देख लें और निःशंक होकर सोवें, शिल्प विद्याकी बात तो यहां तक गई कि विदेशी वस्तुओंके आगे हमारी वस्तुएं लोगोंको पसंद ही नहीं अर्थात् यहाँ तक कि भोजन बनाने तककी क्रियायें लोग भूल गये हैं और अब बाजारके तैयार माल पर ही जिन्हाका स्वाद रह गया है। व्यापारमें सदा ही का बाजार गर्म दिखता है। योगी और साधुओंका हाल तो ग्रन्थोंमें लिखा होनेसे जाना जाता है, क्योंकि जबतक तत्त्वज्ञान होकर अध्यात्म दृष्टि न होवे और विषय भोगोंसे विरक्ति न उत्पन्न होवे कोई साधु नहीं हो सक्ता है और यदि किसी समय किसीको कुछ विरक्ति हुई और वह इस मार्गमें लग गया तो फिर उसके भोजन पानका भी सुभीता नहीं लगता है। इसीसे ऐसे उच्चारणके आदर्श परम दिगम्बर साधु दृष्टिगोचर नहीं होते हैं, अध्यात्म चर्चके बदले चकीलकौ बहस और देवगुरु व तीर्थोंकी प्रदक्षिणाके बदले कोर्ट्स (अदालतों)के इर्दगिर्द चक्कर लगाये जाते हैं इत्यादि अवनति अवस्था देखी जाती है जिसकी पूर्व और वर्तमान कालकी तुलना करना मेरी शक्तिसे बाहर है। जो कुछ भी हो, जिस पर जो कुछ बीतती है वह अवश्य ही जानता है। मुझे इसमें विवाद नहीं है, परन्तु मुझे यहां यह विचारना है कि यह अवस्था क्यों हुई और कैसे दूर होकर पुनः पूर्ववत् इस भारत देशमें सुख और शांतिका साम्राज्य हो सक्ता है? मैं अपने इस लेखके प्रारम्भमें ही बता चुका हूँ

कि आज तक जितने देश उन्नत हुये हैं वे सब साहित्यकी शरणमें प्राप्त हो कर ही हुये हैं। हमारे देशमें भी साहित्यका भंडार कुछ कम नहीं था और न अब भी कम है परन्तु हमारा साहित्य भंडार बहुत अग्नि देवने भक्षण कर लिया, बहुतसा जल देवताके अर्पण हो गया, बहुतसा दीप्क आदि जन्तुओंकी क्षुधा तृप्तिके काम आया, वह मनुष्योंके काम नहीं आया, और अब एक भी प्रायः उसी अवस्थामें बहुतसा प्राचिन साहित्य पंडितों व पंचोंके जेलखानों (कारागृहोंमें) बंद है। और जो कुछ थोड़ा बहुत प्रसिद्ध हुआ है सो बहुत अल्प संख्यामें और भिन्न २ भाषामें। ऐसी अवस्थामें उसका लाभ सर्व साधारण व समस्त देशवासियोंको नहीं मिल सक्ता है। और उसका किंचित् लाभ उसी प्रांत व भाषा जाननेवाले ही उठा सके हैं कि जिस प्रांतीय भाषामें वह छपा हो। इस दिये इन बातको बड़ी भारी आवश्यकता है कि सम्पूर्ण देशमें अनेकों भाषाओंके रहते हुये भी राज्य भाषाके समान एक राष्ट्र भाषा हो। और ग्रन्थोंका प्रकाशन उसी राष्ट्रभाषामें सर्व प्रथम किया जाय, ताकि उसका लाभ समस्त देशवासियोंको प्राप्त हो सके। देशके बड़े २ नेतावोंने बहुत सोच विचार कर यह निश्चित किया है कि भारत देशकी भाषा (राष्ट्रभाषा) हिन्दी और लिपि नागरी (हिन्दी ही जिस भाषा व लिपिमें यह लेख है) हो सकती है। इसलिये देशके समस्त प्रांतवासियोंका यह परम कर्तव्य है कि वे हिन्दी भाषाको उत्तेजन दें। और नवीन २

साहित्यसे तथा प्राचिन साहित्यसे हिन्दीके भंडारको भरपूर कर दें। जिस समय देशकी एक सर्वमान्य भाषा होजावेगी तो एक सिरेसे दूसरे सिरे तक किसी भी प्रातवासीको व्यापाराय अथवा तीर्थयात्रादि करनेमें चिट्ठी पत्री आदि व्यवहार करनेमें कष्ट न होगा। इससे केवल लौकिक उन्नति ही नहीं होगी किन्तु धार्मिक पारमार्थिक उन्नतिमें भी बहुत प्रकाश पड़ेगा। क्योंकि प्रायः जितनी प्राचीन ग्रन्थोंकी टीकाएँ मिलती हैं वे सब नागरी लिपि और हिन्दी भाषामें ही मिलती हैं और उन्हें हिन्दीमें ही प्रकाशित करनेमें विशेष सुभीता होता है। हिन्दी भाषा मायी प्रभा भी बहुत है और हिन्दी भाषा सब भाषाओंसे सरल भी है। किसी भी भाषा भाषी इस सरल हिन्दी भाषाको बहुत शीघ्र सीख सकता है। इसलिये एक ही भाषामें पुस्तक प्रकाशित होनेसे सब लोग उपकार लाभ उठा सकते हैं। भाषा उसे कहते हैं जिसके द्वारा बोल कर मनुष्य अपने मनके भावोंको दूसरों पर व्यक्त कर सकता है। यह भाषाकी परिभाषा बहुत विस्तृत है यह किसी भी प्रातये भाषा पर नहीं घटती है किन्तु केवल एक हिन्दी (राष्ट्र भाषा) पर ही घट सकती है। अन्य भाषाएँ एक एक प्रातीय हैं और उस प्रातके मनुष्य अपने विचार व भाव अन्य प्रातवालेको कदापि ही बता सकते हैं नय तक कि वे अपने साम्हनेवालेके प्रातीय भाषा या हिन्दी भाषाका प्रयोग न करें। और जब तक वे अपने विचार वीर्गोंको न बता सकें तो विस प्रकार लाभ उठा सकते हैं। एक महाराष्ट्र (मराठी भाषी)

विद्वान् गुजरातमें जाकर मराठीमें कथा कहे तो कौन सुनेगा और समझेगा। परन्तु वह हिन्दीमें कहता है तो सब समझ जाते हैं इत्यादि, इस लिये हम सबको उचित है कि यदि हम लौकिक और पारमार्थिक दोनों प्रकारकी उन्नति चाहते हैं तो हिन्दी भाषाको उत्तेजन दें, हिन्दीमें साहित्य प्रचार करें, व्याख्यान दें, समाचार पत्र निकालें, चातचीत चिट्ठीपत्री व्यवहार करें, बालकों व स्त्रियोंको पढ़ावें, हिन्दीकी पुस्तकें बाँचे, हिन्दी भाषामें ही विचार करें। वस फिर हमारी उन्नतिमें देर न लगेगी और इस प्रकार ससारमें सुख और शांति फैलेगी।

सुखसागर भजनावली ।

जैनधर्मसूत्र ७ शीतलप्रसादजीके बनाये हुये इस नवीन मननसंग्रहमें कोई २५० उपदेशात्मक मननोंका संग्रह है। मूल्य ॥२॥
मैनेजर-दि० जैन पुस्तकालय-मुरत ।

नवीन ग्रंथ-

हमारे यहांके उत्तम ग्रंथ ।

आदि पुराण	१६)
उत्तर पुराण	१०)
दोनों एक साथ	२५)
पंचाध्यायी टीका	५॥)
धर्म-प्रद्वनोत्तर	२)
जिनशतक	॥)
दिवाली पूजन	३)

मिलनेका पता—

लालाराम जैन,
मल्हारगन इंदौर ।

સ્વાદ્વાદની સિદ્ધિ ।

(લેખક-મણીલાલ નરસુભાઈ દોરી, ખી. એ. અમદાવાદ)

કુમારપાલને જૈન ધર્મનો પ્રતિભાષ આપી મધ્યકાળમાં જૈન ધર્મનો ચુલરતમાં પ્રચાર કરવામાં અગ્રણ્ય ગણાતા સાદા વધુ કરોડ શ્લોકના લેખક શ્રી હેમચંદ્રાચાર્યે પોતાના પ્રસિદ્ધ હેમ વ્યાકરણમાં લખ્યું છે કે સિદ્ધિઃ સ્વાદ્વાદતઃ । અર્થાત્ સ્વાદ્વાદથી સર્વ આખતની સિદ્ધિ શક્ય શકે છે. સ્વાદ્વાદ અથવા અતેકાંતવાદમાં સર્વ વસ્તુઓની સિદ્ધિ કરવાનું સામર્થ્ય રહેલું છે. પણ અત્યારે એનો સમય આવ્યો છે કે જ્યાં સ્વાદ્વાદની સિદ્ધિ કરવાની જરૂર પડે છે. સ્વાદ્વાદના ઘણા ખોટા અર્થ દસ્તાવેજોમાં આવે છે. આપણે હીએ છીએ કે પરધર્મીઓ આ સ્વાદ્વાદના અપૂર્વ સિદ્ધાંતને સમજતા નથી. માટે તેના ખોટા અર્થ કરે છે, પણ જૈનો પોતે પણ ધણે થોડે અંશે તેનો અર્થ સમજતા માત્રમ પડે છે; અને કદાચ કોઈ સમજતા હશે પણ જ્યાં તેને વ્યવહારમાં મૂકવાની જરૂરના ઉતારવાની વાત આવે છે, ત્યાં તે મોટે ભાગે ચમત્કાત નજરે પડે છે.

સ્વાદ્વાદને કેટલાક દેશો અનિશ્ચિતવાદ, અથવા તે ગાંધ મનુષ્યનો પ્રલાપ કહી નિંદે છે. તેઓ કહે છે કે આ એ ખડું અને પેલું એ ખડું, આનું કહેનારું સ્વાદ્વાદીઓ કોઈ પણ નિશ્ચય ઉપર આવી શકતા નથી. તેઓ જ્યાં અંધાર જાળ ત્યાં છૂટવાની બારી તરીકે આ સ્વાદ્વાદમતની પ્રશંસા કરે છે. આ આરોપ તદ્દન અગત્યમૂલક છે.

સ્વાદ્વાદ એ અપેક્ષાવાદ છે, એ અનિશ્ચિત વાદ છે. તે અમુક અપેક્ષાએ અમુક વસ્તુને પ્રતિપાદન કરે છે, અને બીજી અપેક્ષાએ બીજી વસ્તુ પ્રતિપાદન કરે છે. આમાં કોઈ પણ સંઘર્ષ પડતો નથી છે નહિ. જનમનો બધો વ્યવહાર આ રીતે ચાલે છે. એટલી એક

વસ્તુ સ્થળ બેઠે જુદી જણાય છે. વધી તેજ વસ્તુ કાળ બેઠે જુદી લાગે છે. માટે કદાચ અપેક્ષાએ કહેવામાં આવ્યું છે, તે ધ્યાનમાં રાખી આપણે અમુક બાબત સત્ય કે અસત્ય કહી શકીએ.

આપણે કેટલાક દેશોમાં આપી આ નિયમને સિદ્ધ કરીશું. દાખલા તરીકે 'રેત' લઈએ. રેત, બારે કે હલકી. રેત 'બારે' કે 'હલકી' કહી શકાય નહીં કદાચ અપેક્ષાએ કદાચ વસ્તુને આશ્રયી તલે રેતને 'બારે' કે 'હલકી' પૂછો છો ? ને તમારા એક હાથમાં સીસું રાખો અને બીજા હાથમાં રેત રાખો અને પૂછો કે રેત બારે કે હલકી તો તરતજ સ્વાદ્વાદી જવાબ આપશે કે રેત હલકી છે. વળી એક હાથમાં ઘડનો લોટ રાખો, અને બીજા હાથમાં રેત રાખો અને ઉપર પ્રમાણે પ્રશ્ન પૂછો તો તરતજ જવાબ મળશે કે રેત બારે માટે રેતનું બારેપણું અથવા હલકાપણું બીજી વસ્તુને આશ્રયી રહેલું છે. જેનો એવા અર્થ નથી કે રેતને એક અવાજમાં બારે તેમજ હલકી કહે.

આપણે એક બીજો દષ્ટાંત લેઈએ. કાળિદાસ મોતીલાલનો બાપ થાય, પણ તેજ કાળિદાસ મોતીલાલનો પુત્ર થાય. માટે કાળિદાસ બાપ કે દીકરા એ પ્રશ્નનો જવાબ કોઈ આપી શકે નહિ. દેાની અપેક્ષાએ તે પ્રશ્ન પૂછવામાં આવ્યો છે, તેનાપર તેના પ્રત્યુત્તરનો આધાર છે.

કાલીદાસ મોતીલાલની અપેક્ષાએ પિતા છે, તેજ કાલીદાસ મોતીલાલની અપેક્ષાએ પુત્ર છે, વળી તેનો તે કાલીદાસ બીજાનો માગો થાય, ચોથાનો બાળેજ થાય, પાંચમાંનો દાદો થાય; છઠ્ઠાનો ભત્રીજો થાય એ રીતે એક મનુષ્ય ઘણા સંબંધો રહી શકે છે. માટે સંબંધ વિચારી વાત કહેવામાં આવે તે સત્ય, અને સંબંધ કે અપેક્ષા વિના એ કહેવામાં આવે તે અસત્ય.

બીજે એક દાખરો લઈએ. એક ગાય ધોળા છે તેના ચંચીર પર કેટલાક લાલ ઘાંટા છે. હવે સામાન્ય રીતે આપણે તેને ધોળા ગાય કહીએ છીએ પણ આ ગાય 'ધોળીજ' છે, એમ કહેવું એ સ્વાદ્વાદની દૃષ્ટિએ નવામાં છે, કારણ કે



‘ ધોળીજી ’ છે એમ કહેવામાં તેનાં બીજા ગુ-
ણોના આપણે અપસાપ કરીએ છીએ. જ્યાં મુખ્ય
ગુણ કહેવામાં આવે, પણ બીજા ગુણોના અનાદર,
કરવામાં ન આવે ત્યાં આપણે સત્યની સમીપ-
આવીએ છીએ.

સત્ય એટલું વિશાળ છે કે તેને સર્વ અપે-
ક્ષાએ સર્વ બાજુએથી, સર્વ દિશાઓથી કેન્દ્ર
બેઠી શકે નહિ. કેટલેક અંશે આપણે તે બેઠ
શકીએ. જેટલે અંશે આપણે બેઠ શકીએ, તેટલે
અંશે આપણે તે જાણીશીએ તો તેમાં આપણે
સત્ય કહીએ છીએ, પણ તે ‘ આમજી છે ’ અ-
થવા ‘ આમ નથીજી ’ એમ કહેવામાં ભૂલ
કરીએ છીએ. કારણકે બધી અપેક્ષાઓ દરેક
મનુષ્ય સમજી ન પણ શકે.

‘ દાસ અમેરિકામાં એથી એક માન્યતા ચલી
રહેલી છે કે બધા સામોરિક રોગોનું મૂળ કારણ
‘ મનના વિચારો છે. મનુષ્યના વિચારો રોગોરૂપે
જાહેર પડે છે. ’ મનુષ્યની ચિંતાઓ, છાયાં, દ્રવ્ય,
ઉદ્દેગ, ક્રોધ, અશુભ ભાવનાઓથી સોડી ઝેરો
બુને છે, અને તે ઝેરી લોહીથી અનેક પ્રકારના
રોગો ઉદ્ભવે છે આ વાત સત્ય છે, પણ રોગોનું
મૂળ વિચારોજ છે અને વિચારો સિવાય બીજું
કંઈ નથી એમ કહેવું તે સ્વાધ્યાત્મી દ્રષ્ટિએ અર્થ-
સાર છે અથવા નવામાંસ છે. કારણકે હવે
ખદાર ખાવાપીવામાં આવે, ઉત્તમ કરવામાં
આવે, મનમૂલનો નિરોધ કરવામાં આવે તો શુભ
ભાવનાવાગાને પણ રોગો પેદા થાય એમ નવાજ
નથી. મારે અશુભ વિચારો એ રોગોનું કારણ
મેરે બાળે છે; એમ કહેવું એ બ્યાજબી છે, પણ
અશુભ વિચારોજ રોગનું કારણ છે એમ કહેવામાં
ભૂલ થાય છે.

વગરના જેટલા કહ્યો કહાને થયા છે,
દાસમ. થાય છે, અને ભવિષ્યમાં થશે, તે બધું
કરણ એ છે કે મનુષ્યે સામાનું દરિદ્રિનું
બેઠ શકતા નથી. પોતાની વસ્તુ સ્થાપન કરવામાં
લેખી એકેલા ખર્ચ આનુર હોય છે કે સામે કષ્ટ
અપેક્ષાએ અથવા કેવલ આક્રમણી કહે છે, તે

વિચારવાનો યગ લેતા નથી, અને તેથીજ બંને
ખરા હોવા છતાં લડી મરે છે. દાસની એક બાજુ
સોનાથી મહેલી હોય, અને બીજી બાજુ રૂપાથી
મહેલી હોય સામસામા હિમા રહી બેનારા બંને
પોતાનો પક્ષ ખરે છે, એમ દ્રવ્યથી પ્રતિપાદન
કરે તો તેમાં આશ્ચર્ય શું ? પણ જે તટસ્થ
મનુષ્ય બંને બાજુઓ બેઠ શકે છે તે બંનેને
સમજાવી શકે કે ‘ જાણ તમારી બાગત સાચી છે,
પણ બીજી બાજુ પણ એટલીજ સાચી છે, અને
બંને બાજુઓ ભેગી કરી કહેવામાં આવે તો
આપણે સત્યની સમીપ આવીએ છીએ ત્રાસ એક
બાજુએથી રૂપેરી છે, અને બીજી બાજુએથી
સોનેરી છે. મારે તેને કેવળ રૂપેરી કે કેવળ
સોનેરી કહેવામાં ભૂલ થાય છે.

નીતિના સિદ્ધાંતોના સંબંધમાં પણ રસાદા
દોષ પ્રકાર નામે છે. એક સમય એવો હતો કે
જ્યારે લડાઈમાં પકડાયેલા કેદીઓને એક મોટા
જરાન વારને રાખી મૂકવામાં આવતા હતા. તે
દિવસે તેમને મારીને તેમનું માસ ચૂધી થીજ-
વાની આપવામાં આવતી હતી. હવે એક દયાળુ
પુરો સ્વચ્છં કે આવી રીતે આવા કેદીઓને
મારી નાખવા કરતા તેમને જે શુધામ ખના-
વવામાં આવે, તો આખી છંદગી સુધી તેઓ
આપણને કામ લાગે. કોઈ પણ પ્રકારનું મહેન-
તાઈ આધ્યા સિવાય આપણે તેમની પડોશી
નોકરી લઈ રહીએ. હવે આ ગુલામગીરીએ
આપણી હાકની સ્વતંત્રતાની ખાતના પ્રમાણે
હલકું પગથિયું છે, પણ ઉપર જણાવેલો નિર્વાત
કે જ્યાં કેદીઓને મારી નાખવામાં આવતા હતા,
તે સ્થિતિની અપેક્ષાએ બ્યાજબી પગથિયું ગણી
ચકાવ મારે સ્વાધ્યાત્મ ગુલામગીરીને તદ્દન હલકું
પગથિયું કહેતા અરક્ષે કારણકે કષ્ટ અપેક્ષાએ
એ પ્રથમ પૂરવામાં આવે છે તેવું તેના પ્રત્યક્ષ
બોધ આધાર છે.

સ્વાધ્યાત્મી સામા મનુષ્યને પોતાનું દરિદ્રિનું
દોષવાનું કહેવો નથી. તે દરિદ્રિનુંમાં રહેવું
સત્ય પોતે સમજે છે, અને સમય સત્યમાં તે



સ્વાદ્વાદની સિદ્ધિ ।

(લેખક-મણીલાલ નમ્પુભાઈ દોશી, ખી. એ. અમદાવાદ)

કુમારપાલને જૈન ધર્મનો પ્રતિષ્ઠા આપી મધ્યકાળમાં જૈન ધર્મનો શુભરસમાં પ્રચાર કરવામાં અગ્રેગણ્ય ગણાતા સાડા ત્રણ કરોડ શ્લોકના લેખક શ્રી હિમચંદ્રાયર્થે પોતાના પ્રસિદ્ધ હંમ વ્યાકરણમાં લખ્યું છે કે સિદ્ધિઃ સ્વાદ્વાદતઃ । અર્થાત્ સ્વાદ્વાદથી સર્વ આખતની સિદ્ધિ થઈ શકે છે. સ્વાદ્વાદ અથવા અનેકાંતવાદમાં સર્વ વસ્તુઓની સિદ્ધિ કરવાનું સામર્થ્ય રહેલું છે. પણ અત્યારે એવો રામય આવ્યો છે કે જ્યાં સ્વાદ્વાદની સિદ્ધિ કરવાની જરૂર પડે છે. સ્વાદ્વાદના ઘણા ખોટા અર્થ કરવામાં આવે છે. આપણે હીએ છીએ કે પશ્ચિમમાં આ સ્વાદ્વાદના અપૂર્વ સિદ્ધાંતને સમજતા નથી. માટે તેનો ખોટો અર્થ કરે છે, પણ જૈનો પોતે પણ ઘણે થોડે અંશે તેનો અર્થ સમજતા માત્રમ પડે છે; અને કદાચ કોઇ સમજતા હશે પણ જ્યાં તેને વ્યવહારમાં મુકવાની-જીવનમાં ઉતારવાની વાત આવે છે, ત્યાં તે માટે બાળે શન્યતા નજરે પડે છે.

સ્વાદ્વાદને કેટલાંક દેહોઃ અનિશ્ચિતવાદ, અથવા તો ગાંડા મનુષ્યનો પ્રલાપ કહી નિંદે છે. તેઓ કહે છે કે આ એ ખડું અને પેલું એ ખડું, આનું કહેનારું સ્વાદ્વાદીઓ કોઈ પણ નિશ્ચય ઉપર આવી શક્તા નથી. તેઓ જ્યાં જાંઘાજીવન ત્યાં જીવવાની બારી તરીકે આ સ્વાદ્વાદમતની પ્રશંસા કરે છે. આ આલેખ નંદદત્તઃ અગ્નિ, મુનિક છે.

સ્વાદ્વાદ એ અપેક્ષાનાક છે, એ અનેકાંત વાદ છે તે અમુક અપેક્ષાએ અમુક વસ્તુને પ્રતિપાત્ન કરે છે, અને ખીલ અપેક્ષાએ ખીલ વસ્તુ પ્રતિપાત્ન કરે છે. આમાં કાંઈ પણ સશય પ.મ.જા જેવું છે નહિ. જાનના ખીલો વ્યવહાર આ રીતે આવે છે. એકની એક

વસ્તુ સ્થળ બેદે જુદી જણાય છે. વલી તેજ વસ્તુ કાળ બેદે જુદી લાગે છે. માટે કઇ અપેક્ષાએ કહેવામાં આવ્યું છે, તે ધ્યાનમાં રાખી આપણે અમુક આખત સત્ય કે અસત્ય કહી શકીએ.

આપણે કેટલાક દૃષ્ટાંતો આપી આ નિમિષને સિદ્ધ કરીશું. દાખલા તરીકે 'રેત' લઈએ. 'રેત' બારે કે હલકી. રેત. 'બારે' કે 'હલકી' કહી શકાય નહી કઇ અપેક્ષાએ કઇ વસ્તુને આશ્રયી તમે રેતને 'બારે' કે 'હલકી' પૂછો છો ? જો તમારા એક હાથમાં સીસું રાખો અને બીજા હાથમાં રેત રાખો અને પૂછો કે રેત બારે કે હલકી તો તરતજ સ્વાદ્વાદી જવાબ આવશે કે રેત હલકી છે. વળી એક હાથમાં ધૂકનો લોટ રાખો, અને બીજા હાથમાં રેત રાખો અને ઉપર પ્રમાણે પ્રશ્ન પૂછો તો તરતજ જવાબ મળશે કે રેત બારે. માટે રેતનું બારેપણ અથવા હલકાપણ ખીલ વસ્તુને આશ્રયી રહેલું છે. જેનો એવા-અર્થ નથી કે રેતને એક અવાજમાં બારે તેમજ હલકી કહે.

આપણે એક બીજો દૃષ્ટાંત લેઈએ. કાળિદાસ મોતીલાલનો બાપ યાય, પણ તેજ કાળિદાસ મોતીલાલનો પુત્ર યાય. માટે કાળિદાસ બાપ કે દીકરો એ પ્રશ્નનો જવાબ કાંઈ આપી શકે નહિ. દોની અપેક્ષાએ તે પ્રશ્ન પૂછવામાં આવ્યો છે, તેનાપર તેના પ્રત્યુત્તરનો આધાર છે.

કાલીદાસ મોતીલાલની અપેક્ષાએ પિતા છે, તેજ કાલીદાસ મોતીલાલની અપેક્ષાએ પુત્ર છે, વળી તેનો તે કાલીદાસ ત્રીજોનો મામો યાય, ચોથોનો બાજોજી યાય, પાંચમોનો કાકો યાય, છઠ્ઠોનો બત્રીજો યાય એ રીતે એક સતુક ઘણા સંબંધ રહી શકે છે માટે સંબંધ વિચારી વાત કહેવામાં આવે તે સત્ય, અને સંબંધ કે અપેક્ષા વિના જે કહેવામાં આવે તે અસત્ય.

બીજા એક દાખલો લઈએ. એક ગાય, ધોળી છે તેના શરીર પર કેટલાક લાલ છાંટા છે. હવે સામાન્ય રીતે આપણે તેને ધોળી ગાય/કહીએ છીએ પણ આ ગાય-ધોળીજી છે, એમ કહેવું એ સ્વાદ્વાદની દૃષ્ટિએ નવાગાસ છે. રત્ન કે



‘ ધોખીજ ’ છે એમ કહેવામાં તેનાં બીજા ગુણોના આપણે અપલાપ કરીએ છીએ. જ્યાં મુખ્ય શુદ્ધ કહેવામાં આવે, પણ બીજા ગુણોના અનાદર કરવામાં ન આવે ત્યાં આપણે સત્યની સમીપ આવીએ છીએ.

સત્ય એટલું વિશાળ છે કે તેને સર્વ અપેક્ષાએ સર્વ બાબતોએથી, સર્વ નિશાંચોથી કેઈ જોઈ શકે નહિ. કેટલેક અંશે આપણે તે જોઈ શકીએ. જેટલે અંશે આપણે જોઈ શકીએ, તેટલું અંશે આપણે તે જાણીએ તો તેમા આપણે સત્ય કહીએ છીએ, પણ તે ‘ આમજ છે ’ અથવા ‘ આમ નથીજ ’ એમ કહેવામા બુદ્ધ કીએ છીએ. દારણુકે બધી અપેક્ષાઓ દરેક મનુષ્ય સમજી ન પણ શકે.

હાલ અમેરિકામાં એવી એક માન્યતા ચલી રહેલી છે કે બધા રાસીરિક રોગોનું મૂળ કાન્થ મનના વિચારો છે. મનુષ્યના વિચારો રોગોરૂપે બહાર પડે છે. મનુષ્યની ચિંતાઓ, ઇર્ષ્યા, દ્વેષ, ઉદ્વેગ, ક્રોધ, અશુભ ભાવનાઓથી લેહી ઝેરો બને છે, અને તે ઝેરી લેહીથી અનેક પ્રકારના રોગો ઉદ્ભવે છે આ વાત સત્ય છે, પણ રોગોનું મૂળ વિચારોજ છે અને વિચારો સિવાય બીજું કંઈ નથી એમ કહેવું તે સ્વાદ્વાદની દ્રષ્ટિએ અર્થ સંતર છે અથવા નવામામ છે. કાન્થકે હદ બહાર ખાવાપીવામા આવે, ઉત્તમગર કરવામાં આવે, મજમનનો નિરોધ કરવામાં આવે તો શુભ ભાવનાવાળાને પણ રોગો પેદા થાય એમા નવાજ નથી માટે અશુભ વિચારો એ રોગોનું કારણ મોટે ભાગે છે; એમ કહેવું એ વ્યાજબી છે, પણ અશુભ વિચારોજ રોગનું કારણ છે એમ કહેવામા બુદ્ધ માં છે.

જગતમા જેટલા કલ્યાણ કકામો થયા છે, હાલમા થાય છે, અને ભવિષ્યમાં થશે, તે બધું કાન્થ એ છે કે મનુષ્યો સામાનું દ્રષ્ટિબિન્દુ જોઈ શકતા નથી. પોતાની વસ્તુ સ્થાપન કરવામા તેઓ એટલા બધા આગર હોય છે કે સામે કંઈ અપેક્ષાએ અથવા કેવા આશયથી કરે છે, તે

વિચારવાનો શ્રમ લેતા નથી, અને તેથીજ બંને ખરા હોવા છતાં લડી મરે છે. દાલની એક બાબત સોનાથી મટેલી હોય, અને બીજી બાબત રૂપાથી મટેલી હોય સામસામા ઉભા રહી જોનારા બંને પોતાનો પક્ષ ખરો છે, એમ દ્રઢતાથી પ્રતિપાદન કરે તો તેમાં આશ્ચર્ય શું ? પણ જે તટસ્થ મનુષ્ય બંને બાબતો જોઈ શકે છે તે બંનેને સમજાવી શકે કે ‘માઈ’ તમારી બાબત સાચી છે, પણ બીજી બાબત પણ એટલીજ સાચી છે, અને બંને બાબતો જોઈ કરી કહેવામા આવે તો આપણે સત્યની સમીપ આવીએ છીએ દાવ એક બાબતોએથી રૂપેરો છે, અને બીજી બાબતોએથી સોનેરી છે. માટે તેને દેવળ રૂપેરી કે કલ્પ સોનેરી કહેવામાં બુદ્ધ થાય છે.

નીતિના સિદ્ધાંતોના સંબંધમાં પણ સ્વાદ્વાદ પડેલા પ્રકાશ નામે છે. એક સમય એવો હતો કે જ્યારે લકાષમા પકડાયેલા કેટલીએને એક મોટા જસન વારતે રાખી મૂંઝામાં આવના હતા. તે દિવસે તેમને મારીને તેમનું માસ સુધી મીઠા બાતી આપવામાં આવતી હતી. હવે એક દવાજી પુરૂષે સચ્ચુ કે આવી રીતે આવા કેટલીએને મારી નાખવા કરતા તેમને જે શુભામ બનાવવામા આવે, તો આખી જીંદગી સુધી તેઓ આપણને દામ લાગે. કેઈ પણ પ્રકારનું મહેનતાણું આપ્યા શિવાય આપણે તેમની પાસેથી નોકરી લઈ શકીએ. હવે આ શુભામગીરીએ આપણી હાલની સ્વતંત્રતાની ભાવના પ્રમાણે હલકું પગથિયું છે, પણ ઉપર જણાવેલો રિચિત કે જ્યાં કેટલીએને મારી નાખવામાં આવતા હતા, તે રિચિતની અપેક્ષાએ આગળનું પગથિયું ગણી શકાય માટે સ્વાદ્વાદ શુભામગીરીને તદ્દન હલકું પગથિયું કહેતાં અટકશે કારણકે કંઈ અપેક્ષાએ એ પ્રથ પૂછવામા આવ્યો છે તેવર તેના પ્રત્યુત્તરનો આધાર છે.

સ્વાદ્વાદી સામા મનુષ્યને પોતાનું દૃષ્ટિબિન્દુ છેડવાનું કહેવો નથી. તે દૃષ્ટિબિન્દુમાં રહેલું સત્ય પોતે સમજે છે, અને સમય સત્યમા તે



દૃષ્ટિગિન્દુનું ક્યું સ્થાન છે, તે પણ તે સમજે છે, અને તેથી સામા મનુષ્યને ધોળું દૃષ્ટિ-ગિન્દુઓ સમજાવી તેના સત્યને સંપૂર્ણ બનાવવાનું શીખવે છે. આથી સામા મનુષ્યના સ્વાભિમાનને હાનિ પહોંચતી નથી, અને તે ત્વરાથી બીજું દૃષ્ટિગિન્દુ અથવા બીજું દૃષ્ટિ-ગિન્દુ સ્વીકારે છે.

મહાતીર સ્વામીએ અગોઆર ગણધરો પ્રતિ આવીજ રીત અંગદાર કરી હતી. તેમણે તેમના મનનો તિરસ્કાર કર્યો ન હતો. તેમણે દરેક ગણધરને કહ્યું કે “ ભાઈ ! તારા દૃષ્ટિ-ગિન્દુઓ આ વાત આમ લાગે છે, પણ તેની સાથે જો આ નવું દૃષ્ટિ-ગિન્દુ ઉમેરવામાં આવે તો તને પડતી થંકા ફર થઇ જશે, અને તું સંપૂર્ણ સત્ય સમજી શકીશ ” આ રીતે ખરા સ્વાદાદીનું અનુપમ દૃષ્ટાંત તેમણે પોતાના જીવનથી પૂરું પાડ્યું છે.

એમ કહેવામાં આવે છે કે મહાતીર પ્રજાની પરિપક્વતા પછી જુદા જુદા મતના અનુયાયીઓ હતા. તેમણે તેમને કદાપિ આનાદર કર્યો નથી. તે બધા એકાંતવાદી હતા. જેટલે અંશે તેઓ પોતાના પક્ષ સમર્થન કરતા હતા, તેટલે અંશે તેઓ સત્યથી વિમુખ થતા હતા. મહાતીર પ્રજા તેમના પક્ષનું સમર્થન કરતા હતા, પણ સાથે બીજા પક્ષો પણ ખરા છે, એમ કહેતા હતા, અને બધાં પક્ષોનો સમન્વય કરી સંપૂર્ણ સત્ય જાણવતાં હતા.

સ્વાદાદી નિરંતર ઉદાર દીક્ષિતો હોય છે— હોવો જોઈએ. કારણ કે તે સત્યને અને બીજાં એથી જોઈ શકે છે.

અત્યારે જેનો મોટે ભાગે સંકુચિત વિચારના થઇ ગયા છે, તેમનામાંથી ઉદારતા ચાલી ગઇ છે, કારણકે સ્વાદાદી દૃષ્ટિ પણ ચાલી ગઇ છે. તેઓ પોતે પણ અનિર્ણયવાદી મરી મોટે ભાગે એકાંતવાદી બન્યા છે. એટલે અમુક બાબતોજ સત્ય, અને તે સિવાયની બીજી બધી અસત્ય, એમ તેઓ પ્રેમકષ્ટ જણાવે છે. આથી તેઓ સત્યને તેના નવા

અને વિશાળ સ્વરૂપમાં ગ્રહણ કરી શકે, એવી સ્થિતિ રહી નથી. જે સ્વાદાદી દૃષ્ટિથી તેઓ અન્ય પચવાળાઓને સત્યની વિવિધ અપેક્ષાઓ સમજાવી સત્ય માર્ગ તરફ વાળતા હતા, તેજ દૃષ્ટિનો આજે વિલોપ થવાથી તે સ્વાદાદી મતના ઉપાસકો પોતાની સંકુચિત અને અનુદાર દૃષ્ટિથી પોતાનાજ સ્વધર્મો બધુંઓને જૈન ધર્મથી વિમુખ બનાવવાનાં અનેક કારણો ઉભાં કરે છે, એ અતિશય શીઘ્રની વાત છે.

ખરા સ્વાદાદી જેટલે જેટલે અંશે અન્ય પંથ, અન્ય ધર્મ, કે અન્ય સંપ્રદાયમાં સત્યના અંશો મળે તેને ગ્રહણ કરી પોતાના સત્યને પ્રમણ બનાવે છે, અને તે તે અંશો માટે તે ધર્મની સ્તુતિ કે પ્રશંસા કરતાં જરાપણ આચકો ખાતો નથી. આથી સત્યને ટેકો મળે છે, અને ધર્મોના ગ્રંથાઓનો અત આવે છે. આ સંબંધમાં ગિરનારપર આવેલા અશોકના ૧૨ માં શિલાલેખમાં જણાવેલું છે કે—

“ નજાં કારણોસર ખીજા ધર્મની નિંદા કરીને પોતાના ધર્મનું મહત્વ કાઢીને વધારતું નહિ; કારણકે એક અથવા બીજા કારણસર દરેક ધર્મ માનને પાત્ર છે. આ પ્રમાણે વર્તવાથી મનુષ્ય પોતાનું મહત્વ વધારી શકે છે, તેમજ બીજા પંથ ઉપર ઉપદાર કરે છે. આથી વિરુદ્ધ વર્તવાથી મનુષ્ય પોતાના પંથને નુકસાન કરે છે; અને બીજા પંથને અપકાર કરે છે. હું મારા ધર્મની કીર્તિ વધારું છું, એવું સમજીને, પોતાના ધર્મ ઉપરના અતિશય રાગને લીધે બીજા ધર્મની નિંદા કરીને પોતાના ધર્મને માન આપે છે, તે પોતાના અંતરા વર્તનથી પોતાનાજ ધર્મને ભારે હાનિ પહોંચાડે છે. ”

જે મનુષ્ય તત્ત્વજ્ઞાનની એક વિચાર શ્રેણીને વળગી રહીને જણાવે છે કે આ ઉત્તમોત્તમ છે, અને તેને સાથી એક ગણી તેનાથી ભિન્ન એવી દરેક વિચાર પદ્ધતિને હલકી ગણે છે, તે મનુષ્યે હજી વાંદ વિવાદની રૂતિ ઉપર જાય મેળવ્યો નથી.



देश धान, पान, द्रव्य वगैरे लेदही हउं
 १२तुनी स्थिति नदताय छे ताना मागो लभोगीओ
 ३० भे छे, तेभा तेभने आनंद पडे छे ते तेभने
 भन सत् वस्तुओ छे आपणे तनी पेक्षीपार
 गया छीओ आपणुने तेभा तस परतो नथी-
 आपणे भन ते लभोगीओ अमत् छे आपणे
 हाल इपीआभा आनंद पाणीओ छीओ, ते भदरे
 सुभी वधओ छीओ, ते भय दुःखी मनीओ छीओ
 तेही इपीआ आपणे भन सत् वस्तु छे, पशु
 जने उपीआनी नति भान गूडा नथी तेभा
 योगीने भन आ इपीआ असत् छे, यणीओ
 साइ लडी भगता आणराने प्रेध आपणे जेम
 विगारीओ के आ आगो के भ लडता दशे ?
 योगी पशु इपीआने साइ आपणुने लडता
 लेछ, जेपेन विचार इ ओ रीगाई छे
 तीर्थ इओ अने अ भ राउपइ गयता अओ
 अने आगो जेम लयावे छे के पर सत्य
 जेयु लय, जेछ विराग, अने जेदही नथी
 अपेक्षावां छे के तीर्थ इओ पशु ते वाधरीभा
 पुरी रीते दहावी शडे नहि, तो पओ तेने सभ-
 छने लभनाराओ अन्धोभा ते पूरु रीते री
 रीते भूषी शडे ? धया अन्धो रिउडे गया छे
 भारे हाय जे अन्धो भगी आवे छे, ते अन्धोभा
 भगी आवता खान सिराय पीजु सत्य होछ
 शडे नहि, जेम कोछु कही शडे ? शु सत्यतो
 तेओओ छनओ राखो छे ? जे जेम होय तो
 आ जगतभा विगानास्त्रना प्रयोगीओ जे नही
 नही शोधि याय छे ते विरे शु कडेगो ? भारे
 योगी अक्षिभान तट्टो, हदयता हार पुन-
 राओ सत्यता उपासक अनो अने हत्यभा रयाहा
 टनि रापी सत्यनी जुनी जुनी अपेक्षाओ सभने
 पशु ते ग्राह्यजतिना अनार इरी जेधतवादी
 जनतानी जून कदापि इओ नहि भय आठनुज,
 अने आगवाही वधारे होछ नहि, जेयु कोछु इरी
 शडे नहि भारे भाइ जेयु न साइ जेम भानवाने
 जने साइ-सभ जे १ भाउ जेम भानगानी
 बुद्धि राओ तो तमे सत्यनी सगीभभा आसो,
 अने जैन धर्मभा रवेसा सत्यने तमे वधारे
 दीपानी राओ

जैन धर्मकी प्राचीनता और उसकी उत्पत्ति ।

(लेखक-वायू सुपार्श्वदास गुप्त बी ए आरा ।)

जैन धर्मकी उत्पत्ति कालके सन्धमे विद्वानोंके अनेक मत हैं । कुछ लोगोंका ख्याल है कि यह धर्म ईसाकी छठी सदीमें आविर्भूत हुआ । इस सिद्धांतके प्रचारकोंमें मुख्यतया लेखत्रिज और एल्फिन्स्टन महाशय हैं । यद्यपि आप लोगोंके विचार अब विद्वन् मंडलीमें नहीं माने जाते तो भी अब भी ऐसी पुस्तकोंका अभाव नहीं है जिनमें उन्हींके सिद्धांत प्रतिपादित किये गये हैं । वास्तवमें उनका जैन साहित्य सबधी ज्ञान बहुत ही कम था और जिस समय वे हुए उस समय जैन साहित्य कम प्रकाशित हुआ था ।

उसके बाद कुछ यूरोपियन विद्वान ऐसे हुए जिन्होंने जैन धर्मकी प्राचीनता ईसासे पूर्वकी मानी, पर बौद्ध धर्मको इसका उद्भव स्थान समझनेकी मूल की । दोनों धर्मोंकी कई अगोकी समानताने उनके ज्ञान चक्षुओं पर अज्ञानका पर्दा डाल दिया और वे इस मोह जालमें फसे रहे कि बौद्ध धर्मसे जैन धर्म निकला है । इस मतके प्रचारक विलसन, लैसन तथा वेबर जैसे विद्वान थे ।

कुछ वर्षों तक इनके इस मतका ऐतिहासिक मसाममें इनका आदर हुआ, कि उनके सामने जैनियोंकी कुछ भी डाल न गल सकी । पर जैसे जैसे जैन साहित्यका प्रकाश फेकने लगा और उसके आलोकमें वस्तुओंका वास्तविक



स्वरूप प्रकट होने लगा, लोग समझने लगे कि दूसरा मत भी भूलसे भरा हुआ है। वास्तवमें दोनों धर्मों के मत एक दूसरेसे विभिन्न हैं; इतना ही नहीं बल्कि जैन धर्म बौद्ध धर्मसे प्राचीन है। इस मतका प्रतिपादन पहले परल डाक्टर हरमन जैकोबीने अपने कल्पसूत्रकी टीकामें ऐसे अकाट्य प्रमाणों द्वारा किया, कि आपका सिक्का साहित्य जगत्में देखते देखते ऐसा जमा, कि सभी प्राच्य विद्वान अपने मुरीद होगये। आपका कहना है, कि जैन और बौद्ध धर्म, दोनों हिंसके परम विरोधी हैं। अतएव इनका जन्म उन लोगोंके द्वारा हुआ, जो वैदिक हिंसाको घृणाकी दृष्टिसे देखते थे। दूसरे शब्दोंमें यह कि ये दोनों धर्म वैदिक धर्मसे निकले हैं। पर जैकोबी महाशयका यह मत भी ठीक नहीं समझा जाता और न यही ठीक समझा जाता है कि महावीर जैन धर्मके संस्थापक थे। अब इस बातका पता तो पूर्ण रूपसे ऐतिहासिक सामग्रियोंसे लगता है, कि पार्श्वनाथ नामके भी कोई धर्म प्रचारक थे और उनका धर्म भी ठीक महावीरके धर्मकी तरह था। प्रो० जैकोबीके मतका खंडन कई प्रकारोंसे हो जगता है। संसारमें अभी किसी भी ऐसी पुस्तकका पता नहीं लगा है जो ऋग्वेदसे पुराने हो। इसलिये यदि ऋग्वेदमें ही जैनियोंका निम्न हो अथवा उनके सिद्धांतोंकी ओर इशारा हो तो मानना होगा, कि उस वेदसे भी पुराना जैन धर्म है। एक स्थलमें यमनाम कहता है कि हमलोग नम्र देवताओंकी उपासना करते हैं, जो स्वयं पवित्र हैं और दूसरोंको भी पवित्र

करते हैं। यजुर्वेदमें ऋषभदेव, अजितनाथ और अरिष्टनेमि इन तीन तीर्थंकरोंके नाम आये हैं। ऋग्वेदमें लिखा है कि मगधदेशमें एक ऐसा संप्रदाय था जो यज्ञकी घृणाकी दृष्टिसे देखता था। भागवतमें साफ ही लिखा है कि ऋषभदेव जैनधर्मके प्रचारक थे। बाराह और अग्नि पुराणोंमें भी श्री ऋषभदेवका नाम है जिससे उनकी ऐतिहासिकता मालूम होती है। उनकी माताका नाम मरुदेवी और पुत्रका भरत दिया है। इन्हीं भरतके नामसे इस देशका नाम भारतवर्ष पड़ा। भागवत पुराणके अनुसार ऋषभदेव विष्णुके नव अवतार सगसे जाते हैं और उनका अवतार दामन, राम, कृष्ण और बुद्धदेवके अवतारोंके पहले हुआ था। वामन अवतार पंद्रहवां अवतार है और इसका निम्न ऋग्वेदमें आया है। इससे मालूम होता है कि ऋग्वेदके बननेके पहले यह अवतार हुआ था। इसलिये ऋषभदेवका अवतार जो नवां था, ऋग्वेदके बननेके और भी बहुत पहले हुआ होगा।

इससे साफ मालूम होता है कि जैन धर्म वेदोंके बननेके पहले भी वर्तमान था। इसलिये यह कहना कि जैन धर्म वैदिक धर्मसे निकला है, जो उसके पीछे हुआ, अंगरेजी क्रांतिके अनुसार धोड़ेमें गाड़ी जोतना है।

अब बड़ा गंभीर प्रश्न यह उपस्थित होता है कि वैदिक धर्म कहाँसे आया और इसका जैन धर्मसे कुछ संबंध है या नहीं।

वैदिक धर्मकी उत्पत्तिका पता लगानेके पहले में यह देखना चाहता है कि ऋग्वेदमें



हैं क्या? उनमें कौन कौनसी बातें लिखी हैं। यूरोपियन विद्वानोंने उसकी समालोचना करते हुए लिखा है कि वह ग्रंथ उस समयका मालूम होता है, जिन समय संसारकी सभ्यता बाल्यावस्थामें थी। उनके अनुसार ऋग्वेद उस समय बना, जम, लोग सूर्य, चन्द्रमा, बिजली, वर्षा आदि प्राकृतिक दृश्योंको देखकर आश्चर्य और भयमें 'पड़' जाते थे और उनकी शान्तिके निमित्त उनकी उपासना करते थे। ऋग्वेदकी उपासना बड़ी ही सभल और साधारण है। आधुनिक वैदिक पर्मावलम्बियों अथवा जैनोंने पूनादि विधिको जितना जटिल बना दिया है, उतना वैदिक काशीन उपासनामें न थी। इससे पाश्चात्य विद्वान् यह सिद्धान्त निकारते हैं कि वैदिक धर्म सबसे प्राचीन धर्म हैं, क्योंकि जो धर्म जितना सरल होता है, उतना ही पुराना होता है। पर यह उनकी भूल है। पहली बात तो यह है कि वैदिक कालिन भारतवासी न इतने कम असभ्य थे जितना उन लोगोंने समझ रखा है, और न जैन धर्म उतना जटिल था, जितना वह इस समय नगर आता है। वैदिक कालकी हिन्दू सभ्यताका वर्णन करते हुए डॉक्टर मिलर लिखते हैं कि वैदिककालके आर्य अपने जीवन निर्वाहके लिए भूमि घुमा फिरा ही नहीं करते थे, बल्कि उन्होंने नगर और ग्राम भी बसाए थे जिनके मुखिया हुआ करने थे। वे नाना प्रकारके हथियारों और गैरोंका व्यवहार जानते थे और भोगविलासकी सामग्रियां काममें लाते थे। वे घागा कातना और कपड़ा बुनना जानते थे, जिससे

उनके शरीरकी रक्षा होती थी। वे लोहेकी लाभलायकतासे अपरिचित न थे और न वे लोहारी, सोनारी, ठेठरी, बढई अथवा अन्य कारीगरोंके व्यवसायसे अनभिज्ञ थे। वे लड़ाईके सभी हथियार, जैसे तलवार, घनुष, तीर, बछे तथा चस्तर आदि बनाते थे और गहरी लड़ाईयां लड़ा करते थे। वे घरके सभी वासन बर्तन बनानेमें प्रक्रे थे।

वे सोने चांदी आदि धातुओंके गहने भी बनाने जानते थे। क्योंकि वे कर्मोंमें बालियां और गलेमें जवाहिरातोंके नेकलेस भी पहारते थे। वे गाय, बैल, घोड़े आदिको लड़ाईमें काममें लाते थे और छोटे बड़े सभी तरहकी नौकाएं बना कर द्वीपोंकी सर करते थे जिनसे देशके व्यापारकी वृद्धि हो गई थी। कभी कभी तो वे नौकासेनाएं लेकर विदेशी राज्यों पर अक्रमण भी किया करते थे। वे गान विद्यामें भी दक्ष थे और नाना प्रकारके बाजाओंका प्रयोग करते थे।

वैदिक कालीन आर्योंकी यही सभ्यता थी। मर्यादित जातिकी इतनी उच्च कोटिकी सभ्यता हो, उन्हें अग्नि वर्षादिसे भयभीत हुआ जाता और वे उनकी उपासना करते थे ऐसा कहना कहां तक न्यायसंगत हो सकता है? जो जाति अग्निकी स्वयं पैदा कर सकती और अपने दबावमें रख सकती हो, वह मर्यादित कारण उपासना करती थी ऐसा कहना आसोंमें घुल टालना अथवा जिबकुल नासगझकी तरह बात करना है। वे इन्द्र और अग्निको प्राकृतिक शक्ति नहीं समझते थे बल्कि उनसे उनका तात्पर्य आत्माकी अनेक शक्तियोंसे था।



वैदिक ऋषियोंने अग्नि आदिकी प्रशंसा में जो इतने गीत बनाये, उसका प्रधान कारण यह था कि उससे आत्मामें जागृति पैदा होती थी और उसका महत्व सदा हृदयपट पर अंकित रहता है। इससे यह भी मालूम होता है कि जिस आत्माकी अनेक शक्तियोंको वे अग्नि तथा इन्द्रादिके रूपमें पूजते थे, उसके तत्वको भी वे जरूर जानते थे। वेदमें सूर्य, अग्नि और इन्द्र ये ही तीन देवता प्रधान माने गये हैं। वे आत्माके तीन प्रधान स्वरूपोंके ब्यक्त हैं। आत्माकी केवल ज्ञानावस्थाका स्वरूप सूर्य है—उसकी भोगावस्थाका स्वरूप इन्द्र है और उसकी निर्जरा यानी तप द्वारा कर्मके बंधनोंसे छुटकारा पानेकी अवस्थाका नाम अग्नि है।

जिन ऋषियोंने आत्माके भिन्न स्वरूपोंको इस तरह पहचाना, उन्हें जरूर आत्मा संबंध गूढ़ ज्ञान था और जहांसे उन्हें यह गूढ़ ज्ञान प्राप्त हुआ उन लोगोंका आत्मज्ञान गूढ़ ही नहीं बल्कि वैज्ञानिक रहा होगा। अब प्रश्न उपस्थित होता है कि यह वैज्ञानिक ज्ञान किस धर्ममें उस समय पाया जा सकता था। वेदमें तो था ही नहीं क्योंकि वेदोंके सिवा गीतोंके और कुछ महत्वपूर्ण वस्तु देखनेमें नहीं आती। तब यही कहना पड़ता है कि यह ज्ञान जैन धर्मसे ही उन्हें प्राप्त हुआ जि का निज ऋग-देवमें भी पाया जाता है। हिन्दू धर्मके अंदर तो किसी समयमें सर्वांग पूर्ण आत्मिक ज्ञानका प्रतिपादन नहीं किया गया। सांख्य योज, यथा वैशेषिक आदि छ दर्शन परस्पर लड़ते कटते हैं। वह हिंदू धर्म है जिसमें प्रत्येक कालमें

कुछ न कुछ नई बात जोड़ी गयी जिसमें उसका स्वरूप हर तरहसे संपूर्ण नजर आवे।

प्रत्येक दर्शन वेदको प्रमाण मानता है और उसे अपने मतका आधार समझता है। फिर भी प्रत्येकके सिद्धान्त वाकी दर्शनोंके सिद्धान्तोंसे भिन्न हैं। जिस धर्ममें बराबर नई बातें जोड़ी गयीं और जोड़ी जाती हैं और ऐसी बातें जो परस्पर विरोधी हैं, वह ईश्वरीय धर्म कहा नहीं जा सकता। ईश्वरके मुखसे निकला हुआ धर्म कभी अपूर्ण नहीं हो सकता और न ऐसा ही होसकता है कि उसके अनेक अर्थ लग सकें। ईश्वरको क्या गर्म है कि वह अपना ज्ञान ऐसे शब्दोंमें प्रकट करे, जिसके अनेक अर्थ हो सकें और जिनसे लोग संशयमें पड़े। इस लिये वेदको ईश्वर प्रणीत मानना थिलकुल गलत है। सभी जानते हैं कि ईश्वर जड़ वस्तु नहीं है। वह एक शक्ति है। पर शब्द जड़ वस्तु है। मनमें जब कोई बात प्रकट करनेकी इच्छा उत्पन्न होती है, तब उसका सम्बन्ध आत्माके भीतरी दो शरीरोंसे होता है और उससे सूक्ष्म गति पैदा होती है, जो बाह्य वायुके द्वारा श्रोताओंके कान तक पहुंचती है। यदि कोई मनुष्य अपनेको एक ऐसे स्थानमें बन्द करे, जिसमें मूढमसे भी सूक्ष्म जड़ वस्तु प्रवेश नहीं कर सकती तो वह बाहरी आवाजको नहीं सुन सकता। इससे मालूम होता है कि शब्द (Soul'd) जड़ वस्तु है और जड़ वस्तु शुद्ध परमात्मासे जिसका सम्बन्ध जड़से छेद मात्रका भी नहीं है, पैदा नहीं हो सकती इस लिये वेदके वाक्य किसी परमात्माके बचन

नहीं हो सकते । इससे यही सिद्धान्त निकलता है कि वेद ईश्वर प्रणीत नहीं हैं । वे ऋषि महर्षियोंके ज्ञानका फल हैं । उनकी धर्म और आत्मा संवन्धी बातें जैन धर्मसे लो गयी थीं । उस समयके लोग असम्यक् न थे । वेदोंमें यज्ञ-दिमें पशु और नर वधकी जो बातें हैं वे पीछे किसी कारणवश जोड़ दी गयी हैं । क्योंकि उसीमें एक स्थानमें यह लिखा है कि " मांस भक्षक सन्तान ही न हों " वेदोंमें राक्षसोंकी बड़ी निन्दा है । इतना ही नहीं बल्कि पीछे हिन्दु-ओंने वैदिक हिंसा घोटक वायुओंका दूसरी प्रकारका अर्थ लगानेकी जो चेष्टा की या यह कहा कि वैदिक हिंसा हिंसा न भवति, उससे स्पष्ट मालूम होता है कि हिंसा उनके धर्मका अङ्ग नहीं है और वेदमें समयके बुरे प्रभावसे या वैदिक शत्रुओंके कारण परिक्षिप्त हुआ है ।

प्रोत्साहन ।

दशाको निहारो हुई क्या हमारी,
नहीं तेज हैगा नसोंमें हमारी ।
विद्या औ कलसे हुए हाथ रीते,
जगो जैन भाई गया काल बीते ॥
जगो नींदको शीघ्र हीसे मगावो,
पड़े भाइयोंको उठो तो जगावो ।
करो जाति सेवा डरो नाहि ध्यारे,
हृदयको झुरीतें हिये प्रीति धारे ॥
तमो स्वार्थको औ चलो प्रेम मेवा,
विद्याको ब्रह्मको यही मुख देवा ।
उठावो गिरी जातिको शीघ्र यारो,
हटो नाहि पीछे उठाको सुनारो ॥
करो जैन जातीयका पार सेवा,
हिये धारी प्रीनी करो जाति सेवा,
करो आपना भी जरा काम यारो,
उठो क्यों पड़े हो हमारे दुलारो ॥

मूलचन्द्र जैन, दमोद ।

नेता कहाँ ?

(लेखक:- गोपीचंद पांडीवाल वकील)

जैन जाति उन जातियोंमेंसे है जिनको हम नेता हीन जाति कहें । जो यहां नेतृत्वका दम भरनेको हरगृह छोटा मोटा तैयार होता है पर उसका नेतृत्व स्वीकार नहीं किया जाता है । इसका कारण नेतृत्वके गुणोंका अभाव है । अनुभव, स्वार्थत्याग, विशाल हृदय, परोपकार बुद्धि, सहनशीलता, निष्कपटता, उत्साह और संगठनशक्ति (Cooperative Spirit) का अभाव हमारे नेतृत्वका दम भरनेवालोंका प्रभाव जन साधारण पर नहीं गिरने देता और इन गुणोंके अभावसे जातिमें स्वार्थ, संकीर्णता और कपट बहुत बढ़ गया है और बढ़ता जाता है । हमारे उच्च महात्माओंके जीवन उनके उपदेश, उनकी पूजा, हमारा उत्तम श्रेणिका साहित्य, वैराग्य पूर्ण स्तवन, कथाएं इत्यादि मनोहर मंदिर, तीर्थ इत्यादि प्रभावहीन होते जाते हैं ।

संकीर्णताका पक्ष हमको हमारे साहित्यकी सुन्दरता, सिद्धान्तकी अटलता, वैराग्यकी उच्चता, और हमारे पूज्य महात्माओंके जीवन और उपदेशके रहस्यसे अपरिचित ही रहता है । अगर कोई मंदिरोंमें नित्य पूजा पाठ करनेवाला, आधुनिक तथा सोसाइटियोंमें उच्च पद पर बैठनेवाला, कुंवारी कन्या पर एक पवित्र स्थानमें ही बलात्कार करता न हिचकिचावे, तो क्या हम कह सकते हैं कि शायकोंका या मंदिरोंका हमके चरित्र पर कुछ असर पड़ा ?



चालीस वर्षकी आयुमें एक स्त्री होते हुये एक १२-१३ वर्षकी कन्यासे विवाह करलेना क्या यह सावित नहीं करता कि वह व्यक्ति धर्मिक प्रभावसे बाहिर है । हमारे सैंकड़ो धर्म-कार्यमें पैसा खर्चनेमें आगे रहनेवाले अगर घरमें उपपत्नियां रख छोड़ें तो क्या हम कह सकते हैं कि उन पर धर्मका कुछ असर पड़ा । अपनी ख्यातिके लिये या उदर पूर्तिके अनुचित साधनके लिये यदि कोई लोग श्वेतांबर और दिगम्बरोंमें झगडा पैदा करते रहें तथा उसे नित्य सींचते रहें जिससे द्वेषाग्नि भभकती रहे क्या हम कह सकते हैं कि उन व्यक्तियोंमें तीर्थ, भक्ति है ? सिवाय वहीँ कहीं रातको अन्न न खानेके हमारी जातिमें कौनसी ऐसी बात है जिससे हम यह कह सकें कि हम पर हमारे आचार्योंका या शास्त्रोंका प्रभाव पड़ा । इसका कारण क्या ? यह मंदिर व तीर्थ वे ही हैं जिनके सहारेसे अनंत जीव मोक्ष गये और यह सिद्धांत भी वही है जो अनंत जीवोंको निर्वाण पद प्राप्त करानेमें फलीभूत हुए है । हमारी सम्प्रतिमें कारण यह है कि ज्ञानिमें कोई नेता नहीं । महात्माओंका वचन है कि "धर्म पांगला है" जब तक धर्मको चलानेवाला अर्थात् नेता न हो तब तक वह धर्म कुछ प्रभाव नहीं डल सकता या यों कहिये कि उसका अभाव ही है । महात्मा गांधीकी आज्ञा पर लाखों पढ़े और अनपढ़ अपने प्राण न्योछावर करने तैयार हो जाते हैं । हमारे नेतृत्वका दम भरनेवाले बतलावें उनकी आज्ञा माननेवाले बिन्ने हैं ? कबईमें बैठे महात्मा

गांधी आज्ञा दें कि सभाएं करो और कलकत्तेमें एक एक लाख मनुष्योंकी सभाएं एकत्रित हो जावें ।

हमारे नेता गले फाड़ फाड़ कर मरजावें तो भी उस जगहके लोग भी एकत्रित न हों । गांधी गिरफ्तार किये जावें और देश भरमें हड़ताल हो जावे । हमारे नेता जेलमें सड़ा करें पर हमारे जीसे उफ भी न निकले । महात्माको वर्षगांठ पर हजारोंकी शैलियां भेजी जावें, हमारे नेता कालिजों, स्कूलों इत्यादिके लिये वर्षों चिछावें मगर पैसा न मिले । यह क्यों ? हमारे नेताओंमें नेतृत्व नहीं, उनके हृदय कपटसे, पालीसीसे, संकीर्णतासे शुक्त नहीं । जन साधारणके लिये उनके हृदयमें हिंकारत, खुदके चमकनेकी भूख, कष्ट सहनेकी तय्यार नहीं, उनका चारित्र निर्दोष नहीं । ऐसे पुरुषोंका प्रभाव जाति पर कब पड़ सकता है ? श्वेतांबर समाजमें धर्मगुरु साधु व जती हैं । जतियोंके चारित्र पतनके साथ उनका प्रभाव भी उठ गया । साधुओंकी भक्ति उनके गुणोंके अनुसार मौजूद है । जिस अंशमें उनमें त्याग इत्यादि गुण मौजूद हैं उसी अंशमें उनका प्रभाव भी मौजूद है । पर उनमें संसार त्यागकी वनहसे जितने नेतृत्वके गुण होने चाहिये उतने न होनेके कारण उनका प्रभाव भी जितना होना चाहिये उतना नहीं है । हमारे उत्तम साधु भी कभी कभी उस कमजोरीका परिचय दे देते हैं जिसके कारण उनके होते हुये भी हमें कहना पड़ता है कि जैन जातिमें नेता नहीं । दिगम्बर समाजमें भर्मगुरु प्रायः पंडित लोग ही हैं । भट्टारकोंका

प्रभाव जतियोंकी तरह उठ हीसा गया । पड़ि तोंका प्रभाव जातिपर नैसा चाहिये तेसा नहीं है । क्योंकि इनमें प्राय सनसे बड़ा अशुण धनिकोंका सहारा दूटना, उनमेंसे स्वाधीनताका गुण नष्ट करके चापलूसी पैदा कर देना है। धनिक प्राय धनसे मश्राप होते हैं । उच्च शिक्षाका वहा नाम नहीं होता जिससे उनमें उच्च विचार पैदा हो सकें । उनमें नेतृत्व दूटना व्यर्थ है । अक्सर उनमें औरोंसे अवगुणोंहीकी मात्रा अधिक मिलेगी । जातिमें परस्पर झगड़ोंका कारण यदि खोना जाय तो प्राय यही धनिक मिलेंगे । उन्नतिके बाधक, कुरीतिके प्रचारक, सुधारके मार्गमें कटक प्राय यही श्रीमत् मिलेंगे क्योंकि जन साधारण धनके कारण इनके दोषोंका प्रतिरोध नहीं करते और जो कुछ थोड़ेसे कार्यकर्ता हैं तो वे मानो इन श्रीमत्तों के चिह्न ही गये हैं ।

जो थोड़ी बहुत संस्थाएँ जातिमें हैं उनमें इन्हींका पैसा अधिक होनेके कारण उनका काम आदर्श श्रेणी पर नहीं पहुँचता । कार्यकर्ताओंको सदा इनकी खुशामद करनी पड़ती है और इनको प्रसन्न रखनेके लिये इन्हींकी मनीके मुवाफिक कार्य करना पड़ता है, जनसाधारणकी सम्मतिकी कुछ कदर नहीं होती । इसी कारणसे हमारी सत्थाओंसे वास्तविक लाभ नहीं पहुँचता । यदि हमारी सत्थाएँ धनिकों पर निर्भर न रहकर जन साधारणके स्वार्थ त्यागसे दिये हुये और पसीनेसे कमाये हुये धन पर आधार रखने लग जावें तो निःसन्देह वे बहुत खर्चीक होने लगे भीलाम बहुत

पहुँचा सक्ती है । तात्पर्य यह है कि धनिक लोगोंके नेतृत्वमें हमारी उन्नति नहीं होसक्ती क्योंकि वे नेतृत्व गुण विहीन हैं ।

एक श्रेणी और है जो कि नेतृत्वना दम भरती है वह है । अंग्रेजी पढे लिखोंकी श्रेणी जो कि दिगम्बर समाजमें बाबू पार्टीके नामसे नामांकित है । इनमें बैरिस्टर, वकील, डाक्टर, प्रेज्युएटसे लेकर स्कूलके छात्रों तक शामिल हैं । यह लोग भी अपनेकी नेता समझते हैं । इन लोगोंमें विद्या है, वनतृत्व शक्ति है, पर नेताके लिये यह काफी नहीं है । इनमें कुछ दोष ऐसे हैं कि जिनके कारण इनके यह गुण भी छिप जाते हैं । उदाहरणार्थ यह लोग फिजूलखर्चोंपर भाषण देने रक्डे होते हैं, विवाहोंपर विरादरीको निमानेमें, मन्दिरोंके आडम्बरोंमें, स्त्रियोंके जेवरोंमें फिजूल खर्चके विरुद्ध बड़े युक्तिपूर्ण भाषण देते हैं, पर जन साधारण पर इसका बिलकुल असर नहीं पड़ता । कारण क्या ? यह कि इनके भाषण (Sincero) नहीं, हृदयसे नहीं निकलते, वे स्वयं बढिया कोट पतखून और अंग्रेजी जूते पहने फिरते हैं जो कि देशी पोशाकसे बढावि सस्ते नहीं । वे अपनी स्त्रियोंको विलायती दुकानोंमें घनी हुई सोनेकी चूडिया तथा गहनोंसे, बढिया फैसनेधल तेल इत्यादिसे सुसज्जित करते हैं जोकि भारतीय गहनोंसं बढावि सस्ते नहीं पडे सकते । अपने मित्रों तथा अफसरोंको गार्डेन पार्टी देते हैं जो कि बिरानरीके भोजनसे कम फिजूल या कम खर्चके या अधिक उपयोगी नहीं कहलाये जा सकते ।



इसी कारण इस पार्टीका प्रभाव जन साधारण पर नहीं पड़ सकता। इस श्रेणीके कई व्यक्ति जन साधारणसे एक विदेशीके भांति अलग ही रहते हैं और उनकी हर एक बातको नीची निगाहसे देखते हैं। इसलिये भी यह नेता नहीं बन सकते।

इस प्रकारसे नेता होनेका दम भरनेवाले लोगोंकी हम जांच करें तो हमको पता लगेगा कि हमारी जातिमें नेता कोई नहीं है। जो अपने आपको नेता समझता है वह स्वयं धोखा खाता है और दूसरोंको धोखा देता है। यह निस्संदेह खेदकी बात है। उचित है कि वे लोग धोखेसे बचे, अपने आपमें नेतृत्वके गुण उत्पन्न करनेकी कोशिश करें और पूजा सत्कारका ध्यान न दें। विशेष कर युवकोंको चाहिये कि अपना चरित्र दृढ़ करें जिससे वे वास्तविक नेता बन सकें।

संसार स्वर्ग ।

स्नेह स्वर्ग संसारं, सकल शास्त्र नीधान,

स्नेह स्वर्गं सत्यं छे, ते वीण व्यर्थ विधान।

गृहस्थी ! गृह-शालां—

शीताये स्नेहनां—सूत्रो,

प्रवाशी ! 'पूष्प-पुंनोमां—

शीखो निःस्वार्थनां—सूत्रो।

प्रवेशी 'स्नेह-शाला'मां—

शीख्या जो 'स्नेहनां—सूत्रो'।

तजी सौ मेद अंतरनो—

लहो, सौ स्नेह—स्नेहिनो।

“स्नेहयोगी”

पति पत्नि संवाद ।

विवाहका उद्देश्य ।

(लेखक:—अमृतलाल जैन, रोहतक)

पति—यह क्या पढ़ रहे हो। गुझे भी तो सुनाओ।

पति—लो सुनो पढ़ता हूँ।

परिनि—चिन्ताकर न पढ़ना उधर दादाजी बैठे हैं।

पति—क्या मैं ऐसा वेश्याम हूँ जो तुम्हारे लिये इतना चिन्ताकर पढ़ूँ कि घरके बड़े बूढ़े सुन लें।

परिनि—नहीं, यह तो नहीं। तो भी आजकल कुछ लोग ऐसे ही हैं। रिसते न होओ। कोई यह सुन पावेगा तो तुम्हारी निन्दा करेगा और वह मुझसे सही न जायगी इसीसे धीरे पढ़नेको कहती थी। अच्छा, पढ़ो।

पति—पढ़ता हूँ—साहस करके कह सकते हैं कि हमारे देशके सदृश पति—परिनिकी ऐक्यता और मिश्रण कहीं भी देखनेमें नहीं आता। विवाहके समय हिन्दू स्त्री पुरुषकी पथकता दूर होकर दोनों एक हो जाते हैं। विवाह समाप्त होते ही दम्पति एक ही दृष्टिमें आते हैं। यह ऐक्यता ही हिन्दू विवाहका मुख्य उद्देश्य है।—मेरी और क्यों ताक रही हो क्या कुछ समझमें नहीं आया ?

परिनि—कुछ भी नहीं समझ पड़ा। यह क्या कह गये ? यह किसकी कहानी है ?



पति-कहानी नहीं, यह एक लेख है ।

पतिन-लेख सही, पर बात क्या है ?

पति-विवाहकी बात है । स्वामी क्या है स्त्री

क्या है उनका आपसमें क्या संबंध है यही सब कुछ इसमें बताया है ।

पतिन-भला यह क्या हुआ ? ऐसी बातके लिखनेसे लाभ ! मैं समझी कोई बड़ी अच्छी कहानी है जिसे इतने ध्यानसे पढ़ रहे हो । विवाहकी बात तो सभी जानते हैं ।

पति-अच्छा क्या जानते हैं ?

पतिन-यही कि स्त्री स्वामीकी अर्ध शरीरी है । और तो क्या यह तो षाठ वर्षकी लडकी भी बता सकती है ।

पति-(सहर्ष) ठीक कहा परंतु इसका मतलब क्या ?

पतिन-मतलब मतलब तो मैं जानती नहीं । जैसे सब कहते हैं वैसे सुनती हूं, यही कहावत है कि स्त्री पुरुषका अर्द्धांग ही है ।

पति-ठीक है स्त्री-पुरुषका अर्द्धांग ही है इसी लिये अर्द्धांगिनी भी कहते हैं, परंतु यह बताओ कि इसका तात्पर्य क्या है, आधा शरीर तो किसीका भी नहीं होता । अपने दो हाथ दो पैर होते हैं तिसपर अर्द्धांग कहलानेका क्या अर्थ है ?

पतिन-इतना तो मैं समझती नहीं । क्या इस पोथीमें इसकी कुछ बात लिखी है ?

पति-हां लिखी है । और भी अनेक बात लिखी हैं । सुनेगी ?

पतिन-सुने तो सही, परन्तु समझ न सकूंगी ।

पति-अच्छा, पुस्तक बन्द करके बैसे ही समझाता हूं । बताओ मनुष्य क्यों जन्म लेता है ।

पत्नी-पूर्व जन्ममें किये हुए पापोंके फल भोग करनेके लिये । जब तक ये पाप नहीं निवटेंगे योंही जन्म मरण होता रहेगा ?

पति-फिर तो हमें पापोंके क्षय करनेका उपाय अवश्य करना चाहिये ।

पतिन-हां, वर वार की गर्भयातना कुछ कम कष्ट और दुःखकी बात है ।

पति-कह सकती हो क्या करनेसे पाप क्षय होना संभव है ।

पतिन-यह मैं क्या जानूं ? इसके लिये अनेक दुःख उठाते हैं, कोई सन्यासी सनता है, कोई वनवास लेता है, कोई घर रह कर ज्ञान, ध्यान, जप, दान करता है और क्या ? बताऊं ?

पति-यह सब ही ठीक है परंतु इन सबमें अच्छा कौन है ?

पतिन-धन्य २, आप मुझसे यह बात पूछते हैं। हम तो बड़ी बूढ़ियोंसे ही केवल ऐसी चर्चा सुनती हैं विशेष क्या जाने ? सो दाद्रीजी कहती थी कि कहनेको सन्यासी और ब्रह्मचारी सभी बड़े हैं, परन्तु गृहस्थके समान कोई भी नहीं है । बाल बच्चोंमें रहकर धर्मपूर्वक रहनेके समान कोई भी धर्माचरण नहीं है ।

पति-दाद्रीजीकी बात सच है पर तब भी गृहस्थ धर्म बड़ा कठिन है ।

पतिन-इसमें क्या झूठ ? गृहस्थकी लाज भगवान ही रखता है ।

पति-इस बातसे मेरा प्रयोजन नहीं है । इसको जाने दो । यह बताओ कि गृहस्थधर्मकी उत्पत्ति कहाँसे है ।



पत्नी-न जाने आप क्या पूछते हैं, कुछ समझ नहीं पड़ा ।

पति-समझी नहीं । अच्छा बताओ ' गृहस्थ किसे कहते हैं ।

पतिन-यही कि जिसके स्त्री पुत्र घर द्वार हो वह गृहस्थ है ।

पति-क्या पुरुष ही गृहस्थ होता है स्त्री नहीं ?

पतिन-क्यों नहीं ? यों सही कि जिसके स्वामी पुत्रादि हों वह गृहस्थ है ।

पति-अब समझो कि बवाहसे ही गृहस्थाश्रमकी उत्पत्ति है। पति पतिन पुत्रादि सब विवाह से ही होते हैं ।

पतिन-जान पड़ा इसी लिये स्त्री मरने पर लोग बहा करते हैं कि " उसका घर बिगड़ गया । "

पति-हां, इस लिये ही सब आश्रमोंकी अपेक्षा जो श्रेष्ठ गृहस्थ हैं वह विवाहसे ही बनता है, इस गृहस्थके धर्मोंके प्रतिपालन करने हीसे लोग पुन्य संचय और पाप क्षय कर सके हैं ।

पतिन-गृहस्थ धर्मसे पाप क्षय कैसे होता है ?

पति-सो क्या तुम समझोगे ? गृहस्थके लिये आत्म संयम, परोपकार, अतिथि सेवा, परिजन प्रतिपालन इत्यादि कर्म बताये गये हैं । इनके करनेसे निरुद्ध वृत्ति दूर होकर उत्कृष्ट वृत्तियां उदय होती हैं । गृहस्थाश्रम अपने सुखके लिये नहीं है परंतु धर्म और परोपकारके लिये है ।

पतिन-यह तो बड़ा आनंद है कि गृहस्थीके कर्म धर्म रूप समझे जाते हैं, पर असल बात तो यह ही गई। स्त्री अपने पतिकी अर्धांगिनी क्यों है यह बात तो आई ही नहीं ।

पति-ठहरो, सब बताऊंगा, पहिले तुम ही बताओ कि स्त्री और स्वामीका परस्पर क्या कर्तव्य है ?

पत्नी-एक दूसरेको प्यार करे । जब जिसके मनमें जो बात हो वह दूसरेको बोलें । एकके सुखसे दूसरा सुखी और दुःखसे दुःखी हो । परस्पर आनंद पूर्वक रहे ।

पति-बाह ! अच्छा कर्तव्य बताया । विवाहका उद्देश्य समझने पर भी स्त्री पुरुषका कर्तव्य न समझा गया । बस तुमसे वृथा सिर मारनेसे चुप ही अच्छी ।

पत्नी-क्यों इतने गुस्से क्यों होते हो ? मैं नहीं समझी तो आप ही बतादो ।

पति-अच्छा, मैं ही बताता हूं । थोड़ीसी बातमें समझनेके लिये सार यह है कि परस्पर एक दूसरेको गृहस्थ धर्म पालनेमें सहायक बनें, उत्साहिव और उत्तेजित करें, जिस कर्मसे एककी असद्वृत्ति दूर होकर सद्वृत्तियोंका विकास हो-दूसरेको बड़ी करना चाहिये ।

पत्नी-और मैंने जो कुछ कहा वह कुछ बात ही नहीं हुई । एक दूसरेकी स्नेहन करें ?

पति-क्यों नहीं करें ?

पत्नी-क्यों नहीं करें ? स्नेह तो कुछ ठहरा ही नहीं, आन सुनो हुआ क्या है ?

पति-हुआ तो कुछ नहीं । तनक धीरज धरके सुनो तो सब बात हो । मैं जो कहता था उसमें स्नेहकी बात भी है ।

पत्नी-फिर मेरी बात पर ऐसे बिगड़े क्यों थे ?



पति-केवल स्नेहमे पूरा नहीं पड़ता। मैंने जो कहा है उस पर ध्यान देनेसे दम्पतिमें प्रेम आप ही उदय होता है। जो स्त्री पुरुष विवाहके उद्देश्यको पूर्ण करनेकी चेष्टा करते हैं उनमें प्रेम तो भूतिमान् होकर आ विरामता है। मैंने जो सद्वृत्तिका शब्द कहा था उसमें क्या समझी ?

पतिन-मैं तो कुछ भी नहीं समझी।

पति-अच्छा, यह स्नेह भी एक वृत्तिका नाम है।

पतिन-स्नेह वृत्ति कैसे हो सकती है।

पति-जैसे खाना पीना आरिरिक वृत्ति है उसी भांति स्नेह एक मानसिक वृत्तिका नाम है। जैसे उचित रूपसे खानपान शरीरको पुष्ट करता है उक्त भांति धर्मानुसार स्नेहसे मन पुष्ट होता है। स्त्रीके लिये स्वामी और स्वामीके लिये स्त्री स्नेहपात्र है। जैसे वे परस्पर धर्मपालनमें सहायक हैं उसी भांति इस वृत्तिको भी पोषण करते हैं और यह धर्मरूप प्रेम जगत् पसिद्ध है इससे परस्पर सुख और धर्मचर्चा दोनों बतें बन जाती हैं।

पतिन-फिर तुम स्नेहको ऐसी तुच्छतासे क्यों देखाते थे ?

पति-इसकी चर्चा करनेसे कुछ भी लाभ नहीं है। स्त्री पुरुषको आपसमें स्नेह करना चाहिये ऐसी शिक्षा ही अनावश्यक है, परंतु इस स्नेहके सिवाय अन्य कर्मोंकी शिक्षा परमावश्यक है। केवल स्नेह १ सिखानेसे द्विषोंको और कुछ ध्यान नहीं रहता। केवल यही दृष्ट्या रहती है कि रात दिन दोनों एक दूसरेके मुँहकी ओर देखते रहे और सर्व गृहस्थ धर्म चुल्लेमें पड़े। इन्हे अपने प्यारसे काम।

पतिन-ठीक है, इस बातको मैं भी मानती हूँ। आमन्त्रण बहुतेरी वह इसी लिये न्यायी (एधक्) होनेका झगड़ा उठाती रहती हैं। उन्हें गृह कर्म भारी लगता है, केवल आरामतन्त्रकी को ही जी चाहता है।

पति-बलो अब मेरा श्रम सफट हुआ। अब केवल यह कहना है कि स्त्री स्वामीकी अच्छीगिनी क्यों है। पहिले वह सुका हूँ कि गृहस्थ न ओकेली स्त्री हो सकती है न पुरुष। दोनोंके मिलापसे ही गृहस्थ बनता है इसी भांति गृहस्थके समस्त धर्म कर्म जनक दोनों मिलकर न करें पूरे नहीं होते और इसीसे स्त्री पतिकी आर्द्रांग कहलाती है अस्तु। पतिके सांसारिक कार्योंमें सहायता देना स्त्रीके लिये परमावश्यक है। गृहस्थीके लिये परिवार प्रतिपालन और आये गयेकी शुश्रूषा आदि अति गुरुतर कर्तव्य है। हिन्दू परिवारमें केवल 'मियां बीबी' ही नहीं बरन् माता पिता भगिन तथा अन्य सम्बन्धी भी परिगणित हैं, सबको प्रसन्न रखना पड़ता है, अपना सुख त्याग कर दूसरोंको सुख पहुंचानेकी चेष्टा करना परम वश्यक होता है, इन कामोंमें कितने ही स्वामीके करनेके हैं और कितने स्त्रीके-अर्थात् जीविका प्राप्ति करना पतिके काम और पतिके उपार्जनसे समस्त परिवारके खानपानका प्रबन्ध स्त्रीका काम है। पतिमें जब स्नेह है तो पतिके उचित धर्म कर्मोंमें सहायता न देना यह स्नेहवही स्त्रीके लिये कभी उचित नहीं हो सकता। हिन्दू पतिन सहधर्मिणी स्त्री इसीलिये कहलाती है कि वह पतिके सुख दुःखकी सदा साथिनी रहे।

ग्यारा प्रतिमाकी लावनी ।

पाँच उदम्बर सात विसनको मन बच तनसे त्याग करो ।

शंकादिक दोषोंसे रहित गुण आठ निःशंकित आदि धरो ॥

पाल शुद्ध सम्पत्तव सार यह दर्शन प्रतिमा प्रथम खरो ।

पूर्ण व्रतोंका मूल यह इसका आदर किया करो ॥ १ ॥

मन बच तनसे त्रस जीवोंके प्राणोंकी रक्षा करना ।

वही अहिंसा अणुव्रत जानो भाग सहित पालन करना ।

पर हितकारी पर सुखकारी मिष्ट वचन मुखसे कहना ।

मिथ्या वचको त्याग कर सत्याणुव्रतको गहना ॥ २ ॥

मूले पडे हुए परिधनको मन बच युत त्यागन करना ।

निज त्रियमें सन्तोष धारकर परत्रियको त्यागन करना ।

कर परिग्रह परमाण लोभको सब प्रकारसे क्षय करना ।

शुभ गति दाता जान ये पंच अणुव्रत आदरना ॥ ३ ॥

दिशा और विदशाओंमें जाने आनेका नियम करो ।

हृदसे बाहर न किंचित् आगे गमगागमन करो ॥

वध-उपदेश दान हिंसाको प्रमाद चर्च्यो नहीं करो ।

दुश्श्रुत अरु अपि ध्यान त्याग यह अनर्थदेह व्रत चित्त धरो ॥ ४ ॥

खाद्य स्वाद्य भोगादि पदार्थ अथवा वस्त्राभूषण वे ।

कर इनका परिणाम इन्द्रियोंको फिर वस कर पावे वे ॥

लिया पूरे व्रत उसमें दिग्ग आदिका नियम करो ।

ग्रामादिक घरकी सीमा रख उसके भीतर गमन करो ॥ ५ ॥

तीनों योग सङ्गार पियारे सामायक त्रेकाल करो ।

षट् प्रकार जीवनके ऊपर समता भाव प्रदान करो ॥

आरंभ सकल निवार पूर्वमें प्रोषण धार पुवात करो ।

चौ प्रकारका त्याग आहार ख-आतम ध्यान धरो ॥ ६ ॥

परम पात्रको अदान दान दे पीछे स्वयं आहार करो ।

यही अथित सेविभाग व्रत है इसका आदर किया करो ॥

ये चारा व्रत पाल नियमसे कर्म कलंक बिनास करो ।

यह व्रत प्रतिमा दूसरी इसको अपने चित्त धरो ॥ ७ ॥

दिगंबर जैन.

THE DIGAMBAR JAIN.

नामा कलाभिरिविषय तत्त्वेः सत्योपदेशैस्तुगोपयणाभिः ।

संबोधयत्यत्रमिदं प्रवर्तमानं, दिगम्बरं जैन समाज-मानम् ॥

वर्ष १३ वॉ.

वॉर संवत् २४४६, भाद्रपद, विक्रम सं० १९७६.

अंक ५.

उत्तम क्षमा ।

(लावनी)

सज्जनो कल्ल कर ज़ोर अरज़ एक तुमसे, अब करो मेरा अपराध क्षमा तन मनसे ॥१॥

यह आश्विन कृष्ण प्रतिपदा दिन आया, है धन्य दिना यह बार पुन्यसे पाया ।

इस दिनके समान न और कोई दिन है, सब करो परस्पर क्षमा लगाओ न छिन दे ।

दो राग द्वेप सर त्याग बहुत जल्दीसे, अब करो मेरा अपराध क्षमा तन मनसे ॥१॥ सज्जनो ।

* * * *

जिन धर्म करो प्रचार नगरीमें सारे, जिन धर्म बिना नहीं कोई मविदवि तारे ।

जिन धर्म पाप अब क्षमा सर्व पर लाये, अब मनुष्य जनाको पाप सुद्ध कर मड़े ।

सब करो धर्म प्रचार एक हो जोसे, अब करो मेरा अपराध क्षमा तन मनसे ॥२॥ सज्जनो ।

* * * *

सब मिलो ऐक्यता करो माई हर्षाई, जो वात्सल्यका अंग कहा है निरलाई ।

जिपसे जगमें बड़े प्रीति बहुत मेरी, सब कर लेउ सपता माव सुनों नरनारी ।

पुनि माग जाय सब ही पाप क्षमके गुणसे, अब करो मेरा अपराध क्षमा तन मनसे ॥३॥ सज्जनो ।

* * * *

ओ बिया मैंने अपराध आका माई, मैं हूँ छदमस्थ अज्ञान ज्ञान मोहि नाहीं ।

ओ कुछ हो गया अपराध देओ निरवेरी, अब करो लट्ठूर पर क्षमा ल भो मत देरी ।

अब काता समता भवि सर्व जीवतसे, अब करो मेरा अपराध क्षमा तन मनसे ॥४॥ सज्जनो ।

सज्जनो, कल्ल कर ज़ोर अरज़ एक तुमसे, अब करो मेरा अपराध क्षमा तन मनसे ॥

लट्ठूरमल जैन, कोसी ।



हमारे महान धार्मिक दिन याने पशुपण पर्वके दिन अभी व्यतीत हो दशरक्षाक्षणी पर्व रहे हैं और शीघ्र ही मादों सुदी चतुर्दशी आते ही देसते २ पूर्ण भी हो जवेंगे। इस पर्वमें परापूर्वकी रीत्यनुसार मंदिरोंमें अभिषेक पूजा आदि होते हैं तथा अनेक स्थानोंपर सुबह शाम शास्त्र समा आदि भी होती हैं परन्तु जैसा कि व्याख्यान समाका विपुल प्रचार और उत्साह हमारे श्रेताम्बर माइयोंमें है वैसा हमारेमें नहीं है उसका कारण हमारेमें उपदेष्टाका अभाव ही है। हमारे रहे सहे त्यागी ब्रह्मचारी मठारककोंमें सिर्फ़ इनेगिने त्यागी ब्रह्मचारीगण जैसे कि श्री० त्यागी ऐटक पन्नालालजी, श्रीमान् जैनधर्मभू० ब० शीतलप्रसादजी, ब० ज्ञाननन्दजी, ब० भगीरथजी वर्णी, ब० पार्श्वनाथजी आदि तो जहाँ पर भी होते हैं उपदेशामृत सुनाते ही हैं परन्तु इतनेसे काम कैसे चले ? हाँ, हमारे पंडितगणने त्यागियोंका कार्य बहुत समाज लिया है और अनेक स्थानपर अनेक पंडितगण इस पर्वमें तत्सार्थ सुत्रजीके अर्थ और दशरक्षाक्षणी धर्मका स्वरूप सुनाते हैं परन्तु समयानुसार इस मादों सुदी १४ के दिन हर एक ग्राम और शहरमें एक आम समा होनी चाहिये और उसमें दशरक्षाक्षणी पर्व और हमारा कर्तव्य पर अवश्य व्याख्यान होना चाहिये।

इस पर्वमें चतुर्दशीके दिन तो सब माइयों अपना २ कारोबार बंद करके बहुत करके उपवास करते हैं और समय धर्मव्याप्तमें बीताते हैं तो इसी दिन हमें क्या २ वक्त करना आवश्यकीय है वह हम नीचे संक्षिप्तमें सूचित करते हैं—

(१) इस पर्वमें अनेक माइयों और बहनों १०-१-२ या १ उपवास करते हैं उसमें दस पांच उपवास करनेवाले बहुत प्रकारका खर्च करके उत्सव करते हैं परन्तु उसमें वास्तविक खर्चकी तरफ़ ध्यान नहीं दिया जाता, सिर्फ़ अपनी नामवरीके लिये ही खर्च करते हैं ऐसा न होकर हर एक व्रतकी खुशीमें प्रस्तकोंकी प्रभावना करनी चाहिये और अपनी समा संस्थाओं जिसमें कि चारों प्रकारके दानका कार्य हो रहा है उसमें अच्छी रकम दानमें भेजनी चाहिये।

(२) अनेक स्थानों पर अब भी विदेशी भ्रष्ट स्वरूपके बतसे और विधायती अशुद्ध केशरका वर्तव्य करते हैं वह न करके पुस्तकों या तो बादाम, श्रफ़ल आदि प्रभावनामें बांटना चाहिये और मंदिरोंमें शुद्ध सादेशी केशर ही वर्तनी चाहिये।

(३) बिना निमित्त कोई भी कार्य नहीं होता इस लिये पशुपण पर्व दान करनेका बड़ा मारी निमित्त मार्ग है उसमें (वर्षमें एक बार तो) हर एक स्थान पर मंदिरोंमें सब माई एकत्रित होने हैं वहाँ एक खास आदमीको खटे हो जाना चाहिये और एक दानका चंदा लिखाना चाहिये और जो कुछ रकम हो वह नीचे लिखी हथारी संस्थाओंको भेजनी चाहिये—(१) श्री

ऋषभ ब्रह्मचर्याश्रम मेरठ यु० पी०, (२) स्या० महाविद्यालय, काशी । (३) महाविद्यालय मयूरा, (४) श्री कुलभूषण दि० जैन विद्यालय, कुंभज-गिरी पो० पिंपलगांव, सोलापूर, (५) आर्यविद्याश्रम, तारदेव बम्बई, (६) सतर्क सुवा० पाठशाला सागर, (७) देहली अनायालय, (८) षडनगर औषधालय, (९) नडनगर नदीन अनायालय, (१०) जैन सिद्धांत विद्यालय मॉरेना आदि ।

(४) जहां भी देखो फूटका सप्तरूप अति प्रबल है इस लिये इसी उत्तमक्षमादि दश धर्मोंके दिनोंमें उत्तम क्षमाका माव हृदयसे छार जाति या तो मंदिरमें किसी भी प्रकार का झगडा हो उसको निराकर मेल कर लेना चाहिये । सच्ची उत्तम क्षमा तो यही है । पर्वों द्वारा 'उत्तम क्षमा' लिख देना तो मामूली बात है ।

(५) हमारे मंदिरोंमें द्रव्य और उपकरणकी कमी नहीं है परन्तु यदि कमी है तो वह व्यवस्थाकी कमी है । प्रतिमाजी, शास्त्र, उपकरण आदिकी सूची शाघद ही होती है तथा हिसाब भी वर्षोंसे प्रकृतिगत नहीं होता, हिसाबमें क्या है सो लिखनेवाला ही जानता है ऐसा न होकर मंदिरकी प्रतिमाओंकी एक सूची संक्षिप्त छेड़ सहित बना कर रखनी चाहिये तथा भित्ति भी वर्तन उपकरण हो उनकी सूची बना कर इसको हर वर्ष मिलाते रहना चाहिये तथा भित्ति शस्त्र मंदिरनीमें हो उनकी एक विगतवार (कर्मा, संज्ञा, विषय, माषा आदिकी) सूची बना लेनी चाहिये । भित्ति शस्त्र हों उनका कीस्ट बनाकर गणेश विपत्ति कर रखना चाहिये और स्वा-

ध्याय कानेके लिये आन्ध्र। कन। सुतर भाइयों औ बहिनोंको मंदिरमें या घर पर लिखकर देना चाहिये ।

(६) हमारे बहुतसे शास्त्र उप चुके हैं और छपे शास्त्र पढ़नेमें सरलता होती है इनलिये मंदिरमें जो शास्त्र न होवे वे अवश्य मंगा लेनेका निश्चय करके ओर्डर लिख देना चाहिये । छपे शास्त्रोंको एक सूची भी इसी अंकके साथ बाँटी गई है । विशेष करके माणिकचंद ग्रंथमालाके संस्कृत ग्रन्थ, गोपटनारजी, आदिपराणजी आदि ग्रन्थ तो मंदिर में अवश्य संग्रह करने चाहिये ।

(७) हमारी सत्स्य का दिनोंदिन हास होता ही चला जाता है उसकी जानकारीके लिये चतुर्दशीके दिन सबको आकाश रहता है तो उसी दिन दो चार स्वयं सेवाकोंको खड़े होकर अपने २ भाग और शहरकी मनुष्यगणना कर लेनी चाहिये उसमें जाति, आयु, प्ररूप या स्त्री, विवाहित या अविवाहित, सपत्नी या विधवा, कुंशारिका, कुंभारे आदि सब दाखल करने के लिये लेना चाहिये । पवार और बैरवाल जैनोंने अपनी मनुष्य गणना करनेका कार्य हस्तगत किया है उसी प्रकार हाथक जातिको अपनी मनुष्य गणना करनी चाहिये ।

(८) अनेक स्थानों पर चतुर्दशी पुनम या तो प्रतिपदाके दिन मजयात्रा उत्सवकी जुलूस निरुद्धता है उसमें बहुत अविनय होता है यहां तक कि बहुत मड़े जूतितक नहीं निकालते हैं ऐसा न करके जहां तक हो विनयको प्राधान्य पद देकर स्थान २ पर जुलूसको उतरा कर जैनधर्मके



मंजन होने चाहिये और उसके साथ २ घर्मों पदेश भी होना चाहिये जिससे कि आम लोगों पर जैनधर्मका प्रभाव पड़ सके ।

(९) जहाँ समा पाठशाला हो वहाँ उसका उत्तम होना चाहिये तथा जहाँ समा पाठशाला न हो स्थापित करनेका प्रबंध करना चाहिये और बड़े पढ़े तो उसको फिर बलू कर देना चाहिये ।

(१०) हर एक स्थान पर जैन लाइब्रेरी (वाचनालय) की आवश्यकता है जिसमें जैन अजैन पत्र प्रकाशित जाय तथा धार्मिक राजकीय आदि ग्रन्थों का संग्रह किया जाय । बिना फूस हो सबको वाचनेका प्रबंध होना चाहिये ।

(११) हमारे समाजमें इन गिने ही पत्र हैं और सबकी आर्थिक दशा अच्छी नहीं है उसका सावधानीपूर्वक आँकड़ा संख्याका कम होना है और समाजका जीवन तो समाचार पत्र ही है । दि० जैनकी साप्ताहिक खकी बस्तीमें कमसे कम साप्ताहिकी गृहसंख्या होगी तो भी उसमेंसे एक १ पत्रके दो २ हजार भी ग्राहक न हो फिर हमारी उन्नति कैसे हो सके ! बड़े २ शहरोंमें १००-२०० गृहसंख्या होते हुए भी दस बरस ग्राहक शायद ही किसी पत्रके होते हैं इसी लिये आज हम समाजका ध्यान हम ओर आकर्षित करते हैं कि वे इस पुण्यपर्वके मौके पर 'जैनमित्र' (सुरत), 'जैनमग्न' (मधुग), ये दो साप्ताहिक पत्र तथा पञ्चायती पुरवाठ (कलकत्ता), दिगम्बर जैन, जैनवाठ जैन (आगरा), जैन मार्तण्ड (हायरत), गोलापूर्व जैन (सागर), खंडेलवाठ जैन (गौतमपुर), प्रगति-

मिनविजय मराठी (वेरगाव), जैन प्रचारक उर्दू (मेरठ), जैन प्रदीप उर्दू (देवबंद), अंग्रेजी जैन गेहेट (मदरास) आदिके अवश्य ग्रहण करनेके लिये पत्र लिख देवे ।

(१२) समयका प्रवाह हमें यह बता रहा है अब हमें परधर्मों न होकर स्वाधर्मों होना चाहिये । सर्कारी स्कूलोंमें हमें योग्य शिक्षा नहीं मिलती न वहाँ धर्म शिक्षा मिलती है इसलिए हमें हर एक स्थान पर निजी स्कूल स्थापन करना चाहिये जिसमें जैन अजैन सभीको सम शिक्षाके साथ २ जैन धर्मकी शिक्षा भी दी जाये । इन्दौर, देहली, मेरठ, सोलापुर, बांदा आदि स्थानों पर ऐसी स्कूलें स्थापित हो चुकी हैं उनका सम स्थानों पर अनुकरण होना चाहिये । विशेषमें बम्बई, कलकत्ता, देहली आदि बड़े २ केंद्रोंमें एक २ जैन कालेज भी स्थापित करनेका विचार करना चाहिये । यदि रास्ता बतानेवाला हो और कार्य करनेवाला हो तो जैनोंमें द्रव्यही कमी नहीं है । हर्ष है कि अभी ही देहलीमें ब्र० शीतलप्रसादजीके प्रयत्नसे जैन संस्कृत व्यापारी विद्यालय खुलनेवाला है । ऐसा ही विद्यालय नागपुर प्रा० खंडेलवाठ दि० जैन समाजकी शिक्षा प्रचारक कमिटीको खोलनेके लिये हम आग्रह करते हैं । बिन्दावनमें "जैन महाविद्यालय" है उसीके दंग पर हमारे विद्यालय खुलने चाहिये तभी ही धार्मिक और व्यापारिक उन्नतिकी आशा रख सकते हैं ।

(१३) हमारे देशकी उन्नति हमारे देशमें ही बनी हुई बस्तुओंको व्यवहारमें लानेसे हो सकेगी । विदेशी बस्तुओंमें अनेक प्रकारकी



अशुद्धि रहती है तूपा चमड़े, हड्डो आदिको अनेक अशुद्ध चीजें वर्तनेसे हय हिंसाके व्यापार को घुट करतें हैं इन्हिये हमें स्वदेशी वस्तुका ही व्यवहार करनेकी दृढ प्रतिज्ञा इन पर्युषण पूर्वमें लेनी चाहिये तथा देशी भी अशुद्ध वस्तुओंको तो कभी भी नहीं वर्तना चाहिये ।

(१४) हमारे तीर्थों और मंदिरोंकी रक्षाके लिये हमारी “मागत० दि० जैन तीर्थ वमेटी” प्रयास कर रही है परन्तु दिन रातका सर्व चलानेकी द्रव्यकी आवश्यकता रही है इन्हिये हरएक गृह पीछे वार्षिक एक २ रुपया लेना जो प्रस्ताव वमेटी ने दिया है उसका अमल कौनिये और अपने ग्राम या शहरसे हरएक गृहका वमसे कम एक २ रुपया एकत्रिन करके तीर्थक्षेत्र वमेटी कार्यालय, हीराबाग बम्बईको भेज दीजिये ।

(१५) पर्युषण पूर्वमें उपरोक्त सूचनाओंमेंसे भवने वाला क्या २ हुआ उसका हाथ हमें आश्रित बड़ी ५ तक अवश्य लिख भेजिये ताकि वह आगामी अंशमें प्राट कर सके ।

* * *

हमारे तीर्थोंकी रक्षा करना हमारा परम धर्म है । वर्षोंसे हमारे अनेक तीर्थ रक्षा । तीर्थ जेते-श्री सम्मदशि-गरजी, अंतरिक्षनो, म शीको, सोनागिरी नी, नारगानी आदिमें श्वेतावरी पाइयोंसे शवडे नउ रहे हैं और लाखो रुपये पकीउ बेरिन्दरों और अशालनोंमें स्वाहा हो रहे हैं । हमारे कई प्रयत्न होने पर आपसमें निव टोरा नहीं होता तब हमें विवश हो अदाउरी

करय करना पडता है । आजकल शिखरजी केममें अगार गर्च हो रहा है और द्रव्यकी कमी है यह बात अमीकी बम्बईकी तीर्थक्षेत्र कमेटीकी मीटिंगसे ज्ञात होती है जिसमें बीन लाख मारये-का फंड एकत्र करनेका प्रस्ताव पाम हुआ है जिस पर हम पाटकोंका ध्यान आकर्षित करते हैं । तीर्थक्षेत्र वमेटी के मंडामंत्रीके स्थान पर धर्मिमा परोपकारी सेठ चुन्नीलाल हेमचंद नरी-बाले जो कि हमारे स्वर्गीय सेठ मणेशचंदजीके मानजे होते हैं नियुक्त हुए हैं और आप यदि चाहें तो अपनी दुकानका कारे वार पुत्रोंको मौन वर सेठ मणेशचंदजीकी त ह हीराबागमें बैठ र वमेटीका कार्य बराबर करा सक्ते हैं और स्वर्चमें भी बहुत फायदा करा सक्ते हैं । आशा है कि सेठ चुन्नीलालजी हमारें इस नियेदन पर अवश्य खयाल करेंगे । सेठ मणेशचंदजी कम ही जडे हुए थे और बहुत ही कार्य कर गये तो क्या आप निवृत्त होकर नहीं कर सकेंगे ? आशय कर सक्ते हैं । शिखरजीके लिये चन्दा करनेके लिये भी हम धनिकोंसे इस पर्युषण पूर्वके मौके पर आग्रह करते हैं ।

* * *

जो ३ अमरावती दिगंबर जैन भोर्डिंगभा
भास्तर छोटेबालउ पन्ना-
अमरावतीनी मे सुप्रिन्टेन्डन्ट टनीके
भोर्डिंग गान्धा छे त्पारधी धर
शिक्षकुनी व्यवस्था सानी
अथेजी छे पणु गद मुअध नि. जैन पीसीशालयनी
परीक्षाभा छे भोर्डिंगभाभी एक पणु विधार्थी भेटेने।
जन्मप्राप्ति नथी तेना कारणे अना सेक्रेटरीअ
जन्मप्राप्तिनी जस्ट छे. वण्णा छे भोर्डिंगभा
शुद्ध शुद्ध प्रधानी दिग्विदा भाभापों तेमज



વિચાર્યા તરફથી થતી સામંજસવામાં આવે છે-તેનું ખાસ કારણ એને ચત્રાવવાના અધારણી ખામી છે. વિઝીટીંગ કમેટી નીમી હતી તે નામનીજ હતી ને તે પણ હવે દરતીમાં હોય એમ સંભવતું નથી તેમજ સુપ્રિન્ટેન્ડેન્ટે તથા રથથી સેક્રેટરીને જે જે સલાહો હોવી જોઈએ તે ન હોવાથીજ અનેક વાર ગુચવાડા પેદા થયા છે. વળી વર્ષો થયાં આ બોર્ડિંગનો વાર્ષિક મેળાવડો પણ થયો નથી જોઈ એની આંતરિક સિતિથી પણ પુરેપુરી રતે વાકફ થવાનું નથી. દરેક વર્ષે એ મેળાવડો થવાથી ગુજરાતના બાઇઓને અનેક લાભો થતા હતા એ જાણીતું છે. એના બાંહેધ સેક્રેટરી પરી. લક્ષ્મીભાઈના વિશેષ પછો તેમના કાર્યની કદર જુઝવાને વાર્ષિક મીટિંગ બરવાની ખાસ જરૂર છે તથા તે પ્રસંગે કંઈકમ ચત્રાવનારી પેટા કમેટી નીમવા ખાખત વિચાર કરવાની પણ જરૂર છે. આશા છે કે એના હાલના સેક્રેટરી બોઈ લક્ષ્મીભાઈ લખમીચંદ એ ખાખત કોશિશ કરી આવતા ખાસમાં અવશ્ય વાર્ષિક મેળાવડો કરવા બોલવશ કરશે.

* * *
 મુઆઇમાં કુકે અને બૂરકે વરતી વધતી જાય છે ને લોકોને મકાન દિગંબર નિવાસની મેળવવાની અતિશય મુજરૂર રહી નડે છે જેથી ત્યાં નોકરી માટે આવતી રહેનારા સામાન્ય વર્મના દિ. જૈન બાઇઓ માટે સરતા બાઝાના મકાનોની ખાસ જરૂર છે. આ ખાખત આ અંકમાં એક લેખ પ્રગટ કરવામાં આવ્યો છે ને એનીજ ખાખતના ખીજ એ લેખો અમને મળ્યા છે, જે પ્રગટ ન કરતાં એટલુંજ જાણીતું કે જેની રીતે સ્વેતાંતરી બાઇઓમાં સરતા બાઝાના મકાનની યોજના રદ છે, તેજ મુજબ આપણા દિગંબર બાઇઓએ એકજ જગ્યાંયા થા તે એકાદ શ્રોમાને આ કાર્ય કરી કોમની અંશીય લેતી જોઈએ. શ્રોમાન શેઠ મુખાનંદજી જોરે ખરમે ધર્મદાગા ખુશી મુખનાર છે તેને ગદમે તેનેજ દિગંબર નિવાસનું, રૂપ આપે તો

તે જની શકે તેમ છે. અથવા તો અમારા સામંજસ મુજબ શેઠ ડાહ્યાભાઈ પ્રેમચંદ જરેરી લાખ એ લાખની મોટી સખાવત કરવા કેટલાક સમયથી કચ્છા રાખે છે અને વિચારમાં ને વિચારમાં વખત વહો જાય છે અને એમણે આજ સુધી કાનતું કોઈ બારી કાર્ય કયું નથી કે જે કરવા તેઓ પૂર્ણ શક્તિમાન છે તો તેમણે હવે વિલંબ ન કરતાં આ “ દિગંબર જૈન નિવાસ ” પોતાના નામે સ્થાપિત કરવાની પહેલ કરવાની જરૂર છે. આ સાથે મુઆઇમાં જૈન બ્યાપારી વિદ્વાસય ખુશાલી ખાસ જરૂર છે, તે વંદે પણ અમે શ્રોમાનેતું ધ્યાન ખેંચીએ છીએ.

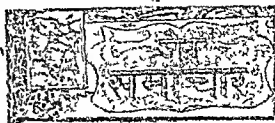
મુંબઈમાં વસતા દિગંબર જૈનોની હાડમારી.

ચાલુ જમાનામાં જ્યારે મુંબઈની તમામ પ્રજા પોતાના રાતિ બંધુઓને રહેવાની તેમજ ધંધા વગેરેની સગવડતા માટે ગોઠવણ કરી આપે છે અને હજી ક્યાં જાય છે, તેમજ ચાલુ જમાનામાં જ્યારે દરેક આગળ વધતી રહે છે ત્યારે અમારી કોમમાં શ્રીમંતો-લક્ષાધિપતીઓ તેમજ કરોડાધિપતીઓ (જે આપણી કોમમાં હંધાત છે તેમને માટે અમારે અભિમાન રાખવું પડે છે.) મોજુદ છે, છતાં તેઓનું એ ખાખત તરફ લક્ષ ખેંચાવું નથી એ શોચનીય છે. હાલના ચાલુ મેધવારીના જમાનામાં બહારગામ ધંધાની અંગૂઠડાને લીધે આપણા દિગંબરી બાઇઓને ધંધાચે મુંબાઈ આવવું પડે છે. તેમને રહેવાની બીજકુલ સગવડતા નથી. હાલમાં આપણી કોમના ૫૦-૬૦ માણસો શેઠ માણેચંદ પાનાચંદની પેઢી જે આપણી કોમના દાનવીર શેઠ છે તેમની કુશાન પર મુક રહે છે અને તેઓ પોતાની અડચણો પેઢી લઈને તે બાઇઓને મુશ્કેલી છે. વળી જણાવવાની જરૂર નથી કારણ કે કેટલાક વસથો તેમને તેજીજ તરફી આપ્યા કરીએ છીએ, અને હવે કોવરોડોવસે સંખ્યામાં વધારો થતો જાય છે.



એટલે અમે એવી આશા રાખીએ છીએ કે અમારા શ્રીમાન સખી ગ્રંથો (જે કામ તેમને મહેનમાં બની શકે તેમ છે.) સરતા બાકાત એક મકાન “દિગંધર નિવાસ” તરીકે ગોઠવણ કરી બંધાવી કોમને આભારી કરશે. વળી અમારે મગર થવા જેવું છે કે અમારો કોમના સખી ગ્રંથ દાનવીર શેઠ માણેકચંદ પાનાચંદ જેમણે મુખાધ જેવા કીમતી સ્થળમાં “ શેઠ હીંચું લેન બોર્ડિંગ મુકલ તારદેવ ” સ્થાપી છે, જેનો વીસ વરસથી આપણી કોમના જુવન વિદ્યાર્થીઓ લાભ લે છે, તેમજ એજ સખી શેઠ મુખાધના જેમ જાહેર કીમતી લગામા “હીરાબાગ” નામની ધર્મશાળા બંધાવી આપી સંરળી હોઈ કોમને આભારી કરી છે, તેમજ તેવી સખાવતો બહાર દેશાવર ખાતે પણ ઘણી કરેલી જણાય છે.

અમારા સાગળવા યુગ્મ અમારી કોમના શ્રીમાન શેઠ ગુરુમુખરાય મુખાનંદજી જેઓ ફના એક બાહોશ વેપારી તરીકે મશહૂર છે, તેઓએ પણ જુનેશ્વર જેવા કીમતી લગામા ચાર લાખની કીમતનું મકાન હોયેલું છે અને આપણી કોમના વપરાસ માટે થોડા વખતમા યુનુ મુકનાર છે. ઉપરના ગેરીઓ સિવાય આપણી કોમમા ૨. બા. સર શેઠ હુકમચંદ, શેઠ જુલારામ મુલચંદ, શેઠ બિતેલીગમ બાલચંદ, શેઠ વિવતરામ કુંડનમજ, શેઠ કાલ્યાભાઈ પ્રેમચંદ, શેઠ સુનીલાય હેમચંદ, શેઠ સુનીલાય પ્રેમનંદ એવે સખી ગ્રંથો ગણીમા હેવાત છે છતાં આપણી કોમનું હુંખ નિવાસન થાય તેના જેવું શોખનીય બીજું કું ગણાય ?



છિંદવાહા-મેં આગ મી આસોન મુદી
૧૨-૧૪-૧૫ કો નાગપૂર પ્રાં. દિ. જૈન
સંકેલવાજ સમાજા વર્ષિક અધિવેશન હોગા ।
સ્વાગત કમેટી મી થન ગઈ હૈ જિસકે સમાપત્તિ
સેઠ લાલચંદની પાટળી ઔર મંત્રી સેઠ ઉમેદ-
ચંદની પાટળી નિયુક્ત હુણ હૈં ।

તીર્થક્ષેત્ર કમેટીની મીટિંગ-મારતવ-
ર્ષીય દિગંધર જૈન તીર્થક્ષેત્ર કમેટીનો છાસ મીટિંગ
ગત તા. ૨૨ સે ૨૬ આસ્ત તક બમ્બઈમેં
હીરાબ ગમેં સેઠ ચલદેવદાસજી મુશ્વ સેઠ સેટમલ
દયાચંદ કલકત્તાકે સમાપતિત્વમેં ઉત્સાહકે સાથ
હુઈ થી નિતમેં લાલા દેવીસહાયજી, લાલા જમ્વૂપ્ર-
સાદજી, સેઠ હરન રાયળજી, સર સેઠ હુકમચંદજી
આદિ જ્વાસ પવારે થે । ઇસમેં કુલ ૨૧ પ્રસ્ત વ
પામ હુણ હૈં જિમકા સારાંચ ઇમ પ્રકાર હૈ ।
(૧) સેઠ ચુલીલાલ હેમચંદજી મરીવાલે
બમ્બઈ નિવાસી મહામંત્રી નિયુક્ત હોન,
(૨) સેઠ ટાકરસીદામ નિહાલચંદ તીસરે સં
મંત્રમંત્રી નિયુત હોના, (૩) સેઠ ચલદેવદાસજી
દયાચંદજી કલકત્તા ચૌથે સં મહામંત્રી નિયુક્ત
હોના, (૪) શ્રી સમ્મેદ શિલ્પરજી પર્વત રક્ષા
સંકેથી મુકદ્દમોંકે લિયે પ્રચુર દ્રવ્યકો આવશ્યક્તા
હોનેસે વપસે કપ ૨૦૦૦૦૦૦) વીસ લાલકા
ફંડ દુકત કિયા જય (૫) શિલ્પરજીની રક્ષાકે
લિયે પ્રત્યેક પાન્તમેં પાચર મુખ્ય મહ શાય નિયત



किये जाय जो कार्य पड़नेपर चिट्ठी पहुंचते ही निमत स्थानपर पहुंच जावे, (६) गुलनार बागके मंदिरकी व्यवस्था ठीक न होनेसे वमेटीके आधीन ली जाय, (७) ईसरी स्टेशनपर प्लेटफार्म बनवाने तथा मेट्र. ट्रेन. टहरानेके लिये विशेष कोशिश की जावे (८) नियम वली संशोधनार्थ ५ मेम्बरोंकी वमेटी नियुक्त होना जो ३ माहमें रिपोर्ट तैयार करके महादंजीको भेज देवे (९) २३४४-४५का हिसाब जांचनेके लिये अमृतलाह घाभी और चांदमलजी अन्मेला नियत किये जाय, (१०) गन्धर्वनाजी तीर्थकी वमेटीके मंत्री सेठ जीवान गौ-मचंदजी नियत किये जाय, (११) मुक्तागिरी पर जूते पहिन कर न जानेके लिये सवारिको हुकम निशानेकी प्रार्थना की जाय, (१२) लाला प्रभुश्यामजी पर करीब ६०००) लेना बकाया है वह पर्वत रक्षा खाते खर्चमें मंड दिया जाय ! (१३) बीस लाख रु० का फंड बनानेके प्रस्तावकी पूर्तिके लिये प्रत्येक प्रान्तसे एक २ डेपुटेशन पार्टी नियत की जाय अदि। चौथा प्रस्ताव पास होते ही १००००) लाला देवीप्रहायजी, ५००००) लाला जगन्मसादजी और १००००) ह. कटकता पंचायतकी तरफसे स्वं कारता मिली थी तथा और भी चंदा लिखा जाकर कुल २९००००)का चंदा लिखा गया था।

देहलीमें सं० व्यापारी विद्यालय— श्रीमान् ब्र० शीतलप्रसादजीका चतुर्मास इस बार देहलीमें होनेसे वहां बहुत धर्म आप्रति हो रही है। कई मंदिरमें श्राव्य सभ होने लगी हैं तथा पटशाहके लिये चंदा हुआ है और एक

बड़ा मारी कार्य यह हो रहा है कि यहां पर एक दि० जैन संस्कृत व्यापारिक विद्यालय खोलनेके लिये करीब १००) स. सि. का चंदा लिखा जा चुका है और इस विद्यालयकी स्थापना भी मही सुदी १२ शुक्लाको बड़े मरी सवारोहमें होनेवाली थी।

इन्दौर—की सेठ स्व० हु० दि० जैन पारमार्थिक संस्थाओंकी वार्षिक मिटिंग ता० ११-८-२० को हुई थी जिसमें रिपोर्ट हिसाब आदि पास हो कर आगामी वर्षके लिये ३७५०१)का खर्चका बजट पास किया गया तथा संस्थाओंका ट्रस्ट करना निश्चित हुआ।

काशी—में ब्र० ज्ञानानंदजीके संपादित्वमें पं० गणेशप्रसादजी वर्णीने 'पशुशास्त्र', पर प्रमद-वशादी व्याख्यान गत ता० २८-८-२० को दिया था और प्रतिज्ञा ली कि जब तक रतौनाका कसार्दखाना चंद न होगा 'मै' रेडवे व अन्य ग.डीमें नहीं सफर करूंगा और आगम्य स्वदेशी आ पलूंगा। ता० २९ को १६ विद्यार्थियोंका यज्ञोपवित संस्कार पं० सत्यधर व मागचंदजीने कराया था और संध्याको रक्षाबंधन पर विवेचन होनेके बाद ब्र० ज्ञानानंदजीने प्रस्ताव ली की जब तक मैं १०० मनुष्योंको मांस मंक्षण तथा १०० मनुष्योंको चंदेडा जूता पहनना न छुड़ा दूंगा तब तक मीठाई नहीं खेऊंगा और अहिंसा धर्म प्रचारार्थ "अहिंस." र मक साप्ताहिक पत्र मकट करूंगा। इन पत्रका वार्षिक मूल्य ३॥) रखा गया है। ग्राहक होनेवाले ब्र० ज्ञानानंदजी, स्वा० महाविद्यालय काशीको लिखे।

लोकमान्य तिलकका

जीवन वृत्तान्त

लोकमान्य बाल गंगाधर तिलकका जन्म, रत्नागिरिमें २२ जुलाई १८६६ ई० में हुआ। आपके पिताका नाम गंगाधर रामचन्द्र तिलक था। आप बड़े विद्वान थे और कुछ दिन रत्नागिरिमें द्वितीय मास्टर होनेके पश्चात् थाना स्कूलके डिप्टी इन्स्पेक्टर हुए। पर बाल गंगाधर अधिक दिनतक पितृ सुखका स्वाद गोंय न सकें, १६ वर्षकी उमरमें ही उनके पिताका स्वर्गवास हो गया। श्रीमान तिलकने रत्नागिरिसे इन्स्पेक्शन पास कर डेकन कालेजसे तत्समिति-पूर्वक बी० ए० की उपाधि प्राप्त की और तीन वर्षके पश्चात् वर्षाईमें बकालतकी परीक्षा पास की। पर उनकी उद्देश्य बकालतकर केवल रुपया कमाना नहीं था। विद्यार्थी जीवनमें आपको एक दूसरे उत्तमहृदयसे निजका नाम आगरकर था, जानपहचान तथा मित्रता हो गई थी। दोनोंने विचार किया, कि देशहितके लिये सरकारी नौकरीके फौर्में न पढ़ना ही बहुत अच्छा है। उन्होंने विद्या प्रचारको अपने जीवनका प्रधान कर्तव्य निश्चय किया और शिक्षा प्रदानके लिये कोई कमखर्च रास्ता ढीक करने लगे। तौमामयवश इसी समय उनको जो जानपहचान एक दूसरे दे सकसे हुई, निजका नाम विष्णु कृष्ण चपलनकर था। ये महाशयमें मराठीके बड़े भारी प्रसिद्ध लेखक हुए हैं। इन लोगोंके शिक्षा प्रचारमें दक्षिण होनेका परिणाम यह हुआ, कि २ जनवरी १८८० ईस्वीमें एक गश्तेजो

स्कूल खोला गया, जिसमें म० तिलक, तुमचोसी और चपलनकर महाशयने शिक्षकका कार्य अद्वय किया। एक ही वर्षमें स्कूलके काममें बी० एम० आपदे और श्रीमान आगरकरने भी आकर कार्यभार लिया। पर इन ओगोंकी देश सेवाका जोश केवल रहने हीमें खतम न हो गया। इन ओगोंने मिलकर जो पत्र निकालना भी शुरू किया। निजके प्रभाव आत महाशयमें अद्वितीय हो रहे हैं। इनके नाम "महराठा" और "केशरी" हैं। "केशरी" देशी (मराठी) भाषामें और "महराठा" अंग्रेजी भाषामें निकलता है। पहले केशरीकी आदक संख्या केवल १०० थी, पीछे बढ़कर २००० हो गई और आनुक्ति से बढ़कर हतना जनप्रिय बन दो रहा है। २२००० से अधिक लोग इसके तथापि आदक हो गये हैं। "केशरी" और "महराठा" की युक्तियां अकट्य होती हैं और उसके विचार अत्यन्त निडर और गम्भीर होते हैं। श्रीमान तिलक किमीसे डरनेवाले तो थे नहीं। उनसे नावां डिया कोल्हापुरके महाराज सिवाजीरावके प्रति होने हुए अत्याचार न देखे गये और अपने प्रयत्नमें उनकी उद्दोने मही ही कड़ी आलोचना निधाली। इस पर महाराज तिलक और आगरकर महाशयपर मुकदमा चलाया गया और वे लोग ४ महीनेके लिये बिना परिश्रमके साथ कारागार भेजे गये। लोकमान्यकी सत्य श्रद्धा, निर्भयता तथा देशसेवाकी यह पहली नाज हुई थी। पर जसु जांचमें वे बहुत ही जल्द अभीष्ट उत्तीर्ण हुए और बिना हताश हुए श्रीमान



जोशीके साथ विद्या-प्रकारके कार्योंमें फिर लिप्त हुए ।

१८८४ ई०में उन्होंने Decan Educational Society याने डेकेनमें विद्याप्रचारिणी समिति कायम की । कुछ दिन बाद स्वनाम धन्य प्रो० बी० बी० वेलकर, प्रो० घटोप इत्यादि महानुभावोंने भी इनका इस कार्यमें हाथ बढ़ाया और १८८५में आजकलके प्रसिद्ध फागुसन कौलेजका स्थापन हुआ । पर महाराज तिलककी अपने सहयोगियोंके साथ उद्देश्यमें भिन्नता पड़नेकी वजहसे १८६० में फागुसन कौलेजसे अपना सम्बन्ध तोड़ देना पड़ा । १८८८में आगरकर महाशयने धार्मिक और सामाजिक विषयमें मतभेद होनेके कारण 'केशरी' पत्रसे सम्बन्ध तोड़ डाला । अब 'केशरी' और 'महठेका' संचालन महारामा तिलक, वेलकर और गोल्ले महाशयके साथ करने लगे, पर कुछ दिनोंबाद इन लोगोंने भी किसी कारणवश 'केशरी'से सम्बन्ध तोड़ लिया और इसके बाद उन पत्रोंका संचालन भार स्वयं महाराजके हाथोंमें आया । महाराजकी लेखनी बहुत ही जोशीली और तर्क बढ़े अकाट्य होते थे । इसी समय Age of Consent बिलको सरकारने पास करना स्थिर किया । महात्मा तिलकने उसका धेर विरोध करना आरम्भ किया । उनका कहना था, कि हिन्दूमतकी रीति और नियमोंमें हस्तक्षेप करनेका अधिकार सिवाय हिन्दुओंके किसी दूसरेको नहीं है, और खास कर एक विदेशी और विधर्मी जाति द्वारा, इसमें हस्तक्षेप होना

तो नितान्त ही अन्याय है । कुछ लोगोंको जो समाजमें सुधारके लिये बहुत ही अधिक उत्कण्ठित थे, उन्हें महाराज तिलकका यह विचार अच्छा न लगा; और पुनारामें म० तिलकके विरुद्ध एक सनातनी, दूसरा नवीन दल खड़ा हो गया । महात्मा तिलकने एक स्कूल खोल रखवा था, जिसमें लोगोंको कानूनकी शिक्षा दी जाती थी; पर वे इतने परिश्रमी थे, कि इतने कार्य होते हुए भी उन्होंने वेदके आदिकालपर एक अपूर्व महत्वशाली प्रस्तुत लिख डली । उसकी एक प्रति लन्दनमें होनेवाली अंतर्राष्ट्रीय कांग्रेसमें भेजी गई । मेक्समूलर, और वेबर जैसे विद्वानोंको भी इस पुस्तककी पढ़कर सुभ्य होना पड़ा और सबने एक मुखसे उसकी प्रशंसा की ।

इसके बाद जब लो० तिलक १८९० ई०से राजनीति विषयोंमें प्रधानरूपसे भागलेने लगे, तब उन्हें कांग्रेसका भी कार्य करना पड़ा । उन्होंने यतनसे बम्बई प्रादेशिक सभा पहले पहल बैठी थी । बम्बईमें जब हिन्दू मुसलमानोंमें बखेड़ा हुआ था, उस समय लोकमान्य अपना विचार स्पष्ट यह लिखा था, कि "यदि शगड़ा केवल सरकारकी कूटनीतिका फल है और सरकारकी इस नीतिपर कड़ी आलोचना की थी । वह आलोचना इतनी कड़ी थी कि सरकारकी इनपर तीव्र दृष्टि पड़ी; पर तौभी दो बार बम्बई लेजिस्लेटिव कौन्सिलके मेम्बर चुने गये और ये बम्बई युनिवर्सिटीके सदस्य तथा ग्युनिसिपल मेम्बर भी रहे । १८९१में ये पूना कांग्रेसके सेक्रेटरी चुने गये । कुछ लोगोंने



समस्त भारतवर्षीय सामाजिक सभाको कांग्रेस मण्डपमें ही करना निश्चय किया। म० तिलकको ये बातें पसन्द न थी, अतएव आपने कार्यकर्त्ताके पदसे इस्तीफा दे दिया, पर इस्तीफा देनेपर भी कांग्रेसके कार्यमें विशेषरूपसे सहायता दी।

१८९६ ई० में अकाल पड़ा। उस समय महात्मा लो० तिलकके कार्यमें लोगोंको मुन्धकार डाला। गरीब और दुखियोंके दुखको हटानेके लिये इस महात्माने कोई यत्न उठा न रखा। जगह २ पर सुलभ दुर्यार अन्न बेचनेवाली दूकानें खोलीं, उन्हें नि लोगोंके दुख देखने और उन्हें दूर करनेका उपाय सोचनेके लिये मोलापुर और नागपुर इत्यादि स्थानोंमें भ्रमण किया और लोगोंके दुखको हटानेका उपाय निश्चय किया। सरकारने उनके उपायोंको कार्यमें परिणत करनेकी अनिच्छा प्रगट की। जब पूनेमें पहले पड़ल प्लेगका आगमन हुआ तो सरकारकी कार्य इयोसे लोगोंमें आतंक फैल गया। इस समय महात्मा तिलकने लोगोंको 'असीम सहायता' पहुनाई। सरकारके कार्यकी निंदा होकर पूगी आलोचना की। जब कि सब लोग प्लेगसे भाग जा रहे थे, तब पूनेमें ही आप डटे रहे और अस्पताल खोल कर दसाए बैठे।

छत्रपति शिवाजी महाराष्ट्रके बड़े प्रतापी वीर होगये हैं। हिन्दुस्थानके इतिहासमें उनका नाम सर्वदा श्रवणक्षरमें लिखा जायगा, पर लोगोंमें इस प्रकारकी अविद्या होगई है, कि वन्ही हिन्दुवीरोंका मन्दिर गिर रहा था और

कोई उसे मरम्मत करनेवाला भी नहीं। हमारे महाराष्ट्र वीर लो० तिलकसे मन्दिरकी बुरी अवस्था न देखी गई और मन्दिर मरम्मत करने और शिवाजीके नामको जनताके हृदयपर उचित स्थान दिलानेके लिये कटिबद्ध हो गये। उस समय महाराष्ट्रदेशमें प्लेगकी विशेष धूम थी; पर लो० तिलकके काममें प्लेग बाधा दे न सकता था, और शिवाजीकी जयन्ती १८९७ ई० में बहुत ही धूमधामके साथ मनाई गई, जोशीले व्याख्यान हुए। सारे देशमें अत्यन्त ही जोश फैल रहा था। इस जयन्तीकी कार्यवाही केशरीमें निकली थी।

ठीक इसी समय मि० रैन्ड और लेफ्टिनेन्ट ऐस्टकी हत्या हुई। एंग्लो इन्डियन पत्र तो पहलेसे ही लो० तिलकपर घात लगाये बैठे थे। और उन लोगोंको यह अच्छा मौका भी मिला। सबके सब कहने लगे, कि रैन्ड साहबकी हत्या 'केशरी' में निकले लेखोंके कारण हुई है। सरकारने भी इन एंग्लो इन्डियनोंकी बात मान ली और तिलक महाराजपर राजविद्रोहीका मुकद्दमा चलाया गया। वे ता० २७ जूनको पकड़े गये। मेसिडेन्सी मजिस्ट्रेटने हजार कोशिश होनेपर भी इनको जमानतपर छोड़ना मंजूर न किया। हाईकोर्टसे भी जमानतकी दरखास्त ना मंजूर हुई। २ अगस्तको हाईकोर्टमें इनका मुकद्दमा पेश हुआ। फिर भी जम्बित तैयबजीके सामने जमानतके लिये दरखास्त दी गई। महाराजकी पेंची उस समय मि० प्यू और दावा साहब जो पीछे हाईकोर्टके जज हुए—कर रहे थे। तैयबजीने जमानत मंजूर

कर ली। इस मुकदमेमें जो जुरी थे, उनमें ह
अगराज और ३ हिन्दु-तानी थे। ३ हिन्दु-
स्थानियोंने इनको निर्दोष बताया। पर ६
अगराजोंने इनको दोषी बताया। जज साहबने
अगराज जुरियों की ही बात स्वीकार की और
लोकमान्यको १८ महीनेके लिये जेल जानेका
हुकम दे दिया। मि० काउन्सिलमें आजकलके
प्रसिद्ध मि० एन्कीथ, महाराज तिलकके वारि-
स्टर थे। बम्बईके इस मुकदमेमें महाराज
तिलकने कानूनमें अपनी अपूर्व योग्यता
दिखाई। कहा जाता है, कि जज मि० एन्कीथ
इत्यादि मि० काउन्सिलमें अपील करनेके लिये
कागज़ लिखनेके लिये बैठे और महाराम तिल-
कके जलसे भेजे हुए कागज़ात खोले, तो उसमें
ल० की पेन्सिलसे लिखी हुई अपीलका एक
मसौदा मिला। मसौदाकी पढ़कर सब कोई
दंग रह गये। यद्यपि म० तिलकने बिना किसी
फर्जतकी पुस्तकका सहारा लिये हुए मसौदा
बनाया था—तथापि बारिस्टर लागोती रायमें
इससे अच्छा मसौदा बनाना कठिन था। मि०
काउन्सिलमें जब मुकदमा खतम हो गया तो
मध्यमूलर साहब, इत्यादिको न रहा गया।
यह लोग महाराम तिलकके उपरोक्त 'योरियन'
पुस्तकके कारण, उनपर बहुत श्रद्धा रखते थे,
अतएव उनलोगोंने महाराम विक्टोरियासे उन-
पर दया करनेके लिये प्रार्थना की। कुछ दिनों
पड़ोके बाद १ सप्टेंबर १८९८ ई० में
महाराम तिलक छोड़ दिये गये। १९०१ ई०
में पेंडरी प्राचीनतापर इनकी एक पुस्तक
निकली, जिसमें इन्होंने भूमि विद्या तथा अन्य

युक्तियोंसे सिद्ध किया था, कि वेदवादियोंका
वासस्थान पहले आकटिया प्रदेशमें याने एलि-
याके उत्तरी भागमें था। इस पुस्तककी भी
अत्यन्त प्रशंसा हुई।
इस पुस्तकके निकलनेके थोड़े दिन बाद ही
तिलकको एक बड़े ही अपमान जनक मुकदमेके
जुक्तकमें पड़ना पड़ा। यद्यपि इस मुकदमेके
अन्तमें महाराजकी जीत हुई, और उनपर
लगाई गई लाञ्छनाएं सबकी सब झूठी साबित
हुई; तथापि इस मुकदमेने तिलक महाराजको
बहुत बड़े त्रादुदमे डाल दिया था। यह मुक-
दमा इस समय 'ताई महाराज केस' के
नामसे प्रख्यात है। श्री बाबा महाराज पूनाके
एक सरदार थे और एक बड़े पुराने घाफे थे।
इनसे महाराज तिलककी गाढ़ी मित्रता थी। इनके
राज्यमें बहुत करजा हो गया था। जब ये मरने
लगे तो एक बिल बिल गये। उस बिलके
अनुसार उन्होंने महाराम तिलक पर राज्यका
काय्य-भार सौंपा और एक लड़का चुन कर
अपनी रानीको गोद लेनेकी आज्ञा दी। महाराज
तिलक राज्यका समन्वय कर राज्यको बचानेके
जीनानसे कोशिश करने लगे, और उन्होंने
रानीको खोसिस बहुत अधिक नहीं देनेका
विचार किया। हर जगह लम्पट लोग होते हैं,
अतः वहां भी बहुताने रानीका कानू मनेका
यत्न किया। रानीको समझाया गया, कि यदि
तुम अपने मनसे एक लड़का चुन कर अपने मन
मुतानिष्ठ शर्ता पर गोद लो तो बहुत अच्छा
होगा। अन्तमें १८ जून १९०३ में औरंगा-
बादमें एक लड़का चुन कर गोद लिया गया।

जब सब औरंगाबादसे लौटे तो उस रानीने दूसरीके फार्मे पड़-कर विलकी तोड़नेके लिये पूनाकी जमीनें नालिम दायर की। जब साहबने विलकी वे जाननी और नानायज समझा और विलकी बंद कर दिया। पर उन्हें इतनेहीसे तमल्ली न हुई और जन महोदयने म० तिलक पर नालिमानीका मुकदमा जलानेका हुक्म दिया। इनका प्रथम लक्ष्य लोगोंकी श्रद्धा महाराज तिलककी ओरसे हटानेका था। महाराज पर सात प्रकारके दोष आरोपित हुए। हाईकोर्टसे विलका रद्द होना तो नानायज समझा गया, पर फौजदारी न रुकी। फौजदारीसे महारमाजीको १८ महीनाकी सजा फिर हुई। अपील पर सभसत जन लुक्म साहिबने सजा घटा दी। जजका कहना था कि महाराज तिलकका व्यवहार और आचरण नितान्त शुद्ध है और उन्होंने कुछ भी छल न किया था। हाईकोर्टने इस सजाको भी हटा दिया और खुले सब्जोंमें तिलकको पूरा रूपसे निषिद्ध और शुद्ध आचरणका स्वीकार किया।

इस सबके फेरेसे निकल कर लोकमान्य तिलकने अपनेको एकदम देशसेवामें लगा दिया और राजनीतिक सुपरकी ओर दृष्टि धर ली।

सन् १९०६ में बंगविद्रोह हुआ। बंगालवालोंने लाख तिलकाहट मचाई, पर गवर्नमेंट दमसे मस न हुई। देशमें घोर अशांति फैल गई। इस मौके पर महारमा तिलकने लोगोंको अपनी गतिविधि सुधारनेके लिये कहा। उनको विश्वास हो गया था कि मिलजुलसे कार्य न

होगा। केवल सरकारकी कपाके सहारे हमलों गोंडी माताकी वृत्ति न होगी, अतः यह नितान्त आवश्यक है कि लोग अपना कार्य स्वयं देखें और दशा सुधारें, तब कहीं लोगोंकी भलाई होगी। इन सब विचारोंसे बनारसकी कांग्रेसमें जिसके सभापति गोखले महाशय थे, यह पास हुआ कि विदेशी माल न व्यवहार किया जाय क्योंकि इसी कार्यसे हमलोगोंकी दशा सुधार सकती है। १९०६ में कलकत्ता नगरमें कांग्रेस बैठनेकी बात थी। श्री विपिनचन्द्र मालने सभापतिके लिये लोकमान्यका नाम दिया और उसके लिये यत्न करने लगे। लोकमान्यका विदेशी बायकाट बंद प्रस्तावती थे। अतः विपिन बाबूको सभापतिके लिये लोकमान्य नाम लेते देख कर माडरेटोंके देवता काह्न कर गये। वे लोग लोकमान्यके कठिन तेजकी किसी प्रकार कांग्रेससे हटा कर अलग कर देनेका विचार करने लगे। अतः उन्होंने चालाकीसे बृहद्वादाभाई तिरुतीको प्रेसिडेंट बनाना चाहा। जब यह बात लोगोंको मालूम हो गई, तब लोकमान्यके लिये लोगोंने यत्न करना छोड़ा; पर इतना होने पर भी कलकत्ता कांग्रेसमें बायकाटके उपर बंदूत ही नोशीली बनवृत्ता हुई और अंतमें फिर बायकाट करनेका कांग्रेसमें प्रस्ताव पास हो गया। दूसरे साल नागपुरमें कांग्रेस होनेवाली थी, पर जब नर्मदालयलेने देखा कि यहां पर महाराज तिलकका प्रभाव बहुत अधिक है, तब वे लोग चाल बूझ कर कांग्रेसको सुस्त ले गये, जहां पर नर्मदालयके प्रधान सर-किरोनसाह मेहताका प्रभाव



अधिक था । वहां पर वे लोग सर रासबिहारी घोषको समापति बनाना चाहते थे, पर यह तिलक महाराजके दलको पसंद नहीं था । अन्तमें नतीजा यह हुआ, कि सभामण्डपमें ही कुरसियां तक चर गई और बहुत हल्लाके बाद कांग्रेस नहीं हुई । इसके बाद १९१६ तक कांग्रेससे तिलक महाराजका दल जिसका दूसरा नाम राष्ट्रीय दल भी है, अलग रहा ।

इन सब बातोंके कारण महा० तिलक नरम दलवालोंकी आंखोंके फटे हो रहे थे । ये लोग किसी प्रकार इन्हें राजनीतिक क्षेत्रसे हटाने पर कटिबद्ध हो गये । जब नरम दलवालोंकी यह हालत थी, तो सरकारके विचारके विषयमें तो कुछ पूछना ही व्यर्थ है । उन लोगोंका मनोरथ भी तुरत सफल हुआ ।

१९०८ ई०के अप्रेलमें मुम्बईपुरमें सुदी राम जोशने दो अंगरेजोंपर बम चलाया । उनपर मुम्बईमें जज और उन्हें फांसी दी गई । उस समय सरकारने अत्यन्त भीषण रूप धारण कर लिया था । कई पत्र बंद कर दिये गये, बहुतों पत्रोंके सम्पादक जेलोंमें डूब दिये गये । बम्बईमें 'फाल' इत्यादि पत्रके सम्पादक पर मुम्बईमा चलाया गया । ऐसी हालतमें सम्पादक श्रेष्ठ जनताके हृदयसम्राट म० तिलक क्या बन सकते थे ? ता० १३ जूनको यह निश्चय हुआ, कि उनपर भी मुम्बईमा चलाया जाय । ता० २४ जूनको ६ बजे सन्ध्याके समय बम्बईके सरदार गृहमें (वही गृहमें जहांपर वे सर्वदलके लिये अखण्ड गद्दा निद्रामें ता० १ को सो गये) पकड़े गये । उसी दिन पूनामें उनके घर और

'केशरी' ऑफिसकी खानातलासी ली गई । ता० २८ को महात्मा तिलक प्रेसिडेन्सी मैजिस्ट्रेटके पास लाये गये । प्रेसिडेन्सी मैजिस्ट्रेटने जमानत पर छोड़ना कबूल नहीं किया और महाराजको जेलमें भेज दिया । पहले उनपर केशरीमें लिखे एक लेखके कारण मुम्बईमा चलानेका विचार किया गया था; पर जब यह देखा गया, कि इससे मुम्बईमा कमजोर पड़ता है तो 'केशरी' में पड़लेके प्रकाशित लेख दूढ़ निकाले गये और मुम्बईमा चलानेके कारण वे लेख शामिल किये गये । १९ जूनको हाईकोर्टमें उनपर मुम्बईमा चलाया गया । हाईकोर्टने भी उनको जमानत पर छोड़ना नामंजूर किया और इसकी पुष्टि यह कारण दिखा कर की गई कि मि० तिलकको पहले मुम्बईमें मरिट्स दावरका जमानत पर छोड़नेका विचार जो था वह ठीक नहीं था । सरकारी वकीलने अब फिर पुरानी चाल चली और अपनी सम्मति दी कि मुम्बईमा जूरी द्वारा निर्णय किया जाय । तिलक महाराजके वकीलोंने लाख आपत्ति की; पर उनकी एक भी न सुनी गई । और मुम्बईमाकी जांचके लिये कुछ अंगरेज जूरी नियत किये गये । अंगरेज जूरी "केशरी" के उन लेखोंको निनके कारण मुम्बईमा चला था, नहीं समझ सकते थे; क्योंकि वे लोग मराठी नहीं जानते थे; पर वहां तिलक महाराजको जेल देना ही प्रबान लक्ष्य था; वहां ऐसी ऐसी बात क्यों कर सुनी जाती ? खैर मुम्बईमा चला और १९ जुलाईकी मुम्बईमा आरम्भ हुआ ।

अबदय महाराज तिलकने किती वकीलका



रखना व्यर्थ समझा और मुकुटमेंकी पैरवी आप ही करने लगे । पहले ही कह अये हैं, कि जो लेख मुकुटमेंकी जड़ थे, वे मराठीमें थे और मुकुटमेंके लिये उत्तका उलथा अंगरेजीमें हुआ था । मुनासिब था, कि जिस सरकारी ओफिसर पर लेख उलथा करनेका भार था, वही गवाही देता जिससे लेखके उलथा करनेमें जो गलती हुई हो वह साबित की जाय, पर सरकारने ऐसा करना पसंद न किया और एक दूसरे आदमीको ही जिसका नाम "जोसी" था, जिन्हेंके समय उपस्थित किया । जिन्हें यह बात साबित की गई, कि उलथा भ्रमपूर्ण और गलत है, इससे यथार्थ मतलब न निकल उल्टा ही मतलब निकलता था; पर इसकी परबोध किसीको न थी । पूनामें सोनातलासीके बाद एक पोस्टकार्ड मिला था, जिसमें दो दम बनानेके नियम बतानेवाली पुस्तकोंके नाम थे । वह गवाहीमें शामिल किया गया और केवल यही पत्र इसके लिये काफी सचुत समझा गया कि म० तिलककी इच्छा सरकारसे विद्रोह करने या करानेकी थी । उनसे उत्तर देनेका हक छीन लिया गया । महात्मा तिलक लाख दिखाने रह गये, कि जिन जिन बातोंका समावेश उनके अखबारमें था, वही बातें और भी दूसरे देशी और अंगरेजीके अखबारोंमें भी थीं; पर कोई सुननेवाला न था । दो दिन मुकुटमा होता रहा । तिसरे दिन महाराज तिलक अपने ऊपर किये गये दोषारोपणका खण्डन स्वयम् करने लगे । ४ दिन तक आपने बहस कर, कई तर्क दे, यह साबित किया, कि हम निर्दोष हैं ।

कुल २१ घंटा तक उन्होंने बहस की; उन्होंने जूरीसे यह वाद रखनेको कहा, कि आप लोगोंके राजनीतिक विचार मेरे एकदम प्रतिकूल हैं, वह जूरियोंसे दया नहीं चाहते थे; पर इन्साफ अवश्य चाहते थे । महात्माने जूरियोंसे कहा, कि इंग्लैन्डमें जूरी लोग बहुत ही उदारतासे काम लेते हैं । आप लोग भी उस उदारताको न भूलियेगा । उन्होंने ऐसा लेख और विचारकी स्वतन्त्रताको अपनाये रखियेगा; पर उनपर तिलकके कहनेका कुछ असर न पड़ा और अन्तमें ९ जूरियोंने जिनमें ७ अंगरेज और दो पारसी थे, तिलक महाराजको दोषी ठहराया । तिलक महाराजको ६ वर्ष कैद और १०००) हज़ार जुर्मानेकी सजा हुई । इसपर तिलक महाराज हताश न हुए; बल्कि कहा:—

"जूरी मुझे दोषी मंते कहें; पर मैं दावेके साथ कहता हूँ, कि मैं निर्दोष हूँ । संसारमें मुनुष्यके भाग्य विधातकी कोई दूसरी ही शक्ति है । शायद ईश्वरको इच्छा है, कि हमारा जो उद्देश्य है, उसकी सिद्धि स्वयम् मेरे द्वारा होनेके बदले हमारे एक सहनसे ही अधिक होगी ।"

यह वाक्य बीरोंके है, और तिलक महाराज की यह चीरसापूर्ण अभयवाणी चिरकाल तक भारत सन्तानकी कानोंमें गूंजती रहेगी । तिलक महाराज यथासाध्य शत्रु महाराष्ट्रसे घाबरें इत्यादि गये और उनको सुदूर बर्माके मंडाले जेलमें स्थान मिला । इसी बीचमें सरकारने उनपर सपरािश्रम कारागारके बदले अपरािश्रम कारागारमें रहनेकी आज्ञा निकाली । एक हज़ार



रका, जुमाना भी माफ हो गया। प्रिवी कौन्सिलमें अपील हुई; पर अपीलके विषयमें सलाह करनेमें केवल पांच मिनट लगा और दस लाइनमें फैसला लिख कर सुना दिया गया। अपील नामञ्जुरी हुई।

तिलक महाराज जेलमें थे; पर उनकी आत्मा भारतमें सदा घूमकर भारतको जागृत कर रही थी। लोग इस आशपर कि तिलक महाराज केवल ६ ही वर्षके लिये गये हैं, उनके उद्देश सिद्धिमें दत्तचित्त थे। ६ वर्षके बाद वे कारागारसे बाहर आये और साथ अपनी विद्वत्ताकी अपूर्व निसानी भी लेते आये। उनकी जेलमें लिखी हुई प्रस्तुत 'गीता रहस्य' उनके पाण्डित्यका एक श्रेष्ठ नमूना है। भारतसंतान इसको पढ़कर जन्म-न्मान्तर तक अपना लोकपरलोक बनावेगी। जेलसे निकलने पर उनका स्वास्थ्य बुरा तो अवश्य ही हो गया था; पर उनके जोश और आशामें तनिक भी कमो नहीं पहुंची थी।

उनके जेलसे अनेक पहले ही उनकी सह-धर्मिणी इस लोकसे, महाराजके लिये उस लोकमें स्थान बनानेके लिये, प्रस्थान कर गई थी। इसी समय मि० एनीबेसेन्ट कांग्रेसके फूटको टटानेके लिये नी जानसे यत्न कर रही थी; आप स्वायत्तके लिये तन गन दोनों न्योछावर कर चुकी थीं। महात्मा तिलक १९१४में यहाँ आये; एनीबेसेन्टकी सहायता, समयका जोश, महाराजके प्रभावका फल यह हुआ, कि १९१६में लखनऊमें होनेवाली कांग्रेसमें महाराजने अपने दल सहित कांग्रेस मन्दपकी सु-

शोभित किया। उस समयकी शोभा अपूर्व थी। लोगोंमें उन्मादकी नदियां उमड़ रही थीं, लोगोंने अपने भूले हुए, छीने गये नेताको फिर सामने देख अपनेको धन्य माना; पर महाराजकी लोगोंकी तारीफ या निंदाकी कोई चिन्ता न थी। वे फिर अपने राजनीतिक सुधारके कार्यमें लगे।

जगह जगह घूम कर वे स्वायत्त संघके लिये चेदा झाड़ा करने लगे और लोगोंमें स्वराज्यकी चंचल पूरा रूपसे फैला दी। पाठक जानते होंगे, कि इसी समय एनीबेसेन्ट भी मद्रासमें इसी धुनमें थी। सरकारको यह बात फिर असह्य हुई। उसने इधर तो एनीबेसेन्टको नजरबंद किया। उधर, तिलक महाराज पर ४००००) रुपयेकी जमानत, इस बातसे देनेको कहा, कि फिर वे जे शोके व्याख्यान न देने पावें। सहर्ष कहना पड़ता है, कि इस जमानतके मुकदमेमें बम्बई हाईकोर्टने अधिक उदारता दिखाई और महाराजको जमानत देनेसे धरी किया। महाराज तिलक पूर्ववत् कार्य करते रहे। १९१७ की कांग्रेसमें आपका स्वायत्त पर जोरदार भाषण हुआ। आजकल लोकमान्य तिलक जनताके हृदयके मूर्णण हो रहे थे, महाराज ही कांग्रेस हो रहे थे, उनका विचार ही कांग्रेसका विचार था। जनता उन पर किस प्रकार श्रद्धा रखती है, उसका अंदाज केवल इसी बातसे लग सकता है, जब होमरूल लगे डेपुटीमनके सचिव लिये उन्हें खिलासत जाना पड़ा, तो एक महीनेसे कम समयमें ही दो लाख रुपये मिल गये। मार्च १९१८ ई०

में महात्मा तिलक होयल्ल डेपुटेशनके समापति हो, मद्रास होते-इन्डिहके लिये रवाना हुए। यहां यह कह देना आवश्यक है, कि तिलक महाराज परानी रंतिके शोषक थे और उन्हें समुद्र यात्रा मान्य नहीं थी भी वे इङ्ग्लैण्ड गये। जानेका कारण यह बताया, कि-यदि एक हमारे जातिच्युत होनेसे हिंदुस्तानका भाग्य फिरे तो हमें यह भाग्य है। यह डेपुटेशन भग्यवश इङ्ग्लैण्ड न जा सका। जब ये लोग कौलम्बोमें ही थे, तभी विलायत जानेकी मनाही वहांकी सरकारसे आई और वे लोग आगे न जा सके।

१९१८ के अप्रैलमें जर्मनी बड़े वेगसे आगे बढ़ रहा था और सर्वत्र घोर आतंक छा गया था। इङ्ग्लैण्डके मंत्रीने वायसरायके पास पत्र भेजा और उन्हें युद्धमें अधिक मदद देनेकी लिखा। देहलीमें देशी राजाओं, राननंति शोंकी एक समा हुई; पर उपमें ऐनीबीट और तिलक न बुलाये गये। देशभरने इसपर आपत्ति की, जब बम्बईके गवर्नर वेल्लिङ्गटनने बम्बईमें सभा की तो तिलक महाराजको भी बुलाया। प्रथम भाषणमें गवर्नर पाह्यने होम-रूलपर कटाक्ष किया, और जब तिलक महाराज स्वयं बोलने लगे तो छेड़छाड़ शुरू हुई। इस पर तिलक महाराज अपने अनुगामियों सहित सभा छोड़ बाहर चले गये। मद्रास गान्धीजीके समापतित्वमें बम्बईमें गवर्नरके इस कुचात्रका घोर विरोध किया गया।

इसके बाद ही जा सुधारयोजनापर मोन्टेगू चेम्सफोर्ड रिपोर्ट निकली, तब तिलक महाराजने

इसको एकदम नापसंद किया। इसपर पुनर्कि मजिस्ट्रेटने इन नीवकृतता देनेसे मना किया; पर यह मनाही बम्बईके स्पेशल-कॉमिशनके समय हुआ ली गई थी। १९१८के दिसम्बरमें लोकमान्य इंग्लैण्ड गये और वहांपर सर-बेलेन्टाइन पर, उनकी लिखी हुई 'इन्डियन ऑनरेस्ट' नामकी पुस्तकमें अपनेपर किये हुए आक्षेपोंके कारण मुकदमा दायर किया। मुकदमेमें जुरी लोंकी राय में तिलकसे बरखलाफ़ हुई और मुकदमा खारिज किया गया। जिस समय महाराज इङ्ग्लैण्डमें ही थे, उस समय हिन्दु-स्थानमें देहलीकी १९१८की कांग्रेसके समापति एक मससे आगही सुने गये; पर आगे, इङ्ग्लैण्डमें सुधार सम्मन्धी महत्त्व कार्य छोड़ समापति का सन ग्रहण करनेके लिये हिन्दुस्तान आने न चाहा। गर लाहौर कांग्रेसमें मशरूजका जो स्वागत और भाग हुआ उसे देखकर कहना पड़ता है कि मसतर्पके एक ही प्रधान ने भाग्य न ले जाते थे।

इङ्ग्लैण्डमें रहकर आगे हिन्दुस्थानके प्रश्नोंकी ओर वहांकी जनताका ध्यान आकृष्ट किया और वहांके मनदूरदली, जो आजकल बहुत प्रभावशाली हो रहा है अपनी ओर सगानुभूति लीं। यह केवल उन्हींके यत्नका फल है कि आज मनदूर दल हिन्दुस्थानके द्वितीय चिन्तनमें इस प्रकार लग रहा है। इङ्ग्लैण्डमें महाराजने लासो पेपलेट चढ़वाये। वहांकी कांग्रेस कमीटीमें जीवप्रदान कर नई रीतिसे उसका सुधार किया। वहांपर अपना गम्भीर विचार उवाच्यन्ट कमीटीके सामने पेश



किया। उन्होंने प्रेसिडेन्ट विलसन और पीत कौन्फरेन्सके पास हिन्दुस्तानकी सच्ची हालत लिखकर उनका ध्यान हिन्दुस्थानकी गिरी दशाकी ओर आकर्षित किया। लाला लाजपत-राय जो स्वराज्यका बल अमेरिकामें बढा रहे थे, महाराजसे बहुत सहायता पा चुके हैं।

महाराजके इस प्रकारका कार्य और जनतामें इस प्रकार आदर देख बहुतसे लोग उनसे कुछ गये थे। मा० सुरेन्द्रनाथ बनर्जी, मि० ऐनी वेसेन्ट, श्रीनिवास शास्त्रीने कांग्रेसपर श्रीमान् तिलकका इतना प्रभाव देख और यह देखकर कि वहाँपर केवल तिलक महाराजके ही पटपोषण करने वाले हैं और इन लोगोंके विचार लोग हृदयङ्गम नहीं करते, कांग्रेसको इधर २ वर्षसे छोड़ कर एक नया दल कायम किया है; पर आज कांग्रेसमें महाराजके काष्ण नवीन जोश आ गया है और कांग्रेस भारतीय जनताका एक सजीव दल हो गई है। सरकार भी कांग्रेसके विचारोंको अब अधिक महत्व देने लगी है। यह केवल महात्मा तिलकके प्रभावक फल है। उनके विचारमें भीख मांगनेसे कुछ नहीं मिलता, जो लेनेका बल रखता है, वही पा सकता है। जो बदला ले सकता है, इसीके साथ इन्साफ किया जाता है। महात्मा तिलकने भारतीय जनतामें जिस बलका संचार किया है, उसके सहारे आज हमलोग कुछ कुछने फांदने भी लगे हैं।

सोलापुरमें जब बम्बईकी प्रादेशिकसभा हुई थी, तब उस समय कुछ नरमाल यलोंने यह कह कर कि महात्मा ममानगुभारके पक्ष-

पाती नहीं, उनका प्रभाव घटानेका यत्न किया। बहुत रुपया खर्च कर बहुतसे वोटर सभामें लाये गये थे, मि० ऐनी वेसेन्ट भी वहाँपर अपनी ओजस्विनी भाषासे लोकमान्यके विचारका खंडन करनेके लिये पधारी थी; पर महाराजके ऊपर लोगोंकी श्रद्धा इतनी थी और उनके विचार इतने गम्भीर होते थे, कि जिस समय वे व्याख्यान देकर बैठे सभाभवन तालि-योंकी गड़गड़ाहटसे गूँत उठा, और लोगोंकी कौन पूछे, जो लोग केवल लोकमान्यके विरुद्ध वोट देनेको कमर कस कर आये हुए थे, वे भी महात्माके विचारोंसे सहमत हुए।

लोकमान्य तिलककी अवस्थागत २३ जुलाईको ६९वर्षकी थी। ६५ वीं जयन्ती मनानेके बाद वे जैसेही बम्बई पहुंचे उन्हे कालरूप रोगने आ घेरा और ता. १ ली अगस्तको उन्होंने भारत गाताको छोड़ परलोकमें हिन्दुस्तानकी फरियाद सुनानेके लिये महायात्रा की।

“पाटलिपुत्र”

हमारे उत्तमोत्तम ग्रन्थ।

आदि पुराण १६)

उत्तर पुराण १०)

दोनों एक साथ ५॥)

पंचाध्यायी टीका ५॥)

धर्म-प्रश्नोत्तर २)

जिनज्ञानक ॥)

मिलनेका पता—

लालाराम जैन,

महाराजन डंडौर।

जैन धर्म क्या है ?

हे० कामताप्रसाद

जैन, अजीवज ।

जैन धर्म एक स्वतंत्र वैज्ञानिक धर्म है । वह आज्ञाप्रधान धर्म नहीं है । और न जैन धर्म अपनेको ईश्वर प्रणीत धर्म प्रदर्शित करता है । सुतरां उसके तत्वादि वैज्ञानिक ढंग पर होते हुए उन महात्माओं द्वारा प्रतिपादित किए गए थे जिन्होंने केवलज्ञान अथवा सर्वज्ञता इन तत्वादिके ही मथन करनेसे प्राप्त की थी । ऐसे वैज्ञानिक ढंग पर न आज्ञाप्रधान ही की और न पुराण आदिकी ही पहुंच है । और यह कहना तो निरर्थक ही है कि विज्ञान अथवा वैज्ञानिक ढंगसे ही शीघ्र और निर्भीति फल प्राप्त होते हैं ।

जैन धर्मके समझनेके लिए यह आवश्यक है कि पहिले हम 'धर्म'का अर्थ समझ लें । हम निशचिन धर्म २ कहा करते हैं परन्तु उनके यथार्थ भावको समझनेमें असमर्थ हैं । भला जब इतने वर्तमान प्रचलित मत ही विविध विविध प्रकारका भोथा धर्म निरूपण करें तो उपर्युक्त असमर्थतामें संशय ही क्या है ?

साधारणतया संसारमें चक्र कटते हुए हम सहस्र जीनोंको सांसारिक दुःख और पीडाओंसे हटा मुक्तिके सच्चे मार्गमें लगानेको धर्म कह सके हैं । सर्व प्राणीसमुदाय भी-मनुष्य, पशु, पक्षी आदि-प्रत्येक वस्तु और कार्यमें सुखकी

वाञ्छा करते हैं । संसारमें ऐसा कोई जीव नहीं है जो अगाध जीवन और किसी न किसी रूपमें वास्तविक आनंदका अगिलापी न हो । धर्म ही एक ऐसा विज्ञान है जो इसकी दवा है । धर्मसे ही हमें वह सुख और आनंद मिल सक्ता है जिसके लिए प्राणीमात्र लालायित हो भटक रहे हैं । परन्तु विस्मय है कि किन्तु ही प्रचलित धर्म केवल आज्ञाओं और निरर्थक गुप्त समस्याओं पुराणादिकका निरूपण कर ही चुप हो रहे हैं जब कि इनके स्थानमें वैज्ञानिक ढंगकी आवश्यकता है । यह पहिले ही दर्शा दिया है कि विज्ञान (Science) ही एक ऐसा साधन है कि जिससे शंकाएं शीघ्र और निर्भी-तिरूपमें दूर कर दी जा सकती हैं और इक्षित पदार्थकी सिद्धि हो सकती है । जैन धर्ममें अन्य धर्मोंसे यही विलक्षणता है कि वह एक शुद्ध निर्भीति, और अपूर्व विज्ञान है और न उसमें निरर्थकरीतियोंका ही निरूपण है और न भयोत्पादक पूजा आदिसे ही पूर्ण है । जैनधर्ममें अंधश्रद्धाका भी अभाव है । वह अपने अनुया-यियोंको प्रत्येक तत्वको न्यायपूर्ण परीक्षाकी कसौटी पर कसकर और उनके यथार्थ भावको समझ कर ही श्रद्धान करनेकी अनुमति देता है ।

मार्गमें जैनधर्ममें सर्व-प्राणी-समुदाय वृषित सुखके यथार्थ रूपका निरूपण है । यद्यपि कुछ कालके लिए विषय सुख इन्द्रियोंको साना सी पट्टा देते हैं परंतु यह तो प्रत्यक्ष ही है कि इन्द्रियमनित विषय सुखोंसे जीवोंकी तृप्ता नहीं बुझती । इन्द्रियमनित सुख पूर्णतया क्षण-मंदुर हैं अन्य वस्तुओं और देहधारियोंके मेल



पर निर्भर है। इनकी प्राप्ति दुःख पूर्ण है और अंतु भी दुःखदायी । आपसमें वैमनस्योत्पादक है। और वृद्धावस्थामें अथवा इन्द्रिय-शिथिलता पर पूर्ण अशान्तिके दाता है । - जिन व्यक्तिने अपनी आतिरिक्त इच्छाओं पर विचार किया होगा तो उसे विदित हुआ होगा कि वह विषयसुख उसे उसके इच्छित पदार्थ अथवा सुखकी पूर्ति कर शक्ति प्राप्त नहीं कराते । इनसे उसकी अशान्ति उत्तरोत्तर बढ़ती ही जाती है । यथार्थमें जिस सुखकी प्राणीमात्र रक्षा करता है वह सुख ईश्वरीय सुखके सदृश अक्षय, अपरिमित है तथैव आत्माको सुखग उत्पादक है । वह इन्द्रियलुपताकी पूर्तिके सदृश नहीं है । वह अपूर्व आनंद अथवा सुख है ।

यह अपूर्व आनंद न क्षणभंगुर ही है और न इन्द्रियजनित सुखके सदृश दुःख अथवा पीड़ा उत्पादक । यह आनंद आत्माका ही निजी स्वभाव है । यद्यपि अज्ञानतमके कारण वह प्रकट नहीं है । इस वक्तव्यकी सत्यताका प्रमाण मनोवाञ्छाकी पूर्तिमें हमारी आत्माको सुखका अनुभव स्वतः ही हृदयसे बाह्य इन्द्रिय साहाय्यके बिना ही अनुभवित होनेमें है । गंभीर विचार करनेसे ऐसा सुख पूर्ण स्वतंत्रतामें ही प्रदर्शित होता है । वस्तुतः जब कभी भी आत्मासे यह आच्छादित वर्ण अथवा तणका अभाव ही जायगा तब ही स्वाभाविक आनंद झलक उठेगा । संसारी आत्मा स्वकृत्योंसे पूर्ण है अतः इन बाह्य बोधा चढ़ानेवाले कार्यादि उसे भारस्वरूप दुःखपूर्ण प्रतीत होते हैं । इन पर पदार्थोंके क्षय होनेपर आत्माको यथार्थ सुख अर्थात्

स्वतंत्रता (मोक्ष) प्राप्त हो जाती है जिसकी कृपासे आत्मा वास्तविक आनन्दका संसादादन करती है । अन्ततः अत्र यह प्रत्यक्ष है कि इन बाह्य भारस्वरूप यथार्थमें ही आत्माका स्वाभाविक आनन्द प्रदर्शित होता है और वह सुख स्वाभाविक होनेके कारण अक्षय है ।

अज्ञान ही वह वस्तु है जिसके वश हो आत्मा स्वाभाविक आनन्दके उपभोगसे वंचित रहती है । कठिनातासे सहस्रां प्राणधारियोंमें कोई एक मिलेगा जो इस स्वाभाविक आनन्दके स्वरूपकी झलकसे भिन्न हो, नहीं तो सब ही मनुष्य अपने इन्द्रियोंकी बाह्य वस्तुओंसे इस स्वाभाविक आनन्दको प्राप्त करना चाहते हैं । परन्तु यह बाह्य वस्तुसमुदाय अपने स्वभावसे ही उसे देनेमें असमर्थ है । यदि मनुष्य अपने आन्तरिक भावोंपर ही विचार करे तो भी उसे विदित हो जाय कि जिस समय सच्चा आनन्द अनुभवगोचर होने लगे उसी समय उसकी पूर्ण मुक्ति हो जाय । आत्माके स्वाभाविक आनन्दके स्वरूपकी अनिभिन्नता अमानकारी ही आत्मा और सच्चे सुखके बीचमें रोड़ा है । अतः ज्ञान ही सच्चे सुखका मार्ग है । आनन्दके स्कूलों और कालिनेमें जो ज्ञान सिखाया जाता है उससे यह सच्चा ज्ञान विशेष समझने योग्य और पूर्ण है । इस सच्चे ज्ञानमें उन वस्तुओंका स्वभाव और प्रकृतिकी उन शक्तिधौका वर्णन है जिससे आत्माका स्वाभाविक आनन्द गट्ट हुआ है और पुनः प्राप्त हो सका है । अन्य-चाहे कोई ज्ञान मनुष्यको हितकर भी हो परन्तु सच्चे सुखके अभिलाषीके लिए



यही ज्ञान अभीष्ट एव श्रेष्ठ है ।

इस ज्ञानके मुख्य सात ग्राह्य आवश्यक्रीय पदार्थ हैं, जिनको जैनागममें तत्त्व कहते हैं । ये इस प्रकार हैं (१) जीतव्य अथवा चेतन पदार्थ अर्थात् जीव तत्त्व (२) अचेतन अर्थात् अजीव तत्त्व (३) आश्रयतत्त्व अर्थात् आत्मा में पुद्गलका जाना (४) बध तत्त्व (५) सवर तत्त्व (६) निर्जरा और (७) मोक्ष तत्त्व । इनका विशेष वर्णन निम्न प्रकार है —

(१) जीव तत्त्व एव जीतव्य पदार्थ है और वह वास्तवमें परमोत्कृष्ट चेतना स्वरूप है । उसकी उत्पत्ति किसी दृष्टिसे भी पुद्गलसे नहीं है । स्वभावतः जीव तत्त्व सर्वदर्शी और सर्वानन्द पूर्ण है तथा अपरिमित अतुल और अक्षय बल-वीर्य सयुक्त है । जैसे अन्य सर्वपदार्थ अनादिनिधन हैं वैसे ही जीवतत्त्व है यह अमूर्तक है इसलिए इन्द्रियोंद्वारा जानाजा नहीं सक्ता है । परन्तु दूसरी तरफ पूर्णतया निराकार भी नहीं है क्योंकि जितने पदार्थोंकी सत्ता सिद्ध है उतने समस्त पदार्थोंकी साकार होना आवश्यक है । जीव सदैवसे सत्तामें है । और सदैवसे ही पुद्गलसे सम्बन्धित है । इस कारण अपने स्वाभाविक गुण अनन्त ज्ञान, अनन्त बल और अनन्त सुखके उपनोगसे वंचित है । सम्प्रति चारित्रिके अनुसार वर्तन करनेसे उन मलरूपी शक्तियोंका क्षय होजाता है जो आत्मा के चार अनन्त चतुष्टय—(१) अनन्तदर्शन (२) अनन्तज्ञान (३) अनन्तबल (४) अनन्तसुख—जानक गुणको प्रकट नहीं होने देते हैं ।

(१) अजीव तत्त्व चेतना रहित है और

पाच प्रकारका है (१) पुद्गल (२) धर्म (६) अधर्म (३) आकाश और (४) काल । जैन धर्मके अनुसार सृष्टिका कार्य अथवा विकास इन पाच अजीव पदार्थोंके एक या ज्यादाके और जीवोंके अभावमें नहीं हो सक्ता है । आकाश स्थान देनेके लिए आवश्यक है तो काल भी उतना ही चलाव—उड़ावके लिए आवश्यक है धर्म और अधर्म चलनेमें व आकाश ग्रहण करनेमें क्रमशः सहकारी हैं । पुद्गल शरीरोंकी सामग्रीका देनेवाला है और जीव जीतव्य ज्ञान और सुखोपभोग करने हेतु आवश्यक है । इन छ द्रव्योंका वर्णन जैनाचार्यों ने जैन ग्रन्थोंमें विशेष रूपसे किया है अतः यहाँ उनका वर्णन करना उचित नहीं है ।

(२) तिसरा तत्त्व आश्रय है । आत्मा में कार्माण पुद्गल वर्णणाओका आश्रित होना अथवा आनेका नाम आश्रय है । आश्रयके उद्धाररूपमें आत्मा पुद्गल परमाणुओंको रत ही आकर्षित करने लगता है और इसके विविध कषायों वश ये परमाणु आत्मासे मिल जाते हैं । जिससे आत्माके निजगुण दूषित होते हैं और बध बध जाता है । जैनधर्म आत्माको अनादिसे ही इन कर्मोंके आश्रय और बधके कारण दूषित मानता है जिसके कारण जीवात्मा अनादिसे ही जन्ममरण धारण कर, भ्रमण करता फिर रहा है । यह कर्मबध आत्मा और पुद्गलके मेलसे होते हैं । और इन्हींसे जीव अपने स्वाभाविक पूर्णता और रतत्रासे हाथ धो बैठता है । इस प्रकार एक वषयुक्त—कर्म जमीरोंसे जकड़ी हुई आत्मा उस



चिड़ियाके सदृश है जिसके पंख सी दिए गए हों, जिसके कारण वह उड़ नहीं सकती है। आत्मा अथवा जीव, चिड़ियाके तरह वास्तवमें स्वतंत्र है। परंतु पुद्गलके सम्बन्धके कारण अपने पंख कटे हुए सा समझता है और अपने स्वाभाविक सुख व स्वतंत्रताका उपभोग नहीं कर सका है।

(४) बंध आत्मामें कर्म वर्णनाओंका आश्रयित होकर काल स्थितिके लिए मिल जाकर ठहर जाना ही है जैसा ऊपर वर्णन कर चुके हैं।

निर्वाण अथवा मोक्ष प्राप्त करनेके पदिले इन कितने ही प्रकारके बंधनोंको तोड़ना ही पड़ता है।

(५) संघर तत्त्व आश्रयका प्रतिकारक है अर्थात् आत्मामें कर्मफलको एकत्रित होनेसे रोकता है। प्रत्यक्षतः जब तक आत्मसे कर्म बंधकी पुद्गल वर्णनाएँ दूर नहीं कर दी जायगी तब तक मुक्ति प्राप्त नहीं हो सकती है। अतः संघर अर्थात् हर समय आत्मामें आनेवाली कर्मवर्णनाओंको आश्रयित न होने देना मुक्ति प्राप्त करनेके मार्गमें प्रथम श्रेणी अथवा पादुरुके रूपमें है।

(६) जब अप पुद्गल वर्णनाओंका आश्रय होता रुक जाता है तब दूसरी श्रेणीमें उन पूर्व संचित कर्मवर्णनाओंको एक एक कर निकालना रह जाता है। यही दूसरी श्रेणी निर्हरा तत्त्व है। जब समस्त कर्मबंध तोड़ दिए जाते हैं और आत्माका पुद्गलसे किसी प्रकारका संबंध नहीं रहना तब आत्मा अपने स्वाभाविक गुण स्वतंत्रता, सुख और फलज्ञानका अनुभव करती है।

(७) वां और अंतिम तत्त्व आत्मके वास्तविक उद्देश्यकी पूर्ति है। अर्थात् आत्मके निज स्वरूपका स्वतंत्रता, मोक्ष अथवा सुखका पा लेना ही है। इस मोक्ष तत्त्वको आत्मा अपने साथ लगे हुए समस्त पुद्गलको दूर करने पर प्राप्त करती है।

इस प्रकारको इन तत्त्वोंका स्वरूप है। थोड़े हीमें जैन धर्मकी शिक्षा इस प्रकार है कि पुद्गल और मूर्त्तिक पदार्थोंसे वेष्टित संसारके जीव चेतन पदार्थ हैं। इनमें पूर्णपने और सर्वदर्शिताकी शक्ति विद्यमान है। ये शक्तियां उनकी उन्हें अपने सम्यक् वर्तनसे प्राप्त होती हैं। इन भीदोंके अनन्तदर्शन और अनन्त सुख संयुक्त पूर्णपनेका अभाव स्वोपाहित कर्मोद्भयके कारण हुआ है। अर्थात् इन जीवोंने स्वतः ही पर पदार्थोंको अपनाया है जिसके कारण वे अपने ही कृत्यों वश इन कर्म रूपा पुद्गल वर्णनाओंसे बांधे गये हैं। और अपने यथार्थ स्वरूपको भूल रहे हैं! अतः अब केवल यही आवश्यक है कि जीव अगाड़ी अन्य पुद्गल वर्णनाओंका समावेश न होने दे और जो पूर्व संचित बंध स्वरूप सत्तामें है उनको विध्वंस कर दे। जिस समय यह किया जायगा उसी समय आत्माकी स्वाभाविक सर्वदर्शिता और पूर्णपना प्राप्त हो जायेंगे और स्वतंत्रता, अतेन्द्रियता और आनन्दका उपभोग होने लगेगा। इस मतमें किसीसे प्रार्थना अथवा याचना करनेकी आवश्यकता तो है नहीं। और धन देने योग्य विरोधता यह है कि कोई भी अन्य डार ऐसा नहीं है जो मोक्ष अथवा सुखमेंसे किसी



एकको भी दिला सके जिनके लिए जीवात्माएँ मारे मारे फिर रहे हैं। समुचित प्रणालीका ढंग कारण-कार्यके सिद्धान्तपर निर्भर है।

उपयुक्त वर्णति कारणवश ही जैन धर्ममें किसी भी व्यक्तिसे मुख अधवामोक्षकी याचना करनेका अथवा तदप्राप्ति हेतु उनकी पूजा करनेका निषेध है। ये सुख और मोक्ष आत्मा की निज वस्तुएँ हैं। इस कारण बाह्य प्रकरणोंसे प्राप्त नहीं हो सकती। अतः अन्य प्रचलित सैद्धान्तिक मतोंके सदृश जैन धर्म परमात्मपदका निरूपण नहीं करता है और उन सर्व पूर्ण सिद्धोंकी उपासना उसी ढंगसे करनेका उपदेश देता है जिस ढंगसे हम अपने गुरुओंकी विनय करते हैं। सर्वोच्चतम विद्वान् गुरुके लिए परमोत्कृष्ट विनयकी आवश्यकता यथेष्ट ही है। और सर्वज्ञ तीर्थंकरोंमें बढकर कोई अन्य गुरु हो ही नहीं सक्ता है। तीर्थंकर त्रिकालकी समस्त वस्तुओंके ज्ञाता हैं और उनका ज्ञान पूर्ण है जिसके कुछ स्वरूप उन्हें पूर्णपना अर्थात् सिद्धता प्राप्त है। इस प्रकारकी शिक्षा जैनधर्मकी है। और यह नितान्त ही सीधी साधी वैज्ञानिक ढंगकी है। गुप्त समस्याओं और भेदोंका तो नाम तक नहीं है जैसा कि अन्य मतोंमें पाया जाता है। जैनधर्मके अनुसार निर्वाणका मार्ग सम्यक् चारित्र्य कर संयुक्त है।

अब यह देखना शेष है कि जैन धर्मका आधुनिक सम्यतापर क्या प्रभाव पड़ता है? कोई २ 'सम्य' मनुष्य तो आनन्द धर्मके नामसे ही घबड़ाते हैं। उनका विश्वास है कि धर्मके पालनके साथ ही साथ निचारी-सम्यताका भी अन्त हो जायगा।

परन्तु: यह भ्रमपूर्ण विश्वास नितान्त प्रमाण रहित ही है और उन्हीं लोगोंका है जो आत्माएँ यथार्थ दृश्यसे अनिभिज्ञ हैं और उनके निकट आत्मा इस जन्मके उपरांत फिर अगाड़ी जन्म धारण ही नहीं करेगी। सम्यताको इन्द्रिय लोलुपता मान कर उसका अनर्थ करना न्याय संगत नहीं है। यथार्थमें सम्यताके अर्थ आत्म-शिक्षासे ही सम्यन्ध रखते हैं कारण कि जीवात्माओं यहां भी निरन्तर विकाशको प्राप्त होती रहती हैं और दूसरे जन्मोंमें भी। इन्द्रियलोलुपता कितनी भी सुदृष्टि क्यों न हो परन्तु अंततः अनन्त आत्माके गुणोंकी घातक ही है कारण पहिले तो आत्माका अस्तित्व जान ही प्रगट नहीं होने देती और फिर इन पापाचारोंके कारण उसे नके अथवा तिर्यच्च गतिके दु खोंमें ले पटकती है। प्राचीन कालके मनुष्य बुद्धि, विद्या अथवा उस वस्तुविज्ञानसे किसी प्रकार भी अनिभिज्ञ अथवा अल्पज्ञानी नहीं थे जिस ज्ञानके आधारसे इस आधुनिक सम्यताका निर्माण हुआ है। सुतरा उनमें विशेषता और थी कि उनको विश्वास था कि इन्द्रियलोलुपता दु खोत्पादक और आत्माको निवृष्ट बनानेवाली है। इसी कारण उन्होंने आवश्यक्रीय सीमाके अंतर्गतके उपरांत आत्म-गुणको नष्ट करनेवाली शारीरिक इन्द्रिय पुष्टि-कारक कच्चा अथवा विज्ञानका निरूपण नहीं किया था। मनुष्य और पशुमें केवल ज्ञान शक्तिने बड़ा अंतर डाल दिया है कारण कि ज्ञानकी महिमासे मनुष्य तो अपने स्वाभाविक पूर्णपनेको प्राप्त कर सक्ता है परन्तु पशु ज्ञानके



अभावमें असमर्थ हैं। अतः पशु-गतिमें तो दशा सुधारनेका कोई कारण उपलब्ध नहीं है परन्तु इस मनुष्यावस्थामें जीवात्माओंको अपनी दशा सुचारु इस जीवन और अन्य जीवनकी पीड़ाओंसे छुटकारा पानेकी उपयुक्त अवस्था प्राप्त है। जो दुःखोंसे जल्दी छुटकारा दिला सुखका उपभोग कराए वही वास्तविक सम्पत्ता है और यही न्यायकी तीव्रालोचनासे भी सिद्ध है न कि वह आधुनिक सम्पत्ता जो इंद्रिय विषय वासनाओंमें फंसा हमें पशु-सदृश बनानेमें कुछ कसर नहीं रखती। आधुनिक सम्पत्तामें ध्यान देने योग्य विषय वर्तमानमें जीवन निर्वाह व्यय है। आनन्द-फल दिनोदिन यह जीवन-निर्वाह-व्यय अथवा गृहस्थीका खर्च बढ़ता जाता है। इस कारण इस सम्पत्ताकी कृपा दृष्टिसे हर समय ही-दिन अथवा रात-में परिश्रम कर गृहस्थीका खर्च एकत्रित करनेमें और उन साधनोंके मिलनेकी च्येष्टामें जिनसे मनुष्य अपनी समान में “कोई आदमी” समझा जाता है मनुष्यका उपयोग लगा रहता है। इस प्रकार वर्तमान समयमें मनुष्य जीवनमें आत्मिक विकासके लिए कोई भी समय उपलब्ध नहीं होता है परन्तु वास्तविक सुख प्राप्ति हेतु अथवा मनुष्य जन्मकी साधकताके हेतु कर्म बंधनोंका क्षय कर अपनी अपूर्व निधीय प्राप्त करना आवश्यक है।

प्राचीन सम्पत्तामें आधुनिककी नितान्त विपरीततामें मनुष्यकी आत्मविकासकी ओर पूर्ण ध्यान था। इसी कारण उस समय जीवन

निर्वाह इतना सुगम था कि थोड़ेसे परिश्रममें ही मनुष्य स्वतंत्रता, पूर्वक आनन्दसे जीवन व्यतीत करता था और साथ ही साथ-शेष समयमें परमात्मोपासनामें अथवा अपने आत्म-विकासमें व्यय करता था।

जैनधर्मने मोक्षमिलायी जीवात्माओंके लिए दो तरहके चारित्रिक निरूपण किया है। (१) मुनि धर्म। (२) गृहस्थधर्म। मुनिधर्मकी विषमता और चारित्रिकी निमलता इसीसे विदित है कि उसमें उसी भवसे मोक्षप्राप्तिका प्रयत्न किया जाता है और गृहस्थ धर्म उन आत्माओंके लिए है जो मुनि धर्म-धारण करनेमें असमर्थ हैं।

अतः जैनधर्मका आधुनिक सम्पत्तासे संबंध होने पर किसी प्रकारकी भी क्षति उसके किसी अंगको प्राप्त नहीं हो सकती है सुतरां इससे उसको इस अपूर्णताका अभाव हो जायगा जिसकी कृपासे आधुनिक सम्पत्त समान आत्माको कोई बन्धु नहीं समझती और मनमाने पापाचरण कर इस भव और दूसरे भवोंमें दुःख उठाती है।

अन्तमें प्रिय पाठक ! आपसे जैनधर्मको वैज्ञानिक ढंगसे अध्ययन करनेका ही निवेदन है और यदि आप आत्माके वास्तविक उद्देश्यको ध्यानमें रखते रहोगे तो जैनधर्म ही उस उद्देश्यकी पूर्ति हेतु परमोत्कृष्ट मार्ग प्रदर्शित होगा। एवम् भवतु । *

ॐ शान्ति ! शान्ति ! शान्ति !

* चारु चंपतराय जैन चरित्रकी “What is Jainism” नामक टेपटका हिन्दी अनुबाद

स्वास्थ्य और स्वरोदय ।

स्वास्थ्यके साथ श्वास, प्रश्वासका घनिष्ठ सम्बन्ध है इस बातमें किसीको जरा भी सन्देह नहीं करना चाहिए । स्वरोदय नामक शास्त्रमें श्वास-प्रश्वासके सम्बन्धमें स्पष्टरूपसे आलोचना की गई है ।

श्वास लेनेके लिए और शरीरकी श्वासको बाहर निकालनेके लिए मानके दो नथुने बराबर काम किया करते हैं । परन्तु, दोनों नथुने एक साथ काम नहीं करते हैं । कभी दहने नथुनेसे और कभी बायें नथुनेसे श्वास ग्रहण किया जाता है । जब जिस नथुनेसे श्वास ग्रहण किया जाता है तब उसी नथुने द्वारा श्वास बाहर भी निया जाता है । अर्थात् एक समयमें एक ही नथुना श्वास ग्रहण करने और त्याग के कार्य किया करता है । साधारण रूपसे प्रत्येक नथुना ढाई दण्ड अर्थात् ढाई घड़ा तक चला करता है । श्वासके साधक लोग दिन भर बाया और रातको दाया स्वर चलाते हैं । दहने स्वरको सूर्य बागगा स्वर कहते हैं । बायें स्वरको चन्द्रमा व यमुना स्वर कहते हैं । दिनमें चन्द्रमा या यमुना स्वर चलनेसे शरीरमें सर्दी रहती है और रातमें सूर्य या गंगा स्वर चलनेसे शरीरमें गर्मी रहती है । ऐसा भी नहीं होता कि दोनों स्वर एक साथ कभी न चलें । साधक लोग जब दिन भर बायें और रात भर दायें स्वरको चला-नेके अभ्यास ही करते हैं तब कुछ दिनों बाद दोनों स्वर एक साथ चलने लगते हैं । योगी

लोग बायें स्वरको इडा दायें स्वरको पिंगला और दोनोंने सुषुम्णा कहते हैं ।

साधारण लोग यही जानते हैं कि दोनों नथुने एक साथ श्वास ग्रहण और त्याग किया करते हैं । परन्तु, यह बात साधनाके बिना प्राप्त नहीं होती है । एक ही नथुना श्वासको ग्रहण एवं विसर्जन किया करता है—ऐसा क्यों होता है ? इस बातकी किसी विज्ञानवेत्ताने आज तक खोज नहीं की और डाक्टरों अर्थोंमें व अन्यान्य किसी भाषाकी पुस्तकमें भी इस विषय पर कोई आलोचना नहीं की गई है । शारीरिक क्रियामें यह एक अतीव कौतूहलजनक और विशेष आवश्यक विषय है, इसमें सन्देह नहीं पान्नु इस विषयपर आधुनिक पड़ि-चोंने कुछ भी विचार नहीं किया है । इस विषयकी प्राचीन योगशास्त्र और स्वरोदय-शास्त्र ही व्याख्या करते हैं ।

शरीरमें गंगा प्रकारकी विचित्र आकृतिवाली सुविस्तृत नाडिया विद्यमान है । ये नाडिया नाभिसे नीचे मूलाधार नामक स्थानसे उत्पन्न होती हैं । शरीरमें चक्राकारकी समान प्राय दो तीन हजार नाडिया जालकी तरह सर्वत्र छाई हुई हैं । इस नाडीजालमें तीन नाडिया विशेष प्रकारकी हैं । इन्हीं नाडियोंको इडा, पिंगला और सुषुम्णा कहते हैं । जब बाया स्वर चलता है तब इडा नामक नाडी काम करती है और जब दाया स्वर चलता है तब पिंगला नामक नाडी काम करती है एवं जब दोनों स्वर मूल जाते हैं तब वायुको सुषुम्णा नामक नाडी साधित करती है । जिन प्रकार इडाको चन्द्र



और पिंगलाको सूर्य कहते हैं, उसी प्रकार सुषुम्णाको अग्नि कहते हैं ।

स्वरोदय शास्त्रमें व्याधियोंके साथ स्वरोका सम्पर्क भलीभांति वर्णन किया गया है । इसके सिवाय उसमें नित्यके कार्योंकी सफलता और असफलताको जाननेकी भी विधि लिखी है । किंतु यहां पर केवल स्वास्थ्यके विषयमें कुछ लिखा जाता है ।

यह बात पूर्व लिखी जा चुकी है कि साधारण लोगोंके एक नथुनेसे ढाई वंड तक श्वास चलता है, उसके बाद दूसरे नथुनेसे श्वास चलने लगता है और ढाई २० डके बाद फिर पहले नथुनेसे श्वास चलने लगता है । कभी ऐसा न हो तो जान लेना चाहिए कि रोगकी पहली अवस्था प्राप्त हो रही है । जो लोग अपने श्वासका ध्यान रखते हैं और नथुनेके चलनेका समय जानते हैं वे तुरन्त समझ जाते हैं कि समय पर नथुना नहीं बदला है और अब कोई निपत्ति अना चाहती है ।

योगशास्त्रमें लिखा है कि—' रोग उत्पन्न होते समय जो नथुना चल रहा हो अथवा जिस नथुनेके चलनेसे रोगका पूर्वाभास प्रकट हुआ हो, उस समय यदि उसको बंद कर दिया जाय और दूसरा नथुना खोल दिया जाय तो रोग तुरन्त दूर हो जावेगा । " बीमार अदमी जब आरोग्यता लाभ करता है तो उस समय भी स्वाभाविक स्वर चलने लगता है और विपरीत स्वर बंद हो जाता है । यदि इस विषयमें जानकारी हो तो रोगकी प्रथमावस्थाके गारम्भ होनेमें विपरीत । वरको रोक कर रोगसे छुटकारा पाया जा सकता है ।

यद्यपि योगशास्त्रमें उन रोगोंकी तालिका प्रकाशत नहीं की गई है जो अनुकूल स्वर चलानेसे दूर हो जाते हैं । परन्तु हमारा विश्वास है कि अधिकांश रोग, श्वास-विज्ञानकी सहायतासे निवृत्त नहीं आ सकते हैं । हम नीचे उन रोगोंका वृत्तान्त लिखते हैं कि जो हमारे और हमारे मित्रोंके अनुभवमें आ चुके हैं । इसके बाद यह बात लिखी जायगी कि श्वास किस प्रकारसे बरूना जाता है और नियमित समय तक कैसे स्वर चलाया जा सकता है ।

हमने कई बार आजमाया है कि प्रचल मरतक पीड़ा, आघासीसीका दर्द, ह्रारत, सामान्य ज्वर, अनीर्ण और श्वास सम्बन्धी रोग इससे आश्चर्यके साथ पूर्णरूपसे आराम हो गये हैं । श्वास रोगके लिए तो यह प्रयोग रामराज साबित हुआ है । प्रचल श्वास रोगके समय जब रोगी जलमग्न व्यक्तिकी तरह प्राणोंसे व्याकुल होता है, यदि उस समय नासिकाका स्वर बदल दिया जाय तो वह दस पन्द्रह मिनटमें ही भला चंगा हो जाता है ।

हमने रोगोंको दूर करनेमें तीन प्रकारकी क्रियायें व्यवहृत की हैं । नीचे क्रमशः उनका उल्लेख किया जाता है:—

(१) नासिकाके जिस नथुनेसे श्वास चल रहा हो, यदि उसी पार्श्वसे लेटा जावे तो श्वास बदल जावेगा और दूसरा स्वर चलने लगेगा । यदि बायें नथुनेसे श्वास चल रहा हो और उसीके कारण कोई कष्ट उत्पन्न हुआ हो तो बायें कंधेसे लेट रहनेसे दायां स्वर खुल जाता है किन्तु क्रिया २, अवसर पर ऐसा करनेसे



भी स्वर नहीं बदले तो उस अवस्थामें अन्य उपाय करना चाहिए । यथा—

(१) चलते हुए नथुनेको रुईसे बंद कर देना चाहिए । किन्तु मुखसे श्वास कदापि न लेना चाहिए । यदि रुईका व्यवहार न करके हाथकी अंगुलियोंसे नथुनेको बंद कर दिया जाय तब भी काम चल सकता है । ऐसा करनेसे दो तीन मिनट तक कष्ट होनेकी सम्भावना है । परन्तु दूसरा स्वर खुल जावेगा और क्रमशः रोग घटने लगेगा ।

(२) प्राणायामकी सहायतासे स्वर बदल जाता है । प्राणायामके संबंधमें लिखनेसे प्रसन्ध बहुत बढ़ जायगा । अतः यहाँ पर केवल प्राणायामकी सिर्फ चर्चा किया बतलाई जाती है कि जिससे स्वर बदला जा सकता है । जिस नथुनेसे स्वर चल रहा हो उसको बंद करके दूसरे नथुनेसे श्वास रींचना और छोड़ना चाहिए । अथवा इस प्रकार समझना चाहिए कि दायाँ स्तर बंद करना है तो दायाँको हाथसे बंद करके बायें नथुनेके द्वारा वायु रींचना और छोड़ना चाहिए । दायाँसे श्वास रींचकर बायेंके द्वारा निकालनेसे भी काम चल सकता है । फिर बायेंसे श्वास रींचकर दायाँके द्वारा बाहर करना चाहिए । इस प्रकार करनेसे भी अनुकूल स्वर चलने लगता है । यद्यपि श्वासके रोगियोंकी नथुना बंद करते हुए बड़ा कष्ट होता है तथापि उनको उपरके प्राणायाम द्वारा दोनों नथुनोंकी सहायता लेते हुए अनुकूल स्वर चालित कराना चाहिए । यदि दायाँ स्वरके कारण मस्तक पीड़ा और मूत्र दुर्लभ हो तो बायें स्वरसे श्वास ग्रहण

करना चाहिए और दायाँ स्वरसे त्याग करना चाहिए ।

सूर्यस्वरमें भोजन करनेसे अजीर्ण उत्पन्न नहीं होता है । भोजन करनेके पश्चात् बाईं करवटसे लेटना चाहिए, जिससे सूर्यस्वर चलता रहे । अजीर्णके रोगियोंको सूर्यस्वर चलाकर वायुको तेजीके साथ ग्रहण और त्याग करना चाहिए ।

स्वरोदयकी सहायता हीसे योगी लोग रोगोंको अपने निकट नहीं आने देते हैं । स्वरोदयके विषयमें अधिक ज्ञान सम्पादन करनेके लिए शिवस्वरोदय नामक शास्त्र अवलोकन करना चाहिए । स्वर विज्ञानके आधिपत्यकी प्रोफेसर शिवजी हैं । लोगोंके लिए मृत्युका प्रश्न एक ऊटल प्रश्न है, परन्तु स्वरोदयसे मृत्युका सारा भेद खुल जाता है । अपनी मृत्युके विषयमें तो तुरन्त ज्ञान हो जाता है । मृत्युके पंजेसे बचनेका भी उसमें उल्लेख है ।

प्रातःकाल उठ कर देखना चाहिए कि कौनसा स्वर चल रहा है । यदि दहिना स्वर चलता हो तो शरीरमें गरमीकी अधिकता समझनी चाहिए । उसी समय शीतल आदि कोई शीतल पदार्थ पान करना चाहिए । प्रातः समय उठते ही व.मौ स्वर चलना चाहिए । यदि दायाँ स्वर न चलता हो तो उपर्युक्त क्रियासे स्वर बदल देना चाहिए ।

यदि पचनेमें भारी पदार्थ दायाँ स्वरमें और लघुपाकी पदार्थ बायें स्वरमें खाये जायें तो शीघ्र ही पाचन होता है । गुर्दे और मसानेके रोगोंमें बाया स्वर एवं निगर व आमाश्रयके रोगोंमें दायाँ स्वर चलाना चाहिए । जब



की अवस्थामें सदैव चन्द्र (बायां) स्वर चलाना चाहिए । किन्तु आमाशय शुद्ध होना चाहिए । यदि हृदयका कोई रोग न हो तो रातको सूर्य (दायां) स्वर चलाना चाहिए । सूर्य स्वर चलनेसे फेफड़ोंकी शक्ति प्राप्त होती है और बायां अर्थात् चन्द्रस्वर चलनेसे फुफ्फुसकी शक्ति पहुंचती है ।

यदि दिनभर बायां स्वर और रात भर दायां स्वर चले तो संदेह आरोग्यता रहती है । हमारी रायमें इसी बातका अभ्यास करना उचित है ।

योगी लोग गरमीके समय चन्द्रस्वर चलाकर और सर्दीके समय सूर्यस्वर चलाकर, यक्यायक पड़ने वाली गरमी और सर्दीसे अपने शरीरका बचाव किया करते हैं । 'चैद्य'से उद्धृत ।

❖ उपयोगी शिक्षाएं । ❖

(१) सदा ही संचरे उठकर पंच परमेष्ठियोंके गुणोंका चिन्तन करो ।

(२) विना जिनेन्द्र देवके दर्शन कभी न रहा करो ।

(३) जिनेन्द्र देवका पूजन स्वर्ग मोक्षका साधक है इसलिये नित्य ही जिनेन्द्र देवका पूजन किया करो ।

(४) शास्त्र स्वाध्याय प्रतिदिन किया करो क्योंकि इससे ज्ञानकी वृद्धि और बुद्धि तीव्र होती है ।

(५) जमोकार मन्त्रका जाप नित्य ही श्रद्धा-युक्त करना चाहिये ।

(६) अष्टमी चतुर्थी पर्वमें इकात (एकवार आहार) करना चाहिये वा उपवास (भिलकुल न खाना) करना चाहिये ।

(७) हिंसा चोरी झूठ कुशील और परिग्रहकी बाज्जा ये पांच पाप सर्वथा छोड़ देना चाहिये क्योंकि इनके द्वारा इस लोक और परलोक दोनोंमें दुःखी होना पड़ता है ऐसा शास्त्रका कथन है ।

(८) सात व्यसन याने जुवा, मांस, मदिरा बेइया, शिकार, चोरी और पर स्त्री रमण ये सात व्यसन हैं—और पांच उदम्बर याने बड़ पीपर पाकर कट्ठमर (अंजीर) और गूलर, ये पांच उदम्बर हैं । तीन मकार याने मद्य मांस मधु इन-आदिका त्याग करना ही उचित है क्योंकि कि इनके त्याग बिना जैनी नहीं कहला सके ।

(९) जीव मात्र पर दया रखना, धर्मकी रक्षा करना है ।

(१०) सबके प्यारे बनना, किसीकी दृष्टिसे बुरा नहीं होना चाहिये ।

(११) बड़ोंका आदर उठना चाहिये ।

(१२) समयकी व्यर्थ नहीं खोना चाहिये ।

(१३) सदा पापोंसे डरना चाहिये ।

(१४) किसीकी भी प्रोक्ता नहीं देना चाहिये ।

(१५) किसीको अपना दुष्मन नहीं बनाना चाहिये ।

(१६) धनको व्यर्थ नहीं लुटाना चाहिये ।

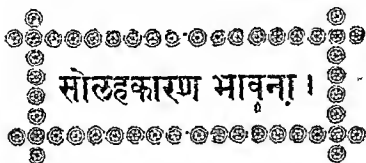
(१७) धर्म कार्यमें धन लगानेके लिये कृपणता धारण नहीं करना चाहिये ।

(१८) असत्यता कभी नहीं धारण करना चाहिये ।

(१९) तन मन धन लगाकर विद्याका प्रचार करना चाहिये ।

(२०) ज्ञानकी वृद्धि करना चाहिये और ज्ञान हीको अपना परम मित्र समझना चाहिये ।

विद्यार्थी टीकाराम, कदंगी ।



सोलहकारण भावना ।

(लेखक—प० गोरलाळ जैन, रेपुरा, पन्ना)

दोहा- नमूँ पंच परमेष्टि पद. मन बच ध्यान लगाय ।

सोलहकारण भावना, रचू स्वपर हित दाय ।

(चौपाई)

प्रथम 'विशुद्ध' भावना सार । ताको रूप सुनो चित धार ।

सप्त तत्व भाषे भगवान । तिनको कर निश्चय श्रद्धान ॥

सत्य आप्त गुरु अथ पुनीत । इनसे कीजे मन बच प्रेत ।

'शंका'दिक बसु दोष निवार । प्रथम भावना मानो सार ॥ १ ॥

विनय सहित आदर सत्कार । करो सदा निज कपट निवार ।

कही विनय जिन पंच प्रकार । ताको कभी न भूलो यार ॥

दर्शन ज्ञान चारित्र्य बखान । तप उपचार विनय सुख दान ।

तिनकी विनय कसो चितलाय । यही 'विनयसम्पन्नता' आय ॥ २ ॥

अहिंसादि व्रत पांच गहीजे । दोष रहित व्रत शील लहीजे ।

क्रोधादिक कषाय दुखदाई । इनको दमन करो मन लाई ॥

निज त्रिषमै सन्तोष संहार । मन बच त्याग करो परनार ।

शीलामूषण पहिरो अङ्ग । पाले शील वनेषु अभङ्ग ॥ ३ ॥

जगमें सार वस्तु है ज्ञान । इसके सम नहि और सु आन ।

ज्ञानन नाम तासको सार । ज्ञाननमें निज चितको धार ॥

यही परम-उपयोग महान । तत्व अभ्यास करो धर ध्यान ।

यही चतुर्थि भावना सार । ज्ञानोपयोग अभीक्षण धार ॥ ४ ॥

जगके विषय भोग दुखदाई । तिनको सेवत होय बुराई ।

यह तन विनासीक है भाई । मिसको पोषत मीत लगाई ॥

जगके कितने हैं सम्बन्ध । निजमे होय कर्मको बन्ध ।

पामे धर्म विषे कर मीत । यह 'सम्बन्ध' भावना मीत ॥ ५ ॥



स्त्री०—लगा पाद वर्षातका आगमन । किलोले पंछीगन मिल चमन ॥

विदेशी सज्जन भी सिधारे सदन । रहे नारी वर साथ अदालिकन ।

पु०—करे वास क्या उच्च अदालिकन । छः खंडी नाहि चौशासी खन ॥

लगे काल व्यारी गिरै तरु चमन । धरम, देव, गुरु, शास्त्र विनको 'शरण' ॥ पि० ॥ १॥

स्त्री०—ए सावनकी यामिन सुझानी पवन । हिलोरे घट, मेघ लागे झरन ।

झुलाउं हिडोला तुम्हें अब सजन । मरु राग तो संग यही आवे मन ॥

पु०—हिडोला नगत यह अनादी निषन । लगी दोय डोरी जे 'आवागमन' ।

चलें झुक्वा चहुंगति लगे विध पवन । मरु राग 'सोह' स्वयं ना विषन ॥ पि० ॥ ३॥

स्त्री०—न भादोंमें पंछी भी छाड़े सदन । रहे नारी नर दोनों हिलमिल मगन ।

अंधेरी झुके घोर कर वरसे धन । हुए एक जल, थल करो किम गमन ॥

पु०—अकेला करे चारो गतिमें गमन । सके रोक अंधेरी न जल थल न धन ।

“अकेला” सहे दुक्ख जन्मत मरन । चलें संग सन धन न पुरजन सुजन ॥ पि० ॥ ५॥

स्त्री०—चले सीत पावस ग्रीष्म पवन । जनावे सुखासौन सीनों रितन ।

जड़ी नारी बहु फूलें अद्भुत पवन । मिले क्षीर जल सम तियामीत मन ॥

पु०—मिले क्षीरजल, तेलतिल, रंग पतन । त्यो ही तनमे चेतन सुगंधी सुमन ।

सबै द्रव्य “न्यारी” निराले गुनन । धरे परजय न्यारी, लखो निज श्रुतन ॥ पि० ॥ ७॥

स्त्री०—खिले चंद्र कातिक है निर्मल गगन । सुगंधे मले सब सजावें सदन ।

मनावें दिवाली भरे मोद मन । करे मोद मन । करे घृत क्रीड़ा, रमावो रमन ॥

पु०—नसावें सुगुनधन, फसावें दुखन । मलिन घृत क्रीड़ा करे ना सुजन ।

सुगंधे करे सब, अपावन येतन । “अशुचि” जान साते न राखे रमन ॥ पि० ॥ ९॥

स्त्री०—लगा शीत अगहन, पवन, जो गहन । खुले प्रेमके द्वार चारो लतन ।

धनी मीति धरे सबै बसन । लगावें धनी त्यो धनसे लगन ॥

पु०—खुले दर सदाचार ऊपर धवन । मिथ्या त्यागे अवृत कपाया 'श्रधन' ।

करे कर्म इन द्वारसे आक्रमन । टुटे डोरी, ममता, छुटे जग धमन ॥ पि० ॥ ११॥

स्त्री०—परै १५ पाला लौ तन गरन । रहे संग बाला, बसे सज मन ।

महा रैन हेमंतमें भोगी जन । रहे डारि परदा सवे निज दरन ॥

पु०—समित गुंति घृषाचार परिमा भवन । लगा डाह 'अंधार' जे आश्रव दरन ॥

रहे रैन हेमंतमें इम गतन । मिटे प्रीति भोगनको मय कडहरन ॥ पि० ॥ १३॥

स्त्री०—परै माह सर्दी पे दर्दी सजन । रहे दिख न गर्दी पे दर्दी दुखन ।

रंग रंग जर्दी नगावें मरन । फिरें सूर पीछे वसंता गगन ॥

पु०—करें ध्यान वृद्धी बसंती पवन । धैर्य भाव शुद्धी न व्योप मदन ।

जगै सर्व रिद्धी हँरे सत्र दु खन । जे अविपाक 'निर्जर' है सिद्धी करन ॥पि०॥९॥

स्त्री०—मिलैं फागमें शत्रु अरु मीत्रगन । यही लोक रीति उल्लेख कवन ।

तमो हठ विपन, धारो अनुराग मन । चलो फाग खेलन सजन रग भवन ॥

पु०—उतंग राज चौदा विज्योयत बलन । स्वयं सिद्ध कर्ता न हर्ता कवन ।

मेरी 'डैड मूरज' दिख खट रंगन । फिरे जीव हुरिहाली चौश भुवन ॥पि०॥१०॥

स्त्री०—तनो चेत चिंता मेरे मन हरन । मिलैं भोग-भागन विषय सुख करन ।

तजै गोदका क्यों उदर लालसन । कहाँ सुख नर सम सुरग त्रदशन ।

पु०—ये सच है मनुष्य भव मिलन अति कठन । सुकलथल कठन 'योध दुर्लभ' मिलन ।

करै आप तन मन वचन अनुभवन । यही ऊंचपन देवसे नरसुखन ॥पिया०॥११॥

स्त्री०—त्रपा रोग बाँधे लगे ताप तन । विकल होउ मम याद आवैं वचन ।

छ' दर्शनमें भावे सुकीजे ग्रहन । करो उग्रप्रत दान गृहाचरन ॥

पु०—जे वैशाख दर्शन छ. भावें नमन । विषय पोषक हिंसक परिग्रह धरन ।

दरव तत्व दर्शाय शिवमग करन । अहिंसामई एक 'जिनधर्म' गन ॥पि०॥१२॥

स्त्री०—करो छौदमें न्याय मेरा सजन । चले छोड़ किसपर हो करना धरन ।

पराधीन परजाय हम दुख मरन । करै आस किसकी, यतावो जतन ॥

पु०—शुभाशुभ सबै व्यापैं अपने-रसन । मिलैं सुख इनको करै जब दहन ।

घरम आसकर पालो सदै आचरन । यों समझाय मन सुख चले फिर विपन ॥१३॥

सोरग

नारी करत विचार । परवस भव भव दुख भरे ।

निज नस कियो न काज । विकल्प तन त्रत आदरे ॥

कामताप्रसाद पी० जैन-अष्टीगन ।

“ जैनविजय ” प्रेस-सूक्त ।

हमारे इस प्रेसका डेक्लरेशन हमारे नाम पर होगया है और अब हम प्रेसके अकेले मालिक हैं । स्टाफ भी बढ़ाया है और समयपर काम तैयार कर देनेका नवीन प्रबंध किया है इसलिये अंग्रेजी, गुजराती, हिन्दी किसी भी टाईपमें कार्ड, कवर, नोट-पेपर, बिल बुक, रसीद बुक, हिसाब, रिपोर्ट, मासिक, पुस्तकें, चित्र आदि छपवाना हो तो हमसे अवश्य पत्र व्यवहार कीजिये । पुस्तकाकार ग्रन्थ भी हमारे यहाँ छपते हैं ।

निवेदक—मूलचन्द किसनदास कापड़िया

मालिक और मैनेजर 'जैनविजय' प्रेस-सूक्त ।

वांदा-से बुंदेलखंड जैन संस्थान अंग्रेजी स्कूलके मंत्री राजाराम लिखते हैं कि इस स्कूलमें जैन अनेक विद्यार्थी अंग्रेजी, संस्कृत, धर्म-शिक्षा तथा हिन्दीका ज्ञान प्राप्त कर रहे हैं परन्तु द्रष्टाकी बहुत कमी है इस लिये धनवानोंको मैं अपील करता हूँ कि इस स्कूलके लिये वषाशक्ति सहायता भेजे ।

नागपुर प्रांतिय-खंडेलवाल समाके शिक्षा विभागको ३९१७३की सहायता मिल चुकी है ।

सेठ पद्मराज रानीवाले-कष्टकता नई कौंसिलके लिये उम्मेदवार थे परंतु असहकारके कारण आपने अपनी उम्मेदवारी वापिस ले ली ।

बीर निर्वाण साचित्र खास अंक ।

इस वर्ष हम विशेषांक नहीं प्रकट कर सकें थे, परंतु आगामी नवीन वर्षके प्रारंभमें साचित्र खास अंक प्रकट करनेका निश्चय किया है इस लिये सुत लेखकोंको हिन्दी, गुजराती, अंग्रेजी तथा मराठी भाषाके लेख और कविताएँ १९ दिनके भीतर भेजनेके लिये सादा आमंत्रण करते हैं ।
मैनेजर ।

चित्रशाला ।

साचित्र अक्षबोध पुस्तक मूल्य ॥) आने, साचित्र जणपाठाके रंगीन ताश ॥) आने; साचित्र वर्णमाळाका रंगीन नशा ॥) आने ।

इन तीनोंके द्वारा बच्चे बड़ीही सुगमतासे अक्षर पहचानने और खेते कूदते पढ़ने लग जाते हैं ।

स्वर्णीय छोटवानय तिलक महारामके रंगीन चित्र-बड़ा साइज १५×२० मू० ॥) आने । मझोला साइज १०×१४ मूल्य डेढ़ आना । छोटा साइज ५॥×६ मूल्य दो पैसे ।

हिंदी "चित्रमय-जगत" ?

एक उच्च बोदिका साचित्र मासिक पत्र । बहिया लेख-कविताएँ और मनोहर कहानियाँ । वर्ष भरमें १०० चित्रोंका संग्रह । वार्षिक मूल्य ग्रेडन कागजके ५॥), एक प्रति ॥-) । रफ कागजका २॥) एक प्रति ॥-) ।

व्यापारियोंको कमीशनके लिये परव्यवहार करना चाहिए ।

आगामी चित्रमय जगत

१९३३ प्रथम आय छे

१९३३, चित्रशाला प्रेस-पूना मिदी ।

द्वितीय जन

सपादन-मूलचद किसनदाम कापडिया-सुरत.

विषयानुक्रमणिका

विषय	लेखक	पृष्ठ.
१ दृष्टि निम्न (दीशालाके उपर्यगमे)		१
२ मन्नादकीय यत्तव्य	...	२
३ जैन समाचार अग्रद		५
४ वृत्तसेवुग गतिने पु वृत्तद षालो छे ?	..	७
५ मित्र-समाचार (नस्टर दीपवद पाचार)		९
६ धनधान्योमे विनय (५० गारिनाल चैन)	...	१७
७ हमरी चादिये		१८
८ रयशक पव और ममाज सुधार (५० नदनवाल)		१९
९ न भावना (देगपल वि० वरीदा)		२०
१० आवदरक विदन (छोपल पाचार)		२१
११ मोड (१० नदनमच चैन)		२३
१२ वृत्त मापने लाक वय (वेव)	..	२६
१३ म भाचारा (कायनाप्रमार जैन)		२७
१४ हमारा गति (हमोदाल जैन)	..	२९
१५ वृत्तसेवुग गति (विश्ववी दीशाला जैन)		३२

गीत २४४

आशिन

वप १३ वा

अक

ગુજરાત હિંદુ જૈન પ્રાંતિક સભા ની આરમ્ભી વાર્ષિક બેઠક જામનુડી (અમનગર) માં ગડીયા પ્રદેશર કાળીદાસ (આમણવાડ) ના પ્રમુખ-પણા નીચે કાર્તિક વદર પર ચનાર છે. વોલંટિયર ચનારે મંત્રી સુનીલાસ સાંકર્યાંદને પેથાપુર લખવું.

દિવાળીમાં શુ' કરશે—એ ખાખત બાધ-બંધ 'જૈન' (આમનગર) ની સુચના સ્પષ્ટ છે. એ પત્ર લખે છે કે—(૧) ધનતેરસ (ધેતુતેરસ) ને દિને ગાયેતો આદર કરી તેને ઉછેરવા અને પાંજરાપોશામાં તેની સુધારણા કરવા પ્રતિજ્ઞા લેશે ને બને તો ગાયેતો પ્રદર્શન ભરી સારાં દોર ઉછેરનારને ઉત્તેજન આપશે. (૨) કાળીચૌદસને દિને કાળને પછુ ગળી ગયેલી કાળ રૂપ રહ્યા અને હોટલના દરેક પાણીપાણાના બ્રહ્માચારથી બચી જવા નિશ્ચય કરશે અને દેયું ખાળનાર તથા પૈસાનું પાણી કરનાર ખીડી, હુકમ મિચટ, સિગારેટનો પ્રતિજ્ઞાપૂર્વક ત્યાગ કરશે. (૩) ફરાકડાને છડંદ-રામાં રહેલા બપથી બચવા અને નિરર્થક જગત તે માટેનું દ્રવ્ય બચાવવાને "ફટ" કરનારને છોડી દેશે ને આત્મ પ્રકાશની દીપમાળા પ્રકાશશે. (૪) બેસતું વંર નિર્વાણ નવું તર્ક સ્વદેશભેગ અને સ્વદેશીનાં વ્રત આદરી સ્વાશ્રમી ચલે.

રાય દેશની પંચે—હરાવ છોં છે કે વિવાદ દીઠ ૨૦) કમનર વગેરે માટે કાદવા વિવાદમાં પંચ ન જાય ને નકામો ખર્ચ બંધ કરવો, જન ચાર દિવસ રહે અને થી ૧૫ તથાને બદલે તથા મુજ વાપરવું વગેરે.

છડર—માં પર્યાય પર્વમાં જાં શાંતિસાગ-રણએ એક માસના ઉપવાસ આનિપૂર્વક ક્યાં દત્તા

શુ'બાધ—ની જુના મંદિરની પાડશાલાના ૧૨ વિદ્યાર્થીઓને શ્રેડ. લુખકરણએ હાથે હનામ વેચવાનો પ્રેસાવોડા થતો હશે.

સેણવાની—પાશાલા જમ પડી છે તે સાથુ થવાની જરૂર છે.

વડોદરા—ની વીસામેવાડા પંચે એવો હરાવ છોં છે કે ૨૦ વર્ષની ઉમર સુધીનો મૃત્યુખરચ કરવો નહિ. તેમજ કેટલાકે ૩૦ તથા કેટલાકે ૪૦ વર્ષ સુધીનાનું મૃત્યુખરચ નહીં જમવા નિયમ લીધા છે. ખરી રીતે જોતાં એ દિવાળ શરબ્યાત કાઢી જ નાંખવો જોઈએ ને ૫૦ વર્ષ સુધીનાનું તો નજ જમવું જોઈએ. ગુજરાતમાં દરેક પંચે શરબ્યાત મૃત્યુખરચ બંધ કરવાની તથા ૫૦ વર્ષ સુધીનાના ખરચમાં ન જમવાની પ્રતિજ્ઞા લેવી જોઈએ.

તિથિદર્પણ—નવીન તિથિદર્પણ ગ્રાહર્ષોકો કુહ દેરસે પદ્મચેગા હસ લિયે દો માહકી તિથિકી વચચટ યદાં પ્રકટ કરતે હૈં—કાર્તિક સુદીમે ૭ દો બુધગુરુકો, તથા પુદી ૧૪ કય હોનેસે બુધવારનો હૈ ! કાર્તિક વદી (મારવાહી મગસર વદી) મેં સવ તિથિ વાચર હૈં । મગસર સુદીમે મી સવ વરાબર હૈં પરન્તુ વદી (મારવાહી પૌષ વદી) મેં ૪ કા કય હૈં ઔર ૧૬ દો હોનેસે ૧૪ શુક્રવારકો માનનેકી હૈં ।

દોવાલી ઔર અષ્ટાનિકા પર્વ

કે લિયે

અવજ્ય મગાડ્યે ।

દશાંગ ધૂપ	૨૥) રતલ
અગરકી અગરવસ્તી	૨) "
સુગંધકાં "	૧) "
સલાઈપર પતલી અગરવસ્તી	૪) "
કાઝમારી કેશર	૧૥) તોડા
હાફક પ્રદારકે તેંડ, રૂપ, સોનેં વાંદીકે વાક	
અદિ મિત્રનેકા પત:-	

સરૈયા વ્રધર્મ જૈની-મુરત ।

दिगंबर जैन.

THE DIGAMBAR JAIN.

नाना कलाभिवैविध्यश्च तत्तैः सत्त्वोपदेशैस्तुगवेषणाभिः ।

सबोधयत्प्रामद प्रवर्तताम्, दैगम्बर जैन समाज मात्रम् ॥

वर्ष १३ वॉ.

वीर संवत् २४४६. आश्विन. विंशत स० १९७६.

अंक ६.

द्यूत-निन्दा

(दीपमालिकाके उपलक्ष्यमें)

देखो दीपमालिका शुभ दिन, पाठक ! आनेवाला है ।

महावीरका मोक्ष दिवस यह उत्तम तथा निगला है ॥

इस दिन सर्व धर्मके प्रेमी धर्म चिन्तन करते हैं ।

निम्के अतिशय उत्तम फलसे विन प्रीति मय तरते हैं ॥१॥

शोक ! शोक !! अति महाशोक ! अब विन्नु सोच यह होता है ॥

खेद इस दिन जुआ कि निम्के हृदय ज्ञानका कोटा है ॥

धर्म समयमें इस अनर्थसे जो नन सम्पत्ति खोने हैं—

वह पापी जन बिना सम्पत्तिके लेकर दुःखिन रोते हैं ॥२॥

निन्दनीय यह रोग जगतमें भ्रमणतासे फैल रहा ।

अनि सति कीर्ति इन्ने उसका हाल न हम पा नत कहा ॥

बड़े बड़े नृप सम्पत्ति खोकर इसके कारण नष्ट हुए—

देखो, जुआ खेलने कारण नरको कैसे कष्ट हुए ? ॥३॥

जुआ खेलने कारण ही औ पण्डित भिक्षुक बने फिर—

इस पर कुछ भी ध्यान न देकर खेद ! अज्ञता महि धो ॥

निम्के कारण जुआ खेद कर हा । हम मूढ कहते हैं—

निन्दनीय औ हमसे जाते अन नरकको जते हैं ॥४॥

क्योंकि—मूढ यह सत्यजनक शस्त्र मध्य यह विद्वत्तिया

और धन—प्रिय जनको जिसमें सचने पापी बना दिया ॥

इसमें सिद्ध हुआ है यह अनर्थ शास्त्र प्रतिकूल सदा ।

क्योंकि—उमका घतक यह है और नाशका मूढ सदा ॥५॥

इसी हेतु ही ज्वारी जनका अति अदर घट जाता है ।

पितृ अरु मातृ बन्धु सुन बनिना प्रियसे मिथ्या नाता है ॥
अरु विश्वास न उसका रहता निर्धन दर दर फाता है ।

विषिष कथाधियों तथा शोकमें सदा सर्वदा पिरता है ॥६॥
इससे पठक ! तुम्हें उचित यह जुभा न खेचो भूछ कमी ।

"क्योंकि बुग है जुआ खेचना जानत हूँ यह मनुन समी ॥
जुआ दुर्व्यसन यह है ऐसा जैसे पदिग बुगी सुनो—

पंते पहिले थोड़ी थोड़ी फेर बहुतसी हिये गुनो ॥७॥
इन म्ही जुआ खेचते थोड़ा फिर पड़ जाती चूँट बड़ी—

इसकी ग्रन्थ फेर अन वैषनी नहीं छूती होत कड़ी ॥
इससे तुम्हें उचित है नित ही इसका बिलकुल त्याग करो

धर्म दिवसमें प्रभु चिन्तन कर अपना उज्ज्वल पाग करो ॥८॥

निवेदक—**वा० सुत्रालाल जैन शिक्षक, अमरा (झाँसी)**



रह बात छिपी नहीं है कि हिन्दुमें लगातार
हिंसाके प्रचारसे मन को
अहिंसाके प्रचार-प्रधान कष्ट हो रहा है
रका प्रयत्न । और अहिंसा धर्म पर
बड़ा आघात पहुँच रहा
है क्योंकि मद्य, पांव, चमड़ा, शिकार, बलिदान
आदिके व्यापारसे देश इतना घनहीन हो रहा
है कि मविन्दमें शायद दुष घी भी खानेवा न
मिळे । यद्यपि रतौनामें बस ईशानकी कम्पनी
सरकारकी सहायसे खुल बाज़ी थी उनका जो
विरोध होनेपर सरकारने यद्यपि कम्पनीका पट्टा

रद्द कादिया है तौमी मध्य प्रांतमें ऐसे भी
चमड़ा और मांसके लिये अनेक स्थानोंपर बहुत
ही जीव दिसा होती है । अहिंसा प्रचारके
लिये उद्योग हो रहा है परन्तु वह जितना
चाहिये उतना नहीं है न ऐसा कोई समाचार
यत्र ही प्रगट होता है जिसमें लगातार अहिंसा-
का उपदेश सारे देशमें फैलता रहे । आनकठ
हिन्दी भाषा देश व्यापी हो रही है इसलिये
यदि हिन्दी भाषामें ऐसा कोई पत्र प्रगट हो तो
छाप हो सके ऐसा विचार होनेपर अमान
ब्रह्मचारी ज्ञानानन्दजी (पं. उम-१५) निहजी
न्यायतीर्थने कत्रासे नागर प्रयत्नकिया जिनसे
तुर्न ही 'अहिंसा प्रचारण' समा' स्थापित हो गई
है और वरिच ४०००)की सह सहा भी मिली



है तथा सपाके स्थाई समासद १०१) लेकर और चालू समासद वर्ष १) लेकर बनन निश्चि। हुआ जिसमें बहुतसे स्थायी औ चालू समासद हुए हैं और अब इस समाकी ओगसे 'अहिंसा' नामक समाहिक पत्र काशीसे प्रकट करनेका निश्चय होनेपर उसकी कार्रवाई प्रारम्भ हो गई है और नवीन वर्षके प्रारम्भसे यह पत्र प्रकट होनेवाला है । इसके लिये ब्रह्मचारीजीने जो सच्चिन् विज्ञापन ज्ञाये हैं वे आशय देखने और मनन करने योग्य हैं । उसका एक छंद इस प्रकार है—

दयाधर्म धारक सन्नन नन, जगसे करदो
हिंसा दूर। धर्म बरानर रुविर धारक, सागर उमड
रहा मापुर ॥ रंग रुचिरमय लाड हाडमय, औपचि
जो चरबीसे दूर। जिन बीनोंमें चर्म लगा हो,
उन सवपर तुम डारो धूर ॥

इन कविताका भव क्या ही मनोहर है ? आशा है अहिंसा पत्र भी बहुत ही अ रुचक होगा । इस पत्रका वार्षिक मूल्य ३॥) है । समासदोंको बिना मूल्य मिलेगा । हम हमारे पठकोंको आग्रह करते हैं कि वे अवश्य इसको मगावे और विशेष वाचियें मगाकर मुफ्त राटे । धनिकोंको १०१) देकर स्थयी और साधारणको १) देकर चालू समासद हो । चाहिये ।

पता—ब्रह्मानन्दजी

स्थाव्याद महाविद्य उप-शास्त्री ।

लग्न तो कन्याका होता है और जैन शास्त्रमें वन्यके लग्नकी विधि लग्न किसका है । कहींपर भी विधवाके होता है ? लग्नकी विधि है ही नहीं तो भी अभी बम्बईमें

दशहराके दिन जो विधवा लग्नकी कार्रवाई हुई है वह अतीव अश्रय जनक और बीसवीं शताब्दिका नया ही आविष्कार समझा जायगा । हमारे पाठक विचार करने लगेंगे क्या यह सत्य है ? हा असत्य है । हमारे एक खण्डेडवाल पंडित उदयलाल बासलीवालने कई महिनोसे एक बालविधवा ब्राह्मणीकी पत्नी रूपसे रख ली थी !!! और उसके साथ आसोज सुनी दशरामको जैन विधिवे विवाह किया है ! विवाहकी विधि पं० अर्जुनलालनीने की थी और बरके पिताका काम समान सुधारक !!! बाडीलाल मोतीलाल शाह (स्थानकवासी जैन) ने किया था । हमने सुना है महा कहीं ऐसा खिान है बहा विधवाका धरेना होता है न कि लग्न, ता पं० अर्जुनलालनी आदिने कहासे विधवा लालकी जैन विधि निकाली ? दान तो कन्याका ही होता है न कि विधवा का । सेडोजीसे हमें जो आशा थी उसपर पानी फिर रहा है । और पं० उदयलालनीने पंडित होकर यह अजीब अनुचित और धर्म विरुद्ध कार्य करके जैन पंडितोंके नामपर नट्टा लगाया है ।

* * * *

हमारे पत्रपुन्य अन्तिम तीर्थंकर श्री महावीर स्वामीका निर्वाण दिन- दीवाली और श्री दिवाली पर्व आ नूतन वर्ष । गया है । यह पर्व इतना

देहली अनाथाश्रम-का वार्षिकोत्सव ता० २३-२४ दिसम्बरको होगा ।

पद त्याग-चौ० गोवलचन्दजी दयोहने असहकारके बाण अना रायराइवद्धा पद छोड़ दिया । देहली निवासी रा० सा० लाला प्या-रेलालजी तथा पदमराजजी रानीशलेने बौत्सेलकी मेम्बरी भी छोड़ दी ।

जवलपुर-में जैन कन्या पाठशाला तो है ही और अभी जैन महिला पाठशाला तथा जैन महिला बोर्डिंग भी स्थापित हो गया । बम्बई श्राविकाश्रमकी दो महिलाएँ वहाँकी फिमेउ ट्रेनिंगकालेनमें प्रवेश भी कर आई हैं ।

रतनपुरी-अयोध्याजीके पास मुहाबल स्टेशन है वहाँसे एक मील पर नोराहीगांव है जिनको पहले रतनपुरी कहते थे जहाँ श्री धर्मनाथ स्वामीका गर्भ-जन्म कल्याणक हुआ था । यह स्थान प्रसिद्धमें नहीं है इस लिये अब मालू-पटने पर यात्रियोंको रतनपुरीकी यात्राका लाम भी लेना चाहिये ।

हुष्कालमें सहायता-पुरी (उडीसा)-में बड़ा भारी हुष्काल है । वहाँ बाबू सतीचन्दजी दि० जैन सुप० पुलिसने उद्योग करके अनाया-लय और अन्नक्षेत्र खोला है जिससे अनाथोंको बहुत लाम मिल रहा है । वहाँ सहायताकी आवश्यकता है । द्रव्य भेजनेका पता—बाबू सतीचंदजी जैन-पुरी (उडीसा)

भोपाल-में पं० लक्ष्मीचंदजीके नीवदयाके उपदेशसे मुसलमानोंने इन्हीं प्रेप दर्शाया कि उन्होंने करीब ८००) खर्च करके हिन्दुओंको

पानी इत्रपान-दिये जिसमें दस हजार आदमी उपस्थित थे ।

प्राचीन स्तम्भ-देहलीमें सुगमचंदजीके मंदिरमें पत्थरकी मीनाकारीका एक सं० १९३का प्राचीन स्तम्भ संगमुक्ताकाले पत्थरका है जिसमें मध्य भागमें दो तरफ तन २ प्रतिमएँ खुदी हैं ।

मोलवीका दया प्रेम-देहलीमें एक मोलवीने गायकी कुर्तानी विरुद्ध "तर्क कुर्तानी गाओ" नामक १०००० पुस्तक छपवाई है जो अतीव उपयोगी है । इनको भगहर मुसलमानोंमें बाँटनी चाहिये । ला० पारसदास जैन खान्ची देहलीके पतेसे मिल सकेगी ।

पावापुरीजी-श्री महावीर, स्वामीकी निर्वाणभूमिमें है । वहाँ वार्षिक मेला दीवालीके दिन होगा ।

दाहोद-में पशुपण पर्वमें १० ग्रहस्थ और ६ विद्यार्थियोंने यज्ञोपवित संस्कार किया था । गृहस्थाचार्य मा० दीपचन्दजी थे ।

पद अस्वीकार-पिबानीके शास्त्रार्थमें आर्यप्रजाजोंसे विनय पानेके उपरक्षमें पं० बनारसीदासजी अम्बालाको जो 'मिश्रयात्र तिगिर मास्कर'की उपाधि दी गई थी वह मंडितजीने अस्वीकार की है ।

देहली-में जैन संस्कृत व्यापारिक विद्यालय स्थापित हो गया और करीब २६०००) का चंश भी हो चुका है ।

पचनंजय चौगुले-दीडकी तीन शर्तोंमें प्रथम नंबर आकर यहाँ आ पहुँचे । आपका बहुत स्वागत हुआ था ।



મૈસૂર રાજ્ય-મેં પણ ગણિતજ્ઞ વિદ્વાન મૈસૂર
મૈસૂર રાજ્ય-મેં પણ ગણિતજ્ઞ વિદ્વાન મૈસૂર
મૈસૂર રાજ્ય-મેં પણ ગણિતજ્ઞ વિદ્વાન મૈસૂર

દેહલી-મેં શ્રી વિશ્વનાથ મી સુખ ર્યા ।

કાનપુરમેં મહાસભા-કી વાર્ષિક બેઠક
આગામી તા. ૧-૨-૬ અષ્ટમી ચૈત્ર વદી ૯-
૧૦ કો હોના નિશ્ચિત હુઆ હૈ । ઇન મૌકેપર
કાનપુરમેં રમયાજાકા મેટ્રા તથા જૈન માહિત્ય
પ્રદર્શન મી હોગા ।

અન્તરીક્ષજીમેં પ્રાં. સભા-દ્વારા
મધ્ય પ્રાદેશિક દિ. જૈન પ્રાંતિક સમાજ વાર્ષિક
અધિવેશન આગામી વાર્ષિક મુદી ૧૫ વૈશાખ
મગસર વદી ૧ કો સેઠ નિર્વાહચતુર્દશી મહા-
પક્કે સમાપતિત્વમેં બંદે સમારોહકે સથ અંતર્રક્ષ
પાસનાથ સિરપુરમેં હોગા । વાર મધ્ય પ્રદેશકે
માઈવેંકો નિવેશન હૈ કિ ઇસ સમ્ય પદાર કર
અપને પ્રાન્તકી રક્ષાતિકી ચેષ્ટા પરે તથા શ્રી
અંતરીક્ષજી વારસનાથકે દર્શન કર પુણ્યલાભ
હેવે । ઇસ તથાકો અઠાસો સ્ટેશનસે જાવા મતા
। સરક પકે હૈ । હેટ દિનકા માર્ગ હૈ ।

અજમેર-મેં અગ મેં તા. ૧ દિ. મ્વ કો
વિચાલ્ય મંઠાકે સાત મં ટિંબ હેંગી ।

મૈસૂર જૈન યોર્ડિંગ-રા વાર્ષિક મ્લકા
મત તા. ૨૨ કો સોઝાસુર નિવાસી સેઠ હંચ
ચન્દ ને. ચંદ્રદોશીમે સમાપતિત્વમેં બંદે સમારોહસે
હુઆ થા । શાંતિરાત્રિયા જાગી, વ્ર. ૦ નેમ સ-
ગાજી રળી આદિકે મહત્વપૂર્ણ જગ લગાન હુણ
થે । કરોચ ૭૦૦૦) કા ચેદા હુઆ થા ।
દ. વગિરી માપદગ, અણગાવા હેંગે, થ પત્ર
ચેદપ, મ્લકાર્તિ નેનર, આગિરી દેગડું આદિ
૧૦૦૦ મૈસૂર પદાર થે ।

ગુજરાતના નૃસિંહપુરા માઈઓને

શું કુસંપજ વહાલો છે ?

જે ગુજરાત નામદારો બેભિ, બાબલી,
ખીણ, રવાઈ અથ દહેવાલી હતી તે ગુજરાતની
પ્રજા અત્યારે ભારતવર્ષને સ્વતંત્રતાનો મેઝ પાડ
બાબલી તે સંપૂર્ણતઃ કંઠ મળે તે માટે અમે
અમે બની ધર્મ મુદ્દ કરી રહેલ છે, તે ગુજરાત
નૈયા સંતાનો આપણે (નૃસિંહપુરા બાઈઓ) શું
કલકલ રચી પચી રહેશું । અમદાવાદની અંદર
એક કુટુંબના વ્યાપારી કલકલ લીધે જે દલાય
લગાડી ત્યાં ચોરામાં તડો પડ્યા છે તે વાત
કાઈથી અજાણી નથી. બુહારીમાં કંઠ એક
પક્ષમાં એકજ મનુષ્ય આંજો ફેરલાઈ વર્ષથી સત્યને
ખાતર મૈત્રી બતાવી જુદા પડ્યા છે તે વાત
આપના ધાન મદાર ન હોય. મુરતમાં દાલ
વરતી વગરના મ્યાનમાં જાગી રહેઈ જાંધારી
હતે પેમે પૂર્ણ પ્રજાલના દેશમાં નથી, દહેણ
દેવાઓ સુકી ઉગાલણી (ખોલી) ખોલાતી નથી,
પરુષણપર્વ જેવાં પવિત્ર દિવસોમાં અંધેરને
લીધે કાઈ બાઈએ દર્શન કરવા જવું હતું, હતી
પુણ્ય આ રડારો કાણ નથી બાણુનું આવા
પવિત્ર પર્વમાં નૃસિંહપુરમાં જે નિમંત્રી
ઉગાલણી ખોલાતી હતી તેવું ઉપદેશ કરી
મનના દર વાગે જલ માનનો વચ્ચેડો અભિ-
પેક ધ્યાવી કરતા બળતી મસાસાથી નહીં પર
જે મગતરણો ભોગ થઈ પડવા, અન્ય વળેએ
સરજના પોકારો ક્યાં તે આપણે જાણીએ છીએ.
મુરતના વર અને આખોદની કસાના થયેલા એક
ગોત્રના લગ્નથી મુતે તે બાઈ બુહારી કરવા
પચે તેડો મોડલ્યાં હતા કાજરજ ન થવાથી
ત્યાની પંચે એક મને જાનિ વહેવાર બંધ કર્યો તથા
અખાડ વં ને દિવસે જમની પાંચ ગોત્રમાં કાઈ
પરચેલો સામિત ન થાય ત્યાં સુધી તેમાંથી બહિષ્કૃત
ન કળાય તેવું તે જમાનારને પંચે લખાણ કરી
આપ્યું છે છતાંમે પચે તેવું બંધારણ તકની
ગણ્યા તે લખાણને ભંગ કરતાજ આપ્યા છે,



તે મુજબ એ બાઈ પાંચ ગોઠાંમાંથી પંચું બહિષ્કૃત થયા ! (પંચતે એટલી શક્તિ નથી મળી કે જોઈને ધર્મમાંથી પંચું છોડી મુકે) ત્યારે આગેદમા અવિનાશમ પર્વમાં આખા વર્ષની ગુણગીતી કાપણુ-ચુકત ઘોળણુને મિચ્છામિ દુકકંથી કામચલાની હતી ત્યાં એજ કારણથી એ તોડા પાડી બેઠા ! ધર્મનું અને આશના આવેલા રીવાજનું કલ્પન કરી ગાતિમાં એક વખત ન્યાયના છણનારાઓ પણ કંઈ તોડ ન લાગી શકે અને તેવા સાથે સામેલ થય અને થોડા સમુદાયના કુકડા કરવા એ શું જોખાપદ છે ? કોઈએ ગુંડો કર્યો હોય તો તેના યુગ્મ હોયોનું નીરીક્ષણ કરી તેનાપર મક્કમ રહી, તેની સાથે રહેવાવાળા બાઈઓએ પણ સાથે રહી એ પક્ષે સામસામા બેસી જાતીના હિન્તા પ્રશ્નોનો નીકાલ શું ન કરી શકે ! વળી એક મુરતના (હાલ મુ'બાઇમાં રહેતા) શેરીઆ અમદાવાદમાં એક દેહકું બંધાવવા ઉભા થાયછે, પણ ગુજરાતમાં ઉપદેશકો નથી, આપણામાં અને યુવકોમાં જોઈને દર્શનનું જ્ઞાન હોય એવો એક પણ ગુજરાતી જોણ્યો જડે તેમ નથી, તો તેવે વખતે ક્યા મંદિરની જરૂર છે ? દેવમંદિર કે વિદ્યા-શાળાઓની. આ લક્ષ્યાવિપતિ શ્રેષ્ઠને પોતાની પછાડી સંતતિ નથી, પારકાઓ તેના જોડા ગણે અને પોતાનું નામ રાખનાર દનક દિશાને પણ તિલાંજલી આપી છે તો તે પ્રાતાઃ સ્મરણીય શ્રીમાન શેઠ માણેકજીવંદ હોશિયરને પળે આલી મુ'બઇ પ્રાતિદ્દ કાન્દર-સે ગુજરાતમાં જોલતા થારેલા સંકેત વિચારવને જોલવા, આ કસી દુન્યાની દવા જ્યાંસંથી ખાવા સર્જિત છે પોતાને માટે ત્યાંસંથી પૂરું નીમે તેટલું અને પછાડીના માણા ન કે તેટલું દ્રવ્ય કાઢી આશની પુ'ચ્છનું આનું વિચારવ જોલવા-કરત કરે તો ન-દિકરનો દિકરો, જગે જગે ગુજરાતનું ગૌરવ વધાનાર એક નહિ પણ સંકેતો દિકરાઓ પાછો ને ગુજરાતની પર્વશન્ય પ્રજાને જોખ આપી જોઈને દર્શનનું જ્ઞાન આપશે, તે બાઈ મેદાના અવિવારી, યશો, અને સદેહ જોઈની કીર્તિ, એ જગે તાવનાર મુકો

બારીક અવગ્રહન કરી ગંભીરતાપૂર્વક વિચાર કરશે તો શ્રીમાન શેઠ માણેકજીવંદની કીર્તિ કરતા પણ ગુજરાતને ધર્મનું જ્ઞાન જ્ઞાન આપવા પુરે પુર અમર કીર્તિજ કરી-જશે. આ નિર્ણયાર થયો છે. આ શેઠ યસિદપુરા ગાતિના છે, એટલે મારા વિચારો મુકવા યોગ્ય ધાર્યા છે

જે ગુજરાત આજે અધ્યતાનો મત્ત બણ્યો રહ્યું છે, ગુજરાતના વીરપુત્ર મહાત્મા ગાંધીજીએ દિંદુ મુસલમાની અધ્યતાનો સ્તબ ઉભો કર્યો છે, જે યથાનો પૂત ભારતની સંરક્ષાને, નગ્ન સત્ય જેવા શબ્દોમાં તેમના ધર્મનું પાલન કરાવવા સાથે સાર કહી રહ્યો છે, તેજ ગુજરાતના આપણે સંતાનો શું કુંસપમનું સંક્યા કરીશું ? બાંધબાંધે દવે તો આપણે સરમાવનાર છે. વડોદરા અને પુરકો એકત્ર-યજ સત્યાગ્રહી બની અસત્યનું બધી-દાન આપી અપણી સમાજમાં મુમપ કરી પ્રેમ, પ્રેમ અને પ્રેમ સામ્રાજ્ય સ્થાપો, એજ વિનંતી.

લીં ગાતિહિતચિંતક

સંદેશ-મુરત.

નવે ૨ ગ્રન્થ ।

મવિષ્ણદત્ત તિલ્કા મુન્દરી નાટક	૧૥)
ત્રિનેદ્ર મજનમાલ	૧૬)
ચિદાન્દ શિવમુન્દરી નાટક	૧૭)
મેનામુન્દરી નાટક (વહે અક્ષરોમે)	૨૦)
ધન્યકુળાર ચરિત્ર (કુન્દોવદ)	૨૧)
મવિષ્ણદત્ત ચરિત્ર (કુન્દોવદ)	૨૨)
કુન્તી નટક	૨૩)
નવગ્રંથ સ્થિતિ નિરરક વિગ્ન	૨૪)
મહાવીરનાટક (અગ્રવાર)	૨૫)
ચર્ચાસમાચાર (વર્ધિત પ્રશ્નોત્તર)	૨૬)
પરમઅગ્યાત્મતરંગિણી	૨૭)
સુવાચિત્ર રત્નસંદોહ માર્ગ	૨૮)
વૃત્ત ગ્રન્થ સંપદ	૨૯)

મેનના-દિગ્મ જૈન પુસ્તક : હાલ-મુરત ।

मित्र-संवाद ।

(ले० मास्टर दीपचंद पावार, नरसिद्धपुर ।)

श्रावण सुदी नवमी की रात्रि है । पानी रिम रिम रिम रिम बरस रहा है । अंधकारका इक क्षण राज्य है । बड़ी २ शहरकी सड़कोंपर तो म्युनिसिपलकी लाउटेनें जगमेसे कुछ प्रकाश भी रहता है परंतु गद्दीकुर्वों अपवा, ग्रामोंकी अवस्था तो कुछ कहनेमें ही नहीं आ सकती, वहां जहा सांझ हुई कि फिर नरनारियोंको १२ घंटेकी तो क्या किन्तु १४ घंटेकी खरी जेठ [बंदीगृह] हो जाती है । आना जाना तो दूर हो रहे, शब्द भी नहीं सुनाई देता है । एक तो अंधेरा और दूसरे कीचड़ वांटा, अब कोई कहीं जावे तो कैसे ? परन्तु प्रकृतिकी विटक्षणताको भी न्य है । कार्यनिपन्न पुरषोंको दृढ प्रतिज्ञाओंकी अपनी अद्भुत शाक्तसे सहायता करता है ।

थोर वाणी राजिनें भी पथप्रदर्शककी तरह १२ निगडों चक्क जाती है जिससे मार्ग बलनेवाले अपना मार्ग निश्चित करके यथास्थल पहुंच जाते हैं । यदि प्रकृति देवी इस प्रकार सहायता न करती तो मनुष्योंके कार्योंमें बहुत क्लृप्ता रहती । अब ऐसे ही अमसरमें एक महाशय शाम होनेसे पहिले ही अष्टपट व्याल काके और अपनी सहस्रभिणी तथा बर्बाको लेकर ठासीके भरोसे घामे निद्रा पड़े । सायमें छल्लु नाईकी भी लाउटेन देकर ले लिया । छल्लुने बहुत छुट कर, चैयानी, गाड़ी कपडा लेंगे परन्तु आतुरताका कारण योंही बछ दिया । पर

नके साम्हने मला वह लाउटेन ठहरनेवाली थी ? आखिर कार प्रकृतिने ही सहायता दी और यह परिवार अपने इच्छित स्थानपर पहुंच गया । यद्यपि अभी सांझके सान ही बजे थे परन्तु सिमाय टीनपर पानीकी टप टप आवाजके और शब्द तो सुननेमें ही नहीं आता था । सजाटा छा गया था । मालूम होता था अद्वारात्रि हो चुकी और लोग शयनागारमें पहुंच गये हैं । जिस स्थानपर उक्त परिवार गया है वहां म्युनिसिपलकी लाउटेन जल रही थी कारण कि वह स्थान चम्बई रोड [आम रास्ते] पर है इसलिए झटसे उजेलेमें बच्चा गोल उठा । दहा दहा, जयचंद काकजीका मकान आ गया । देखो, यह ५४ मील लगा है । हां हैं नई, कछो हम कैसे जान गये ! आग तो असन यहीं रहेगी क्यों दहा रहेगे या नहि ?

इतनेमें ही पक्केकी बोली सुनकर ऊपरसे जयचंदने देखा तो इनके प्रिय और मत्तमित्र टेकचंदजी सपरिवार आये हैं । चटसे उतर कर किवाड खोल दिये । जयचंदने बच्चेको चटसे गोदमें उठा लिया और पांसार जुहार व्यवहार करते हुए अन्दर गये । वहां पर एक सनका टाट बिज रहा था जिस पर दरो पड़ी हुई थी और कोई आडम्बर नहीं था । एक पीतलकी समाईमें एगन्टोके तेलकी दो चत्तिया जल रही थीं । दुसरेसे लोहीफा फनून जिस पर पतला मलमलका लिहाफ लगा था दंड रहा था, चौकी पर थी नियमवार ग्रन्थ विराजमान था, पास ही में खजूरकी चटाई टाले जयचंदकी स्त्री बैठी थी, छोटा पुत्र अमृतसागर जो अभी दो वर्षका है



स्वामाविक चंचलतासे खिलौने उठाता रखता पटकता बजाता हुआ खेल रहा है ।

जयचंद—भाबो भैया पवारो, अरे सुशील यहां तो आवो । बेटी, देखो वे टेकचंद दादा भाये हैं, दादानी और भैया मिट्टन भी आया है ।

सुशील—दादानी आता हूं, यह हिसाब कर लूं फिर आता हूं [ऊपर हीसे]

टेकचंद—भाबो तो बेटा, देखो यह हम क्या लाये हैं ?

सुशील—दादानी, क्षमा कीजिये । मैं अभी आया, १ ही हिसाब शेष है । यदि रह जायगा तो कुछ मेरा नम्बर क्लासमें नीचा हो जावेगा और मार पिटेगी सो अच्छा । आप जो कुछ लाये हैं वह तो यहां जाता है ?

जयचंद—भैया टेकचन्दनी, कुछ मत पूछो । यह लड़का जहां सांझ हुई कि ऊपर जा बैठा है और बराबर १० बजे तक कुछ २ पढ़ता लिखता रहता है फिर सरेरे ९ बजे उठता है फिर भी कुछ पढ़ता रहता है उसे कितना ही कहो परन्तु नहीं मानता ।

टेकचंद—तो क्या इतना बहुतसा पाठ दिया जाता है ?

जय०—नहीं, परन्तु उसे किसीने कह किया है कि टक्क प्रमोशन लेना चाहिये सो स्कूलके पाठसे आगे २ वर पढ़ता है । सरेरे पाठोंसे के बच्चे गोपालदासके पास जाता है सीखता है । वह कमजोर बहुत है इससे मैं उसे परिश्रम करनेसे रोकता हूं ।

टेक—तब उसे पाठ याद न होना होगा तभी तो इतना परिश्रम करता रहना है ।

जय०—भैयाजी, ऐसा नहीं है । वह जब अपना स्कूलका तथा आगेकी कक्षाका पाठ सीखलेता है, तब मेरे पास बैठ कर धर्म पुस्तकें पूजा पाठ आदि पढ़ता है । और इससे फुरस्त पाई तो कहीं पद्मपुराण, कहीं “जैनमित्र” अथवा बड़े २ महात्माओंके जीवनचरित्र पढ़ता है और उनमेंसे बड़े २ प्रश्न करता है ।

टेकचंद—तब तो अच्छा है, बालक बुद्धिमान है, देखो मिट्टन सुशीलकी कैसी बड़ाई होती है ? तुम तो दिन भर खेलते ही रहते हो ।

मिट्टन—अच्छा, अब हम भी हुज्जीके संग मदलता जावेंगे ।

सुशील—(नीचे आकर और टेकचंद तथा उनकी स्त्रीको प्रणाम करके बैठगया) और पश्चात्—दादानी बहुत दिनमें आये । माछती बहुत याद करती है, हमारे लिये क्या लाये ?

टेकचंद—यह मौना लाया हूं ।

सुशील—देखकर मुंह पनाता और चुप रह जाता है ।]

टेकचंद—क्यों बेटा, चुप क्यों रह गये ? अबकी बार और बड़ियां फेंसी लटंगा । क्या करूं जल्दी जल्दीमें येही मित्र सके ।

सुशील—दादानी, हमको फेंसी नहीं चाहिये, हमको तो स्वदेशी चाहिये । चाहे वे मोटे मछे हों, चाहे देखनेमें मदे हों परन्तु हमको ये नहीं चाहिये । उस दिन महात्मा गांधीजी यहां (नासिंहपुर)के स्टेशनसे तिरुक् महाराजके साथ निकले थे सो उनके शरीर पर मोटे सादीके कपड़े थे, तो भी उनका बड़ा सम्मान होता था, सो दादानी कुछ दिखावट ननावटसे थोड़े ही

आदर होता है ? हमारे दहाने तो प्रतिज्ञा कर ली है कि स्वदेशी कपड़े ही पहिरना और स्वदेशी पदार्थ ही खाना ।

टेक-वेष्टा, इसमें क्या रखा है। अपने-को तो खुब जो मिले सो खाना और पहिरना सुखसे रहना, नाहकके अंशुओंमें क्यों पडना ? अभी तुम बचे हो, तुम तो खुब खावो खेळो ।

सुशील-दादाजी, बच्चा ही तो बड़ा होता है सो जैसे बच्चा बड़ा होता है वैसे ही उसकी मली बुरी, आदतें (प्रकृतियें, अभ्यास) भी बदती हैं ऐसा परसों गुरुजी कहते थे, इसलिये अभीसे ही अच्छी बातोंका अभ्यास डालना चाहिये । आप इन बातोंको अंग्रज कहते हैं, परन्तु जब अपने खानेको बैठें और कोई मूला साम्हने चिल्लावे तो क्या उसे न देकर खाते जाना चाहिये ? महात्मा गांधी कहते थे कि यदि हम लोक स्वदेशी वस्त्र और मोननका व्यवहार रखें तो बहुतसे गरीबोंका पेट पालन हो सक्ता है, शरीर तो मोटे और सदा बख्से भी टंक जाता है और शीत उष्णसे भी रक्षा हो सकती है फिर क्या व्यर्थ खर्च बढ़ाया जाय ? यदि हम लोग इस प्रकार अपने खर्चसे तकलीफ न उठाते हुवे कुछ बचावें और उसे देश व समाजके किसी कार्यमें लगात रहें तो बहुत कुछ कार्य सहज २ हो सक्ता है, इसीसे दादाजीने कुर्सी देवित्रे सम उठा दो हैं और यह फर्श टाटका बिछाया है । दश कहते हैं कि यह २५ वर्षके पहिले न फटेगा, और कुर्सी तो हमेशा टूट जाती थी, एक बार अमृत कुर्मी परसे गिर पड़ा तो उसकी मूढ़ फूट गई । दूसरी बात यह भी

है कि कुर्सीपर बैठे हों और कोई आ गया तो उठना, फिर कुर्सी मंगाना । अब तो कोई भी आवे अग्रे बैठ जाते हैं इसमें किसीको मानापमान नहीं मालूम होता है (पिताजी धोर देखकर) हां तुम्हीं तो कहते थे, दादाजी इतने ही तो ऐसा कहा था, अब हंस्तें हैं ।

टेकचन्द-अच्छा वेष्टा, यह ले जावो सज्जे खा लेना ।

सुशील-यह क्या है ?

टेक-सुरतकी बर्फी ।

सुशील-क्या बनारसी शक्करकी है !

टेकचन्द-नही गुजरातमें प्रायः मोरिश ही खाई जाती है ।

सुशील-तब मैं तो नहीं मारुंगा ।

टेक-मालतीको देदेना ।

सुशील-हूँ ॐ १ मो चीन बुरी समझ कर स्वयम् न खावें वह दूसरोंको भी क्यों देना चाहिये ! एक दिन माताजी आलोचना पढ़ती थी सो उसका अर्थ दक्षने ऐसा बनाया था, कि 'इन कारित मोदन करके' अर्थात् आप करो, दूसरेसे करावे और अन्य कारनेवालेको मला माने इन तीनोंमें समान पाप पुण्य लगना है । क्यों माताजी ठीक हैं नहिं ।

टेक-यह लड़का तो बड़ा होशियार है बोलने ही नहीं देता है। अच्छा वेष्टा खुश रहो, हम तुम्हारे लिये अब स्वदेशी वस्त्र ही लाया करेंगे ।

सुशील-[खुश होकर] मणाम करते हुवे, कृप आपकी, सब आपहीका प्रसाद है ऐसा कह कर चला जाता है ।

जयचंद-पैयानी, अंबकी चार तो बहुत दिनमें मिले ।

टेक०—हां भाई क्या करें, कुछ ऐसी अड़चनें आड़ी पड़ गई, मैं तो दिसावरोंमें चला गया या, और जब कभी आता तो आप नहीं मिलते, यहां हमारे परम मित्र मूलचन्द्र किरणदासजी कापड़िया प्रथम तो बीमार हो गये बादमें कुछ बरू-संज्ञाओंमें फंसे रहे । इत्यदि अनेक कारणोंसे मिटना नहीं हो सका ।

जय०—ठीक है और कहिये कुछ नवीन समाचार है क्या ?

टेक०—नवीन तो क्या ? सुना है पं० अर्जुनदाल रेडीने जो खंडेलवाल हैं हुंवरके साथ अपनी लड़की व्याह दी, और पं० उदयलाल काशलीवालने किसी विषया ब्रह्मगीको घरमें रख लिया है ।

जय०—फिर क्या हुआ ?

टेक०—होगा क्या ? वही कि जातिसे बंध कर दिया ।

जय०—और मंदिरसे ।

टेक०—उदयलालको तो बन्धुईमें मंदिर भी बंद है और होना भी चाहिये ऐसा २ काम करें फिर क्यों नहीं जाति और मंदिर बंद किया जाय ?

जय०—ज्यों भैया, कैसे जाति तो मानव समानका एक मांग है, क्याचिन्त उसके संगठनके नियमानुसार मूले ही च्युन कर दिया जाय, परंतु मंदिर तो धर्मापतन है, वहां जाने पर ही तो मनुष्योंको अपनी अपनी भृशोंका पता लग सका है । वहां ही से वो अपने पापोंका प्रायश्चित्त कर सका है । बीतराग छवि और बीतराग

वाणीके निमित्तसे ही तो कषायोंकी मंदता हो कषायोंकी मंदता हो सकती है सो जब यह सुवारका मार्ग ही बंद हो गया तो फिर कैसे सुवरेगा ? दण्डका अमित्राय तो मेरी समझसे यही है कि जिससे पापी पापसे मयभीत होकर पुनः पाप न करे और पूर्व पापपर पश्चात्ताप करके उसका प्रायश्चित्त करे ।

टेक०—यदि मंदिर बंद न किया जायगा तो फिर पंथोंका दबाव ही कौन मानेगा ?

जय०—जातिके दण्डसे ।

टेक०—यदि कोई अकेला ही हो जैसे ब्रह्मचारी विधु, विषया इत्यादि तो ?

जय०—तो उसे दण्ड देकर व्यर्थ दवानेसे क्या प्रयोजन है ?

टेक०—फिर तो सब स्वच्छंद हो जावेंगे और मनमाना करेंगे ।

जय०—सो तो अभी ही करते हैं उन्हें कौन रोकता है ? हजारों गर्भगत होते हैं, हजारों वैश्यावोंके दर्जानों पर पिटते हैं । हजारों तीर्थोंमें जाकर अपने पापोंको छिपाते हैं कहाँतक कहें ? क्या आप नहीं जानते हैं ?

टेक०—हां भाई, यह तो जानता हूं । पं० उदयलालसे भी एक पंडितजी महाराजने कहा था कि ऐसा मत करो, तुम मजे हो प्रांटीरडकी हवा खा लिया करो, परंतु उदयलालजीने इसे उचित न समझा, इसमें उन्होंने हानि ही समझी अर्थात् द्रव्य तो खर्च होता ही, समय बहुत नष्ट होता, दिनरात आतुरता और अनेकों प्रकारके मय रहते तितर भी तकड़ीकी तौ बैसी ही रहती किन्तु और भी बड़ भारी, चोरीसे गुप्त

पाप करना अच्छा नहीं। इसमें उन्हें विषयसुखकी खान दो कदाचित् कुछ कम हुई ही होगी परंतु रोटीपानी आदिना भी सुभीता हो गया ! मंदिर जानेके सिवाय सुना है कि वे स्वाध्याय आदि अन्य धर्म साधन तो बराबर करते हैं !

जय०—गाई सा०, आमकल हमारी समाज और जातियोंके कर्णधारोंकी गति बहुत विचित्र है, जो इन कलिकालीन महारमाओंकी शंभे हां करे, और इनकी बात मानता जाय वही धर्म-ध्वजी और जहां कुछ शिर हिछाया कुछ पृष्ठ-पांछ की कि फिर उसे यदि इनके ही हाथ न्याय होता तो सत्वंकी तो क्या और भी एकाध नर्क बड़ा देनेको ये तैयार होते। अच्छा, उदयपालजीने ब्राह्मणी और तिसपर विधवासे सम्बन्ध कर लिया उन्हें तो बंद किया तो ठीक ही है परंतु अर्जुनलाडजीने कौनसा अन्याय किया जो एक दिगम्बरी जैनी हंपट [वैश्य] ही से पुत्रीका सम्बन्ध किया ? -

टेक०—जाति विरुद्ध तो किया !

जय०—जातियोंके नियम स्वच्छापूर्वक हैं या किसी मन्याधारपर ।

टेक०—अन्य २ तो नहीं जानते हैं परंतु ऐसा ही चपन है कि जाति २ में ही बेटी व्यवहार होता ।

जय०—और रोटी ?

टेक०—यह भी बहुतसी जातियोंमें ऐसा ही नियम है कि वे स्वजातिके ही यहां खाते हैं जैसे पोड़वाड़, सैतवाल आदि अन्य जैन जातियोंके यहां नहीं नीमते हैं ।

जय०—इसका कोई कारण भी ज्ञात है ?

टेक०—नहीं, परन्तु प्रथा ऐसी ही है ।

जय०—मला जय कि धर्म एक है और क्रियायें समान हैं तब जीर्नर्नमें कौनसी अड़चन है ?

टेक०—अड़चन तो कुछ नहीं है परन्तु प्रथा बिगड़ती है ।

जय०—इससे कोई हानि तो नहीं होती ।

टेक०—हानि तो नहीं परन्तु लाभ भी तो नहीं है ?

जय०—लाभ तो है। इससे देश विदेशमें यात्रार्थ वा व्यापारार्थ जानेमें भोजनके निमित्तसे होने-वाला भ्रष्टाचर नहीं होता है, जहां जावो और वहां यदि कोई जैनी है तो उन्हें तो सावर्मी (अतिथि) लाभ और जनेवालेको शुद्ध भोजनका लाभ होता है। यात्रादिमें कुछ कठिनाता नहीं मालूम होती है, परस्पर प्रेम बढ़ता है ।

टेक०—मला यह तो ठीक है और अब सिवाय दो एक जातियोंके अब यह तो हो गया है कि समस्त जैन जातियां परस्पर भोजन व्यवहार करने लगे हैं परन्तु

जय०—माई सा०, करने क्या लगे यों कहो समयने करा लिया और केवल जैनियोंमें ही परस्पर नहीं किंतु अजैनोंमें भी अर्थात् अब जैन धर्मसे सर्वथा अनभिज्ञ ब्राह्मणोंके हाथोंका बनाया भोजन भी प्रायः सभी जातियोंमें बढ़ा बढ़ उड़ता है और जैन अजैन बड़े जातियें साग बैठ कर खाते हैं ।

टेक०—माई, यह तो कोई अंग्रेजी पढ़े करते होंगे ?

जय०—नहीं साहब, जिन्हें अंग्रेजीकी गन्ध



तक नहीं मिली वे मैंने स्वयम् मालवादि प्रांतोंमें साढ़े बारहके जीमन देखे हैं ?

टेक०—पक्का भोजन करते हैं ।

जय०—पक्का कह कर दोष थोड़े ही टलता है । आटेमें नमक पानी पड़ता है, अंगार पर सेका धीमें तल दिया, दाढ़ पतली न बना कर कुछ काढ़ी रखली इसमें हुवा ही क्या ? आपने क्या किसी जैन ग्रन्थमें पक्की कच्ची फलाहारो व अनाज आदिका भेद पाया है तो बतावो ।

टेक०—ना माई, परन्तु लोकमें तो योंही चढ़ता है ।

जय०—माई सा० यों तो कोई बातका निर्णय न होगा । या तो आप लोक व्यवहार पर चलो, या समर्थके परिवर्तन पर चलो, या युक्ति प्रमाणों पर चलो या धर्म ग्रन्थोंके आचार पर चलो तब निर्णय होगा ।

टेक०—धर्म अनेक नय है सो जहां जैसा रंगे लगा लेना चाहिये ।

जय०—आप भूलते हैं । धर्म अनेक नयात्मक नहीं है किन्तु प्रदायोंमें अनेक धर्म होते हैं और उनका ज्ञान उद्यमको अनेक नयोंसे होता है, नय पदार्थ नहीं हैं और न पदार्थ नय हैं । इनका स्वरूप समझे विना दुरुपयोग नहीं करना चाहिये, यह कोई जीवादि पदार्थोंका विचार नहीं है किन्तु यह है समानका लौकिक व्यवहार और उसका सम्बन्ध है श्रावकानारादि ग्रन्थोंसे इसलिये इस परसे ही विचार करना चाहिये ।

मुनिये, यदि आप रुद्धियों पर चढ़ते हैं तो लोगोंने तारा किमी नियमका बर-

अंश होनेसे बन जाती हैं । और अपढ़ लोगों द्वारा चढ़ती रहती हैं सो आपको जिसके पहा जो भली मुरी रुद्धियां हैं सबको धर्म और सत्य ठहराना पड़ेगा फिर हमारा सोना १०० टांचका न रहेगा सबहीका मानना होगा । यदि सम-पानुसार मानते हैं तो फिर इस युगमें जो नये परिवर्तन हो रहे हैं, उनके अनुसार जातिकी बात क्या है धर्मका पता लगाना कठिन हो जायगा । यदि युक्ति प्रमाण लेते हैं तो धर्मसे बाधा नहीं आवेगी क्योंकि जैनधर्म युक्ति पूर्ण है परन्तु रुद्धियां हवा हो जायगी, परन्तु इसके लिये कुछ विशेष बुद्धिकी आवश्यकता है । अब रहा शास्त्र सो इसे माननेमें ही कष्टपाण दीखता है और कदाचित् कुछ लोगोंको छोड़कर प्रायः सभी मानेंगे ।

देखो आदिनाथपुराण, हरिवंशपुराण, पद्मपुराण, श्रेणिकपुराण, श्रीपालपुराण आदि तथा त्रिवर्ण-चार, सांगारधर्मावृत्त आदि, छह दाढ़, रत्नकरण आदि । इन ग्रन्थोंमें साक तौरसे ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्योंके परस्पर रोटी बेटी व्यवहारकी आज्ञा और बड़े पुरुषोंके दृष्टांत दिये हैं । यहां तक कि चक्रवर्ती आदि राजाओंने स्लेच्छ राजाओंकी कन्याओंका सम्बन्ध किया और चिलाती पुत्र जो उससे हुवा, वही राज्यका उत्तराधिकारी हुवा इत्यादि कथन हैं । सो माई अनेकाने क्या बेना किया ! उनका कार्य शास्त्रानुकूल है, जो लोग उन्हें इस कार्य परसेही नाति-फाते हैं वे धर्म शास्त्रोंके विरोधी हैं । उन्हें बागु सुरनमान तथा जुगल-आदिके अनुयायी क्यों न कहें ? क्यों



वे बाचूगण तो केवल कागजी कार्यवाही करते हैं, वस्तु लिखते हैं, परन्तु ये उनके अनुयायी रूपे रुस्तम मुंहेसे बाचू लोगोंकी निंदा करते, पुराणों-का पस लेते और कार्य वे ही करते जो शास्त्र विरुद्ध हों। यदि ये लोग शास्त्रानुयायी होते और पुराणोंके मक्त होते तो कदापि काष्ठ भी शास्त्र विरुद्ध झूठी रूढ़ियों पर आरुढ़ न रहते, उन्हें तोड़ भरोड़ कर शास्त्रानुसार अरुना चउन व्यवहार करते ।

टेक०—भाई सा०, यह बात तो ठीक है। ग्रंथोंमें तो ऐसाही लिखा है । इसके अनुसार सेठी अनु-मलालने कोई अर्नाति वा कुरीति नहीं की है, परन्तु उदयलालजीकी बात तो आपकी ठीक मानना पड़ेगी ।

जय०—नीहाँ, हाटमें उदयलालको चाहेतो वहे क्योंकि वे अभी इस कार्यमें अकेले ही है परन्तु जब उनकी संख्या बढ़ जावेगी तब यह कहना भी न चनेगा, देखोना प्रथम कुशलगढ (बागड़) में एक हूँवड़ सदा मुखिया हुआ तब बहुत गुरा कहलाया, सूत्र चर्चा हुई, बहुत उंगर पाया गया, अब ५-७ वर्षों में वे ५० वर्षके लगभग हो गये । मागसड़का एक मन्दिर उनके ध्वजे हाँ गया, दिनों दिन बढ़ रहे हैं । पुराणोंके चित्रक्योंकी प्रतिदिन कर्मवितिके व्यामके समान संस्था बढ़ रही है, उनके शिवरचन्द्र मंदिर और रथ प्रतिष्ठाएं घड़ा घड होती जाती हैं ।

टेक०—हानी, यह तो सत्य है, तब क्या उदयलालजी जैसे भी बहुत हो जायेंगे ।

जय०—इया कुछ सन्देह है ?

टेक०—रयों भाई कुछ उपाय भी है कि मजि-

ष्यमें ऐसा न होवे ?

जय०—उपाय तो बहुत बहुत हैं परन्तु उनका होना कष्टसाध्य ही नहीं किन्तु असाध्य (असंभव) ही है ।

टेक०—तो क्यों ? मनुष्योंके किये क्या असाध्य है ?

जय०—मनुष्योंकी बात नहीं है यह तो है जैन समाजकी बात ।

टेक०—जैन समाजमें क्यों कठिन है ?

जय०—इस लिये कि जैनियोंमें न तो विद्या है न कोई सच्चा मार्गदर्शक नेता है, न कोई राजा ही है । इसीसे चन्द्रमाके अभावमें जुगनू (आगिया) ही चन्द्रमा बन बैठों, जातिके मुखिया (आगेवान Loader) वे लोग हैं जो धर्म शास्त्रका शब्द नहीं जानते, न्याय नीति वहाँ प्रवेश नहीं कर सकती है, विचार और तर्कको वहाँ स्थान नहीं दिया जाता है इस लिये मनमानी करते हैं और जिसमें उनका स्वार्थ साधन होता है वही सत्य है धर्म है नीति है सर्व मान्य है ।

टेक०—तब पंडित लोग क्यों नहीं कुछ कहते ?

जय०—ये बिचरे कह कर क्या अपनी आ-जीविका खोवें ? इन्हे तो वही कहना है जो उन मुखियोंका कहना है । इनके शास्त्रोंमें और कोषोंमें वही लिखा है या लिख जाता है जो इनके बाधप्रदाताओंके मुखोंमें रहता है ।

टेक०—क्या सभी पंडित गण ऐसा करते हैं ?

जय०—उपाशुनर-न कि सर्व ही ।

टेक०—तब वे क्यों नहीं इसका आन्दोलन करते ?

जय०—एक तो है थोड़े से नगाइखानेमें



तुतीकी आवाज कौन सुने? दूसरे वे बेवारे स्वयम् धनिक नहीं है, इन लोगोंने स्वया संस्थावोंमें देकर पड़ाया है सो ये लोग उन्हें कृतघ्नी आदि उपाधियोंसे भूषित करते हैं, हठी उमड्ड आदि कहकर बहिष्कार करते हैं और फिर संस्थावोंमें सहायता करना छोड़ बैठते हैं तात्पर्य द्रव्येषु सर्वे वशाः ।

टेक०—अच्छा, यह बात ज्ञाने दो उपाय तो बतावो ।

जय०—लेवो सुनो घबराना नहीं, २० वर्षसे नीचे बालक और १६ वर्षके नीचे बालिकावोंका व्याह न होवे जैसा ग्रन्थोंमें लिखा है । पुरुष ४९ वर्षके ऊपर व्याह न करें, स्त्रियोंके समान पुरुष भी अपना दूसरा व्याह न करें । १ पत्नि-व्रत रखते, समस्त जैन जातियां परस्पर व्याह सम्बन्ध करें, और यदि आवश्यकता पड़े तो अन्य त्रिवर्णोंसे जिनका आचार उत्तम होवे सम्बन्ध करें, जातिमें कुंशरोंकी संख्या न बढ़ने पावे, मुखिया लोग अपने ९ थोकका ध्यान रखें और योग्य वरोंका यथायोग्य सम्बन्ध करा दिया करें, अशुचिन्त सम्बन्धोंकी रोक दें इत्यादि प्रबन्ध यदि हो सके हो विधवा व्याह रुक जावेगा क्या चलेगा ही नहीं, क्योंकि यह कार्य आदर्शको गिरानेवाला है ।

टेक०—इन कार्योंमें सहायता नहीं मिल सकती है क्या ?

जय०—हां, यदि प्रयत्न किया जाय तो बाल्य व्याह, गृहप्याह, नव्या विक्रय, दण्ड या दूसरा व्याह बंद हो सके हैं । इसके लिये यदि समान रासी होवे और सर्वासे प्रार्थना करे तो कष्टन

(act) बन सका है परन्तु क्या कोई इस लिये तैयार होगा ? तुम्हे भरोसा है क्या ?

टेक०—माई सा० बात तो सत्य है स्वार्थ और पक्षपातके आगे किसकी चलती है। यह तो वही समय है कि जिसके हाथ लठी उसीकी भैंस है चाहे जहां हांक ले जाय। जाति व समाज कहीं जाय, हमारा तो हाल सितारा चमक ही रहा है । जिसकी झोपड़ी जलती है वही विचारा रोता है और तो मूर्खों पर ताप दिये फिरते हैं । वास्तवमें उदयलाल आन ८ वर्षों जयपुर जोयपुर मारवाड़ मेवाड़ मालवा दक्षिण सब जगह चकर मार आये, दो तीन हजार तक चाहा भी कि सोदा बन जाय परं न बना आखिर तो मरुण्य है । सभी भीष्मपितामह तो नहीं हो सके हैं । जयचन्द्रभाई, किसीका क्या, बिगाड़ तो समानका है । इसकी जड़ें बट रही हैं । कुछ जाति च्युत होकर घंड, कुछ कुंवारे रह कर भरे, कुछ विधुर (रंडवे) और विधवाएं भरीं, कुछ गरीबीके कारण वर्मच्युत हुवे, कुछ धर्मसे अवभिज्ञ होनेसे विधर्मी बन गये, ईसाष्टि कारणोंसे दिनों दिन यह जाति घटती जा रही है । धर्म तो धर्मोंके आश्रित रहता है सो धर्म ही नहीं रहेंगे तो धर्म किस आचार रहेगा ?

जय०—माई, अभी तो विनैरव्या आदिको मंदिरमें आनेसे रोकना जाता है परन्तु भविष्यमें क्या होगा जब जेनी न रहेंगे, हाथ मगवान् ! विनाश काले विपरीत बुद्धिः । प्रभु हमारे मुखियोंको सुबुद्धि देवो (एग वदते २० जयचंद्रके आंग्र गिर पडते हैं)



टेक०—[दिलकर] माई जयचंद्र, धैर्य रखो,
शोकसे क्या होगा ? भविष्य प्रबल होती है ।
गत्रिके बाद दिन होता है, गिरने पर ही उठना
है, प्रपन्न तो करना चाहिये ।

जय०—(समूह कर) हां ठीक है, इसको
कौन मना करता है करो परन्तु छु लाकों कौन
पंजा-मला है आने परिणामोंसे अपना तो मला
अपने परिणामोंसे अपना तो भला है किसीका
होवो वा न होवो, प्रपन्न करना ही चाहिये ।

टेकचंद्र—अच्छा माई, अब शयन करो । मैं
नाऊंगा । आपसे बहुत कुछ और भी बातें
करना था परन्तु समय बहुत होगया है फिर
कभी देखेंगे ।

जय०—मैया रात्रि अंधेरी है वहीं आराम
वरो । सनेरे स्वाध्याय करके जाना । बच्चा बच्ची
भी सो गये हैं । पाषाणी भी अच्छा रही हैं, यह
भी तो घर है । वहाँ पर तुषानंद मुनीमजी
हैं ही, चिन्ता क्या है ?

टेकचंद्र—जी तो मुझे नहीं होता परन्तु
छाचार हो जाना पड़ता है । फिर जैसी आप
कहे । अच्छा छल्ल तु जा, मुनीमजीको कह
देना मेघानी आज वहीं ठहरेंगे, तुम बंदोबस्त
काके सोचो । छल्ल जाता है और सब सो जावे
हैं, और हम भी अब सोते हैं, श्री पंच परमेशो
मगवानकी जय ।

स्वदेशी—

पवित्र काश्मारी केशर

मूल्य १॥) खोला

पता—मैनेजर दि. जैन पुस्तकालय—मुरत.

धनवानोंसे विनय ।

हे धनवानोंसे विनय आन यह मेरी ।

धन पाकर देलो दान करो मत देरी । टिका ।

तुमने परमवर्म पुन्य कमाया होगा ।

दुखियोंको लख कर दान दिलाया होगा ॥

मूखोंको भोजन दिया दिलाया होगा ।

अरु तपावतको गीर पिलाया होगा ॥

जितका फल सारा मिला तुम्हें इस बेरी ॥ धन० ॥

+ २ +

यह सत्य बात है झूठ न कोई बतावे ।

जय मृत्यु होय तब साथ नहीं धन जावे ॥

सब पड़ा रहे धन धर्म साथ ही जावे ।

खावे कुटुम्ब नहि हाथ तुम्हारे आवे ॥

इससे प्यारे यह बात मान लो मेरी ॥ धन० ॥

+ ३ +

वे निर्धन महा गरीब मूखके मोरे ।

करते हैं याचना तुममें दीन विचारे ॥

हे दाता अब हम आये सरण तुम्हारे ।

सत्पुत्र हैं मूखसे देखो प्राण हमारे ॥

उनकी सहायता करो विनय यह मेरी ॥ धन० ॥

+ ४ +

जे खूले लंगड़े नेत्र हीन फिरते हैं ।

अति दीन नहीं मनदूरी कर सके हैं ॥

अरु बन्ध होन जो हिम बाधा सहते हैं ।

वे सदा दीनता भार वहन करते हैं ॥

उनकी सहायता करो विनय यह मेरी ॥ धन० ॥



+ ९ +

“हमको चाहिये”

क्या इसी लिये यह धन तुमने पाया है ।

नित करो पेश आराम जो मन भाया है ॥

कोमल तकियासे टिक पान खाते हो ।

नहि दीन-दुखियोंकी ओर दृष्टि लाते हो ॥

क्या यही आपका धर्म कहो इस बेरी ॥ धन० ॥

+ १ +

तुम सदा सरस मय भोजनको करते हो ।

दीनोंको रुख रोटी भी नहि देते हो ॥

वढ़ मूल्य रेशमी वस्त्र पहिनते तुम हो ।

दीनोंको एक चिधड़ा नहि देते तुम हो ॥

क्या इसी लिये तुम पाई द्रव्य धनेरी ॥ धन० ॥

+ ७ +

अब हो जाओ दुशियार मान लो कहना ।

जग बीच तुम्हारा दो दिनका है रहना ॥

कर प्रीत धर्म सों भवसागरसे तिरना ।

यह सीख सुगुल्की सदा हृदयमें धरना ॥

तुम दया दान नित करो मिटे भव फेरी ॥ धन० ॥

+ ८ +

तन स्वारथ प्यारे परमार्थमें लगना ।

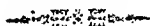
नित पराधीन दुखियोंका सहारा करना ॥

निज शक्ति सहित कर दान दीन दुख हरना ।

इस विषसे अपने धनको सफलत करना ॥

कहे 'गोरेलाल' स्वीकार विनय करो मेरी ॥ धन० ॥

पं० गोरेलाल जैन, रैपुरा ।



१-इस दुर्लभ मनुष्य जन्मको पाकर व्यर्थ न खोना क्योंकि यह आगमका उपदेश है कि मनुष्य जन्मका मिलना बार बार नहीं होता, इस लिये हमको चाहिये कि हम अपने मनुष्य जन्मको सफल करे ।

२-अपने आत्माको क्रोधादि कषायोंसे बचाना क्योंकि इनके द्वारा आत्माके ज्ञानादि गुण नष्ट होते हैं, इस लिये हमको चाहिये कि क्रोधादि कषायोंसे बचाकर अपने आत्माकी रक्षा करें ।

३-समस्त जीवोंपर करुणा भाव प्रदान करना, किसीको सताना नहीं, मित्रो ! जो जीव आपके द्वारा सताये जावेंगे और उनको जो दुःख होगा उस दुःखके भागी आप ही होवेंगे इससे जीवोंकी रक्षा जरूर ही करना चाहिये ।

४-संसारके सब जीव सुख चाहते हैं और दुःखसे डरते हैं, अगर आप उनके सुखमें किसी तरहकी बाधा डालेंगे तो याद रखो कि आप भी सुख नहीं भोग सकोगे ।

५-मूक पशुओंको भूखा मत रखो । उनके लिये घांसादिका पूरा बन्दोबस्त करो । भूखसे 'उनकी आत्मा' मत दुस्तावो । मित्रो ! मूखकी वेदना किसीसे सहन नहीं होती । इस विषय पर आप स्वयं विचार करे ।

६-संसारमें आकर सबके प्यारे बनो, किसीकी दृष्टिसे बुरे मत होवो क्योंकि जो मनुष्य सबका प्यारा होता है वही संसारमें सराहनीय और आदरका पात्र है ।

७-निज दुर्गुणोंके द्वारा आप सबके प्रति उरे है उन दुर्गुणोंको निकालनेकी कोशिश करो



और सदगुणोंके ग्राहक बनो । जब आप दुगुणोंको त्याग सदगुणोंके पक्के ग्राहक बन जावेंगे उसी वक्त मनुष्य आपको प्रेमकी दृष्टिसे देखेंगे ।

८—जो आप सबके प्रेमी बनना चाहते हैं तो आप भी सब पर प्रेम करो ! क्या बालक, क्या बृद्ध, क्या गरीब, क्या अमीर, क्या ऊंच, क्या नीच, क्या मूर्ख, क्या पंडित, और क्या शत्रु, क्या मित्र, सब पर एकता प्रेम प्रदान करो, फिर देखो आप भी सबके सच्चे प्रेमी बने जाते हो या नहीं ।

पूजारी गोरेलाल जैन, सहजपुर ।

—ॐ—❀❀❀—ॐ—

रायदेशके पंच और समाजसुधार ।

(छ० पं० नंदनलाल जैन वैद्य, इंदर)

मिलोडामें रायदेशके समस्त पंच एकत्रित हुए थे । पंचोंकी जाग्रत आठ दिन रही थी । चोने फिजूल खर्चका अटकाव करनेके लिये केवले ही ठराव पास किये । यदि इन ठरावोंके अनुकूल समस्त पंच अपना अपना कार्य करें तो कुछ समयमें अवश्य लाभ हो सकेगा । इसमें किसी प्रकारका संदेह नहीं कि ये ठराव बड़े ही महत्वके और उपयोगी हैं, ठरावोंका पास होना सब कुछ सरल है और सब जने ऐसा करते ही हैं, परंतु ठरावोंको अमलमें लाना अच्छा है । मात्र ठरावोंके पास होनेसे विशेष लाभ नहीं ।

रायदेशके ये शुभ चिन्ह हैं । रायदेशकी यह प्रथम जाग्रति है । संसारमें रायदेशके समस्त

कोई भी प्रांत सबसे पीछे नहीं है । रायदेशमें धर्म जाग्रति नहीं, ज्ञानका लक्ष नहीं, कर्तव्यके चिन्ह नहीं, आत्मबोध नहीं आदि सब बातें रायदेश सबसे पीछे हैं । इतना नहीं किन्तु रायदेशको इतना ज्ञान नहीं कि हमारी मलाइके कारण कौनसे हैं । रायदेशकी संतान धर्म विहीन है, रायदेश दश वर्षसे बोडिंग खोलना चाहता है परंतु शक्तिहीन है, द्वेष और अभिमानसे पूर्ण है, रायदेशके कितने ही आगेवान बोडिंगसे लाभ नहीं समझते, उनको उन्नतिकी बातें आखोंमें खटकती हैं । कुछ भी हो, रायदेश अभी गहरी नींदमें सोना चाहता है । उसे यह ज्ञान नहीं कि उसका सर्वत्व छूट रहा है, संतान हीन दीन दुःखी हो रहे हैं । ज्ञान मिलनेके विचारोंको कुछ साधन नहीं है । क्या रायदेशके पंच यह कभी सोचते हैं कि हमारी संतानको ज्ञान मिले, व्यापारका सुभीता हो, धार्मिक विद्याकी वृद्धि हो । नहीं, नहीं रायदेश अभी जुनी रुठियोंमें दिन व्यतीत कर रहा है ।

रायदेशके समीप कांठा है । जब कांठाके पंच उत्तमोत्तम ठराव पास कर जग उठे हैं, उनकी पंचायत एक दो दिनमें अच्छे कार्य कर उठ जाती है तब रायदेशके पंच अब एकत्रित होते हैं और विचार करते हैं, यह भी अच्छी बात है । प्रारंभमें ऐसी ही जाग्रति होती है धीरे २ वह विशाल रूप धारण करती है । रायदेशके भी इस जाग्रतिसे शुभ परिणामकी आशा है ।

रायदेश समझ रहा है कि बिना पंचि भोगन पंच एकत्रित नहीं हो सके । इसलिये जब २ पंच एकत्रित होते हैं दो एक हजारका पानी



હો જાતા હૈ । યદિ વે જ્ઞાની પ્રીતીમેં વિશેષ દ્રવ્ય સર્વ ન કરકેં કોઈ ઉપયોગી સંસ્થા જ્ઞોલ હેં તો કિતના લાભ ?

પંચાયતકે નિયમ જેસે સુખીતેકે હોને જાહિયે કિ કિસીકો વઢ ન હો, અસુવિધા ન હો, સહજાંસે કામ હો સકે । ગરીબ અમીર સબ કોઈ ભાગ લેસકે પરન્તુ રાયદેશકે નિયમ હસસે બિલકુલ વિપરીત હેં । દશ દશ દિન તક એક-ત્રિત હોકર વેકાર પડે રહના વર્તમાન સમયકે વિરુદ્ધ હૈ । પંચોકે એકત્રિત હોને પર નીમનોંકી ચાલ વહુત જુરી હૈ । કાંઠાકે પંચ દાલ રોટી જ્ઞાકર સાધારણ સર્વમેં કિતના કામ કરતે હેં, કાંઠા કિતના સુધર ગયા હૈ, સબ પંચ નિયમિત તારીખ પર એકત્રિત હો જાતે હેં તો રાયદેશકે નહીં ?

માદયો, યહ જાત કોઈ સૂઝ મૂઝ નિંદાકે લિયે નહીં લિખી હૈ કિન્તુ આપ વિચારો કિ આપ કિતને પીછે હો । યે જાતેં પંચોકે શોમાકી નહીં હૈ । અજ હન નિયમોમેં ફેરફાર કર દેના જાહિયે ઓર સરાવ રૂઢિયોંકી છોડ દેના જાહિયે ।

કાંઠાકે પંચોને અપની સંતાનકો સુધારનેકે લિયે બોર્ડિંગ જ્ઞોલ દિયા હૈ ઓર એક અચ્છી રકમ એકત્રિત કરલી હૈ । જ્યા રાયદેશ કાંઠાસે બિલકુલ ગિરા હુજા હૈ । જ્યા ઉત્તરો હસ જાતસે લાભ નહીં જાતી હૈ ? જ્યા રાયદેશમેં બિલકુલ શક્તિ નહીં ? રાયદેશકે માઈ કાંઠાકી અપેક્ષા અધિક ધનવાન હૈ, પરન્તુ વે અમી વિધાકા મહત્વ નહીં સમજે દુષ્ટ હેં । વે વિધાકે કાર્યોમેં દ્રવ્ય સર્વ નહીં કરના જાહતે હેં ઝનકો સમી તક જ્ઞાત્ય મલાઈ નહીં હૈ । માદયો, પેતો, વિચારો અપને કર્તવ્યો પર જ્ઞાલુદ્ધ હો ।

ઉચ્ચ ભાવના.

(લે. કેશવલાલ ત્રીભોવનદાસ, વડોદરા)

દરેક મનુષ્ય મજે હમેશાં ઉચ્ચ ભાવનાઓ રાખવી જોઈએ. આ સંસારમાં દરેક જીવને સુખની અભિલાષા હોય છે અને કોઈને કુઃખ જોખવવાની ઇચ્છા હોતી નથી, તો પ્રથમ, દરેક મનુષ્યે સાચું સુખ શું છે, અને તે સુખ કેવી રીતે પ્રાપ્ત કરવું તેનું જ્ઞાન સંપાદન કરવાની ખાત જરૂર છે. દાખલા તરીકે—આપણી દેહના તથા કુટુંબના પોષણ (ઉપજીવિકા) માટે અનેક ઉપમ કરી ધન પ્રાપ્ત કરવાની ઇચ્છા રાખીએ છીએ ને ધન પ્રાપ્ત કરી ઉપજીવિકાનું નાણવાન ઇન્દ્રિય સુખ મેલવીએ છીએ. તેમ સાચું સુખ પ્રાપ્ત કરવાને માટે દરેક મનુષ્યે દિગંબર જૈન આચાર્યોએ કહેલા તત્ત્વોનું શોધન કરવું ને તે તત્ત્વો મુજબ હમેશાં સંસારથી વિરક્ત રહી શ્રદ્ધ-સ્થેએ-દેવપૂજા, ધરની ઉપાસના, સ્વાધ્યાય સંયમ, તપ, અને દાન, એ કર્મો હમેશાં કરવાની ભાવના-રાખવી, છતાં કોઈ શ્રદ્ધ અધુરો અધુરો એ કિષાઓ જની શકે. તેવી શક્તિ અને સંજોગ ન હોય તો પણ તે જ કર્મો કરવા કપારે વખત મળશે તેવી હમેશાં ઉચ્ચ ભાવના (વિચાર)માં રહેવું જોઈ તે સમય પણ આવી મળશે ને જ કર્મો યથો ને અન્તિમ સુખ પણ પ્રાપ્ત થશે, તેનો વાજે દાખલો નીચે મુજબ છે—

સુરત નગરમાં ઇંગ્રેજ રાજ્ય હોવાથી ઇંગ્રેજ બહાવાની ચર્ચા થવા લાગી અને સાથે લોકોમાં પુરતક અને સમાચાર વાંચનારો જોખ વધ્યા. સંવત ૧૮૦૭ સ. ૧૮૫૦ માં એડ્વરસ લાયબ્રેરી નામનું પુસ્તકાલય સ્થાપિત થયું. લોકો તે દ્વારા ગ્રન્થસભી અને ઇંગ્રેજ વાંચનારો લાભ લેવા લાગ્યા. સંવત ૧૮૦૮ સ. ૧૮૫૧ માં મધુપત ગાંધીવાજી જોખને વેળે ધર્મથી મધુવાજી પ્રેમ



હતો, જ્યારે આગળ બોધાત્મકતા યાત્રા કરવા નીકળ્યા હતા ત્યારે સુરત થઈને ગયા હતા તે વખતે અત્રે પ્રત્યેક જોમનું બહુ સન્માન હતું. આયકવાડે સુરતમાં એટલું ધર્મ અને દાન હતું કે જોમની પ્રશંસા આખા શહેરમાં ફેલાઈ-જેટલા દિવસ ત્યાં રહ્યા ત્યાં સુધી દાનનું રાજ્ય રહ્યું.

એ વખતે એક રાત્રે શેઠ દિરાયંદરજી પોતાની પત્ની સાથે ગાયકવાડના દાનની મોટી પ્રશંસા કરી અને ગાયકવાડની જે વાત બબરમાં સાંભળી હતી તે બધી કહી બતાવી. ગાયકવાડે હરથેક મંદિર-પાઠશાળા વીગેરેમાં ધણું દાન કર્યું હતું. વીજલીખાતનું ચિત્ર ધણું જ કોમળ હતું. જ્યારે કોઈના શુભની વાત સાંભળે ત્યારે દિલ ઉતારાઈ આવતું. તેમના મનમાં એ આવ્યું કે હું ક્યારે મૃત્યુ પાડું અને ખૂબ દાન-ધર્મ કરું અને બધાને તૃપ્ત કરું. વિચારતાં વિચારતાં શેઠ દિરાયંદરે કહ્યું કે જુઓ, આપણા ભાગ્યને ઉદય મારે આવે કે આપણાથી એવું દાન ધર્મ થાય. શેઠ દિરાયંદરે કહ્યું કે આપણે તો એવા ભાગ્યશાળી નથી કેમકે અત્યાર સુધી અત્યાર કરતાં ખરચ કરતાં વધારે પ્રાપ્ત કર્યું નથી. જે વર્ષે પાનાચંદનો જન્મ થયો તે વર્ષમાં વ્યાપારમાં સારો લાભ મળ્યો હતો. હાલ તો સાધારણ લાભ થયા કરે છે પરંતુ મને એવી આશા છે કે પાનાચંદ અવરત્ય ભાગ્યશાળી થશે અને દ્રવ્ય કમાશે તે વખતે કદિ તેનું પરિણામ દાન ધર્મમાં ફરશે તો એ પણ દાનની સુગંધને ફેલાવશે, જેની રીતે આજ ગાયકવાડનો યશ થઈ રહ્યો છે. એવી રીતે પરસ્પર વાર્તાલાપ કરી પતિ પત્નિ એજ રાત્રિએ અતિ પ્રેમથી સ્વપ્નગ્રહમાં સુઇ ગયાં. એજ રાત્રિએ વિજલીખાત ગર્ભવંતી થયાં. વીજલીખાતનું મન આખી રાત્રી દાનના ઉત્સાહમાં ફેલાઈ રહ્યું હતું. એ રાત્રિ એજ હતી કે સુપ્રસિદ્ધ -શેઠ માણિક્યંદરનો જીવ વિજલીખાતના ગર્ભમાં આવ્યો, જે આજના ગર્ભરધાનમાં વિરાસ કરનાર દાનના પ્રદેશ તેમાં લાગુ પડ્યા. તેમ

જેમ ગર્ભ વધતો ગયો તેમ તેમ વિજલીખાતનું મન દાનને માટે ઉત્સાહનું હતું. સાધારણ સ્થિતિ ના લીધે એટલું તો હમેશાં કરતા હતા કે કોઈ ખારણા ઉપર ગાંગવા આવે તેને કશાથી મુંઠો આપતો હતા. સારી ભાવનાઓની અસરથી સારંગ થયા કરે છે. સંસારી જીવોના ભાવથી પુણ્યનું પરિણામ થાય છે.

(દાનવીર માણિક્યંદર જીવંતચરિત્ર પૃષ્ઠ ૧૦૫-૧૦૬)

ઉપરના દાખલાથી સ્પષ્ટ માલમ પડશે કે ઉચ્ચ ભાવના રાખવાથી ઉચ્ચ વિચારની સંતાન પ્રાપ્ત થાય છે. શેઠ માણિક્યંદરજીના કાર્યથી કોઈ અજાણ નથી. આખા હિંદુસ્થાનમાં તેમના કોમની બહોળાલાલી છતાં રહી છે. એ તેમના માતૃ પિતાની ઉચ્ચ ભાવનાનું પરિણામ છે માટે ધર્મ બધુંજો, તમો સાચું સુખ પ્રાપ્ત કરવાનો વિચાર રાખતા હો તો તથા શેઠ માણિક્યંદરે જેવા દિગંબર જૈન 'સધમાં નરતન' જેવા ધરાદો રાખતા હોય તો હમેશાં પ્રાતાઃકાલમાં સ્વપ્નરચના છોડી સામાયિક (તપ) વગેરે ઉચ્ચ ભાવનાઓ ભાવવા સુકતા નહિ. પુણ્ય અને પાપ એ આત્માનાજ પરિણામ છે માટે હમેશાં પરિણામ ઉચ્ચ રાખવા એવી મારી વિનંતિ છે.

આવશ્યક નિવેદન.

એટલું તો સર્વે બોધજોને જાણીતું છે કે સુરતરાતના પાટનગર અમદાવાદ શહેરમાં મહંમદ શેઠ માણિક્યંદર પાનાચંદના કુટુંબ તરફથી શેઠ પ્રેમચંદ મોતીચંદ દિગંબર જૈન મોર્ડિંગ સ્કુલના અંગે સર્વે દિગંબર બોધજોની સગવડવાની ખાતર એક ધર્મશાળા રાખવામાં આવી છે. તેમાં વાસણ, બીજાનાં, ગાદલાં તેમજ સુમારોને જરૂરઆતની ઘણી વીજોની ખાત્રી હતી, અને તે ખાત્રીની આવરપકતા સર્વે દિગંબર બોધજોને તેમજ કાર્યવાહકોને તેની બહુ પણ હતી. અમો અત્યંત આનંદ પૂર્વક જણાવીએ છીએ કે આ ખાત્રી ધ્યાનમાં લઈ એની મોર્ડિંગ



સ્કલના સુધીન્દ્રેન્દ્ર છોડાલાલ નાથુરામ પરવારે
ગયા વૈશાખ માસમાં જ્યારે સર્વે મેવાડા બાધ-
ઓની લગનસરા સોજના મુકામે ભરાએલી હતી,
તે તરનો લામ લઇ કેટલાક ઉત્સાહી મેવાડા
બાધઓની મદદથી આશરે ૮૦૦) તું એક ઉમદા
ફંડ કરી આપ્યું છે. તથી સર્વે મેવાડા બાધઓ
ધન્યવાદને પાત્ર છે, પણ હાલની મોંઘવારી ધ્યા-
નમાં લેતાં આ ફંડ જરૂરીઆત કરતાં ઘણું
ઓછું માલમ પડે છે, માટે સર્વે દિગંધર જૈન
બાધઓને તેમાં ખાસ કરી હુમડ તથા નરમોડપુરા
બાધઓને વિનંતી કરીએ છીએ કે તેઓ યથા-
શક્તિ આ ફંડમાં મદદ કરશે. આ ફંડમાં સહાય
કરનાર મેવાડા બાધઓના નામ નીચે પ્રમાણે છે-

- ૧૨૫) કેવળદાસ કિશાભાઈ, ભોરસદ
- ૧૨૫) મેમાનંદ નારજીદાસ, ભોરસદ
- ૧૫) ગંગાદાસ માધવજી, ઇસજીવ
- ૫૧) લક્ષ્મીભાઈ દેવચંદ, ધાવજ
- ૨૫) શંકરલાલ તાપીદાસ, આમોદ
- ૨૧) જસગભાઈ કિશોરભાઈ, ભોરસદ
- ૧૧) વીરચંદ તળસીભાઈ, દાવોલ
- ૧૫) ડો. બાઈલાલ કપુરચંદ, નાર
- ૨૧) કિશાભાઈ પીતાંબરદાસ, સન્નેત
- ૧૭) બાબરભાઈ વ્રજલાલ, પીપળાવ
- ૨૮) નાથાભોઈ વ્રજલાલ, વેઢ્ય
- ૨૫) દલપતભાઈ કેવળદાસ, સોજના
- ૭) બેચરદાસ નાથાભાઈ, ભોરસદ
- ૨૫) બાઈજીભાઈ પાનાચંદ, ભોરસદ
- ૨૬) લક્ષ્મીભાઈ હરગોવિંદ, પરીએજ
- ૨૧) વ્રજલાલ રજીવભાઈ, સોજના
- ૧૧) જયેશદાસ રજીવદાસ, મોજના
- ૫) કદાનદાસ મણીચંદ, વડોદરા
- ૧૧) ગણેશચંદ તાપીભાઈ, મલીઆતગ
- ૭) ગંગાદાસ દરગોવિંદ, મહેળાવ
- ૧૧) બેચરદાસ મણીચંદ, તારાપુર
- ૬) ભાઈલાલ મેલભાઈ, વડોદરા
- ૭) રૂપચંદ વીલચંદ, મે

- ૧૧) વનમાળીદાસ નાનચંદ. દાવોલ
- ૭) હરજીવન લાલચંદ. વડોદરા
- ૫) કુલચંદ શુલાળચંદ. પરીએજ
- ૫) પૂંજભાઈ દુલ્લભદાસ. માલાવાડા
- ૨) શીવલાલ મુલજીભાઈ વસો
- ૫) સીન્હાવ ગંગાદાસ. પાદરા
- ૫) બેચરદાસ અમરચંદ. માલાવાડા
- ૫) મુલજીભાઈ અમીચંદ. ભોજ
- ૨) શા. પીતાંબરદાસ જયેશદાસ. દાવોલ
- ૨) તળસીદાસ તારાચંદ. દાવોલ
- ૫) કુલચંદ કદાનચંદ. કાણીસા
- ૨) કેવળદાસ મુળચંદ. આમોદ
- ૧) નરસીદાસ તારાચંદ દાવોલ
- ૧) ત્રીકમદાસ ખુશાલદાસ. બાકરોલ
- ૭) મુલજીભાઈ કેવળદાસ. જોયારાણુ
- ૫) મોતીલાલ ત્રીકમભાઈ મંજીવપરા
- ૨) છોટાલાલ દલપતલા. આમોદ
- ૫) મથુરદાસ પાનાચંદ. ભોરસદ
- ૫) હરગોવિંદદાસ રામદાસ. વડુ
- ૪) કલાણુદાસ રામદાસ. વડુ
- ૫) મંગળદાસ રામદાસ. વડુ
- ૫) મંગળલાલ પરમોતમ. વડોદરા
- ૧) દામોદરદાસ હરગોવિંદ. મહેળાવ
- ૫) મોતીલાલ તળસીદાસ. વડુ
- ૫) હરજીવનદાસ મથુરદાસ. જલાલપુર
- ૫) પૂંજભાઈ હરજીવનદાસ. વડો
- ૭) તાપીદાસ હરગોવિંદદાસ. આમોદ
- ૫) સા. નાથાલાલ મણીચંદ. વાજ
- ૧૧) શા. જશગંભાણીચંદ. બાકરોલ
- ૭) પરસોતમદાસ અંબજીદાસ. પડોળી
- ૪) સા. કાગીદાસ હરજીવનદાસ. આમોદ
- ૨૧) જીવાભાઈ હરજીવનદાસ. જાણગા
- ૪) જસગભાઈ નાથાભાઈ. કાણીસા
- ૫) ડો. નગીનલાલ નેમચંદ ભોરસદ
- ૨) રાધેચંદ તલચંદ. વડોદરા
- ૭) મથુરદાસ રામચંદ. સોજના



- ५) सत्युभाध शुद्धाभय- पादरी
- ५) अ'यधदास धरदास. वरु
- ७) मेयरदास शुद्धाभाध. करमसद
- ४) नारणदास नाभाभाध. काशीसी
- ७) रायसंगल प्रज्जवाल. काशीसी

छेवटभां वध्याववातु के मेवाडा भाधयोये
पेतानी उदारदा यतापी जे दाभये। मेसाउये
छे, तेने अन्य दिगं'अर भाधयो अनुमरशे. अमे
आशा राणीये छीये के कार्वाहको आ इ'उने
सह उपयोग'करी सये' दिगंबर भाधयोने. भातरी
करी आपरी, के तेमना पैसाने जेधये तेवी
सारी रीते सफ उपयोग थये छे.

गावि सेवको-

छोटेदास नाधुराम परवार
मेरसदवाणा मोहनदास भगनदास
शाह भाधलास शालीदास

नवीन ग्रन्थ-

चर्चा समाधान

इधमें जैन विद्वान्तके रहस्योका १२५ प्रश्नोत्तरोद्गारा
उत्तमतासे समाधान किया गया है । खुले १४, बदे
७१५, बड़ी सार्दिस, शुद्ध उगई १६० और मुख्य
२॥=) अक्षर भगादये ।

मेनेजर, दि० जैन पुस्तकालय-सरत ।

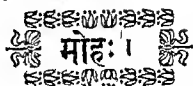
हमारे उत्तमोत्तम ग्रंथ ।

आदि पुराण	१६)
उत्तर पुराण	१०)
दोनों एक साथ	५॥)
पंचाध्यायी टीका	५॥)
धर्म-प्रश्नोत्तर	२)
जिनशतक	॥)

मिलनेका पता—

लालाराम जैन,

मल्हारमंजु इंदौर ।



(ले० चन्दनमल जैनाध्यापक, शालारामन)

—मोहकी शराव पी खराब हो रहा है—

कोई महानुभाव तुझे नमता, कोई अनुराग,
कोई प्रेम, कोई राग-द्वेष मिश्रित भाव, कोई
स्वपर भेद शून्य कह कर पुकारते हैं किन्तु
यदि सच पूछा जाए तो तु एक ही है परंतु तेरे
नाम, उपनाम और चिन्ह अनेक हैं । काम,
क्रोध, मान, माया, लोभ, मत्सरता, छल, कपट,
पाखण्ड, चोरी, डकेती असत्यादि जितने भी
दुर्गुण एवं कुवासनाएँ हैं, वे सब किसी न
किमी वंशमे व किसी न किसी रूपमें तेरे ही
साथी सगे हैं । वे सब तुझे अपना स्वामी एवं
राजा मान कर प्रतिदिन, प्रतिक्षण नूतन नवीन
बलियोंकी भेटसे तेरी ही सेवा सुश्रुषा किया करते
हैं । उनकी प्रत्येक कुचेष्टा और कुचिकित्साकी
प्रस्तुतता ही नहीं चरन् उनके प्रयत्न, परिश्रम
एवं उद्यमकी कटिबद्धतासे भी प्राणीमात्रको
अशुभ कर्मोंकी कालिमासे कलुषित करना ही
उनकी महत्वाकांक्षा जान पड़ती है । अतः तेरी
पिशाचोंसे तुलना की जाए तो कदाचित् संभव
है कि कुछ समानता प्रगट हो किन्तु हाय मोह !
तू तो बेचारे अवोष जीवोंको नाम मात्रका बाह्य
सुखका स्मरण कराकर अंतरंगके क्षोभमें तुरत
कैमा देता है ।

फलत तू तो पिशाचोंका पिशाच ही है ।

तूने तो बेचारे पिशाचोंको भी अपने जुगुलमें



गो०—सच है जो दूसरोंके नाम आते हैं, उन्हींको मान मिलता है। देखो संसार कैसा स्वार्थी....हैं। कैसी घटा उठ आई! अरे! अभी तो कुछ नहीं था। देखते २ यह छो बिगड़ी कड़कने लगी! बाह!

रामू—यह छो पानी भी बरसने लगा—पर हैं यह चिन्ताता कौन चचा आता है? अरे! कोई खी है! यह क्या? यह तो उन माइयोंकी महन—“अरे भगवानके लिए मुझे इन अत्याचारियोंके हाथसे बचा लो। ये चाण्डाल मेरी जानके पीछे पड़े हुए हैं। हाय राम! वह आए! हाय! मुझे नरदी छिपाओ। नहीं....।”

गो०—अरे, यह तो येहोश हो गई। वहाँ एकांत स्थानमें ले चलना चाहिए पर वे कौन भागे चले आ रहे हैं!

राम—छो भाई! यदि इनको बचाना हो तो लड़नेको तैयार हो जाओ।

पश्यत्-इधर इन आमुन्तक सज्जनोंसे इनकी मुटुमेड़ होती रही, उधर कोई सुशीलाको लेकर चलता बना। अग उन्होंने होश आया तो देखा सुशीला नहीं है। पर उनने प्रतिज्ञा कर ली कि उसकी रक्ष अवश्य करेंगे।

(१)

“भलाईको न भूलेगें, सुविज्ञाको न छोड़ेंगे।
ठठले प्राण लो देंगे, प्रतिज्ञाको न तोड़ेंगे ॥”

गो०—भाई! बड़ी घेय अटकी है। यदि जरा भी छुटे हाथ फारवाई करते हैं तो घुरालीकी जान जोखममें हुई जाती है। और यदि चुप हुए जाते हैं तो प्रतिज्ञा भंग हुई जाती है। बड़ी असंजमसता है।

रा०—जी हां, है तो विकट सपरमा! पर मैंने इसे हट करनेको एक रास्ता निकाला है। अर्थात् सस्ते अच्छा मार्ग यही है कि हम हम चुपकेसे उनका पीछा करें और अवसर पाते ही सुशीलाको उनके व्यर्थोंसे निकाट लेना है।

मो०—है तो ठीक बात। तो अब Detective बनना पड़ेगा।

रा०—जीहां! चलिए अभी हीसे वन जाइ वरना पता लगाना कठिन हो जायगा। तत्पश्चात् गोपाठ और रामः—अपनी प्रतिज्ञानुसार खाना हुए। पता लगाते २ उनको उन मकानको पता लग गया जिसमें सुशीला थी। दोनों यह प्रतीक्षा कर रहे थे कि कब अवसर पड़े और कब सुशीलाको छुड़ा पावें। रात्रि बड़ी भयानक थी। पर उसी रात्रिको मित्रोंने सुशीलाको वहांसे निकाट लिया। अपने घरको खाना हो गए। वहां पर उसका आग और रहना किसीको विदित न किया।

(४)

गोपाठ और रामू अब उन सेठजीके पीछे पड़े हैं। उनने आप सेठजीसे मिलनेका कर लिखा है। सेठजी भी सुशीलाके होनेमें इनको घपकाते हैं। अन्तमें दोनों जीके यहां जा पहुंचे। सेठजीने ख्यास करके इन्ते पूछा:—

“इसको मखम हो गया है कि उन्हींने यहांसे छुपा दिया है। अब मछाई इसीमें है कि उसको मेरे पास कर जाओ।

मो०—सेठजी अपना कहना ठीक पर आप यह भी जानते हैं कि सुशीला



आपसे विवाह कानको राजी नहीं है, तिसर आपने उसे उसके माइयोंको रुपया दे खरीदना चाहा है । इस प्रकार आप मारी गउती पर है । नम आपसे मेरा यही कहना है कि आप इस पापवृत्त का ध्यान हृदयसे निकाल डालिए ।

सेठ—वाह जी वाह ! लड़कीको ब्रह्मा का ले गए । अब बातें बनाते हैं । ठहरो तुम्हें कैसा मना खलाता हूँ ।

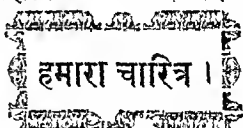
रामू—सेठजी सावधान ! इन घमकियोंसे हम खरनेवाले नहीं हैं । हम खुद अदायतमें आपके ऊपर मामला चलानेवाले हैं । आपको मालुम है मुशीलाके पिताने उसका पाणिग्रहण मेरे साथ करानेका प्रण कर लिया था और देखिए स्वयं मुशीलाने यह क्या दिखा है !—

“मुझे अच्छी तह याद है कि मेरे पुत्र्य पिनाजीकी इच्छा मेरी लग्न बाबू रामचन्द्रसे कानेकी, थी परन्तु इस रक्षा की पूर्विक पहिले ही उनका अचानक देहावसान हो गया । तत्पश्चात् मेरे माई मेरे रक्षक बने पर चारित्रहीन होनेके कारण उन्होंने सब घन बराद वर दिया । अब अपनी पाशविकताकी पूर्ति हेतु उन्होंने मेरेको एक घूरे सेठके हाथ बेचना स्वीकारा है । पर मैं इसे ‘अत्याचार’ समझती हूँ । और माइयोंको ‘अत्याचारी’ मानती हूँ ।

अब मैं सेठ गोपाउदामजीको और अपने मायी पति बाबू रामचन्द्रको इस विषयमें पूर्ण अधिार देती हूँ कि वे मेरी तरफसे पंचायत एवं राज्यसे उचित न्याय करावें और अत्याचारियोंको दण्ड दिवावें । मैं अपने पिनाजी ईच्छानुसार बाबू रामचन्द्रको अपना मायी पति

स्वीकार करती हूँ आदि ।” देव लिया क्या लिखा है ! अब क्या मर्जी है ?

सेठजी—मर्जी क्या ! मेरे तो होश ठिकाने नहीं ! जमाना ही बदल गया ! अरे मगवान ! क्या होनेका ! इति शम् ।



(सेठ—दामोदरलाल जैन)

प्रिय वाचकवृन्द !

यह बात निर्विवाद सिद्ध है कि इस असार परिवर्तनशील दुःखमय संसारमें एकेन्द्रियसे लेकर सैनी पञ्चेन्द्रिय पर्यन्त यावन्मात्र आत्माएं हैं वे सर्व सुख एवं शान्ति प्राप्त करना चाहती हैं । ऐसी कोई भी आत्मा नहीं है जो दुःखता ही अनुभव करती रहे और सुख न चाहे । अस्तु । अब हमें विचार इस बात पर करना अत्यन्त आवश्यक है कि किन २ कार्योंके करनेसे यह जीवात्मा अपनेको सुखी बनाता है, किन २ कारणोंके संयोग बरलेनेसे शान्तिप्राप्त करता है और ऐसे कौन २ कार्य हैं जिनका कर्ता होता हुआ यह दुःख एवं अशान्तिदशामें पतन करता है क्योंकि यावत्काष्ठ हमको उक्त कार्योंका बोध नहीं होगा तब तक शान्तिप्राप्त होना बालुका गृह तुल्य ही होगा । स्वामी उमास्वामिने स्पष्ट रीतिसे अपने ग्रन्थमें कहा है कि सम्यग्दर्शनज्ञानचरित्रके संयोग होनेसे परमशान्ति दशा होती है । निर समय आत्मा उक्त स्वभावोंसे अलङ्कृत अपने आपको कष्ट



है स्वयं तट्टुन होता है उसी समय अनुपम शान्ति लाभ करता है परन्तु यदि उक्त सम्यग्दर्शनादिमें चारित्रकी न्यून अवस्था हुई तो कदापि सुखकी प्राप्ति नहीं हो सकती अतएव अनुपम शान्ति लाभ करनेमें यदि हम चारित्रको ही परम सहायक समझे तो कोई अन्युक्ति नहीं आसकी, अस्तु । नव चारित्रका इतना उच्च दर्जा है तब उसका ज्ञान प्राप्त करना, उसके धारण करनेकी विधिका जानना और आधुनिक चारित्रसे भी जानकारी करना आवश्यक है । आधुनिक कालमें चारित्रकी अवस्था ठोक बेंसी ही है जैसी कि किसी नवीन आभूषणादि वातुकी कुछ काल बीत जाने पर हो जातो है । देखिये कहीं पर यह चारित्र शुभ कार्योंकी ओर यत्किञ्चित् दृश्य रख कर मनमानी शस्त्र विरुद्ध प्रवृत्ति करना ही पूर्णताको प्राप्त हुवा समझा जाता है, कहीं पर अनिच्छा पूर्वक एवं प्राचीन पद्धतिके वशीभूत होकर श्री जिनेन्द्रके दर्शन कर किसी तरह ५ मिनिट पूर्ण कर देना ही इनकी उत्कृष्ट सीमा समझी जाती है, कहीं कहीं घोर पापोंमें रात्रि दिन तल्लीन रहते हुए बाह्यमें सर्व साधारणको दर्शानेके लिए चार छह हरित कायको रख सर्व हरित पदार्थोंका त्याग देना साक्षात् आनन्दका दाता समझा जाता है और कहीं पर सन्तुष्टि की श्रुतिके लिए नन सन्तुष्टिमें महत्त्व दिखानेके लिए शस्त्र विरुद्ध क्रियाओंको करना, उच्चैः श्रावकादिपदका प्ररण करना वास्तविक चारित्रकी परम सीमा है । पाठक-मृन्द विचारिये, क्या कभी आपने नकली चीजसे आनन्द प्राप्त होते देखा है ? क्या नाली चीज

कभी असलीका मुकाबिला कर सकती है और क्या परीक्षकोंकी दृष्टिमें नकली वस्तु कभी उत्तम हो सकती है ? इसका उत्तर नहींमें ही होता है । हमने आधुनिक चारित्रका बहुत ही उत्तम ऊँची शृंगार बना दिया है, उसको अत्यन्त संगीन कर दिया है पर ऐसा चारित्र धारण करनेसे हमारी शान्ति नहीं हो सकती । क्या हमरा अनिच्छा पूर्वक यद्वा तद्वा ५ मिनिट मंदिरजीमें देवदर्शन करनेमें लगा देना, रात्रि दिन नाना प्रकारके जन्मालोंमें फंसे रहना ही कर्तव्य है ! क्या यही चारित्र है ? यदि यही चारित्र है तो माली व्यातादि तो अवश्य हमारे आदर्शनीय है क्योंकि वह तो रात्रि दिवस देवालयमें ही रहते हैं परन्तु हम उनको तो नीच दृष्टिसे ही देखते हैं । लेकिन जिसका मन ही देव दर्शन करनेको नहीं होता, जो सामाजिकव्यवस्थाके कारण नित्य प्रति ५ मिनिट इसमें व्यतीत करदे तर्हि उसे हम आदर्शनीय समझते हैं, वह भक्तकी उपाधिसे विभूषित किया जाता है । क्या किञ्चिन्मात्र शुभ क्रियाओंका सम्पादन करना और रात्रि दिवस क्रूरित्तव वासनाओंकी वृत्तिके लिए नाना प्रकारकी भोग सामग्रीके प्राप्त करनेमें अपने समयको बर्बाद कर देना उत्तमता है—साधारता है ? यदि हि सदाचारता एवं उत्तमता है तो त्रिपण्डितगिरि रावणका मुण्डशस्त्रान अवश्य होना चाहिये या क्योंकि वह तो देव पुनादि ग्रहस्थोषित शुभ कर्मोंका सम्पादन करनेवाला अवश्य था पर वह क्यों पतित हुआया ? क्या रागद्वेषको रूढ़ते हुये ही चार छह हरित काय पदार्थको रख कर शेष



आज्ञा हमें दी है। यही उपदेश हमें भी सर्वोपरि प्रतीत होता है और इसी उपदेशके अनुकूल कार्य करनेसे हम उन्नत हो सकते हैं। तीर्तय कहनेका यही है कि यदि हमको अपनी आत्माको शांति, लोभ कराना है, उन्नत पथ पर ले जाना है और आत्मिक अन्तः शुद्धीका उसमें विकास कराना है तो हमारा कर्तव्य है कि हम शास्त्रानुकूल चारित्र्य धारण करें, मन वचन कायकी अशुभ प्रवृत्तियोंको दूर हटा कर शुभ कार्योंमें योग दें, सदा अपने मन वचन कायको पवित्र रखें, विप-यवासनाओंमें सारी शक्तियोंको लगा देवे तब ही हम उन्नत हैं, तब ही हम जीवित हैं, तब ही हम पवित्र धर्मके पूर्ण अनुयायी हो सकते हैं अन्यथा हम अभी जैसे हैं वैसे भी नहीं रह सकेंगे—सदा अन्नत होते बड़े जावेंगे और हमारे नामशेष होनेमें देर नहीं लगेगी।

बालकोंकी शिक्षा ।

प्यारे बालक ! तुम निम्न लिखित शिक्षाओंको ग्रहण करो। वे शिक्षाएँ आपको बहुत लाभकारी होंगी इसलिये तुम उनपर अपना पूर्ण लक्ष्य दो !

(१) बाल्यावस्थाको पारकर विद्या पढ़नेमें अपना विशेष ध्यान दो क्योंकि बाल्यावस्थामें ही विद्या प्रप्त होती है ।

(२) विद्या दाता गुरु और अपने पुण्य माता पिताओंकी आज्ञाका पाठन करो। बड़ोंकी आज्ञाका पालन ही तुम्हारा पाम कर्तव्य है।

(३) अपना समय स्रेष्ठ क्रामें व्यर्थ न बिताओ क्योंकि जो समय आन तुम्हारे हाथसे निकल जायगा उसका मिटन फिर तुम्हारे लिये

कठिन हो जायगा इसलिये अपने समयको पठन-पाठनमें खर्च करो।

(४) मान कभी न हों करो, सदा ही नम्रता धारण करो। देखो रावणने मान किया था। आखिरको उसकी क्या दशा हुई ! लक्ष्मणके हाथसे रणमें मारा गया और सब रामनाथ भी धूलमें मिल गया और अन्तमें नरकोंको जाना पड़ा इससे मानको हानि कारक मानकर छोड़ दो।

(५) सदा ही सच बोला करो भूत का झूठ वचनोंको मिट्टा पर न लाओ।

(६) किसीको गाली आदि खोटे वचन मत कहो। अगर तुम किसीको गाली वा खोटे वचन कड़ोगे तो तुम्हें भी दूसरे गाड़ी और खोटे वचन कहेंगे और मरनेके डिये तयार हो जावेंगे ऐसा जानकर किसीको भी गाली न दो।

(७) सबसे भीठे वचन बोलो। भीठा बोलना ही दूसरोंको प्रिय और वन्द्य करनेका मंत्र है। देखो कोयल अपनी भीठी 'धानी' बोलकर संसारको अपना बना लेती है और कौआ बहुत बचन बोलता है इसलिये उसके बचनोंकी निंदा होती है और उसे कोई भी नहीं चाहता इसलिये तुम कोयलके समान भीठे वचन बोलो जिससे ही तुम सबको प्रिय और आदरके पात्र बनो।

(८) मूलर भी भनड़ना पानी न पियो।

(९) हलवाईके यहाँकी मिठाईको जहाँ तक चने त्याग ही करो।

(१०) बिड़ी चुट तपावू आदि सोटी माइक वस्तुओंका त्याग करो।

(११) विद्याज्ञ विषय सबसे अच्छा है।

विद्यार्थी दीक्षाराम, जैन पाठशाला,
करंगी।

॥ धोवीतरागाय नमः ॥

शेठ प्रेमचंद मोतीचंद दिगंबर जैन धोडिंग तरफरी प्रगट धतुं मासिक

॥ दिगंबर जैन ॥

THE DIGAMBAR JAIN

नाना कलाभिविविधेषु तथैः सत्योपदेशैस्सुगुणवर्णनाभिः

संशोधयत्यभिर्दधवर्तताम्, दिगम्बरं जैन समाज-मात्रम् ॥

का १० वीं

॥ चैत्र संवत् २४४३, चैत्र, विक्रम सं० १९७३ ॥

अंक ६ ठा



शोक! शोक!! महाशोक!!!

हाय ! आज लिखते लेखनी कांपती है ।

हृदय धड़कता है । आंखोंसे आंसुओंकी धारा बहती

है । चारों ओर निराशा, निम्नज्वला, दिखाई पड़ती

है । जमीन, आस्मान शून्यसे प्रतीत होते हैं ।

आंखोंके आगे अंधकार छा गया है । ओ दुष्ट माय !

यया तुझे हमारे ऊपर ऐसे ही समय इतनी भारी

विपत्ति पड़कनी थी ! और पापी ! जरा हमारी दशा

तो देख ! और अधम ! हमने तेरा क्या बिगाड़ा है ?

जो तू हमें इस तरह दुःख दे देकर मार रहा है !

हमारी स्थिति तो देख ! कुछ दिन पहले ही तो

तूने हमारी जातिके जेना जैन कुटुम्बपूज्य धनवीर शेठ

माणिकचन्द जीको हमसे जुड़ा लिया है । हम तो उनका

शोक ही न भूके थे । उन्ने बेअन काम करते उनकी

याद बिना आये नहीं रहती थी, इतनेहीमें तू

इत असमयमें ही हमारे एक मात्र आधार, एक मात्र

अवलंब, एक मात्र सहायक, और एक मात्र कर्णधार-

को हमसे पृथक् क्यों कर दिया ! हमारे हृदयको

देख ! हमारी मनकी स्थितिको देख ! जरा तो दया

करना था । वना ! अब हम किसके पास जाकर जैन

सिद्धान्तका रहस्य समझेंगे ? किसके द्वारा जैनधर्म-

की सच्ची प्रभावना करावेंगे ? किसको उस्तुवोंमें बुझा

कर जैनधर्मपरके झूठ दोषोंको दूर करेंगे ? कौन

जातिको उसको सच्ची अवस्था बतायगा ? कौन

उसके कल्याणका मार्ग दिखायगा ? कौन उसकी

डूबती नौकाको हस्तावलंबन देकर पार करेगा ? किमसे

स्याद्वाद न्यायकी कुंजियां सीखेंगे ? किस विद्वान-

केपास जाकर जैनसमानकी वास्तविक स्थितिका ज्ञान

प्राप्त करेंगे ? किनके द्वारा स्पष्ट और हृदयके उद्धार मुन

संकेत ? सदाचारकी प्रतिमा कहाँ देख सकेंगे ? इन

सबका उत्तर तो तूने हमसे छीन ही लिया ।

हमारा मुकुट छीन लिया । हमारा गौरव छीन लिया ।

हमारा एक मात्र आभूषण छीन लिया । जातिके

मुपृत छीन लिया । वना ! पापी वना ! हमारे

आधार, हमारे कर्णधार, हमारे अवलंब, हमारी

आज्ञा हमें दी है। यही उपदेश हमें भी सर्वोपरि प्रतीत होता है और इसी उपदेशके अनुकूल कार्य करनेसे हम उन्नत हो सकते हैं। तात्पर्य कहनेका यही है कि यदि हमको अपनी आत्माको शांति, लोभ, क्राना है, उन्नत पथ पर ले जाना है और आत्मिक अन्तः शुणोंका उसमें विकास कराना है तो हमारा कर्तव्य है कि हम शास्त्रानुकूल चारित्र्य धारण करें, मन वचन कायकी अशुभ प्रवृत्तियोंको दूर हटा कर शुभ कार्योंमें योग दें, सदा अपने मन वचन कायको पवित्र रखें, विषयवासनाओंमें सारी शक्तियोंको लगा देवे तब ही हम उन्नत हैं, तब ही हम जीवित हैं, तब ही हम पवित्र धर्मके पूर्ण अनुयायी हो सकते हैं अन्यथा हम अभी जैसे हैं वैसे भी नहीं रह सकेंगे—सदा अन्नत होते चले जावेंगे और हमारे नामशेष होनेमें देर नहीं लगेगी।

बालकोंको शिक्षा ।

प्यारे बालको ! तुम निम्न लिखित शिक्षाओंको ग्रहण करो। वे शिक्षाएँ आपको बहुत लाभकारी होगी इसलिये तुम उनपर अपना पूर्ण लक्ष्य दो !

(१) बाल्यावस्थाको पाकर विद्या पढ़नेमें अपना विशेष ध्यान दो क्योंकि बाल्यावस्थामें ही विद्या प्रपन्न होती है।

(२) विद्या दाता गुरु और अपने पुण्य माता पिताओंकी आज्ञाका पाठन करो। बड़ोंकी आज्ञाका पालन ही तुम्हारा परम कर्तव्य है।

(३) अपना समय खेड कूटमें व्यर्थ मत बिताओ क्योंकि जो समय आम तुम्हारे हाथसे निकल जायगा उनका मिटना फिर तुम्हारे लिये

कठिन हो जायगा इसलिये अपने समयको पठन-पाठनमें खर्च करो।

(४) मान कभी नहीं करो, सदा ही नम्रता धारण करो। देखो रात्रणने मान किया था। आखिरको उसकी क्या दशा हुई ? लक्ष्मणके हाथसे रणमें मारा गया और सब रानाउ भी धूलमें मिल गया और अन्तमें नरकोंको जाना पड़ा इससे मानको हानि कारक मानकर छोड़ दो।

(५) सदा ही सब बोला करो भृष्ट कर झूठ वचनोंको गिहा पर न छाओ।

(६) किसीको गाढी आदि खोटे वचन मत कहो। अगर तुम किसीको गाढी वा खोटे वचन कहोगे तो तुम्हें भी दूसरे गाढी और खोटे वचन कहेंगे और मरनेके लिये तयार हो जावेंगे ऐसा जानकर किसीको भी गाढी न दो।

(७) सबसे भीठे वचन बोलो। मीठा बोलना ही दुमरोंको प्रिय और वश करनेका मंत्र है। देखो कोयल अपनी मीठी वाणी बोलकर संसारको अपना बना लेती है और कौआ बहुत बचन बोलता है इसलिये उसके वचनोंकी निंदा होती है और उसे कोई भी नहीं चाहता इसलिये तुम कोयलके समान भीठे वचन बोलो जिससे ही तुम सबको प्रिय और आदरके पात्र बनो।

(८) मूल घर की अन्नधान्य पानी न पियो।

(९) हठवाईके यहांकी मिठाईको जहां तक चने त्याग ही करो।

(१०) बिड़ी चुस्ट तमाखु आदि तोटी मांस वस्तुओंका त्याग करो।

(११) विद्याका निषम सबसे अच्छा है।

विद्यार्थी टीकाराम, जैन पांडित्याल, कदंगी।



વિદ્યાથી, વિદ્વત્તાથી, વાર્મિકતાથી, મદાચારવા ।
 સ્પૃષ્ટતાથી, સામાજિકતાથી, પરોપકારતાથી ।
 જનને સર્વ ગુણ એક સાથે હોના વહુત હી અસંભવ
 હોતા હૈ । પાઠશ્રો, વહા તક લિખા જાય ! જ્યો
 જ્યો પંડિતજીના સ્મરણ ક્રિયા જાતા હૈ ત્યો ત્યો
 દુઃખના મેગ વઢતા ઓર હૃદય કઠતા હૈ, પર અત્ર
 હમારા જનના હી કર્તવ્ય નહી હૈ કિ હમ રોવં ।
 હમારા જમસે મી અધિક કર્તવ્ય હૈ ઓર વહ
 યહ કિ પંડિતજી કે 'લિયે' પ્રત્યેક નગરકં જૈની
 માઈ શોક સમાં કરે, ઓર પંડિતજીકે શોક સતસ-
 કુટુમ્બકે પ્રતિ સહાનુમતિ પ્રગટ કરે તથા હમાર
 ઓર પંડિતજીકે જો અગણિત ઉપકાર હુણ હૈ ઓનકે
 સ્મરણકે લિયે, પંડિતજી કે પ્રતિ અપની કૃતજ્ઞતા
 પ્રગટ કર્નકે લિયે પંડિતજીકા સ્મારક રવોલે ।
 હમારા યહ સર્વસે વઢા કર્તવ્ય હોના ચાહિયે કિ
 હમ પંડિતજીકા સ્મારક મ્બોલકર ઓનકી સ્મૃતિ
 કાયમ કરે । યદિ હમ યહ ન કરે તો શાયદ હમારા
 સા કૃતજ્ઞી અન્ય કોઈ ન હોગા । અતઃકૃતજ્ઞતાકે
 કારણ પંડિતજીકે સ્મારકમ્ હમે ચાહિયે કિ
 યથાશક્તિ, કિં વહુના શક્તિસે મી વાહર સહાયતા
 કરે । હમ એક પંડિતજીકા સ્મારક ફંડ જૈન મિત્રમ્
 સોજે હૈ ઓર ઓસમે અપની ઓરસે ૨૬)
 રૂ૦ વી નમ્ર મેટ દેતે હૈ । હમાર પ્રત્યેક પાઠકકો
 જમ સ્મારકમે યથાશક્તિ સહાયતા દેના ચાહિયે ।
 'દિગ્વર જૈન'મે વ 'જૈન મિત્ર'મે જો ૨ મહા-
 શય સહાયતા દેંગ વહ પ્રગટ હોતી રહેગી । સહાયતા
 'પ્રકાશક જૈનમિત્ર ચંદાવાડી સુરતકે' પત્રપર આના
 ચાહિયે । આશા હૈ કિ હમાર પાઠક અપને નગરમે
 સમાજક ઉપમે સ્મારકકે કિયે વજા મી કરેગે । ઓર
 સમાજક સમાચારોસે તુર્ત સુચિત કરેગે વ સ્મારક
 ફંડ હમારે પામ મેજેગે ।

દિગ્વર જૈનોમાં જોડાજો, તીર્થોદ્ધાર,
 અનેક સલામો, પાઠશાલાઓ
 દિગ્વર જૈન કોમને નાં મહત્ત્વ કાર્યો કરી જનાર
 મહાન જોડ. સ્વર્ગીય દાનવીર જૈનકુલ-
 ભૂપણ શેઠ માણેકચંદ-
 રના વિયોગને ઝાઝો સમય નથી એટલામા
 ગત ચેત્ર સુદ ૫ ની મનારે દિગ્વર જૈનોના
 એક બીજે મહાન દીવો । હોવાનાથ જવાના
 અતીવ દુઃખપ્રદ સમાચાર જોમેર કરી વધ્યા
 છે, અમારા વાચકો જાણુતા હશેગ કે દાનવીર
 શેઠ માણેકચંદને ધર્મ કાર્યો તરફ પ્રથમ
 દોરના પંડિત જોપાળદાસજી 'ખરેયાજી
 હતા અને જે અતીત યુદ્ધિયાળી વિદ્વાન નર-
 રત્ને જૈનકોમની નિસ્વાર્થસેવા 'ઉત્તમ સેવા
 બખતી છે. વળી જૈન શેઠ માણેકચંદ દાન
 અને કોમની નિસ્વાર્થ સેવા માટે દાનવીર
 જૈનકુલભૂપણ અને જે .પી ની પદવી મોગ-
 વના ભાગ્યશાળી થયા હતા ત્યારે પંડિત જોપા-
 ણદાસજી ખરેયા વિદ્યા અને 'કોમની નિસ્વાર્થ
 સેવા માટે સ્વાદ્વાદવારિધિ વાદિગજકેશરી
 ન્યાય વાચસ્પતિની મહાન પદવીઓ મેળ
 વના ભાગ્યશાળી થયા હતા, જે બનાવ જૈનોમા
 પ્રથમજ છે. આ વિદ્વાન નગ્ગને કોમની જે
 ૫ દિને યથાથી જૈન કોમને જે અપૂર્વ
 જોડ ગણ છે, તેના ખાડા ક્યારે પુગશે તે
 કમી સકાતુ નથી આ વિદ્વાન નગ્ગને કોમની જે
 અપૂર્વ સેવા બખતી છે તેના બદલા રૂપે
 જૈનોના કરગ છે કે દરેક સ્થળે શોકસાળા
 બોનાવી એમના કુટુમ્બીઓપર દિસાસાધન મો-
 વેના (જનાવિયર) મોકલવો તથા પંડિતજીનામ
 અર્ચનિય વાદ રડે તે માટે એક સ્મારકફંડ
 'જૈનમિત્ર' મારફત જોડવામા આવ્યું છે અને
 જેમા ૨ ૨૫) ની અ ૫ રકમ અમારા તરફથી
 તથા બીજા ૧૮) તત્તલ બચાયા છે, તો એ
 સુગ્ધ શ્રીમાન વિદ્વાન અને આધારણ
 બાદકો પણ પેતાપેતાની કુટિન સુખ્ય
 આ સ્મારકફંડમા રહેમો અમારો ૫૨ મોકલી



આપણે એમ આશા રાખીએ છીએ. આ સ્મારકકંડની પહોંચ નામ ગામ સાથે દિગંબર જૈન તથા જૈનમિત્રમાં પ્રકટ કરવામાં આવશે. જે આ કંડમાં લાગણીપૂર્વક કાર્ય ઉપાડી લેવામાં આવશે, તેજ એમાં હોંઝારોનું કંડ થવા સંભવ છે જેવી રવ. સ્વા. વા. ન્યા. પં. ગોપાલદાસજી બરેલાનું પ્રાંતસ્મરણીય નામ ચિરકાળ સુધી ઉત્તમ રીતે જલવાહ રહે એવી વ્યવસ્થા યુક્ત શકશે. શોક સભા તથા સ્મારક કંડના સમાચાર એમને સત્વર મોકલવા કે જેવી, તે આવતા અંકમાં પ્રકટ કરી શકાય.

ઉજવાય છે તે એટલે સુધી કે કૃષ્ણજયંતી સમનવમી, જમશેદનરેઠા વગેરે તો નામદાર સરકાર તરફથી ખાસ જાહેર તહેવાર તરીકે વર્ષોથી પળાય છે જ્યારે જૈન મહાવીરજયંતીને જુજાહેર લેવામાં રવાના ન મળી શકે । એટલે, જે પ્રયાસ કરવામાં આવે તો એ કંઈ મુશ્કેલ નથી, આપણીજ એકઠાંની આ પરિચામ છે, અમને જણાવતાં આનંદ થાય છે કે લાહોરના જૈનોએ પ્રયાસ કરવાથી ત્યાંના ડેપુટી કલેક્ટર એચ. પી. ટાવીટને ચેત્ર સંક ૧૩ (મહાવીર જયંતી) ને દિને જાહેર લેવાર પાળવાની આજ્ઞા પ્રકટ કરી છે. આ પ્રસંગે દરેક જલ્લામાં પ્રચલ કરવામાં આવે તો આપણે મહાવીરજયંતીને સમગ્ર દિશમાં જાહેર લેવાર તરીકે પગલી શકીએ.

દને આ જયંતી દરેક સ્થળે કૌરીતે ઉજવતી તે સંબંધી થોડીક સુચનાઓ કરવી અરથાને ગણુરી નહિ—

૧ જૈનોના ત્રણે કિસ્તાના ભાંધાઓ એકજ મહાવીરપ્રભુને માને છે જેથી આ જયંતી એકજ મળીને ઉજવવી.

૨ મંદિરો, ઘરો, દુકાનો, જોડિંગો, પાકાણાઓ આગ્રમો, પુસ્તકાલયો વગેરે એવી રીતે સજાગારના કે જ્યાં જાહેરને એમ જણાય કે આજે જૈનોના કંઈ પરિવ્રાજક છે.

૩ દરેક મંદિરમાં મહાવીર પ્રભુનું પૂજન અભિષેકપૂર્વક ભક્તભાવથી અને રાગતાનથી કરી મહાવીરચરિત્ર વ્યાખ્યાન કરે વચાવડું જોઈએ.

૪ સમગ્ર જૈનોની એક જાહેર સભા કાઢવાથી બોલાવી મહાવીર પ્રભુને જન્મકાળ અને તે પરથી લેવાના બોધ સંબંધી વ્યાખ્યાનો થવા ઉપરાંત મહાવીર જયંતી જાહેર લેવાર તરીકે પાળવાને સરકારને અરજ કરનારો દસાવ કરવો તથા જે કોઈ સ્થળે મહાિમાંડે કંટોચા હોય તો તેનો સગા મનથી હાથાભાવે નીકાલ કરી નાંખવો જોઈએ તથા પુસ્તકો વગેરેની પ્રાપ્તિ કરવી જોઈએ.

લગભગ ચાર પાંચ વર્ષ થયાં જૈનોમાં મહાવીર જયંતિ ઉજવવા મહાવીર જયંતી ની દિક્ષ્યાલ અર્થ છે અને આવી છે. તે ઉત્તરોત્તર વૃદ્ધિ પામતી જાય છે એ ખુશી થવા જેવું છે. આ વર્ષે પણ એ શુભ દિવસ આવતી (ચેત્ર) સુદ ૧૩ શુક્રવાર તા. ૫૪-૧૭ ને શુભ દિને આવી પહોંચશે છે. આ તેજ પરમપરિવ્રાજક છે કે આજથી અઢી દગર વધે ઉપર ને દિને શ્રી કુંડલપુરમાં આપણા ચોવીસમા તીર્થંકર શ્રી મહાવીર પ્રભુએ માતા ત્રીયાલાની કુળે જન્મ લીધો હતો અને સર્વે સ્થળે અપાર આનંદોત્સવો યજ્ઞ રહ્યા હતા. આપણે આપણી, આપણા આપણાની, અને પુનપુત્રીઓની વર્ગમાં ઉજવવાનું બુદ્ધતા નથી તો શું મહાવીર પ્રભુની જયંતી (જન્મનિચિ) ઉજવવાનું બુદ્ધી જનું જોઈએ ? દલીલ નહિ. આ જયંતીની ને એટલા કાઠમાઠથી ઉજવવી જોઈએ કે આખા દિશમાં અગેગામ ને શહેરશહેર સમગ્ર રેવતને એમ માત્રમ પડે કે આજે (ચેત્ર સુદ ૧૩) જૈનોના કંઈ મહાન લેવાર છે. અન્ય કોમોમાં સમજવતિ, કૃષ્ણજયંતિ, હનુમાનજયંતી, નરસિંહજયંતિ ગણપતિજયંતિ. જમશેદનરેઠા જયંતિ, હનુમાનજયંતિ વગેરે જાહેર રીતે



५ आ पर्व निमित्त कंधे कंधे रक्षक विद्यादान भाटे काढी लेधये अने न्याय पाठ नाणा न होय त्या ते स्थापना प्रथम ध्वजे लेधये.

६ भासिक पाक्षिक के अडवाडिके सभा न होय तो स्थापनी लेधये.

७ दर वर्षे निश्चित रीते आ जयंती उजवाय ते भाटे पाक्ष अधारस्थ थु लेधये याने अमुक सभ्यो जे जयंतीना अर्थ, उपाडी सेवानी प्रतिष्ठा करी लेधये.

८ आ जयंती देखे अर्थ, उजवायाना विगतवार सभाचार अभ्येते स्तर मेरुकी आपना के न्याय ते आर्जना अकभा प्रगट करी सकाय.

पाठकोंको ज्ञात होगा कि चैत्र शुक्ल

चतुर्थीके दिन भगवान्

महावीर जयंतीका महावीरका जन्म हुआ था।

कर्तव्य। ये एक महात्मा थे। उनमें

अनेक गुण थे। मुक्त शान्ति

के दाता थे। हम भी मुक्त शान्तिके मार्गपर आना

चाहते हैं। इससे लिए यही उपाय है कि हम

उनके गुणोंका स्मरण करें। यद्यपि उनके गुणोंका

स्मरण चाहे जिस तिथिकी और चाहे जिस

समय हो सकता है। लेकिन यह सर्व साधारण

आदमियोंमें नहीं हो सकता। यह वे ही कर

सकते हैं जो महावीरके गुणोंमें अत्यन्त अनुरक्त

हो गये हैं, जिनको यही धुन सगर हो गई

है। सर्व साधारण—मानुषी व्यक्तिकी किसी भी

काम करनेके लिए निमित्त कारण आवश्यकिय

होते हैं। उनकी चित्तवृत्ति निमित्ताधीन होती

है। भगवान् महावीरके गुणोंका स्मरण करनेके

लिए सर्व साधारणकी कोई न कोई निमित्त

होने चाहिए। इसी आवश्यकताको ध्यानमें

रखकर भगवान् महावीरके निर्वाणके दिन

निर्वाणोत्सव मनाया जाता है। वह बहुत दिनासे

प्रचलित है।

इसी प्रकार भगवान् महावीरके जन्मातिथिके

दिन भी उनकी जयन्तीका उत्सव मनाया

जाता है। पाठकोंको यह ज्ञात होगा कि इस

उत्सवके मनानेकी प्रथा अभी चार छह वर्षसे ही

चली है। इतनेपर भी समाजको यह उत्सव इतना

माग्य है कि वह आधुनिक होते हुए भी इस

समय सर्वत्र वड़े उत्साहके साथ मनाया जाता

है। लेकिन लोग इस उत्सवको ऐसे रूपमें

मनाते हैं कि जो दिवान्नीको मनाने जानेवाले

निर्वाणोत्सवका रूप है। निर्वाणोत्सवके दिन

आख्यातोंमें भगवान् महावीरके जिन

गुणोंका स्मरण किया जाता है वे ही गुण

जयन्तीके उत्सवके दिन भी कहे जाते हैं।

वे यह भूल जाते हैं कि यह जयन्ती-उत्सव है

और वह निर्वाण उत्सव।

असलमें होना तो यह चाहिए कि निर्वाण

उत्सवके दिन भगवान् महावीरके निर्वाण सब

न्याय गुणोंका सूत्रियोंका वर्णन हो और जयन्ती

उत्सवके दिन भगवान् के जन्मसंवन्धी

गुणोंका वर्णन हो। ऐसा न होनेसे ये

उत्सव ऐसे ही अनवद्योते प्रतीत होते हैं जैसे

कि किसी पुत्रके जन्मोत्सवमें तो मरणके गीत

गाय जायें और मरण समयमें जन्मोत्सवके।

इसके लिए यह आवश्यकिय है कि म-

ग्न दोनो उत्सवोंकी न्याय २ सूत्रियोंकी

अन्धो जानकारी प्राप्त करें। खास जयन्ती

उत्सवके गुणोंकी भरपूर जानकारी न होनेके का-

रण ही वच्चा महाशय भगवान् के अन्य उत्सव

संवन्धी गुणोंका वर्णन कर जाते हैं। क्योंकि कुछ

न कुछ तो कहना ही चाहिए। जयन्ती उत्सव कोई

साधारण उत्सव नहीं। उससे बालककी शिक्षाका

धर्मिक सन्ध प्रतीत होता है। गाल्फकी होन

शरत्ताका पता चलता है। जिस समय धरम

किसी धुपदीन निकट बालकका जन्म होता है

तो उस समय उस धरम नई २ फलें उत्पन्न



मंदिर है। ७० और ६० एकड़ जमीन है। से ४ बजे तक सामाजिक और ५ से ८ बजे तक धार्मिक व्याख्यान होंगे। सब भाइयोंको अवश्य पधारना चाहिए।

जिसकी ८० एकड़ जमीन है और जिनेन्द्र मंगल ग्राममें पार्श्वनाथका मंदिर है जिसकी २०० एकड़ जमीन है परंतु सभा और मंदिर जीर्ण हालतमें हैं। कहीं तो २ पूजन प्रशालन तक नहीं होता और सब मिलकर २५४८ एकड़ जमीन मंदिरों के कब्जेकी है परंतु यह सबकी सब जमीन अब सरकारके कब्जेमें हो गई है। यदि कोई धर्मात्मा श्रीमान् कोशिश करे तो यह सब जमीन सरकारसे वापिस मिल सकती है। वहाँ जैनियोंकी वस्ती न होनेसे ही इस जायदादका यह हाल हुआ है।

उपदेशककी आवश्यकता—दानवीर सेठ माणिकचंदजीके ट्रस्ट फंडकी तरफसे भ्रमण करानेके लिए न्यायके जानकार एक विद्वान् उपदेशककी आवश्यकता है। पत्रन्यवहारका पता—ब्र० शीतलप्रसादजी, ही० गु० जैन बोर्डिंग तारदेव बम्बई।

कुमार मभाका उत्सव—जैन कुमार सभा ग्राह्यरापाउन केम्पका तीसरा वार्षिकोत्सव ता० १९ से २ अप्रैल तक होगा। जिसमें विद्वानोंके व्याख्यान भी होंगे।

स्वा० महाविद्यालयका वार्षिकोत्सव—श्रीस्वाध्यायमहाविद्यालय काशीका वार्षिकोत्सव बड़े समारोहके साथ ता० ७-८ अप्रैल—चैत्र सुदी १५ और वै० कृ० १ को होगा। कार्यक्रम इस प्रकार है—प्रथम दिन दुपहरको रिपोर्ट और परितोषक वितरण, शामको धार्मिक व्याख्यान। दूसरे दिन राउन हालमें दुपहर १

नये २ ग्रन्थ ।

आदिपुराण (महापुराण)

(भाषा टीका सहित)

पूर्ण ग्रन्थ छपकर तैयार है।

पृष्ठ १८०० मूल्य सोलह रुपया

हरिवंशपुराण

(नवीन आवृत्ति)

अबकी चार आनकलकी बोलचालकी भाषामें बहुत ही बढ़िया कागजपर छपकर तैयार हुआ है। मनोहर जिल्द बँधी हुई है। मूल्य छह रुपया।

अर्थप्रकाशिका ।

तत्त्वार्थसूत्रजीकी सरल भाषामें बड़ी भारी टीका। बढ़िया कागज, उत्तम छपाई, अलग पृष्ठ और मूल्य केवल साढ़े तीन रुपया।

गोम्मटसार जीवकांड ।

(भाषा टीका सहित)

पक्की जिल्द। मूल्य दारै रुपया।

नियमसार ।

ब्रह्मचारी शीतलप्रसादजी रक्त भाषा टीका सहित।

कच्ची जिल्द १।।।, पक्की जिल्द २।

परमात्मप्रकाश ।

संस्कृत टीका और भाषा टीका सहित।

पक्की जिल्द। मूल्य तीन रुपया।

आत्मानुशासन ।

सरल बोलचालकी भाषामें नवीन भाषा टीका सहित। कच्ची जिल्द १।।।, पक्की जिल्द २।

मिलनेका पता—

मैनेजर दिगंबर जैन चंदाबाई—मुरत.



विधवाविवाह ।

(लेखक—मानमल वासन्तीवाल, बम्बई)

आज कल जैन समाजमें चारों तरफ विधवाविवाहका शोर मच रहा है। जिस अखबारको हम देखते हैं उसमें कुछ न कुछ इस विषयकी चर्चा पाई जाती है। कोई कोई अखबार तो यहाँ तक पहुँचे हैं कि वे इस कृपाको जारी करनेका उपदेश देते हैं तथा बहुतसे अखबार इसका खंडन कर रहे हैं। हमें नहीं मालूम होता कि इस अवानुक्त उत्पन्न होनेका मुख्य कारण क्या है। विधवा-विवाहके प्रचारक इसको जाति संख्याकी वृद्धि-का हेतु मानकर इसको समाजमें प्रचलित करना चाहते हैं लेकिन हमको देखना चाहिये कि केवल जाति संख्या वृद्धि करनेसे लाभ है या जातिको अपने आत्म कल्याणकी ओर मुकानेसे लाभ है।

थोड़ी देरके लिए मान भी लिया जाय कि यदि एक जातिकी संख्या बहुत बढ़ रही है, लेकिन उसमें अपने "मौरल प्रिंसिपल्स" (moral principles) पर कुछ ध्यान नहीं दिया जाता तो क्या हम उस जातिको प्रशंसा-एष वाक्योंसे संबोधन करेंगे ? दृष्टान्त लीजिए कि कोई जाति अपने यहाँकी भावी संतानोंका रंग व मुख वगैरहकी आकृति अच्छी बनानेके लिए, व्यभिचार व अधर्मका कुछ खयाल नहीं करके अपने यहाँकी स्त्रियोंको संतानोत्पत्तिके लिए कोई, सुन्दर पुरुषोंके पास

भेजती है तो क्या हम उस जातिको एक अच्छी और उन्नति करनेवाली जातियोंमेंसे कहेंगे ? नहीं नहीं, कभी नहीं। इस पृथ्वीपर जब कि हमने मनुष्य जन्म धारण किया है तो इसका उद्देश सिर्फ यही कि सुख व भोगोंपर लक्ष्य देनेका नहीं होना चाहिए, किन्तु हमको अपने आत्मकल्याणकी तरफ भी ध्यान देना चाहिए। खास करके उस जातिको जो कि जैन धर्मकी अनुयायिनी है तथा उक्त धर्म कथित परलोकदिरुमें श्रद्धा रखती है।

अब हमको इस आवाजके उत्पत्ति होनेके मुख्य कारणकी ओर लक्ष्य देना चाहिए। यह सृष्टिका नियम है कि हमपर १०० पुरुष खूब मेरे पेट भोजन करनेवाले इतना असर नहीं करते जितना कि पाँच पुरुष जो कि कारणवश भूखे रह जाते हैं व दुःखसे अपना जीवन व्यतीत करते हैं। इसी प्रकार हमारी जातिके १०० विवाहित पुरुष और १०० विधवा धर्मपूर्वक चलनेवाली स्त्रियाँ इतना असर नहीं करतीं, जितना कि पाँच अविवाहित पुरुष या पाँच ऐसी विधवाएँ जो कि अपने दुःख सहनेमें असमर्थ हैं, लेकिन जिस वक्त हम इन पाँच पुरुषोंके तरफ ध्यान दें तो हमारा लक्ष्य सापहीमें जो ज्यादा पस है उस तरफ भी जरूर जाना चाहिए तथा जो नियम हम बनाना चाहते हैं वे सर्वके हिंदु हों इस तरहके बनाना चाहिए। यदि विधवाविवाहसे सम्पूर्ण जातिको फायदा पहुँचे और जातिकी उन्नति होय तथा वह शास्त्रसम्मत हो तो चाहे पुरुष कुछ भी कहें, हमें उसको



जरूर प्रचलित करना चाहिए। इसके विपरीत-में, यदि उससे व्यक्ति विशेषोंका कभी किसी अंशमें, फायदा होय और जातिमात्रका नुकसान हो तो हमें उसका नाम भी न लेना चाहिए तथा आन्दोलन करके उसके प्रचारकोंका मुँह बंद करना चाहिए।

विधवाविवाहका प्रचार होनेसे तीन चार बड़े अनर्थ होंगे और इसलिए विधवा-विवाह किसी हालतमें श्रेयस्कर नहीं कहा जा सकता।

पहिले ही तो विधवाविवाहका प्रचार होनेसे जो स्त्रियाँ कि कर्मवश विधवा होगई हैं उनको अपना जीवन सफल करनेका मौका चला जायगा। जिस समय कोई स्त्रीका पति मर जाता है तो वह यदि समझदार है तो विचारती है कि "देखो मेरे कितने पापका उदय है" और फिर वह स्त्री गृहस्थ जगड़ोंमें ज्यादा नहीं पड़कर अपने उन महत्वापोंके धोनेका यत्न करती है। अब उन इस तरह जीवन व्यतीत करनेवाली स्त्रियोंको फिरसे सांसारिक भ्रमनालमें डाल देना पाप नहीं है तो क्या है ?

जरूरी बात है कि उपर कहे हुएपर बहुतसे महाशय दो आपत्तियाँ खड़ी करेंगे-यहली यह कि यदि ऐसा है तो मनुष्यको भी फिर पुनर्विवाह नहीं करना चाहिए। इस बातका जवाब तब किया जा सकता है जब कि हम इसका कारण मूलसे उठावें। ऐसा अब तक क्यों होता आया है कि पुरुष तो बहुतसे विवाह कर सकता है किन्तु स्त्रियाँ एक पुरुषके

सिवाय दूसरा पति नहीं कर सकतीं। यदि विधवाविवाहकी इजाजत दी जाय तो यह भी लाजमी बात है कि स्त्रियोंको एकके सिवाय दो तीन या इनसे भी ज्यादा पति बनानेकी इजाजत दी जाय किन्तु यह बात हम देखते हैं कि शास्त्र सम्मत और लोक सम्मत दोनों नहीं है।

दूसरे प्रत्यक्षमें देखा जाता है कि एक मनुष्य बहुतसी थालियोंमें परोसे हुए भोजनमें जिस जिस रक्ताधीके भोजनके खानेकी इच्छा वह करे वह खुशीसे खा सकता है (सिवा इसके कि किसीमें अभक्ष्य भक्षण रखा हुआ हो) लेकिन एक थाली जिसमेंसे उसने उठाकर खाया है वह फिर सिवा किसी क्षुद्र जातिके पुरुषके और किसीके काम नहीं आसकती और यदि उस थालीमेंसे कोई उच्च पुरुष फिर कुछ खानेकी इच्छा करे तो लोग उसको मूर्ख तथा अधर्मीके नामसे ही संबोधन करेंगे। उसी तरहसे जो स्त्री एक वक्त किसी पुरुषसे उच्छिष्ट कर दी गई हो ऐसी स्त्रीको कोई दूसरा पुरुष मोग करे तो वह अधर्मी और पापी ही कहलायगा तथा इसके प्रचारकोंको कोई इनसे भी बड़े नामसे संबोधन करना पड़ेगा।

दूसरा आक्षेप यह होगा कि क्या विधवा स्त्रियाँ उक्त प्रकार ही अपना समय व्यतीत करती हैं। इसका उत्तर देना कुछ मुश्किल है यह बहुत करके उनके चारों तरफकी हालत (surroundings) पर निर्भर है। बहुतसो स्त्रियोंके लिये कहा भी जा सकता है कि वे



धर्मसे चलती हैं तथा दूसरी थोड़ी बहुत स्त्रियाँ यदि अपने पथसे ढिग भी गईं होय तो उनको सुमार्गमें लानेकी आवश्यकता है न कि उन थोड़ीसी स्त्रियोंके लिये सब स्त्रियोंके धर्मका हास कर देना ।

दूसरा अवगुण विधवाविवाहके प्रचार होनेसे यह होगा कि स्त्रीपुरुषोंकी आन्तरिक प्रीतिमें बहुत कुछ फर्क पड़ जायगा फिर आपसो पतिके लिए प्राण न्योछावर कर देनेवाली स्त्रियोंके उदाहरण बहुत कम मिलेंगे । प्रत्यक्षमें ही देखिए कि ऐसे दृष्टान्त भारत-वर्षमें (जहाँ कि विधवाविवाहका प्रचार नहीं है) कितने मिलेंगे तथा गुरोपादि खंडोंमें (जहाँ कि इसका प्रचार है) कितने मिलेंगे । मेरा कहनेका यह मतलब नहीं कि वहाँ प्रेमका अभाव ही है । प्रेमका जो स्वाभाविक सत्त्वाव है वह सब देशोंमें यहाँ तक कि आफ्रिकाके नीग्रोज़में भी पाया जायगा किन्तु वह गाढ़ प्रेम जिसके कि कारण एक स्त्री अपने पतिकी मृत्युके अनन्तर भी उसकी यादको नहीं भूलती है उसका अभाव हो जायगा तथा इस प्रथाके प्रचलित होने बाद स्त्रियाँ व पुरुष एक सांसारिक वाञ्छाके निवृत्ति करनेके उपाय मान लें जायेंगे ।

तीसरा बड़ा अनर्थ विधवाविवाहके होनेसे यह होगा के आपके यहाँ भी मुसलमान या यूरोपियन्सकी सदृश माई चहिनमें शादियाँ होने लगेंगी । विचार कीजिए कि एक विधवा स्त्रीके अपने पूर्व पतिसे एक लड़की है । अब उसने दूसरे पतिसे विवाह किया उसके अपनी

पूर्व स्त्रीसे एक लड़का है । अब इन दोनों पुत्र और कन्याका विवाह आपसमें हो जायगा क्योंकि विधवा विवाह जन्मसे शुरू होगा तबसे साँखे वगैरह तो खूंटोपर टांग ही दी जायगी और यदि साँखे टाली भी जायेंगी तो कोई विघ्न जैसी बात नहीं उपस्थित होगी । अब आप विचारिए कि वह स्त्री (कन्या) अपनी माको "मा" के नामसे पुकारेगी या सामू कहेंगी, पुत्र अपने पिताको पितृ, श्रीके नामसे पुकारेगा या श्वशुर कहेंगा और वह कन्या अपने पतिको पति कहेंगी या भाई कहकर पुकारेगी । इसी प्रकारके बहुतसे अनर्थ होंगे ।

इन सब बातोंके विचारनेसे हमें मालूम होता है कि विधवाविवाह कितनी ही आपत्तियोंका स्थान है । संख्या वृद्धिका कारण यदि मान भी लिखा जाय (गो हिन्दुस्तानकी मनुष्य संख्या दूसरे देशों जहाँके पुनर्विवाह प्रचलित है, उनसे किसी अंशमें कम नहीं है) तो भी जातिका लक्ष्य च्युत होकर संख्याका बढ़ाना किसी अंशमें कल्याणकारी नहीं कहा जा सकता ।

इसीलिए विवाहके प्रचारकोंसे (यदि कोई होय ?) मेरी सबिनय प्रार्थना है कि वे जातिपर धर्मपर तथा अपने देशपर कृपाकर इस विषयके लेख न लिखें तथा गिरती हुई जातिको और गिरानेकी कोशिश न करें । यदि वे समाजके सबे हितैषी होय तो इस आवाज़के उठनेके मूल कारण बालविवाह, वृद्धविवाह कन्याविक्रयादि कुरीतियोंके निवारण करनेका यत्न करें ।



ઉપદેશક પીતાંબરદાસજીના

અમળનો રિપોર્ટ.

(તા. ૧૭-૧-૧૭ થી તા. ૧-૩-૧૭ સુધી)

સુબાઈમાં બાળસભામાં વ્યાખ્યાન કર્યું. વ્યાખ્યાન શેલી શીખવામાટે આજ પ્રમાણે દરેક સ્થળે બાળસભા સ્થપાવી જોઈએ.

આશ્રિત-સભા કરી ઉત્તરિ પર વ્યાખ્યાન આપ્યું, જેથી અત્રેના બાઈઓએ બાળબોધ જૈન પાઠશાળા સ્થાપવા વચન આપ્યું. બહુવા-લાયક ૧૫-૨૦ બાળક છે. જેએ સ્વાધ્યાયનો નિયમ સ્વીકાર્યો.

કેરવાડા-માત્ર ૧૨ ઘર છે. બાઈનાગરદાસ-ના ઉદ્યોગથી ધર્મચર્યા સારી થઈ. ત્રણ જણે સ્વાધ્યાયનો નિયમ લીધો. તથા શેઠ હરજીવન હરખચંદ ૫) ઉપદેશકદંડમાં બર્પા.

પાદરા-પાઠશાળાની પરીક્ષા લીધી તથા એક સભા કરી અબદમ ત્યાગ અને સ્વાધ્યાય પર વિવેચન કરવાથી ૫ જણે રાત્રે અત્રના પદાર્થો ન ખાવાનો નિયમ કર્યો અને ૧૫ જણે સ્વાધ્યાયનો નિયમ સ્વીકાર્યો. ઉપદેશક-દંડમાં ૨૧. ૨) શા ગરખડદાચ બહેચરદાસે આપ્યા.

પાવાગઢ-મેળો તથા મેનેજંગ કમીટીમાં સામેલ થયો. રાત્રે શાસ્ત્રસભા કરી. કમીટીના જીવદયા ખાતામાં જે રકમ છે તેમાંથી અહિંસા ધર્મનો પ્રચાર કરનારા લેખ ટ્રેક્ટરૂપે ગુજરાતી-માં કાળીકા દેવીના મેળો સમયે એવા સોફોને વેચવા જોઈએ કે જેઓ બળીદાનના સંકેતપત્રી માળીકા સમક્ષ પશુપક્ષી ચડાવે છે.

હાહોલ-કોન્કરસ માટે તૈયાર થયેલા મંડપમાં સભા કરી દાનધર્મ પર વિવેચન કર્યું સંખ્યા ૫૦૦ હાજર હતી.

રખીઆળી-મહામહેનતે રાત્રે સભા કરી. ૧૦ બાઈઓ હાજર થયા. કોન્કરસમાં ડેલીગટ થવા કહ્યું તો જુનાબ આપ્યો કે પ્રમુખ નડકી મુખા વગર ફોર્મ કેમ બરામ ?

હાકરોડા-એ સભા કરી જેથી ૨૧ જણે સ્વાધ્યાયનો નિયમ લીધો. પાઠશાળા તથા શેઠ માણેકચંદ હીરાચંદ-પુસ્તકાલય સારાં ચાલે છે.

ઓરાણુ-એક સભા કરી સ્વાધ્યાય અને સદાચાર પર વ્યાખ્યાન આપ્યું. ૪૫ બાઈ સ્વાધ્યાય કરે છે. અત્રેની પાઠશાળા અધ્યા-પક બાઈ લલ્લુબાઈ રામચંદના ધાર્મિક ઉત્સાહ-થી સારી ચાલે છે. ૫) ઉપદેશકદંડમાં આવ્યા.

સોનાસણુ-એક શાસ્ત્ર સભા કરી કુરિવાળે બંધ કરવા વિવેચન કર્યું. પાઠશાળા ૭ મહી-નાથી પાછી બંધ છે તે જેના બવરચાપક શેઠ જીવરાજે યોગ્ય અધ્યાપક બોલાવી ચાલુ કરવી જોઈએ.

કુતેપુર-એક સભા કરી. પાઠશાળા માટે માસિક ફંડ થયું છે. અધ્યાપકની જરૂર છે.

છડર-સભા કરી કુરિવાળે ત્યાગ કરવા તથા કેળવણીના પ્રચાર સંબંધી વિવેચન કર્યું. જે બાઈએ સ્વાધ્યાય અને કેટલાક વિદ્યાર્થીઓ-એ રાત્રિજોગનનો ત્યાગ કર્યો. પાઠશાળાની પરીક્ષા લીધી. છાત્રીઓનું શિક્ષણ વખાણુવા યોગ્ય છે. ગયે વર્ષે મોટી ઉમરની જોનો બહુવા આવતી હતી પણ હોલ માત્ર એકજ આવે છે. પાઠશાળા સાથે શ્રાવિકાશ્રમ તો ચાલુજ રહેયું જોઈએ. ત્રણ બાઈઓ દાહોલ સભા માટે પ્રતિનિધિ નિભાયા.

અમદાવાદ-શેઠ પ્રેમ મોહન દિગંબર જૈન યોર્ડીંગના વિદ્યાર્થીઓને ધર્મશિક્ષણની પરીક્ષા લેવા માટે બોલાવ્યા, પરંતુ બાઈ કેશ-વલાલ ડાલાબાઈ બી. એ. એ કેટલીકવાર બોલાવ્યામાદ માત્ર ચારજ વિદ્યાર્થી હાજર થયા ! ! ! વિદ્યાર્થીઓએ ખુશી રીતે કહ્યું કે અધ્યાપક ન હોવાથી અમે સમજી ધર્મ-શિક્ષણ જીતી ગયા છીએ. આપ અત્રે શા માટે ૧૫કો આપો છો ?

દિલગીરી ધાય છે કે ૧૨ વર્ષની ધાર્મિક કેલવણીના સંસ્કાર મેટ્રીક્યુલેશન પાસ કરવા-વાળા વિદ્યાર્થીઓ પર કંઈપણ રતા નથી.



ગોડિંગના વ્યવસ્થાપકોની દુરુદ છે કે તેઓ
ધણીજ તોફાંદે યોગ્ય અધ્યાપક સમજાનો
પ્રબંધ કરે. સુપ્રીન્ડેન્ટની તળીયત કીક નહોતી
એમ સાંભળવામાં આવ્યું છે.

દાહોદ-મુન્નાઇ અને માળવા પ્રાંતિક
સમાના વાર્ષિકોત્સવમાં સામેલ થયા.

વિશેષમાં ઉપરોક્ત ભ્રમણમાં ખાસ કરી
દાહોદ સભામાં લાભ લેવા તથા કોમમાં પ્રચ-
લિત નકામી, હાનિકારક તથા ખર્ચાળ વિવાજો
ખંધ કરાવવા પ્રયાસ કર્યો હતો. ખાસ વિચિ-
ત્રતા એ છે કે કેટલીક પાઠશાળાઓમાં દસ દસ
ખાર ખાર વર્ષની છોકરીઓના દાંત સોનેથી
મટેલા જોઇ તેમને પૂછવાથી જણાવ્યું કે માળવા
અને પતિના પ્રેમને ખાર એ જન્યતા
જડાવવા પડે છે. વાહરે પ્રેમ ! અને જાણ
સુદરતા ! કે જે મદતી વખતે લોહી છુટાણ થાય
તથા દાંત સાફ ન થઇ ચક્રવાતી મોમાંથી દુર્ગંધ
આવે તથા જન્મપર્યંત કુદરતી દાંત ગમે તેટલા
કમજોર થઇ જાય તોપણ આ જોડગી અને
અદ્યુત સુદરતાની આમળ આટલાં દુઃખોની
કંઈ કિંમતજ નહીં થાય ! અમે તે સાસુઓ
અને માતાઓનું ખાસ ધ્યાન ખેંચીએ છીએ
કે તેઓ એ નીતિના ગર્ભને અહણ કરે કે-“જેથી
ચેટ દાંતી નામ એવી સોનાની કઠારીનું થું
પ્રયોજન છે ?”

સમાજ સેવક-ઠાકોરદાસ ભગવાનદાસ જ્વેરી
મંત્રી, ઉપદેશક વિભાગ-મુન્નાઇ

મંદિરોંકે કામમેં લાને ચોગ્ય

પવિત્ર

ફાફમીરી કેશર

વર્ષ भरके लिये अभीसे मंगा लीजिये,
क्योंकि इस वर्ष उपज कम होनेसे पवित्र
केशर वर्ष भर तक मिलना कठिन है ।

मूल्य १।।) डेढ़ रुपया फी तोला ।

मैनेजर:-दि० जैन युस्तकालप

चंद्रवाड़ी-मुरत ।

મુંબઈ સમાચાર

અને

વિધવાવિવાહની ચર્ચા.

મુંબાઈ સમાચાર તા. ૨૮-૨-૧૭ ના અંકમાં
દાહોદમાં મળેલી મુંબાઈ-માળવા દિગંધર જૈન
પ્રાંતિક કોન્ફરન્સના પ્રમુખ શેઠ નવલચંદ
હીરાચંદ અને સીના બાપજીની સમાલોચના
રૂપે એક સંપાદકીય લેખ લખાયો છે, જેમાં
ધણીબાજોમાં એ વ્યાખ્યાનની પ્રસાસ કરવા
પછી શેઠ નવલચંદ વિધવાવિવાહને ધર્મ વિરુદ્ધ
જતાવ્યો છે તે ઉપર પોતાના વિચારો દર્શાવતાં
એવું જતાવવાનો પ્રયત્ન કર્યો છે કે જૈનશા-
સ્ત્રોમાં વિધવા વિવાહની મનાઈ નથી, પણ એની
આજ્ઞા છે (૧) એ જાણત મહુ દાખલાઓ
આપેલા છે, જેનું ખડન નીચે મુજબ છે-

૧. “ યોવીસ તીર્થંકરોમાંથી એકને ગૃહ-
સ્થાવરમાં જ એ પત્નીઓ હતી તેમાં એક
વિધવા હતી. ” આ વાત કોઈપણ દિગંધર જૈન-
શાસ્ત્રમાં નથી અને ચિંતાંગર જૈનશાસ્ત્રોમાં પણ
નહીજ હશે. જે કદાચ હેતુ તો તેને માનવાવાળા
દાહોદ કોન્ફરન્સના પ્રમુખ કે ત્યાં મળેલા
દિગંધર જૈનો નથી.

૨. “ રાવજીની સ્ત્રી મદોદરીએ અને
વાલીની પત્ની તારાએ વિધવા થવાથી અત્યંત
વિચીપણ અને સુખીની સાથે વિવાહ કર્યો. ”
આ જાણતને પણ જૈન લોકો માનતાજ નથી.
દિગંધર જૈનોનાચાર્ય રચિત ખાસે સાકાવજીવીર
સંવતનું સંસ્કૃત પદ્યપુગણ ખુદશી રીતે બતાવે
છે કે મદોદરી વિધવા થવા પછી સાધ્વી-આર્યિકા
યજ્ઞ ગઈ હતી. રાવજીના મૃત્યુ પછી મદોદરીએ
આ વાક્યો કહ્યાં-“હું પિતા, પુત્ર અને પતિ એ
સર્વથી રહિત થઈ. સ્ત્રીના એજ રસક છે.
હવે હું કેને રાજ્યે જાઉં ? ” આ વાક્યોથીજ
જણાય છે કે એ પ્રાચીન કાળમાં, વિધવાવિવા-
હનો સ્થાન નહોતો. જે એ સ્વીકાર હોત, તો



પેતા, પુત્ર અને પતિ એ ત્રણજ સ્ત્રીના રક્ષક છે એવું વાક્ય કહેવામાં નહીં આવતે. શોકથી રહિત થઈને મદોદરી આર્થિકા થઇ ગઇ અને તપસ્યા કરવા લાગી. એજ સમયે રાવણની પ્રેરેન ચંદ્રનખા જે પોતાના પતિ ખરદૂષણના મરવા પછી ધણું વર્ષ થયાં વિધવા અવસ્થામાં આવિકાનાં મતો પાળી રહી હતી, તે પણ હવે આર્થિકા થઇ ગઇ. ઉપરની બાબત લેખકે હિંદુઓના રામાયણની લખી હશે કે જેને જૈનો પ્રમાણિક માનતા નથી.

૩. “દ્રૌપદીને પાંચ પતિ હતા.” આ વાત પણ દિગંબર જૈન શાસ્ત્રોમાં નથી. શ્રીજિન-રોનાચાર્યકૃત જાણીતા દરીવરપુરાણ ગ્રંથમાં તથા પાંડવપુરાણમાં ચોખ્ખું દર્શાવેલું છે કે દ્રૌપદી માત્ર અર્જુનનીજ પત્ની હતી. દિગંબર જૈન શાસ્ત્રોમાં કોઇ પણ સ્થળે એવું કોઇ પણ દ્રષ્ટાંત ‘મળતું’ નથી કે કોઇ ધર્માત્મા ગ્રહ-સ્થ સ્ત્રીએ વિધવા થવાથી ફરી લગ્ન (વિધવાવિવાહ) કર્યો હોય. વિધવાવિવાહ શબ્દજ અસંબદ્ધ છે. એ વાક્યજ અશુદ્ધ છે કેમકે પ્રાચીન કાળમાં વિવાહનો અર્થ યોગ્ય વર સાથે કન્યાના દાનનો હતો. સ્ત્રીઓને બીજા પતિ માટે એટલે સુધી અટકાવ હતો કે જ્યારે રાજ્યસભીના વિવાહ માટે આવેલા નેમીતાથ તીર્થંકર વૈરાગ્યવાન થઇને પાછા ચાલ્યા ગયા ત્યારે રાજ્યે કશું કે-જે કે નેમીતાથનું પાણિગ્રહણ પ્રકટરૂપે મને થયું નથી, તોપણ હું મારા મનથી એમનેજ વરી સુધી છું. હું અન્ય પુરૂષની ધ્વજા કરી રાકતી નથી. જે વાતની દિગંબર જૈન શાસ્ત્ર આદ્યા આપતું નથી તેનેજ દિગંબર જૈનો ધર્મ વિરૂદ્ધ ગાનરો.

પ્રમુખ શેઠ નવલચંદે પોતાના બાપણમાં વિધવાવિવાહને અજરૂરિપણ બતાવ્યો છે કેમકે જે કામોમાં વિધવાવિવાહનો રિવાજ છે તેમાં પણ ૧૫ વર્ષ સુધીની ઉંમરની ૧૦૦૦ માં ૧૫ વિધવાઓ ફિવામાં આવે છે. મુંબઇ પ્રાંતના

મુસલમાન અને ખ્રીસ્તીઓમાં અનુક્રમે ૧૦૦૦માં ૨૦ અને ૧૩ વિધવા મળી આવે છે. જૈનોમાં વિધવાઓની જે સંખ્યા વધારે છે તે બાળલગ્ન, વૃદ્ધવિવાહ, વેસ્થાવૃત્ય ગરેરે, કુરિવાજો બંધ કરવાથી બાકી થઇ શકશે અને કોઇપણ બાળવિધવા જણાઇ શકશે નહિ. પ્રમુખના બાપણથી અધિપતિને માલૂમ પડ્યું હશે કે જે નીચ કામમાં વિધવાવિવાહ થાય છે ત્યાં બાળલગ્ન વધુ થાય છે કેમકે વિવાહ કરવા યોગ્ય વિધવા અને કન્યા બન્ને તૈયાર હોવાથી કન્યાના બાપો સારો વર મળવાની લાલચે લાચાર થઇને નાની ઉંમરમાં પરણાવી દે છે અને મુંબાઈ સેસન્સ કમીશનના લખવા પ્રમાણે એમજ છે.

પ્રમુખના બાપણના ૬ હા પાનેથી અધિપતિને માલૂમ પડશે કે મુંબાઈ પ્રાંતમાં જૈનોમાં બાળકોથી કન્યાઓ વધુ હિપજ યાગ છે અર્થાત્ ૧૦૦૦ માં ૧૧૫૮ છોકરા અને ૧૩૦૪ છોકરીઓ છે. જે માતાઓ કન્યાઓની યોગ્ય રીતે બરદાસ્ત કરે તો કન્યાઓના વિવાહ માટેજ પુરૂષો મળવા સુરકેલ થઇ પડે, તો પછી વિધવાઓ થાટ કયાંથીજ મળે અને જે વિધવાવિવાહ ચાલુ થાય તો મુંબાઈના સેન્સસ ઓફિસરે લખ્યું છે તેવુંજ ફળ થાય કે કન્યાઓના બાળલગ્ન આથી વધુ થાય અથવા મોટી ઉંમર સુધીકુમારા રહેવું પડે છતાં ફારજોથી પ્રમુખે જે લખ્યું છે તે બરાબર છે. મુંબાઈ સમાચારના ૧૪મી માર્ચના અંકમાં એક જૈને દિગંબર જૈન કોમની ધટતી જતી સંખ્યાને મટાડવાના ઉપાયો માટે જે લેખ લખેલો છે, તેમાં બતાવેલા ઉપાયો તાકીદે અમલમાં લાવવાની જરૂર છે. વિધવાઓ માટે આશ્રમો હોવાની જે જરૂરાત બતાવેલી છે તે યોગ્ય છે. એક બાળ વિધવાઓની સંખ્યા ઓછી કરવાનાં કારણો અમલમાં આવે અને બીજા બાળુએ જે વિધવાઓ હોય તેને યોગ્ય કેળવણી દ્વારા ઉપયોગી બનાવવામાં આવે, એજ યોગ્ય છે.



સોજીત્રા સંભાના મટેપરાં (વીસા-
મેવાહા)ના પુકહાના સંભાવા-
જ્ઞાને પુક વિનંતિ.



બાહ્યો, હવે આપણું પંચ આણુંદ
સુકામે ભરાઈ તેની અંદર સુધારાઓ થયા તે સર્વે
આપને યાદ દશે. આપણે આજ સુધી મધના
ટીપાની માફક જે આશાઓ રાખતા હતા
તેમાંનું કાંઈપણ થયું નથી, એમ હવે સારી પેઠે
સમજ્યા હશે.

આપણા એકાના પંચ સિવાયના બીજાઓ
જ્યારે આપણને હવકા ગણે છે તો તે વિષે
તમારાં ફર્ક જ્યારે બીજાં થતાં નથી તે શું ?

મહાત્મા મોહનદાસ કરમચંદ માંધીના
શબ્દો લઈ તેમની માફક પોતેજ જ્યારે પરિ-
શ્રમ ઉઠાવશે અને બીજાઓની દરકાર નહીં
કરે તોજ ફળીભૂત થશે અને સારી કીર્તિ-
ને પામશે.

જેઓ આપણી પાસેથી કન્યાઓ લઈ જઈ
ને આપણનેજ ધીકારે છે, તો તે તમો કેમ સહન
કરો છો ? આ બાબતને વિચાર કરી આપણે
તે વિષે કંઈ પણ યોગ્ય કાર્ય કરીશું નહીં.
તોપણ આપણી પાયમાલી થઈ જશે, માટે
હવે ઘોર બંધમાંથી જાગે તો સારું.

આપણા સંસ્વાવાળાઓએ ભેગા થઈ નીચે
ચુનગ દરાવ કરી તેને અંમલગાં તાકીદે સુકવાની
જરૂર છે કે જેથી કરી આપણને જેઓ હલકા
જાણતા હશે તેઓજ આપણી પ્રશંસા કરશે.

૧ આપણા સંભાની અંદર કોઈને નીચ
બેસ ન ગણતો મધમાને સમાન ગણવા.

૨. આપણા સંભાની બહાર કોઈએ કન્યા
આપવી નહીં અને આપે તો તેની સાથે કોઈપણ
જાતના સંપ્રદાય રાખવો નહીં અને તે મંજૂર-
માં તેનો કોઈએ પણ પછ પકડવો નહીં

૩. આપણી સંભામાંનો કોઈ માણસ કન્યા-
વિક્રમ કરી પોતાનું કાણું મોં કરે તેને આપણા
સંભાના વ્યવહારથી છ'દગીપર્યંત બહાર મુકવો.

૪. આપણા સંભાની અંદર બની શકે તો
અંકુસેશ્વરના મેવાડાબાહ્યો તથા વાંચ-
સમાના રાયકવાળા બાહ્યોને તથા બીજા
દિગંજરો બાહ્યોને ભેળવી આપણા સંભાની
અંદર બસાવી સંખ્યા વધારવી.

૫. આપણા સંભાની અંદર કોઈ સાદું
તેમણું કરે નહીં, પણ પોતાની નજરમાં આવે
ત્યાં પણ આપણા સંભાની અંદરજ કન્યા
આપવા ભેગાને સંપ્રદાય કરે તે વિષે યોગ્ય
બંદોબસ્ત મજબુતાઈથી કરવો કે જેથી કરી
આપણને બીજા હલકા માને નહીં.

જેઓ આપણને ધીકારતા હોય તેવાઓને
કન્યા આપવી એ આપણી ફેટલી હલકાઈ
ફેલાય. બીજાના આગળ પચની બાબતમાં
જાણીશું છતાં આપણી હલકાઈ કેપાકવી અગર
બાહ્યોએ કેહેવા અને કેહેવું કે તમે સુધારો
કરો એ આપણે કેટલું શરમાવા જેવું છે ! તે
માણસ છે અને આપણે શું નથી ! બીજી કે
નીચી પદવી ભેળવવી એ આપણા હાથમાં
છે, માટે જોમ અને તેમ આપણામાં સુધારો
કરવા આપણે જાતેજ તૈયાર થવું જોઈએ. કેહેવત
છે કે 'આપ મુખા વિના સ્વર્ગે ન જવાય'
માટે હે મહારાજો ! હવે આપણા બધાઓને
વિચાર કરી 'દાશે કરીશું' એમ ન રાખતાં જે
કરવું યોગ્ય લાગે તે જાહેર કરવા તત્પર થશો.

ગાતિસેવક-છવણલાલ હલોમ-દ-મુખાઈ.

પુત્રીકો માતાકા ઉપદેશ

(સસુરાલ જાતે સમય)

વિવાહાદિ પ્રસંગોપર ચાંટને યોગ્ય, પૃ. ૩૦
મૂલ્ય સિર્ક)-૧૧ ઓર ૬) સૈકજા ।

મૈનેજર, દિ. જૈન પુસ્તકાલય-સુરત.

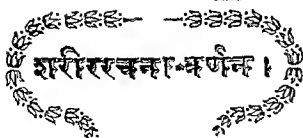


आजकल करने २ अरसा २० सालसे मैं एक ऐसी दवाकी खोजमें था जो जगत्को आशीर्वाद द्य हो जाय, एक ही छोटी सीसी अपने जेबमें रखनेसे सारा दवाखाना निषरामा हो जाय—यानी अपनी जाकियती जेबमें एक छोटीसी सीसीके अंदर सारा दवाखाना आजाय। परदेशमें, रेलमें, जहाजमें, जंगलमें, छोटे मोटे गांवमें जहां जिस वक्त कोई बीमारी उमड़ आदे उसी दम उसका इलाज अपने जेबमेंसे निकल पड़े। कई आशा निराशाके झोके खाते आज २० वर्षके पड़े परिश्रमके बाद मैंने यह “चन्द्रामृत” पाया है।

इससे यादी, बदहजमी, इस्त, कै, खांसी, दमा, शिरदर्द, जुखाम, आंखका दर्द दांत या दाढ़का दर्द, कर्ण रोग, दाद, खुजली, खाज, हैजा, सूक्ष्म, गठिया, घात, लकना, कमजोरी, अशक्ति, नामर्दी, जहरी डंक, प्लीहा, अण्डवृद्धि, प्रदर, रोग, सररी, बनासीर, मुहके छाले, प्रमेह, रक्त शुद्धि, जलना, ताप (बुखार), न्दारुआ, हिचकी, दुर्गेन्धि, लठमल आदि प्रायः सर्व रोगोंका पूरा इलाज है। यह रोगोंको एक सीसी अवश्य पास रखना चाहिये। कीमत अमीर गरीब सबके लिये थोड़ी रक्की है खाने लगानेकी सरकीच दवाके साथ मिलती है। की० फी सीसी ॥१॥ तीन सीसी २) ४० दा० सचें अलग।

दवा मंगानेका स्थल:—

चन्द्रसेन जैन चैद्य, चन्द्राश्रम-इटावह. U. P.

**શરીરરચના-કર્ણન ।**

(હે. દાથીચર માણેકચંદ-સોનાસળ)

(૪ થા અંકથી ચાલુ)

શરીરના મુખ્ય ભાગો.

આપણા શરીરની અંદર કયા કયા અવયવો અથવા ભાગો કયાં કયાં આવેલા છે, એ સંબંધી સાધારણ જ્ઞાન દરેક માણસને હોયું જોઈએ, પણ આપણા દેશી લોકો એ સંબંધી કશું પણ જ્ઞાન ધરાવતા નથી અને તેથી તેઓ પોતાનાં દરદોના સંબંધમાં દ્વારંવાર મૂલો કરે છે અને પોતાના ડૉક્ટરો કે વૈદ્યોને પણ મૂલવામાં નાંચી દે છે. આવી અજ્ઞાનતાને લીધે દર્દીની હકિકત પર વડુન થોડું વનન રાહી શકાય છે અને જો ડૉક્ટર દર્દીના ચોલવાપરજ વિશ્વાસ રાહી જાતે શરીર તપાસ્યા વિના દૃશ આપે છે, તો જરૂર મૂલ થાય છે. દર્દ કલેનામાં હોય અને થાંક ચરલનો કાઢવામાં આવે છે અથવા દર્દ આંતરડામાં હોય અને વાત વલેજાની કરવામાં આવે છે. પોતાના શરીર વિષે માણસો એ આટલું બધું અજાણપણું રાસતું જોઈએ નહિ. શરીરની અંદરના મુખ્ય મુખ્ય ભાગોનું અને તેનાં કાર્યોનું જ્ઞાન તો દરેક માણસે મેઝવતું જોઈએ.

શરીરમાં માથું અને ધડ એ બે મુખ્ય અંગો છે. એ બન્ને ભાગો ડોકવડે સંધાયેલા છે. જો ડોકથી એ વચ્ચે ભાગોને જુદા કરવામાં આવે, તો શરીરનો સત્તો ગ્રવહાર શંક પડી મૃત્યુ નીપજે છે.

માથું.

માથું શરીરનું ઉત્તમ અંગ ગણાય છે; કેમકે આપણા શરીર પર અધિકાર ચલાવનારા અધિકારીનો મુખ્ય મેહેલ માથામાં આવેલો છે, જે મગજ અથવા મેજું એવા નામથી ઓળખાય છે. માથામાં ચંદાર દૃષ્ટિદ પડતા અવયવોમાં સોપરી અથવા મગજની તુંવડી, જોડા માંટે બે આંત્રો, સાંખજા માંટે બે કાન, મુંચવા માટે બે નસ્કોરાં અને ચોલવા માટે મોંદું છે, જે સર્વે અવયવો પેલા અધિકારીના ઉપયોગને માટે તેના મેહેલની લગોલગ મોઢવામાં આવેલા છે. માથામાં બે ગોઘલા અથવા પોલો છે એક સોપરીની પોલ અને બીજી મોંની પોલ. આ શરીરના અધિકારીનું ઘર સોપરીની પોલમાં છે. આ ઘરમાં જ્ઞાનતંતુઓ અને ગતિતંતુઓનો સંગ્રહ થયેલો છે અને એ સંગ્રહને મગજ એવું નામ આપવામાં આવ્યું છે. મોંની પોલમાં મોં, નીચ, દાંત વગેરે આવેલા છે. મોંના ગોઘલામાંથી એક નઠ ડોક વાટે જાતિમાં થઈને પેટમાં ઉતરે છે, જે અન્ન-નઠ કહેવાય છે, અને સોપરીની પોલમાંથી એક નઠ પાટલા ભાગમાં ચરડાની કરોડમાં ઉતરે છે જે કરોડરજ્જુ નઠ કહેવાય છે, અને વામ્તવિક રીતે જોતાં એ બે નઠ વાટે આ આપણા શરીરનો સર્વે વ્યવહાર ચાલે છે, તેથી જ મોંદાનો પહેલો, હાથનો જીનો, પેટનો જીનો અને પગનો છેલ્લો દરજ્જો ગણેલો છે.

ધડ.

ધડમાં પણ માથાની માફક જ મહોટી પોલો છે—એક જાતિની પોલ અને બીજી



પેટની પોલ. છાતિની પોલ અથવા પાંજરું એક કોટડીના જેવું છે. છાતિની પોલમાં બે ફેફસાં અને હૃદય એ બે મુખ્ય જીવનસ્થાન છે. એ સિવાય મોંની પોલમાંથી હોક વાંટે ઉતારેલાં અન્ન-નલ્લ છાતિમાં થઈને નીચે ઉતરે છે. છાતિમાં આ અવયવો સિવાય સ્ત્રીઓને બે સ્તન હોય છે. છાતિ તથા પેટની પોલની વચમાં માંસનો ઘુંમટના આકારનો એક ગોળ પડદો દીશાલના આકારે આવેલો છે. અન્નનલ્લ એ દિવાલને મેદીને પેટમાં ઉતરે છે.

પેટની પોલના ઉપલા ભાગમાં યકૃત એટલે કલેજું, પ્લીહ એટલે વરોલ, આમાસ્ય એટલે હોજરી અને પત્ત્વાશય એટલે આંતરડાં આવેલાં છે. હોજરીના ઉપલા છેડામાં અન્ન-નલ્લ મળે છે અને નીચેના છેડામાંથી નાનાં આંતરડાંની શરૂઆત થાય છે. પેટની પોલના નીચલા ભાગમાં મૂત્રાશય એટલે કુકો આવેલ છે, જેમાંથી મૂત્ર મૂત્રમાર્ગની નળી વાંટે બહાર આવે છે. મૂત્રનળી નીચે ટૂપણની કોથળી આવેલી છે. ઘડના પાલકા હાડકાંને વરડાની કરોડ કહે છે, જેના આધારથી આજુ શરીર ટ્યાર રહેલું છે. કરોડમાં હાડકાંની એક પોલી નળી ઉતરેલી છે. આ નળી ઉપર છેક મગજ સાથે સંબંધ રાખે છે અને નીચે કંઈ મુધી પહોંચેલી છે. ઘડની અંદર છાતિ અને પેટ એ બે મ્હોટી પોલો સિવાય બે ચાતુમાં બે હાથ અને નીચે બે પગ આવેલા છે, જે મગજમાં રહેલા અધિકારીની આજ્ઞાથી પદાર્થોને પકડે છે અને શરીરને એકથી બીજી તરફ એ લઈ જાય છે.

સ્વોપરીની પોલ (માથાની ટુંબી Skull)

પાલક નગામ્યા પ્રમાણે શરીરમાં મુખ્ય

ત્રણ અગત્યની પોલો છે—સ્વોપરીની પોલ, છાતિની પોલ, અને પેટની પોલ. શરીરના સર્વે ચૈતન્યવાળા ભાગો અથવા જીવસ્થાનો એ ત્રણ પોલોમાં આવેલા છે. શરીરમાં જુદા જુદા અવયવોની વૃથક વૃથક ક્રિયા થવી, તેનું નામ જીવ છે, અને એ ક્રિયાઓ બંધ પડવી તેનું નામ મૃત્યુ છે. એવી ચૈતન્યવાળી ક્રિયા અથવા જીવનનાં મુખ્ય સ્થાનોમાં મગજ સર્વોપરી સ્થાન છે અને તેન કારણથી તેનું રક્ષણ પણ વધુજ મનવ્રુત કિલ્લાની અંદર થયેલું છે. એ કિલ્લો તે માથાની સ્વોપરી છે. માથાની આ ટુંબડીની અંદર મગજના ચાર ભાગો સિવાય આંત્ર, કાન, નાક, જીભ અને મોંઢાનાં ઘર આવેલાં છે.

મગજ (મેનું Brain)

મગજ સ્વોપરીની પોલમાં બરાબર ઘેસ્ટું કરવામાં આવેલું છે, સ્વોપરીની જમીન મગજની સપાટીને અનુસરતી છે એટલે તેમાં ત્રાહા લડના છે, જેમાં મગજ બરાબર ઘેસ્ટું આવે છે. સ્વોપરીમાં મગજને માટે ત્રણ આચ્છાદન એટલે પડ છે. સૌથી ઉપરનું વાલ્કપડ જાડું તથા મનવ્રુત છે અને સ્વોપરીની અંદર ચારે તરફ આવેલું છે; તેનો એક કાંટો મગજના બે ભાગની વચમાં ઉતરે છે. મગજમાંથી જે ત્રોહી કરીને પાડું જાય છે, તેને માટે આ વાલ્કપડમાં નળી જેવા માર્ગ હોય છે. બીજું પડ મેજના મધ્યમાં છે. જેને મધ્યાવરણ કહેવામાં આવે છે તે પડ ચેવડું છે અને તેની પોલમાં પ્રવાહી છે. ત્રીજું પડ મગજની લગોલગ આવેલું છે, તેને અંતરપડ એવા નામથી ઓળખવું. મગજના પોષણ માટે તેમાં રક્ત નળીઓની નાલ પરાયલી છે. મગ-



જના ચાર મામ કરવામાં આવેલા છે, જેમાં બે મુલ્ય છે—આગલું અથવા મોટું મેજું અને પાછલું અથવા નાનું મેજું. મોટું મેજું માથાના આગળ અને ઉપલા ભાગમાં મુકાયલું છે. મમરોની જરા ઉપરથી વેડ કાનના હિટ્ટો આગળ થઈને માથાની આસપાસ એક લીટી ઘેરવાથી મોટા મેજાની હદનો અડસટો મનમાં આવી શકે છે. તે ઉપરથી ગોઠ કરવલીવાળું અને છઠ્ઠાચલું દેખાય છે. તેના પ્રપચ્છા એક ફાટ હોવાથી મધ્યમાંથી તેના બે અર્ધગોળાકાર ભાગ થયેલા છે. આ મોટા મગજના ઝંડાણમાં ઘણ નાની પોલાણ જગાઓ છે, અને તેના તલ્લીઆમાંથી ફેટ્કીક તંતુઓ નીકળી નાક, કાન, જીભ વગેરેમાં ફેલાયલી છે.

નાનું મેજું માથાના પાછલા હાડકાંના છાદામાં મુકાયલું છે. તે મોટા મેજાનો જેવું કરવલીવાળું નથી, પણ ચોપડીનાં પાનાંઓની પેઠે તેમાં પડ હોય છે. તેના પણ બે અર્ધગોળા ભાગ થયેલા છે. તેનું કદ નારંગી જેવડું હોય છે. નાનું મેજું કાપતાં અંદરના પ્રાદના જેવો દેખાવ નજરે પડે છે. મગજ સાથે જો બીજા બે નાના ભાગો આવેલા છે, તેમાંનો એક ભાગ સૌથી નીચે આવેલો છે અને તે ચરદાની કરોડરજ્જુ સાથે સંકેત વધાવે છે. આ માગની મદરથી શ્વાસ લેવાનું કામ ચાલે છે. કોઈ પ્રાણીનું આગલું મેજું કાપી નાંચ્યું હોય તોપણ તેનો આ ભાગ આગવો રહ્યો હોય ત્યાં સુધી શ્વાસની ક્રિયા ચાલુ રહેશે.

આ ભાગને તથા ઉપરનાં મોટાં તેમજ નાનાં મેજાંને નોટનાર એક ચોથો ભાગ મગજનો છે,

તે આલો પટેલો છે અને તે સૌથી ન્હાનો ભાગ છે.

આજના મગજનું એકંદર સરાસરી વજન આસર ઘણ રતલ ગણાય છે. સ્ત્રીનું મગજ પુરુષના મગજ કરતાં કોઈક ન્હાનું હોય છે મગજના નાના મોટા કદના પ્રમાણમાં માણસની ઓછી વધતી અકલ હોય છે. મોટા મગજવાળા માણસમાં વધારે બુદ્ધિ હોય છે અને ન્હાના મગજનાં માણસમાં ઓછી બુદ્ધિ હોય છે. ઉપરની સાથે પ્રપચ્છ, પળ, વેચ્છાંક, ચર્સ, સુધી વચનમાં વધે છે અને ૩૦ થી ૪૦ વરસની વય સુધીમાં સંપૂર્ણ હાલતમાં આવે છે. આ ઉપર પછી મગજનું વજન ઘટવા માંડે છે. કોઈ કોઈ વધુ બુદ્ધિશાળી માણસનું મેજું વચનમાં ૪ રતલ જેટલું હોય છે અને છેક મૂર્ખ માણસનું મેજું ૧૧ રતલ જેટલું પણ થતું નથી. હાથી અને મગરમચ્છ સિવાય બીજાં સજ્જાં પ્રાણી કરતા માણસ જાતનું મગજ વધારે મોરે હોય છે. હાથીમાં તેનું વજન ૮ થી ૧૦ રતલનું અને મગરમચ્છમાં ૧ રતલ જેટલું હોય, એમ કહેવાય છે.

માથાની તુંબીના ધીજા

અગત્યના અવયવો.

આંસ (Eye). માથાની તુંબીમાં જોવાની ઇંદ્રિ ગોઠવી છે, તેને આંસ કહેવામાં આવે છે. આંસો બે છે. મમરો, પાંપણો, પોપચાં વગેરે તેની વહાર દેવાવના ભાગો સંવેને જાણીતા છે, આંસજા ડોલા નાવની કને બાજુના છાદાઓમાં મુકાયેલા છે.

ડોલા ઉપર ઘણ પડ છે, સંવેથી વ્હારનું પડ ધોલા રંગનું છે, તે અપારદર્શક હોવાથી



તેમાંથી પ્રકાશ અંદર જઈ શકતો નથી. એ પડ સ્પર્શ હોવાથી આંખના ડોહાની ગોઠાકૃતિ કાયમ રહી શકે છે, પણ તેનો આગલો વચ્ચો ભાગ કાચ જેવો સ્વચ્છ હોવાથી તેમાંથી અનવાહું જઈ શકે છે. આંખના સફેદ પડ નીચે વીંતું કાઠું પડ છે, તે ક્રીળી નસોતું તથા તંતુઓનું બનેલું છે. એના રંગ પ્રમાણે ઉપરનો ડોહો કાઠો કે માંજરો દેખાય છે. આંખની અંદર ગોઠ ચક્કર જેવું દેખાય છે, તે કીકીનો પડદો છે. તેના મધ્યમાં એક નાકું છે, જેને આપણે કીકી અથવા પુતલી કહીએ છીએ. કીકીના નાકા ઉપર પહેલા પડનો નાજુક આગલો ભાગ આવેલો છે. કીકીના પડદાના સંકોચાવા પ્રમાણે કીકી ૨^૧ થી ૧^૧ ઇંચ સુધી ન્હાની મોટી થઈ શકે છે, અને તે ઉપરથી કેટલાક રોગની પરીક્ષા કરી શકાય છે. આંખનું ત્રીજું પડ છેક અંદર છે, અને આંખના દૃષ્ટિ તંતુઓ ડોહામાં પયરાઈ ગયાથી તે બનેલું છે. તે તંતુવાલું પડ કહેવાય છે. આંખના બહારના પડ સાથે માંસના છ નાના ડોહાઓ વચ્ચે છે, જે વડે આપણે ડોહાને ચાર તરફ ફેરવી શકીએ છીએ. આંખની અંદર ઘણાં ઓરડાઓ અથવા કોષ્ટ્રો જેવી જગ્યાઓ છે, જેમાં પાણી તથા રતન જેવી આંખની અગત્યની વીંતો રહી શકે છે. આગલો ઓરડો આંખના સ્વચ્છ સંકદ પડની અને રતનની કોષ્ટ્રોની વચ્ચેમાં છે. તે ઓરડો સૌથી ન્હાનો છે. તેમાં આંખનું પાણી રહે છે, જેનું વજન પાંચ થઈ માર જેટલું હોય છે. આંખનો વચ્ચો ઓરડો મહાન પડનો બનેલો છે અને

તેમાં આંખનું રતન લટકેલું છે. આ રતન આગલ પાછલ ગોઠ હીરા જેવું પારદર્શક છે. આંખનો ત્રીજો અને પાછલો ઓરડો સર્વેથી મોટો છે, જેમાં વીલોર જેવો નિર્મલ પદાર્થ આવેલો છે.

કાન (Ear)

સાંમઝવાની ઇન્દ્રિયને કાન કહેવામાં આવે છે. માથાની તુંવડીમાં એ સાંમઝવાની ઇન્દ્રિયે વાજુમાં ગોઠવવામાં આવી છે. કાનનો બહારનો જે ભાગ દેખાય છે તે કુમઝાં હાડકાંનો બનેલો છે. દરેક કાનમાં એક એક છિદ્ર છે. એ છિદ્ર આગળથી એક ન્હાની નક્કી શરૂ થાય છે, જે આશરે દોઢ ઇંચ લાંબી છે એ નક્કી ઉપર ચામડીનું પડ છે. કાનની નક્કીનો આગલો ભાગ નરમ હાડકાંનો બનેલો છે અને પાછલો ભાગ હાડકાંનો બનેલો છે. કાનની અંદરની ત્વચા ઘણીજ પાતલી હોય છે. કાનમાં મેઝ ભરાય છે, તે મેઝ બહારથી આવતો નથી પણ આ વારીક ચામડીમાંથી ઉત્પન્ન થયા કરે છે.

કાનનો વચ્ચો ભાગ ન્હાનાં છાંદાનો બનેલો છે. તેની તથા બહારની કર્ણ-નક્કીની વચ્ચે એક વારીક પડદો આવેલો છે, જેને આપણે કાનનો પડદો અથવા પડઘમ કહીએ છીએ. આ ભાગમાંથી એક વારીક નક્કી નીકળીને, અંદરના ભાગમાં ઉતરેલી છે અને તેથી કાનના આ વચ્ચા ભાગ સાથે મોંઢાને સંબંધ રહેલો છે.

કાનનો છેક અંદરનો ભાગ ઘણો ગુંચવણ ભરેલો છે અને સામાન્ય વર્ણનથી નહિ સમજી શકાય એવો છે. મગજમાંથી આવેલી શ્રવણ તંતુઓ એ ભાગમાં ઘસાટ થાય છે. તે તંતુઓને પ્રેરણા થતા મોટે તેમાં વારીક છિદ્રો હોય છે.



નાક (Nose)

સુંવાની ઇન્દ્રિયે નાક કહેવામાં આવે છે. તેને માથાની તુંબીમાં ચહેરાના મધ્યમાં મોડવામાં આવેલું છે. નાકનો આગલો ભાગ પાંચ કુમળાં હાડકાં (કુર્ચાઓ) નો બનેલો છે. બહાર વે છિદ્રો દેખાય છે તેને નસ્કોરાં કહેવામાં આવે છે. નાકના વે ભાગ છે—એક બહાર દેખાતો ભાગ અને બીજો અંદરનો ભાગ. બહાર દેખાતા નાકનું મૂળ કપાલ સાથે છે. જેમ બહાર છિદ્રો છે, તેમ નાકના અંદરના ભાગમાં પણ વે છિદ્રો છે, જે મોઢાના પાછળા ભાગ સાથે સંવંધ રાલે છે. વે નસ્કોરાંની વચમાં એક પડદો છે. નસ્કોરાંનાં મોં આગળ થાકે છે, જે નાકની અંદર જતી ધૂલ વગેરેનો અટકાવ કરવાનું કામ કરાવે છે. નાક થોડે શ્વાસોશ્વાસ લેવાય છે અને વાસ પરલાય છે.

જીભ (Tongue)

મગજનાં જુદાં જુદાં કામ કરનારી જ્ઞાનેન્દ્રિયોમાં સ્વાદનું જ્ઞાન જાણનારી ઇન્દ્રિય જીભ છે. સ્વાદની ઇન્દ્રિય જીભમાં વસેલી છે. જીભ સિવાય જીભની આસપાસના ભાગો જેવાંકે તાલબું, પહજીભી, ચોરીઆ, તેમાં પણ સ્વાદ પારસ્ત્રવાની શક્તિ હોય એમ જોવામાં આવે છે, જેમના અગ્રમાગ ઉપર ઢાળા ઢાળા હોય છે, તે ઢાળા સુધી મગજની સ્વાદેન્દ્રિયના તંતુઓ પસરેલા હોય છે, અને તેથી જીભના ટેરવે કોઈ વસ્તુનો મર્શ થતાં જ સ્વાદની પરીક્ષા થઈ શકે છે. બહારનો કોઈ પણ પદાર્થ, તીલો કે શાકો હોય છે, તેનો પરીક્ષા જીભ કરી શકે છે. પદાર્થ જેમ વધારે પ્રવાહી એટલે જીભના તંતુઓ

જલ્દી પ્રવેશ કરે એવો હોય, તેમ સ્વાદ વધારે જલ્દી અને સારી રીતે પરલાય છે. કઠણ પદાર્થોનાં પરમાણુઓ જીભમાં ઉત્પન્ન થતા રસમાં પ્રવેશ કરે છે, ત્યારે જ તેના સ્વાદનું જ્ઞાન થઈ શકે છે. જીભની અંદરના તંતુઓને જેવા સ્વાદનું જ્ઞાન થાય છે, તે જ્ઞાન મગજને પહોંચાડે છે ત્યારે જ આપણને અમુક સ્વાદનું માન અને જ્ઞાન થાય છે.

જીભ માંસમય લોચાની બનેલી છે. ચારે તરફના સ્નાયુ જીભને વલ્ગેલા હોવાથી જીભ બધી તરફ વળી શકે છે. खोराक चाववाना કામમાં જીભ ઘળીજ મદદ કરે છે. તે खोराकને વારંવાર દાંત નીચે લાવે છે, અને જીભની અળીઓ खोराकને નરમ કરે છે. આ સિવાય ચોલવાના કામમાં જીભનો મુખ્ય ઉપયોગ છે, ટૂંકી જીભવાળું માણસ બરાબર ચોલી શકતું નથી.

છાતિની પોલ. (Chest)

છાતિની પોલમાં રક્તાશય, મોટી રક્ત વાહિની અને વે ફેફસાં આવેલો છે. આ સિવાય અન્નનળ છાતિમાં થઈ પેટમાં ઉતરે છે અને શ્વાસનળીનો થોડો ભાગ પણ છાતિની પોલમાં આવેલો છે.

છાતિમાં વે ચાતુર વે ફેફસાં છે અને વચમાં રક્તાશય (હાર્ટ) છે. છાતિમાં દરેક ચાતુર વાર વાર પાંસડીઓ છે. છાતિના પાછલા પીઠના ભાગમાં મધ્યમાં કરોડ છે અને છાતિના આગળ ભાગમાં મધ્યમાં ઉરોમ્થિ એટલે છાતિનું સીનાનું હાડકું છે જેની સાથે પાંસડીઓ વલ્ગેલી છે. આ સીનાનું હાડકું આશરે પાંચ ઈંચ લાંબુ



છે. આ અસ્થિમાં મૂલ તો ઘણા કટકા હોય છે, પણ પાછલથી તે કટકાઓ સંઘાઈ જાય છે. સીનાતું હાડકું ગઢા તરફ પહોલું હોય છે અને નીચે જતાં સાંકડું થતે થતે પીપડી આગળ અળીદાર થાય છે. પછવાડે આ ચોર પાંસઝી ત્રડાની કરોડના મળકા સાથે સંઘાળી છે અને આગળ પ્રથમની સાત પાંસઝીઓ ઇતિના સીનાના હાડકાં સાથે જોડાયલી છે અને નીચેની ત્રણ પાંસઝીઓના છેડા છૂટા છે. પાંસઝીઓ સ્થિતિસ્થાપક છે, ટૂંકા નરમ અને વઘી શકે એવી હોવાથી શ્વાસોશ્વાસની ક્રિયામાં મદદ કરતાં થઈ પડે છે.

ફેફસાં (Lungs)

ફેફસાં બે છે, અને તે છાતિમાં બે વાજુ પર આવેલાં છે. ફેફસાંનો આકાર પડા જેવો, ઉપરથી સાંકડો અને નીચેથી પહોળો હોય છે અને ગુણ વાદળી જેવો છે. દરેક ફેફસાંનું વજન લગભગ દોઢ રતલનું હોય છે. ટાંચા ફેફસાં કરતાં જમણું ફેફસું નરા વધારે મોટું છે, પણ જમણા ફેફસા કરતાં ટાંચું ફેફસું વધારે લાંબું હોય છે.

ફેફસાં વાદળી જેવાં સ્થિતિસ્થાપક હોવાથી દૃઢાય છે અને પાણં પૂરે છે. ફેફસાંની અંદર ન્હાનાં ન્હાનાં અસંખ્ય છિદ્રો અથવા પોલા ડાળા હોય છે, જે હવાથી ભરેલા હોય છે. એવી મગગીકતવામાં આવેલી છે કે, દરેક ફેફસામાં એવાં ત્રીસ કરોડ છિદ્રો છે. જો ફેફસું કાત કોથળી જેવું હોત, તો તેમાં હવાને ઘગી થોડી જગ્યા મઠી શકત, પણ ઉપર જગાવ્યા પ્રમાણે તેમાં અસંખ્ય છિદ્રો હોવાને લીધે હવાને

પુષ્કળ જગ્યા મઠી શકે છે. દરેક ફેફસાંમાં હિનાં હવાથી ભરેલાં છિદ્રો એકંદર ૧૪૦૦ ચોરસ ફીટ જેટલી જગ્યા રોકે.

પીઠના ત્રીજા મળકા સામેથી શ્વાસ નીની વે શાસ્ત્રાઓ થાય છે. જમણી શાસ્ત્રા જમણા ફેફસામાં જાય છે અને ડાબી શાસ્ત્રા ડાબા ફેફસામાં જાય છે. ફેફસામાં પહોંચતાં પહોંચતાં તે શ્વાસનળીની શાસ્ત્રાના ઉત્તરોત્તર ભાગો અને વિભાગો થઈ છેવટની વારીક શાસ્ત્રા પર પોટીઓ થઈ રહે છે. શ્વાસનળીઓના આ અસંખ્ય છેડાઓ જ્યાં આગળ ફેફસાંને મળે છે, ત્યાં હવા અને લોહી પરસ્પર સંવયમાં આવતાં લોહી શુદ્ધ થાય છે.

રક્તાશય (Heart)

રક્તાશય એ છાતિની વણોલમાં બે ફેફસાંની વચ્ચે, કાંઈક ડાબી તરફ વાંકી પડેલી એક માંસમય થેલી છે. ડાબી તરફની ઉપલી ત્રીજી પાંસઝીથી, નીચે છટ્ટી પાંસઝી મુઘી, તેની લંબાઈ પાંચ ઈંચની છે. આ થેલી અથવા રક્તાશય એ લોહીનો હોન છે, જેમાંથી લોહી આખા શરીરને પહોંચતું થાય છે. છાતિના ટાંચા પાસા પર પાંચમી અને છટ્ટી પાંસઝી ઉપર હાય મૂકી રાત્રવાથી જે ઘવકારો માલમ પડે છે, તે રક્તાશયનો છે. રક્તાશયનું કદ લગભગ મુઠી જેવડું છે અને વજન આશરે પોણા રતલનું છે. સ્ત્રીઓના રક્તાશયનું વજન અર્ધા રતલનું હોય છે. તે અંદરથી પોલું છે અને વનમાં એક પડદો આવવાથી તેના બે ભાગ થયા છે, જેમાંના એકને જમણો સંડ અને ચીમાને ડાબો સંડ એવા નામથી ઓચક્તવામાં આવે છે. દરેક



સંદના પાઠા વચ્ચે વિભાગ થાય છે. જમણાં સંદમાં કાલું લોહી અને ઢાઢા સંદમાં રાતું લોહી વહે છે. વચ્ચે સંદની વચ્ચમાં હિદ્ર હોય છે, તે હિદ્રને પડદા હોય છે, જે નીચલા સંદ તરફ ઉઘડે છે અને વંધ થાય છે. સુલ્લો હોય છે ત્યારે એક સંદનું લોહી બીજા ઓરડામાં નડે શકે છે, પણ વંધ થાય છે ત્યારે તેના પડદા દ્વારા તે સમગ્ર વંધ થાય છે કે તે ઓરડામાંથી આગળ ગયેલું લોહી પાછું તેમાં આવવા પામતું નથી. દરેક ઓરડામાં આશરે પાંચ તોલા લોહી સમાય છે.

રક્તશાયની આસપાસ એક મજબુત જાડો સફેદ પડદો ફરી વળેલો છે. એ પડદો એક વંધ કરેલી કોથળી જેવો છે અને રક્તશાયની સાથે વળેલો નથી. તેમાં પાણી જેવો રસ પેદા થાય છે, જેથી રક્તશાયને કસો પચારો લાગી શકતો નથી.

હાતિ તથા પેટ વચ્ચેનો પડદો- (Diaphragm)

હાથાક્રમ હાતિ તથા પેટની વચ્ચમાં એક પડદો છે, તે માંસના ઢોધાનો વનેલો છે; તે ગોળ ઘુમટના આકારમાં વનેતો છે. એ પડદો પાઠાથી વરડાની કરોડનાં હાટકાંની બંદરની બાજુ સાથે અને આગળથી પાંસઝીની બંદરની કોર સાથે ફરતો વળેલો છે. એ પડદાની ઉપલી બાજુ સાથે ઢાઢી જમણી તરફ ફેફસાં અને વચ્ચમાં રક્તશાય જોડાયેલું છે, અને નીચલી બાજુ સાથે જમણી તરફ કલેજું, ઢાઢી તરફ વરોળ અને વચ્ચમાં હોજરી જોડાયેલી છે.

આ પડદામાં ત્રણ મોટાં હિદ્રો છે, જેમાંના એકમાંથી મોટી ધોરી નસ અને બીજામાંથી અગ્નિજ્વાળા હાતિમાંથી પેટમાં ઉતરે છે. ત્રીજા હિદ્રમાંથી મોટી કાઢી નસ પેટમાંથી હાતિમાં જાય છે. આ ત્રણ મોટાં હિદ્રો સિવાય તેમાં બીજાં કેટલાંક વારીક હિદ્રો છે જે વાંદ જ્ઞાન-તંતુઓને રસ્તો મળે છે.

પેટની વચ્ચોળ Abdomen

શરીરમાં સૌથી મોટી વોળ પેટની છે. પેટની પોલના પાઠાના ભાગમાં વરડાની કરોડ આવેલી છે અને ઉપલા ભાગમાં બાજુપર પાંસઝીઓ આવેલી છે. આ પોલનું આગળું અને પડદાનું ઢાંકણ સ્નાયુ તથા નામડીનું વનેલું છે. ઉપરના ભાગમાં હાતિ અને પેટની વચ્ચે આવેલો ઘુમટના આકારનો પડદો છે, અને નીચલા ભાગમાં પેટનું ઢાંકણ છે. પેટમાં ટવાઈ જોવાથી દુબળા માણસના પેટનું ઢાંકણ એક કરોડને અડકે છે; અને કરોડના મળકા હાથને લગતા જણાય છે. પેટનું એક ઢાંકણ રીની ગર્ભશાળી અવસ્થામાં અને બહુ ચરબી તથા જઝોદર વગેરે દરદમાં ઘણુંજ વધી જાય છે. પેટની દિવાલની મધ્ય રેખામાં હાંટીનો સ્થાનો છે તેની નીચે પેટનું છે અને પેટના એક ઉપલા પાંસઝીઓની વચ્ચેના ભાગને પીપડી કહે છે; અને બાજુઓના ભાગને પડદા કહે છે. પેટમાં હોજરી, કલેજું, વરોળ, આંતરડા, મૂત્રાશયનાં ગુરદા વગેરે ગણા અગત્યના અવયવો આવેલા છે. તે સપ્તઝાંની ચોકસ હદ જાણવા તથા ધ્યાનમાં રાખવા માટે પેટની આસપાસ જે આટી અને જે સપી છીંટીઓ ઢોરલી કલ્પવાથી તેના નવ ભાગ થાય છે, અને તે નવ ભાગમાં કેટલા અવયવો આવેલા છે તે જણાવવા પછીનું અંકમાં લેખવામાં આવશે. (અપૂર્ણ)



(जे० मास्टर दीपचन्द परवार, नरसिंहपुर)

अहा ! यह दो अक्षरका शब्द कानों-को कैसा प्रिय मालूम पड़ता है । अहा ! इस शब्दके स्मरण होते ही हर्ष रोमाञ्च हो आते हैं । मन प्रफुल्लित होकर क्षणिक तो समस्त चिंताओंको विस्मरण कर जाता है । भय, शोक, ग्लानि, और हतोत्साहता पलायन कर जाती है । एक अपूर्व ही भावोंका संचार हो जाता है । साहस और बल बढ जाता है । कठिनसे कठिन काम भी सरल मालूम पड़ने लगते हैं । नस नसमें उत्साहका रक्त बहने लगता है । इत्यादि कहाँ तक कहा जाय ? यह शब्द (मित्र) जादू कैसा प्रभाव रखता है । यथार्थमें संसारमें मित्रके समान कोई भी हित् नहीं है । जिस समय माता पिता भ्राता स्त्री पुत्र सम्बन्धी सब किनारा कर जाते हैं उस समय मित्र ही सहायक होता है । जिसने मित्रकी कटर नहीं की, वह मित्र ही केगा । जो संपत्तिमें मिले और विपत्तिमें भूल जाय वह मित्र नहीं, किन्तु पूरा शत्रु है । सुख व शान्तिके समय मित्रकी परीक्षा ही क्या हो सकती है ? परीक्षा होती है विपत्तिमें । कहा है—

“संपत्तिमें तो करोड मित्र, पर मित्र वही जो विपत्ति पंगो” श्रीकृष्ण और सुदामाजीकी मित्रता लोकप्रसिद्ध है, क्योंकि

सुदामाजीपर जब विपत्ति आई, तब वे कुछ सोच समझ कर द्वारिका पहुँचे । श्रीकृष्ण महाराजकी डचोड़ीपर पुकार की, कि राजासे कहो तुम्हारा मित्र सुदामा आया है । परन्तु कशु गणो ! लोकमें “चमत्कारको नेमस्कार” होती है । इसलिए डचोड़ीदारोंने इनकी दरिद्रावस्था देखकर कुछ ध्यान न दिया किन्तु उल्टा धमकाने लगे, कि देखो, यह नीच निर्लज्ज कैसा दीठ हुआ है जो श्रीमहाराजको मित्र बताता है । क्या प्रभुके ऐसा दरिद्र भी मित्र हो सकता है इत्यादि ! परन्तु यह बात किसी प्रकार श्रीकृष्णजीके कानतक पहुँच गई । फिर क्या था ? वे बालचेष्टाएँ जो जो सुदामाजीके साथ की थीं, एक एक करके साँ-म्हने दिखाने लगीं । उनसे फिर एक क्षण भी न रहा गया कि उन्हें नौकरसे बुलवाने । वे तुरंत ही नंगे पांव सिंहासनसे उतर कर दौड़े आये । तो देखने क्या हैं ? एक भिवारीकी अवस्थामें तनक्षीण मनगलीन सुदामाजी दीन हुए खड़े हैं । मन्त्रा ऐसी अवस्था मित्रकी मित्र देखकर कैसे शांति रख सकता है ? बप, श्रीकृष्णजी अपनी राज्यावस्थाको एकदम भूल कर सुदामाजीके गलेसे लिपट गये । दोनोंने परस्पर गिरकर अपने बहुत दिनोंके विरहगन्ध दुःखको आँसुओंद्वारा निकाल कर माफ किया । श्रीकृष्णजीने अपने कर कमलोंसे ही अपने मित्रकी सेवा दहल की । सब लोग देखने ही देखने रह गये । सत्य है मित्रता शमन नाम है । कहा है—

“जल-पय-प्रीति सरारिये, एक रूप है जाय ।



वह वा कारण तब वहे; वह दे अग्नि बुझाय । ”

देवो, पानी जब दूधके निरुद्ध आता है, तो वह उसे मिलाकर अपने स्वरूप कर लेता है, कि पानी और दूध अलग अलग नहीं दिखते हैं । जब लोग उन्हें अलगानेके लिए आगपर चढ़ाते हैं, तो पानी आप ही सकता है, परन्तु अपने मित्र दूधको नहीं जलने देता है, तब दूध भी मित्रको जलता हुआ देखकर तुरंत उफन करके आगको बुझा देता है, और खुद आगमें पड़कर मित्रको बचाता है । सत्य है, यदि मित्र हो तो ऐसा ही हो, अन्यथा आडंबरमात्र है । कहा है, “पानी पीजे छान, अह मित्र कीजिये जान । ”

क्योंकि संसारमें विषय और कषायोंमें फँसानेवाले ऐसे तो अनेक मिलते हैं, परन्तु इनसे छुड़ाकर सच्चे मार्गमें लगानेवाले कदाचित् ही कोई होंगे । आजकल पर फोड़नेवाले, मात्र उड़ानेवाले, व्यस्तोंमें फँसानेवाले, विपत्तियोंमें डालकर दूर हो जानेवाले, और दुर्गति देखकर हँसनेवाले ही मित्रोंका डेर है । हे प्रभो ! इनसे बचाओ ।

यद्यपि संसारमें मित्रके बिना जीवन व्यर्थ है । बिना मित्रके खेल-कूदमें, नाच-गानमें, स्वदेश विदेशमें, विवाहादि शुभ कर्ममें, समाधि शुभ व क्षेमोत्सवादिमें, स्वाध्यायमें, व्यापार व्यवहारमें, खान-पानमें, शत्रुके सामने रणमें, वनमें, इत्यादि किसी भी ठिकाने आनन्द नहीं, जय नहीं, लाभ नहीं है । यथार्थमें

संसारमें जिसके मित्र नहीं है, उसका जीवन निरंतर मारुतेशरूप ही रहता है । मनुष्यपर चाहे जैसी विपत्ति क्यों न आवे, परन्तु मित्रके सामने प्रगट करदनेमात्रमें ही आधी रह जाती है । उसका बड़ा भारी बोझ कम हो जाता है । यदि आनन्दमें हो और मित्र मिल जाय तो वह आनन्द कई गुना बढ़ जाता है । जैसे पक्षीको पंखका बल होता है, वैसे ही मनुष्यको मित्रका बल रहता है । इसलिए मनुष्यमात्रको अपना कोई मित्र अवश्य ही बनाना चाहिए । क्योंकि जो बात माता, पिता, गुरु आदिके समझानेसे नहीं समझमें आती है, वह बात मित्र बातकी बातमें कानमें लगते ही समझा सकता है । भूलेको राह लगा सकता है । कई गुप्त बातें जो किसीसे प्रगट करने योग्य नहीं होतीं, वे मित्रको ही सुनाई जा सकती हैं, वह उनमें उचित सलाह दे सकता है, और उपाय भी कर सकता है । इसलिए मित्र तो चाहिए, परन्तु हो पैसा ही, दूध पानी जैसा, सुदृग्मा श्रीदृग्मा जैसा, सूर्य और कमल जैसा, चन्द्र और कमोदनी जैसा ।

इक्ष्मी प्रीति प्राणघातक होती है । देवो, पतंग दीपकसे प्रेम करके अपने शरीर तकको भूलकर निकट आती है, परन्तु दीपक उसकी कुछ परवाह न करके उलझ जल्य देता है । प्रीति, कुछ निरुद्ध रहनेसे ही नहीं रहती है । देखो, जब और कमल निरंतर पास रहते हुए भिन्न भिन्न रहते हैं । और सूर्य कमलसे ८०० योजन ऊँचे रहते हुए भी अपनी प्रभासे कमलको प्रफुल्लित कर देता है ।



चन्द्रमा उससे भी ऊपर रहते हुए कुमुदनीको विकसा देता है। इसी प्रकार सच्चा प्रेम दूरसे ही प्रभाव डाल सकता है।

लोगोंका विचार है कि प्रेम निकट रहनेसे बढ़ता है। यह भूल है, वह दूरसे ही बढ़ता है, और निकट रहनेसे उतना नहीं रहता है। आजकल प्रायः पैसेकी मित्रता दृष्टिगोचर होती है। और यदि बिगड़ती है, तो भी इसीके पीछे। परन्तु जहाँ पैसाका ध्यान है, वहाँ मित्रता कहाँ? मित्रोंको परस्पर एकमन, निष्कपट, और निर्लोभ होना चाहिए। जैसे एक अंगकी पीड़ा दूसरे अंगको होती है। वैसे ही मित्रकी पीड़ा मित्रको होना चाहिए। कहा है—

“जे न मित्र दुःख होंहि दुखारी ।

तिनहिं विलोकत पातक भारी ॥”

प्रायः देखा जाता है और मैंने जहाँतक अनुभव किया है कि जवनक कोई विपत्ति नहीं आई, जवनक पैसा पास रहा, जवनक शरीर गिथिन नहीं हुआ, वहाँतक ही मित्र मित्रता टिकाने हैं और ज्यों ही कोई ऐसा अवसर आया कि मित्र ऐसे बन जाते हैं, मानो कभी मित्रता ही नहीं हुई। जान पहिचान तक नहीं है।

किसी नगरमें गंभीरचंद एक बृद्ध वणिज रहने थे। उनके प्यारचन्द एक ही लड़का था। प्यारचन्द अंग्रेजी स्कूलमें पढ़ने जाना था। मैट्रिकयुलेशन तक पढ़कर ही उसने पढ़ना छोड़ दिया। घरमें परचरण आटा दाढ़ खातिर ब्रतन थी। समस्त प्यारचन्दसे

अंग्रेजी पढ़कर तराजू तौलना असह्य था। वह निरंतर अपने दोस्तोंमें घूमता-फिरता और गप-शप उड़ाया करता था। गंभीरचन्द बहुत समझाता, पर उसके समझमें न आता। एक दिन गंभीरचन्दने सोचा कि जबतक इसकी यह संगति नहीं छूटेगी तबतक यह कभी धंधेमें न लगेगा। और यदि धंधेमें न लगा, तो मेरे मरनेके बाद ये झूठे मित्र सब रूपयां बरबाद कराकर इससे भिक्षा माँगवायेंगे। इससे यह दुःखी होगा और मेरे कुलका नाम दुबावेगा। कहा है—

“होतसुसंगति सहज सुख; दुख कुसंगके थान ।

गंधी और लुहारकी; बैठो देख दुकान ॥”

इत्यादि सोचकर उसने युक्तिद्वारा दृष्टान्तसे समझाना ठीक समझा और लड़केको बुलाकर कहा—“वेडा! मैं बृद्ध हुआ हूँ, अब मृत्युके दिन निकट हैं, लक्ष्मीका कुछ भरोसा नहीं है, इसलिए यदि कुछ धंधा सीखोगे तो काम आवेगा, ये तुम्हारे मिस्टर (दोस्त) काम नहीं देंगे। जैसे फलविहीन वृक्षको पत्ती छोड़ देते हैं, वैसे सम्पत्तिहीन होनेपर तुम्हें ये लोग छोड़ देंगे।

वेडा—माई डियर फादर ! तुमारा कहना ठीक नहीं है। हमारे फ्रेंड कभी ऐसा नहीं करेगा। यह लोग बरा सच्चा है, निरर हमारा पसीना गिरगा, वह लोह गिरानेको तैयार है। हमसे धंटा गंटा नहीं होता है।

दाप—अच्छा वेडा ! परीक्षा करके देखना चाहिए ।

वेडा—बहुत अच्छा, आज ही सही ।

बोली जिस तरह करना होगा ।



बाप—आज १० बजे रातको एक ठूरी (मुरदेको ले नानेकी सीढ़ी) बनाकर उसमें कृत्रिम मुरदा रखो और लातका रंग उसपर व अपने कपड़ोंमें छिड़कर अपन दोनों लेकर तुम्हारे बहुत प्यारे मित्रोंके घर चठकर कहें—“भाई बचाओ, मुझसे आज एक खून हो गया है।” बस, इसीमें परीक्षा हो जायगी।

वेद्य—ठीक है ऐसा ही होगा। बस, रात्रिको केलेका कृत्रिम मुर्दा बनाकर ठूरी कसकर लाल लाल लातके रंगसे सब कपड़े तर करके बाप वेद्य हाँफते हाँफते बड़े शोकातुर बनकर चले। पहिले गोकुलचन्द, जो बड़ा स्नेही था, के घर गये। पुकारा। भाई गोकुल! गोकुल! अन्दरसे—कौन है? प्यार है। इस वक्त नयो आये? यार! गौँवें बिखर गई सम्हालो। हैं, दिहगी मन करो, नींद आती है। अरे यार! किनाड़ तो खोलो जरूरी काम है। बोलना कुछ है ही नहीं, क्या है? यार! एक खून हो गया है। खून है तो हम क्या करें? जाओ यहाँसे, क्या हम्हें भी फँसाने आये हो? (रोकर) यार! जरा बात तो सुन। कुछ उपाय तो बता? चल चल उपाय फुपाय हम नहीं जानते, उसी कम-बख्त नबुआसे पूछ जिसे माल खिल्याया है। जाता है? नहीं तो पुलिसमें खबर करता हूँ, जान न पहिचान, बड़ी बुआ! स्याम, यहाँ हमको फँसाने आया है, जा जो तेरे दोस्त हों.... इत्यादि। इसी प्रकार और भी दो चार जगह उत्तर मिले। एक जगह तो पुलिसमें हवाने ही कर दिये गये। परन्तु या क्या?

तलाशी करनेपर मामला तय हो गया। और पानीका हत्या ऊपर आ गया।

प्यारचन्दने जाना कि यथार्थमें Friends are plenty, if the purse is full. अर्थात् ये सब स्वार्थी हैं। कदाचित् आज कुछ सच्ची विपत्ति आई होती तो फिर बचना कठिन था। मितानी! आप धन्य हो क्षमा करो, अब यह दास ऐसा न करेगा।

इसलिए हे मेरे प्यारे बन्धुओ! ऐसे कपटी मित्रोंसे बचो। जबतक पूर्ण परीक्षा किसीकी न कर लो वहाँ तक अपने मनकी बात किसीसे मत कहो। अपना मित्र मत बनाओ। और मित्र बनाओ तो पक्का बनाओ—फिर बनाकर उसे त्रिगाडो गन। कहा है—

“कठिन मित्रता जोड़िये, जोड़ तोलिये नाह।
तोडेसे दोऊनके, प्रगट दोष हो जाह॥”

यदि तुम्हे योग्य मित्र नहीं मिलता है, तो धर्म, ज्ञान, नीति, दया, क्षमा, शील, सरलता, उदारता, स्वा-याय, परोपकारता, सचाई, अचौर्यनादि गुणोंहीको अपना मित्र बनाओ। बस, संसार तुम्हारा मित्र अपने आप ही बन जायगा। एकान्तमें बैठकर अपने किये हुए कुल कामोंको स्मरण करो और उनपर विचार करो कि उनमें कौन योग्य व अयोग्य हुआ है और आगे क्या करना है। उसमें किसीकी हानि तो नहीं है। इत्यादि विचार कर अपनी भूलोंपर पश्चात्ताप करो। और फिर आगामी न होने पावे, इस प्रकार प्रवर्तन करो। नम, यही सच्चा मित्र है। शास्त्र पुरान आदि ही हमारे सच्चे मित्र हो सकते हैं। जिनको कहीं विराग



प्रस्ताव नं० ३-जीवन सार्थक करनेका उपाय । जैन जातिमें जनतक बालकोकी माता-पिता अर्थात् कन्याएँ सुशिक्षित न होगी तबतक कभी उन्नति नहीं हो सकेगी, इसलिए स्त्रीशिक्षा-प्रचारके लिए अध्यापिकाओंकी आवश्यकता है । अतएव यह परिषद् प्रेरणा करती है कि विधवा बहनें धार्मिकाश्रममें चार वर्ष रहकर अध्यापिकाकी योग्यता प्राप्त कर कन्याओंको शान दें, और अपना कल्याण कर अपना अनृत्य मनुष्य जन्म ब्रह्मचर्य और सयमसे विताकर सफल करना चाहिए ।

प्रस्ताव नं० ४-सुरीति प्रचार । यह परिषद् अपनी स्त्रीसमाजको प्रेरणा करती है कि यह जैन जातिके भीतरसे निम्न लिखित कुरीतियोंके बद करनेकी पूरी चेष्टा करे—

(१) ब्याह शादी आदिमें वेष्ट्यागत्य ।

(२) ब्याह शादी आदिमें असम्प गाली गाना ।

(३) जैनपद्धति छोड़कर अपने भ्रदानके विरुद्ध मिथ्या रीतिसे सन्तानका विवाहादि संस्कार कराना ।

प्रस्ताव नं० ५-विपत्तिमें सहानुभूति ।

जिन्नी आदि ठाण्डाओंमें मारतकी जियोंकी बहकाकर ले जाया जाता है और उनसे मजदूरी करानेके सिवाय बलापूर्वक उनके पवित्र धर्मको तोड़ा जाता है, इस बातको जानकर इस परिषदकी बड़ा दुःख है । अतएव यह परिषद् बड़े लाट महोदयसे प्रार्थना करती है कि वह उस कानूनको तिससे बर्होके एजेन्ट ले जाते हैं फौरन रोक दें तथा प्रस्ताव करती है कि इस ठहपरकी नकल तारद्वारा भीमानके पास भेजी जाये ।

प्रस्ताव नं० ६-द्रव्य बचाकर दानकी प्रेरणा । यह परिषद् प्रेरणा करती है कि

हमारी बहिने अपने देशकी बनी हुई संस्ती और टिकाऊ तथा मांस, चर्म, हड्डीके ससर्ग रहित वस्तुएँ काममें लावे और अपने द्रव्यको अनावश्यक महंगी चीजोंके लेनेसे बचाकर उसे विद्यादानमें लगावे तथा प्रस्ताव करती है कि स्त्रीशिक्षा फडमें पहले मदद करे । जो फड एकत्र होगा उसका आधा बागड़ प्रान्तके स्त्रीशिक्षाप्रचारमें खर्च होगा, शेषसे धार्मिकाश्रम बनई, मुरादाबाद और जैनमित्र छातेमें परिषदकी प्रमुखाकी सम्पत्तिके अनुसार विभाग किया जायगा ।

एक होओ ।

मज्जहके वास्ते प्यारो !, हजारों जों रेंवाते हैं ।
 व तन मनने निजी धनको, मज्जहमें ही लगाने हैं ॥
 यहाँपर तो बहुतसोंने, अविद्या नाईमें सोकर ।
 मज्जहको तज दिया है मा,—मनो 'जैनी' कहाते हैं ॥
 अभी कुछ रोजसे कुछ जन, त्याग निद्रा भविष्यको ।
 मसलने आँख उठ पड़े, दूसरोंको उठाते हैं ॥
 जो उठ बैठे हैं उनको भी, कभी कुछ झोंक आ जाती ।
 तो वे पजोमें विधवाव्याह,—का होना बताते हैं ॥
 धनिक हैं वे भी त्याकर झोंक,—को पुत्रोंकी शारीमें ।
 हजारों रुपये देकरके, वे वेष्ट्याको नचाते हैं ॥
 धनिक औ चाबुओमें भ,—ज हैं वे झोंकको तजकर ।
 उठाये उनको जो निद्रा,—मे सोने सल्लसाले हैं ॥
 बचाकर शक्ति लड़नेमें, लगाओ धर्म उन्नतिमें ।
 यही 'वायल व चन्दू' कर, मिला अर्जी सुनाते हैं ॥
 चावलराम चन्दूलाळ, गुजालपुर ।

उपयोगी नवीन ग्रंथ

मनमोदन पंचशती ।

उपदेशात्मक ५०० सर्ववैका अपूर्व संग्रह ।

पृष्ठ २००

मूल्य ?=)

मैनेम, दि० जैन प्रज्ञाकान्य-सुरत ।



स्वर्गीय श्रीमती फूलीवाड-उन्नावर

(रायचहादुर दानवीर सेठ कल्याणमलजीजी या साहब)

आपने मृत्यु समय ६७०००) के दानसी व्यवस्था की है।

कर्म-भाद पंडित ० म १९११

मनु-वैशाख चतुर्थी म १९३६.

चमचम 'द्वय-मुरत'

शेठ प्रेमचंद मोतीचंद दिगंबर जैन बोर्डिंग तरफथी प्रगट थतुं मासिक

ॐ दिगंबर जैन ॐ

THE DIGAMBAR JAIN.

ज्ञाना कलाभिर्विविधैश्च तत्त्वैः सत्योपदेशैस्तुल्यवेषणाभिः ।

सगोपयत्पत्रमिदं प्रवर्तताम्, देगम्बर जैन-समाज भोन्म् ॥

वर्ष १० वॉ.

वीर संवत् २४४३, वैशाख, रिमस सु० १९७३

अंक १० वॉ.



विना नैमित्तिक कारण कोई भी कार्य उचित रीतिसे नहीं हो श्रुत पंचमी पर्व। सकता परतु कारणके होनेपर कार्यही सिद्धि हो सकती है। ऐसा ही नैमित्तिक कारण श्री श्रुत पंचमी पर्व आगामी ज्येष्ठ शुद्ध ५ के दिन आ पड़ुवा है। जैन ग्रन्थ प्रथम लिपिबद्ध होनेका यही शुभ दिन है और कई वर्षोंसे यह पर्व माननेका अवसर पूज्यवर पं० पन्नालाल बाकलीवालके प्रयाससे प्राप्त हुआ है जिसको दिनोंदिन विशेष रूपसे माननेका प्रयत्न करना चाहिये। ज्यादे न हो सके तो इतना तो अवश्य होना चाहिये कि (१) अपने २ मंदिरोंके शास्त्रोंको एक चौकी पर विराजमान करके श्रुतस्कंध पूजन करना चाहिये (२) शास्त्रोंकी सूची न

हो तो वनानी चाहिये। (३) जिन २ शास्त्रोंके बंधन न हो उनके नये वनाने चाहिये। (४) जो २ ग्रन्थ अपने शास्त्रभंडारमें न हो उनको लिखित या मुद्रित जैसे मिलने हो संगानेका आर्डर भेजना चाहिये (५) एक सभा करके श्रुत पंचमी पर्वका माहात्म्य सर्व भाइयोंको प्रगट करके कुछ न कुछ द्रव्य शास्त्रदानके लिये निकालना चाहिये, आदि। ईडर, सोनीप्रा, सुरत, महुआ, व्यारा आदि कई स्थानोंपर बडे २ शास्त्रभंडार है पर सारसंगालया उपयोग न होनेसे न तो सब ग्रन्थोंकी विगनवार सूची बनी है और न ग्रन्थोंका कुछ उपयोग होता है। जो अप्रकट जैनग्रन्थ हमको भेजे जायेंगे उनको प्रकट करनेके लिये हम यथाशक्ति प्रयत्न करनेके लिये तैयार हैं।

गर्तः चित्र शुक्ल १३ को इन्दौरमें श्री

महावीर जयंती उत्सव सेठ हुक्मचंदजीका बहुत धूमधामसे हमारे अभिप्राय। दानवीर रायब- हादुर सेठ हुक्म-



चन्द्रजीके सभापतित्वमें हुआ था जिसमें बम्बईसे श्री वाडीलाल मोतीलाल शाह और बा० कृष्णलालजी वर्मा भी पधारे थे । श्री वाडीलालजीने अपने भाषणमें श्री शिखरजी केसका निवेदना दिगम्बरी श्वेतांबरियों की एक पंच नियत करके उनके द्वारा करने का विवेचन करने पर सभापतिजीने अपने भाषणमें जो शब्द कहे हैं वह मननीय और उपयोगमें लाने योग्य हैं आपने कहा कि—

“ मैं नहीं चाहता कि जैनधर्म धारियोंमें परस्पर द्वेष हो । प्रेमसे अच्छी कोई वस्तु नहीं है । मैं सदा परस्पर प्रेम रखना चाहता हूँ । दिगम्बर श्वेतांबरोंका पारम्परिक युद्ध मुझे बहुत खटकता है । पर किया क्या जाय ? यदि कोई मारता आवे तो इस टेबिलके नीचे चुपकर अपनी रक्षा भीन करे तो कैसे बन सकता है । मैं इस द्वेषको भेदनेके लिये मनवचन कायसे तैयार हूँ । समय पड़नेपर पंचोंकी जूतियों तक उठानेमें मुझे कुछ उजर न होगा । मैं तब तक मुझे स्वरण है कि दिगम्बर समाजमें कोई अक्रान्त नहीं किया है। यद्यपि मैं पूर्णतया नहीं तो भी बहुत अंशमें कह सकता हूँ कि दिगम्बर समाजको मैं सुझके लिये तैयार कर सकता हूँ बशर्ते कि स्वच्छ हृदयसे सुलह की जाय । परमें दो भाइयोंमेंसे यदि एक ढाल और दूसरा चाप ताना पसंद करना हो तो इसके लिये परस्पर लड़ना जिन तरह अनुचित है उसी प्रकार दिगंबर श्वेतांबरोंका झगडा भी अनुचित है । मैं आशा करता हूँ कि हमारे भाई इस विषय पर प्रेमपूर्वक विचार करेंगे और

आपसमें सुलह करेंगे क्योंकि अभी जो कोर्टसे न्याय मिला है उसमें दोनों बाजू समान रहीं हैं । अभी तो सुलह करनेमें किसीकी नाक ऊंची नीची नहीं होती पर यदि कल कोई पलडा नीचा हो गया तो फिर सुलह होना कठिन हो जायगा । मेरी सपनामें इसके लिये शीघ्र ही एक मीटिंग बुम्बई या तो इन्दौरमें की जाय जिनमें दिगंबरी श्वेतांबर दोनों तरफके नेता एकत्र हों और आपसमें ही निपट लेवें, अदालती कार्रवाई नहीं की जाय आदि । ”

हमारे सेठ हुकमचंदजी हमारी भारत० दि० जैन तीर्थक्षेत्र कमेटीके सभापति हैं और आप ऐसी मीटिंगके लिये दिगंबरी नेताओंको एकत्र करनेके लिये तैयार हैं तो हमारे श्वेतांबर भाइयोंको भी उचित है कि अब समय न बिताकर शीघ्र ही ऐसी मीटिंग होनेका प्रयत्न करें । एक दिगंबरी और एक श्वेतांबर अभिप्रेरकी सहीसे ऐसी मीटिंग बम्बईमें सुभीतेसे हो सकती है परंतु इसके पहिले अभी दोनों तरफके जो २ अगुए इस केंद्रमें कार्रवाई कर रहे हैं उनको समझा लेना चाहिये तभी ही पूर्ण सफलता प्राप्त होगी ।

स्वर्गीय म्यादादवारिषि वादिगमनेशरी

न्यायमान्यपति पं०

गोपालदाम स्मारक । गोपालदामजी

वरैयाके अनन्य उत्तम कारको जैनसमान कभी भी न भूले इसलिये और पंडितजीरा नाम स्मरणमें रखनेके लिये पंडितजीके नामका एक स्मारक फुट ऐसा



होना चाहिये कि जिससे पंडितजीका नाम भी अमर रहे और उनके उद्देश्य भी सफली-भूत होते जावे। ऐसा जो कुछ कार्य है तो वह यही है कि पंडितजी द्वारा स्थापित **मोरेना जैन सिद्धान्त विद्यालय** के लिये कमसे कम एक लाख रुपयेका स्थायी फंड एकत्रित करके इस विद्यालयके साथ पंडितजीका नाम जोड़ दिया जाय। ब्रह्मचारी शीतल-प्रसादजीने भी 'जैनमित्र' में यही राय दी है। परंतु यह कार्य केवल बात करनेसे कभी भी नहीं हो सकेगा इसके लिये तो जैसे हिन्दू विश्वविद्यालय बनारसके लिये डेप्युटेशन निकला था उसी मुताबिक कमसे कम तीन चार प्रतिष्ठित प्रहस्योंका डेप्युटेशन निकलना चाहिये जो शहर शहर घूमकर इस फंडमें रुपये भरोवे। इस कार्यके लिये दानवीर सेठ हुकमचंदजी, पं. घनालालजी काशलीवाल, सेठ हीराचंद नेमचंदजी दोशी, ब्र. शीतलप्रसादजी आदि का शीघ्र ही डेप्युटेशन निकलना चाहिये अन्यथा बात पुरानी हो जानेसे सफलताकी कल्पना होनी होगी। यदि कोशिश की जाय तो जैन समाजमेंसे एक लख रुपये इकट्ठा करना कुछ बड़ी बात नहीं है।

हमने 'जैनमित्र' द्वारा एक स्था-
निक फंड खोला था उसमें भी कमसे कम दो-
चार हजार रुपये तो अवश्य इकट्ठे हो जाते
परंतु प्रां० मणिके महाश्वरी बाबू मणिकचंदजी
बैनाडाने कहा कि इसमें बड़े फंडको घटका लग
जायगा, इस लिये आप इसको बढ़ा करे।
जिससे हमने तो इस फंडको बंद कर दिया है

और जो रुपये हमारे पास इकट्ठे हुए हैं वह
मोरेना विद्यालयमें ही भेज देंगे परंतु हमारे
ख्यालसे इस फंडकी स्वीकारता 'जैनमित्र'
और 'दिगंबर जैन' द्वारा कमशः प्रकट
होनेसे फंडकी बात सर्वत्र स्मरणमें रह जाती
और बड़ा फंड जो कुछ होता उसकी
स्वीकारता भी उसमें प्रकट हो जाती।



स्थानकवासी थे. जैनबंधु श्रीयुतवाडीलाल

मोतीलाल शाहने निजी

संयुक्त जैन बोर्डिंगका खर्चसे बम्बई और

स्तुत्य प्रयास। अहमदाबादमें संयुक्त

जैन बोर्डिंग आगामी जून माससे खोलनेका जो

स्तुत्य विचार किया है वह अभिवंदनीय है।

इस बोर्डिंगमें दिगंबरी श्वेतांबरी और स्थानक-

वासी तीनों संप्रदायों के विद्यार्थी प्रवेश किये

जायगे और मन्त्रको अपने २ संप्रदायानुसार धर्म

शिक्षण दिया जायगा ऐसा प्रकट किया गया है

सो उचित ही है। इस बोर्डिंगके बारेमें इसी

अंशमें 'जैन विद्यार्थियोंोंने म्बर' नामक

विज्ञापन प्रकट हुआ है जिसकी तरफ

हम जैन विद्यार्थियोंका ध्यान आकर्षित करते हैं।



हमारी न्यायमय त्रिविध सरकारने

अभी जो हिन्दी वार

सार हिंदूमें एक ही। लोन निकाला है जिसमें

सार हिंदुस्तानके आन

तक १९ करोडसे भी ज्यादा रुपये भरे

गये हैं और आगे भरे जा रहे हैं परंतु इन

सबमें ज्यादासे ज्यादा वार लोन लेनेवाले यदि

कोई चीर नर है तो वह हमारे 'दानवीर

रायबहादुर सेठ हुकमचंदजी इन्दौर



હું કિ જિन्हોને એકદમ એક કરોડ રૂપ-
યેકા વાર લોન સ્ત્રીદા હૈ જિતના કિ
સોરે હિંદકે એક રાજા મહારાજાને અમી
તક નહીં સ્ત્રીદા હૈ । યહ જૈનિયોંકે લિયે
બડે મારી ગૌરવકી વાત હૈ । ઇસ મહાન કાર્ય-
કે લિયે હમ સેઠ સાહવકો વધાઈ દેતે હૈ ।
આપને આજ તક સાઢે તૈરહ લાખ રૂપયે-
કા દાન કિયા હૈ જિસકી સૂચી હમ આગામી
અંકમેં આપકે નવીન ફોટો સહિત પ્રકટ કરોંગે
મિસે પઢનેસે હમારે પાઠકોંકો વિદિત હોગા કિ
આપને જૈન સમાજકા કિતના વડા મારી
ઉપકાર કિયા હૈ ।

ઉપદેશક પિતાંવરદાસજીના અમળનો રિપોર્ટ.

(તા. ૨ માર્ચ થી ૩૧ માર્ચ સુધી)

પાઠનાકુવા-એ સભા કરી સ્વાધ્યાય
અને સદાચારપર વિવેચન કરવાથી તથા જલ્દે
સ્વાધ્યાયનો નિયમ લીધો. રેવચંદ બહેચરદાસે
૫) શિખરજી હંડમાં આપ્યા. ગયે વર્ષે પાઠ-
શાળા ચરૂ કરાવી હતી તે ચાલે છે.

ધનિયોળ-એ સભા કરી, જોથી જોએ
રાત્રિભોજન ત્યાગ અને ચાર બાધઓએ સ્વા-
ધ્યાયનો નિયમ લીધો તેમજ એક પાઠીદારે
માંસ અને મદ્યનો ત્યાગ કર્યો. ૩) ઉપદેશક
હંડમાં મર્યા.

ધારીસણા-સ્વાધ્યાય અને અમલસાગ
પર વિવેચન કરવાથી પાંચે રાત્રિભોજન ત્યાગ
અને આઠ જલ્દે સ્વાધ્યાયનો નિયમ લીધો.
પાંચ તરફથી રોજ અષ્ટ દ્રવ્યથી પૂજન કર-
વાનો પ્રબલે કરાવ્યો. પાંચ બાધઓએ ૫)
ઉપદેશક હંડમાં મર્યા.

જલ્દે-ગદિર કે ગેન્ધાપાલ હંડ પવ્વ

નથી. દિ. જૈનોના માત્ર પાંચ ઘર છે. રાત્રે
એક સભા કરી અજૈનોને પણ બોલાવ્યા નથી
કેટલાકે એરીલા તથા જૂ વગેરે છવોનો હિંસાનો
માંસ ત્યાગ કર્યો તથા જે જલ્દે જન્મપર્યંત દારૂ
અને મદ્યનો ત્યાગ કર્યો ૫ શ્રાવક અને ૭
શ્રાવિકાઓએ રાત્રિભોજન ત્યાગ અને સ્વા-
ધ્યાય કરવા તથા સાંભળવાની પ્રતિજ્ઞા લીધી.
ઉપદેશક હંડમાં ૩. ૭૫ મર્યા.

વાસણા-એ સભા કરવાથી ૫ બાધઓએ
સ્વાધ્યાયનો અને એક રાત્રિભોજન ત્યાગનો
નિયમ લીધો. તથા બાધઓએ ૪) ઉપદેશક
હંડમાં મર્યા.

છાલા-સ્વાધ્યાય અને સદાચાર ઉપર વિ-
વેચન કરવાથી રોજ શાસ્ત્ર સભા કરવાની
પ્રબલ થયો તથા પાંચ તરફથી અષ્ટ દ્રવ્યથી
પૂજન થવાની પણ ગોઠવણ થઈ. ૬ બાધઓ-
એ સ્વાધ્યાય અને રાત્રિભોજન ત્યાગનો નિયમ
લીધો. ૨) ઉપદેશક હંડમાં મર્યા. અત્રે
જૈન પાઠશાળાની ઘણી જરૂર છે જે બાબત
પાંચે ધ્યાન આપવું જોઈએ.

પીધાપુર-લગ્નપ્રસંગ હોવાથી બહારના પણ
૧૫૦ જૈન બાધઓ મળેલા હતા. લગ્ન જૈન
વિધિથી થયા નહોતા. બાધ યુનીલાલના પ્ર-
યાસથી એક સભા થઈ, જેમાં કુરીતિ ત્યાગપર
વિવેચન કરવાથી કેટલીક સ્ત્રીઓએ દટાણું-
ગીતો ગાવાનો ત્યાગ તથા એક જલ્દે સ્વાધ્યા-
યનો નિયમ કર્યો. ત્યાંની પાઠશાળા માટે
આચારે રૂ. ૬૦૦) મર્યા.

દશરો-ચાર સભા કરીને કુરીતિઓ બંધ
કરવા માટે વિવેચન કરવાથી રોજ શાસ્ત્ર
સભા કરવાનો પાંચ તરફથી પ્રબલ થયો. ૧૨
બાધઓને સ્વાધ્યાયનો નિયમ છે. ૪) ઉપદે-
શક હંડમાં મર્યા.

ઉજેરિયા-એક શાસ્ત્રસભા કરી સદાચાર
અને સ્વાધ્યાય પર વિવેચન કર્યું, પણ એકા-
એક કોષ બાધના અપુના સમાચાર મળવાથી
અર્ધે શોકમાં પડી ગયા, જોથી બીજી સભા



यद्यपि शरीर नष्टि, अथे वर्षे अत्रे पाठशाला स्थपायी हती, पणु पयनी सिधितताथी के पीन हारणुथी दाव अथे छे बाध भइतव्व धने उत्साहित करी पाठशाला करी व्यापु करवी जेधये.

सोनासण-शा नेमथ'द भगनवायनी साथे पुस्तकालय'द निरिक्षणु क्यु. गांधी उव-राज उगरथ'द पोतानी पत्नीना स्मरथाथे १००) जैनसिद्धांत प्रकाशित करी सस्थाभां भरी भेभार थया.

जालुडी-शेठ क्यराभाधना प्रयासथी जे सभा करी स्वाध्याय, कुरीति त्याग अने जिन-पूजन पर विवेचन करवाथी ७ बाधयोअे स्वाध्याय तथा कटकाक श्री पुत्रयोअे अष्ट ग्रन्थथी रोज वाराइरती पूजन करवाने नियम लीधो. पांच बाधयो तरइथी ५) उपदेशक ईडभां भया.

विशेष-मुजरात प्रांतभां यथा बाधयो हने स्वाध्याय क्योरेतो तो नियम से बाधयो छे, पणु तेनो उपयोग भराभर थतो नथी जेतले के जेजो बाध पणु शास्त्र नियमथी वांयता तथी अने पूर्ण करतानथी. तेजो स्वाध्यायना भण तरवने समथ न सकवाथी जेक पीनभां ईलायली अज्ञानता अने कुरीति इर करी श-कता नथी, गाटे नइर छे के जे शास्त्रनो स्वाध्याय करे ते पसगोपात विवेचनपूर्वक पूर्ण करे अने जेक पीन बाध परस्पर प्र-शेनातर करीते वस्तु स्वयं समथने सहायथी रहेवानी डोशीय करे.

सभाज सेवक-राडेरदास लगवानदास भंजी, उपदेशक विभाग, मुजरात.

नवीन ग्रन्थ

तीस कौकीसी पूजा ।

मूल्य १.॥=

१को जिल्द २)

पैनेगर. दि० जैन पुस्तकालय-सुरत

सेठ कल्याणमलजीकी माता और वृहत दान ।

हमारे पाठक इन्दौर निवासी रा० वा० दानवीर सेठ तिलीकचंद कल्याणमलजीसे अच्छी तरहसे परिचिन होंगे क्योंकि जबसे आपने दो लाख रु० का दान करके इन्दौरमें जैन हाईस्कूल खोला है तबसे सारे हिन्दुस्तानमें आपका नाम मशहूर हो गया है। गत वैशाख कृ० ६को आपकी पूज्य मातेश्वरी श्रीमती फुलीवाई, जिनकी आयु ६३ वर्षकी थी, स्वर्गवातके समय श्रीमतीजी निम्न लिखिन ६१०००) का दान कर गई हैं— १००००) तुकोगंज मंदिरके धुर फंडमें, १०२५) इन्दौर, उज्जैन, विमलपुर आदिके मंदिरोंमें, १०१) सि० विद्यालय मॉरना, १०१) स्या० महाविद्यालय बनारस, १०१) महा-विद्यालय मधुरा, ५१) ह. ब्रह्मचर्याश्रम हस्तेनापुर, १०१) कंचनवाई श्राविकाश्रम (दो वर्षमें कपडा आदि देना), ६२१) शिव-रानी, गिरनारजी, बड़वानी आदि तीर्थोंमें, १०१) चम्बईके मंदिरमें उपकरण, २००) मालवा प्रांतके मंदिरोंमें, ५००) शास्त्रदान व कोई ग्रन्थ वांटनेके लिये, १०१) दि० जैन समाचार पत्रोंको सहायता, ३९१३) संबंधियोंको और ४४०८४) छिचोंके उपयोगी अथवा और किसी उपयोगी संस्था इन्दौरमें खोलनेके लिये इस प्रकार मृत्युके समय आपने ६१०००) का वृहत दान किया है और पहले भी आपके हाथसे कन्याशास्त्र आदिके लिये वृहत दान

हो चुका है । रा० ब० सेठ कल्याणमलजीका यह भी विचार है कि यदि अच्छी जगह और सब सुभीते मिल जाय तो करीब एक लाख रुपये लगाकर माताजीके नामसे एक धर्मशाला बनवा दें । यह बात सेठ साहबने मा साहबसे कही थी और मा साहबने भी स्वीकारता दे दी थी परंतु यह काम योग्य जगह आदि सब सुभीतोंके मिलजाने पर किया जानेवाला है ।

आपके जीवनमें सबसे बड़ी बात यह है कि सबसे उनके पति सेठ तिलोकचंदजीका स्वर्णवास हुआ तभीसे आपकी यह इच्छा थी कि पूज्य पतिके स्मारकमें कोई अच्छी चीज बनाई जाय जिसके लिये आप बारंबार प्रेरणा करती थी । अंतमें उनकी राय व खाम प्रेरणासे ही सेठ कल्याणमलजीने अपने पूज्य पिता सेठ तिलोकचंदजीके स्मारकमें दो लाख रुपये लगाकर तिलोकचंद जैन हाईस्कूल इन्दौरमें खोल दिया है जो इस सालसे इलाहाबाद यूनिवर्सिटीसे रिकगनाइज़ होकर हाईस्कूल हो गया है ।

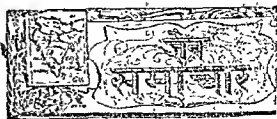
ऐसी दानी और आदरणीय माताका फोटो हमने खास कोशिश करके मंगाया था और इसी अंकमें प्रकट कर दिया है ।

हम आशा करते हैं कि रा० ब० दानवीर सेठ कल्याणमलजी साहब अपनी मातृधरिका नाम अमर रखनेके लिये शीघ्र ही कोई खियोपयोगी बड़ी भारी संस्था, धर्मशाला, ग्रंथमाला आदिका प्रवन्ध करेंगे ।

आराधना कथाकोष

(११४ कथाओंका संग्रह मूल्य ४८)

मेनेबर, दिगंबर जैन पुस्तकालय-सूरत ।



गोपालदास ग्रंथमाला—अज्ञानासे मंत्री गोविन्दरामजी लिखते हैं कि गत ता. ७-४-१७ को यहाँ स्वर्गीय स्वा० बा० न्या० पं० गोपालदासजी वरैयाका नाम सदा स्मरण रखनेके लिये एक सभा होकर प्रस्ताव पास हुआ कि 'गोपालदास दिगंबर जैन ग्रंथमाला' स्थापन होनी चाहिये । फिर इसके लिये कुछ चंदा भी हो गया । पुनः इस ग्रंथमालाके एक मन्वरने 'पंचाध्यायी' की टीका किसी सुयोग्य विद्वान द्वारा कराई है उसके छपानेका प्रस्ताव किया वह स्वीकृत हुआ ।

विना मूल्य—'श्री समवसरणदर्पण' पुस्तककी २०० कापी एक महाशयने विना मूल्य बांटेनेके लिये खरीदी है इसलिये पोस्ट-जके लिये आधे आनेका स्टैम्प भेजकर निम्न लिखित पतेसे यह तीन आनेवाली पुस्तक मंगा लीजिए । पं० सुनीलाल जैन, सिकंदराबाद, यु० पी० ।

हायरसकी जैन धर्मवर्द्धनी सभा 'जैन मार्गड' नामक मासिक पत्र निकाल रही है और अभी उपदेशक विभाग भी खोल दिया है और श्री बाटमुकन्द शर्मा जैनको उपदेशार्थ नियत किया है ।

मुंयाई आविकाभ्रम—श्रीमती



मगनब्हेन जणावेळ के ता० ३१-४-१७ थी
ता० १५-६-१७ सुधी आश्रममां गरमीनी,
रजा पडी छे. हालमां आश्रम तरफयी श्रीदेवी-
बाई तथा श्रीमतीबाई गुजरातमां भ्रमण करी
रहेला छे, जेओ अमदावाद, ओराण, प्रांतिज
सोनासण, इडर वगैरे स्थळे उपदेशार्थ जेजे मांटे
गुजराती व्हेंनो तथा भाईओए अमने उतरवानी
तथा गामेगाम पहांचाइवानी सगवड करी
आपवा उपरांत तेमनो उपदेश सांभळो.

**सर्पने जातिस्मरण अने वि-
षापहार स्तोत्रनो प्रभाव**—प्रांतिज
(अमदावाद) थी शा नेमचंद उगरचंद गांधी
जणावे छे के अमनगर (इडर) मा ता०
१५-३-१७ ने दिने कोटडिया रावजी
असेचंदना पुत्र मोतीचंदने सर्प काडयो हतो
त्यारे तेमना भाई सत्ताबाई रावजीए विषाप-
हार स्तोत्र भणीने पाणी छांटवा मांडयुं
जेजे ने (जेने सर्पहुं डेर चंडलुं हतुं ते)
बोल्हो के मारे पाउला, भयमां ते वीमनगरमां
बाप हुनो अने तेणे मने जीवतो बांधी कुवामां
नाली मारुं मरण निरगावेळुं माटे तेनो बडलो
लेवाने हुं करडीने एनो प्राण लईश वगैरे.
ज्यारे णुं थयुं त्यारे डेर उतरी गयुं अने
हेनी एम जहेडे के हवे पडी पण करडीने प्राण
छीश चिना हुं छोडनार नथी, माटे कोई
विद्वान आनो उपाय बतावे अने ए सपने वश
के तो तेने अभयदानतुं पुण्य मळो.

मुनीमनी जरूर—पालीताणा दि०
वारखाना माटे लायक अनुभवी मुनीमनी
जरूर छे. गुजराती भाईने प्रथम चान्स मळो.

ललो—भगवान छगन, हुमडनी शेरी—भावनगर ।

सूरतमां महावीर ! जयंती—

अजे आ उत्सव चैत्र सुद १३ने दिने नगर-
गेठ बावूभाई गुलाबभाईना प्रमुखपणा नीचे
भारे ठाठयी उनयाई महावीरना गुणानुवाद
थवा पत्री महावीर जयंतीनो त्हेवार सूरत
मिल्ल्यामां जाहेर तहेवार तरीके पाळयाने सर-
कारने आज करनारो तथा म्युनीसिपल स्कूलमां
पर्युषणनी रजा पाळवा माटे स्कूलबोर्ड कमी-
टीने सूचना करनारो एम वे ठरावो थया हता.

वृद्ध महेताजीनी कदर-सूरतमां
स्वर्गीय गेठ माणेरुचंदजी तरफयी 'फूलकोर
कन्याशाळा' चाले छे तेना वयोवृद्ध महेताजी
परमानंददास इच्छाराम रिडायर थता होवापी
तेमने छेवडतुं मान आपवा अजे गई ता०
३जीए एका मेळावडो शेठ काळीदासना प्रमुख-
पणा नीचे थयो हतो, जेमां मूलचंद कसनदास
कापडिया, डॉ. ईश्वरलाल, श्रीमती मगनब्हेन
वगैरे महेताजीना गुणानुवादतुं वर्णन करवा
पत्री श्री० मगनब्हेन तरफयी महेताजीने पोशाक
अने अनुक रकमनी पर्स भेट आपी हारतोरा
आपवामां आव्या हता.

**ग्रन्थराज छप रहा है—जैन सि-
द्धांतका अपूर्व ग्रन्थराज श्रीपंचाध्यायीजी-**
की हिन्दी टीका पं० मन्मथलालजी न्याया-
लंकारने तैयार की है और यह ग्रन्थ सूरतमें
छप रहा है ।

सभापति हुए—हिन्दी साहित्य
सम्मेलनरा अष्टम वार्षिक अधिवेशन इन्दौरमें
होगा जिनकी स्वागतकारिणी कमेटीके सभा-



पति हमारे श्रीमान दानवीर रायबहादुर सेठ हुकमचंदजी नियत हुए है ।

महावीर केवलज्ञान जयंती—यह जयंती गत वै० शुक्ल १० को सोलापुरमें मनाई गई थी जिसमें पं० वंशीधरजी, बाबू कृष्णलालजी वर्मा आदिके व्याख्यान हुए थे ।

गोपालदास लायब्रेरी—अलीगंज (एटा) में स्व० पं० गोपालदासजी बैर्याके स्मारकमें एक लायब्रेरी स्थापित हुई है ।

आर्यसमाजी जैनी हुए—गत मास जैनोंमें आर्यसमानियोंसे जैनोंकी तरफसे पं० बनारसीदासजीने शास्त्रार्थ किया था जिसका असर यहाँ तक आई कि आर्य-समानियोंने यह धर्म छोड़ कर जैन धर्म स्वीकार किया ।

जैन कामरशियल क्लब—लखनऊमें लाल कन्हैयालाल गोदाने बिना किसीकी द्रव्य सहायतासे तीन माहसे लाल प्रमुदयालजीकी पाठशालामें जैन कामरशियल क्लब खोला है जिसमें १६ विद्यार्थियोंको मंस्कृत अंग्रेजी और धार्मिकशिक्षा मुफ्त दिये जानेके अतिरिक्त शार्टहेड और टाई राइटिंगका काम सिखाया जाता है ।

मकानका शिलारोपण—बड़वानीमें बोर्दिगके मकानका शिलारोपण उत्सव बड़वानी नरेश श्री रणनीतसिंहजीके करकमलोंद्वारा गत ता० १४ अप्रेलको हुआ था ।

प्रयत्नका फल—श्री० बलचारी शीतलप्रसादजीके प्रयासमें सांगलीमें श्री ऋषभ ब्रह्मचर्याश्रमके लिये २१॥ दिनका आ-

हारदान स्वीकृत हुआ है । आहारदानमें एक दिनका २५) देना पड़ता है ।

सम्मेलनशिखर अपील—पट्टेके विपयका जो मुकदमा नं० २७५ राजा पाल्मनसे चल रहा है उसकी तारीख २० अप्रेलको थी वह मुलतवी होकर ता० १४ मई नियत हुई है । तथा पूना टोंके मुकदमा नं० २८८की अपील दिगंबरियोंने ४ मार्चको और श्वेतांबरियोंने १६ मार्चको की है ।

दक्षिण महाराष्ट्र जैन कान्फ-रेंस—श्री दक्षिण महाराष्ट्र जैन सभाका वार्षिकोत्सव गत ता० २२ को कवलापुर (सांगली) में ब्र० शीतलप्रसादजीके प्रमुखत्वमें हुआ था जिसमें कई महत्वके प्रस्ताव होकर आगामी बैद्युत स्तवनिधिक्षेत्रके मेलपर करना निश्चित हुआ था । इस समाने स्व० दानवीर सेठ माणिकचन्दजीके स्मरणार्थ (८०००) एकत्र कर उससे बेलगाममें एक माणिकबाग नामक बंगला लिया है जिसकी आमद ५००) प्रति वर्ष है । यह रकम किसी उपयोगी कार्यमें खर्च की जायगी । इस मौकेपर प्राथमिक शिक्षणोत्तेजनक संस्थाका प्रथम वार्षिकोत्सव श्रीयुत बालचन्द रामचन्द कोठारी बी० ए० के सभापतित्वमें हुआ था । इस संस्थाके सेक्रेटरी अण्णाराव अप्पानी मूले बी० ए० है, जो विद्यार्थी वस्तीगृह, वाचनालय, चर्चामंडल, रात्रिशाला, कन्याशाला, व्यायामशाला, उद्योगशाला, औषधालय, दुर्घटन निवारक मंडल ऐसे ९ कार्यालय स्थापित करके चला रहे है । कुल २१ छात्र पढ़ते हैं, जिनमें ८ जैन और एक मुसलमान भी है ।



સુધારકોની પ્રવૃત્તિઓ

કેવી હોવી જોઈએ ?

સાધનો ચાલુ નગાતો “ સુધારાનો નાનો ” એમ કહેવાય છે તે વિષે કેટલાકનો અભિપ્રાય હાલ ઘણો ભૂલ ભરેલો હોય છે અને તેમ હોવાનું કારણ એક નથી પણ અનેક । તેમજ એક પક્ષનાં નથી પરંતુ બે અને પક્ષ-ભાષાએને લગતા છે.

હિન્દીમાં ઘણી પ્રજાઓ ચોડીકવાર જન્મી અને તારાની માફક આકાશની સપાટી ઉપરથી પૃથ્વિ પર ગઇ છે. રોમ, ગ્રીસ તેમજ હિંદુસ્તાનની પ્રજાઓ એ સપાટી ઉપર વધારે ધર નિધર રહી છે અને સૌથી વધારે હિંદુ-માન રહ્યું છે અને હાલ પણ આંખી ગયોતથી પૂછાયે છે.

દરેક પ્રજાની ગરતીની પછાત કે ધર્મ જીવી એ પણ રહેલી હોય છે. યુરોપના સોજામાં સોજા ઇતિહાસ ધર્મના અગાધોયી ભરપૂર છે અને યુરોપ તે વખતે તે ધર્મના અગાધોયી સહિતમાન ન થયું હોત, તો હાલ તે સુધારાના ચિખરે અથવા માનસિક ક્ષેત્રમાં આગળ પડતું યુરોપ પામ્યું હોત. ત્યાર પછી એ ધર્મ કે જે ગ્રીસ તેમજ રોમમાંથી ગ્રંથમાં મળેલો છે તેને લીધે રોમ અને ગ્રીસની ગરતી અને આખાની યથા છે, એટલે ધર્મ એ દરેક પ્રજાની ગરતી પડતીના કારણ રૂપે એક કારણ થઇ પડે છે. મોટી મોટી લાકડાઓ દરેક પ્રકારનાં પ્રવૃત્તિનાં ક્ષેત્રો નવાં કે જાન, માનસિક ક્ષેત્રમાં દરેક ધર્મને સુખ્ય પદે લાવે છે. રોમનું અને ગ્રીસનું સાહિત્ય ક્ષેત્ર જોયું, તો જુલારો કે તેમાં દબારો બા-લો ધર્મની વાતોચીનાં (Illusions) એકાદ એક પુનઃ નદિ પરંતુ ક્યાને એકાદી, તો જુલારો કે તેમાં મેં જાપાનીય, તો જુલારો કે તેમાં મેં કિયું રહેલું હોય છે અને હોનું

જોઈએ કારણકે મનુષ્ય અને ધર્મ એ જુદી વસ્તુઓ નથી અને જ્યાં મનુષ્ય હોય ત્યાં ધર્મ હોયોજ નોઈએ પછી ભલે કાળને સમોધી પ્રજાઓમાં અને પીળામાં ફેરફાર હોય. ઉપથી દરેક પ્રજાઓ કરતાં હિંદુસ્તાનની પ્રજા-માં ધર્મનાં કિરણ ધણીમોટા પ્રજાઓમાં દરેક કાર્યપ્રવાહમાં ફેલાયલાં છે. સાહિત્ય, કળા, લઠાઈકયાદિ દરેકમાં ધર્મનાં કિરણો પ્રેરાયલાં છે.

એટલે દેશમાં મનુષ્ય અને ધર્મ એક પીળા સાથે જોડાયલાં રહે છે અને જ્યાં બે-માંથી એક ભગડે છે કે બીજું પણ ભગડે છે અથવા બેમાંથી એકનો ખોટો અર્થ કરીશું તો બીજું પણ ખોટા રૂપમાં સમજાશે. તો પ્રથમ સુધારકોની પ્રવૃત્તિઓ આ તરફ દોરાય તો તે ધણીજ યોગ્ય અને લાભકર થઇ પડે.

હિંદુસ્તાન દેશ કેળવણીમાં ઘણો પછાત છે એ વાત તો હવે ધણી રીતે સાબિત કરી ચુકાઇ છે અને સર્વે લોકો એમ માને છે પણ ખરા એટલે હિંદુસ્તાનમાં (General mass) અથવા પીળા કેળવણીમાં પ્રજા સમગ્ર ઘણી છે, હવે તે સમગ્રનું જાંવારણ સુખ્યત્વે કરીને ધર્મને બદલે ટકી રહ્યું છે. જો ધર્મના ખરે-ખરા અર્થ ઉપર ઉજ્જૃં હોય તો તે કેળવણીમાં નથી રોમ છેજ નહીં. ધર્મના નામે કહેવાતું કારણ એટલુંજ કે તેઓ અધ અદાથી ધણી લાંબા વખત ઉપર લખાયલાં શાસ્ત્રો અને તેમાં થયેલા સામાન્ય દ્રુષ્ટી સુદિવજાઓ તરફથી ખોટા ફેરફારો ઉપર પોતાનામાં રહેલી સમજ સક્તિને ઉપયોગ કર્યા વિના અધ અદા રાખના હોય છે. આગી દ્રુષ્ટિ એમ નથી કહેવા માંતે કે અદા ન હોવી જોઈએ પરંતુ સુદિ સુદા અદા હોય, તોજ તે માણસનામાં અદા છે. વળી સાચો લખાવાને ઘણો કાળ થઇ જવાથી તેમાં કાળ ક્ષેત્ર પ્રત્યારિતે લીધે ધણી ફેરફારો થયા અને વળી આધુનામાં પૂરું જોઈને જોમ જાનમાં ઘટારો થતો ગયો, તેમ તેમ તેની સમજવાની સક્તિ ઓછી થઇ એટલુંજ નહિ

પરંતુ તેના ખોરા અર્થે પણ એહી સેવા માંડ્યો. જેમાં આસ કરીને જેનો વેપારી વર્ગ થય ગયા અને તેથી તે જ્ઞાન તરફ લાક્ષ્ય અને લોભથી વધારેને વધારે એટલેકાર થવા લાગ્યા. ધર્મની દરેક બાબતનો ખોળે ખોળાના ધર્મ-ગુણો ઉપર અથવા આદર્શ પ્રત્યાદિના ધર્મ-શુદ્ધિ ઉપર નાંખતા ગયા અને આથી તે ધર્મગુણો પણ કેટલાક પોતે સ્વતંત્રતાથી શાસ્ત્રોના ગમે તેવો ઉપયોગ કરવા લાગ્યા. ખોદ જેવી મોટી પ્રજા થઈ પરંતુ તેની સામે યજ્ઞ ધર્મ ધિરાધીઓ ઉભા થવાથી જટ નાથ પામી. જેનો ની સંખ્યા નાની હોવા છતાં પણ આટલો વખત ટકી રહી તેનું કારણ એ કે બાપારી વર્ગ થવાથી ધર્મવિશે જ્ઞાન પ્રત્યાદિ બાજુ ઉપર મૂકી દીધાં, અને આત્મજો પ્રત્યાદિના હાથમાં તેના વિષય શીખી દીધો, આથી તે લોકો પોતાનો સ્વાર્થ માધવા સાથે ગમે તેવો ઉપયોગ કરવા લાગ્યા અને હાલ પણ કરે છે. આત્મજો સાથેનો આપણા સંજોગનો એક દાખલો આપણું ધર્મોપર લભ આત્મજો ચોરના ચાંચે કરવામાં આવે છે એટલું જ નહીં પરંતુ એ સિવાય બીજા યજ્ઞ આચારો આત્મજો આચારો આપણામાં દાખલ થયલા છે અને તે કેટલે દરજ્જે સાચા થાવા જોયા છે તે હાલ અહીં તપાસવાનું નથી, પરંતુ આગળ અન્ય ધર્મોના આપણી સામે થવા નહિ અને તેથી આપણી પ્રજા આટલાં હાંપ્યા વખત સુધી ટકી રહેવાનું એ પણ એક કારણ છે. જે પ્રજાએ માથાને અને ચરીરને જુદું ગણી વર્તન અક્ષરવા માંડ્યું તેની પડતી થવા વિના કેમ રહે ? ધર્મ અને મનુષ્ય એ જેનો સંજોગ એવો છે તે પછી જ્યારે આપણે એ પ્રમાણે નો સંજોગ તોડ્યો ત્યારથી આપણી પડતી થવા માંડી.

તેને જે જોઈ ધર્મનો આપણી સાથેના સંજોગ નેકવા માંડીયું તે આપણે જરૂર એક આજ્ઞા પ્રજા થઈયું. ધર્મમાં સુધારો કરવો

એટલે આપણે આપણું જીવ આમરણ નાંખી દઈશું નહિ પરંતુ તેને નવો આકાર આપી અને ચોખ્ખા ઘાટ આપીયું. માણસ શરીર, જીવિ અને આત્માનો બનેલો છે અને તેથી તેને દરેક બાબતમાં જે જેનું એ તેટલી સ્વતંત્રતા આપવામાં આવે તો આપણે આપણો ધર્મ સાધ્યો એ નિશ્ચય છે કારણ કે ધર્મ પણ શરીર, જીવિ અને આત્માથી છુટો પાડી શકાશે નહિ. તે પ્રથમ સુધારકોએ આપણા શાસ્ત્રો લંઘ તપાસી તેનું રહસ્ય, ઇચ્છા પ્રત્યાદિનું ખારીક અવલોકન કરી તેને તેજ સોનાનો નવા આભરણો બનાવવાં નોખ્યાં અને જે આમ થશે તે અજ્ઞાન મુદ્દ તેના ઉપર અંધ શ્રદ્ધા રાખે છે તેમની પણ આંખો ઉઘાડશે અને તે પણ ધર્મ સમજવા માંડશે એટલે શરીર મન અને આત્માને જોળખતા અને વાપરતાં શિખરો બીજું અજ્ઞાન સમજની સંખ્યા વધારે છે એટલે જ્યાં તેમાં સુધારો થયો એટલે આખી પ્રજામાં સુધારો થવો આવરણ છે. આમ યતો બીજા નાના નાના સુધારાઓ કે જેના સામે જીવના જમાના ઉપર અંધ શ્રદ્ધા રાખવાવાળા માણસો તરફથી વાંધો ઉઠાડવામાં આવે છે, તે પણ અંધ થશે અને બધા સુધારા સ્વયં દાખલ થશે અને સુધારો એટલે એજ કે મન, શરીર અને આત્માને દરેક બાબતમાં સ્વતંત્રતા આપવી. શ્રદ્ધામાં, વિચારમાં, આચારમાં, બાંધમાં તેમજ દરેક કાર્યમાં મનને તેમજ બીજા અવરણેને સંપૂર્ણ સ્વતંત્રતા ન્યાયસર આપવી તેનેજ સુધારો કહે છે, પરંતુ આપણી વિચાર-શક્તિ ઉપર અંધ શ્રદ્ધા અને અજ્ઞાનનું અવરણ છવાઈ ગયું છે, તેથી આ દયા થઈ છે ગીટે તે દૂર કાવાને પ્રથમ કિપરો ઉઘાડે એવો નોખ્યો.





हरिवंशपुराणकी सत्यवादीकी समालोचनाका प्रतिवाद ।



पाठक ! कई समाचार पत्रोंमें आप हरिवंशपुराणकी समालोचना पढ़ चुके हैं, उसी साक्षात् देख भी चुके हैं कि संस्थाने एक बड़ी भारी पूंजी लगाकर उसी किस रूपमें प्रकाशित किया है और उसके संपादकने उसके संपादनमें कितना परिश्रम उठाया है ? साथमें आप यह भी समझ गये हैं कि स्वर्गीय पं० दोलतरामजीके अनुवादमें और इस नवीन अनुवादमें क्या खूबी है ? और पं० दोलतरामजीने जिन प्रकरणोंको छोड़ दिया है उन्हें इस नवीन अनुवादमें किस खूबी, किस सरलता और कितने परिश्रमसे लिखा है ? मैं आपके सामने इस बातको निर्भीक हो कह सकता हूँ कि इस ग्रंथके संपादनमें मुझे अधिक कष्ट भोगना पड़ा है और विशेष-कर उन प्रकरणोंके संपादनमें जिन्हें कि पं० दोलतरामजीने छूआ तक नहीं और जो वर्तमानमें गुप्त सरीखे जान पड़ते हैं, परंतु संपादक 'सत्यवादीके' हृदयमें इस ग्रंथके संपादनका जरूर भी महत्त्व नहीं जगा और हरिवंशका बहु भाग उन्हें विपरीत गृह्य गया । यद्यपि समालोचकको अधिकार है कि वह अपने विचार प्रदर्शित कर सकता है और समालोच्य ग्रंथोंके गुण दोषोंका उल्लेख करना उसका परम धर्म है परंतु ऐसी समालोचना अनुचित है जो निमूल हो और

व्यर्थका पांडित्य बतलानेके लिये खींचातानीसे की गई हो ।

खैर, संपादकजीने जो व्यर्थकी "प्राचीन अनुवाद ही छपाना था" आदि बातें लिखी हैं और भी कई बातोंमें अपना पांडित्य दिखाया है उनकी हम यहाँ प्रत्यालोचना करना अनुचित समझते हैं क्योंकि उक्त संपादकजीको अपने विचार प्रदर्शित करनेका पूर्ण अधिकार है और जो बातें उन्होंने लिखी हैं पाठकोंने भी वे पढ़ी होंगी कि वे कैसी वे शिर पैरकी है ! परंतु उन्होंने जो अशुद्धियाँ निकाली हैं उन्हींका हम प्रतिवाद करते हैं । आपने—

शंभवे वा विमुक्तो वा भन्ना यत्रैव शंभवे

भन्तु भन्त्या नमस्तस्मै तृतीयाय च शंभवे ।

इस श्लोकके अनुवादको मिथ्या और सिद्धांत विरुद्ध ठहराया है । प्रथम तो यहाँ यह निवेदन है कि आप अपने सर्वथा विश्वासपात्र पं० दोलतरामजीके इस श्लोकका भाव देखें उन्होंने क्या लिखा है ? यदि पं० दोलतरामजीका भाव मिथ्या और सिद्धांत विरुद्ध है तो मेरा अनुवाद भी मिथ्या और सिद्धांत विरुद्ध बतला सकते हैं क्योंकि मेरा और पं० दोलतरामजीका भाव एक है । यदि पं० दोलतरामजीका भाव युक्त और सिद्धांत विरुद्ध है तो मेरे भावको अयुक्त और सिद्धांत विरुद्ध ठहराना प्रलापमान है दूसरे अनुवाद करते समय मुझे जहाँ तक विश्वास है 'भेजु' की जगह 'भन्तु' !! क्रियापद नजर पड़ा था और मनु धातुका अर्थ 'विचार'



यथार्थ है इसलिये उक्त श्लोकके अर्थमें यदि पं० दोलतरामजी अपराधी है तो मैं भी हूँ अन्यथा नहीं । आपने जो यह लिखा है कि—यहाँपर विचारको संशय कोटिमें रखनेसे यह मालूम होने लगता है कि “ भग्योंको भगवानके स्थिति कालमें भी यह निश्चय न हो सका कि सुख मोक्षमें है या संसारमें ? संपादकजी ! यहाँ तो आपने कमाल किया । यदि आप जरा गहरी दृष्टिसे विचारते तो आपको पता लग जाता कि मेरे वा पं० दोलतरामजीके भावमें क्या चमत्कारी है । मुझे खेद है मेरे अर्थमें आपको संशय कोटिका भान कैसे हो गया ? हिंदी साहित्यमें “ असली जौहरीकी मौजूदगीमें ही रत्नके खरीददारोंको इस बातका ज्ञान हुआ कि बहुमूल्यता रत्नमें है या काँचमें ? इत्यादि वाक्योंका प्रयोग होता है परंतु सिवाय आपके कोई भी हिंदी साहित्यका वेत्ता वहाँ “ जौहरीके स्थितिकालमें ग्राहकोंको यह निश्चय ही नहीं हो सका कि बहु मूल्यता रत्नमें है या काँचमें ? इत्यादि संशयकारक अर्थ नहीं करता । यहाँ तो आपने अपनी हिंदी साहित्य विज्ञताका भी परिचय दे दिया । महाशय ! उस श्लोकका मेरा भाव यह है कि—भगवान शंभवनाथके पहिले भव्य भक्तोंको इस बातका ज्ञान ही न था कि निराकुलतामय सुख संसारमें है या मोक्षमें ! किन्तु उनके स्थितिकालमें ही उन्हें इस बातका भान हुआ कि वास्तविक सुख संसारमें है या मोक्षमें ! इसलिये

उन्होंने संसारसे सुख मोड़ मोक्ष सुखके लिये उद्योग किया । अब बतलाइये, यहाँ क्या तो असत्यता और विरुद्धता आ गई ! मेरी रायसे तो इस अर्थसे भी ग्रंथकारकी उक्तिमें अपूर्व चमत्कारी प्रतीत होती है और ऐसे अर्थमें कविगणको प्रखर पांडित्य और भक्ति संभार प्रतीत होता है । खैर, इस श्लोकके अर्थमें मैं कलंकित ही नहीं परंतु आप भी तो अपने अर्थपर विचार करें । आप ही कहाँ कलंकसे मुक्त हैं । प्रथम तो आपने— ‘शंभवे’ इस शब्दका जिस कल्याणकारी भगवानके निमित्तसे अर्थ किया है वही विवादग्रस्त है क्योंकि आपने जो ‘निमित्तसे’ यह अर्थ किया है वह किस शब्दकी सामर्थ्यसे ! क्या आपका यह भी सिद्धांत है कि निमित्त अर्थको छोटन करने वाली सप्तमी विभक्ति भी है ? व्याकरण शास्त्रमें मेरे दृष्टि गोचर तो यह बात नहीं हुई है । हाँ, यदि आप ‘विवक्षातः कारकाणि भवन्ति’ इस असमर्थ वैयाकरण सिद्धांतपर आरुढ़ हो कर यह बात कहें कि सप्तमी विभक्तिका भी निमित्त अर्थ हो सकता है तो सिवाय आपकी व्याकरण विषयक दुर्बलताके दूसरा कोई उपाय नहीं । अब आपही बतावें मैं तो ‘भज्’ धातुके अर्थमें घोका खा गया और अपने यह क्या कर पाड़ा ? यहाँपर आपको शंभवे पद सप्तम्यंत तो अवश्य मानना पड़ेगा । क्योंकि ‘शंभव’ शब्द अकारांत भी है । दूसरे उसै सप्तम्यंत पद बतलानेवाला ग्रंथकार द्वारा दिया गया ‘यशेव’ विशेष



पण वहांपर मौजूद है। महाशयजी ! यहाँ पर सति सप्तमि है और उसका जिस संभवनाथके स्थितिकालमें यही अर्थ युक्ति युक्त है न कि जिस भगवानके निमित्तसे यह। खैर, भाषामें ऐसा अर्थ हो भी जाता है तथापि आप 'यत्रैव' पदको घसीट कर कहां लगा गये हैं और उसका क्या अर्थ कर गये हैं तनिक तो विचारो। आपने जो 'यत्रैव' पदका अर्थ "जहां-पर वे रहें वहांपर" यह किया है सो क्या संगत है ? यहां तो 'जिम' यह अर्थ ही युक्त है अस्तु।

दूसरे आपने 'जिस कल्याणकारी' यहांपर जो 'जिस' अर्थ किया है यह किस पदका अर्थ है ? यदि आप कहें कि यह भी 'यत्रैव' पदका अर्थ है तब एक 'यत्रैव' पदकी व्यर्थ दो जगह घसीट करना उसकी मिट्टी पलीत करना है। हां, हम इस बातको स्वीकार करते हैं कि एक शब्द अनेक जगह काममें आता है परंतु कहां, जहां वेसा किये बिना अर्थमें किसी प्रकारकी गड़बड़ हो परंतु यहां तो कोई गड़बड़ नहि मालूम होती इसलिये यहां ऐसा कैसा अतमंजस सरीखा प्रतीत होता है। यदि आप यह कहें कि जहांपर वे रहें वहांपर 'यह' अर्थ यत्रैव पदका नहीं किन्तु भव' और 'विमुक्तौ' पदोंकी सामर्थ्यसे है तो भी अयुक्त है क्योंकि अर्थात् जब तक मासमें रहे तबतक संसारिक सुखको भोगा और जब मुक्तिमें रहें तब मुक्ति

सुखको भोगा। आपके इस भावसे यत्रैव शब्दका ही उपर्युक्त अर्थ स्पष्ट जान पड़ता है।

आपने दूसरे पादके 'शंभवे' शब्दका अर्थ शंभवनाथ भगवान न कर कल्याणकारी किया है यह भी जरा दृष्टिमें चुभना सरीखा है क्योंकि या तो आप भाषाके सौंदर्यके लिये 'जिस भगवानके स्थिति कालमें' यह अर्थ करें या "जिस कल्याणकारी शंभवनाथ भगवानके" यह अर्थ करना उचित है। शायद आपको इस बातका तो संशय न होगा कि शंभव शब्द अकारांत भी है। तीसरे भगवानके वाचक 'शंभव' और 'शंभु' दोनों शब्द हैं उनमें 'शंभव' शब्दका अनेक जगह प्रचार है और 'शंभु' शब्दकी स्थितिमें यह ग्रन्थ भी प्रमाण है। यद्यपि शंभव शब्दका कल्याणकारी भी अर्थ है परंतु यहांपर वह अयुक्त है क्योंकि कल्याणकारी अर्थ करनेसे शंभव शब्द विशेषण पड़ता है और उसके लिये विशेष्य भगवान पदकी विवक्षा करनी पड़ती है, दूसरे यदि शंभव शब्दको विशेषण माना जायगा तो "विशेषणका विशेषण नहीं होता" इस नियमानुसार 'यत्रैव' विशेषण निरावार मानना पड़ेगा। तीसरे हमें "तृतीयाय स्वयंभवे" यह भी पाठ मिला था इसलिये इस पाठसे भी यह दृढ़ता होता है कि दूसरे पादका शंभव शब्द विशेष्य है और वह तीसरे तीर्थंकरका वाचक है। अब वन्याहमे महाशय संगदरजी ! जिस स्वीकारो आपने पूर्ण विचारपर नवीन अनुवादमें उस मिथ्या और सिद्धांत विरुद्ध उद्-



रानेके लिये पूर्ण दोड़ की उसीमें आप तीन जगह फिसल गये तब यदि आप इसका पूर्ण अनुवाद करेंगे तो क्या होगा ? यह तो आप भी अवश्य जानते हैं कि जब किसी व्यक्तिको कलंकित करनेकी मनमें ठान ली जाती है उस समय पूर्ण विचार करना पड़ता है कि तु जहाँपर कर्तव्य कर्म किया जाता है वहाँ अधिक विचार नहीं । मैं प्रतिदिन १००-१२५ लोकोंका अनुवाद करता था इसलिये मुझे अधिक विचार करनेका अवसर नहि मिलता था और आपने मुझे कलंकित करनेके लिये धीरे विचार किया है । जब ऐसी दशामें एक मुलम श्लोकके लगानेमें तीन मूल होगई तो हिसाब लगानेसे इस ग्रन्थके पूर्ण अनुवादमें आपकी उत्तीस हजार भूल हो सकती हैं क्योंकि इस ग्रंथका परिमाण बारह हजार है । यदि आप मेरे समान शीघ्रतासे अनुवाद करते तो कितनी भूलें रहतीं ? वे अवक्तव्य हैं तब मेरी सौ पचास अशुद्धियाँ भी हो जाय तो आपको इतना गौर एतराग क्यों ? अस्तु ।

प्र० अ० नं० ३१के श्लोकमें जो देवसंस्कृति की वाणी नियमसे बंदनीक है यहा पर देवसंस्कृति जगह देवचर्य होना चाहिये यह लिखा है वहापर इतना ही वक्तव्य है कि हमें सब प्रतियोंमें देवसंस्कृति ही पाठ मिला था यद्यपि वहाँ हमें संदेह अवश्य था परंतु सब प्रतियोंमें देवसंस्कृति ही पाठ मिलनेसे हमने देवचर्य पाठ बगडा क्योंकि नवीन पाठका गडना हमारी शक्तिसे बाहर था । दूसरे-देवचर्यका किसी अवस्थामें देवसंस्कृति भी नाम हो सकता है इस

लिये ऐसे स्थानपर प्रतियोंको देखकर और उसका पाठ ग्रहण करने पर भी किसी शब्दके बदलनेके लिये समालोचनासे जोर देना सर्वथा अयुक्त है ।

आपने लिखा है कि “प्र० अ० नं० ३४के श्लोकमें काव्यमयी मूर्तिका “कृतपद्मो दया” जो विशेषण दिया है उसका “रविषेणकी काव्यमयी मूर्ति भी पद्मपुराणकी विकाश कर-नेवाली है” यह वर्तमान अनुवादका अर्थसर्वथा अनुचित है किंतु काव्यमयी मूर्तिके पक्षमें यह अर्थ होना चाहिये कि जिसमें “पद्म-बलभद्र-रामचंद्रके उदय अभ्युदयका वर्णन किया गया है” क्योंकि पद्मपुराणका अर्थ तो काव्यमयी मूर्तिसे निकल आता है विशेषण देनेका अभि-प्राय उसमें बलभद्रके अभ्युदयका वर्णन किया गया है यह होना चाहिये । महाशय ! किसी ग्रन्थमें कभी आपने काव्यका लक्षण भी चाँचा है ? जो आपने काव्यमयी मूर्तिसे पद्मपुराणका अर्थ निकाला है ? जरा ध्यान दीजिये-काव्य का लक्षण “अदोषौ सगुणौ सालंकारौ शब्दार्थौ काव्यं” यह है और यहाँ पर किसी ग्रंथकारके ग्रंथको काव्यके लक्षणमें प्रविष्ट नहीं किया है फिर काव्यमयी मूर्ति पदसे पद्मपुराणका बोध कैसे हो सकता है ? भैर, हम आपके सिद्धान्तानुसार ‘शब्दार्थौ’ पदकी सामर्थ्यसे पद्मपुराणका भी काव्यके लक्षणमें अनर्भाव कर लेने का ? जब कि रविषेणकी कृत पद्मपुराण ही कृति होती सो हो नहीं और भी उनके कई ग्रंथ हैं और उ दशामें पद्मपुराणका ही ग्रहण क्यों ? औरोंका



भी होना चाहिये। संपादकजी ! 'कृतपद्मोदया' इस पदना पत्रपुत्राणको विकास करनेवाली है यह अर्थ निर्दोष है आपकी समझका फेर है। आप जरा तो यह तो सोचिये कि पत्रपुत्राणके अर्थसे क्या " रामचंद्रके अम्बुदयका वर्णन " यह भाव नहीं निकलता ? शायद आपको इस बातका तो विस्मरण न होगा कि " नामके एक देशसे भी सर्व देशका ग्रहण हो जाता है " यहां पत्र शब्दसे भी पत्रपुत्राण अर्थ लिया जा सकता है। क्योंकि आप सिद्धांत कौमुदीमें इसी बातके पोषक सत्या, मामा सत्यमामा जाति उदाहरण पद चुके हैं अस्तु।

प्र० अ० नं० ३८ के श्लोकमें हमें संदेह बह गया था और हमने वहां प्रश्नवाचक चिन्ह भी पड़क दिया था परंतु संपादकजी ! अपनी लेखनीतो आपने वहां भी नहीं भराया। क्या संपादकजी ! जो बात समझमें न आन उस पर प्रश्नवाचक चिन्हका पकड़ देना पाप है ? हम कोई प्रभावचर नामका गय है ? इस बातका पता नहि लगा था इसलिये वहां प्रश्नवाचक चिन्ह पढ़ दिया था। पं० टोलनरामजीका सर्वांगमें विद्वत्ता ही क्योंकि आप और म्यलोंको जाने डे इसी श्लोकके अंतर्गत नं० १३-१४ वं श्लोकोंका अर्थ ही उन्होंने क्या लिखा है और हमने क्या किया है ? क्या आप सिवाय टोलनरामके ही और भी प्रमाण दे सकते हैं कि कोई प्रभाव नामका ग्रन्थ है ?

आपने किया है कि ऊपरके कथनसे यह प्रमाण ही सच्चा है कि ऐसा विषयाम और ग्रन्थमें होगा क्यादि। संपादकजी ! महा

तो आपने विलक्षण वाक्य रचनाका परिचय दिया। यदि आप यह साफ लिख देते कि मगस्त ग्रंथ अशुद्ध है तो क्या कोई आपका सुट पकड़ लेता अस्तु।

आपने जो रूप सत्यका अर्थ अयथार्थ ठहराया है वहां पर इतना ही वक्तव्य है कि आप रूप सत्यका भाव पं० टोलनरामजीके अनुवाचसे देंगे, उन्होंने क्या लिखा है क्योंकि मेने उन्हीके अनुवादके आधारसे लिखा है। यदि आप पं० टोलनरामजीके वचनको भी असत्य ठहरावें तो यह आपका कथन कि—'पं० टोलनरामजीका ही अनुवाद उपायान था' अरण्यरोदन सरीखा होगा।

दूसरे यहां रूप सत्यका अर्थ बनवाया ही कही गया है वहां तो रूप सत्य और स्थापना सत्यमें भेद बनवाया है और वह यथार्थ है। संपादकजी ! हमें जान पड़ता है समालोचनके समय आपने शुद्ध अंत करणमें किसी बातको नहीं विचार नहि तो आपको ये न्यर्थकी बुद्धिया न सृजनी अस्तु।

विशेष—हरिवंशपुराणमें जो श्लोक छूट गये हैं न्यर्थ जान प्रस्तावनामें उनका उल्लेख नहि किया है यदि आपको देखनेकी अभिगता हो तो संपादक जैन मित्रके पास एक सूची बनाकर भेज दी गई है, आप वहांसे देखें अन्यथा यदि आप लिखेंगे तो मैं कृपे पट्टचन ही सूची भेज दूंगा क्योंकि वर्तमानमें मैं निज जन्मभूमिमें पड़ा हूँ, बीमार हूँ और एक भी प्रति हरिवंशकी भेरे पाय मौजूद नहि है।

गजाधरलाल जैन
(अनुवादक, हरिवंशपुराण)



દશા હુમડ જ્ઞાતિમાં-

કન્યાવિક્રય અને વૃદ્ધવિવાહ.

અહા ! ! શું કહેણ કળીલું, ઝામીયું જોર આજે;
સાચા ચલુ સ્વજન સધળા, દેખીને દીલ દાઢે.
નહાદો ગાઠો ધર્મ ધરથી, ન્યાય તો નાથ પાગ્યે;
નહાદો બુદ્ધિ અગુદ્ધ રૂઢિનો, શોક સર્વજ્ઞ જાગ્યો.

હાલ દરેક ચેપરમાં, દરેક જ્ઞાતિમાં અને
દરેક સભાઓમાં કન્યાવિક્રય અને વૃદ્ધ વિવાહ
બંધ કરવાના ઉપાયો કરવામાં આવે છે ત્યારે
હમારા બાધજો તે વાતને ઊરકેરી કન્યાવિક્રય
અને વૃદ્ધવિવાહ બંધ કરવાને બદલે ઉઠતા આગળ-
પડી ચાલુ કરે છે અને તે આ સાથે આપણી
જ્ઞાતિમાં કેટલાંક લગ્નો થયાં છે, તે આપ
સર્વેને વિદિત છે એટલે નામ આપવાની જરૂર
નથી.

હાલ આપણી દશા હુમડ જ્ઞાતિમાં કેટલાંક
કન્યા વિક્રયના અને વૃદ્ધ વિવાહનાં લગ્ન થયાં
છે તે જોઈ કોના દિલમાં ત્રાસ નહિ વર્તાશે.
અને આવા દુઃખજનક બનાવો જોઈ, આહા !
આપો જાળાઓને બળતી ઉમારવા અને હાલ
થયેલા કન્યા વિક્રય અને વૃદ્ધ વિવાહ જેવાં
લગ્નો ફરીથી નહિ બનવા માટે આપણા યુજન-
સાતના દશા હુમડ પંચની કમીટીના મેંબર
માહેજો યોગ્ય કાયદા ઘડી પુરતો બંદોબસ્ત શું
નહિ કરે ?

પણ આહા ! આપણે જ આશા રાખીએ
છિએ તે નહામી છે, કારણકે એક કહેવત
છે કે “ અધિર નમરી, અધિર-રાજા; ટકે શેર
બાજી, ટકે શેર ખાંડ ” તેમ છનસાઈ કે બ્યાં
રાજા પોતે અન્યાય કરે તો પ્રજાને કેમ રોકાય ?
પણ રેયતનો કાયદો રાજાને લાગુ પડે છે. જેની
રીતે હાલ આપણા મદાન દયાળુ નામદાર
ક્ષીટીય સરકારની ન્યાયની કોર્ટમાં શ્રીમંત અને
ગરીબ બંનેને સરખો ન્યાય મળે છે, તેવીજ

રીતે આપણા પંચના મેંબર સાહેબો નિષ્પક્ષ-
પાતે આવા કૃત્યો કરનારને શું યોગ્ય શિક્ષા
નહીં કરશે ?

આહા ! જ્યાંથી વહાર આવવાની આશા
હોય ત્યાંથી ધાડ આવે, તો પછી કહેવું કોને ?
તેમ જ્યાં આપણી જ્ઞાતિના આગેવાને કે જોગો
પંચમાં તેમ સભાઓમાં જે મોટાં મોટાં બા-
પણા કરે છે તેઓજ આવાં કામો કરવા પહેલે
નબરે તૈયાર થાય છે, તો તેઓ આવાં લગ્નો
બંધ કેમ કરી શકશે ?

પણ મહારા વિદ્વાન બાધજો તો સમ-
જ્યા હશે કે “ વિનાશ કાળે વિપરીત બુદ્ધિ ”
જેવું થયું કે આગેવાનો આવાં કામો કરવાને
ડરતા નથી, તો પછી આપણી જ્ઞાતિની ઉત્ત-
તિ થવાની સ્વપ્ને પણ આશા રખાય કે ?
આપણે આપણી સાત કે દશ વર્ષની
પુત્રીનો વિવાહ કરવો હોય અને જો બાર કે
પંદર વર્ષનો વર હોય તો તે મોટી ઉમરનો
ગણીશું. ત્યારે બીજાની બિચારી અગીઆર
બાર વર્ષની પુત્રીને પોતાના સ્વાર્થ સાથે
સામાને ગમે તેમ સમજાવી વચ્ચે બાંજમડીઆ
નાંખી પચાસ કે પચાવન વર્ષની
ઉંમરે પરણવાવાળાને શું યોગ્ય ગણીશું ?

અરે ! આપણે હુંકમાં વિચાર કરીશું,
તો સહેલાઈથી જણાશે કે આપણે એક ચાર
છ પૈસાની જીન કિંમતની બીજા ખરીદવા
જઈશું, તો કેટલીક જગ્યાએ બાવની તપાસ
કરી ખરીદ કરીશું. કારણકે વખતે ઉતરાઈ
જવાય. અરે ! આપણે આવી નજીવી રકમ
બદલ આટલી તપાસ કરીશું, ત્યારે આપણે
આપણી વહાલી છોડીના લગ્ન કરવા બદલ કે
જેની સાથે આપણે જન્મ ગાળ્યામાં છે, તો
તેનો પુરેપુરો વિચાર. ક્યાં સિવાય પચાસ
પચાવન વર્ષનાં વર સાથે લગ્ન કરવા
તે હાથે કરી હુવામાં મરવા જેવું છે.

વળી કેટલાક બાધજો પોતાની પુત્રીના
વિવાહ કરતા પહેલાં એની પાલકો છે કે



याक्षो, क्षाक्षे दा ना दशे (भरी जग) तो छोड़ी
येहा येहा आशे ! डाहनी आशियाणी तो
नहि थरो । । वाह ! डेवी भावना ! ! शुं आपजे
प्रथमधीनर अणुं विचारोये गिजे तो आगम
साडं भांधी थरो ?

भासा व्हावा वांयजे ! आ दोष वांथी ले
आना जनावे जन्मा छे ते भद्व आपणी
क्षमिणी जेगी थाय तेमां यथां यथावी अक्ष
संपथी योग्य प्रणय करवा करववा भरा
अतःकरणी भद्वेनत करशे, तोन आपणी
यातिभांधी एव विवाह अने जन्मा विक्षयुं
नाम जशे अने आपणी यातिनी दनति थरो.

अक्ष दशाहुभु याति अक्ष.

(आराध प्रीतिन विभाग)

सर्व साधारण और उन्नतिका रख ।

(उन्नतिकी देव भागी चली जा रही है, कि-
सान बेचार उस ओर देव रहे हैं और गेतने
ही छोड़े वही रहे जाते हैं ।)

हम लोगोंको विश्वास है कि 'भारतमें
पहिले दीर्घायुष्क, धनी, दानी, विद्वान् और
बन्धान् आदमी होते थे, पर अब नहीं । अब
हम अत्यायुके धारक और निर्बल हो गये हैं'
लेकिन यह बात सर्वथा मत्त नहीं, दादभाई
'गौरीजीके अल्लाव 'सरस्वती'में और भी कई
व्यक्तियोंके चित्र और चरित्र ऐसे प्रकाशित
हुए हैं जिनसे ज्ञात हो सकता है कि अब भी
कई व्यक्ति ऐसे हैं जिनकी आयु, सौ वर्षसे
भी ऊपरकी है । धनियोका अस्तित्व जे०
जे० जयसेभाईसे हम पा सकते हैं कि जि-
न्होंने 'एक करोड़ रुपयेका दान एक
मुक्त सर्व' सामाजिक हितार्थ किया है ।
किन्तुनामें शिगकुमार शास्त्रीकानाम मशहूर है

अथवा बा० तिलरुकी गणना उपयुक्त होगी,
जिन्होंने गीतापर ऐसी बड़ी टीका लिखी है
कि जिसकी तुलनामें प्राचीन टीकाएं कई अं-
शोंमें कुछ कम ही महत्व रखती हैं । और
बनेजाकर लिए तो सिर्फ राममूर्तिका नाम ले
देना काफी है । ऐसी २ महत्त्वशाली व्यक्ति-
योंके रहने हुए यह कैसे कहा जा सकता है
कि इस समय पहिलेकी अपेक्षा अवनति है ?
इसलिये हमका मतलब यह है कि एक एक
व्यक्तिके आधारपर किसी देशकी दशाका अ-
नुमान नहीं किया जा सकता है । एकाध व्य-
क्तिके बुरे-नीच होनेसे कोई देश बुरा-अवनत
न समझा जा सकता और न किसी दो एक
व्यक्तिके भले उच्च होनेसे कोई देश उच्च
समझा जा सकता है । किन्तु देशकी उन्नति
और अवनति सर्व साधारण पर अपना आश्रय
रखती है । सर्व साधारण अगर संप, शक्ति-
शाली और उच्च विचारके हुए तो देश उन्नत
कहलायेगा और सर्व साधारण यदि असंप,
निर्बल और नीच विचारके हुए तो देश अवनत
कहलायेगा ।

अब कि सिद्धान्त यही है कि देशके
सर्व साधारण लोग जैसे कुछ होते
हैं वैसे ही देश बनना है यानी 'भारतका
नाम समुन्वय कतनेके निमित्त सर्व साधारण
लोग ही हैं तो अब देखना यह है कि उनके
उठानके लिए क्या प्रयत्न हो रहा है ।

सर्व साधारणसे मेरा मतलब उन लोगोंसे
है कि जो अधिकतर ग्रामवासी हैं, शहरोंमें
बे न्योग जो दिनों रात पेटकी भाग बुरानेमें



लगे रहते हैं जो न कभी अक्षरोंका, पुस्तकोंका अथवा व्याख्यानोंका नाम भी नहीं जानते । जो अपना नाम तक लिखना नहीं जानते या जो कुछ २ टेढ़ी मेढ़ी लकीर खींच जानते हैं । ऐसे ही मनुष्योंकी संख्या आज दिन भारतमें सबसे अधिक है ।

ऐसे मनुष्योंके दो भाग हो सकते हैं । एक तो वे जो निरक्षर भए हैं । दूसरे वे जो कि पुस्तक या अक्षर वांच सकते हैं ।

पहिले प्रकारके लोगोंको उठानेके लिए उन्हें अपने कर्तव्योंका बोध करानेके लिए सिर्फ व्याख्यानोंका ही अवलम्ब नजर आता है । व्याख्यान भी वे नहीं, किन्तु वे जिनका अधीश भाग उनके परिचित हो । जैसे पुराण पुराणोंकी कथाएँ । रामचंद्र-सीता, अर्जुन-भीम, आरुहा-ऊटल । ऐसे महात्माके वदनात्मक चरित्रसे तो वे लोग परिचित होते हैं, सिर्फ ओजस्विनी भाषामें उनके भावोंका प्रचार मात्र करता है ।

दूसरे प्रकारके सर्व साधारण लोगोंके साहित्यकी भी आवश्यकता है या यों कहिए कि उनको अपने कर्तव्योंका बोध करानेके लिए साहित्य भी अवलम्बन हो सकता है ।

आजकल भारतकी व्यापक भाषा हिन्दी तथा अन्य प्रान्तीय भाषाओंमें जितने समाचार पत्र, सामयिक पत्रिकाएँ और पुस्तकें निकलती हैं उन सबकी न केवल भाषा तथा विषय भी इतने उँचे दर्जेके—उनके लिए कठिन होते हैं जिसे सिर्फ शिक्षित ही समझ सकते हैं । क्योंकि दूरक पत्र सम्पादन या लेखक अपने सामने

शिक्षित जनताको ही देखता है, वह लेख लिखते समय उन्हीं मनुष्योंके चित्तको आकर्षण करनेवाली शब्दशैली और विषयकी चारीकी रखता है । जो लोग कि उस विषयसे कुछ परिचय रखते हैं उसकी रुचि उसी ओरको बढ़ती है जिसे शिक्षित लोग अपनाते हैं । यहाँ तक कि वह उसीमें अपनी उच्च योग्यता समझता है जिस ओर शिक्षितोंकी रुचि बढ़ती जाती है । फल यह होता है कि साहित्य इतनी चारीकी विषयकी चर्चा करनेवाला होता जा रहा है जिससे सर्व साधारणको उस साहित्यसे साक्षात् लाभ विलकुल नहीं पहुँचता ।

विषयकी चारीकीको और आलंकारिक भाषाको मैं बुरा नहीं बतलाता । पर सर्वसाधारणको इससे लाभ कुछ नहीं होता ।

सर्व साधारणके लिए तो ऐसे छोटे २ और मामूली विषय होने चाहिए जैसे १४—१५ वर्षके बच्चोंके लिए होते हैं । भाषा भी छोटे २ वाक्योंवाली और निहायत सादा हो । यह और अच्छा हो कि उसमें ऐसी छोटी-मोटी दिलगी भी होना चाहिए जिससे उनका उम्र विषयमें दिल लगा रहे, उत्रे नहीं ।

इन उपायोंसे सर्व साधारण भी अपनी उन्नति कर सकेंगे और वे अपने साथ हो सकेंगे । ऐसा न होना चाहिए कि हम लोग उन्नति देनेमें बैठे हुए आगे भागे चले जाँय और ग्रामवासी या सर्व साधारण लोग हमारी ओर पीछे २ ताकते २ वहीं रह जाँय ।

एक आगम निषादी ।



आज तक करने २ अरब २० लाखों में एक ऐसी दवायी योजना थी जो जगतको आशीर्वाद रूप हो जाय, एक ही छोटी सीशी अपने जेबमें रखनेमें सारा दवायोजना निष्पन्ना हो जाय—यानी अपनी आन्तरिक जेबमें एक जोड़ीसी शीशीये अदर सीता दवायोजना आजाय। परदेसमें, रेलमें, जहाजमें, जगजमें, छोटे मोटे गांवमें जहां जिस वक्त कोई बीमारी उमड़ आई उगी हम उमरा दवायोजना अपने जेबमें निकल पड़े। नई आत्मा निराशाये छोड़े लावे जाय २० यहाँ बड़े विश्वको बाद में ये “चन्द्रावृत” पाया है।

इसमें चोरी, बहरजमी, रत्न, न, चासी, रत्ना, सिन्दूर, तुलाम, आलस, रर रोन वा टाका दूरे, कर्ण रोम, दाढ़, मुजली, साज, हँजा, सूतम गठिया, यात, लफ्फ, नमनोरी, अरुति, नामदी, जहरी डक, प्लीहा, अप्पुधि, प्रसर, रोग, सरी, बहागी, मुद्रक छाँके, प्रमह, रक्त मुद्रि, जडना, नाप (बुखार), न्हाहआ, टिनारी, दुग्दिक, गृध्रम आदि प्रायः सब रोगोन्ना पूरा २ दवाय है। मुख्योने एक सीशी अरुण फल रखना चाहिये। कामत जमीर गरीब सबमें दिये पोने रत्ना है खाने जगजेरी सरसीच दवाये साथ मिलती है। की० पी शीनी ॥१॥ तीन शीनी २) ४० वा० रने अलग।

इसा मेधाना स्थ—

चन्द्रसेन जैन वैद्य, चन्द्रावृत-दवायोजना. U. P.



अन्योक्ति पंचक ।

(लेखक-छोटेलाल जैन मास्टर, खुरई ।)

कमल ।

वक और वाचाल अनाई इन बगुलोसे,
अपमानित हो, कड़ ! चित्तमे चिन्तित कैसे ?
चिन्ताको तू छोड़ ईशसे यही त्रिनय कर,
चिरजीवे, ये मधुप मार्मिक आर मुह्रदवर ।

मोर ।

वर्षाकी घनघोर घटाभे हो मदमार्ता,
निबल जीवको सता सता कर अती इतराती ।
मूर्ख मोर ! अभिमान क्षणिक मुख है यह तेरा,
रोयेगी निज चरण देर कहना सुन मेरा ।

मेघ ।

हे घन ! कर दे मूक पिकोंको हाव, भले ही,
और बनाले दुष्ट मेण्डकोंको स्वस्नेही ।
इसकी चिन्ता नहीं किन्तु अश्रम यह तेरा,
करता आ शशि टौक धुद्र सघोत उजेला ।

काक ।

रग समूहमें भीरु पातर्फी वक्त्रक वक्त्रल,
धिक धिक काक ! पुखि निन्दन मधुकरे राल ।
यद्यपि काला रंग बना कोकिल रंग तेरा,
किन्तु कौन आ वृद्ध शब्दमें भेद घनेरा ।

प्याज ।

धांकर बार अनेक अमम खगितारे जलों,
दे बेशर पुट शुक किया छाया शीतलम् ।
किन्तु न छोड़ी गन्ध अन्ध अविवेकी क्रुधा ?
हाव ! अन्नमें रहा प्याज जैसे का तेरा ।

पुत्रीको माताका उपदेश

(ससुराल जाने समय)

विवाहादि प्रसंगोंपर चोटने योग्य, पृ० ४०
मूल्य सिर्फ १-॥ और १) मकड़ा ।

मैनेत्र, दि० जैन पुस्तकालय-सुरत.

शोक ! शोक !! शोक !!!

हा ! आज हम रोते सभी,

उस तेज पुंज निधानको ।

आवे हजारे आपदा,

देगा महारा जानको ॥

हा ! जैन जाति सुपुत्र तेरा,

रत्न प्यारा खो गया ।

जो सुख था, आदर्श था,

हा ! न्यायवारिधि उठि गया ॥ १ ॥

न्याय अरु कानूनमें तो,

आप पूरे दक्ष थे ।

दखके बतानेके लिये ही,

न्यायवारिधि पदक थे ॥

हा ! दुःख अब उन सुक्तिर्योसे,

कौन भीरु बंधायगा ।

वर धैर्यदाता रख धरासे,

न्यायवारिधि उठि गया ॥ २ ॥

गोह स्त्री भय भी राज,

धूमते सखार बन ।

सब हो सुखी, उनके भगाते,

आप ही तो सिंह बन ।

आकर पड़ा यह बय दुःख,

अब कौन उन्हें भगायगा ।

या, यादिराजकी केजरी,

हा ! न्यायवारिधि उठि गया ॥ ३ ॥

सुगल पसी इस जातिरा,

उद्धार कर्ता कौन था ।

अब ? हो गया उत्तर यही,

वह एक वाचस्पति तु था ।

गर्भार गीटे अब तु प्यारे,

बचन बोल मुनायगा ।

धर्मोपदेश, सत्य वक्ता,

न्यायवारिधि उठि गया ॥ ४ ॥



जैसा ही उनका नाम था,
वैसा ही उनका काम था ।
आवाज अर गोपालका,
निस्वार्थसे रखवात था ।
दास बन इस जातिका,
सब कौन श्रोत बहायगा ।
बेजा लगया नायका हा !
न्याय वाग्धि उठि गया ॥ ५ ॥

अमचमाता आज दिनकर,
जस्त हो, कित भगि गया ।
अपने मुदिव्य प्रकाशे,
भाथि उजाठा करि गया ।
इस व्यथित हृदय मरोजको,
दे किरण कान पिलायगा ।
जो, प्राण ! था सर्वम्ब मा, हा !
न्याय वाग्धि उठि गया ॥ ६ ॥

उस जगत गुरुका क्या ! मनोहर,
गुह्य ये उपदेश था ।
निर्गाम, सगे, मीर, निर्गम
ननो ये आदेश था ।
अ ! योग्य उस स्वाधीनताका
बीज पाठ पड़ायगा ।
असंग गुंथना देनगा
न्याय वाग्धि उठि गया ॥ ७ ॥

इस भेद राज्य सर्वाङ्गरम,
पथ बोध आय वे ।
नामासे औक्त नेमार्थ,
निस्वार्थ भेदर जाय वे ।
मुक्तार भूतल राजन भ,
सम्मान कौन दि हायगा ।
नर, राक्षस, मन्देश सेवी,
न्याय वाग्धि उठि गया ।
वे, नर मीर इस लोकोमें,
निज अन्तर में निद गय ।

जो प्राण ! थे इस जातिके,
देकर दया कित रमि गये ।
मुदा हुई इस जातिकी अव,
कौन सुवा पिलायगा ।
अमृत स्वल्पी वचन दाता,
न्याय वाग्धि उठि गया ॥ ९ ॥
दुर्भाग ! जैन समाज ! क्या ?
अब रुदन करना ठीक है ।
उपकारिताका प्रगट करना,
मे पुरानी लीक है ।
उस गृह्य यह, गुह्यव्यंका,
अब कौन नाम चलायगा ।
एसा करेगा त, न तो,
रक्त-नाथ वाग्धि उठि गया ॥ १० ॥
यह छाग मडल ! आज रोता,
पितृशोक विवोगसे ।
जय याद आती पट्टत छाती,
मीर बढ़ता हगलसे ।
आसे पटी रह जाति है हा !
कौन उन्हें दिगायगा ।
न पकन हाथ समाज नहीं,
सच न्यायवाग्धि उठि गया ॥ ११ ॥
कुजविहारीलाल,
जैनविद्वान्ताविद्यालय-मोरेना ।

मंदिरोंके काममें लाने योग्य

पवित्र

काश्मीरी केशर

वर्षभरके लिये अभीसे मंगा लीजिये,
क्योंकि इस वर्ष उपज कम होनेसे पवित्र
केशर वर्ष भर तक मिलना कठिन है ।
मूल्य १।) डेढ़ रुपया की मोला ।
मेलेजर.-दि० जैन पुस्तकालय
नंदावानी-सुरत ।



सहायक-पंचक ।

फिशाकका व्याह ।

(महमन)

(१) अधिकांश लेखक इस बातको नहीं जानते कि उनके लेख सर्व साधारण नहीं समझ सकते, वे सिर्फ उन्हीं मनुष्योंको सामने रखकर, जो कि शिक्षित-अपनेको नेता मानने-वाले हैं, लेख लिखते हैं ।

(२) दिनभर मुस्त बैठे रहनेवालोंके लिए यह अवश्य कहना उचित है कि 'बिना काम किये कोई सुखी नहीं रह सकता ।'

लेकिन इसका मतलब यहाँ तक नहीं है कि, दिनों रात साधारण काममें इतना पस जाना कि जिससे अपने आरक्षी-अपने कर्तव्यकी-अपने अनुभव और सदाचारकी वृद्धिकी भी याद न रहे । ऐसे मनुष्योंको यह बात व्याप्तम रखना चाहिये कि "कामके लिए जीवन नहीं बरिक्त जीवनके लिए काम है ।"

(३) जिस तरह तुम अपने नौकर पर हुकूमत करनेमें हिचकिचाते हो कि कहीं यह हुकूम-अदलील कर बैठे, विश्वास रखो, वैसे ही यह भी हुकूम-अदलील करनेमें तुम्हारी नाराजगी भीतर ही भीतर हिचक रहा है ।

(४) याद रखो, नौकरकी वृद्धि नौकरकी ही वृद्धि नहीं है किन्तु तुम्हारी भी वृद्धि है ।

(५) जब तक कि तुम किसी विषयमें इतने लित न होगे कि अपने आरक्षी भी तुम्हें रखर न रहे तब तक तुम उसके अच्छे विद्वान् न हो सकोगे ।

दो रंगीन नकशे ।

अंदाई द्वीपका नकशा ।=)

नवतत्त्वके भेदका चित्र

(समासुध और पदार्थका स्वरूप लक्षित) -)

गणितका पना-

मैनेत्र-दि० जैन पुस्तकालय-मुम्बई.

रात्रिका समय है । मन्द मन्द सुगन्धित पवन चल रही है । श्यामाकर (चन्द्रमा) का प्रतिबिम्ब मेघोंमें लुप्तकर यत्रतत्र अपनी प्रभा (ज्योत्स्ना) फैला रहा है । इसी समय एक गृहस्थ रमणी अपने कमरेमें बैठी हुई, न मालूम किम शोकसागरमें डूब रही है । इन-केसे कहकरसे आवाज आई—“अरी भित्ति तो मोल !”

रमणीने चुपचाप दरवाजा खोल दिया । यह आवाज देनेवाला रमणीका पति था ।

इसका नाम नन्मूल और रमणीका नाम बनासोवाई है । नन्मूलकी दो कन्याएँ हैं ।

नन्मूल—(रमणीसे) प्रिये! मैं सब डीक कर आया हूँ, केवल तुम्हारी आज्ञाकी ही कमी है ।

बनासो०—मैं आज्ञा क्या दूंगी ? जो तुम्हें स्वे सो करो ।

नन्मूल—मैं रत्नफोरी (बड़ी लड़की) की सगाई पाकी कर आया हूँ । दमहजार रुपये नगद, और पाँच हजारका गरना देनेके के लिये तैयार है । वही, तुम्हारी क्या गय है ?

बनासो०—मैं रत्नफोरीका व्याह चेत-मिह ही के माथ कलंगी, क्योंकि वह रत्नके लिये बहुत ही योग्य घर है, उसकी अम्मा भी डीक (१८ वर्षकी) है । अहा ! ऐसे सुन्दर जवाइ (दामाद) का मिलना कौन-का है ?



नन्मठ—(स्वागत) अब भी चेतसिंह यहाँ आता है, मालूम पड़ता है कि, उसीने स्नानो बहना रक्खा है। (गुस्सा होकर) वह क्या पड़ा लिया नहीं है? बेरिम्मी पास ही है और हाईडोईका नगर है। पागो मण्डप महामनी जाता है। और क्या चाहिये? नइवीके मुण्डमे कुछ कभी है?

इतनी कह नन्मठ जानकीप्रसादक म बानर मया जोग आवाज दी—“जानकीप्रसादजी, जो जानकीप्रसाद” “जानकीप्रसादजी है क्या?”

जानकीप्रसाद—कोन है?

नन्मठ—अभी मैं हूँ नन्मठ।

जानकीप्रसाद—आइये बाबूसाहब! कहिये कुछ। यहाँ सब ठीक है, केवल ज्योतिषी जीको बुलाकर दिन ठीक करना है।

नन्मठ—अच्छ आप ज्योतिषीके घर जाइये! उनको बुलाकर मंगल करवा आइयेगा।

जानकीप्रसाद—“ठीक है,” कहकर

जानकीप्रसाद ज्योतिषीके घर पहुँचे और आवाज दी—“ज्योतिषी, जो ज्योतिषीजी।”

ज्योतिषी—कौन है भाई?

जानकी—अभी मैं हूँ जानकीप्रसाद।

ज्योतिषी—ओहो! किम त्रिये तकनीक आइं? आइये—

जानकीप्रसाद—बाबू नन्मठकी नइवी के बिकानेकी बातचर गीहैं उन्होंने आपको बुला दिया है।

ज्योतिषी “अच्छा मैं आता हूँ, बाबूजीसे मेरा जुहार कहियेगा।” इतना कह ज्योतिषीजी अन्दर चले गये।

पाठ्य—अभी तक आप जानकीप्रसादसे अपरिचित हैं। यह कन्याविजयका दण्ड एक मतठरी बार है।

x x x

(२)

(एक पागपर स्नानकनेरी और चेतसिंह ये हुए बातचीत कर रहे हैं।)

चेतसिंह—मने सुना है तुम्हारा ब्याह एक बन्द बेरिम्मीके साथ होनेकी तयारी की जा रही है।

स्न०—किसने कहा?

चेतसिंह—तुम्हारी गैनी बहन बलरामा। कहती थी।

स्न०—(गले लगकर) चेतसिंहजी, आप ही इस समारंभ में मेरा सब कुछ है। मुझे इस विपत्तिसे बचाइये, नहीं तो मे प्राणको दूँगी।

चेतसिंह—(रूपालसे आँसू पोंडकर) स्न०, काँट चिन्ता नहीं, मैं तुम्हारे पिताको समझाऊँगा, इतना कह चेतसिंह वहाँसे चउठिये। हमसे बाहर पैर रणा ही या कि, नन्मठने हाथमें एक पिन्गोल लेकर मुम्मेसे कहा

“चेतु! यहाँ कैसे आये?”

चेतसिंह—रोजनी तरह आज भी आया हूँ।

गन आपका यह प्रश्न केमा?

नन्मठ—उम दिन तुमसे कुछ दिया था कि यहाँ भूत कर भी न जाना।

चेतसिंह—भूतकर नहीं, चरकर ही



आया हूँ, घबड़ाइये नहीं। क्या बात है ?

नन्मल—“क्या कहा ? देख ! यह पिस्तौल तेरा खून किये न रहेगी, कहकर चेतसिंहको एक गोली मार दी। चेतसिंह जमीन पर गिर पड़ा; और “हाय, मर गया” कहकर चुप हो रहा।

पिस्तौलकी आवाज सुनते ही रामस्वरूप कमरेमें आ गया। रामस्वरूपने चेतसिंहको जमीन पर पड़ा देखकर उसकी नाड़ी ट्योल कर कहा—“चेतसिंह तो मर गया !”

यह सुन नन्मलकी पतलून निगड़ गई। बोलना बंद होगया और आखोंकी पुतलीयाँ ऊपर चढ़ गई। अब क्या था, इतनेमें बतासो और रत्नकटोरी भी भीतरसे आ पहुँची, सबके सब चिल्लाहटके साथ रोने लगे।

नन्मल—(घबड़ाकर) और चुप रहो, नहीं तो अभी अपन सबके सब पकड़े जावेंगे !

रामस्वरूप—(चिल्लाकर) “हा ! चेतू” “चेतू” “ओ चेतू”

नन्मल—अरे भाई ! शोर मत करो, कोई उपाय बतलाओ, नहीं तो मैं मारा जाऊँगा।

राम०—इन लोगोंको यहाँसे हटाओ, इनके चिल्लाहटसे पुलिसको खबर पहुँच जायगी—

नन्मल—(हाय जोड़कर) तुम लोग यहाँसे जाओ; घरमें जाकर रोओ; नहीं तो मैं मारा जाऊँगा।

राम०—मुझे इनाम दिया जाय तो काम ठीक कर सकता हूँ।

नन्मल—अरे रामस्वरूप ! इनामकी क्या कहता है ? तू इस आपत्तिसे मेरे प्राण बचाओ तुमारी कसम, इनाम अच्छा दूँगा।

रामस्व०—अच्छा, आप यहाँसे जल्दी चले जाइये।

नन्म०—तुम क्या करोगे ?

राम०—मैं चेतसिंहको चुपकेसे तालाबके किनारे गाढ़े आता हूँ।

नन्मल—(कांपता हुआ) अच्छा, मैं जाता हूँ, होशयारीसे, काम करना भैया। देख मैं खूब इनाम दूँगा।

रामस्वरूप चेतसिंहको तालाबपर ले गया। पाठक ! आप चेतसिंहसे अपरिचित हैं।

यह नन्मलका चल्ता पुर्जा नौकर है। चेतसिंह शहरके एक बनानका पुत्र है। जो सदाचारी और होशयार था।

+ + +

(३)

रत्नकटोरी अपने कमरे सो रही थी। कमरमाथा आगई और कहा—“जी जी” ओ “जी जी,” माँ बुलाती है, जल्दी उठ !”

रत्न०—(करवट लेकर) क्या है ?

कनक०—छोटी थाने तल, माँ बुलाती है।

रत्नकटोरी—मुझे भूख नहीं है।

कनक०—जीनी उथतो, मुन, तुमाली डगाई एक छाहकं साथ होगी। तू मैं बनेगी, जीजी ! तू मैं बनेगी।

रत्न०—नया वकनी है पगनी। किसे कहा मैं मैं बनेंगी ?

कनक०—हमसे माने कहाथा कि जीजी बनेदी ! तू छोटी थाने तल, माने बुलाया है।

रत्न०—कनक कैसी होगई है। तू माने



कह दे गुझे भूत नहीं है, मैं रोटी नहीं खा-
ऊंगी ।

कनक०—अर्था; मैं माँ तो भजती हूँ ।

[स्थान—तालावका किनारा]

रामस्वरूपने गड़वा खोदकर चेतसिंहको
उठाया ही था कि, चेतसिंहने गंभीर स्वरसे
कहा—रामस्वरूप ! क्या जिंदा ही गाढ़ दोगे,
इनाम क्या टहरा लिया है ? रामस्वरूप ! क्या
करते हो ?

रामस्वरूप—(भयसे कांपता हुआ) भा
—पा—डू—चेतू—भाफ—क—क—गे ।

चेतसिंह—दरनेकी कोई बात नहीं; मैं
तुमको एक पत्र लिखकर देता हूँ, उसे रत्न०
को ही देना, अन्य किसीको नहीं ।

रामस्वरूप—अ . अ ... अ—मैं दे—दे-
दे दूँगा ।

चेतसिंहने पत्र लिखकर रामस्वरूपको
दिया और कहा—जाय रत्न० को देना ।

ठीक, कहकर रामस्वरूप सोचा परको
नया आया और कनकमालाके हाथमें पत्र देकर
कह दिया कि, इसको अपनी जीजीके हाथमें
देना और किसीको नहीं । कनकमालाने रत्न० के
कमरेके निरुद्ध पहुँचकर आवाज दी—“जीजी !
निवाड़ तो सोल !”

रत्न० स्त्रीरत्नने निवाड़ खोल दिये । कनक
हाथसे पत्र पारकर रत्न० स्त्रीरत्नने दिग्भ्रमसे पत्रको
खोलकर पढ़ा, उसमें इस प्रकार लिखा था—

रत्न,

‘जिन्ता न करना’ मैं अभी जीवित हूँ।
तुम धैर्य धरो, धैर्यसे सब कार्योंमें मग्नता
प्राप्त होती है । इत्यादि ॥ चेतसिंह ।

(४)

नन्मूल रबीवारकी लुट्टीमें अपने मित्र
कैलाशचन्द्रके घर पर चौपड़ खेलने जाया
करते हैं इसलिये चेतसिंहने यही अरमर रत्नमें
मित्रमें का ठीक समझा ।

एक दिनकी बात है कि नन्मूल उसी
तालावके किनारेके रामसे कैलाशचन्द्रके घर
जा रहे थे कि इतनेमें उनके सामने रौद्रवेश
धारण किये हुए एक पिशाच आ गया । इसे
देखकर नन्मूलको होश न रहा, गला सूख
गया, चीत्कार करनेकी चेष्टा की; परन्तु वह
प्रयत्न व्यर्थ हुआ । अपने पहिलेहीसे मुँह बन्द
कर लिया और कहने लग—मैंरें डालता हूँ।
नहीं तो मैं जो बहूँ उसे कर ।

नन्मूल—(भयसे कौतरा हुआ)
यह ननाओं तु तुमको कौन हो ?

पिशाच—मैं चेतसिंह हूँ । मर कर
भूत हुआ हूँ ।

नन्मूल—अच्छा, जो जो-जो-तुम क-
क रहोगे—व व यही-क-क रहेंगे ।

पिशाच—करेगा क्या, करना ही पड़ेगा ।

नन्मूल—अ—अ—अ—म—म—जल्दी कहो
मैं—मैं—ज—ज—नगर—कहें—कहें—गा ।

पिशाच—अच्छा कैरोंगे तों कैरो ।

नन्मूल—“अच्छा, क—क....रहें—”

पिशाच—(बात फाटकर) कैं—कैं ...क्यों
कैंते हो ? इतनापि शक्ति नहीं पड़ेगी ।

नन्मूल—(स्वगत) सैर जान बची । भूत

म्याप लिखाकर ही गया करेगा ! कुछ कर
तो सकता नहीं, खेर लिये देता हूँ । (प्रसन्न)
अच्छा, क्या ठि—कैं ?



પિશાચ—યૈહ લિલોં કિં “ મેં ચેત-
સિં કૈં માય અપની વડીં લડકીંકા વ્યાહ
કહ્લોં, ઔર કિસીંકે સાંચેં નહીં । ” ઉમકે
નીચેં ઔપેં હસ્તાક્ષર કરોં !

નન્નમલકો એમા હી કરના પડા ।

પ્રિય પાટકો, ચેતસિંહકા રત્નકટોરીકે
સાથ વિરાહ કર દિયા ગયા તંવ ડોનોં
(ચેતસિંહ ઔર રત્નકટોરી) કી આનન્દકી
સીમા નહીં રહી । ડોનોં સાંસારિક સુલોંકો
વાધા રહિત અનુભવ કરને લગે । હમ સંવેંસે
નન્નમલકી નાલુશ થે, પરન્તુ અવ વે અત્વચ્ચ
રહને લગે । વે દિન પરદિન સુલેતે ગયે ઔર
અંતમેં કુછ સમય ચાદ શરીરત્ન કર ગયે ।

પ્રિય પાટકો ! હસ “પ્રહમન” સે આપકે
હૃદયમેં અવશ્ય કુછ અપર પડા હોગા ! હવકા
અસર તમી સફલ હોગા, જવ કિ આપ અપની
શક્તિકે અનુમાર, આનો જાતિમેં પ્રવિષ્ટકુસી-
તિયોંકો બન્દ કરનેકા પ્રયત્ન કરોં ।

અંશા હૈ હમારે મુજ પાટકુશના નિયમ
તો અવશ્યહી કરોંગે કિ—“ હમ વેટી નહીં
વેંચેંગે ઔર જો કોઈ વેટી વેંચેગા, જો કોઈ
વેટીવાલેકો રૂપયે દેગા, તથા જો કોઈ હમ
કાર્યમેં સદાયતા દેગા, ઉમકે યહાં વ્યાદ-
મે જીમને નહીં જાંચેંગે । ”

યદિ આપ મુજ અજ્ઞાનોંકે કહને પર
ટંતની કુશ કરોંગે તમી મેં અપનેં હસ લેતમેં
અપનેંકો સફલિમૂત માનુંગા; ઔર તવ મેં અપને-
કો હૃદયેં જ્યાદા કુશિય સપાડુંગા, જવ કિ મુજે
અથવા “દિગંધર જૈન” કે સમ્પાદકકો એક
કાર્ટ દ્વારા સૂચિત કરોંગે કિ, હમને જેમા પ્રગ
કિયા ।

ધન્યકૃમાર જૈન વિદ્યાર્થી

સ્વા. મહાવિદ્યાન્ય-કાશી

અમારી યાત્રા.

કાગળ માસમાં દહોદમાં મળેલી સંયુક્ત
દિ. જૈન કોન્ફરન્સમાં સભાપતિ તરીકે અમેને
નીમવામાં આવ્યાથી અમે કુટુંબ સહિત તથા
અમારા ભાણેજ યુનીવાસ ઝવેરચંદના વિધવા
જડાવખાઇ એ પ્રસંગે દહોદ ગયા હતા અને
ત્યાંથી પછી અનેક યાત્રાઓ કરવાનો સુપ્રસંગ
અમેને પ્રાપ્ત થયો હતો, જેમાંની કેટલીક ગાળવા
યોગ્ય હકીકત અને પ્રકટ કરીએ છીએ.

દહોદમાં ૬ દિવસ (તા. ૨૨ થી ૨૭)
દરમિયાન પંચકલ્યાણીક ઉત્સવ અને કોન્ફરન્સમાં
ભાગ લઇ ૨૫૦) કોન્ફરન્સ, ૧૦૦) ખંચ
સંસ્થાઓ, તથા ૫૧) સમરેક છર્ણોદાર દુડમાં
આપ્યા તથા સરકારી કન્યાશાળાની મુલાકાત
લઇ ત્યાંની ૧૫૦ જાળકીઓને દપડાં વગેરેનું
દાન આપ્યું. અને જુનું દહેર વીસપંચાલું
છે અને નવું દહેર તેરાપંચી આમનાયનું છે
દશા દુમડની વસ્તી આસરે ૩૦૦ ની છે.

તા. ૨૭ મી એ દહોદથી નીકળી વડોદરા,
ગીરમામ, સીંદોર થઇ તા. ૨૮ મી એ પાલી-
તાણા જઇ સહેરની ધર્મશાળામાં મુકામ કર્યો.
અને આઠ દિવસ રહી શેતુજ્ય તીર્થની પયાત્રા
કરી તથા તીર્થની વ્યવસ્થા તપાસી, તો જાણ્યું
કે દરેક કાર્ય યુનિમ ધરમચંદનની દેખરેખથી
ઉત્તમ રીતે થાય છે. કોઇપણ યાત્રીને કંઇપણ
તકલીફ પડતી નથી. ગામના દહેરાસરમાં
મુનીમજીએ એવી તો સુંદર રચના કરી છે
કે દહેરામાંથી અમરુ ગમરુ નથી. દરેકજ
સરે શામધૂમથી આરતી ઉતરે છે. દાક્ષમાં
વે ગોંચાર બનાવેલા છે તેમાંના એક માટે રૂ.
૧૦૦) જડાવખાઇએ આપ્યા.

પાલીતાણાથી તા. ૪ મીએ રાત્રે ભાવન-
ગર ગયા અને ત્યાં ૧૦ મીએ રહી ૧૧ મીએ
રોધા ગયા. અને દાંડીયા, ગુજરાતી અને
ગોપાલનું એક નવું દહેર પ્રાપ્તિ છે, તા.



૧૨ મીએ વિદ્યાનદેસામીના દર્શન કર્યા અને ત્યાંના ચોતરો તથા દહેરાનોઃ છણોદાર કરી આરસ બેસાડ્યા માટે રૂ. ૧૫૩) આપવા સ્તી કાચું એજ સારું ભાવનગરની પાઠશાળામાં સમા થઇ પરીક્ષા વગેરે લેવાઇ, જેથી સતેજ પામી રૂ. ૨૫) પાઠશાળામાં બેઠ આપ્યા. તા. ૧૩ મીએ ભાવનગરથી નીકળી ધોળા વડકાન થઇ તા. ૧૪ મીએ જીનાગંઢ પહોંચ્યા અને તા. ૧૫ મીએ પહાડપર ચડી ગીરનારની ખોંચે દેવના તથા સદસાવન પણ દર્શન પૂરત્વ કર્યો. અને એ સુખ્ય ૧૬ તથા ૧૮ મીએ પણ પહાડની યાત્રા કરી. તથેડીના મંદિરમાં સોજના દીવાજાતીની સગવડ નથી તે યત્નાની જરૂર છે. ધર્મશાળાની આસરી તથા ગ્રેક આમળ પદ્ધત બેસાડવાની જરૂર છે કેમકે એ જગ્યાઓએ માટી અને રેતી વિશેષ હોવાથી માનીઆને રસોઇ વખતે ધણીજ ઢરકત પડે છે. વળી રૂઠી તથા પુરોને ન્હાવા માટે જીવી જીડી એકેક આરડીની જરૂર છે. વળી કુસાની ચારે બાજુએ પદ્ધત જડાવવાની પણ જરૂર છે કેમકે એ વિના ધણીજ કાદવ થાય છે અને જીવ જંતુ હિંસત થાય છે. તા. ૨૧ તથા ૨૨મીએ જીનાગંઢના મંદિરમાં દર્શન પ્રજન કર્યા. કિંતો, પાપ, નવગન રૂવો, તળાવ, સંહાર જાગ વગેરે બેધો. દહેરાસરની વ્યવસ્થા સારી છે. કારણનામાં હિસાબનાજ વગેરે તપાસતાં તે બરાબર જણાયું. આગળ જેવો અધીર કારેબાર નથી. હાલ સર્વે પ્રકારે સુખ્યવસ્થા છે. સુનીમ શુભંદજ લાયક, પ્રમાણિક તથા ધર્મોભા છે. દરેક કામ ધર, પ્રમાણે કરકસરથી કરે છે. નરી ધર્મશાળામાં ૧૨ આરડાઓ તૈયાર થયા છે અને બે બંગલા પણ તૈયાર થયા છે. જેની બાજુમાં એક બંગલો, જડાવવાઈએ પેતાની પુત્રી બેડેન કીડીના સ્થાપુરે બાંધવા રૂ. ૧૦૫) આપવા છતાં હજારી તથા તથેડીના મંદિરની તરફે એકમાં આરસ જડાવના અંગે-એ પગલાની ગાળી. સુનીમના કાપ સુખ્ય

૨૩) ખગાર ઝોડો છે. જે વધારી આપવાની જરૂર છે. વળી તમેડીપર દેખરેખ સાર જવા આવવા માટે એક જથુક ટાંચાની જરૂર છે. તથેડીની ધર્મશાળાની વ્યવસ્થા પણ સારી છે. તા. ૨૪ મી જો જીનાગંઢથી નીકળી મહે-સાંચા થઇ તારંગા આગ્યા અને પગે ચાલી પહાડપર ગયા અને સર્વેએ આનંદથી યાત્રા કરી તથા ૨૭ મી એ સિદ્ધશીલા તથા કોડરીલાની યાત્રા કરી. અત્રે ચૈત્રી પુનેમની યાત્રા સારી બસાઇ હતી. આશરે ૩૦૦ યાત્રાળુઓ હતા. જગ-યાત્રાનો વતોડો નીકળી અગિયેક થયો તથા સર્વે મળી સંધ જમાડયો હતો. અત્રે સુનીમ નાનચંદ પદમશી લાયક છે અને દેખરેખ હિસાબ પણ સારો મળે છે. સુનીમના હાથ નીચેના માણસ રામચંદ મેજ નિયમ નિયમ પૂજા કરે છે અને સાત્ર વાંચે છે. આરતી પણ રોજ ધામધુમથી ઉતારે છે. બધે દહેરે તથા બે મહેરીઓ દ્વાર પ્રસાદ પૂજન પરાખર થાય છે. સિદ્ધશીલા તથા કોડરીલાના દહેરીના છણોદાર માટે તો સોઝાપુરવાડા રોડ હીરાચંદ અમીચંદ વગેરે તરફથી મંજુરી મળી છે, જેમાં બેરાળુના બેનરમાંથી નીકળેલી બે કાચેત્સને પ્રતિમા કે જે સં. ૧૧૯૨ ની છે તે વિસગમન કરનામાં અચનાર છે. વળી આપણા મોરા દહેરાની બાલુમાં ખીળાં બે દહેરાં છે જેમાં પદ્મપ્રયુગ સં. ૧૧૬૩ તું અને વાસુદેવપ્રયુગ ૧૬૧૪ તું છે જેનો છણોદાર કરવા માટે જડાવવાઈએ કળાયું તથા સંભવનાથના દહેરાના સભામકમાં આરસની લાદી બેસાડવા અંગેએ પરાનામી આપી હાથતું તારંગાતું રોસન હવે થોડા દિવસમાં ગદસાઇ ટીખા નામતું નવું રોસન થનાર છે, જ્યાં ધર્મશાળા મંદિર માટે જમીન લેવાઇ છે અને આરડીઓ તૈયાર થાય છે. જે કાંઇ બાદને પેનાના નોમનીં ચ્યારડી બંધાવવી હાય તો સુનીમને લખવું. તારંગાજી પર ધર્મશાળાની ૩૦ આરડી અને પણ બંગલા જેમ ૧૫ ચ્યારડી



છલું હાલતમાં છે તે સુધારવાની તથા નવી ધર્મ-
શાળા બાંધવાની જરૂર છે. આ તીર્થેના વહો-
વટ સારા ચાલે છે, જે માટે એની મેનેજીંગ
કમીટીનું ધન્યવાદ ધરે છે

તારંગાશ્રયી, તા. ૧૦મી એ નીકળ્યા મે-
સાણા અને અમદાવાદ યથા તા. ૧૧ મી એ
ખેપોરે સુખસાતથી અમેા મુંગાઈ આવી પહોંચ્યા.

નવલયંદ હોરાચંદ ઝવેરી, મુંબઈ.
નોટ-પોતાના વડીલ બાઈમાણીકચંદછની માફક
હવે શેડ નવલયંદછ પણ આપણાં જાહેર કાર્યોમાં
ભાગ લેતા થયા છે, જે જાણી આગાશ પાંચ-
કાને આપનાંદ થશે અને એજ સુખમ શેડ
નવલયંદછ પોતાની શાયિબની છંદગી પોતાના
વડીલ બંધુની માફક હવે સમાજસેવાના કાર્યમાં
ઉત્સાહીતર થઈ રૂપે સુખરશેજ એવી આશા
રહે છે. આ શેડના માણેજ રચંગવાસી શેડ
સુનીલાલ ઝવેરચંદના વિધવા જગજગ્યાઈ પણ
ધર્મચંદાણ હોવાથી વાંચ્યાર ધર્મકાર્યોમાં
ભાગ લઈ રહ્યા છે અને દાન પુણ્ય પણ યથા-
શક્તિ કર્યોજ કરેછે જે જણાવતા અમને આનંદ
થાય છે.

સંપાદક.

અસદિપુરાણ ગ્રંથ

→ પૂરા છપ મફત ।

જો મગવજિનસેનાચાર્યકૃત
બड़ा भारी ग्रंथ मूल सहित सरल
हिंदी भाषामें बहुत दिनसे छप
रहा था वह पूरा हो गया । मोटे
और मजबूत कागजपर बड़े टाइप-
में खुले पत्रोंपर छपा है । न्याछावर
अभी १६) सोलह रुपये ही रक्की
है । डाकखर्च अलग लगेगा । जिन्हें
चाहिये वे शीघ्रतासे मंगा लें ।

मालाराम जैन

दरभार-इंदौर.

મહાવીરજીકે મેલેકા દૃશ્ય ।

ગત ચૈત્ર શુક્લા ૧૧ સે વૈશાલ કૃષ્ણા
૧ તક સદાકી માંતિ હસ વર્ષ મી જયપુર
રાજ્યાન્તરગતિ ચાંદણગાંવમેં આતિશય શેજ
શ્રી મહાવીરજીકા મેલા હુઆ । અનુમાનેસે
એક લક્ષસે અધિક જન સંસ્થા થી ! જો
પ્રતિ વર્ષ દિન દૂની જૌર રાત ચૌગની બઢ
રહી હૈ । ચીં તો ચારોં ઓરકે માઈ હસ મે-
લેમેં આતે હૈં કિંતુ જયપુર, વેહલી ઔર
આગરાકે વહુત યાત્રી આતે હૈં । હસ શેજકા
હાલ ' જૈનમિત્ર ' વર્ષ ૧૬ કે અંક ૩ મેં
' તીર્થયાત્રા-શ્રી મહાવીરજી ' શીર્ષક લેલ
દ્વારા સમાજકો માલમ હોગયા હૈ ।

મહાવીરસ્વામીકી પ્રતિમા કેસી મ-
નોગ્ય ઔર સૌમ્ય હૈ હસકા જ્ઞાન દર્શકકો
હી હો સકતા હૈ । કિંતુ સેદ હસ વાતકા
હૈ કિ હસ મેલેમેં યાત્રીયોંકો પૂજન તો ત્યા
દર્શન મી કઠિનતાસે મિલતે હૈ । જો પૂજન
કે અધિક પ્રેમી હોતે હૈ વે શાસ્ત્રકે વિરુદ્ધ
રાતકે ૨ યા ૩ વજેસે પ્રક્ષાલ આદિ પ્રાર-
મ્મ કરતે હૈ । શેષ દિનમેં વહુધા યાત્રી (પુ-
રુષ વ સ્ત્રી) યા તો ગંજપા આદિમેં સમય
ધિતાતે હૈ યા મેનાઓંકે મંડ ગીત સુનતે હૈ
ઔર ડનકા નાચ દેખતે હૈ તથા ઈધર ડધર
મૂમતે હૈ । હસકે કહેમેમેં કોઈ અત્યાક્રિ ન
હોમી કિ યહાં યાત્રી લોક જાતે તો પુણ્યો-
પાર્જન વરનેકે ટિપ હૈં કિંતુ ડનમેં અધિક-
તર પાપોપાર્જન હી કરતે હૈ ।

માગોદવસે હમ વર્ષ મેં મી હસ પુણ્ય



भूमि पर मेलते समय पहुँचा । इस मेलका कुछेक चित्र भे आपने सम्मुख रखता हूँ जिससे आप अपनी समाजकी अज्ञानता और क्षेत्रके प्रबंधका कुछ २ हाल जानेंगे । गुड्डे रोद हैं कि गत वर्ष भी 'दिगंबर जैन' में इसी मेलके प्रबंधके विषय पर चारू मदनलाल जैन आगरा में समाजको चेताया था किंतु देरानेसे मालूम हुआ कि उस लेखने समाजने कुछ भी लाभ न लिया और प्रबंध पैसा का बँसा ही रहा ।

मै त्रयोदशके दिन इस पवित्र क्षेत्र पर पहुँचा । मंदिरके चारों ओरकी बड़ी भारी धर्मशाला यात्रियोंसे भिरी हुई पाई । कुछ डेरे भी लगे दत्त भै भी प्रबंधक (भट्टारक) के पास एक डेरेके छिए गया । मेरे सामने एक और भाईने भट्टारकसे डेरा मागा, उन्होंने गुरी तरहसे बह जवाब दिया, "क्या तुमने मेरे पास डेरा गेल दिया था ? जो मेरे पास थे सो दे छिए ! .." गुड्डे यह देखकर बड़ा आश्चर्य होता है कि भट्टारकजीके कहनेके बाद कई डेरे लगे, न मालूम वे कहाँगे जाए । पीछे जानेवाले हजारों यात्रियोंको पासके गर्मचेही आश्रय हुए । इस मात्र धूप, मेह और आर्षीसे जो जो दुःख लोगोंको उठाना पड़ा वह कहते नहीं बन सकता ।

दुःखाने—खान पान आदिकी वस्तुए मिलनेके छिए धर्मशालाके हातेके बाहर चौ-उमें रेतमें दुकानें लगी थीं । अत्यंत आना-पन्नने धूल उठनेके कारण सब चीजें खराब

हो जाती थी और वही धूलमिश्रित सामि-त्री यात्रियोंको खानी पड़ती थी । इतना ही नहीं यहाँ हरकोई हर तरहकी दुकान लगा सकत है, किसीको कुछ रोक-टोक नहीं है । मैने देखा कि कई यवन (मुसलमान) तमोलियोंकी दुकानोंपर हमारे भाई मजेसे पान खा रहे थे । यहाँ तक सुना है कि गय जैसी अपवित्र वस्तुकी भी दुकान यहाँ लगी थी । जिसका कुछ लोगोंने बहुत विरोध किया था । प्यारे भाइयो ! प्रबंधक-के प्रबंधका ज्ञान इससे करिए ।

प्याऊ—इतने बड़े मेलमें धर्मशालाके हातेके भीतर एक भी प्याऊ नहीं थी । पानीकी यह दगा देखकर लाख उम्मेदीलालजी आदिने ७५१) का चढ़ा करके स्वयं ही प्याऊ पैठाई थी ।

वास्तव्य—प्रेम या वास्तव्य तो जैन समाजमें दूतक भी नहीं गया है । प्रतिदिन टहरनेके ऊपर भारी झगड़े होते थे । गुना है कि एक दिन पुलिसमेनने किसी यात्रीको एक लात मारी वह भट्टारकजीके पास गया किंतु उन्होंने 'मेलमें क्यों आते हो तुम्हें किमने मुलाया आदि' शब्दोंसे ही उस दुखी यात्रीका सत्कार किया ।

मैना, गृजर—इन नामकी ठो जा-तिया हैं । ये महावीरस्वामीको अपना इष्ट देव मानते हैं और इनके मनमें स्वामीकी बड़ी श्रद्धा है । मैना नामकी जातिके स्त्री पुत्र्य बालक सब इस मेलमें चतुर्दशीसे आते हैं और पतिपदा वन इनकी खूब धूम रहती



है। ये असभ्य जन मंदिरजीमें भंड गीत गाते हुए और 'महावीरके लिंगकी जय' बोलते हुए जैसेके तैसे घुस जाते हैं। प्रत्येकके हाथमें कोई न कोई हथियार या लठ और कुछ नहीं तो पेड़ोंकी डालियां रहती हैं। ये लोग इतने अंधे होकर दौड़ते हैं कि सामनेवालेको भागना पड़ता है। जैसी अशिक्षित जाति यह है और जैसी स्वामीकी श्रद्धा इनमें है वैसी और किसीमें न होगी। यदि प्रयत्न किया जाय तो शिक्षा द्वारा इस जातिके लक्षों जन सच्चे जैन हो सकते हैं।

अविनय-इस मेलेमें अविनयका तो कुछ कहना ही नहीं है। उक्त असभ्य जातियाँ तो मंदिरजीमें जुते पहिने घुसती ही हैं किंतु मांसाहारी यवनादिक भी बे-रोकटोक जुते पहिने प्रतिमाकी ओर पैर करके मंदिरजीमें खूब मौजू उड़ाते हैं। अपने भाई स्त्री पुरुष भी विनयको त्याग कर निर्लज्ज व्यवहार करते हैं। हमें शोक है कि छापेके विरोधी महा विनयी जैनो भी ऐसी बातें स्वयं देखकर कुछ नहीं नेतते।

उपदेश-हमारे विद्वान उपदेशकोंने (पंडित, बाबू और त्यागी) जाने क्या समझ रखा है कि उनमेंसे एक भी मेलेमें नहीं आते। जिनका यह सिद्धांत है कि संसारमें असंगम तो कुछ है ही नहीं और इस शब्दको कोपसे निकाल देना चाहिए भ्रम सज्जन

भी इस ओर लक्ष्य नहीं करते। खेद है कि मेलेमें शास्त्रमथा तक नहीं होती। इस वर्ष कुछ उत्साही युवकोंका इस मेलेमें समागम हुआ था, जिनमें मुख्यकर यह थे-महासभाके ओ० उपदेशक मुंशी लट्ठरमलजी, जैन मार्चंड' के संपादक लाला मिश्रीलालजी सो गानी, आगरेके बा० मंगीलालजी, कोसीकी सभाके मंत्री ला० रतनलालजी, गुनाके श्रीमान् पं० मूलचंद्रजी, जिनधर्मसंरक्षणी सभा आगराके मंत्री ला० हजारीलालजी, प्रेमी हजारीलालजी, ला० उम्मेदीलालजी आदि। आदिके ४, ५ महाशयोंने मेलेमें सभा करनेके बड़े प्रयत्न किए और कईवार गटारकजीसे भी मिले किंतु उनका उत्तर यही मिला, "मैं सभाके लिए विस्तार आदि किसी तरहका प्रबंध नहीं कर सका हूं और न मेरी सभा करनेकी सम्भति ही है।" वहीं मुदिकलसे ता: ४ व ६ को रात्रिमें ला० उम्मेदीलालजीने भजन कहे। ता० ७ को जो प्रयत्न इन युवकोंने किया वह सराहनीय था। रातको इन्होंने मंदिरकी छोटी छतपर बिना विस्तरके समाकी जिसमें अनुमानसे कुल २५० मनुष्य एकत्र हुए होंगे। प्रथम ही ब्रह्मचारी सुखानंदजीका व्याख्यान हुआ। उसके बाद पं० मूलचंद्रजी और मुंशी लट्ठरमलजीका (विधो)पर भाषण हुआ। ला० रतनलालजीने स्वराचित प्रभावशाली एक कविता नशोंपर पढ़ी। बा० मंगीलालजीने अभङ्ग और जुआपर बड़ा और ला० मिश्रीलालजीने पूर्ण व्याख्यानोका समर्थन दिया।



सभापर उपदेशोंका अच्छा प्रभाव पड़ा और कुछ लोगोंने त्याग भी किया। प्यरे भाईयो! इन क्षेत्रोंपर उपदेशकोंकी बड़ी भारी आवश्यकता है। विद्वान् जातिहितैषी सज्जनोंको तो आना ही चाहिए किंतु महासभा और प्रांतिक सभाओंको तो अपने-२ उपदेशक अवश्य ही इस मेलेके वक्त भेजने चाहिये।

रथयात्रा और झगड़े-वैशाख वरी १ ता: ९, अप्रेलको रथयात्रा हुई। आज भीड़ोंकी श्रुमार नहीं थी। ऐसे वैसे आदमीकी हिम्मत तो इस भंगमड़में निकलनेकी भी नहीं होती। रथपर नाजिम साहब बैठकर चलाते हैं। रथ चलनेके पहिले भटारककी आज्ञासे महावीरस्वामीके गलेमें फूल माला पहनाई गई और बालोंके चंवर स्वागिके आगे कई भाई झेलने लगे। दिगम्बर आम्नायके सर्वथा विरुद्ध यह बात थी अतएव झगड़ा शुरू हुआ और लोग बहुत बिगड़े। नाजिम साहिबके आनेपर फैसला हुआ और दोनों वस्तुएं उतरवा दी गईं। फिर लोगोंने कहा कि रथके आगे भटारककी पालकी नहीं जासकती। हम नहीं जानते कि भटारकने क्या सोचकर रथके साथ आना अच्छा न समझा और नाराज हो कर मंदिरजीमें चले गए। जब रथ नदी पर पहुंच गया तो भटारककी पूछ हुई। बड़ी कठिनतासे खूशा-मदके साथ आप आए। आपके आते ही फिर माला पहना दी गई। हम नाजिम साहिबको धन्यवाद देते हैं कि जिन्होंने फिर नाला उतरवा दी नहीं तो लड़ाई अवश्य

होती। देहलीके भाईयोंने इस स्वत्वकी रक्षाके लिए सबसे अधिक प्रयत्न किया जिसके लिए वे अधिक धन्यवादके पात्र हैं। इतने पर ही इन साम्प्रदायिक झगड़ोंका अंत नहीं हुआ किंतु ता: १० को मैंने स्वयं देखा कि दिगंबरियोंको उभाड़नेके लिए कुछ भाई भटारककी आज्ञासे महावीरस्वामीका चांदीके बरफ आदिसे शृंगार कर रहे थे। सुना है कि कुछ लोगोंसे भटारकने कहा है कि मेरे पास कई श्रे० घनाट्योंके पत्र आए हैं जिनमें उन्होंने मुझे आदेश किया है कि तुम दिगंबरियोंसे मुकदमा लड़ो हम पूरा २ खर्च देंगे। हम नहीं जानते कि भटारकजी जो एक त्यागी होते हैं उन्हें इन बातोंसे क्या मतलब और क्यों वह दो भाईयोंको परस्परमें लड़ाना चाहते हैं।

प्रार्थना-भटारकजी! आपका कर्तव्य है कि यदि कोई लड़ता भी हो तो उसे शांत करें और जिस पवित्र आम्नायके अनुसार आपके पूर्व पवित्र भटारक अब तक कार्य करते रहे उसी तरह आप भी उनके अनुगामी बनें। फिर हम अपने भाईयोंसे प्रार्थना करते हैं कि वे अब जाग्रत होकर उन्नतिके उपाय करें न कि इन आपसी झगड़ोंको बढ़ाकर समाजके लक्ष्यों रुपयोंपर पानी फेंकें।

पश्चात् तीर्थक्षेत्र कमेटीको अपना मुंह इस ओर फेरना चाहिए और हजारों रुपयों को इस क्षेत्रके भंडारमें बांटे हैं जिनका क्या होता है इसका पता लगाना चाहिए। और हर तरहका ठीकर प्रबंध करना चाहिए।



अपे ममाज ! तू ध्यान रख कि यदि इस क्षेत्रका प्रबंध ठीक न हुआ तो आगामी इस वर्षसे भी अधिक झगड़े होनेकी संभावना हैं । अपने अधिकारोंकी रक्षा करना तेरा कर्तव्य है अतएव तेरा धर्म है कि तू इस क्षेत्रका ठीक २ प्रबंध करे । भाईयो, चेतो और समाजके द्रव्यका दुरुपयोग मत होने दो ।

अंतमें हम पाठकोंसे निवेदन करते हैं कि वे इस लेखको पढ़कर रख ही न दें । इस भेलेकी जों २ छुटियां ऊपर

अविनय-इन्हें दूर करकेका प्रयत्न करें । कुछ कहना ही नहीगी गई वे सत्य हृदयसे जातियों तो मंदिरजीमें भी यदि कोई शब्द ही हैं किंतु मांसाहारी यवनोंसे क्षमा करें । रोकटोक जुते पहिने प्रतिमाकी स्त्री-

करके मंदिरजीमें स्व गौज उड़ाते अपने भाई स्त्री पुरुष भी विनयको त्याग कर निर्लज्ज व्यवहार करते हैं । हमें शोक है कि छापेके विरोधी महा विनयी जैनी भी ऐसी बातें स्वयं देकर कुछ नहीं नेतते ।

उपदेश-हमारे विद्वान उपदेशकों (पंडित, बाबू और त्यागी) जाने क्या समझ रतों हैं कि उनमेंमे एक भी भेलेमें नहीं आते । जिनका यह सिद्धांत है कि संसारमें असंभव तो कुछ है ही नहीं और इस शब्दको छोड़ते बिना देना चाहिए के गजन

कुरीति निवारण ।

सुरी चालसे ऊंचे कुल भी

महा नीच हो जाते हैं ।

बुद्धमान अकुलीन जगतमें

मान बराबर पाते हैं ॥

वचन ही से जो वच्चोंको

विद्या नहीं पढाते हैं ।

तो वह गालक मूरख होकर

कुलका नाश करते हैं ॥

वालकपनमें शादी करना

वच्चोंको दुखदाई है ।

फिर क्यों जान बुझकर तुमने

अपनी बुद्धि गमाई है ॥

वचनमें है व्याहृका करना

बीज नाशका बोते हैं ।

पढ़ना लिखना सभी छुड़ाकर

गहरी धार डुबोते हैं ॥

दुर्लभ हो सतान इसीसे

प्रेमप्रीति सब खोते हैं ।

फिर पीछे पछताकर अपनी

सुरी दशा पर रोते हैं ॥

कुल २५ ही प्रसचा काजमें अंधे होकर

गूरखता दिखलाते हैं ।

उमके वा अवगुणकी मूल द्वारपर

वेध्याको नचवाते हैं ॥

नगाल उठके प्यारे मित्र हमारे

बुगी कुरीति दूर करो ।

नरोंपर और जु गमगण कहते हैं

निश्चय पर उपकार करो ॥

गमगण जैन, फिरोजाबाद ।

दिगंबर जैनके इसी अंकका क्रोड पत्र ।

जैनसमाजमें विल्कुल नई बात ।

जैनसंसार सचित्र मासिकपत्र ।

जैनसमाजमें आजतक एक भी ऐसा पत्र नहीं था जो मनोविनोदके साथ ऐसी ऐसी बातें बताता जिनमें लोगोंके हृदयोंमें खल भली पैदा हो जाती और वे एकदम अपनी बुराईयोंको निकालनेके लिए तैयार हो जाते । दुर्निष्ठाका काम न सिर्फ़ गभीर बिचारोंसे चलता है, न सिर्फ़ शृंगार रसकी बातोंसे चलता है, न सिर्फ़ आध्यात्मिक बातोंसे चलता है और न सिर्फ़ शारीरिक व व्यापारिक बातोंके करते रहनेसे ही चलता है, बल्कि सबही की बराबर मानाओंसे चलता है । 'जैनसंसार' में ये सब बातें रहती हैं । जैनसंसारमें रसीली कहानियाँ पढ़िए, चमकीले भट्ठकीले विनोदी चित्र देखिए, दिव्यगीके प्रहसन पढ़िए, ऐतिहासिक बातें पढ़िए देशी और विदेशी वीर, कवि और महात्मा पुरुषोंका हाल जानिए और शारीरिक मानसिक और आध्यात्मिक लेखोंको देखकर शरीर, मन और आत्मासे बाकफियत लीविष्ट कीजिए ।

इसमें सामाजिक आलोचनाएँ इतनी मजेदार होती हैं, कि उनको बार बार पढ़ते ही रहना अच्छा लगता है । किसी जाति या समाज विशेषका इसमें पक्ष नहीं होता, जैनसमाजके चारों किरकोंके लिए यह पत्र समान उपयोगी है ।

इसकी उत्तपनाके विषयमें तमाम एक स्तरसे प्रशंसा करते हैं । उदाहरणके लिए इतना यना दें कि प्रसिद्ध पत्र जैनहिस्तेच्छुने भी इसमेंसे एक प्रहसा उद्धृत किया है

इतना होने पर भी वर्षभरमें इसकी कीमत डाक महसूल सहित १॥= एक रुपया दश आना मात्र जो जैनसंसारके चित्रोंके लिए भी काफी नहीं है ।

इस पर भी तुरंत यह है, कि वर्षभरमें तीन चार अच्छी २ किताबें इनाममें दी जावेंगी ।

जैनसमाजमें विद्या पढ़नेका शोक बढानेके शुभ आशयसे संयुक्त जैन ध्वतांबर धराढ प्रान्तिक समाज इसका सब धाटा जो वर्षभरमें लगभग डेढ हजारके होगा अपने सिर लिया है, और ऐसे उत्तम मनो धानिके मूल्यमें बरबर पढ़नेका निश्चय किया है ।

प्रत्येकको इसके माहक बनकर लाभ उठाना चाहिए और समाज संचालकोंको उत्साहित करना चाहिए ।

गणियोंको, स्त्रियोंको और विद्यार्थियोंको यह पत्र आपे मूल्यमें दिया जाता है । सेठ साहकारोंके उनका सम्मानार्थ ५) रुपये लिए जाते हैं जो उदार सज्जन संसारकी सहायताके लिए ५०) रुपये देते हैं, संचारमें उनका फोटो और चरित्र भी प्रकाशित किया जाता है । नये अकमें चार चित्र दिये गये हैं । तीन आनेका टिकिट भेजकर नमूना भेगाइए । और दिव्यमई-मनस्तुति-कीजिए ।

मनिअर्द्ध भेजने और अन्य सब तरहके पत्रव्यवहारका पता—

मेनेजर-जैनसंसार, जुबिलीबाग, तारदेव-बम्बई ।

ताजाखबरे ।

१—जर्मनीने अचानक ४५ लाख रुपये युद्धमें खर्च किये हैं । २—इन्दौर निवासी सेठ हक्क-बम्बईने नवेलारा रुपयेकी बार लोन खरीदी है । ३—सैनफ्रांसिस्को (अमेरिका) की एक कोटेने, बायबकी ऑल्लोकी कीमत ७५०००) रुपये निम्न की है ।

शेठ प्रेमचंद मोतीचंद दिगंबर जैन योडिंग तरफधी प्रगट थतुं मासिक

❀❀❀ दिगंबर जैन ❀❀❀

THE DIGAMBAR JAIN.

नाना कलाभिरिविविधैश्च तत्त्वैः सत्योपदेशैस्तुगवेषणाभिः ।

सुबोधयत्यत्रमिदं प्रवर्तताम्, दिगम्बर जैन समाज-मात्रम् ॥

वर्ष १० वॉ.

वीर संवत् २४४३. ज्येष्ठ. विमम सं० १९७३-

अंक ८ वॉ.



हमारे पाठकोंको विदित है कि कई दिनोंसे चारों ओरसे इन्दौरमें अपूर्व सूचना हो रही है कि प्रसंग। १ स्वर्गीय स्यादादवारिधि

नादिगगकेशरी न्याय-

वाचस्पति पंडित गोवाय्दामजीका नाम स्मरण रखनेके लिये और पंडितजी द्वारा संस्थापित श्री जैन सिद्धांत विद्यालय गुरैनाको चीर न्यायी बनानेके लिये शीघ्र ही प्रबंध होगा पारिये। परंतु अभीतक इसके बारेमें कुछ नाम कोशिश नहीं की गई थी परंतु हर्ष है कि "जैन मित्र" "दिगम्बर जैन" आदि पत्रोंके आन्दोलनसे गुरैना विद्यालयकी प्रबंधकारिणी बनेगी तथा पंडितजीके अतन्व मित्र पं. घना-पल्लवी जाग्रत हुए हैं और आगामी आमाद सुदी ५-८ ता. २४-२५ जूनको इन्दौरमें

विद्यालयकी कमेटीका नाम अधिवेशन होनेवाला है निम्नमें पवारनेके लिये सर्व श्रीमान् और विद्वान् आमन्त्रित किये गये हैं। विद्यालयकी कमेटीका अधिवेशन इन्दौर जैसे सुप्रसिद्ध नगरमें श्रीमान् दानवीर रायनहादुर सेठ छकमचन्दजी, दानवीर रा० बा० सेठ कल्याणमलजी, रा० न० शेठ कस्तूरचंदजी आदि महानुभावोंके समीप बहुत ही आशाजनक होगा और विद्यालय तथा पंडितजीका नाम चिरस्थायी करनेके लिये सर्व उपस्थित मंडली ग्वात प्रबंध करेगी ऐसी हमें पूर्ण आशा है। पंडितजीका नाम स्मरण रखनेके लिये जो चंदा होवे उसको बनानेके लिये एक हेल्पुटेशन निकालनेका भी इभी मीटिंगमें निश्चय होनेकी आवश्यकता है तब ही पूर्ण सफलता प्राप्त हो सकेगी। जैने स्वर्गीय दानवीर जैनकुटूबूषण सेठ माणिकचंदजी धनी होनेसे आने हाथसे ही अपना नाम चिरस्थायी कर गये हैं उसी प्रकार स्वर्गीय पं० गोपालदासजी बरैया विद्यावाचाली खूनही दान कर गये हैं परन्तु अपना नाम चिरस्थायी



રક્તનેકે લિયે કુઝ દ્રવ્ય નહીં નિકાલ ગયે હૈં ।
પરન્તુ જો કુઝ રક્ત ગયે હૈં વહ ઉનકા વિદ્યાલય
હી હૈ અતઃ ઉસકે લિયે બડાભારી પેંડે એકત્ર
કરકે હમ વિદ્યાલયકે સાથે પંડિતજીકા નામ
જોડકર હસકો સ્થાંચી કરનેસે પંડિતજીકા નામ
ચિત્સ્થાંચી હો સકેગા જૌર વિદ્યાલયકી નીવ મી
હદ હો જાયમી । આશા હૈ કિ હમ કાર્યકે
લિયે પં. ધનાલાલની જી જાનસે કોશિશ કરેંગે ।

ગતાંકમાં જણાવવા મુજબ મુ'બાઇમાં તથા
અમદાવાદમાં એમ બે
સંયુક્ત જૈન બોર્ડિંગ્સ બુદ્ધ બુદ્ધ સ્થળે જૈન
બોર્ડિંગ્સ શ્રીયુત વા-
ડીલાલ મોતીલાલ શાહ તરફથી સ્થાપનામાં
આવનાર છે, જે માટે માંગણી કરતા વધુ
અરજી આવનાથી મુ'બાઇની ૩૭ અને અમદાવા-
દની ૪૨ અરજીઓ પાસ થઇ છે. અમદાવાદમાં
મહાન પાઠળ આશરે ૨૨૦૦૦) ખર્ચાયા છે
તેમ મુ'બાઇમાં વિદ્યાળ મહાન પીન્સેસરટ્રીટ પર
ભાડે રખાયું છે. આ બોર્ડિંગમાં ત્રણ ફિરકાના
વિદ્યાર્થીઓને તેમની માન્યતા મુજબ બુદ્ધ બુદ્ધ
ધર્મ શિક્ષણ અપાશે, જેમાં દિગંબરી તરફથી
શ્રીયુત બાગ્ય બુગલાકિશોર મુખત્યારને જોન-
રરી તરીકે નીમવામાં આવ્યા છે. ગરીબ
વિદ્યાર્થીઓને લોનની પદ્ધતિ ઉપર રકોલરસીય
આપવામાં આવનાર છે, તેમાંની લગભગ ૨૫
રકોલરસીય તો મી. વાડીલાલ પોતે આપનાર
છે અને વધુ રકોલરસીય માટે આખી જૈન
કોમને અપીલ કરવામાં આવી છે. આ
રકોલરસીય ૮ વર્ષીય (૪-૫) થી ૫) સુધીની
આખી શિક્ષણ છે અને એ પછી એવી યોજના
સ્થાપિત છે કે જેથી ભવિષ્યમાં મદદની જરૂર
પડશે નહિ અને દાતારેનાં નામ અમર રહેશે
આ બોર્ડિંગોનું ચુકવે તા. ૨૦મી જુલૈ સુધી
છે જે થવેથી વિશેષ હકીકત અજનાજામાં
આવેશે, પણ આ સંયુક્ત જૈન બોર્ડિંગ સંબંધી

વધુ જાતની મેળવનારે શ્રીયુત વાડીલાલ મોતી-
લાલ શાહ નામદેવી સ્ટ્રીટ-મુ'બાઇને લખનાથી
ઉદ્દેશ અને નિયમો મફત પુરા પાડવામાં
આવે છે.

આમારા વાંચકો સારી રીતે જાણે છે કે
શુભરાતમાં છંદરની ગા-
શુભરાતમાં બહારકે દીના અને સુરતની ગાદીના
તરફ ફટાળો. બહારકે જાણીતા છે,
જેમાં છંદરની ગાદીના
સ્વર્ગીય બહારકે શ્રી કનકકીર્તિજી પછી ધણાં
વર્ષો સુધી એ ગાદી ખાલી રહેવા પછી લગ-
ભગ ત્રણચાર વર્ષ થયાં બ્રહ્મચારી મોતીલા-
લજીને છંદર તથા કુંગરપુરના ભાઇજીએ એ
ગાદીને માનનારી સર્વે પંચાંગી સંમતિ વિના
ખેસાડી દીધેલા છે અને તેમનું નામ વિજયકીર્તિ
અપાયલું છે તે પણ જાણીતું છે. આ વિજય-
કીર્તિ બહારકે ખેસતાં પહેલાં છંદરની પંચને
એક પ્રતિજ્ઞાપત્ર લખી આપ્યું હતું તે પ્રમાણે
તેઓ આસરે કે કેમ તે પ્રથમથી જ સર્વેને
શંકા હતી તે ખરી પડેલી જણાય છે અને
એમને ખેસાડનારા શુદ્ધ છંદરના ભાઇજીએ હવે
તેમની વિરૂદ્ધ થયા છે પણ કોઈ આગળ પડતું
નથી એ અજાણ જોવા છે । આ બહારકેજી
હાલ રાયદેશમાં ખાલેખમાં નિવાસ કરી
રહેલા છે. સાથે ૩-૪ ઘોડા તથા ૧૫-૨૦
નોકરો રહે છે । ચંદ્રસ્થ કરતાં પણ
સારો રાજવેશવ ભોગવાય છે ! રાયદેશના ભોળા
આવકો પાસે રંગીને ભાવનાઓ તથા તે સાથે
ભાવનાની દક્ષિણાઓ લેવાય છે જેથી રાયદેશવાળા
પણ ફટાળી ગયા છે, છતાં પણ મુઝે
મોંઠે સદન કરી રહ્યા છે એ અજાણ જોવા છે ।
છંદરની પંચની શું ફરજ નથી કે જો તેઓ
પ્રતિજ્ઞાપત્ર પ્રમાણે ન ચાસે તો તેમાં દશવિંશી
દક્ષમનો ઉપયોગ કરવો જોઈએ. આ જામન
વિશેષ ખુલાશો પ્રકટ કરવાને અગાઉ છંદરની
પંચને નમ સૂચના કરીએ છીએ.



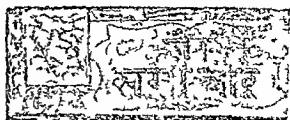
સુરતની ગાદીના બઝારક મુરેંદ્રકીર્તિજી
પરેલાવક ધ વિશેષ કહેવાતુ નથી કેમકે જો કે
તેઓ સર્વસમતિથી બેઠેલા નથી તોપણ તેમનો
વેળાં કદ સિમપડીતિ જોડો નથી. હાલનો
સમય અધ્યક્ષતાનો નથી પણ હવે તો સર્વ
પરીક્ષાપ્રધાની થયા હાજ્યા છે, માટે આ
બઝારક જોઈ જો તેમ પરિશ્રદ એહિ
કર્મ પોતાનો સમય ઉપદેશ આપવામા અને
ધર્મસેવામા વ્યતીત કરશે તો લોકત્રિય થવા
સબન છે. બહારક શખ્તની વ્યાખ્યા શુ અને
બહારક કોણ કહેવાય તેટલોજ વિચાર લાગકર
કરશે અને તે પ્રમાણે ચાલશે તોજ જમ છે

હવે એક નીલ બઝારકથી અમારા અધા
વાચ્યે જોણીતા નહીં હવે કેમકે એમનુ નામ
તો જોરમે પડેલા જેણુ હતુ, પણ એમના
અનુષ્ઠાને જો જોટા ચર્ચાઓ આમને
મનગાથીજ આજે તે આગત ચોક્ક નિર્ણય
કરવાની દરજ પડે છે કરમસાદની ગાદી પર
ઉભા રત્નકીર્તિ નામે બહારક (અસર નામ
અનનતાત અને અનૈત) કેવા સનેગો વચે
કેવી રીતે બેઠેલા તેની અમને ખબર નથી,
પણ એટલુ તો જણાય છે કે તેઓ ધણુ
વૌંથી મુખધમા કામીગિજુરામા ધરખાર કરી
રહેલા છે । અને કરમસદ તરફ જતાજ નહોતા
તથા અહરથીનો વૈભવ જોગનતા હતા જેઓ
હાનગા કરમસદ જવા માગતા હતા પણ
ત્યાંના બાહ્યોએના કહેવાથી કાણીસા (અભાત)
પહોંચેલા છે તેવાનુભાગ કરના છે એમ જા
ણવામા આવ્યુ છે, જેથી જો મેનાડા સાધ્યો
સૌ મેનાડા પાણ્યોને તથા ખાસ કરી કાણીસાની
પરખે જામત થવા મૂરના પ્રે છે કે ને કદ
કરમ કરો ને સભાળાને કરશે. જેણુ સોહવાતુ
મેનાડા સુધક મકજ આ પ્રસંગે કદ જરી
ખનાડો કે ?

માધુર્યલતા (નીતિ ઉપન્યાસ)

મૂલ્ય ચાર ગાતા ।

મેન્દા, દિ. ૦ જૈન પુસ્તકાલય-સુરત ।



હન્દોરમેં તા. ૨૪-૨૫ આપાદ
શુક ૧-૬ કો મુરૈના જૈનસિદ્ધાન્ત વિયાલયની
કમેટીરા અધિનશન હોગા जिसमे स्वर्गीय प.
गोपालदासजीदा नाम स्थायी रखनेके लिये
खास कार्रवाई की जायगी ।

શ્રી મહાવીરજી તીર્થક મેલેમે
અવવલ્યા દર્શક લેલ મનાકમે પ્રકટ હુઆ હૈ
जिमके बारेमें भठारक श्री १०८ महेंद्र-
कीर्तिजी एक वाम सूचना उगावर प्रकट
करते हैं कि वाचनमें दमर्ग मेरा कुछ भी दोष
नहीं है । यह तो मैं अलग किये हुये एक
छेन्नेकी सब चालवाजी है । उसीने सब
अनर्थ बरवाया था आदि । भट्टारकजीको
उचित है कि आगामी मेले पर तीर्थका सब
हिमाच प्रकट करें और जैनियोंकी सहायता
प्रयत्नसे लेफर मेलेका सब ठीक २ प्रवच करें
जिसमें कि निगीकों टीका टिप्पणी कनरा
मौत ही न मिले ।

અજમેરસે મનાજાન વડજ્યા
લિલો હૈ કિ મના સર્વ જાતિયોકે મહાવિષાલય
મૌજુદ હૈ પરતુ લેદ હૈ કિ હમ નગરમે જૈનિયોકે
કઈ ઘનવાન મગ્યવાન મૌજુદ હૈ તો ખી એક
ખી મોડિંગ યા મહાવિષાલય નહીં હૈ । કયા
હમરે અજમેરકે ઘનાડવ મઈ હમ વિષાલયની
બાક લગ નહીં હૈવે ?



घड़नगरके शुद्ध औषधालयसे सूचना मिली है कि माँग अधिक आनेसे क्रमवार औषधियाँ भेजी जाती हैं और प्लेग तथा हैजाकी-औषधियाँ चिट्ठी व तार आते ही भेजी जायँगी ।

केशलौच—मुनि श्री चंद्रसागरजीने आषाढ वदी १३को तलवाडा (वांस्वाडा)में और ऐलक पन्नालालजी महाराजने आषाढ वदी २ को जयपुरमें केशलौच किया था ।

न्यायतीर्थ हुए—पं० बंशीधर (भुरैना), पं० जीवचर तथा पं० उमरावसिंह (काशी) अवकी वार न्यायतीर्थकी परीशामें उत्तीर्ण हुए हैं ।

धरणागांवमें अभी पंच कल्याणक प्रतिष्ठा उत्सव शोध चुन्नीलाल अंबुशा गांधीकी तरफसे हुआ था जिसमें दो स्त्रीसभा होकर श्रीमती मगनबाई, ललिताबाई, प्रभावतीबाई आदिके कई व्याख्यान हुए और २००) श्राविकाश्रम बम्बईको सहायता मिली तथा तीन श्राविकाएँ आश्रममें भरती हुई ।

मोहोल—(सोलापुर) में शा० मोतीचंद मवानचंदकी ५००) की सहायतासे औषधालय खुल गया है ।

सेठ नाथारंगजीके पौत्र सुरचंदभाईने अपनी पत्नीके पुण्यार्थ १९०) अनेक संस्थाओंको दानमें भेजे हैं ।

नई देहलीमें—कन्या विद्यालय पहाड़ी धीरज देहलीके मकानका महुतौत्तर जैनधर्ममूल्या ३० शीतप्रमाङ्गीके प्रमुखत्वमें गत ता० २ को हुआ था । इस मौके

पर ब्रह्मचारीजीका स्त्रीशिक्षापर बहुत ही प्रभावशाली व्याख्यान हुआ और करीब ४०००) की सहायता मिली । श्री कृष्ण ब्रह्मचर्याश्रमके लिये आपके प्रयाससे देहलीमेंसे २६ दिनके आहारदानके रु. ६५०) प्राप्त हुए (एक दिनका आहारदान २९) रु. में होता है ।)

राय साहय हुए—देहलीके लाला प्यारेलालजी बकील अवकी वार राय साहय हुए हैं ।

महाधवल—ग्रन्थको पुरानी कनड़ीसे बालबोधमे देवराज सेठी गृहविद्दिमें नकल कर रहे हैं ।

शोक—देहलीके रा० सा० लाला ईश्वरीप्रसादजीप्रसादजी और लाहौरके लाला मुंशीलालजी एम० ए० के वियोगसे दि० जैन समाजमें एक श्रीमान् और एक विद्वान् की कमी हो गई है ।

सिहोरारोड (जबलपुर)में लाला किशोरीलालजीका देहान्त हुआ है । आप अंतस्मय अपने हाथसे २००००) गमरय करानेके लिये लिख गये है । क्या ही अच्छा हो यदि इस २००००)की व्यवस्था करनेवाले इसका उप योग वहां ही विद्यादानमें करें !

सिंहहारा—(विजनौर)में ता० २३ जूनको जैनकुमार सभाका वार्षिकोत्सव बड़ी सूनयामसे होगा ।

प्रथम श्रेष्ठधुआर—आज ७३० ७३ शुक्रवातना वीसादुभय भाष्यभाषा यक्ष पक्ष श्रेष्ठधुआर नयेतो, पक्ष दास शुभाष्टनिवासी भाष्य रतनचंद मुनीद्वारा नवीनवा (अभाग आदेश)

ખી. એ. ની પરીક્ષામાં પાસ થયા છે જે માટે એ પ્રથમ ગેઝેટિંગને આભવદન આપી આથી પણ વધુ અભ્યાસ લખાવવા આવક કરીએ છીએ.

સુરતનો એક ચર્ચાપત્રી લખે છે કે અત્રે તામ્રહરના દશેરાનો વહીવટ હાલ મુંબઈવાસી શેઠ ડાહ્યાભાઈ ટ્રેમરંદ કરે છે જેમાં પૈસા ખર્ચવા જતાં પૂજન પ્રકાર બરાબર ચતોજ નથી. વળી કુસંપ હોવાથી સુરતવાળા તો કંઈ દેખેતે જોવાનું નથી । તો શેઠ ડાહ્યાભાઈની ફરજ છે કે સુરત આવી તકરાર હેતુ તેનો નિવેશ લાવવો જોઈએ વગેરે.

આવડાવાડા (જવાસ) માં સુરતવાળા શેઠ તમકચંદ જેસામી તામ્રવાળા તરફથી એક વર્ષ થયાં પાઠશાળા ચાલે છે જેનો ૪૩ છે કાં છોકરીઓ જાણ લે છે. અત્રે કંઈ પણ વિદ્યુત સેવાની સમયક નહોતી, જે આપી પરી પડી છે. હાલમાં જેની પરીક્ષા લેવાઈ હતી. પરિણામ સંતોષપ્રદ છે. વળી હાલમાં છોકરીઓને ઓરણીઓ તથા છોકરાઓને પુસ્તકો હાથ તરીકે લેવાયા હતા.

મેવાડા શુભક મંડળની પ્રથમ બેઠક સોહવામાં તા. ૧૨-૫-૧૭ ને દિને ભદ્રારક સરેન્દ્રોત્તીષના પ્રમુખપદે મળી હતી જેમાં મોક્ષી મનસુખલાલ બહેચરદાસ ખી. એ. એલ. ખી. તથા ડા. બાહલાલે મંડળની વિપોગિતા પર વિવેચન કરવા પછી પ્રમુખે લખાણથી જણાવ્યું હતું કે ઉચ્ચતા બાળકોના સુધારના ઉપર જ બલિષ્ઠતા આધાર છે, માટે બાળકોને કેળવવા આવા મંડળને ઉત્તેજન આપે. આ બાળકો કેળવાઈ જશે તો અમરેા માર વચ્ચે નહીં રહેશે એવો સંકેતો વિચાર ન રાખો. વગેરે બીજા દિવસની બેઠકમાં કેટલાક નવા મેમ્બરો થયા હતા તથા નિયમે પ્રદર્શા થયા. બીજી બેઠક આવશે વર્ષે અમરેા પ્રમુખે મંડળી.

ઉત્તેજિયામાં ફરી પાઠશાળા ચાલુ થઈ છે. આસરે ૪૦ વિદ્યાર્થી લાભ લે છે. ૫૦ કનૈયાલાલ ધર્મશિક્ષણ આપે છે, જેઓ ચાતુર્માસ અત્રે જ રહેનાર છે.

બહેસરથી હંચરાજ શુભાખ્યંદ લખે છે અત્રે ૫૦ પિતાંબરદાસજી ઉપદેશકના આવવાથી ઉપદેશનો મજોજ લાભ થયો છે તથા અનેક પ્રતિભાઓ લેવાઈ છે. આજ પ્રમાણે ગુજરાત. ઓરાણ પ્રાંતિજ વિભાગ, અને રાજદેશમાં આ ઉપદેશકજીને વારંવાર ફેરવવા જોઈએ વગેરે

માન અમરેા-સુરતમાં હસાદમકાલિમાં માંધી અમરતવાલ દ્વિતરંદ ખી. એ. ની પરીક્ષામાં પસાર થયા માટે દિ. જૈન પાઠશાળાના વિદ્યાર્થીઓએ એક મેસાવડો કરી તેમને માન આપ્યું હતું. જેમાં મી. સરંધા તથા શા. નંદલ-ચંદનું કેળવણી પર વિવેચન થઈ ચાક પાણી. કરવામાં આવ્યા હતા.

મુંબઈ આવિકામમને શ્રીમતીમાઈ તથા શ્રીદેવીમાઈ મારફતે ભ્રમણ દરમિયાન પાટના-ફૂવા, ખનિયોલ, ધારીસણા અને સાણોદાથી ૧૪૧) ની મદદ મળી છે.



જૈન ચાલવોધક દ્વિતીય ભાગ-

આવર રોયલ ૧૬ પેજી, પુષ્ટ સંસ્કા ૧૦૮ મૂલ્ય ૧) । મિલનકા પત્ર, જૈનમિત્ર મંડલી, નં ૨ વિશ્વકોષેન, વાગવાજાર, કટકતા । રત પ્રેક્ષકો પં ૫ પલાલોટ્ટી વાકાકીવાલને સર્વ જૈન ચાલકોને હિનાર્થે લેવાયા હૈ । કુટ દં ૦ પાટ હૈ । રવેનં કુટ મળ જન્મ પુત્તકોસે મો લિયા ગયા હૈ । મોપમે કરી ૨ અગુદિયાં રેઠ ગઈ હૈ, યન્મુ ૫ અગુદિયાં ઉન પુત્તકકો



उपयोगिता देखते हुये नहीं सी हैं। इस पुस्तकसे बालकोंको लौकिक ज्ञानके साथ २ धार्मिक ज्ञान भी अच्छी तरहसे आसकता है। जैन-स्कूलोंके प्रबन्धकर्ताओंको चाहिये कि अपने पठनक्रममें इस पुस्तकको भी रखकर विद्यार्थियोंको सदाचारी और धर्मप्रेमी बनावें।

अहिंसा परमोधर्मः—प्रकाशक बाबू दयाचन्द्रजी गोयलीय बी. ए. लखनऊ। मूल्य ८) और ५) सैकड़ा। इस पुस्तकमें महात्मा गांधीके दो प्रभावशाली अंग्रेजी लेख अहिंसा विषयपर हैं इसमें यह भली प्रकार बतलाया गया है कि अहिंसा वास्तवमें क्या है और हम सबने उसको कैसा मान रखा है। अहिंसा कायरताका उपदेश कभी नहीं देती है किन्तु अहिंसाके पालनेसे मनुष्यताका उपदेश मिलता है। प्रत्येक अंग्रेजी जानकारको यह पुस्तक एक बार अवश्य पढ़नी चाहिये। गुप्तपत्रपर महात्मा गांधीका स्वागतिश्लोक चित्र भी है। उपाई कागज आदि भी उत्तम है।

अहिंसा परमोधर्मः—प्रकाशक वही उपरोक्त बाबू दयाचन्द्रजी। यह एक ४ पेजका द्रव्यसा है। इसमें महात्मा गांधी और मिस्टर पोलकके मत जैन कान्फ्रेंस लगनऊमें दिये गये व्याख्यानोका सार हिन्दी भाषामें है। मूल्य १) सैकड़ा।

जैन गजल गुलचमन चहार—इसमें मुनि चोपमलजी महारान विरचित मिलर विषयोंपर उपदेशी गायन है। प्रकाशक, भैरालाल नौरतन बोहरा; लाखन कोटडी—अजमेर से बिना मूल्य प्राप्त होती है।

जैन धर्मके विषयमें सम्मतियां—प्रथम भाग। पृष्ठ संख्या १६। यह श्री जैन-धर्म संरक्षिणी सभा अथरोहा (मुरादाबाद) का पहिला ट्रेक्ट है। इसमें श्रीयुत मास्टर बिहारीलालजी बी. ए. ने अजैन विद्वानोंकी जैन-धर्मके विषयमें क्या सम्मति है ? संग्रह किया है। इसमें लोकमान्य तिलक, डाक्टर सतीशचन्द्र, स्वामीराममिश्र शास्त्री इत्यादि विद्वानोंकी सम्मतियां हैं। अजैन विद्वानोंको बिना मूल्य और जैनियोंको ॥॥ तथा ३) सैकड़ांमें मिलती है।

मांस और मद्य निषेध—इस पुस्तकका विषय नाम ही से प्रगट है। बांटेने लिये बहुत उपयोगी है। प्रकाशक—मुनीम नंदराम मनीराम भावसार, अंजड (वड़वानी) से बिना मूल्य प्राप्य।

जीव रक्षा दर्पण—आकार चड़ा, छठ संख्या ७६ मूल्य १) इस पुस्तकको स्वर्गीय रायसाहब ईशरीप्रसाद खंजाची देहलीके पुत्र बा. पारमदास खंजाजीने बड़े धर्मसे संग्रह किया है। इसमें हिन्दू और जैनधर्मके शास्त्र जीवदयापर क्या कहते हैं ? इसका संग्रह है। हिन्दुओंके माननीय शास्त्र, वेद, गीता, महाभारत, भागवत्, मार्कण्डेयपुराण इत्यादि और जैनियोंके ज्ञानार्णव, पुत्रपार्षसिद्धचुपाय इत्यादि ग्रन्थोंमें श्लोक, कथाएं मंत्र इत्यादि उद्धृत करके हिन्दी भाषामें यह भरी प्रार्थना दी गयी है कि प्राणीमात्रपर दया करो तथा हम पापको सर्व शास्त्र मुक्तकरके खीन कर देंगे इत्यादि। अन्य हिन्दुजो यह पुस्तिका

दना चाहिये । संग्रह कर्ता महोदयने इसका शपथ दि० जैन अनाथाश्रम दिहलीको प्रदान कर दिया है ।

रिपोर्ट—भारतवर्षीय जैन अनाथाश्रम तथा जैन एंग्लो वर्नाक्यूलर मिडिल स्कूल, देहलीकी यह सन् १९१४, १५ और १६ की रिपोर्ट है । इसमें उक्त दोनों संस्थाओंका संक्षिप्त विवरण, हिसाब और चार महाशयोंकी अग्रणीयों सम्पत्तियाँ हैं । इसमें ६२ अनार्योंका पालन होकर उनको शिक्षा दी जाती है ।

वार्षिक रिपोर्ट शुद्ध औपचाल्य—श्री दिगम्बर जैन मालवा प्रा० सभा बड़नगर । वॉर स० २४४१-४२ की इस रिपोर्टसे विदित होता है कि इस औपचाल्यकी दिनोंदिन उन्नति हो रही है । इसमें कुल १२५ प्रकारकी औपधियाँ बिना मूल्य बांटी जाती हैं । ३२० स्थानोंमें तो इसकी शाखाएं खुल चुकी हैं वहाँसे भी बिनामूल्य औपधियाँ मिलती हैं । औपचाल्यकी सहायता करनेके लिये चार आनेसे १०० तककी खुबसूरत रिफ्ट सैदास की गई हैं जिनको हरकोई खरीद सकता है । इसके मुखपृष्ठपर औपधियानका फलरूपी वृत्तचित्र भी है । हर एक व्यक्ति का कर्म है कि इस परमोपकारक संस्थाकी हर प्रकारसे सहायता करे और आवश्यकता पड़ने पर इससे शुद्ध देसी औपधियाँ मंगाकर ही उपयोगमें लेवे । यह ९८ पृष्ठकी रिपोर्ट पत्र दियानसे मुफ्त मिलती है । पता—दि० जैन मालवा प्रांति सभा कार्यालय, बड़नगर ।

प्रतिष्ठासरोव्वार—प्रकाशक और

अनुवादक पं० मनोहरलाल शास्त्री, जैन ग्रन्थ उद्धारक कार्यालय, हौदाबाड़ी—गिरगांव, बम्बई । पं० आशाधरजी विरचित इस ग्रन्थमें प्रतिष्ठाका विधान संक्षिप्त भाषानुवाद सहित भले प्रकार दिलाया गया है । इस ग्रन्थके प्रकाशित हो जानसे अब प्रतिष्ठादिका कार्य भले प्रकार सम्पन्न हो सकेगा । इसके अभावमें प्रतिष्ठाकारक इच्छानुसार विधानादि करते थे । इस ग्रन्थके प्रगट हो जानेसे जैनसंसारकी यह कमी मिट गई । अब प्रतिष्ठादिक कार्य इसी ग्रन्थानुसार होना आवश्यक है । डबल पृ० सं० १४२ मनोहर पत्रकी जिल्द और मूल्य २) प्रकाशकसे प्राप्य ।

मेरठ जैन बोर्डिंगका रिपोर्ट—

प्रकाशक बाबू कदमदास बी ए० वकील, मंत्री । सं० २४४१-४२ के इस रिपोर्टसे विदित होता है कि बोर्डिंग और स्कूलका काम अच्छा चल रहा है । बोर्डिंगके लिये स्वतंत्र बड़े मकानकी खात आवश्यकता है ।

जैन कुमार सभा आगरा

प्रथम द्वि० रिपोर्ट—इस सभाने दो वर्षके अर्धमें अच्छा कार्य किया है । कुल १२ सभाएं हुई थी । इसकी तरफसे पुस्तकालय और पाठशाला भी चलती है । मंत्री बाबू नौरंगीलालजी उत्साही और परिश्रमी होनेसे यह सभा सबिष्यमें इससे भी बहुत कुछ उन्नत दशा पर पहुँचनेकी आशा है । आगराप्रान्तके जैनी भाइयोंका कर्म है कि इस सभाकी हर प्रकारसे सहायता करें ।

जैन मार्तण्ड—वर्ष १ अं. ६-७

प्रकाशक जैनवाल्मजी—हाथरस । वार्षिक

मूल्य १॥) इसमें स्वाध्याय, हमारी उन्नति, वर्ण व्यवस्था, आदि खेल और कविताएं पढ़ने योग्य हैं। छपाई सफाईपर विशेष ध्यान देनेकी आवश्यकता है। हर एक जैनको ग्राहक होना चाहिए।

जैन समाज—वर्ष १ अं. २ पृ.
४८ वार्षिक मूल्य उपहार सहित सिर्फ १)
सम्पादक और प्रकाशक श्रीभुत टेकचन्द्र सिंघी
जी. ए. । यशविप्रकाशक/प्रकाशक श्रे. स्था. जैन
हैं तो भी इस नवीन हिन्दी मासिकपत्रमें सर्व जैनो-
पयोगी लेख हैं । ख्रियोंकी आधुनिक दुर्दशा-
दर्शक लेख बहुत ही उपयोगी है । नहां तक
हो हरएक लेख पूर्ण ही छपना चाहिये ।
सभी जैनोंको प्राहक होने योग्य है । नमूना
मुफ्त मिलता है । पता—सम्पादक, जैन समाज
धर्म्यह नं. २ ।

वैष्णव धर्म प्रताका—गिरगांव, बम्बईसे प्रकट होता हुआ इस मासिक पत्रने गोदेही असेमें खूब ही कार्य कर दिखाया है। इसके सम्पादक पं० माधव शर्मा बहुत ही उत्साही हैं। हिन्दी और गुजराती दोनों भाषामें अलग २ प्रकट होता है। यह बड़ा अंक तो बड़े सतव्यसे विमर्शांक रूपमें प्रकट किया गया है निम्नमें गो० देशकीर्तनदजी भट्टाराजके अलग २ अवस्थाके १ चित्रके अतिरिक्त और भी कई चित्र हैं। छपाई सफाई उत्तम और पृ. सं. ७२। वैष्णव संप्रदायवाचकों लिये यह प्रताका बहुत ही उपयोगी है परंतु इसकी कार्य प्रणाली तो हर एकको देखने योग्य है।

શ્રીસુખ દયજી (આવિકા) - ગુજરાતી
બાંધાનું ભીષાપયોગી નવીન સચિત્ર માસિકપત્ર
પુ. ૧ અને ૧-૩ વાર્ષિક ફી ૩) પ્રકાશક
દેવચંદ દામજી શાહ ભાવનગર. આ સચિત્ર
માસિક તદ્દન નવી રચના ઉપર પ્રકટ કરવામાં
આવ્યું છે. એટલેકે લગભગ દરેક લેખ સચિત્ર-
ન પ્રકટ થાય છે તેમ કેટલાક લેખો શ્રીઓને
હાથે લખાય છે. એમાંના ચિત્રો સામાન્ય નહિ
પણ લેખનો ગાય દર્શાવનારા ખાસ તેવા
કેસો હોય છે જે વાંચવાથી વાંચકને રસ પડવાં
ઉપરાંત તે લેખની સચોટ અસર થાય છે.
નૈત કે અનૈત દરેક શ્રીએ આ સચિત્ર
માસિકના આદક થવું જોઈએ. પણ સંખ્યાના
પ્રમાણમાં લવાજમ વધુ જણાય છે તેથી ખર્ચો
ચિત્રોની ઉપયોગિતા તરફ જોતાં તે કંઈ વધારે
ન રહેવાય. આ નવીન સાહસની અનો દરેક
રીતે ફતેહ ખુલીએ છીએ.

કચ્છી જૈનચિત્ર (સચિત્ર) વર્ષ ૧ આ-૧
વાર્ષિક ફી ૨) આ નવીન ચિત્રાતી માસિક
પત્ર સર્વે કચ્છી જૈન બાદશાહના ઉપયોગમાં
પ્રકટ કરવામાં આવ્યું છે. છપાઈ સદાકાલ ઉત્તમ
તેમ લેખો પણ સમયાનુસાર પણજ ઉપયોગી
છે. દરેક લેખની સાથે લેખકનો ફોટો છે તથા
ખાનગું ફેરફાર મિત્રો છે. તેમ સુખદાઈ પણ
આકર્ષણીય છે. દરેકે આ અંક જોવા સાચક છે.
સુમુદ્રવાદ્યે કાવ્યમાલા-શ્રીયુત ચિત્રાતી
આવૃત્તેન સાદુ ધુણીયા (ખાનદેશ) ફત્ત મલ્લેનો
મંત્રક. અડધાઆનાની ટીકોટ ખીડવાથી એમ
નીજ પાસેથી મફત મળે છે.

મહાબીર જૈન પુસ્તક ભંડાર, પાકિસ્તાન
તથા બોટાંગ પોરાણ (કાશિપવાસ) ના પાસે
ધારજી તથા દિસાળ મઝ્યો છે. સીમુત વનેમદ
પેષટ દક્ષતરીને વ્યા પ્રધાસ આપ્તમ છે.
પુસ્તક ભંડારમાં સારા સમદ થાઇ રહ્યા છે.

શ્રી વૃદ્ધિવંદ્ય લેન સલા (ભાવનગર)
ના પત્રોએ તમારો *Truly Maxima of*
Lord Mahavira નામે પ્રેમ મળી છે ને
આપાર સ્વીકારીએ છીએ.



शेष शक्ति ।

मुझे उस दिनकी यह एक बात स्मरण हुई कि मुझे बड़े बेगसे ज्वर चढ़ा है, मस्तिष्कमें असह्य पीड़ा है और मेजपर जो दीपक रखा है उसकी ज्योति बहुत मन्द है, ठीक उसी समय कहींसे मुझे चूड़ियोंकी झनझन आवाज सुनाई दी, मैंने समझा कि मेरा भाई ननि शायद बाजारसे चूड़ी आदि लाया होगा, किन्तु जब जग ध्यानसे देखा तब मालूम हुआ वह नहीं है, वह तो कोई और ही है; उस समय तक मेरा मस्तिष्क ठीक नहीं हुआ था। मैंने कहा कौन है ?

किन्तु उत्तर नहीं मिला, सिरके पास कोई धीरेसे आकर बैठ गया, मैंने फिर पूछा 'कौन है ?' इस बार वह मेरे सिरके समीप आकर बोली 'मैं-वह'।

अब मुझे मालूम हुआ कि मेरी स्त्री हेमलता है, मैंने धीरेसे उसके दोनों हाथों-को खींच कर अपने माथे पर रख लिये मैं, अत्यन्त विश्वासके साथ, अनाथ बालकके समान, उसकी कोमल अङ्गुलि योंको, अपने बालोंके मध्यमें तापत्रयहारिणी औषधिके सदृश अनुभव करने लगा और जैसे अन्त्यकारमें चन्द्रमाकी किरणें प्रवेश करती हैं वैसे ही उसके मनकी सब कथायें इन भेङ्गुलिओंके द्वारा मेरे मनोमन्दिरमें प्रवेश करने लगीं।

कुछ समयके बाद जब मैंने अपनी

* प्रकाशनीमें अनुवर्तित एवं परिवर्तित ।

प्रकाशक ।

आँखें बन्द कर ली तब मुझे मालूम होने लगा कि प्रभातीय दीप्तिमय शुक्र ताराके सदृश, वही मेरे माथेके ऊपर गंभीर सरल्लण, सनीर और काजलसे पूरित नेत्र, ज्योतिमय तारावलीके सदृश प्रेमकी लाल २ और स्निग्ध किरणोंको छिटकानेवाली; वही सोदागिन श्रीका चिद्रस्वरूप मेन्दुरकी लम्बी रेखा, उसकी लाल पाद साड़ीकी लम्बी और रक्त धारियाँ, उमके कोमल कपोल पर स्थित काला नित्र और उसके मुखसे निरलनेवाली सुगन्ध वायु उन्वादि उमकी समस्त वस्तुयें मेरे निकट है। उस दिन मुझे उसके पैरका अंगूठा तक भी मनोहर मालूम होता था किन्तु उसकी समस्त वस्तुओंकी अपेक्षा मुझे उसकी सेन्दुरकी स्वच्छ और लाल रेखा अत्यन्त मनोहर मालूम होती थी क्योंकि वह केवल मेरे ही कारण बनाई गई थी, वह केवल मेरे ही अन्तरङ्गका रङ्ग था, और वह केवल मेरी ही गुप्त सम्पत्ति थी।

मैं उसकी सेन्दुरकी रेखाको कभी न भुलूंगा और न मैं अपने हृदयके रंगसे रंगे हुये उसके कोमल चरणों ही को भुलूंगा क्योंकि उसके ऊपर ऊपर हिलने डुलने और मेरा हाथ उसके पैरों पर लग जानेके कारण जिन दोनों पैरोंको, वह आज अत्यन्त संकोच के साथ छिपाये थी, वे (पैर) ज्यों ही मुझे मालूम पड़े, त्यों ही वह शीघ्रतासे उठकर मेरों पैरों पर प्रणामार्थ अपने मस्तकको झुकाया और जिस प्रकार सूर्यास्तके समय सूर्यकी अग्निम लाल किरणें, पर्वतोंके

शिखरोंको चूमती है उसी प्रकार उसके लाल २ ओष्ठोंने मेरे पैरोंको चूमा । उस समय मेरे पैरोंको उसके मुखकमलने भन्नी प्रकार छिपा लिया था ।

कुछ देरके बाद उसको मैंने अपनी क्रीड़ाकी सामिथी समझकर, उसके हाथोंको अपने माथेसे उठा लिया और अपनी छाती पर रखकर उसकी कोमल एवं पतली २ अंगुलियोंको गिनने लगा, कुछ समयके बाद मैं उसकी चूड़ियोंको वजाने लगा और फिर उसके रक्त नखस्थानों पर अंगुलियां फेरने लगा । उस दिन वह ऐसी हो गई थी, मानों उसने अपनेको मुझे सौंप ही दिया हो, इसी लिये आज वह कुछ नहीं बोली । वह मेरे नेत्रोंके सन्मुख अत्यन्त विश्वास और निर्भरता..... ।

उसने अपने हाथोंको मेरी छाती परसे कब उठा लिया, यह मुझे बिल्कुल नहीं मालूम । अतएव आज मैं अन्य दिनकी अपेक्षा प्रातः काल शीघ्र उठा, आज मेरा शरीर भी कुछ अच्छा था, किन्तु वह मेरे सिरहाने नहीं है । है क्या ? एक तार, मैंने शीघ्रतासे उसे उठाया और पढ़ा कि:-
‘हेमलता परसों रात्रिको भर गई ।

अनुवादक-

जुगमन्दरलाल ।

पुत्रीको माताका उपदेश

(ससुराल जाते समय)

विवाहादि प्रसंगोंपर बोलने योग्य, पृ० ४०
मूल्य सिर्फ १-॥ और १) सेकडा ।

मैनार, दि० जैन पुस्तकालय-मृत.

सुधारकोंका नया आन्दोलन ।

आज मुझे विधवा विवाहके पोषकोंसे यह पृष्ठना है कि क्या वह यह बतानेकी कृपा करेंगे कि जिन कारणोंके रोकनेके लिये विधवा-विवाहका आन्दोलन किया जाता है (अर्थात् व्यभिचार, भृणहत्यादि पाप । वे उन देशोंमें भारतवर्षसे ज्यादा ज्यों पाये जाते हैं जहाँ कि इस प्रथाका प्रचार बड़ी अनर्गलतासे प्रचलित है । क्या ये प्रमाण इस कथनकी पुष्टिके लिये अकाट्य नहीं है कि विधवा-विवाह इन पापोंको रोक नहीं सकता परन्तु इससे दूने बढनेकी समावना है । महाशयो ! युक्ति, प्रमाण, शास्त्रीयवार्तव्य, ऐतिहासिक प्रमाण सम्मुख लाइये कि जिसका उत्तर दिया जाय, अपने मत पोषणार्थ झूठी २ आतंघायिकायें बना बनाकर तथा झूठी झूठी कारणिक घटनाओंको लिख लिखकर भोले लोगोंको भडकानेसे कार्य सिद्धि नहीं होती । यह तो कायोंकी बात है । ऐसे मिथ्या कारणिक चित्र खींचकर किसी कुमय्याके प्रचारके लिये प्रयत्न करना घोरानघोरपाप है । दूसरा यह कथन कि बिना अपम्यामे स्त्रियोंको घोर दुःख होता है यह तो ठीक ही है, जब उनका आगम्य देवता ही नहीं रहना तो दुःखकी कौन बात । परन्तु यह दुःख, असत्य नहीं कहा जा सकता, जिन्होंने उद्यमक्रमेण नग्न लिया है उन्हें इन आत्मोत्सर्गका पाठ बाल्यावस्थासे ही पढ़ाया जाता है और, परीक्षाका समय आनेपर वे कभी रागर नहीं होती, यह हम



नरुह कहेंगे कि उन शिक्षाओंका अभाव समासे हो रहा है । अतु हमारा रुज्य है कि हम उन पूर्ण शिक्षाओंका पुनरुद्धार कर दें कि पुन हिन्दुओंके गृह एकरा स्वर्गगृह हो उठे न कि हम उनको नरुगृह बनानेका प्रयत्न करें । दूसरी बात यह कि विवाह होनेके जो मुख्य कारण हैं अर्थात् बाल्यविवाह अनमेल विवाहादि, उन्हें रोकनेका प्रयत्न करें न कि एक ऐसी प्रथाका प्रचार करें कि समाज और हिन्दुओंकी पवित्रता ही जाती रहे । तीसरी बात यह है कि यदि जो विधवा ब्रह्मचर्य धर्म पालन नहीं कर सकती और उनको दूसरा विवाह कर लेना ही अभीष्ट है तो प्रत्येक समाजमें उनके लिये स्थान मौजूद ही है और इसका विधान भी है ही, नवीन प्रथाकी तथा आवश्यकता है फिर किसीका यह कहना कि उन्हें नीची दृष्टिसे न देखना चाहिये तो कहना होगा यह नहीं हो सकता क्या आप कहना चाहते हैं कि उनको और विवाह ब्रह्मचारिणियोंको एक दृष्टिसे देखें ? यह कैसे सम्भव हो सकता है और क्या यह न्याय है ? कदापि नहीं तथा इस विधवाविवाहके विधानकी क्या आवश्यकता है ? आवश्यकता उस विषयके विधानकी हुआ करती है जो विषय उत्सर्गमार्ग (राजमार्ग) हो, सो राजमार्ग तो यह विवाहविवाह हो नहीं सकता क्योंकि राजमार्ग तो उच्चमार्ग ही हो सकता है नीचमार्ग राजमार्ग नहीं होता जैसा कि पहिले तो विधान ब्रह्मचर्यव्रतका ही

होगा उसके अतीचारोंका नहीं । नीचमार्ग ही अपवाद मार्ग होते हैं इसके बहुतसे प्रमाण दिये जा सकते हैं । अतु विधान तो विधवाओंके लिये ब्रह्मचर्यका ही होगा जिनसे न रहा जाय वे पतित हो कर अन्य विवाह भी कर सकती हैं इसके लिये समाजमें आकाश पाताल एक करनेकी क्या जरूरत है यह नियम तो आदिकालसेही चला आता है फिर यदि इस पर भी यह कहा जाय कि विधवा अपनेको नीच मानना कबूल न करेंगी तो फिर इसका उत्तर यही होगा कि यदि कोई सदा स्त्री यह कहे कि मे नीच तो होना नहीं चाहती और विवाहिन पतिसे मेरी तृप्ति नहीं होती तो क्या समाज या विधवा विवाह पोषक महाशय उसे भी ५-१० पति करनेके लिये कोई तजवीज निकाल देंगे ?

अब रही यह बात कि विधवाओंके साथ बहुत कठोर व्यवहार किया जाता है । यह कल्पना बिल्कुल निर्मूल है । यदि किसी एक खास घरमें कोई बात होती हो तो समाज उसका लक्ष्य नहीं बन सकता । लेखकका स्वयम् अनुभव है कि हमारे यहाँकी हिन्दू-विधवायें बड़ी उन्नी दृष्टिसे देखी जाती हैं, हा, यह अवश्य है कि गृहस्थके किसी ऐसे कार्यमें कि निममें भोग विलासका महत्व ज्यादा हो, हिन्दू विधवायें भाग नहीं लेती, जैसा कि विवाहादि कार्य, उनका अधिकार धार्मिक कार्योंमें ज्यादा रहता है । और यह उनके पत्रके मर्मका अनुकूल ही है, क्योंकि



વહ લોગ ગૃહવાસિની વ્રણચારિણી હૈં, અવ રહી
યહ બાત કિં इतना होते भी जो कुछा कुकर्म
पर ही कमर बांध ले तो उसके लिये तो
कोई उपाय ही नहीं हो सकता ।

વિવવા-વિવાહકે પોષક લેલકો ! સમસ્ત
સમાજ તુમ્હેં સ્વાર્થાન્વ સમગ્ર રહી હૈં; સમાજ
સમગ્રતી હૈં કિં તુમ ઘોર સ્વાર્થપરતાવશ સમા-
જકો ઘોર કુમ્મીવાક્યમેં ડાલના ચાહતે હો ।
યદિ યહ બાત અસત્ય હૈં ઓર તુમારા હૃદય
સચ્ચી સમાન હિતૈપિતાસે દ્રવિત હુઆ હૈં તો
સત્યતાકે લિયે સમાજકે સામને તુમ્હેં શપથ
પૂર્વક કહના હોગા કિં હમ નિર્દોષ હૈં, નહીં
તો યહ અદમ્ય કલંક તુમ્હારે સિરસે કમી
ન હૈંગા ।

જૈન સમાજકા એક સચ્ચા હિતૈષી ।

अदिपुंरुण ग्रंथः

→ ॥ पूरा छप गया ॥

જો ભગવજ્ઞિનસંનાચાર્યકૃત
મહા ભારી ગ્રંથ મૂલ સહિત સરલ
હિંદી ભાષામેં યહુત દિનસે છપ
રહા થા વહ પૂરા હો ગયા । મોટે
ઔર મજબૂત કાગજપર મહે ટાઇપ-
મેં મુલે પત્રોંપર છપા હૈં । ન્યોછાવર
અમી ૧૬) સોલહ રૂપયે હી રક્ષી
હૈં । ડાકલર્ચ અલગ લગેગા । જિન્હેં
ચાહિયે હે શીઘ્રતાસે ઝેંગા લેવેં ।

लालाराम जैन

महाराज-हंदौर.

આપણી સ્થિતિ સુધારવાને
ब्रह्मचर्यानी जरूर.

(લેખક-હાથાચંદ માણિકચંદ, રોનાસણ)

આપણે આર્યશોદ્ધે પૂર્વે અપાર શરીરબળ
વાળા હતા, એકું જૈનમથો તેમજ મહાભારત,
પુરાણ વગેરે ઇતિહાસના યથોચો આપણે
જાણીએ છીએ. ૧૨ ચક્રવર્તી, ૯ તોરાણ,
૯ બધમદ, ચંદ્રગુપ્ત, મહાવીર વગેરેનાં બળનાં
વર્ણન વાંચી આપણે ચકિત થઈએ છીએ.
આવું અપાર શરીરબળ હોવું એ શરીરની
મોટામાં મોટી ચઢતી છે. આવું અપાર શરીર-
બળ એક કાળે આપણે મેળવી શકીએ તેમ નથી.
આર્યપ્રજાતું એ અપાર શરીરબળ અનેક દુરા-
ચરણોથી ઓણું થતાં થતાં, આંગના જેવું
જનાનખાની બળ થવામાં જેમ હમણે વધ
વહી ગયાં છે, તેમ આપણી રહેણી કહેણી
સુધારતાં વધતાં વધતાં તેવું પૂર્ણ બળ થવામાં
તેજલાંજ વર્ષ જમાની જરૂર છે. આપણે આ-
પણું શરીર સુધારીએ તો આપણી હવે પછીની
પ્રજા આપણા કરતાં વધારે બળવાળી થાય,
તે પ્રજા પાછી પોતાનાં શરીર સુધારે તો તેની
પ્રજા તેથી અધિક બળવાન થાય, એમ વધતાં
વધતાં શિખરે ચઢાય, તેથી પૂર્ણ બળ મેળવવામાં
અત્યંત ધીરજ અને પ્રયત્નની જરૂર છે.
જે ઉપાયો વડે આપણાં પ્રાચીન આર્યોએ
શરીરતું પૂર્ણ બળ મેળવ્યું હતું, તે ઉપાયો
જે આપણે પણ સેવન કરીએ, તો આપણું
શરીરબળ વધવાનો સંભવ આવે, માટે તે
ઉપાયો ક્યા ક્યા હતા તે વિશે હવે આપણે
નિચાર કરીશું.

આપણું શરીર સાત ધાતુઓમાં બનેલું
છે જેવી કે-૧ રસ, ૨ કષિર, ૩ માંસ, ૪
મૂત્ર, ૫ મેદ, ૬ અરિધ, અને ૭ વીર્ય. આ
સાત ધાતુઓમાં આપણી ૨૯ વર્ષની ઉંમર
સુધીમાં વધારો થતો જાય છે, અને પછે વયે
શરીર પૂરેપૂરું અધાઇ રહે છે. ત્યાર પછી ૬૦



વર્ષની ઉમર સુધી શરીર રક્ષણનો અથા નિયમો પાળ્યા હોય તો તે બધાયણું શરીર તેવું ને તેવું જ કાયમ રહે છે અને પછી તેમાં ક્ષીણતા થવા માડે છે, જે ધીરે ધીરે વધતાં સો વર્ષે આ શરીરનો નાશ થાય છે. ૨૯ વર્ષની ઉમર સુધી શરીરમાં જે ગતતી ક્રિયાઓ ચાલતી રહે છે—એક શરીરમાં ચાલતા ધસારાની ખેડ પુરી પાડવાની, અને બીજી દરેક અવયવને પૂરેપૂરે ખીનવાને માટે તેને વધારવાનું યોગ્ય આપતા જવાની, આ કારણથીજ બાળકોમાં અને જુવનનોમાં યુષ્કળ ચાલ્યાકી હોય છે. ૩૦ વર્ષની ઉમર પછી શરીરમાં પડતો ધસારો નેટલુંજ નવું યોગ્ય શરીરમાં ઉત્પન્ન થતું રહે છે. અવ્યયો પૂરેપૂરો બધાજ ગમ્યેલા હોવાથી નવું વધારાનું યોગ્ય શરીરમાં ઉત્પન્ન થતું નથી, અને યોગ્યને ઉત્પન્ન કરનાર જરૂર વગેરે યત્રોની શક્તિ નિત્ય કામ કરનાથી ઓછી થાય છે અને ૫૦ વર્ષ પછી ધસારાની ખેડ પુરી પાડવા નેટલું યોગ્ય શરીરમાં ઉત્પન્ન નહીં થતું હોવાથી શરીર ધીરે ધીરે ક્ષીણ થતું જાય છે.

૨૯ વર્ષની ઉમર સુધી શરીરનું બંધારણ થાતી ક્રિયા શરીરમાં ધમધોડાર ચાલતી હોય છે, એ શરીરચાલના નિયમના જાન-શીજ આપણા પ્રાચીન આર્યોએ ચોતાના શરીરને અત્યંત બળવાન કર્યું હતું. એ જાન વહેજ તેઓ ૨૯ વર્ષ સુધી શરીરને વધારવાના કરતેતા આ પ્રયત્નને મદદ કરી શરીરમજની ઉંચામાં ઉંચી સ્થિતિ મેળવના હતા અને કુદરતની સામે ધમ શરીરને બળવાન કરવા ઇચ્છનાર બધી મહેનતે પણ શરીરને બળવાન કરી શકેતા નથી. જેમકે સામા પ્રવાહે નાવ ખેડનાર યાત્રી મગ વાપરના છતાં પણ ઓછો માર્ગ મેળવે છે. કુદરતના નિયમથી શરીરનું બંધારણ બંધાઈ હોય, તે વખતેજ તેના નાશ થાય એવો ઉપાય કરવાના આવે તે તે કુદરતનો સામે થવાનો પ્રયત્ન કર્યો મજબૂત છે અને તેનો પ્રયત્ન કરનારનું શરીર કોઈ દિવસ પથ

નેમણે તેવું બંધાતું નથી. આ નિયમને જાણનાર આપણા પૂર્વ આચાર્યો તેમજ મુનિ-ઓએ શરીરનું બંધારણ બધાવવાના સમયમાં તે પૂરેપૂરું બંધાઈ રહે માટે જલ્દયથ આ-અમો ટેકાણે ટેકાણે ઉધાડ્યાં હતાં, પરંતુ આજે આપણે આ આશ્રમેને છેકજ વિસારી દીધાં છે. આપણાં બાળકોના ઘણે રથને બાર કે પંદર વર્ષની ઉમરથી જલ્દયથનો ભંગ થાય એવા ઉપાય આપણે આપણા હાથે યોગ્ય દીધા છે. આપણાં બાળકોના કુમળા શરીર રૂપી ઝાડ ઉપર કુદાડાના ધા મારવા આપણે શરૂ કરી દીધા છે. શરીરમાં હજી તો વીર્ધનું બંધારણ બંધાવવાનું શરૂ થયું હોતું નથી એટલામાં તો આપણે તેના કષયનો રસ્તો મોકળો કરી આપીએ છીએ. તજાવમાં પહેલા વરસાદનું પાણી હજી આવ્યું નથી, એટલામાં તો પાણીને જેમ ધમ જવાના પાતાળી જુઓએ આપણે રચી મુકીએ છીએ. કીરી કુંથુના સરખાને પણ ધન ન કરવાનો ફાંકો રાખનાર અને અહિંસા પાળવાનું મિથ્યા અભિમાન ધરનાર આપણે, આપણાજ બાળકોના કામગી મળાં ઉપર છરી મુકીએ છીએ. ગોઠવ્યા કરનાર ધાતકો મનુષ્યોને નોંધ આપ્યુંને કંધારી છુટે છે, પણ આપણા ગાયથી પણ અધિક નિંદોષ બાળકોની આપણા હાથેજ હત્યા કરતાં આપણે કંધારી છુટતી નથી કે લગ્ન આવતી નથી. ઉગ્રી તેની હત્યા કરવામાં આનંદ મળી આપણે મ્હોટા વરસાડ કાઢીએ છીએ અને આતો જમાડીએ છીએ. ખીનખોના જીવ લેનારી રાક્ષસી સ્વભાવની જગત્તી પ્રજાઓ જન્મતા હજે, પરંતુ ચોતાનાજ બાળકોને રીઆઇરીઆઇને મારે એવો સાધનો રચે આપનારી, નિંદ્યતામાં રાક્ષસોને પણ દમર મારે એવી છેક દલદી દસામાં આવી ગમેલી આપણી હાલની આર્ય પ્રજા જેવી પ્રજા જનાવરોની સહિમાં પણ જગત્તી સંલગ્ન નથી.

કુદરતના કાપદાને તોડનાર કોણું જીવી જાય છે તે દેહમાં હાય નાખનાંજ હાય ઉપર



દેશા ઉઠવાની ચેતવણીને ન ગાંઠતાં દેવતામાં અપલાવનાર કોણુ રાખ થયા વિના રહે છે ? ૨૯ વર્ષની ઉમરે પાકું શરીર બધાયા વિના ગૃહસ્થાશ્રમનો આરંભ કરવાથી અનેક જાતના રોગો થવા છતાં હાડ પાંસળા દેખાય એવાં હાડ પિંડરોના સંગ્રહસ્થાન જેવી આપણી પ્રજા થવા છતાં અને આખી દુનિયાની પ્રજાઓમાં નપુંસક યૌગમાં ગણાવા છતાં પણ હજી આપણી આંખ ઉઘડતી નથી. આપણા બાળકોના કલ્યાણનો આપણે વિચાર કરતા નથી, તે પછી આગળ ઉપર આપણી આંખ પ્રગટ નામ નિશાન પણ ન રહે, એવો વખત આવે એમાં શું નવાઈ ?

રોજકીય જાગૃતિ આણવાનો યત્ન કરવાનું જ્યાં ત્યાં વિદ્વાનો તરફથી કહેવામાં આવે છે. દરવર્ષે રાષ્ટ્રીય સભાઓ ભરાઈ લાખો રૂપિયા ખર્ચવામાં આવે છે. જૈનેતર કોનફરન્સો ભરવામાં લાખો રૂપિયા ખર્ચાય છે. સેકંડરી વર્તમાનપત્રો દરરોજના અઠવાડીએ દેશની સુસ્તી ઉરાડવાને પોતાનાં પાનાં ભરે છે. કસા-યલા વિદ્વાનોના હાથે વર્ષ દહાડે હજારો નવીન યાત્રા ભાષાના તરજુમા રૂપે પુસ્તકો બહાર પડે છે. લાખો રૂપિયા પાઠશાળાઓ, ચાનશાળાઓ, વ્યાયામશાળાઓ અને એવાં અનેક ખાતાઓમાં ખર્ચાય છે. નાટક મંદળીના માલિકો ઐતિહાસિક જનાવને જાહેરમાં મૂકી ઉપરનાં કારણો યોગ્યતા પૂર્વક સુનન્દા એંજીરો પાસે ભજવી જતાવે છે. મોટા મોટા વક્તાઓ મોટાં મોટાં બાપણો કરી આપણામાં દેશોભિ-માન ઉપજાવવા પોતાના અપાર ભુદિ બળનો ઉપયોગ કરે છે, પરંતુ સાત દહાડાની અખંડ દેલીમાં પલ્લેલા લોકડાના મોટા દગલાને એક ચણુગારી દેવતાથી સંગમવાવનો પ્રયત્ન જેમ નિષ્ફળ નવું છે, તેમ વીર્યના હાથથી સત્વવિનાની યજ્ઞ ગયેલી આપણી મુડદા પ્રજા ઉપર કશી ખસર જતી નથી. વીર્ય વિનાના શરીરમાં મન પણ નીકળવાનું રોગચાળું યજ્ઞ નવું દે-

વાથી આપણી રોગી મનવાણી પ્રગટે જે જે એક નિશ્ચયો સમગ્રવત્ આપણા દેશહિતેનુ- જો પ્રયત્ન કરે છે, તે તે સર્વે નકામો જાય છે. દેશના હિત માટે તનનો ભોગ આપવા, હૃદયને વીધી નાંખે એવી વાણીમાં ભોધ આપવામાં આવે છે, આર્થ પ્રગટે સાંભળે છે. પોતાની દુઃખી અવસ્થા જોઈ દુઃખી થાય છે. પણ તે ટાળવાના ઉપાયો કરવા તેનામાં ઉત્સાહ પ્રકટતો નથી. શી રીતે ઉત્સાહ પ્રકટે ? બાર મહિનાથી ખાટલે પડેલાં, પક્ષધાતથી રોગી બેલા રોગીને તમે પક્ષધાત ટાળવા, શરીરમાં લોહી વેગથી ફરતું કરવા માટે, કસરતને ઉપદેશ આપો અને તે તેને ખરો લાગતો હોય પણ ખાટલામાંથી ઉભાજ થવાનું હોય અને ખાટલામાં પડ્યા પડ્યા પંજું હાથ મૂકી લાવી શકાતા ન હોય તો તે બિચારો રોગી કસરત શું એના કરમની કરે ? રોગ ટાળો, તેના સાંધા હાકી ચાકી શો એવું કરો અને પછી તમારા ઉપદેશની અસર તેના ઉપર થયા વિના, નહિજ રહે. ઉત્સાહ વિના કોઈપણ કામ સારું થઈ નથી. અને ઉત્સાહ શરીરના બળ વિના આવતોજ નથી. આપણી પ્રજાનું શરીર બળ વધે એવા ઉપાય કરો. શરીરબળ વધવાથી મન બળવાન થશે, મન બળવાન થવાથી ઉદ્યોગ, ઉત્સાહ, વાત્સલ્ય, અને સ્વદેશ પ્રીતિ વગેરે અસંખ્ય શુભો એની મેળેજ ઉત્પન્ન થશે; અને જેમ સુકાં લાકડાંમાં એક ચીણુગારી પડતાંજ ભડકો થાય છે, તેમ બળવાન વે આર્થ પ્રગટનાં અતઃકરણરૂપી સુકાં લાકડાં સડનાં બોધરૂપી ચીણુગારી પડતાંજ પ્રગટ થઈ સધળા દુર્ગુણોનો નાશ અને આ દેશની પડતી રૂપ દારણુ અપા-ટણી જશે.

* આકાશ - બ્રહ્મચર્યનો જાગ, એટલે કે વર્ષની ઉમર થતાં પડેલાં પુત્રોને કમમાં મજાનાં છાંન્ધામણના પિના ચાલે



અત્યંત અઘડોત ઉદય આરંભે, એ આપણા સરીરના વિનાશનું પ્રથમ દર્શણ છે. આરંભ દર વર્ષની ઉમરમાં બાળકને મૃદસ્થે બનાવી હાલમાં બગવાતાં નોટકામાં વેપ લઇને આવતા ફગામર વર્ષના બાળકને ત્રીસ આલીશ વર્ષના દેશિકદ ને તારામતિ કે, જગદેવ ને વીરમતી બનાવીને, શરીરમાં બીધે બંધાવાતું ચિન્હ ને મળતું કુટુંબ, તેની રૂપાંતરી સરંખી પણ દેખાયા પડેલાં, આપણે આપણાં બાળકોને રોગની શાળામાં બેસાડીએ છીએ. માણસની, જાળ-મોથી કાઢીને વંદની જાળમાં શાખત થવાને સમપણુનો સંસ્કાર કરીએ છીએ અને શરીર મન તથા હૃદયરૂપી બળવાન કિલ્લાને તેડીને ચુરેચુર કરી શકાય એવી સુરંગ બરવાની ક-જાને શીખવીએ છીએ અને આ પ્રમાણે કરી આપણે આપણી દરજ બળવી જાણે રાજ યજ્ઞ આપણા મનથી આપણને મોટા ભાગ્યશાળી ભાવીએ છીએ.

પાકાને રોગ અને પખાલીને રામ દેવા જેવા, દેશની ચક્રેતીના આશ્રમવળા ઉપાયો સા માટે કરવામાં આવે છે તે સંગમનું નથી. બીજાં સર્વે ઉપાયો દામના છે, પણ તે પડી કરવાના છે; હવે ખોદવા પહેલાં, પાણી કાઢવાનું દોરકું અને ઘડો મહેનત કરીને આપણાં, પણ ક્યા ખોદવા વિના તેને શો ઉપયોગ ? અણેણ અનાજ અનાનું દોષ એવા નજાના જરૂરને બળવાન ક્યા વિના ખાતા ખારે જાત જાતના ભાજના કોહાર ભરવા કમ્મર કસીને નયતુ ના જેવી અંજીસમજણુ બીજ કદ છે ?

પ્રાણુથી પણ વડાલાં ગણતાં છતાં પણ મારાં નિદેશ બાળકનું નિત્ય લોહી ચુસે એવા ના અપોઅં સ્વામના મૃદસ્થાશ્રમ રૂપ પિશાચના પેશમાં નો તમે તમારા બાળકને સોંપ્યું-દોષ તે ને બાળકનું રક્તજી કરવાની, એક પણ પંચ બોલો નહિ. આપણે વિવેક ઉપર તમારા પુત્ર માથે પાત નંકરવાની તમારી ખોટી સમ્મતને બાળુએ મૂકો તમારા પોતાના ખોટા દર્શનથી

આપણી પુત્રના રીવાજથી, તેના મનમાં બંધાઈ ગયેલા જલભરેલા વિચારથી, અહ્યર્થના ભંગની જે ટેવ પડી ગઈ છે, અને જે ટેવ તેના પ્રાણુ દરનીરી છતાં સુખ આપનારી માને છે, તે ટેવથી નીપજતાં દારણુ કુળો તેને બરાબર સમજાવે. તેને સ્પષ્ટ કહો કે બાળ, રહ વર્ષની વયેજ આપણું શરીર પૂરેપૂરું બંધાઈ રહે છે. તે પહેલાં અહ્યર્થનો ભંગ કરવાથી શરીરનો નાશ વડેલો થાય છે, અને જેમ અણુજ કે સોમલ ખાઈને જે કલાકમાં મરી જતાર, માણસ આત્મદાતી ગણાય છે, તેમ અહ્યર્થ પાળાને સો વધે મરવાને ખાદ્યે અહ્યર્થનો ભંગ કરી શરીરમાં મનબંધાઈ આણુ, જાતજાતના રોગનો ભોગ થઈ પડી ચાલીશ કે પચાસ વર્ષની ઉમરે મરી જતું એ આત્મધાતન છે; અને અણુજ ખાઈને કે જાળા ખાઈને કેરેલો આપણાત મહા પાપ ગણાય છે, તેમ અહ્યર્થનો ભંગથી શરીરનો આણુલો વડેલો અત, એ પણ આત્મધાત હોવાથી મહા પાપજ છે. વળી હે બાઈ આ અહ્યર્થનો ભંગથી આપણે આપણી એકલાનીજ આત્મદાતા કરીએ છીએ જેમ નથી, પણ જેમ માકો ગ્રીકલો બંધાયા નિતા રોપેલા આંખાતું ઉત્તમ જાડ કહી થતું નથી, તેમ કાચા બીધેથી ઉત્પન્ન થયેલાં બાળક પણ કદી ઉત્તમ બળવાળાં થતાં નથી, તેથી તે જાળ બળવાળા બાળકનું આયુષ્ય જોણુ થવાથી આપણે જેમ આપણી પોતાની હત્યા કરીએ છીએ તેમ આપણા બાળકની પણ પુરું આયુષ્ય જોણુ થવાથી, આપણે જેમ આપણી પોતાની હત્યા કરીએ છીએ તેમ આપણા બાળકને પણ પુરું આયુષ્ય જોગમ્યા વિના નાની ઉમરમાં મરણુ માનવાને લાપક કરીએ છીએ, તેથી આકંઠરી રીતે તેની પણ હત્યા કરીએ છીએ અને તે બાળકમાં પણ "બાપ તેવા બેટા" એ પ્રમાણે આપણાં જોવાને ચુલો ઉતરી આવવાથી તે પણ અકાલી, અહ્યર્થનો ભંગ કરવાની ટેવવાળો થાય છે, નથી તેના છોકરાં, વળી તેનાથી વધારે



દુર્બળ થાય છે અને તે છોકરાનાં છોકરાં વળી તેથી પણ વધારે દુર્બળ થાય છે અને આ બધું દુર્બળાતું ધાંડું મળાથીજ પહાડી કાઠાતું ન હોવાથી ત્રીશ કે ચાલીશ વર્ષની ઉંમર થતાં તો મરીજ જવાતું; જેથી મૂળ અલ્પચર્યાના બંગ કરનાર આપણે આ પ્રમાણે વધતાં વધતાં બધાં બાળકોની દયા કરનાર થઈએ છીએ, તેની ગણતરી કરવી પણ કઠણ પડે એમ છે; તેથી અણસમજમાં જો કે અમે તમારું લગ્ન કર્યું છે તો પણ હવે તમે આજથી તમારા વીર્યનું રક્ષણ કરતાં શીખો અને શરીરમાં વીર્યની પૂરેપૂરી જમાવટ થયા વિના તેનો ઉપયોગ કરશો તો તેવા કાચા વીર્યથી ઉત્પન્ન થયેલાં બાળકો તમને અને આ દુનિયાને નકામી વેદેશ્વર થઈ પડશે. વટાણા જેવડી આંખે થયેલી ફેરીઓને તોડી લાવી તેને ઘેર પકવી રસરોટલી જમવાની આશા રાખવી એ જેમ અક્ષતનું બારદાનપણું બતાવે છે, તેમ નખળા વીર્યથી ઉત્પન્ન થયેલાં બાળકો ધરના, કૃષ્ણના અને દેશના શત્રુ ગાર થશે એવી આશા રાખવી, એ પણ મૂર્ખાઈ બતાવે છે. માટે આ અલ્પચર્યાના બંગની ધિક્કારવાં લાયક એવે જોને તમે અણસમજથી નિત્ય સેવો છો, તેને એકદમ બંધ કરો, તમારી પડેલી એવ તમને તુસ્ત નહીં છૂટે માટે દાહ તો માત્ર મહિને મહિનેજ આ દુષ્ટ એવને તમે વશ થતા હો, અને પછી છ છ મહિને કે વર્ષે વર્ષેજ આ આણુપનો નાથ કરનારી એવને વશ થજો. અને હવે ત્રણ ત્રણ વર્ષને આંતરે સેવાતી એવને નિર્દોષ ગણી તે પ્રમાણે તમારું વર્તન કરજો, કરાવજો. તે રીત ઉત્તમ દ્વગ આપનાર નીવડે છે. એ વિષે ઉત્તમ શરીર શાસ્ત્રીઓનાં પુસ્તકો સમજજો અને સમજાવજો. આટલું સમજાવીનેજ એરી રહેશો નહીં, પણ માથાપ રૂપે ગણાતા તમે ચોક્કસ તમારું પશુપણું દૂર કરી, અલ્પચર્યાના આ ઉત્તમ નિયમને પાળી, તમારા શુદ્ધ દેહાંતના નિર્ભેગ વાતાવરણવાળું તમારું ઘર કરજો. તમારે પુત્રી હોય તો તેની મતાપાસે એ પ્રશરનો બોધ આપવો કે-એ બહેન !

આ સંસારમાં પતિ એજ તારું દેવત છે. તેના શરીરની સુખાકારી ઉપરજ તારા બધા સુખનો આધાર રહેલો છે. તે રોગી હોય અથવા તેનું શરીર ન હોય તો આ સંસારમાં તારું જીવન નકાસું છે માટે તારા પતિનું શરીર રોગ વિનાતું રહે તથા લાંબા આયુષ્ય વાળું થાય, એને માટે તું કંમેશાં કાળજી રાખી રહેજો. બહેન ! અયોગ્ય સમયે અલ્પચર્યાના બગથી તારા પતિને અને તને જેટલું નુકસાન થાય છે એટલું બીજા કશાથી થતું નથી. કોમળાઆનો રોગ થવાથી કે ગાંડીઆ તાવથી લાસ થઈ ગએલું શરીર ઉપાયો કરવાથી ખૂબ સુધારી શકે છે, અને તે માણસ લાંબો કાળ જીવે છે, પણ અકાળે અલ્પચર્યા બંગ કરવાથી તુટી ગએલું શરીર લાંબો ઉપાયથી પણ સુધરી શકતું નથી અને તેનું ટૂંક થયેલું આયુષ્ય વધતું નથી, માટે એવા ખોટા મુખની લાલમ તું કરી કરીશ નહીં. શીએને આ બંને કામ હોય છે, એવું આપણી જ્ઞાન ઉપર એટલું આજ, હે બહેન ! તું તારા સદાયસ્થથી યાજજો. વીર્યનું રક્ષણ ન કરીને જીવજીતી કે કોડીથંધ નમાલોં હાડગાંડનાં પુતળાંઓને જન્મ આપવાને બદલે તારા લોખી અને તારા પતિના વીર્યનું રક્ષણ કરીને યોગ્ય વિનય રેજ, હે બહેન ! તું સિંહજીની જેમ તારી કુખને, તારી ચાતિને અને તારા દેશને દીખાવનાર વીર પુત્રની જનેતા થજો, આવી રાજ બોધ આપી તેના અંતઃકરણમાં અલ્પચર્યા દાપદા સારી રીતે ઠસાવજો.

કરશે નહિ. પણ એ તમારા પુત્રને તમે, અને પુત્રીને તેની માતા, આ બ્રહ્મચર્ય પાળવાના ભાગને, અને તેણવાના અપાર દુઃખને સમજાવવા અને તેટલો યત્ન કરજો; અને તેઓ પોતાનું કદાચ પૃથ્વી રીતે રક્ષણ નહિ કરી શકે, તોપણ પોતાની પ્રવૃત્તિ અવરૂપ રક્ષણ કરશે. આપણા પૂર્વજોએ આપણું કલ્યાણ વિચારીને બ્રહ્મચર્ય આશ્રમે કાઢી શરીર બળ વધારવાનો પ્રયત્ન કરવો જોઈએ તેની સાથે બીજા કેટલાક નિયમો પાળવાની પણ જરૂર છે.

આપણા શરીરની સાને ધાતુઓ ઉત્તમ પ્રકારની થવામાં અગ્નિ, જલ, વાયુ, સ્વચ્છતા શુદ્ધ દવા અને જોઈએ એટલા પ્રમાણમાં અન્નપાણી, આપણા શરીરની, તથા વસ્ત્રોની આપણાં રહેવાનાં ધનની અને આપણા શહેરોની ધનની સ્વચ્છતા, આત્મજની ધુર્યોએ વિચાર વડે નહીં કરેલી યોગ્ય કસરત, તથા ઉંચી જાતના ભાજન આપે એવી શરીરની, મનની અને વાણીની ટિપ્પણીથી શરીર ઉત્તમ થાય છે. અને એ બધાં હોવાનાં હોય છે તો શરીર હોવાનું અધ દુર્બળ થાય છે; તેથી કેતી જાતનું અન્ન, કેવી જાતની દવા, કેવા પ્રકારની કસરત વગેરે શરીરને બળવાન કરનાર સાધનો રહેવાની જરૂર છે, તે સારી રીતે ઓછાથી જાણી લેવું.

આ લેખનું મુખ્ય તાત્પર્ય એ છે કે આપણાં બાળકોનું મનોબળ વધારવાને જોગ આપણે રાત દિવસ મહેનત કરીએ છીએ, તેનીજ સાથે અને તે આગાઉ પણ તેમનું શરીર બળ વધારવાના વિષય પણ તબ દબને કરવા જોઈએ. બાળકોને મેડપડીયા આપે ત્યાંજો હિંદુ ધાસીને બેસાડી મુકવાને બદલે તેમનું શરીર ખીસે એવા હવાયો પણ કામે લગાડવા જોઈએ.

શરીરબળ વિના આપણી કે દેશની સરકારી કસરત મનોબળ તથા હૃદયબળ જોઈએ તેવા કરી અધિકારમાં નથી, માટે શરીરબળ વધારવા બ્રહ્મચર્ય પામવું કરવા અગત્યનું જોઈએ.

તેની સાથે શરીર શાસ્ત્ર, અને આરોગ્યશાસ્ત્રોનું રાત્રિ દિવસ વાચન યોગ્ય રખાવવું, જોનાથી વીર્યંદીનપણાથી તમારા મનની થયેલી દુર્બળતાનો નાશ થશે. આમાં કક લખાણ આપણા કલ્યાણ માટેજ લખવાની જરૂર પડી છે તેનાથી ન કુભામાં પ્રતાપી નીપજવાની યોગ્યતાવાળા આર્થ જાણીએ । નાટ્ય યાત્રા, પરમાત્મા તમને મદ્દુદિ અને સન્માન દર્શાવે, તમારું.

નર્યે નર્યે ગ્રન્થ ।

તાંસ ચૌવીસી પૂજા ૧૥૫(=)૧૬૧ ૨(=)

આદિપુરાણ (પૂર્ણ) ૧૬)

હરિવંશપુરાણ (૧૬૧ નિલ્દ) ૬;

તત્ત્વજ્ઞાનતરંગિણી ૧૥૥)

મનમોદન પંચશતી ૧૮(=)

ગોમદસાર જીવકાંડ-કર્મકાંડ ૪૥૥)

અર્થપ્રકાશિકા (મુજીનીકી વઢી ટીકા) ૩૥૥

શ્રીપાલ ચરિત્ર (નંદીધરવનમાહાત્મ્ય) ૥૥૥)

આરાધનાકથાકોષ (૧૧૪ કથા) ૪(=)

પુણ્યાશ્રવકથાકોષ (૧૬ કથા) ૩)

લઙ્ઘિસાર (લપ્તાસાર સહિત) ૧૥૥)

સાગારધર્મામૃત ટીકા (પૂર્ણ) ૨૥૥)

શ્રેણિક મહારાજકા ચરિત્ર ૧૥૥)

ભારત ૦ દિ ૦ જૈન શિરૈકટરી ૮)

જૈન સિદ્ધાન્ત સંગ્રહ (૧૦૦ ગ્રન્થ) ૧૥૥)

ટોડરમલજીની રહસ્યપૂર્ણ ચિઢી ૩)

પદ્મનંદિપચીસી ૪)

~~પવિત્ર~~ પવિત્ર કેશર ।

૧૥૥) ફી તોચ ।

મિલેનેકા પતા-

મૈનેગ, દિ ૦ જૈનપુસ્તકાલય-સુરત ।



श्री ऋषभ निर्वाण संवत् पर- शंकाएं और उनका उत्तर ।

(ले० श्रीमान पं० विद्यालालजी जैन, सी० टी०)

(इन्दरगढ़ी, अमरोहा)

विदित हो कि यह लेख गत मास जनवरीक " जैन प्रचारक " में, तथा गत १० जनवरीके " जैन प्रदीप " में और गत माघ मासके " दिगम्बर जैन " में प्रकाशित हुआ था जिसे पढ़कर बहुतसे इतिहास प्रेमी हमारे भाइयों अपना हार्दिक हर्ष प्रकट किया और तीन चार महाशयोंने इस सम्बन्धके विषयमें कुछ शंकाएँ भी की हैं जिससे ज्ञात होता है कि इस लेखको बहुतसे भाइयोंने ध्यानपूर्वक बड़ी रुचिसे पढ़ा है और अपनी २ योग्य सम्मति देनेका कष्ट उठाकर मेरे उत्साहको बढ़ाया है और मुझे आभारी बनाया है जिसका धन्यवाद देनेके लिये मेरे पाम यशोचि शब्द नहीं हैं ।

कई भाइयोंने जो कुछ शंकाएँ प्रकट की हैं उनका सारांश निम्न लिखित दो भागोंमें विभक्त हो सकता है:—

(१) इतने बड़े ७१ अंकके महान सम्बन्धको किस प्रकार पढ़ा जावे जब कि इकाई दहाई आदि दश शतक तक कुछ १९ ही अंक प्रमाण नियत है ।

(२) किस जैन ग्रन्थके आधारपर और किस प्रकार यह संवत् निकाला गया है ?

उपरोक्त शंकाओंमेंसे पहली शंका करते हुए हमारे कुछ आर्य्य समानी भ्राताओंने तथा कई अन्य अजैन विद्वानोंने तो पूर्ण गणितज्ञ होनेका यहाँ तक परिषय है कि दश शतसे आगे गिनतीका होना ही असंभव बतला बैठे, मिनपर सचमुच निम्न लिखित दृष्टान्त पूर्णतया चरितार्थ होता है:—

एक समय एक महासमुद्रके किनारे बसनेवाला रामहंस एक छोटेसे जलकूपकी मेंद पर आ बैठा उस जलकूपमें रहनेवाले मेंदके रामहंसको देखकर पृछा:—

मेंदक—क्यों माई आप कौन हैं ?

रामहंस—मैं रामहंस हूँ ।

मेंदक—आपका निवास स्थान कहाँ है ?

रामहंस—माई मैं समुद्रके तट

रहता हूँ ।

मेंदक—समुद्र क्या वस्तु है ?

रामहंस—समुद्र एक बहुत बड़े

रायरा नाम है ।



मंदक—वह जलाशय किनना बड़ा है ।

राजहंस—बहुत बड़ा ।

मंदक—(अपनी एक टांग फैलाकर)

क्या इतना बड़ा है जहां तक मेरी टांग पहुँची ।

राजहंस—नहीं भाई ! वह बहुत बड़ा है ।

मंदक—(दूसरी टांग और फैलाकर)

क्या इतना बड़ा है ।

राजहंस—नहीं २, वह तो बहुत बड़ा है ।

मंदक—(अपनी चारों टांग फैलाकर)

तो क्या इतना बड़ा होगा ?

राजहंस—(बड़ी गम्भीरतासे) भाई !

वह बहुत ही बड़ा है । तुम उसके फैलाव और महत्वको नहीं समझ सकते ।

मंदक—(कुछ झुंझाकर और अपने कूपके कुछ भागमें बकर लगाकर) अच्छा तो बहुतसे बहुत वह समुद्र इतना बड़ा होगा ?

राजहंस—(बड़े कोमल शब्दोंमें) नहीं भाई जान ! वह बहुत ही बड़ा है ।

मंदक—(अधिक झुंझाहटमें भरकर और अपने जलकूपके चारों ओर पूरा बकर लगाकर) तो क्या वह तुम्हारा समुद्र इतना अधिक बड़ा है । या इससे भी अधिक ?

राजहंस—हां भ्रात ! वह इससे भी वहीं अधिक बड़ा है ।

मंदक—(अति झुंझाकर और राजहंस को महा तिरस्कारकी दृष्टिसे देखकर) झूठ ! झूठ ! ! ! महा झूठ ! ! ! इससे बड़ा कोई जलाशय हो ही नहीं सकता । हा ! तुमको ऐसे निर्मूल और अमंथव प्रचन बोलने लज्जा भी नहीं आती ।

राजहंसने मंदकको महा मूर्ख समझकर फिर कुछ उत्तर न दिया और बड़े शान्त मनसे अपनी राह ली ।

ऐसे पूर्ण विद्वान सर्व विद्यानिधान सर्वज्ञ तुल्य महाशयोसे नम्रता पूर्वक निवेदन है कि वे गंभीर दृष्टिसे अपने हृदयमें विचारें कि क्या गणनाकी भी कोई हद हो सकती है । हम प्रकार विचार दृष्टिसे काम लेने पर भले प्रकार ज्ञात होगा कि गणनाकी कोई हद या सीमा नहीं हो सकती तो भी हम संसारी मनुष्योंको अपनी २ आवश्यकतायुक्त कुछ अंकों तक गणना नियत कर लेनी पड़ती है । अपनी २ आवश्यकताओंको ध्यानमें रखकर हरदेशके विद्वानोंने अपनी २ बुद्धि वा विचारालुसार अनेक प्रकारसे गणनाके कुछ न कुछ स्थानादि मानकर उनकी कल्पित संज्ञा नियत करली हैं, और अपने २ आवश्यककीय सर्व कार्य उसीसे निकाल लेने हैं, उदाहरणके लिये कुछ विद्वानोंकी कल्पित इकाई दहाई आदि नीचे लिखी जाती हैं—

(१) अर्घा फारसीकी इकाई दहाई—इकाई, दहाई, सैफड़ा, हजार, दशहजार, सौहजार । केवल ६ अंक प्रमाण ।

(२) लीलावतीकी इकाई दहाई—एक, दश, शत, सहस्र, अयुत, लक्ष, प्रयुत, कोटि, अर्बुद, अब्ज, खर्व, निर्वर्ष, महाप्रम, शङ्ख, जलधि, अय्यंन, मय, परार्ध । १८ अंक प्रमाण ।

(३) उर्दू हिन्दी भाषाकी इकाई दहाई—इकाई, दहाई, सैफड़ा, महत्व, दश सहस्र,



लक्ष, दश लक्ष, कोटि, दश कोटि, अर्ब, दश अर्ब, खर्व, दश खर्व, नील, दश नील, पद्म, दश पद्म, संख, दश संख ॥ १९ अंक प्रमाण ॥

(४) श्री महावीराचार्य कृत गणित-सार संग्रह* की इकाई दहाई—एक, दश, शत, सहस्र, दश सहस्र, लक्ष, दश लक्ष, कोटि, दश कोटि, शत कोटि, अर्बुद, न्यर्बुद, खर्व, महा खर्व, पद्म, महा पद्म, शोणी, महा शोणी, शंख, महा शंख, स्तित्य, महा स्तित्य, शोम, महा शोम ॥ २४ अंक प्रमाण ॥

(५) अंग्रेजी भाषा की इकाई दहाई—इकाई, दहाई, सैकड़ा, हजार, दशहजार, सौहजार, मिलियन, दशमिलियन, सौमिलियन, हजारमिलियन, दश हजारमिलियन, सौ हजारमिलियन, बिलियन, दश बिलियन, सौ बिलियन, हजार बिलियन, दश हजार बिलियन, सौ हजार बिलियन, ट्रिलियन, दश ट्रिलियन, सौ ट्रिलियन, हजार ट्रिलियन, दश हजार ट्रिलियन, सौ हजार ट्रिलियन ॥ २४ अंक प्रमाण । यह इकाई दहाई ऐसे ढंगसे

* यह जैन आचार्य कृत गणित—ग्रन्थ भास्कराचार्य कृत “लीलावती” के ३०० वर्ष पूर्वका है जो अंग्रेजी अनुवाद सरित “मद्रास प्रांत” सरकार की आशानुसार बर्किंगहमस्टी (बर्क) ग्रन्थालयमें प्रकाशित हो चुका है । “लीलावती”में सम्भवतः अधिकतर इसीका अनुकरण है ॥ आज कल की हिन्दी उर्दुमें प्रचलित इकाई दहाई भी और किसीसे न मिलकर अधिकतराई इसीकी इकाई दहाईसे मिलती जुलती है ।

नियत की गई है कि काद्विलियन आदि शब्दों द्वारा छह २ अंक उपरोक्त रीतिसे बढ़ाकर २४ अंक प्रमाणसे आगे भी अधिक अंक प्रमाण बढ़ी सुगमतासे की जा सकती है ।

उपरोक्त उदाहरणोंके अतिरिक्त और भी अनेक प्रकारकी इकाई दहाई हैं जो अनेक विद्वानों अनेक प्रकारसे कल्पना की हैं और जो माननेवाले जन समूहकी नित्यप्रतिके सर्व व्यवहारिक कार्योंमें पड़नेवाली आवश्यकताओंको पूर्ण करनेके लिये केवल पर्याप्त (उपयुक्त) ही नहीं किन्तु पर्याप्तसे भी अधिक हैं ।

जैनसिद्धान्तमें चूंकि तनिलोक का स्वरूप तथा उसमें रहनेवाले पदार्थका वर्णन इतना अधिक विस्तार पूर्वक है कि जिसका शत सहस्रांश भी इस पृथ्वी तलपर अन्यत्र वर्णन नहीं पाया जाता इसीलिये इसी सिद्धान्तका गणित भाग भी और भागोंकी समान बहुत ही उच्च कोटिका है ।

गणित विद्याके जो अंक गणित, नीज-गणित, क्षेत्रगणित आदि अनेक भेद हैं उनमेंसे एक अंकगणितके जैन गणितमें दो मुख्य विभाग हैं पहला लौकिक और दूसरा अलौकिक या लोकोत्तर । इन दोनोंसे पहलेके मान, उन्मान, अवमान, गणिमान, प्रतिमान, तत्प्रतिमानादि भेद हैं और दूसरे लोकोत्तरके द्रव्यमान, क्षेत्रमान, कालमान, और मावपान इस प्रकार ४ भेद हैं । इन चारों भेदोंमेंसे पहिले द्रव्यलोकोत्तरमानके अन्तरगण संख्याके लोकोत्तरमान



और उपमालोकोत्तरमान यह दो उप-
भेद हैं ।

इन दोनोंमेंसे संख्या लोकोत्तर मानके
मूल तीन स्थान अर्थात् संख्यात, असं-
ख्यात, और अनंत हैं और विशेष २१
स्थान हैं । तथा इसी संख्या लोकोत्तरमान
की सर्वधारा, मपधारा, विपमधारा, कृति-
धारा, अकृतिधारा, घनधारा, अघनधारा,
कृति मात्रिक धारा, अकृति मात्रिक धारा,
घन मात्रिक धारा, अघन मात्रिक धारा, द्वि-
रूप धारा, द्विरूप घन धारा, और द्वि-
रूप मनाघन धारा, यह १४ धारा हैं ।

दूसरे उपमा लोकोत्तर मानके पल्य, सा-
गर, सख्याकुल आदि ८ स्थान हैं ।

इसी प्रकार दोन काल और भाव लोको-
त्तर मानके अनेक भेद उप-भेद आदि हैं ।

इन सबका सविस्तर वर्णन उदाहरण
आदि सहित जानना हो तो “बृहत् धारा
परिकर्मा” और “महावीर गणित
सार संग्रह” आदि जैन गणित ग्रन्थोंसे
तथा श्री त्रिलोकसार और श्री गो-
महसारदि जैन ग्रन्थोंके गणित भागसे
वेचें । यहां केवल इतना बताना ही अभीष्ट
है कि इतना बड़ा ७६ अंक प्रमाण संख्यावाला
सम्बन्ध किस प्रकार पड़ा जा सकता है ? इसके
पढ़नेके लिये कौनसी इकाई दहाई है ?

उत्तर बताना जा चुका है कि “लौकिक
गणित भाग” के ६ भेदोंमें एक चौथा भेद
“गणित मान” है । इसके अन्तरगत
जो इकाई दहाई है वह उपरोक्त प्रकार २४
अंक प्रमाण है ।

लौकिक कार्योंमें इससे अधिक तो क्या
इतने अंकोंतककी भी आवश्यकता किसीको
नहीं पड़ती । परन्तु लोकोत्तर गणित
भागमें अवश्य अधिककी आवश्यकता पड़ती
है । जिसके लिये जैनाचार्योंने उपरोक्त
प्रकार संख्या लोकोत्तर मानमें जवन्व्य संख्यात
आदि उत्कृष्ट अनन्तानन्त पर्यन्त २१ भेदों
और सर्वधारा आदि १४ धाराओंमें तथा
उपमालोकोत्तरमानमें पल्य, सागरादि
द्वारा बड़े विस्तारके साथ आवश्यकतानुसार
सब ही कुछ समझा दिया है । इनमेंसे संख्या-
लोकोत्तरमानके अन्तरगत निम्नलिखित
इकाई दहाई हैं जिसकी सहायतासे यदि
आवश्यकता पड़े तो हम ७६ अंक तो क्यों
सैकड़ों सहस्रों अंक तककी संख्याको बड़ी
सुगमतासे पढ़ सकें हैं । वह यह है—

एक, दश, शत, सहस्र, दश सहस्र,
लक्ष, दश लक्ष, कोटि, देश कोटि, अर्बुद,
दश अर्बुद, सर्व, दश सर्व, नील, दश नील,
पद्म, दश पद्म, शंख, दश शंख, महाशंख,
यहां २० अंक प्रमाण गिनी है । इससे
आगे एकट्टी, दश एकट्टी, शत एकट्टी,
सहस्र एकट्टी, दश सहस्र एकट्टी, आदि महा

× २ को ६४ जगह रखकर परस्पर
गुणा करनेसे जो १८४४६७४४०७६७०९५
५१२१६ संख्या २० अंक प्रमाण आती है
उसे भी एकट्टी कहते हैं । यह संख्या २०
अंक प्रमाण संख्याके सपन्व्य भेदसे अधिक
दे इतीन्द्रिय इकाई दहाईके हिसाबमें २१
अंक प्रमाण संख्याका नाम भी “एकट्टी”
माना गया है ।



ઉપદેશક પિતાંબરદાસજીના અમળનો રિપોર્ટ.

(તા ૧ એપ્રિલ થી ૧૫ મે સુધી)

સામગ્રી-એ સાતસભા અને એક આધ્યાય સભા કરી. સાત જણે સ્વાધ્યાયનો નિયમ લીધો. વસ્તીની બદલ એક મોટું દહેરું છે જેમાં ૬૦ નેમ્બર થેન્ડ પ્રતિભાઓ છે. પુનરી આદાશ હોવાથી વ્યવસ્થા મારી નથી ને બાબત પચે ધ્યાન આપવું નોંધાયે. ૧) ઉપદેશક કંડમાં મળ્યા.

કહિયાદરા-જણ સભા કરી સ્વાધ્યાય, જિનપૂજન અને કીરીતિ ત્યાગપર વિચેચન કરવાથી આઠ જણે સ્વાધ્યાય, અને રો રાત્રિજોગન ત્યાગનો નિયમ લીધો. અને એક ધર્મપ્રેમી ખેન ઠેઠાલીમાઇ ને માય પધારીએ દત્તી તેણે કહ્યું કે આપ એવો પ્રગથ કરી આપો કે મારા મૃત્યુ પછી કોણાથ સ્ત્રી જાતિ કોને રહે નહિ. આથી ચોરોવાડમાં ચાર મ મની પત્ન એકઠી કરી આ રિવાજ બંધ કરવાનો ભાવ થયો. ૩) ઉપદેશક કંડમાં મળ્યા.

ચોરાસણ-એ સભા કરી કેટલાકે સ્વાધ્યાયનો નિયમ લીધો. અને એક ઉત્પાલી ખેને હવની ચાતિની ધણી સીઆને એકઠી કરી જેવા તેમના આગળ નારકી છવોનું વર્ણન કરવાથી તેમનું મન પીઠવ્યું અને તેઓએ સંકલ્પી દિસાને ત્યાગ કર્યો. ૧) ઉપદેશક કંડમાં મળ્યા.

ચોરીવાડ-જણ સભા કરી વ્યવસ્થા-ત્યગ તથા સ્વાધ્યાય પર વિચેચન કર્યું. કેટલાકે સ્વાધ્યાય અને રાત્રિ જોગન ત્યાગનો નિયમ લીધો. કહિયાદગમાં નહીં થરા સુમ્મ જોગ, ચોરાસણ, ચોરીવાડ અને કહિયાદરાની પચ એકત્ર થઇ, જેમની સન્મુખ જાતિ કીરીતે રડવાના કુરિવાજ સળધી વિચેચન કરવાથી જણ બોમવાળાએ તે જામ કરવા કહ્યું. ૫) ચોરીવાડની પગના શેઠ કાદરગવળએ

ના કહી અને કહ્યું કે બાપદાંની રડીને છોડવી તે અધર્મ છે. ૧) ઉપદેશક કંડમાં મળ્યા.

ચોરણ-શેઠ પુછરામના પ્રયાસથી પાંચ સભા કરી. મામના બીજા લોકો પણ સભા હાજર થતા હતા. આઠ જણે સ્વાધ્યાયનો નિયમ લીધો.

મુરેટી-જણ સભા કરી, પણ લોકોમાં બીજાકે ઉત્પાદ ન હોવાથી વારંવાર બોલાવવા છતાં પણ મળ્યા ન થયા બાદમાં હાજર થતા હતા. ૫) જણે સ્વાધ્યાયનો નિયમ લીધો. છડર કન્યાસાળાવાળા શ્રીમતી મેનાબાઇએ જોનારરી વરીકે બાગકે બાલિકાઓને ધર્મશિક્ષણ આપવા કહ્યું તથા શેઠ વીરગદ પાનાવટે એક નવું માટે પુસ્તકો આપવા કહ્યું. ૩) ઉપદેશક કંડમાં મળ્યા.

ભીંડોડા-અને એક મોટું દહેરું છે જેને કગતા પર ચેત્પાલ્ય છે. પ્રતિભાની સમ્યા મળી છે. પુગમી બાબથ છે. અને અગાઉ જેનોની ૩૦૦ ધરની વસ્તી હતી જ્યારે હવે ૧૫૦૦ ધર રહ્યા છે. રોજ વારાદરતી અઠ-પ્રગથી પૂજન કરાવતું પચે કહ્યું. આઠ જણે સ્વાધ્યાયનો નિયમ લીધો. ૩) ઉપદેશક કંડમાં મળ્યા.

કાંકાટુકી-જણ સભા કરી જેવ ધર્મ ગુરુત્ર ચરપ જતાવ્યું, તેટલામાં શા કાદરમલજી ગુરુસે થઇને બેઠ્યા કે વગે અગાગ ગુરુજી (કાદરક) ની નિન્દા કરો છો. અને કંઈ સભાને બાધ્યતા નથી, જૈનમિત્ર, જિગમજૈન તથા છાપેલાં પુસ્તકોને અમે જોવા પણ માગતા નથી. સજ્જનો! જોયું કેવી શુદ્ધિમાની છે. ૧) ૧)

મકે-એ સભા કરી, જેથી ૮ જણે સ્વાધ્યાયનો તથા કેટલાકે રાત્રિજોગન ત્યાગનો નિયમ લીધો. હવે હવે વગેરે મર્યાદાપૂર્વક રાખવાનું કહ્યું.

મુનાઇ- પાંચ દિવસ રહી પાંચ સભા કરી. કેટલાક નિયમો લેવાયા. અને ગુજરાતી શિક્ષણ લેવાની પણ રક્ષા નથી, ને બાબત પ્રગટ્ટે ધ્યાન આપવું નોંધાયે. અનેથી ૬



लोग दर्शन करनेके लिये उत्सुक हुये, जिसका पूरा हाल टाईम्स आफ इन्डिया और इंगलिश-मैनने तारीख १२ व १३ मार्चमें प्रकाशित किया है, इसीसे इन श्रीमान् सेठ हुकमचंदजी 'दानवीर' 'रायबहादुर' का फोटो आपके समक्ष दिया गया है कि जो लोग केवल धन कमाना जानते हैं, साथ ही में दान भोग और परोपकारमें खर्च नहीं करते वे सेठ साहिबके इस चरित्रसे उपदेश ग्रहण करें । आपके सुयशसे आज हिन्दुस्थान हीमें क्या विलायत तक इन्दौर नगरीकी प्रशंसा लोगोंके मुंह पर है । धन्य हैं ऐसे धीर पुरुष ! इति—

१३५००००) के दानकी सूची ।

जिसका हाल ऊपर दिखाया गया है । यह सेठ साहिबने निज हाथसे परोपकारसे खर्च किये हैं ।

५०००) कछाहया ग्राममें जैनी भाईयोंकी स्थिति मंदिर बनवानेकी नहीं होनेसे मंदिर बनवाया, सम्वत् १९५३ में ।

६०००) इन्दौरके नई मंदिरमें कलश चढ़ाया गया जिसमें तीनों भाईयोंने १८०००) दिया जिसमें आपने दिये, सम्वत् १९५७ में ।

४०००) छावनीके मंदिरके जीर्णोद्धार कराया व कलश चढ़ाये, सं० १९५७ में ।

२०००००) इन्दौर स्टेशनके पास एक पक्का जैन मंदिर, २ कुबे, एक बंगला व धर्मशाला बिना किसी फीस भाड़ाके मुसाफिरोको ठहरानेके लिये बनवाई जिसमें सर्व जैन अजैन हिन्दू आरामसे ठहरते हैं, सम्वत् १९५१ में बनवाई और प्रतिष्ठा कराई ।

१००००) इन्दौरमें एक औपचालय स्थापित किया सं० १९५३-६० जिससे अनेक रोगियोंको लाभ पहुंचा ।

१०००) इन्दौरमें प्लेगके समय गरीब लोगोंको रहनेके लिये Huts शोपड़े बनानेमें मदद दी, संवत् १९६० में ।

३०००) तीनों भाईयोंने एक जैन सहायक भोजनशाला खोली जिससे असमर्थ जैनी व विधवाओंको भोजन रेल खर्च सहायता दी जाती है जिसमें आपका लगा सं० १९६२ में ।

३२०००) इन्दौर नाशियोंमें हुकमचंद दिगम्बर जैन बोर्डिंग खोला, जिसके खर्चके लिये १२८) माहवार ३२०००) का सुद देते हैं इससे संस्कृतकी पाठशालाको खर्च जिसमें अंगरेजीके विद्यार्थियोंको जो स्कूल कालेजोंमें पढ़ते हैं एक घंटा धर्म शिक्षा दी जाती है, और विद्यार्थियोंको ७) से १०) तक स्कालरशिप दी जाती है । संवत् १९६२ में ।

२५०००) नाशियोंकी मंदिर व धर्मशालाका खर्च चलायानेके लिये स्थाई फंडमें दिये, संवत् १९६५ में ।

७०००) इन्दौरके तुकोजीराव हास्पिटलमें तीनों भाईयोंकी तरफसे महानजन बाई बनाई गई जिसमें आपने दिये, सं० १९६६ में ।

१०००) लेडी मिंटो हास्पिटलमें दिये, संवत् १९६६ में ।

१००००) श्री मारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभाके प्रबंध खातेमें दिये, संवत् १९६७ में ।

१०००) श्री स्याह्याद महाविद्यालय काशीके स्थाई फंडमें दिये, संवत् १९६७ में ।

३०००) श्रीसम्मेशशिवरानी पर्यतरसा फंडमें अपने जगद २ चूबर चरा कराया ।



इन्दौरसे २१०००) भेजे उसमें आपने दिये, संवत् १९६७ में ।

१००००) इन्दौर नरेश तुकोजीराव बहादुरके कारोनेशनके समय विद्या खातेमें दिये, संवत् १९६८ में ।

१६०००) और धर्मशाला सुधारणार्थ उसी समय दिये संवत् १९६८ में ।

२००००) श्रीमान् तुकोजीराव महाराज बहादुरके हाथसे कोई पब्लिक फायदेकी संस्था खोलनेके लिये, सं० १९६९ में ।

२५०००) मालवा प्रांतिक सभाके उप-देशक भंडारमें दिये संवत् १९७० में ।

११०००) मालवा प्रांतिक सभाके प्रबंधातेमें दिये, संवत् १९७० में ।

१००००) बम्बईमें मंदिरजी बनानेके लिये चन्दा कराया जिसमें आपने दिये, सं० १९७० में ।

१०२०००) श्री कृष्णमन्त्रालयधर्मके जेम्पुटेशनको इन्दौरमें बुलाकर १६५००) का चन्दा करा दिया जिसमें आपने दिये संवत् १९७० में ।

१०००००) इन्दौर दीतवारामें तीनों भाई मित्ररूप एक मंदिर बनवा रहे हैं जिसमें आपके लगे, संवत् १९७० में ।

२५००००) स्टेशनके पासवाली धर्मशालाको पक्की करानेके लिये १६००००) के सिवाय और दिये संवत् १९७० में ।

२५००००) महाविद्यालय मधुराके खासतेमें दिये, संवत् १९७० में ।

२१०००) बावनगवाजी बड़वानीमें जीर्णोद्धारके चन्देमें दिये संवत् १९६९ में ।

३६६५००) जवरीबागमें महाविद्यालय बोर्डिंग बनानेके लिये दिये। १६६५००)

इमारत जवरीबागमें ८० विद्यार्थियोंके लायक बोर्डिंग महाविद्यालयादिकी- इमारत बनी ।

२०००००) स्पाई फंड-सर्व चलातेको १०००००) कंचनबाई श्राविकाश्रमके लिये दिये, संवत् १९७२ में ।

- ८००००) सन् १९१४ में इम्पीरियल वार रिलीफ फंडमें दिये ७००००) छावनीसे और १००००) इन्दौर मार्फत ।

१०००००) सन् १९१५ में-४०००००) किंग एडवर्ड हास्पिटल छावनी ।

१०००००) लेडी ओटवायरगर्ल्स स्कूल छावनी ।

९२००००) सन् १९१५ में एक विशाल धर्मशाला दिवारा बाजारमें बनाई ।

२००००) सन् १९१५ में मध्य भारत साहित्य सुमितिके मकान बनानेमें ।

१०००००) उदासीन आश्रम इन्दौरमें लगाने मन्त्रे ३०००००) के ।

३०००००) सन् १९१५ में आपकी वर्षगांठका उत्सव महाविद्यालयमें मनाया गया उस समय सहायता दी ।

२५००००) सन् १९१५ में मेडीकल स्कूल छावनीके लिये बिल्डिंग खरीदकर दिया।

१०००००) इन्दौरमें आयुर्वेदीय औषधालय खोला जिसमें दस हजारका मुद्र खर्च करते हैं ।

१५०००००) छोटी रकमें संस्थाओंको दी गई दस वर्षमें जो कि १००) से १०००) तककी हैं ।

कुल दान रु. १३६५०००००)



कर्त्तव्यपालन ।

अब हो गये हम पतित कैसे ?
 सो हमीसे जान लो ।
 प्रमाण क्या ? कर रहे जो,
 उसीसे हमें पहिचान लो ॥
 त्याग कर कर्त्तव्य अपना,
 वनादी भूमि भारत मुर्दनी ।
 पूर्वजोंका धन मान खोकर,
 हो गये सब निर्धनी ॥ १ ॥
 छोड़कर उंचादर्श अपना,
 हम विलासी बनने लगे ।
 कहां वह ब्रह्मचर्य पाळन ?
 जब दोर सम बनने लगे ॥
 बल वीर्य पौरुष तौ है नहीं,
 कहो क्या बाकी रहा ?
 हो चुकी अब सब नष्ट माया,
 शरीर ही बाकी दहा ॥ २ ॥
 क्या शरीरको भी नष्ट करके,
 उठा चाहो तुम अभी ? ।
 यह विचार तो कुविचार है,
 जलसे दही होता कभी ? ॥
 कार्य क्षेत्रमें चलो उठकर,
 यही प्रथम कर्त्तव्य हो ।
 करते नहीं यदि कर्त्तव्यपालन,
 तो नहीं सन्तव्य हो ॥ ३ ॥
 अपना करो यदि कर्त्तव्य पाळन,
 फल नहीं क्या पावोगे ।
 इस वीर जननी भूमिके फिर,
 वीर नर कहल्यवगे ॥
 महावीर, बुद्धसम धर्मरसक,
 अरु जो हुये योधा यहां ।
 कहो किस भूमिक इतिहासमें,
 अरु वे हैं भी कहां ? ॥ ४ ॥

क्या उन्हींका मान सन्मान है,
 यह जिसे तुम कर रहे ?
 नहीं, यह तुम्हारा मान है,
 व्यर्थ क्यों हो सड़ रहे ?
 यदि है कुछ अंश अवशिष्ट उनका,
 तो पढ़े क्या तक रहे ?
 उन्नति फिर दिखा दो देशकी,
 अधिक क्यों हो बंक रहे ॥ ५ ॥
 धन्यार्थ हो तुम सभी सेवा,
 देशकी करने लगे ।
 ले गया पापी काल जिसको,
 उसे फिर लाने लगे ॥
 सोनेकि चिड़िया इस उक्तिको,
 कर सको यदि फिर सही ।
 झट बन जावगे गुरु तुम सभी,
 अरु प्रसन्न होंगी मही ॥ ६ ॥
 मुसलमान हिन्दू अरु जैन सब हैं,
 वीर पुत्र इस भूमिके ।
 उच्च कर दिखा दो इस देशको,
 मातृपदको चूमिके ॥
 माता, सेवा विना स्वपुत्रकी,
 सुखी है होती नहीं ।
 करो अब शीघ्र प्रसन्न उसको,
 दुःखित वो होवे नहीं ॥ ७ ॥
 “विनाशकाले विपरीत बुद्धि,”
 जगतमें सुविख्यात है ।
 स्वकार्य देखो शीघ्र अपने,
 यह तो नहीं चरितार्थ है ॥
 करो तुम सब कर्त्तव्य पाळन,
 कहना यही अब सार है ।
 जीता समय फिर आता नहीं,
 असार यह संसार है ॥ ८ ॥
 वीरतादय ।

शेठ प्रेमचंद मोतीचंद दिगंबर जैन बोटींग तरफथी प्रगट थतुं मासिक

❀❀❀ दिगंबर जैन. ❀❀❀

THE DIGAMBAR JAIN.

माना कलाभिर्विविधैश्च तत्त्वैः सत्योपदेष्टैस्तुगवेषणामिः ।

सरोपयत्वमिदं प्रवर्तताम्, दैगम्बर जैन समाज मानम् ॥

वर्ष १० वॉ. | वीर संवत् २४४३. आपाठ-श्रावण. विक्रम सं० १९७३ | अक्ट ९-१० वॉ.



जैनियोंके कितनेकी त्योहार ऐसे हैं जो सार्वजनिक त्योहार-
रक्षावधन पर्व । रूपसे वर्षोंसे माने जा रहे हैं । उनमेंसे एक त्योहार रक्षावधन पर्व भी है जो अभी ही श्रावण सुद १५ ने दिन आनेवाला है । यह वही दिन है कि जिस दिन अर्जुनाचार्यादि ७०० मुनियोंको बहिराजा द्वारा किया हुआ उपसर्ग विष्णुकुमार महामुनि द्वारा विनियोग के वस्त्रोंसे दूर हुआ था जिसके स्मरणार्थ हस्तिनापुरके रहीशोंने अपने हाथोंमें रक्षाका दोरा अपनी भगनियोंसे बाँटाया था और प्रति वर्ष इसी मुवाफिक होता रहा जो अचनक सार्व-जनिक त्योहार रूपमें प्रचलित है । इस पवित्र त्योहारमें हमारा कर्तव्य है कि मन्दिरोंमें श्री सङ्गना पूजन यानि विष्णुकुमार महामुनिका पूजन करके रक्षावधनकी वजह सबको सुनायें

और अपनी भगनियोंसे रक्षावधनका दोरा बाँटाकर उनको कुछ न कुछ द्रव्य देने हैं उसी तरह इस शुभ दिनके स्मरणमें हमारी समाजसेविका भगनियोंको कुछ न कुछ दान भेजना चाहिये । यह सेविकाएँ कौन हैं और कहाँ हैं ? ऐसा प्रश्न सहज उठेगा तो हम प्रथम ही सूचित कर देते हैं कि यह समानसेविकाएँ उत्पन्न करनेका स्थान यम्बईका “आचिका श्रम” है जिसको जैनमहिलाभूषण श्रीमती मगनबाई, श्रीमती कंकुबाई, श्रीमती ललितबाई आदि भगनियों सुचारु रूपसे चला रही हैं परन्तु आश्रममें स्थायी फंड न होनेसे वार्षिक, मासिक या तो कुछ-कुछ सहायतासे कार्य निभाया जाता है इसलिये वर्षमें एकवार और सो भी यह रक्षावधन पर्व जैसे पवित्र त्योहार पर तो इस आश्रमको अग्र्य याद करना चाहिये और जो कुछ सहायता बन सके तुरंत ही मनीओर्डरसे भेजना चाहिये । आचिकाश्रमका पता—मुन्गेली बाग, तारुंडेव, मुम्बई है ।



श्रीमान स्वर्गीय विद्वद्गुरु स्यादबादवारिधि
वादिगनकेशरी न्याय-
डेपुटेशन पार्टीका वाचस्पति पं० गोपाल-
कर्तव्य । दासजी बैरयाका नाम

स्मरण रखनेके लिये
उनका स्थापित "जैन सिद्धांत विद्यालय—मुरे-
ना" के लिये एक लक्ष रुपयेका स्थायी फंड
करके इस विद्यालयके साथ पंडितजीका नाम
जोड़ देनेका प्रस्ताव इन्दौरकी मिटिंगमें हो
चुका है और फंडमें करीब ५००००) भरे
गये हैं और शेषके लिये पं० धनलालजी
आदिका डेपुटेशन निकालनेका प्रस्ताव हुआ
है जिसको एक महीना बीत चुका तो भी
इस डेपुटेशनने इसके लिये क्या प्रयास किया
यह कुछ भी जाननेमें नहीं आया । यह काम
घर बैठे रहनेसे या लेख लिखनेसे नहीं हो
सकेगा परन्तु शहरोंशहर जाकर पब्लिक सभों
बुलाकर उसमें विचारालयके लाभ प्रकट करके जब
उसी वस्तु चंदा करावेंगे तब ही हो सकेगा ।
जिस कार्यप्रणालीसे माननीय पं० मदनमोहन
मालवीयजी आदिने हिंदु युनिवर्सिटिके लिये
घूम २ कर चंदा एकत्र किया था इस तरह
यह कार्य भी होना चाहिये और सो भी बहुत
ही शीघ्रताके साथ होनेकी आवश्यकता है
अन्यथा इस बातका विस्मरण हो जानेसे चंदा
एकत्र करनेमें सकलता मिटना मुश्किल है ।



हमारे पाठक इन्दौर निवासी रावबहादुर
दानवीर शेट बलवाण-
शेट कल्याणमलजीका मठजीसे तो अच्छी
शास्त्रदान । तरहसे परिचित है ।
आपने अपनी पृथ

मातुश्री फुलूषाईके स्मरणार्थ ६१०००) का
दान प्रकट किया है जिसमें ५००) शास्त्रदानके
लिये कहा गया है जिसके लिये सेठजीसे प्र-
व्यवहार होनेपर इस शास्त्रदानका लाभ हमारे
पाठकोंको देनेकी स्वीकारता मिली है और इस
शास्त्रदानमें श्री अशोकविकृत महावीरचरित्र
ग्रन्थ, कि जिसका हिन्दी अनुवाद हमने पं०
खूबचंदजी शास्त्रीसे तैयार करवाया है, दिया
जायगा । इसकी २००० कापीमें ऐसी मंहगीके
समयमें खर्च अधिक पड़ेगा इसलिये १००)
अधिक देनेकी शेटजीने कृपादृष्टि दिखाई
है और इससे और भी घाटा पड़ेगा
तो आफिससे लगाकर यह "महा-
वीरचरित्र" नामक नवीन उपयोगी
ग्रन्थ हमारे पाठकोंको उपहार स्वरूप दिया
जायगा । इसके छपनेका कार्य प्रारंभ होगया
है और जहांतक हो शीघ्र ही प्रकट होकर
ग्राहकोंकी सेवामें उपस्थित होगा । हमारे
सभी उपहारोंमें इसवारका यह उपहारग्रन्थ
बड़े ही महत्वका प्रकट होगा ।

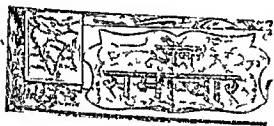


हमारे सोलहकारण और दशलक्षणपर्वके
दिन निकट आ रहे हैं
सोलहकारण और और इसमें हमारे कद्
दशलक्षण पर्व । भाई यह दोनों व्रत करेंगे
और सास करके हर एक

मंदिरजीमें दोनों व्रतोंकी पूजा तो अवश्य
परी जायगी परंतु जहांतक हम जानते हैं
पूजाके साथ २ इस पर्वका क्या माहात्म्य है
और दर्शनविशुद्धि, विनयसंनता शीट



बनेष्वनतीचारादि तोहल भावनाओंको सम-
जाया नहीं जाता, जिससे इस पर्वमें हमारा
क्या २ कर्तव्य होना चाहिये यह सर्वसाधा-
रणको मालूम नहीं होता इसलिये यह खास
आवश्यक है कि इन दिनोंमें यह दोनों
धर्मोंकी २६ भावनाओंका वर्णन सबको सु-
नाया जावे और व्याख्यानदि द्वारा भी इस
पर्वका महात्म्य प्रकट किया जावे । और जो
कोई यह दोनों व्रत करते हैं उनको तो तो
लहकारणधर्म और दशलक्षणधर्मकी कई
पुस्तकें मंगाकर अपने २ नगरमें वितरण क-
रनी चाहिए ।



श्री सम्मेदशिखरजीके पट्टेका
केस-इस पहाडका पट्टा हमको देनेके लिये
सर एन्ड्रु फ्रेजर हुक्म कर गये थे और
१००००) अपनी तरफसे दिये भी गये थे
परंतु बा० लार्ड मिन्टोने जाने समय यह हुक्म
रद्द किया था जिससे हमारी तरफसे राजा
पालगंजके उपर हमारीबागकी कोर्टमें ता०
१-९-१३ को दावा किया गया था कि
पट्टा कर दिया जाय या तो हमारे लिये, उसका
सूद और आन तकका उकसान हमको दिलाया
जाय आदि । प्रथम बा० धन्वलालजी और
बा० परमेश्वरीदासजीके नामसे दावा किया था

परंतु यह दोनों महाशयका अकस्मात् स्वर्गवास
हो जानेसे रा० व० दा० सेठ हुक्मचंदजी,
ला० जंबूप्रसादजी, सेठ हरमुखदासजी, ला०
प्रभुदयालजी आदि ९ महाशयोंके नामसे दावा
चलानेकी स्वीकारता ता० १-२-१५ को
मिलने पर ता० १३-५-१५ को इस्युस
(Issues) निकल कर विलायतको सर
एन्ड्रु फ्रेजर और एक० डबल्यू डयूकके इन-
हार लेनेके लिये कमीशन ता० १७-२-१६ को
गया था वह मार्च १९१७ को वापिस आया
परंतु फ्रेजर सार्जन बीमार होनेसे इनहार नहीं
दे सके । बाद मुकदमा ता० २८-६-१७ को
शुरू होकर अपनी ओरसे बा० मौजीलालजी,
बा० सुन्दरलालजी बैनाडा, बा० दुर्गाप्रसादजी,
बा० विहारीलालजी, एक० डबल्यू० डधूरु
(कमीशनसे) की गवाही ली गई और मुद्दाल-
योंकी ओरसे बा० शतिलप्रसाद, बा०
विपिनविहारी, लक्ष्मीचंद (धे०) की गवाही
हुई थी । बाद इसका चुकाटा हमारीबाग
कोर्टसे ता० २५-७-१७ को यह मिला कि
मुकदमा मय खर्चके खारिज (डिस्मिस) किया
जाता है । इसका विशेष खुलासा पत्रद्वारा
आनेपर मालूम होगा और आगे क्या कार्रवाई
करनी चाहिये उसका की विचार किया
जायगा ।

ढालगण चिना मूल्य-कविवर टंकचंद्र
कृत ढालगण नामक ओटीसी पुस्तक, कि
जिसमें ३२ उपदेशात्मक पदोंका संग्रह है
इसके प्रकाशक-बाळमुकुंद मूलचंद जैन,



सिंहौर छावनीसे आधे आनेका पोस्टेज स्टैप भेजनेसे विना मूल्य मिलती है ।

चाहिये सच्ची देशसेवा और समाजसेवाका दृढ़ संकल्प आदि ।

त्यागी ब्रह्मचारियोंका चातुर्मास
निम्नलिखित त्यागी ब्रह्मचारियोंके चातुर्मास निम्न लिखित स्थानोंपर होनेकी खबर हमें मिली है ।

मुनि अनंतकीर्तिजी—कोल्हापुर ।

“ चंद्रसागरजी—बागीदोरा (वांस्वाडा)

ऐलक पन्नालालजी—पहाडी धीरज, देहली ।

ब्र० शीतलप्रसादजी—तुक्कुगंज, इंदौर ।

वर्णा भगीरथजी—खतौली (मुजफरनगर)

ब्र० शांतिदासजी—शाहपुर (निमाड)

ब्र० महावीरप्रसादजी—नासिक

भ० सुरेन्द्रकीर्तिजी—सोनित्रा (पेठ्लाद)

भ० विजयकीर्तिजी—ओराण (प्रांतिज)

भ० मुर्तीद्रकीर्तिजी—डुंगरपुर (रजपुताना)

ब्र० हेमसागरजी—करमसद (आणंद)

और भी त्यागी ब्रह्मचारियोंके चातुर्मासकी खबरें हमें मिलेगी तो प्रकट की जायगी ।

झालरापाटन शहरमें—गत ता०

१९ को सेठ लालचंदजी सेठीके सभापतित्वमें सभा हुई जिसमें देशभक्त श्री० दादाभाई नौरोजी और पं० गोपालदासजी नरैयाकी मुख्य पर शोक मनाया गया जिसमें पं० गिरधर शर्मानि यह दोनों मेहाप्रलयोंके देशसेवा और समाजसेवाके कार्योंका बड़ी खूबीके साथ कथान किया । अंतमें सभापतिमहोदयने कहा कि अब भी इस देशमें कई दादाभाई और कई पंडित गोपालदासजी बन सकते हैं ।

प्रतिमा मिली—नयावांस (हाथरस) से सुखवासीलाल जैन लिखते हैं कि यहांसे एक फर्लांगपर एक कुमारको वर्तनके लिये मिट्टी खोदते खोदते ११ हाथ गभीरनके नीचेसे एक प्रतिमा प्राप्त हुई जो उन्होंने ले जाकर अपने मकानपर रख ली । बाद जाट कौमका एक मनुष्यने इसके मकानपर यह प्रतिमा देखकर कहा कि तु इस प्रतिमाको अपने मकानपर न रख आदि । फिर सबको कह देनेपर सब जैनी भाई यह प्रतिमा देखनेको आये और गत ता० १९ को श्री चन्द्रप्रभुजीके प्राचीन मंदिरमें यह प्रतिमा लाकर विराजमान की गई है । पंडित लोग परीक्षा करने आ रहे हैं । कोई पूजनीक कहता है और नहीं कहता है कि प्रतिमा खंडित हो गई है, नाकपरकी नाक नीची मालूम होती है आदि । इस बातका शीघ्र ही निर्णय होना चाहिये और प्रतिमा, जीपर कुछ लेख मालूम होता हो तो प्रकट करना चाहिये ।

ज्वरांकुश मुफ्त—माउलाल कन्हैयालाल पाटणी मु० कांची (अहमदनगर) ने हमेंको “ज्वरांकुश” का नमूना भेजा है जिसके बारेमें आप लिखते हैं कि इससे सब प्रकारके ज्वर आराम होते हैं आदि और जिनियोंको डांकरतर्च भेजनेपर हम मुफ्त भेजते हैं आदि । इसलिये जिन भाइयोंको ज्वरांकुश चाहिये पत्र और पोस्टेज स्वर्च भेजकर भेजा दें ।



राजगृहीमें दो मुकदमें चल रहे थे । जिनका फैसला हो गया है और अपनी धर्म-शालाके सामनेकी जमीन (एक खेत जिनका प्लॉट नं० ४८४५ है) की अपीलमें पटना हाईकोर्टमें (८००) हम लोगोंसे श्रे० भाइयोंको दिलवाये और जमीनका सबहक हमको दिला दिया गया है । इसमें नवीन मन्दिर बनवानेका शीलारोपण ता. २२-६-१७ को हस्ते ला० न्यायमलजी देहलीके हुआ था । दूसरा मुकदमा पहाड़के उपरके १९ मंदिर दि० आम्नायके हैं उनके कच्चे वास्तका बिहार कोर्टमें चलता था जिसमें मजि० सा०ने नं० १४९ फौजदारीका नोटिश बहाल रखनेपर हाईकोर्टमें अपील की गई थी जिसका चुका-दा माननीय जनोंने ता० ३-७-१७को किया कि खारिज किया जाता है आदि । हाईकोर्टमें यह दोनों फैसले हमारे ही लाभमें हुए हैं ।

इन्दौरमें गत ता. २४-६-१७को मु-रेना विद्यालयको स्थायी करने और उसके साथ स्व० पं० गोपालदासजीका नाम जोड़नेके लिये रा० व० दा० सेठ हुकमचन्दजीके सभा-पत्रित्वमें सभा की हुई थी जिसमें (१००००) सेठ हुकमचन्दजी, (१०००) सेठ रोडमल मेहरान सुसारी, (५०१) फतेहचन्द इन्दौर और (२५१) भीलानी चांदुलालने दिये तथा (३८०००) तो सेठ हरीभाई देवकरण सोला-पुरवालोंकी तरफसे पहलेसे मिलनेकी स्वीकारता हुई थी इससे एक लक्ष रु०के स्थायी फन्डके लिये और (५००००) की जरूरत है ।

खतौलीमें दत्ता अग्रवाल भाईओंको प्रशाल पुननादिके लिये ता. २२-६-१७को दि० जैन चैत्यालयकी स्थापना व० शीतल-प्रसादजी द्वारा हो गई है । इस प्रकार दा-होदवाले अधिवेशनका प्रस्ताव अमलमें लाया गया और दत्ते अग्रवाल भाईयोंको धर्मसाधन-में सुभीता हो गया है । प्रयासका फल !

टीका लगानेसे हानि-लाभशंकर लक्ष्मीदासने गजटमें एक पत्र प्रगट कराके दिख-लाया है कि चेषक (शीतल) का टीका जो बच्चोंको लगाया जाता है उससे बहुत हानि होती है । इसके विरुद्ध लंडनमें एक सभा है जो इसके रोकनेका प्रयत्न करती है । पता है "National anti-vivisection league, Denison House, Vauxhall Bridge Road, London S. W." इसके उद्योगसे इंग्रेज सरकारने विज्ञापनमें जवर्दस्ती टीका करानेका कायदा उठा दिया है, अब लाखों इंग्रेज अपने बच्चोंको टीका नहीं लगवाते । वहाँ अब ५० लाख बिना टीका लगे बच्चे हैं (बम्बई कानि-कल मार्च १९, १९१७) । इस देशवासियोंको भी समझकर टीका लगानेसे बचाना चाहिये व सरकारको भी यदि यह हानिकारक है तो इस बातको बन्द करा देना चाहिये ।

“जैनमित्र”

पशु-वध बंद-उत्तरपुर (बुंदेलखंड)
नेराने अपने राज्यमें आज्ञा निकाली है कि
(१) राज्यभरमें मितने तालाब हैं उनमें जाल
या बंशी न डाली जाय अर्थात् मछलियां न
मारी जाय । (२) राज्यभरमें भेरी आज्ञाके



सिवाय कोई शिकार न खेलें । (३) राज्य-भरमें देवी-देवताको जीवकी बली न दे । (४) राज्यभरमें बकरा बकरी लेनेवाले हिंसक और बेचनेवाले दोनोंसे चौथाई २ रुपये लिये जाय । दूसरे महाराजाओंको इन दयालु महाराजाका अनुकरण करना चाहिये ।

बम्बई और अहमदाबादमें श्रीगुत वाडीलाल मोतीलाल द्वारा संयुक्त जैनबोर्डिंगकी स्थापना होगई है और झालरापाटनके महाराजा भवानीसिंह बहादुरने ३० वर्ष तक इस संस्थाको (५००) वार्षिक सहायता (दस हजार रु०) देनेकी स्वीकारता दी है ।

इन्दौरमें कंचनबाई श्राविकाश्रमका वा-पिकोत्सव और उद्योगशाला खोलनेका समा-रंभ श्री सो० कमलाबाई कीचेके सभापतित्वमें ता० १७-६-१७ को हुआ था । इसी मौकेपर प्रमुखा और संचालिका कंचनबाईजीका व्याख्यान बहुत ही प्रभावशाली हुआ था ।

कन्याका दाम घटे गया—जयपुरमें भी कन्याविक्रयकी भरमार है । अभी एक कन्या जिसका मूल्य ९००) पक्का कर लिया था उसको २०००) देकर दूसरेने खरीद ली ! अतीव खेद है कि जयपुरकी जैन पंचायती इसका कुछ प्रबंध नहीं करती ।

इन्दौरमें सेठ हुकमचंदजी आदि तीनों भाइयोंने मिटकर जो नवीन मंदिर करीब दो लाख रुपये लगाकर बनवाया है उसमें प्रति-माजी विराजमान करनेका उत्सव आपाढ़ वदी १० को हुआ था जिस वस्तु सेठजीने रु. ५००००) भस्मन आदिके लिये और अ-

पनी पत्नी सौ. श्री कंचनबाईकी तबीयत डेढ़ वर्षमें अच्छी हो जायगी तो १०००००) भर चांदीसे श्रीजीकी तीन प्रतिमा बनवाकर उपरकी वेदीमें विराजमान करनेकी प्रतिज्ञा ली है ।

झयडाका अंत—झावेडा (टोंक)में करीब ५० वर्ष हुए दिगंबर और श्वेतांबरमें मंदिरके लिये झयडा चल रहा था वह अदालतसे तय होकर दिगंबर जीते और श्वेतांबरियोंको १६००) देने पड़े । उस मंदिरजीमें आपाढ़ सुद १०मी को प्रतिमाजी भी पधराई गई और उत्सव भी किया गया था ।

देहली निवासी बाबू प्यारेलालजी बकील **रायसाहिबके** पदसे विमुक्ति हुए हैं ।

कचनेरमें विवाहोत्सवके समय पाठशालाओंमें बड़ी समा की गई और खंडेलवाल पंच महा-सभाका भी नैमित्तिक अधिवेशन होकर तीन प्रस्ताव पास हुए कि—सभाका अधिवेशन आ-गामी कार्तिक सुदी १५ को कचनेरजीमें किया जाय, नादगांव वाली बाईके मृत्युपर मुकद्दमा चलाया जाय और नायडोंगरी वाले खचंदजीसे कुछ अनीति हो जानेके कारण दंड लिया जाय कि वे १०००) कचनेर पा-ठशालाको दें और वहां जाकर कर्मदहन पृथाविधान करावें और सम्मेलनशिलरकी या-त्रा करें । यह अनीति क्या हो गई थी सो भी प्रकट होनेकी आवश्यकता है, जिससे समाजको मालूम हो जावे कि यह कैसा अ-राध था और उसको उचित दंड दिया गया है या नहीं ।

જબલપુરમાં સિંચઈ ગરીબાસનીકે વૈત્ર-
કા વ્યાહ હો ગયા નિમંમેં વિદ્યાદાનમે તો
કુટ મી નહીં દિવા ગયા પરંતુ રંડોકા નાચ
તો સ્વૂન કરાયા ગયા ।!! સેદ!

અલાહવાદ બોર્ડિંગમેં સ્ત વર્ષકી કો-
લેજકી પરીક્ષામેં બેઠે હુણ ૧૬ વિધર્મિયોમેંમેં
૧૪ વાસ હુણ હેં ।

દાનવીરની સ્મૃતિ સલામીમાન સ્વર્ગીય
દાનવીર જૈનકુલપુત્ર શેઠ માણેકચંદણ
જે. પી ના સ્વર્ગવાસની સ્મૃતિ સભાઓ
અખાડ વદ ૯ ને દિને મુંબઈ આનિકાગ્રમ,
અમદાવાદ બોર્ડિંગ, કોલ્હાપુર બોર્ડિંગ, અને
સ્તલામ બોર્ડિંગમાં થઈ આ શેઠજીના અધોક્ષિક
શુભોત્તુ વર્ણન થઈ તેતું અનુકરણ કરવાનો
બોધ આપાયો હતો. દરેક સ્થળે દર વર્ષે
આવી સભા થવાની જરૂર છે.

સોલાપુરમાં તા. ૧૭-૬-૧૭ ને દિને સ્ત્રી
સેડે યીમતી તારાબાહતું ' સ્ત્રીઓને કસરત
કરવાની જરૂર ' ઉપર જાહેર ભાષણ આપ્યું
હતું તથા જૈન પાઠશાળામાં સ્ત્રીઓપરથી
કસરતો બતાવી વ્યાખ્યાન આપ્યું હતું. વળી
ત્યાની ગાતમ નેમચંદ વ્યાયામશાળાના મહોની
ખેસે જોઈ મિસ તારાબાઈ પ્રસન્ન થયા હતાં
અને પોતાના એક ખેસની અડધી ઉપજ
વ્યાયામશાળાને અર્પણ કરી હતી.

અમદાવાદમાં એક દિગંધરજીતું શુભ થયું-
જાણી (અમલગર, ઈડર) થી શા માણેકલાલ
બાઈચંદ એક પત્ર દ્વારા જણાવે છે કે ' મારા
બાઈ જગનલાલ બાઈચંદ (કે જેની ઉંમર ૨૪
વર્ષની અને રંગે સ્વાભિક ગેરાશ છે) અખાડ
સુદ ૭ ને દિને ધીના'ડમ્યા લઈ અમદાવાદ
આપાર માટે ગયા હતા અને ત્યાં હતરી
ધીના ડમ્યા દલાસને ત્યાં સુધી વીસીમાં જમવા
અથવા તે દરમ્યાન કાલુપુર બહારની વીસીમાં
મંચભાઈના ડેઝાના માળ ઉપર અગર નીચે

બેઠે રહ્યું (૧) ના માથુમેંએ તેને એકસો
જેઠ ગજરાપી નાંખી માળ ઉપર ચઢાવી
કમળે કરી અખાડ સુદ ૮ ને દિને
મૂતા લઈ ગયેલાતું જણાવાથી અમે
તથા અમારા બંનેવી મગનલાલ લખમીચંદે ત્યાં
જઈ તપાસ કરી, પણ એ દિવસ રાખી ત્યાંથી
ક્યે ડેકાજે લઈ ગયા તેનો પત્તા નથી, પણ
સ્વાભાવિક રીતે અમારા જાણવામાં આવે છે
કે પંચમ નામે રૂકી લઈ ગયેલાતું સંભ-
ળાય છે, જેથી રૂકી; તરફના દિગંધર જૈનો
આ બાબતની તપાસ કરી અમારા બાઈને છો-
ડાવે તો મહાન પ્રુણગમ કરી શકશે. અમારે
શું કરવું તેની કંઈ સમજ પડતી નથી અને
નીરાશ થઈને બેઠા છીએ. વળી આપણા દિ-
ગંધરી બાઈચંદએ અમદાવાદ વગેરે શહેરોમાં
જતાં બહુ હોશિયારી રાખવી જેથી ફરીથી
આવા સોડો ફસાવી જીંદગીને હાનિ કરે નહી,
તેમ જૈન સોડોએ અમદાવાદની વીસીમાં જમના
જયું નહીં કારણકે એ સોડો ગમે તેવા મા-
ણસને લાવવ્ય આવી પાછળ રહીને ફસાવે
છે. વળી એ વીસીઓમાં જમવાથી વડવાઈ
મરના જેવું થાય છે તથા જીંદગીને પણ
નુકસાન થાય છે, માટે એથી સાવધ રહેવું..."

જો આ બાબત ખરી હોય, તે નામદાર
સરકારે આ બાબત તરતજ તપાસ કરી બાઈ
જગનલાલ બાઈચંદનો પત્તા મેળવી આપવાને
બંધનું કરવાની આવશ્યકતા છે.

આ વર્ષે બાદરના માસ એ હોવાથી તથા
પર્યુપણ પર્વમાએક તિથિ ઘટતી હોવાથી સોલહ-
કારણ પર્વ પ્ર. બાદરના સુદ ૧૫થીજ શરૂ કરવાના
છે તેમજ દશલક્ષણપર્વ ખીજા બાદરવા સુદ ૪
થીજ શરૂ કરવાના છે અને પંચમેશ્વર સ્થાપના
તદા પંચમીતું વત તો પાંચમેજ કરવાતું છે
જે અમે અમારા પંચામમાં પ્રકટ કરી
મળાજ છીએ, પણ પ્રાચીન વિવાજ મુજબ
કેટલાક બહારકો પર્યુપણના દિવસોનાં લીપણ !
મામેગામ થઈ છે તેમ જુગરપુરથી બ. મુતી-દ-



કાર્તિકે વ્રતનો જોરો ગામેગામ ખીડ્યો છે તેમાં પ્ર. ભાદરવા વદ ૧ થી સોલહદશરણ અને પંચમેર તથા પંચમીનું વ્રત ખીજ ભાદરવા સુદ ચોથે કરવાનું લખ્યું છે તે તદ્દન ખોટું છે, માટે એથી ભંગણામાં પડતું નહિ. મોટાપ મેળવાવાનાં લોભથી આવા પ્રયાસ કરનારા અપદ મહારકોથી સર્વેએ વારંવાર સાવધ રહેવાની જરૂર છે.

મૃત્યુ સમયે દાન—આમોદના હરજીવન (કાળીદાસ) હરજીવનદાસના પુત્રના સ્મરણાર્થે ૮૦) તું દાન નીચે પ્રમાણે કરવામાં આવ્યું છે—

૧૦) અમદાવાદ શ્રે. મો. દિ. જૈન એડિંગ, ૭) આવિકાશ્રમ, મુખ્ય, ૬૩) તીર્થો, ગામેના મંદિરો તથા સદાવત વજોરેમાં.

૧૦. વિજયકીર્તિએ ઓરાણમાં ચાતુર્માસ કરી હોધો છે, તેમના સખધમાં એક લખનાર જણાવે છે કે એમની સાથે પાલખી ઉચકનારા ભોષજો સિવાય ખીજ ૧૦ માણસો તથા ૪ થોડા છે (હજી આ રાજવેલવ તો જાણ્યોડો કહેવાય !), ઓરાણ પ્રાંતિજ વિભાગોમાં ભાવનાઓ આપવાની મરજી ન હોવા છતાં પણ એક ગામવાળાએ આખી, ખીજ ગામવાળાએ આખી એમ કરતાં બધા ગામવાળાઓને આપવી પડે છે । ન આપવાવાળાને પણ આપવી પડે છે તેનું કારણ એ છે કે ન્યાતિમાં આપણો હલકાઈ પડશે ને નિંદા થશે અને એ વાત ખરી છે કે જે માણસ મહારકજી મહારાજના મત (ધારા ૧) પ્રમાણે ન ચાલે તેની દરેક વાતમાં ને રીતમાં બદલો કરે છે ને મહારાજના મતને પુષ્ટિ આપે છે વજોરે.” મહારાજની એક દિવસની ભાવનામાં કુલ્લે કેટલો ખર્ચ થાય છે અને એક ભાવના દીક વધુમાં વધુ કેટલા રૂપ્યા પડાવાય છે તે પણ આ ભાષ લખી મોકલશે તો અમે પ્રકટ કરતા છજીએ હીએ. ઓરાણ પ્રાંતિજના ભોળા ભાષજો શું હજી નહીં ચેતશે ? એવું બહા (૧) મહારકો મુજરાતના ભોળા બહોને બમાવવામાં હોંશિયાર છે એમાં કંઈ શક નથી.

મેવાડા યુવક મંડળને સૂચના—સોહ ગ્રામાં આ મંડળની થયેલી બેઠક સખધમાં કાણીસાની મિત્રમંડળી એક પત્ર દ્વારા જણાવે છે કે એ બેઠકમાં ગામડાઓમાં ખરાબર આમંત્રણ ન થવાથી જોષએ તેવી સંખ્યા એકઠી થઈ નહોતી માટે મંડળનું કાર્ય મજબૂત કરવાને નીચલા પ્રયાસો થવાની જરૂર છે—(૧) હેતુએ છપાવી પ્રકટ કરવા (૨) દર છમાસે બેઠક કરવી, ૩) સાધારણ અમુક ફી લેવી વજોરે.” આ બાબત એના કાર્યકર્તાઓએ લક્ષ આપવાની જરૂર છે.

થેથાપુરની પાઠશાળામાં અખાડસુદ ૧૧ને દિને શીવગંજના શા. પ્રેમચંદ કરતુરચંદના પ્રમુખપણાનીચે થયેલી સભામાં શા. સુનીલાલ સંકળચંદે આંનસિક શક્તિ વિષે બાપણ આપ્યું હતું અને ૨૦ની સંખ્યા લાભ લે છે. પ્રમુખે રૂ. ૧૦) તું ધરીપાળ, ૨) મદદ અને પ્રભાવના વેચી હતી. નવાગામ (ઉદેપુર) માં એક વર્ષ થયાં દોભાડા કરતુરચંદ અમથારામ દિ. જૈન પાઠશાળાની રચાપના થઈ છે તેની મુલાકાત કેશરીમાણની યાત્રાએ જતાં રોક લઈજીભાષ લખમીચંદ એકઠી, વીરચંદભાષ (મુડેડી) અને સુનીમ નાનચંદે લીધી હતી, જેથી જણાયું છે કે કુલ સંખ્યા ૫૦ છે, જેને વ્યવારિક અને ધાર્મિક શિક્ષણ અપાય છે. શિક્ષણ તપાસતાં તે સંતોષ કારક જણાયું હતું અને વિદ્યાર્થીઓને ઉત્તમ બોધ આપી ઇનામ વેચવામાં આવ્યું હતું.

નહેર સભા અને દારૂ નિષેધ-વટા-સણ (મકીકાંઈ)માં શા. હાથીચંદ માજેકચંદ સોનાસણવાળાએ જઈ એક રાત્રે નહેરસભા કરી ગામના ૪૦૦ માણસોને એકત્ર કરી દારૂ નિષેધ અસરકારક વિવેચન કરવાથી ગામના રજપુત વજોરે તમામ લોકોએ દારૂ નહીં પીવાની પ્રતિજ્ઞા લીધી હતી અને સદીએ કરી આખી હતી તેમજ એ કસવ તોડે તેની પાસે રૂ. ૫૦ દેવાતો અને તે દરેકને ઉપયોગ થોમ્સ બનામાં થોમ્સના પૂરક કરવાને એક કમીટી પગ નીમણ હતી. પ્રયાસનું ૬૫ !



લગ્નને નામે વાલાઓ ઉપર

થતો જુલમ.

- સધ્યાકાળનો વખત થયો છે. સૂર્ય પશ્ચિમ દિશામાં પોતાની ગતિથી જઈ રહ્યો છે. દિવસનું અન્નવાણું મંદ પડવા લાગ્યું છે. પશ્ચિમ દિશામાં રંગબેરંગી કબર દેખાય છે. રૂનિ પોતાનો અધકાળ ધીરેધીરે આકાશમાં પ્રસરવા લાગી છે. જિનમંદિરમાં આરતી થતી હોવાથી ધંતમંજરી આદિનો અવાજ થઈ રહ્યો છે. ભગ્યજનો જિનમંદિરમાં આરતી થાય છે એમ જાણી ધરકામ બંધ કરી મંદિરમાં જાય છે. આરતી થઈ રહ્યા પછી શરણસભા થઈ ત્યાં ર પછી પાઠશાળા ઉપડી સંઘના વિદ્યાર્થીઓ પાઠશાળામાં ભેગા થયા છે તેવામાં મોહનલાલને તેમના મિત્ર છોટાલાલનો સમાગમ થયો. એ બંને મિત્રો વચ્ચે યોગીવાર ગાતિ ઉપાતિ વિષે ચર્ચા થઈ, ત્યારપછી મોહનલાલે છોટાલાલને કહ્યું કે આ વર્ષે તો આપણી ગાતિમાં એવા જનાવ બન્યા છે કે જે સંતબળવાથી આપણને ખેદ થાય છે.

છોટાલાલ—શું, શું બદલું?

મોહનલાલ—તમે જાણતા નથી કે ઘણી સુવર્તીઓ શોક રૂપી શળીએ વીધાઈ ઘણું દુઃખ ભોગવે છે અને ઘણીની છાંદગી છૂદ અને બાળ પતિને પાતલે પડવાથી રડ થઈ ગઈ છે.

છોટાલાલ—આવા દુઃખ હોયોતું ક્યા તમામના લેવામાં આવે છે તેપણ સમજતા નથી કે કેટલીક તરણ, બાળાઓને આખી છાંદગીસર અસમ દુઃખ ઉઠાવતું પડે છે.

મોહનલાલ—પણ મિત્ર, આપણી ગાતિમાં બાળનમ મોટા પ્રમાણમાં થાય છે. છતાં ગાતિ અગ્રેસરોની આંખ કપાતી નથી તે આપણું અને ગાતિનું હિતમાં સુષવત્ત પુરવું છે. “જેના અશ્વિનાને આંધળા, નેનું કંટક પશુ

કવામાં પડે” એ વહેવત પણ હવે આવી હશે સુધી છે.

છોટાલાલ—પણ હાલમાં તો જે મન્યાય તે બોલું. પેલા આપણા એક ગાતિ બાઇએ પોતાની બાળસુત્રીના લગ્ન દરમિયાન કરી તેનો જન્મ બંધ કર્યો છે.

- મોહનલાલ—આવા કૃત્યો કરવાને તેના લેનાર દેનાર તથા તેમાં મંમતિ આપનારાઓને અંધ થાય, તેમાં તરણ બાળાઓને શો અપરાધ ? અર્થાત્ કંઈ નહિ.

છોટાલાલ—ભાઈ, આવા જાતિ આંખે પોતાની વડાલી બાળાઓને કુસમાં નોખવા કોણ અત્યંત શુદ્ધિના તૈયાર થયા હશે.

મોહનલાલ—મારા વચવામાં આબુ છે કે સ્વાર્થી મળ્યાં શાસ્ત્ર લખનાર, નહિ કોઈ નાર પક્ષ કરનાર.

તેમ જ્યાં સુધી આપણી ગાતિમાં બાળાઓ અને દુઃખ વિવાદ સંબંધી કંઈ પણ પ્રમાણ થયો નથી ત્યાં સુધી હું તો એમજ કહીશ કે આવા કૃત્યો કરનાર તથા તેને સંમતિ આપનારાઓને અધમગ્ન છે.

છોટાલાલ—અરે ! અંદાડી માણસો અજાને વશ થઈ પોતાની બાળાનું કંઈ દિન ચાલતા નથી. જા, પેમા અને કુળજ દક્ષત જુવે છે. મુરતીઓ કેવો છે તેની કંઈ બોલ બોલ કુત્તા નથી અને પોતાની મિત્રા મોટાઈ અને પેમાના સ્વાર્થીથી મોકકાલી કોટે માળા આંધ્યા જેવું કરે છે.

મોહનલાલ—અધુ ! આપણે એક જુવન કિમતનું કપડું સેવાને કેટલો ભયો વિચાર કરીએ છીએ, તેમ રસ્તામાં સારા સંભાતને માટે કેટલી કાળજી રાખીએ છીએ તેટલી કાળજી જે જન્મ પર્યંતનો સાર્થી કરવાનો છે, જેના પર સુખદુઃખનો આધાર રાખવાનો છે તેને માટે અવશરૂપી અજાને વશ થયેલા કેટલાક માણસો કંઈપણ વિચાર કરતા નથી. અમણ, શુદ્ધિ વણિક ! કહેવાયું હિંમાં રૂદિને



આધીન થઇ અવશિત જોડાં મેળવે છે તે કેટલું શોચનીય અને વિચારવા જેવું છે ? એથી કેવાં માણાં પરીણામો આવે છે તે તેજો અનુભવે છે, કનિયામાં જુએ છે, છતાં છતી આંખે પોતાના પગમાં કુદાડો મારી દુઃખ વહેણી લે છે અને નીચેની કહેવત સુજન્ય અને છે.

“જે આત્માના પ્રભુચ ઉર આદેશ નવુલા વિનાનાં, લગ્નો કીધાં લગન નહિ એ સાખ શુભિ પુરે ? હા-ડાહી સ્ત્રીને અમુક પતિ એકા ઉડો અંતરે છે, જોડી વિના યવન ઝરણુંના વહાવ્યું પડે છે.

છોટાલાલ—ભાઈ, તમારું કહેવું સત્ય છે. બાળાઓ ખરેખર ધરસકે રહે છે, તોપણ આપણી માતિના કેટલાક અગાની બાઈઓ પોતાનો તુલ્ય રોકે છોડતા નથી, માન જોડી મોટાઈને વળંગીને પતંગીઆની ભાઈક યાદોમ કરીને વિચાર કર્યા વિના એકદમ સાડસભરું કામ કરે છે અને અંતે તેમને પાછળથી ધણું સોસડું પડે છે.

મારા સુગ બાઈઓ અને માતિ અગ્રેસરો, મારી નમ્રતા પૂર્વક દરેક પ્રત્યે વિનંતી છે કે આપણે તેનું મૂળ કારણ દેખ્યાં નેહણું તો જણાશે કે આપણે કેળવણીમાં કેટલા પછાત છીએ ! લગભગ આપણા દેશનો કે લાગ કેળવણીમાં પછાત છે. આપણા દરેક બાઈઓની ફરજ છે કે પોતાના છોકરા તથા છોકરીઓને સારી કેળવણી આપે. કેળવણી માટે વગેરેના રાજ્યના નામદાર ગાયકવાડ મહારાજ આસ પધાન આપે છે અને ફરજિયાત કેળવણી અપાય છે. તેઓ શ્રીમતે બાળકમ માટે ફરજિયાત ફાયરો ધડો છે અને આપણું ધણું દિલ ઈચ્છુ છે તેથી આપણે તેઓ શ્રીમતેને નેટસો આમાર માનીએ તેટલો બોલો છે. આવા આપણા માયાગુ સરકાર તરફથી સાગણી સેવાયા છતાં આપણા કેટલાક બાઈઓ ફરજિયાત પાલન ધાય છે, તોપણ આ વિષય પર કંઈ પણ ધ્યાન આપતા નથી, તે ધણું મૂઝા બરેલું છે. ભારે આપણે આપણા સંતાનને કેળવણી

આપીશું અને માતિમાંથી કુરિવાજો દૂર કરીશું, બાળલગ્ન, કન્યા વિક્રય, વહાવિવાહ વગેરે કુરિવાજોનો યોગ્ય પ્રયત્ન કરી તે અટકાવવા અને તે બદલ એકપતાયી ધ્યાન ખેંચીશું, તો આપણી ચડતી થશે અને આપણે ઉચ્ચ સ્થિતિ પર આવીશું.

એક દશાહુમેક માતિ સેવક.

માનો કહી હમારી ।

(ગજલ)

અજ્ઞાતિ જો ચાહો કરની, માનો કહી હમારી ।
 પરમાદ ત્યાગ દો અવ, માનો કહી હમારી ॥૧॥
 હૈં લાલોં જૈની દેતો, નરો મૂલ મંત્ર જાને ।
 પરચાર કરદો ઘર ઘર, માનો કહી હમારી ॥૨॥
 અજાનતો શો અંધે, પૂજે કુદેવ પેહુતો ।
 દો સરપદેવ મતલા, માનો કહી હમારી ॥૩॥
 ધણુ ઠગિયોં જાલિયોંકો, ગુરુદેવ જાન પૂજે ।
 મતલાદો સત્ય ગુરુકો, માનો કહી હમારી ॥૪॥
 પદ્ કર્મ મુખ્ય ધાવક, પાલે ન મહુત માર્દ ।
 મતલાદો મુખ્ય કર્તવ્ય, માનો કહી હમારી ॥૫॥
 નિયાસે હીન દોકર, નહીં યાજ્ઞ દેલ જાને ।
 વિદ્યા પ્રચાર કરદો, માનો કહી હમારી ॥૬॥
 યાજ્ઞોંકે શાળ કે વિન, રોજાય શટ વિધર્મી ।
 ડગ ચિગતો કો લટાલો, માનો કહી હમારી ॥૭॥
 દલ ‘રત્ન’ ધર્મકા ગવ, કરદો પ્રચાર ઘર ઘર ।
 જૈની વરણે ચાલો, માનો કહી હમારી ॥૮॥

રતનલાલ જ્ઞાણશ્રી ફોલીકળા (મધુરા)

દો રંગીન નકશો ।

અર્ધાદ્રી પકા નકશા (૮)

નવનસ્ત્રકો મેદકા હસ

(સંચારવહા ઓર વરદેવ્યા સહિત) નિર્ફ. -)

મૈંગાનેકા પત્તા-

મૈનેમર-દિ.૦ જૈન પુસ્તકાલય-મૂરત.



શેઠ પ્ર. મો. દિ. જૈન યોડિંગ

સ્કૂલ-અમદાવાદ.

મહેરખાન મહારાષ્ટ્રી

ઉપરના નામવાળા ખાતાના સંવ. ૧૯૧૨ની ચિંતકોને માણુમ છે કે ગયા વરસ સન ૧૯૧૨ની સાલમાં દિવાળી પહેલાં દિવાળી યુગ્મ એક મેળાવડો થયો હતો, જે વખતે નિઝીટસે કમી-દીની એક બેઠક થઈ હતી, જેમાં અન્ય કામો સાથે કલેખ સીસ્ટમ અને કીચન સીસ્ટમ ઉપર કેટલીક ચર્ચા થઈ હતી ખાતાના કાર્યાલયકે તરફથી જેથી દલીલ રજૂ કરવામાં આવી હતી કે હાલની મોંઝવારી તથા વિદ્યાર્થીઓની જોરાક સંબંધી ચાલુ ફરીબાદો વગેરે અમરવડો દૂર કરવા તથા ખાતાની કાયમતા સચવાઈ રહેવા માટે તેનું ખર્ચ તેની આવકની હદમાંજ રહે, એવા હેતુથી કલેખ સીસ્ટમની તરફેણમાં કાર્ય-વાહકો હતા, જ્યારે કમીદીના કેટલાક શુદ્ધરથો-નું માનનું હતું કે કલેખ સીસ્ટમથી હાલની કાયમ આવકમાંથી ગરીબ વર્ગના વિદ્યાર્થીઓ જેઓ હાલ તેની પેઢીકે દારૂપેશી તરફેણ થાય છે, તેમને મળતો લાભ અટકી દરેક વિદ્યાર્થીને માથે ખર્ચયો જોતો વધી જશે. તેથી એ નવી સીસ્ટમ હાલ જો વરસ દાખલ કરવી અટકાવીને આવકમાં કંઈક વધારો થાય એવાં પ્રયત્નો લેવાં છેવટે કમીદી એવા નિશ્ચય ઉપર આવી હતી કે સન ૧૯૧૭-૧૮ ને સન ૧૯૧૮-૧૯ (માર્ચ સન ૧૯૧૮) સુધી જુની રીટી પ્રમાણે કીચન સીસ્ટમ ચાલુ રાખવી અને તે દરમ્યાન સન ૧૯૧૭ (ચાલુ) સાલના વાર્ષિક મેળાવડા વખતે કમીદીએ આવક વધારવાનો કંઈક રસ્તો શોધી કાઢવો, જેથી ગરીબ વિદ્યાર્થીઓને બલિષ્ઠમાં લાભ મળવો ચાલુ રહે.

આ ઉપરથી નિઝીટસે કમીદીના મેકેટર તથા મેગર મહેરખાન મારી વિનિત છે કે સન ૧૯૧૭ ની સાલના મેળાવડા માટે વખત નહક આપ્યો છે તો તે સંબંધી આજથી નિત્યાંત્ર કરી કંઈક મંગીન મદદ

મળે એવી મોઝવણી થવી જોઈએ. આજકાલ હાલના મુશ્કેલી જમાનામાં ચારે દિશાઓમાં બધી કામમાં કેળવણીનાં વાળાં વાગી રહ્યા છે. જુદા જુદા પ્રકારે દરેક શ્રીમંત પોતાના ધનનો ઉપયોગ કેળવણી વધારવામાં કરી રહેલ છે તેના નિયંત્રિતિય સર્વેજ વખતમાં આપણા શ્રીમંતો અને કેળવણીઓ જો ઉધે તો દુનિયાની કે-ળવણીની સરતમાં તેઓ પાછા પડી જશે. શ્રીમંત મન્નિ દાનેશ્વરી શેઠ માણેકચંદ હોરાચંદ અને સખાવતે પાઠાદુર તેમના કુટુંબે આવા ખાતા માટે આપણા જુદાસરત-માં પહેલ કરી આપણને નિયત કર્યા છે-પાણી કીચી આપણું છે ત્યારે ૧૪ વરસ પડી પશુ આપણે તેને પુર જોશમાં લાવણું એ હાલના કેળવણીકા ધાતાને અને શ્રીમંત સખી મરદોનું કામ છે. જુદાસરતના સદ્ગુહ-ર્યો, હજી તો આ કેળવણીનું પહેલુંજ ખાતું છે તેને મદદ કરતા માટે નિયત યાચો, જોરા રાખો અને પ્રમાણિક નિયંત્રી કામ કરી પોતાની દરજ્જા બળવો. આપણા વડીલોની પ્રતિષ્ઠા સાચવી રાખો, વધારો. કેળવણી વિના આપણી વ્યાપારી કામ એકઠા અવસ્થામાં પડી રહી છે તેને અનવાળામાં લાવવા મારા બહાદુર કેળવણીકા રતો બહાર પડો. હેન, મનથી પુરતી માદ આપો, અને તેથી કરી શ્રીમંત સખી શુદ્ધરથોના ઉદાર હાથને ધનથી લંબાવ-પ્રયત્ન કરો. એક હાથે તાણી પકડી નથી. શેઠ હોરાચંદ જુમાનજીના કુટુંબે પહેલ કરી દુનિયાની દૃષ્ટિમાં આપણને આગળ સુકયા છે તો તે મોઝો સાચવી રાખવા તન મન ધનથી પુરો પ્રયાસ કરશો તો વીર બગવાન તમારા કાર્યને યશ આપશે, તમારનું.

મહાધુર્યલક્ષ્મી ।

(જવિન હિન્દી રૂપમાં)

મુલ્ય ત્રિંક વાર, આના

મેનેજર, દિ. મેન પુસ્તકાલય-સુરત ।

श्री बृहस्पति निर्वाण संवत् पर- शंकाएं और उनका उत्तर ।

(जे० प० विहारीलालजी जैन, अमरोहा)

[गताक्रमे आये]

अब रही दूसरी शंका कि किस जैन ग्रन्थके आधार पर और किस प्रकार यह सम्प्रत-निकाया गया है । इस शंकाके विषयमें हमारे किसी २ जैन भ्राताने बड़े आश्चर्यजनक शब्दोंमें लिखा है कि यथा सागरोंके भी वर्ष हो सकते हैं ? जैसे सागरके जलकी थाह नहीं ऐसे ही सागरके वर्षोंकी गिनती नहीं । सागरके वर्षोंकी गिनती करना मानो समुद्रको खुल्लूमें माप लेना और भड़ानोंको भ्रममें डाल देना है । यदि सागरके वर्षोंकी गिनती हो सकती तो बड़े २ जैनाचार्योंने क्यों शास्त्रोंमें नहीं लिखा तथा एक योजन (दोसहस्र कोश) व्यासका और एक योजन ही गहरा गङ्गा मोणमृमिके सात दिन तकके मेंढके बाढाग्रोंसे खून भरकर और सौ २ वर्षके अन्तरसे एक २ टुकड़ा निकालना बताकर जो एक पल्पके वर्षोंकी गणना अचार्योंने बताई है वह इतने चक्रमें डालकर किसलिये कथनको इतना बढ़ाया और अपने समग्रालोको सोया ? बस अंकोंमें पल्पके वर्षोंकी गिनती लिख देते जयादि..... इसके उत्तरमें शास्त्रप्रमाणों द्वारा शंका दूर करनेसे पहिले यह निवेदन

है कि उपरोक्त बातोंको दृष्टिगोचर करते हुए हमारे भ्रातृगण जो कुछ शंका करें वह ठीक ही है । वास्तवमें कालके बहुत बड़े भागको "सागर" का नाम इसी लिये दिया गया है कि वह सागर अर्थात् समुद्रके समान महान है । सागरके महान कालको जिस सागर (समुद्र) से उपमा जैन ग्रन्थोंमें दी गई है वह सागर (समुद्र) भी कोई सामान्य सागर "हिन्द महासागर" या "पारिक्त महासागर" आदि जैसा छोटा सा नहीं किन्तु उसकी उपमा उस "लवण समुद्र" नामक महासागरसे दी गई है जो एक लक्ष महायोजनके व्यासवाले "जम्बूद्वीप" के निर्दिष्ट दो लक्ष महायोजन चौड़ा और एक सहस्र महायोजन गहरा बलयाकार है या इसके महत्त्वको भले प्रकार समग्रनेके लिये यों जान लीजिये कि अमेरिनी वित्तारानुसार आजसूझती मानी हुई सारी पृथ्वी जिसमें "एशिया, यूरोप, अफ्रीका, अमेरिका" आदि सर्व देश देशान्तर और "हिन्द महा सागर

* एक महायोजन दो सहस्र कोश या लगभग ४ सहस्र मीलका होता है ।



पाम्फिक महासागर, अष्टादिक महासागर आदि सर्व छोटे बड़े समुद्र गर्भित हैं ऐसी बड़ी २ छाछों करोड़ों पृथिव्या जिन एक ही "लवण समुद्र" में समा ससती है। ऐसे बड़े सागर (समुद्र) से सागरकं काटको उभरा दी गई है। ऐसी अवस्था में हमारे भ्रातृगणकी यह शक्त कि "सागरकं काटको वर्षों में गिन लेना और वह भी एक सागरको नहीं किन्तु कांडाकोडि सागर महान कानकों केवल ७३ ही अंकों में गिन लेना मानो सागरको चुल्हू में माप लेने की समान सर्वथा असम्भव है आदि" वास्तव में गणनीय है। परन्तु जिन समय ऐसे दावा करनेवाले भ्रातृगणको यह ज्ञान होगा कि इनने अधिक बड़े "लवण समुद्र" के सम्पूर्ण गलके यदि बहुतसे छोटे २ बिन्दु सरसोके दानों के बराबर कर लिये जावें तो उन सर्व बिन्दुओं की संख्या ७६ अंक तो दूर रहे ४७ अंकों से भी अधिक न बड़ेगी, तब तो उनकी डांका मासे सी बाहर निकटकर न जाने कहाँ कहाँ तरफ पहुँच जायगी। और फिर जिन समय उन्हें यह ज्ञान होगा कि गणितज्ञों के लिये गणितज्ञ भी कोई पूर्ण गणितज्ञ नहीं किन्तु मामूली होके लिये लवण समुद्र तो क्या, उससे छाछों करोड़ों गुणें बड़ महासमुद्र के परसों से भी शतांश सहस्रांश से भी बड़े बिन्दुओं की गिन्ती बना देना एक वैसी ही साधारण सी बात है जैसे कि किसी दीमाकी ईंटों की गिन्ती बना देना है, तब तो नहीं कहा जा सकता कि उनके भित्तकी उपेड़बुन उनके विचारों की तैयारी कराने नहीं पहुँचा वे।

अब रही यह बात कि यदि सागरकं कालकी गिन्ती वर्षों में निकाल लेना सम्भव होता तो बड़े २ आचार्यों ने भी निकालकर शास्त्रों में क्यों न बनादी अवस्था पृथ्वी की संख्याको बताने के लिये महान गढ़ा खोदने और बाढाघ भरने आदि आडंबर क्यों रना? इसके उत्तर में निम्नलिखित निवेदन है—

(१) आचार्यों ने तो सब कुछ निकाल कर शास्त्रों में रच दिया (जैसा कि आगे चलकर इसी लेख से आपकी ज्ञात होगा) पर जब हम ऐसे ग्रन्थों को देखें पढ़ें और ध्यान पूर्वक समझने का प्रयत्न करें तब ही तो जानेंगे। हमारे पवित्र और सम्पूर्ण विद्याओं के भङ्गार रूप जैन ग्रन्थों में कोई बात कल्पित व मन गढ़न नहीं किन्तु जो कुछ है वह सर्व वास्तविक और यथार्थ है और हर विषयको ऐसी उत्तम से उत्तम रीति से समझा दिया गया है कि योग्य रीति से ध्यान पूर्वक समझनेवाले को कुछ भी कठिनाई नहीं पड़ती। परन्तु और सागरादिक हिसान लगा देना तो एक बहुत ही साधारण और छोटी सी बात है पर जैन ग्रन्थों में तो गणिता विद्या के (अन्य विद्याओं या विषयों के समान) बड़े ही उत्तम २ माधनाटि बताकर विषय में विषय और कठिन से कठिन प्रश्नों और सूक्ष्म से सूक्ष्म बातों को इस उत्तम और सुगम रीति में साध कर सिद्ध कर दिया है कि देखकर आज कल के स्कूलों के पढ़े पढ़े २ गणितज्ञ तथा विद्वान भ्रातृगण बातों तले उगड़ी दवाकर अवगमक समुद्रमं



(२) एक महायोजन अर्थात् दो हजार कोस या लगभग चार हजार मील व्यासका और इतना ही गहरा गोल गर्त खोदकर जो पल्यका हिस्ताव समझाया गया है। उसका एक कारण तो यह है कि पल्य शब्दका अर्थ ही खत्ती खलियान, गढ़ा या गार है। दूसरा मुख्य कारण यह है कि पल्यके बड़े भारी कालका महत्व भले प्रकार चित्तर अंकित हो सके। यदि उसके वर्षोंकी महान् संख्याको केवल अंकोंमें लिख दिया जाता (जो ४७ अंक प्रमाण ही है) तो उसके वर्षोंकी संख्याको केवल अंकोंमें लिख दिया जाता (जो ४७ अंक प्रमाण ही है) तो उसके वर्षोंकी महान् संख्याका पूर्ण और वास्तविक महत्व कदापि चित्तर अंकित न होता। जैसा कि श्री ऋषभ निर्वाण सम्बत्का वास्तविक और पूर्ण महत्व शंका करनेवालोंके चित्तर अंकित नहीं हुआ जो पल्यके वर्षोंकी संख्यासे केवल संख्यो गुणा बड़ा नहीं किन्तु संख्यो गुणोंसे भी करोड़ों गुणा बड़ा ७६ अंकोंमें है।

उदाहरणके लिये श्री जिनवाणी के अपुनरुक्त अक्षरोंकी संख्या हीको ले लीजिये जो एक वष एकट्टी अर्थात् १८४४६७४४-०७२७०८५५१६१५ केवल २० अंक प्रमाण है। इन अंकोंमें बता देनेसे इसका पूर्ण महत्व हृदय पर अंकित नहीं होता। परन्तु इन अक्षरोंकी संख्याके विषयमें यदि उस प्रकार कहा जाय कि वह इतनी अधिक दृढ़ी है कि अगर उन सम्पूर्ण अपुनरुक्त अक्षरोंको कामज पर लिखा जाय तो उनके लिखनेमें जगड़ों हाथि-

योंकी तोलके बराबर स्याही खर्च हो जायगी और अँधे, खँधे, हाथियोंके वजन बराबर कामज खर्च होगा और उसकी केवल एक प्रति लिखनेमें जल्दीसे जल्दी लिखनेवाले सैकड़ों मनुष्योंको भी करोड़ों वर्ष लगेंगे। (यह भी ध्यान रहे कि अक्षर भी कोई विविध प्रकारके या अनोखे नहीं किन्तु वैसे ही जैसे एक श्लोककी गिन्तीमें ३२ मानकर हमारे सुप्रसिद्ध ग्रन्थ पद्मपुराणमें साढ़े छह लाख (६९००००) के करीब हैं।) तब तो श्री जिनवाणीके अक्षरोंकी संख्या कितने बड़े आश्चर्यजनक रूपको धारण करके हमारी आंखोंके सामने आ उपस्थित होती है। यहां तक कि हमारे बहुतसे आतागण कहेंगे कि श्री जिनवाणीके अक्षर संख्यासे बाहर हैं। उनको गिनकर अंकोंमें बताना मनुष्योंकी शक्तिसे बाहर है। इस उदाहरणसे इस लेखके पाठक महोदय भले प्रकार समझ गए होंगे कि किसी वस्तुकी महान् गणनाको अंकों द्वारा बतानेसे उसका पूरा असली महत्व चित्तर अंकित नहीं होता इसी लिये पल्यके वर्षोंकी महान् संख्याको इस रूपमें हमारी दृष्टिके साम्हने रखा गया है।

इस प्रकार उप-शंकाओंका थोड़ासा उत्तर दे चुकने पर अब मूल शंकाका उत्तर नीचे लिखा जाता है। निम्नसे ज्ञात होगा कि श्री ऋषभ निर्वाण सम्बत् किस जैन ग्रन्थके आधार पर और किस प्रकार निकाला गया है और कैसे यह पूर्णतया शुद्ध और ठीक है:-

[illegible]

शास्त्रप्रमाण—१. श्री गोपट्टेसारजीकी
श्रीमान् पं० टोडरमजी कून सीता जीवकांड,
अधिकार ३के प्रारम्भमें अलौकिक गणित ।

(२) श्रीगोमट्टमार, कर्मकांडकी श्रीपान् पं०
मनोहरलालजी कून छोटी टीकाकी भूमिस्त।

(३) श्रीतत्त्वार्थ सूत्रगीकी अर्थप्रकाशिका टीका
अध्याय ३, सूत्र ३८ की व्याख्या।

(५) श्रीतत्त्वार्थ सूत्रनीती मार्गमिद्धि भाषा टीका, अ पाठ ३, सूत्र २७ की व्याख्या ।

(५) श्रीमान् पं० चानतरायजीकृत चर्चा
शतिका पद्य ३३ और उसकी व्याख्या ।

(६) श्रीहरिवंश पुराण भाषा टीका नामी ७ ।
(७) श्रीत्रिलोकमार्तण्डी भाषा टीका श्रीमान
पं० देवदत्तमहर्षि कृतका गणित भाग इत्यादि
देखें ।

(२) व्यवहार पक्षके रोमोंकी संख्याको १००में गुणा करनेसे जो संख्या प्राप्त होगी वह एक पल्योपम कालके वर्षोंकी संख्या है जिसमें उपरोक्त २७ अंक और २० शुन्य पूर्व ४७ अंक हैं।

शास्त्रप्रमाण—उपरोक्त ग्रन्थ ।

नोट-जिसे पद्य अर्थात् खत्ती या गद्यसे
उपमा दी जाय उसे "पद्योपम" कहते हैं।
इसलिये जिसे हिन्दी भाषा ग्रन्थोंमें बहुधा
पद्यकाल बोला जाना है वह वास्तवमें

पल्योपम—काल है। पल्य तो केवल गढ़े हीरा नाम है जिसे कालादिकी गणना करनेके लिये तीन भेदों अर्थात् व्यवहार पल्य उद्धार पल्य और आद्ध पल्यमें विभाजित किया गया है और जिसे यथायोग्य स्थानोंपर कालादिकी बड़ी गणनाओंमें काम लिया जाता है।

(३) दश कौड़ाकोड़ी (१० - व करोड़ गुणा अर्थात् एक पद्मपत्न्योपम सागरोपम (जिसे छवण सागरसे उगई है) होता है। पत्न्योपमके उपरोक्त संस्थाको दश कौड़ाकोड़ीमें गुणा करने से १० करोड़ और १० शून्यपर्यंत बढ़ हो जाते हैं जो एक सागरोपमकीलके संस्था है।

शास्त्रमगण—उपरोक्त ग्रन्थ ।

नोट—नहीं २ बड़ी २ आयुवाले
या डेप डेवी आदिमी केरल एक जन्म स
आयुमी स्थिति बताई गई है वह स
पल्योपम और सागरोपमसे है
किमी प्रकारके पन्थ या सागरसे न
वास्तवमे कालादिके परिमाण सूत्रक न
किन्तु कालादिकी महान गणना जाननेमे
उपमा मात्र सहायक हैं। शास्त्र प्रमाण
तत्त्वार्थसूत्र, अध्याय ३, मूलसूत्र ६, २९,
अध्याय ४ मूलसूत्र २८, २९, ३३,
४२, अध्याय ८ मूलसूत्र १४, १७ इत्यादि

इन सूत्रोंके टीकाकारोंने
और पशुपत तथा सागर और सागरो
वादनविक्रान्त पर विशेष ध्यान न



पल्योपमके स्थानमें पल्य और सागरोपमके स्थानमें सागर लिखा है जो एक प्रकारकी अशुद्धि है ।

(४) एक कल्पकाल २० कोड़ा कोड़ी सागरोपमका होता है जिसके एक भाग अन्तर्-सर्पणीका चतुर्थकाल (जिसमें वर्तमान चौवीसी हुई) ४२ सहस्र वर्ष कम एक कोड़ाकोड़ी सागरोपमका है । इसी लिये एक सागरोपमके वर्षोंकी उपरोक्त संख्याको एक कोड़ा-कोड़ीमें गुणा करनेसे उपरोक्त २७ अंक और ४९ शून्य कुछ ७६ अंक प्रमाण संख्या एक कोड़ा कोड़ी सागरोपमके वर्षोंकी प्राप्ति हो जाती है । इस संख्यामेंसे ४२ सहस्र वर्ष घटा देनेसे जो संख्या प्राप्त होगी वह पूर्ण चतुर्थ कालके वर्षोंकी संख्या है जो ७६ अंक प्रमाण ही है ।

(५) श्रीऋषभदेवजी महाराजका निर्वाण चतुर्थ कालके आरम्भसे ३ वर्ष साढ़े आठ मास पूर्व हुआ और श्री महावीरजीका निर्वाण पंचम कालके आरम्भसे इतने ही काल अर्थात् ३ वर्ष ८॥ माह पूर्व हुआ । इसलिये प्रथम तीर्थंकरके निर्वाण कालसे अन्तिम तीर्थंकरके निर्वाण काल तकका अन्तर ठीक-उतना ही है जितना पूर्ण चौथा काल ।

शास्त्र प्रमाण—श्री पद्मपुराण पर्व २०, जहां चौथे कालका वर्णन करते हुए २४ तीर्थंकरोंके अन्तरात् कालका कथन पूर्ण किया है । तथा हरिवंशपुराण सर्ग ६० श्लोक ४८६, ४८७ जहां २४ तीर्थंकरोंके अन्तरात् वराह-दिके कथनको पूर्ण करके श्री महावीर स्वामी-

के ११ गणधरोंकी आयुका कथन है उससे छाते ।

(६) अब यदि प्रथम तीर्थंकरके निर्वाणसे अन्तिमके निर्वाण तकके अन्तराल काल अर्थात् पूर्ण चतुर्थ कालके वर्षोंकी संख्यामें श्री वीर-नि० सम्बत् जोड़ दें तो हमारा अभीष्ट श्री ऋषभ-निर्वाण सम्बत् प्राप्त हो जायगा जिसके वर्षोंकी संख्या वही है जो कई जैनसमाचार पत्रोंमें प्रकाशित हो चुकी है ।

नोट—जिन महाशयोंको यह भी जानना अभीष्ट हो कि इतने अधिक बड़े पल्यमें भर गए भोग भूमिके ७ दिन तककी बचवाले मेंढके बालकके बहुत ही छोटे २ रोमों या बालाग्रोंकी उपरोक्त संख्या ४९ अंक प्रमाण किस प्रकार निकाली गई है वह पूर्वोक्त ग्रन्थोंके इसी विषय सम्बंधी कथनको ध्यान पूर्वक पढ़ें । श्री-अर्थप्रकाशिका तथा श्री गोमटसारादिमें सब कुछ मौजूद है । यदि तब भी समझमें न आवे तो मुझसे पत्र व्यवहार करें । तथा किसी प्रकारकी शंका उपरोक्त लेखमें हो तो वह भी प्रगट करें । किसी जैन समाचार पत्रद्वारा भले प्रकार समझा देनेका प्रयत्न किया जायगा । किमधिक ।

नोट—इस लेखमें यह बताया गया है कि महावीरार्चयित गणितसार संमदमें २४ अंक प्रमाणकी गिनती है और इससे अधिककी गिनती नहीं देखनेमें आती । परंतु हमने 'दिगंबर जैन' वर्ष ८, अंक १ वीर सं. २४४१ में "अज्ञातश्री" नामक लेखमें ६७ अंक प्रमाणकी



की शक्तिसे धर्म रक्षा करना नितान्त बाहर है। यह कार्य मुनियों ही की शक्तिका है।

यह सप्रमाणिक है कि प्रत्येक गृह त्यागी और मुनिका कर्तव्य है कि अपने प्राणोंको भी देकर धर्म रक्षा करें। तब क्या पूज्यवर मुनियो एवं त्यागियो ! आपका यह कर्तव्य नहीं है कि अब अपनी आत्माका उपयोग अन्य साधनोंमें न लगाकर निकलकर और विष्णुकुमार मुनिके सदृश धर्मरक्षामें— अपनी जैन जातिको कालके जालसे बचानेमें लगावें। जिस धर्मके आप अनुयायी हैं उसी धर्मकी यह अधःपतित और मरणोन्मुख जाति भी अनुयायिनी है तथा यह ध्रुव है कि धर्म धर्मात्माओंमें रहता है। जैसा कि समन्त-भद्र स्वामीने रत्नकरण्ड धावकाचारमें कहा है—
रमयेन वोऽन्यतलेति धर्मस्यान् गर्विताश्रयः
वोऽत्येति धर्ममात्मीयं, न धर्मो धार्मिकैर्विना ।

अर्थात्—जो अभिमानि पुरुष अन्य धर्मात्माओंकी अवहेलना करता है सो वास्तवमें अपने धर्मकी ही अवहेलना करता है क्योंकि धर्मात्माओंके बिना धर्म अन्यत्र कहीं नहीं पाया जा सकता ।

मुनियरो ! क्या आप लोगोंके हृदयमें इन महात्माओंके वचनोंका कुछ भी अभिमान है ? यदि है तो आप लोगोंका यह प्रथम कर्तव्य है कि अब एकान्तावासको छोड़कर अपने सहधर्मियोंको अपने धर्ममें दृढ़ रखें— उनको पृथ्वी तटपर स्थिति रखें अन्यथा वे भिन्न तो पतित और नारा हो ही रहे हैं— मुसलमान, ईसाई और आर्यसमानी हो ही रहे

हैं, आप भी अपने धर्मकी रक्षा न करनेके कारण वास्तवमें धर्मात्मा कहलानेकी योग्यताका विनाश कर रहे हैं ।

यदि आप इस पवित्र कार्यमें हाथ डालेंगे तो केवल जातिको जीवनदान देना ही न होगा किन्तु अपने धर्मकी रक्षा करना भी होगा । इसलिये यदि आप इस कार्यमें कुछ भी प्रमाद करेंगे तो समझिये आप अपने प्राणप्रिय धर्मकी अवहेलना कर रहे हैं जो कि आप लोगोंके लिये हास्यास्पद है ।

धर्मरक्षको ! आप लोगोंसे मेरा नम्र निवेदन है कि भारतवर्षके जिन भागोंमें जैनकुलोत्पन्न मनुष्य निवास करते हैं वहाँ २ धर्मोपदेशकी आवश्यकता है। आप लोग भी एक दो नहीं हैं किन्तु सैकड़ोंकी संख्यामें हैं । इसलिये आप इस आवश्यकताकी देश-देश, ग्राम २ भ्रमण करके पूर्ति कर सकते हैं । जितना सुधार जैन समाजमें आप लोगोंके उपदेशसे होगा उतना सुधार अल्पज्ञानी त्रैलभोगियोंसे नहीं सम्पन्न हो सकता है । जिस ग्रामके जैनियोंकी आत्मा महावीर प्रभुके उपदेशानुसार न मिटनेसे धर्म शून्य हैं—पतित हैं— अपने उच्चादर्शको त्याग कर आचार विचारसे भ्रष्ट होकर—महावीर स्वामीके शासनसे भिच्छन्न होकर छोटे मार्गमें ले जानेवाले धर्मोंमें मिलती जा रही हैं; उनकी आत्माओंमें आप लोगोंके वचनानुसार एक नवीन ही जीवनका संसार होगा—दूरे दूरे प्राणियोंको हाथका सहारा होगा, भीड़ ब्राह्मणविक्रमकी आत्मा-



ओंको परमात्मा बनाने वाले वीरप्रमुक्तेशास-
नका पालन होगा। आपको इस कार्यसे केवल
उन्हींकी आत्माओंका कल्याण न होगा
किन्तु आपकी भी आत्माका कल्याण
होगा—सम्यक्तके स्थितिकरण अंगका पालन
होगा ।

ऐ जैन समाजके त्यागियो ! धर्मरूपी
नौकाके खेवटियाओ ! उठो और इस धर्मकार्यके
लिये तनमनसे लग जाओ । यह बात ध्यानमें
रखने योग्य है कि जैन समाजकी—आपके प्राण-
प्रियधर्मकी रक्षा आपहीके मुजबलसे होगी
जैन समाजकी संस्था विधवा विवाहादि निय-
म कार्योंसे नहीं बढ़ेगी किन्तु आपके इस पवित्र
कार्यसे बढ़ेगी । केवल आपकी आत्मामें जैन
समाजकी अग्रगति—धर्मका नाश देखकर उसकी
उन्नति—उसकी रक्षाके कार्यरूप भाव होनेकी
देर है—जैन समाजकी संस्था करोड़ोंमें होनेके
लिये आपके घोर परिश्रमकी देर है ।

अब इस कार्यमें चिन्मय करनेका समय
नहीं रहा है क्योंकि आपके धर्मको नष्ट कर-
नेवाले कोड़े बहुत दिनसे उमकी जड़में लग गये
हैं किन्तु अब तो इस धर्मको प्रसन्नवालोंकी अ-
भिज्ञता एवं बलवान होनेके कारण इस धर्मका
विनाश बड़े वेगसे हो रहा है—अवर्षके समुद्र-
के वेगसे बहनेवाले प्रवाहमें केवल बह ही
नहीं रहा है किन्तु अब डुबानेवाले गोते भी
रहा है । यदि आप लोगोंमें अब भी
इसके नवानेश उपाय नहीं किया तो स्मरण
रखिये कि जिस प्रकार डूबनेवाली नौका अपने
आसपासकी वस्तुओंको लेकर समुद्रके लिये

जलजलमें डूब जाती है उसी प्रकार यह वीर
प्रमुक्त धर्म भी आप लोगोंको समेट कर सदाके
लिये डूब जायगा और तब न आपके आहार
देनेवाले गृहस्थ ही मिलेंगे और न गृहस्थोंको
आहार देनेवाले आप जैसे स्वार्थ त्यागी—गृह
त्यागी मुनि ही ।

ओंशांतिः ओंशांतिः ओंशांतिः

शरिररक्षणा-वर्णनम् ।

(ले० हाथीचंद मानेरुचंद-सोनाधण)

(६ ठा शकधी चाडु ।)

१—जमणी पांखी पासेना भागमां—
कलेजानो जमणो भाग, पितो, न्हानां आंतर-
डानो पहलो भाग, मोटां आतरडानो जमणो
वींठो अने जमणा, गुरदानो उपलो भाग.

२—पीपडीवाळा मय्य भागमां—होजरीनो
वचलो भाग, अने जमणो छेडो तथा कलेजानो
डावो भाग.

३—डावी पाखी पासेना भागमां
होजरीनो डावो छेडो, करोळ अयवा तल्ली,
मोटा आतरडानो वींठो अने डावा गुरदानो
उपलो भाग

४—जमणा कमर तरफना भागमां—
उपर चढतुं मोटुं आंतरहुं, जमणा गुरदानो
नीचेनो भाग, अने न्हाना आतरडानो योडो भाग.

५—हुटीवाला पेटना मय्य भागमां
मोटा आंतरडानो आडो भाग, अने नानां आंत-
रडाना थोडां गुंचडां.



૬—ઢાંચા કમર તરફના ભાગમાં મોટા

આંતરડાનો છેદ ઉતરતો માગ, ઢાંચા ગુરદાનો છેદલો માગ, અને નાનાં આંતરડાનાં થોડાં ગુંચઝાં.

૭—જમણી જાંઘ તરફના ભાગમાં નાનાં આંતરડાનો છેદો, મોટા આંતરડાનો શરૂવાતનો ભાગ અને પેસાવ લઈ જનારી જમણી નક્કી.

૮—પ્હેલુવાલા નીચલા ભાગમાં ન્હાનાં આંતરડાનાં ગુંચઝાં, પેસાવનો મરેલો કુતકો, અને ગર્ભથી મોટું ઘનાર ગર્ભસ્થાન.

૯—ઢાંચી જાંઘ તરફના ભાગમાં મોટાં આંતરડાનો નીચેનો અને સફરાનો ઉપલો માગ, તથા પેસાવ લઈ જનારી ઢાંચી નક્કી.

ઉપલા કોઠા ઉપરથી સામાન્ય રીતે ઇચ્છું તો સમજાશે કે, પેટની જમણી બાજુમાં પાંસઝાં, નીચે કલેજું (યકૃત), કલેના નીચે થોડો ન્હાનાં તેમજ મ્હોટાં આંતરડાનો ભાગ મૂત્રાશય અને સૌથી નીચે જાંઘ પાસે મૂત્ર લઈ જનારી જમણી નક્કી, ઇચ્છા માગો આવેલા છે. પેટની વધવામાં-ઉપર હોજરી અને કલેનાનો થોડો માગ, તેની નીચે હૂંટીવાળા માગમાં મોટું આહું પંદરું આતરહું અને નાનાં આંતરડાં તથા સૌની નીચે પંદરમાં ન્હાનાં આંતરડાં અને સ્ત્રીઓનું ગર્ભસ્થાન, ઇચ્છા માગો આવેલા છે. પેટની ઢાંચી બાજુમાં પાંસઝાં નીચે હોજરીનો ઢાંચો છેદો, કોઠલ અને મોટું આતરહું, તેની નીચે પગ મોટું આંતરહું તથા મૂત્રાશય અને સૌની નીચે જાંઘ પાસે મૂત્ર લઈ જનારી જમણી નક્કી, ઇચ્છા માગો આવેલા છે.

અન્નનલ-(Alimentary Canal)

ઉદરની પોલના હોજરી વગેરે ભાગોનું વર્ણન કરતો પહેલાં, હોજરીમાં અન્ન ક્યાં થઈને શી રીતે આવે છે તેવું જાણવાની જરૂર છે. આપણે અનાજ મોઢામાં ઘાવીને ગરમ ઉતારીએ છીએ અને તે છાતિનો પાછલા યાગમાંથી નીચે ઉતરતો હોય એવું આપણને લાગે છે. સાથેજ અનાજ ગરમમાંથી જે રસ્તે થઈને હોજરી વગેરેના અવયવોમાં ઉતરે છે, તે રસ્તાને અન્નનલ કહેવામાં આવે છે. જેમ ઘરમાં પાણી વગેરેના નલ ઉતારવામાં આવે છે, એવી જ રીતે આ નલ ઉતારવામાં આવેલો છે. આ અન્નનલ માંસમય રનામુનો બનેલો છે, અને તેના સંકોચાવાથી સાથેજ સોરાક ધકેલાઈને હોજરીમાં આવે છે.

આ અન્નનલ-ગરમની ધારી ગરમની નીચલા છેદાથી શરૂ થાય છે, તે નલ શ્વાસ નક્કીની પાછલ અને જરા ઢાંચી તરફ કરોડને આધારે નીચે ઉતરે છે, અને ઉપર જળાંકલ ઝાંતિ તથા પેટ વચ્ચે આવેલા ગુમટમાં થઈને હોજરીમાં આવે છે. ત્યાં જોઈએ તો આ અન્નનલનો છેદો ગુદાદ્વારમાં આવે છે કેમકે જે સોરાક લાવામાં આવે છે તે અન્નનલ વાટે હોજરીમાં ત્યાંથી હોજરીની સાથેજ જોડાયેલાં નલનાં આંતરડાંમાં અને ત્યાંથી તેની સાથેજ જોડાયેલાં મોટાં આંતરડાંમાં થઈને સફરામાં આવે છે. ગરમની ધારીથી તે ગુદાદ્વાર મુખી પહોંચતાં આ અન્નનલની લંબાઈ મુમારે ૨૦ ફુટની છે. અન્નનલ શ્વાસનક્કીની પાછલ મુકાયેલો છે તેથી જ્યારે સોરાક ગરમી છીએ, ત્યારે જ અન્નનો કાંઈ પણ માગ શ્વાસ નક્કીમાં ન જનારી ગાપ



તે માટે એ શ્વાસનઝીનું મોં બંધ કરવાને એક ન્હાતું ઢાંકણૂં મીઠા સાથે વઢ્યો છે, જે સોરાક મઠેથી ઉતરતી વેળા શ્વાસનઝીનું મોં ઢાંકી દે છે, અને તેના ઉપર થઈને સોરાક અન્ન ઝીમાં પ્રવેશ કરે છે.

હોજરી-અન્યાશય-આમાશય

Stomach

મઝાથી તે ગુદા છુથી સોરાકના માર્ગનો એક જ નેત્ર છે, જેમાં હોજરીનો પણ સમાવેશ થાય છે. હોજરી એ સોરાક માર્ગનો સૌથી પ-હોલો ભાગ છે. હોજરી પેટના વીવડીવાળા મધ્ય ભાગમાં તેમજ ડાબી પાંદડી તરફના ભાગમાં આવેલ છે. હોજરીની ઉપર ડોડર પડેલ અને કલેનાનો ડાબો ભાગ છે. હોજરીની ડાબી તરફ કરોડ છે, જમણી તરફ કલેજું છે, નીચે આંતરડાં છે, અને પડાકે કરોડ છે. હોજરીના ઉપર છેડામાં અન્નનઝીનો સંયોગ થાય છે અને નીચલા છેડાથી આંતરડાનો આરંભ થાય છે. હોજરીનો આકાર પાણીની મસક અથવા ન્હાની પલાલ જેવો છે, તેમાં સોરાક જાય છે ત્યારે તે પહોળી થાય છે, અને ત્યારે તેની ડાબી જમણી બાજુની લંબાઈ ૧૦ થી ૧૨ ઇંચની અને પહોળાઈ ૪ ઇંચની હોય છે. હોજરી સાલી હોય છે ત્યારે તે સંકોચાઈને ન્હાની થઈ જાય છે. તેનું વજન સુમારે ૧૧ તોલાનું છે, અને તેમાં ૪ થી ૬ રતજ પાણી સુમારે શકે છે.

હોજરી માંસની સાફાઓ અપરા ઘોરીઓની બનેલી છે. તેનું અંદરનું પડ કરચલીવાળું અને મધ્યમાંથીના મધ્યપડા જેવું સ્વાગવાળું હોય છે,

જે પડમાંથી એક જાતનો તેજાજ જેવો પ્રવાહી ઝરે છે, જે જઠરરસ કહેવાય છે. આ જઠર રસથી લાધેલો સોરાક પચે છે અને એવી રીતે હોજરીમાં પચેલો કેટલોક રસ હોજરીની ઘોળી નસો વાટે લોહીમાં જાય છે, પણ સચ્ચો સોરાક હોજરીમાં પચી શકતો નથી, ધીકાસવાળી અને આડના સત્ત્વવાળી વસ્તુઓને હોજરીનો જઠર રસ પચાવી શકતો નથી, તેથી તેવો સોરાક હોજરીમાં કેટલુંક સ્થાનતર થયા પછી આંતરડામાં જાય છે અને ત્યાં તેની પાચન ક્રિયા થાય છે.

આંતરડાં-પક્વાશય-Bowels.

સોરાક માર્ગમાં હોજરીના નીચેના છેડાથી એ નઝી સંધાય છે, તેને આંતરડાં કહેવામાં આવે છે. આંતરડાં હોજરીથી ગુદાપર્યંત ૨૦ ફીટ લાંબા છે, પણ તેનાં યુગ્મજાં વઝીને પેટની પોલમાં પડેલાં હોવાથી એવડાં થવાં મોટાં છે એમ લાગતું નથી. આંતરડાંના બે ભાગન છે. ન્હાનાં આંતરડાં અને મોટાં આંતરડાં.

ન્હાનાં આંતરડાં-મોટાં આંતરડાં કરતાં ન્હાનાં આંતરડાં કદમાં પાતળાં છે તે હોજરીના નીચલા અથવા જમણા છેડાથી શરૂ થાય છે અને રુની આંટીની માફક યુગ્મજાં વઝીને પેટના ડુંડીવાળા તથા પેનુવાળા ચક્ષા ભાગમાં પડેલાં છે. તેનો છેડો જમણી જાગ તરફના ભાગમાં ઊતરે છે, જ્યાં તે મોટાં આંતરડાં સાથે સંધાય છે અથવા ડાબાંથી કદ મોટું થતાં તેને મોટું આંતરડું કહેવામાં આવે છે.

ન્હાનાં આંતરડાં ૨૦ ફીટ લાંબાં અને ૧ થી ૧૧ ઇંચ જાડાં છે તેનો શરૂ થવાનો ભાગ



થોડાની નાઠના જેવો વાંક લેછે અને તેમાં પિત્ત લાવનારી નઠીનું મ્હોં હોય છે, જેમાં થઈને પિત્ત આંતરડામાં આવે છે.

ન્હાનાં આંતરડાં અંદરથી નઠી જેવાં પોલાં છે. એ નઠી જુદી જુદી ચાર જાતના પડની થયેલી છે. તેમાંનું એક પડ માંસનું છે અને તેનાં સાંકોં ડાબા તથા ગોઠ ફરી વઢેલા છે. આજ્ઞા ન્હાનાં આંતરડાંનાં માંસના સાકા સઘડાં એકજ વણતે તંગ અને ઢીલા થતા નથી પણ થોડા થોડા ભાગના સાકા વારાફરતી સંકોચાય છે; તેથી આંતરડાંનો એક ભાગ સંકોચાય છે ત્યારે બીજો ભાગ ઢીલો થાય છે, અને એ રીતે જેમ સર્પ ચાલતાં ચાલતાં વઢલાય છે તેમ આજ્ઞા આંતરડાંમાં એક પ્રકારની ગતિ પેદા થાય છે અને તેથી જોરાકનો વાકી રહેલો ભાગ આગલ આગલ ધકેલાય છે. આંતરડાંનું છેક અંદરનું ૧૬ લટવચું અને કરચલીવાળું હોય છે, તથા તેના ઉપર મલમલની પેટે રુધાટાં જણાય છે. એ પડની દરેક કરચલી ૧ થી ૨ ઇંચ લાંબી અને ૦.૧ ઇંચ ઊંડી હોય છે, અને તેમાં જોરાકને ચુસવાની સૂક્ષ્મ રંગો આવેલી છે. આ રંગો જોરાકના પોષણકારક તત્વને ચૂસી લે છે. આ સઘડી રંગોનો સંયોગ થઈ એક નળ યાગ છે, તે નળ ઉદરમાંથી છાતિમાં જઈ નમળી તરફની મોટી શિરાને મળે છે. પાત્રન થયેલો રસ એ નળથી છોહીને મળે છે.

મોટાં આંતરડાં—નમળી જાંગ તરફના માગથી મોટાં આંતરડાં શરૂ થાય છે. મોટાં આંતરડાંના ડાબા ભાગ કઠિણ તો, નમળી

જાંગ પાસેથી શરૂ થવાની જંગાથી નમળી પાંસઠી સુધી તે ઉપર વહે છે તેટલા ભાગને “વટ્ટ મોટું આંતરડું” કહેવામાં આવે છે. પછી સ્વાંથી કાઠજાની હેઠલથી તે ઢાબી તરફ વળાય છે અને સ્વાંથી પીપડીવાળા ભાગમાં થઈને ઢાબી પાંસઠી સુધી તે પેટમાં આડું પડે છે, અને તેથી એટલા ભાગને “આડું મોટું આંતરડું” કહેવામાં આવે છે. ત્રીજો ભાગ વરોડની નીચેથી શરૂ થઈ પેટની ઢાબી વાજુએ ઢાબી જાંગ સુધી સીધો ઉતરે છે, અને એ ભાગને “હેંટે ઉતરતું મોટું આંતરડું” કહેવામાં આવે છે. મોટાં આંતરડાંની ડંચાઈ પાંચ ફૂટની છે, ઉપર વટ્ટો ભાગ ૨.૧ ઇંચ જાડો છે, પણ આગલ જતાં મોટાં આંતરડાં પતલાં થતાં જાય છે, અને તેના હેંટે ઉતરતા ભાગની જાડાઈ ૧.૧ ઇંચથી વધારે હોતી નથી.

સફરાનો નળ—મોટાં આંતરડાંનો જે છેડો ઢાબી જાંગ તરફ ઉતરે છે, સ્વાંથી એક વાંકવાળો નળ શરૂ થાય છે, જે સફરાના મ્હોં સુધી જાય છે તે નળને **સફરો** અથવા રેક્ટમ કહેવામાં આવે છે. તે ઢાબી તરફથી શરીરના મધ્ય ભાગ તરફ વહે છે અને મધ્યમાંથી સીધો હેંટે ઉતરે છે. સફરાની આગલી વાજુ ઉપર મૂઘાશય એટલે પેશાબનો ફુલ્કો અને ગર્ભસ્થાન આવેલ છે અને પાછળથી તે વેડ વેળાની નાં હાટકાં સાથે ધકેળાશે છે. સફરો ૬ થી ૮ ઇંચ લાંબો છે.

કલેજું—કાઠજું—યકૃત—Liver

શરીરની અંદરના અવયવોમાં કલેજું સૌથી મોટો અવયવ છે, તેનું વનન આશરે ૪ રાત ધાય છે.



તે જમણી તરફની પાંસડીઓ હેઠળ પેટના જમણા પેટલામાં આવેલું છે, પણ તે મોટું હોવાથી પી-પડીવાળા મધ્ય ભાગમાં તેમજ જરા ઢાંચી પાંસડીના ભાગ સુધી પહોંચેલું છે. જમણી બાજુથી ઢાંચી બાજુ સુધી કલેજાની લંબાઈ આશરે એક ફુટની છે; અને પહોળાઈ આઠ ઇંચની છે. કલેજાની ઉપર **ઉરોદર પટલ** આવેલું છે અને નીચે અન્નાશય, આંતરડાં, તથા મુત્રપિંડ આવેલા છે. કલેજાનો મોટો ભાગ જમણી તરફથી પાંસડી-ઓથી ઢંકાયેલો હોવાથી પેટમાં દાવવાથી તે માલમ પડતું નથી. ય્યારે તેમાં કાંઈ દરદ થઈને કલેજું વધી વહાર આવે છે, ત્યારે તે તે દાવો જોવાથી માલમ પડે છે અને કલેજા પર ટોકવાથી બોલો અવાજ થાય છે.

કલેજું ન્દાની ટાંકળીનાં માર્ગાં કરતાં પણ ચારીક હનારો ઢાળાનું ચનેલું છે. એ ટેરફ ઢાળામાં લોહીની ચારીક રંગોની જાલ પથરાયેલી છે. **કલેજાનું મુખ્ય કામ** લોહી શુદ્ધ કરવાનું અને પિત્તનામના રસને પેદા કરવાનું છે. હોઝરી અને આંતરડાની શિશાઓ મઝીને એક શિરા થાય છે, તે **મધ્ય શિરા** (પોર્ટલ વેઇન) કહેવાય છે. આ મધ્ય શિરા કલેજામાં દાખલ થઈ તેની શાખાઓ બનીને તેમનું લોહી શુદ્ધ થાય છે. કલેજાનું બીજું મુખ્ય કામ પિત્ત પેદા કરવાનું છે. કલેજામાં પિત્ત નામનો એક રસ પેદા થાય છે. એ પિત્તને હડ્ડે જનારી એક નઝી કલેજામાંથી વહાર નીકળે છે તેને પિત્તાશય કહેવામાં આવે છે. આ પિત્ત આંતરડાંને મઝી તે માહેના સોરાકને પચાવે છે. સોરાકમાં બીજાશવાલો અને ત્રણીવાલો ભાગ હોય છે,

તેને પિત્ત જલદી પીગળાવે છે. પિત્તથી આંતરડાંને જલદી ગતિ મળે છે અને શાહો છુલ્લા-સેથી આવે છે. પિત્તનો થોડો ભાગ શાહા ત્રાટે વહાર આવે છે, અને તેથીજ શાહાનો રંગ પીળાશપર હોય છે. ચોવીન કલાકમાં ત્રણ રતલ પિત્ત પેદા થઈ આંતરડાંમાં જાય છે.

પિત્તાશય-(Gall Bladder)

કલેજામાં પિત્તનું જે સ્થાન છે તેને **પિત્તાશય** અથવા પિત્તો કહેવામાં આવે છે. આ પિત્તો કલેજાની નીચલી બાજુ તરફ વળેલો છે. આ એક ગાનર જેવડી મેલી છે. પિત્તની મઝી હોઝરીના નીચલા છેડાથી શરૂ થઈ ન્દાનાં આંતરડાંમાં મળે છે. આ પિત્તની મઝી સાથે એક બીજી **પાંક્રિયાશ્વ** નઝીનો સંયોગ થાય છે; અને તે બન્નેની એક નઝી થઈ આંતરડાંમાં પ્રવેશ કરે છે. આ બીજી નઝી ઘાટે ચૂક જેવો રસ આંતરડાંને મઝી પાચનક્રિયાના કામમાં મદદ કરે છે. પિત્ત કલેજામાં પેદા થાય છે; અને પિત્તાશયમાં એકઠું થઈ પિત્તની નઝી ઘાટે આંતરડાંમાં જાય છે.

ચરોલ-તિલી-પ્લીહા-Spleen

પેટના ઢાંચા પેટલામાં નવમી, દશમી, અને અગીયારમી એ ત્રણ પાંસડીઓથી ચરોલ ઢંકાયેલી છે, તેથી કલેજાની પેટે તે પણ ઢાંચી જોવાથી માલમ પડતી નથી. **ઉરોદર પટલ** તથા હોઝરી સાથે તે રસ પડથી સંધાયેલી છે. તેનો રંગ વાદળી રંગની સ્લેટ જેવો છે. તે પાંચ ડંચ ઢાંચી, ત્રણ ડંચ પહોળી અને ૧૦ થી ૧૫ ટોલા વજનની હોય છે. તેનું કામ લોહી-ને શુદ્ધ કરવાનું છે. તાવની બીમારીમાં તે વધે



છે અને વચ્ચે એટલી વધી મ્હોટી થાય છે કે, એક સહત પથ્થર જેવી ગાંઠ પેટના ઘણા સ્થાનમાં જણાય છે. એવી વધેલી વરોલ ૨૦ થી ૪૦ રતલ સુધી વજનની હોય છે. વચ્ચે તવાઈને એટલી વધી ન્હાની થઈ જાય છે કે, તેનું વજન એક એક તોલા કરતાં વધારે હોતું નથી.

મૂત્રપિંડ-ગુરદો-(Kidney)

મૂત્રપિંડ બે છે. દરેક મૂત્રપિંડ કરોડની નાજુ તરફના પાછટા ભાગમાં આવેલ છે. દરેક ગુરદો ૪ ઇંચ લાંબો, ૨ ઇંચ પહોલો અને ૧ ઇંચ જાડો હોય છે. તેનું વજન આશરે ૧૦-૧૨ તોલાનું છે. બહારથી તે સાફ અને હીસો છે અને તેનો આકાર અડદના ઢાળા જેવો છે. જમણો ગુરદો કહેના સાથે લાગેલો છે અને ઢાંચા ગુરદાનો ભાગ વરોલથી ઢંકાયેલો છે. ગુરદા ચારીક નક્કીઓના બનેલા છે. એ નક્કીઓની આસપાસ હોહીની નશોની જાલ વંચાય છે, અને તેમાંથી કેટલાક સરાવ નકામા ભાગો જુદા પડે છે, અથવા બીજા શબ્દોમાં બોલીએ તો મૂત્ર અથવા પેશાબ પેદા થાય છે. આ આસા દહાડામાં ૨, થી ૩, રતલ પેશાબ બંને ગુરદામાં પેદા થાય છે.

દરેક ગુરદાની માંહેલી તરફ એક ન્હાનો ત્રાહો હોય છે, તેમાંથી એકેક ચારીક નક્કી શરૂ થાય છે, જે પ્હેલુનો માગ ઓઝેંગીને મૂત્રાશય (ક્ષેત્ર)માં જાય છે. આ નક્કીને મૂત્ર નક્કી કહેવામાં આવે છે.

મૂત્રાશય-ફુલો-Bladder

બંને તરફના મૂત્રપિંડોમાં મૂત્ર ઉત્પન્ન

થાય છે અને મૂત્રનલીવાટે તે મુત્ર વસ્તિના આગળ ભાગમાં યાં એકતું થાય છે તે ભાગને મૂત્રાશય કહેવામાં આવે છે. મૂત્રાશયનો આકાર ફેંડાને મળતો છે. આ મૂત્રાશય એક માંસની કોથળી છે, તેની અંદર ત્રણ નાકાં છે, જેમાંનાં બે નાકાં વાટે મૂત્રપિંડમાંથી પેશાબ મૂત્રાશયમાં આવે છે અને બીજા નાકા વાટે નહાર નીકળે છે, બે ગુરદામાં મૂત્ર ટીપે ટીપે એકતું થાય છે, અને મૂત્રાશય મૂત્રથી ભરાય છે, ત્યારે મૂત્રાશયના માંસના સાકાઓ સંકોચાઈ મૂત્રને ગતિ આપીને શિશ્ન નક્કીવાટે બહાર કાઢે છે.

ઉત્પત્તિ-અવયવો-(Generative Organs.)

જે અવયવો વડે સંતતિની ઉત્પત્તિ થાય છે, તેને ઉત્પત્તિ-અવયવ અથવા જનનેન્દ્રિય કહેવામાં આવે છે. પુરુષ તેમજ સ્ત્રી એ બન્ને જાતિના ઉત્પત્તિ અવયવોની રચના સ્વાસ્થ્ય જુદી જુદી હોય છે. વૃષણ, વીર્યાશય અને મેટ્ર એ પુરુષના ઉત્પત્તિ અવયવો છે, અને ગર્ભાશય, તેની અંદરના અવયવો અને યોનિ એ સ્ત્રીના ઉત્પત્તિ અવયવો છે.

વૃષણ-(Testicles.)

વૃષણીની માંસમય થેલી છે. આ થેલીની અંદર વૃષણની બે ગોલીઓ તે થેલીની રંગો તથા નસો સાથે સંકળેલી છે. ગોલીઓ ફેંડાના આકારની લંબગોળ છે; જમણી ગોલી કરતાં ઢાંચી ગોલી જરા નીચી અને મોટી છે. દરેક ગોલીની સરાસરી લંબાઈ ૧ થી ૧½ ઇંચ, પહોળાઈ ૧½ ઇંચ અને જાડાઈ ૧ ઇંચ હોય છે.



તંદુરસ્ત શરીરમાં દરેક ગોઠીનું વજન ૨ થી ૨૥ તોલા સુધી હોય છે. વૃષણની થેલીના મધ્ય ભાગમાં રેશા હોય છે, જેથી થેલીના બે ભાગ પડેલા છે અને દરેક ભાગમાં એક-એક ગોઠી આવેલી છે. એવું કહેવાય છે કે ગર્ભસ્થાનમાં ચાલકની ગોઠી પેટમાં મૂર્ચપિંડની પાસે હોય છે. ચાલક આશરે આઠ માસનું થાય છે ત્યારે તે ગોઠી પેટની દિવાલમાંથી રસ્તો કરી વૃષણની કોથળીમાં ઉતરે છે.

જન્મતી વસ્તુ કોઈ ચાલકને વાળને તે ગોઠી પ્હેડુમાં હોય છે અને કોઈને વસ્તુ એકન ગોઠી ઉતરે છે, અને બીજી ઉતરતી નથી. ગોઠીના ઉપર એક જાડું મન્યુત પટ હોય છે અને નેને તક્કીએ બીજું કીણું કરોઠીઆના પડ જેવું પડ હોય છે. આ ગોઠીઓ આશરે ૮૦૦ સુધી નળીઓની બનેલી છે. આ દરેક નળી ૨૩.૬ ઇંચ ઇંચ ૧ ઇંચના ૨૦૦ મા માગ જેટલી પાતળી હોય છે. અને હંડાઈમાં તે નળીઓ ઓઝામાં ઓઝી ૧૨ ઇંચની અને વધારેમા વધારે ૨૨ ઇંચની હોય છે. આ વધી આટલો નળી-ઓના છેદા સાંધીને લાંબી કરીએ તો ૦.૧૧૧ માઈલ સુધી લાંબી દોરી થાય. આવા વગાન બારીક તાંતળાઓની ગોઠીઓ બનેલી છે. આ ગોઠીઓમાં આવી બે ત્રણ ત્રણ નળીઓનાં ગુંચલાં હોય છે. નળીની બહાર ધોરી નસની બારીક નાળ પથરાયેલી છે, જેમાંના લોહીમાંથી ઘાતુ પેડા થાય છે. જે રંગો અથવા દોરડીઓથી થેલીમાં ગોઠીઓ વચ્ચી રહેલી છે, તે દોરડીમાં વીર્યનલ, ધમની અને શિરા હોય છે. શિરાની અંદર ડ્યારે લોહી મગડ રહે છે ત્યારે તે કોઈ

વાર સુગી આવે છે. આ વીર્યનલ, ધમની તથા શિરા પેડુના છિદ્રવાટે પેટમાં ઢાગ્લ થાય છે, અને શિરા મોટી શિરા સાથે મળે છે, ધમની મોટી ધમનીમાંથી નીકળેલી શિરા છે અને વીર્યનલ મૂત્રાશય ઉપર થઈને વીર્યાશયને મળે છે, અર્થાત્ વૃષણની કોથળીમાંથી નીકળેલી નળીઓ આગળ જતાં જોડાઈને એક થાય છે; અને તે ગોઠીની નક્કા આગળથી ઉપર ચડીને, પેડુની બહોલમાં મૂત્રાશયના કુક્કા પાડલ જાય છે અને પેશાનના કુક્કા તથા સફરા વચ્ચે બે ન્હાની કોથળીઓ છે, તેની નળી સાથે જોડાય છે. આ કોથળીઓમાં ઘાતુ એકઠી થાય છે, જેને વીર્યાશય કહેવામાં આવે છે. વીર્યાશયની દરેક કોથળીમાંથી એક એક નળી નીકળે છે અને તે નળી વૃષણની ગોઠીમાંથી નીકળનારી વીર્ય નળી સાથે મળી જઈને પેશાબ કરવાના રસ્તામાં ઉપડે છે અને પેશાબની નળીવાટે બહાર પડે છે.

વીર્યાશય—ઉપર જણાવ્યા પ્રમાણે વૃષણમાંથી વીર્યની નળીઓ પ્હેડુમાં ઢાલ્લ થાય છે અને મૂત્રાશયના થઈને તેને તક્કીએ ઉતરે છે. મૂત્રાશયને તક્કીએ દરેક નળી પહોળી અને, ગૂંચલાવાળી થાય છે; તેમાં વીર્ય મરાઈ રહે છે, અને તેથી તેને વીર્યસ્થાન કહે છે.

વીર્યાશયની નળીઓ મૂત્ર માર્ગમાં ઉપડે છે અને ત્યાંથી વીર્ય બહાર પડે છે. આ ઉપરથી સમગ્ર શકાએ કે વીર્ય પ્રથમ વૃષણમાં પેડા થાય છે અને ત્યાંથી ઉપર ચડીને પ્હેડું માંહે આવેલા વીર્યાશયમાં એકઠું થાય છે અને ત્યાંથી મૂત્ર-નળી વાટે બહાર પડે છે.

મૂત્ર નળી અથવા શિશ્નને મંદુ કહે-



વામાં આવે છે. આ નઠી ત્રણ નઠોની બનેલી છે. આમાંના બે નઠ ડાબે હોય છે અને ત્રીજો નઠ તેમની મધ્યમાં નીચલા ભાગમાં હોય છે. તે દરેક ભાગ મંજુત અને સફેદ તંતુમય નઠીના જેવો હોય છે. તેમની બેચમાં ઘણા પટ્ટા હોય છે અને દરેક મઠમાં ન્હાનાં ન્હાનાં છાનાં હોય છે, જેમાં લોહી ભરાય છે અને ઢલવાય છે. લોહી ભરાય છે ત્યારે મેદમાં જોર આવે છે અને ઢલવાય છે ત્યારે શિથિલ થઈ જાય છે.

ગર્ભાશય-(ગર્ભસ્થાન-કમલ)

આ અવયવ સ્ત્રી જાતિમાં જ હોય છે, અને તે પ્લેઝુરી સ્ત્રોતમાં સફરા તથા મૂત્રાશય (બ્લેડર) ની વચ્ચે આવેલું છે. ગર્ભાશયનો આકાર જામફલ જેવો ઉપરથી પહોળો અને નીચેથી સાંકડો છે. તે ૩ ઇંચ લાંબું અને ૨ ઇંચ પહોળું છે. કુમારી સ્ત્રીમાં ગર્ભસ્થાનનું વજન આશરે ૨ થી ૪ તોલાનું અને વધાવાઝી સ્ત્રીમાં ૪ થી ૬ તોલા સુધીનું હોય છે. ગર્ભસ્થાન માંસના જાડા સ્નાયુઓનું બનેલું છે અને અંદરથી પોલું છે. તેના નીચેના સાંકડા ભાગમાં એક ગોળ છાદો છે અને છેડા પર એક ચીરો છે, તે કમલનું માં કહેવાય છે. આ કમલમુખ સંવેગ માર્ગની સાથે સંવેગ રાખે છે. ગર્ભસ્થાનમાં આર્તવ ઇચ્છે દસ્તાન અને વાઙ્મક શી રીતે પડા થાય છે તેનું વર્ણન બીજા ભાગમાં 'હેવ પડી આવીશું. ગર્ભસ્થાન મોટું થવા મોટું છે અને તેથી તેનું વજન વધીને ૧ થી ૩ રતલ જેટલું થાય છે. ગર્ભ રચ્યા પછી તે પ્લેઝુરા ઉપલ્લા ભાગમાં ચડે છે અને હંડી સુધી પહોંચે છે. ગર્ભસ્થાનને ડાહ્યે બે ઘૂંચે ૩ થી ૪ ઇંચ લંબાઈની એક નઠી વઢોળી હોય છે, જેનું એક મોટું

ગર્ભસ્થાનની કોથળીમાં ઉઘડે છે અને બીજો છેડો જુદો રહે છે. ગર્ભસ્થાનની બહારની બે વાલુ સાથે સંવેગથી વઢોળી ઇંડા આકારની બે ન્હાની ગાંઠો છે જેને અંગ્રેજીમાં ઓવરી કહેવામાં આવે છે. એ દરેક ગાંઠ ૧ ૧/૨ ઇંચ લાંબી, ૦ ૧/૨ ઇંચ પહોળી અને જાડાઈમાં ૦ ૧/૨ ઇંચથી જરા ઓછી છે, તે દરેક ગાંઠનું વજન ૦ ૧ થી ૦ ૧/૨ તોલા વજનનું હોય છે. એ ગાંઠમાં ટાંકળીની અળીથી તે વડાણાના ઢાંણા જેવડા કદના ૧૦ થી ૧૦૦ ઢાળા હોય છે. અને તેમાં ઇંડાની સફેદીને મઠતો પ્રવાહી હોય છે. આનો ઢાળો ડાબો મોટો થાય છે. અને ડાબો તે ઘૂંચતો થાય છે, ત્યારે ગાંઠની છેક ઉપર ઉપસી આવે છે; અને તેની ઉપર ગર્ભસ્થાનની આગળ કહેલી વાનુની નઠીનો છેડો વઢોળી જાય છે. અને તે નઠીમાં તે ઢાળો ફૂટીને, પોતાની અંદરનો પ્રવાહી તે નઠીમાં રેડે છે અને જેમાંથી પછી તે રસ તે નઠીના ગર્ભસ્થાનની કોથળીમાં ઉતરેલા મ્હોં વાટે, ગર્ભસ્થાનમાં પડે છે.

સ્તન (Breast)

ગર્ભાશય સિવાય સ્તન પણ સ્ત્રી જાતિનો જ આ અવયવ છે, અને તે અવયવ પણ ઉત્પત્તિ અવયવની સાથે કેટલોક સંવેગ રાખે છે, તે એક સ્ત્રીને ગર્ભ રહે છે ત્યારે તેના આકારમાં તથા રૂપમાં ફેરફાર થાય છે, ઘટ્ટનું નહિ પણ પેદા થનાર વાઙ્મક માટે તેમાં પોષણકારક દુધનો કુપાલુ કુદરત અંગાઉખીન સંગ્રહ કરી રાશે છે. સ્તન દેહીતા એક માંસના લોપાનાં ચાંચાં ઘામે છે પણ સર્વ જોતાં તે માંસના સ્નાયુવાળા ૧૬-૨૦ યુગ્માઓનાં મોંઘાં છે, જ્યાં દુધ પેદા થાય છે. (અર્થ)



स्टेशनकी रफ़्तार

(लेखक—पद्मकुमार जैन-रमा० म० काशी)

(१)

शीत ऋतु है । रात्रिका समय (८॥ बजे) हैं । इतनेमें एक गाड़ी संगमपुर स्टेशन पर आ पहुँची । मुसाफ़िरोके चढ़ते उतरते ही गाड़ीके छूटनेका गंज बसा । ठीक इसी समय एक चानूने दौड़ते हुए प्लेटफार्म पर प्रवेश किया । “वो” से सीटी बजाकर इजान महाशयने मानो चानूको तिरस्कार रूपसे “बत बत” शब्द करते हुए धौड़ना प्रारम्भ किया । चानू हताश होकर स्टेशन मास्टरसे पहुंचने लगे—
चानूजी, अब देन (रेलगाड़ी) कम आयेगी ?
स्टे० मा०—“कहाँकी देन ?”
चानू—“कलहवा जानके लिए ।”
स्टे० मा०—“अब तो एक बजे आयेगी ।”
उसी समय स्टे० मा० वहाँसे अटक्य हो ए । एक सलासीने नि श्रेणी (नसेनी) द्वारा न लालटेने बुझा दीं । चानू धीरे २ प्लेटफार्म के बाहर जाकर टहलने लगे । इतनेमें एक जवाईकी दुकान दिखाई पड़ी ।

स्टेशनसे ग्राम दो मीलकी दूरी पर था । मार्गके दोनों किनारों पर केवल जंगल ही उभा । उम जंगलमें सारके भूगोलके हुआ, हुआ ” शब्द मान सुनाई पड़ते थे ।

* “मातंगी ओ सत्यवती” के एक वंशावली का भाग्यजाद ।

वहीं पाड़े २ चानूने कुछ आहार करनेका निश्चय किया । धीरे-२, ये हटवाईकी दुकानपर पहुँचे ।
चानू, हलवाई गरमा लगाकर रामायण पढ़ रहा था उसने कहा—आइये । साहब, बैठ जाइये ।
चानू—(घेंवर बैठकर) तुम्हारी दुकानपर क्या २ चीजें तैयार हैं ?

हलवाई—महाशयजी, आपको क्या चाहिये ?
ताने मेंड़े, परफ़ी, कनौड़ी और सिगाड़े हैं—ये सब आज ही सँभरे बनाये गये हैं ।

इच्छानुसार मिठानादि ठेकर चानू आहार करनेके लिए बैठ गये ।

इसी अवसरमें इनका परिचय देना परम-आवश्यक है । एतक विषय है कि इसके लिए हमको विवेक परिश्रम नहीं करना पड़ेगा, नाम ही प्रकाश करनेसे पाठक समझ आयेगे । इनका नाम “ श्री गोवर्द्धनदास ” है; और इनका निवास काकेशमें है । इस स्टेशनसे कोई दो कोसकी दूरी पर एक ग्राम है, उसग्रामके एक सज्जनकी कन्याके साथ इनके भतीजेका सम्बंध निश्चय हो रहा है । आज दिनके तीन बजेकी गाड़ीसे ये आये हैं; और ८॥ बजे की गाड़ीसे जाना चाहते थे, किन्तु भाग्य ने पड़े हैं ।

आहार कर चुकने पर गोवर्द्धनदास नहीं पड़ा ।
पाईसे पूछा—“ तुम्हारी दुकान तैयार हुए बहुतसे रहनी है ? ”

हलवाई—“ जो भजे सलासीने जाकर ती थी ।
गोवर्द्धन चानू—“ था, मैंने उसका कुछ भी
हलवाई—“ उम्मा । यदि आप कृपया सँभरे तो
शयन करता है । ”



(२)

संग्रामपुर छोटा सा स्टेशन है । उसका आफिस, तारघर आदि सब एक ही कमरेमें हैं । मुसाफिरखाना भी नहीं है । गोवर्द्धन बाबू प्लेटफार्म पर पहुँचे, वहाँ जाकर देखा कि आफिसका ताला बंद है । बाहर एक खलासी कम्बल ओढ़े सो रहा है । सिर्फ एक बत्ती जल रही है, उसका भी प्रकाश बहुत कम है ।

गो० बा०—(खलासीसे) “ बाबू कहां गये हैं ? ”

खलासी—“ भोजन करने गये हैं । ”

गो० बा०—“ कब आवेंगे ? ”

खलासी—“ आते ही होंगे । ”

वहाँ पर एक बैद्य पड़ी थी, उसी पर बैठ गये । बैद्यको खोलकर पानका डिब्बा निकाला और जूता खोलकर सोनेका विचार किया; परंतु इस शीत ऋतुमें उनके लिए सोना मुश्किल हो गया । इतनेमें सामनेसे जूतेकी आहट सुनाई पड़ी । बत्ती हाथमें लिए हुए स्टेशन-मास्टरने आफिसमें प्रवेश किया और दरवाजा संकेत मार दिया । थोड़े समय तक गोवर्द्धन आर्तव्य एटर्ने कर धैर्य तो बेटे । उठकर स्टे० भाग्य छे तेरे अभी तो गाड़ीको बहुत विचित्र आपीशु, गर्भस्थ-डा स्थान देनेकी कृपा करें । तेभी तेनुं यमन व-से कार्यकी सिद्धि हो भई । याय छे. गर्भ रंया बेट जाइये । ”

मांगमा चंद छे अने हंटी छे । मैं प्रवेश किया स्थानने अपने बे गुण ३ गये । नी एकेक नज्दीक गेती होर, वहाँ एक लम्बी

मंजूर पड़ी है, उस पर बहुतसे खाते (रैले बुक) बिखरे पर पड़े हैं । स्टेशनमास्टर भी अपने कार्यसे निपट कर एक पुस्तक पढ़ने लगे । गोवर्द्धन बाबूने मस्तक उठाकर देखा कि यह पुस्तक (भीषण रक्तारक्ति) उन्ही (गोवर्द्धन बाबू) की बनाई हुई है । गोवर्द्धन बाबू नवीन लेखक नहीं हैं । वे इस छोटेसे गांवमें अपने उपन्यासका प्रचार देखकर फूले न समायें उनका जाड़ा कहां चला गया इसका कुछ भी पता नहीं । स्टेशनमास्टरने भी उपन्यासको आधा पढ़ डाला । गोवर्द्धन बाबू मन ही मन कहने लगे कि मैंने जो विज्ञापनमें लिखा है कि इस उपन्यासके पढ़नेसे निद्रा नहीं आती, सचमुच ही वह सत्य है ।

गोवर्द्धन बाबू पाठकको अपना परिचय देनेके लिए मछलीके समान तड़फने लगे और सोचने लगे । पुरानी चादर ओढ़कर, फटा जूता पहरकर, मैं यहां इस अवस्थामें बैठा हूँ । क्या इस बातको सुनकर ये (स्टेशन-मास्टर) चकित न होंगे ? अहा ! यह तो बड़े ही सज्जन हैं । मैं इनका नाम पहिले पृष्ठगा, तो ये मेरा नाम अवश्य ही पढ़ेंगे । गर्दन उठाकर गोवर्द्धन बाबूने देखा, कि वे तेईसवाँ परिच्छेद पढ़ रहे हैं; और यही परिच्छेद विशेष चमकदार है, अतः रसमंग करनेकी इच्छा न हुई । परिच्छेद सम्पूर्ण होनपर गोवर्द्धन बाबूने स्टेशनमास्टरसे पूछा—“ महाशय, आपका नाम क्या है ? ”

स्टे० मा०—(पुस्तक पढ़ते हुए) “ यीशु-नाथ शोप । ”



इनका कहकर चौबीसवां परिच्छेद प्रारम्भ कर दिया । गोवर्द्धन बाबू सहजमें छोड़ देनेवाले मनुष्य नहीं हैं ।

गो० बा०—(स्टेशनमास्टरसे) “आपका निवास स्थान कहाँ है ?”

स्टे० मा०—(पुनरु पढ़ते हुए) “दुगलीके निकट ।”

गो० बा०—“ग्रामका नाम क्या है?”

स्टे० मा०—“शंकरपुर।”

यह कहकर पच्चीसवां परिच्छेद पढ़ने लगे और गोवर्द्धनबाबूकी दाल न गल सकती ।

(३)

स्टेशनमास्टरने जब उपन्यास पढ़कर समाप्त किया, तब कोई साढ़े बारह बजे थे ।

स्टे० मा०—(गोवर्द्धन बाबूसे) तबसे आप बैठ ही हैं ?”

गो० बा०—“जी, हाँ ? और क्या करता?”

स्टे० मा०—“आपको बड़ी तल्लीन हुई होगी, पान खाइयेगा ?” कहकर गो० बा० के सामने पानका डिब्बा रख दिया ।

गो० बा०—(पान खाकर, अरने मनमें कहने लगे) “हाय ! यह व्यक्ति जानता नहीं कि मैं निमतो पान दे रहा हूँ यह कौन है ?”

स्टे० मा०—“आप कहाँसे आ रहे हैं; और आपका क्या नाम है ?”

गो० बा०—मैं अपने भतीजेके लिए कन्या देखने गया था, मेरा नाम गोवर्द्धन-दत्त है ।”

नाम सुनते ही (स्टेशन मास्टर) ने पूर्व पठित पुस्तकका दृष्टिअधेय खोला पढ़ा,

और गोवर्द्धन बाबूकी ओर देखने लगे । उनकी अंत्या देखकर, गोवर्द्धन बाबू हंस्तकर बोले—

“क्या विचार रहे हैं ?”

स्टे० मा०—(संकोचके साथ) “क्या आप ही इस पुस्तक (भीषण रक्तारक्ति) के लेखक हैं ?”

गो० बा०—(भोले बनकर) “कौनसी पुस्तक ?”

स्टे० मा०—“भीषण रक्तारक्ति।”

गो० बा०—“जी हाँ, मैंने ही लिखी है।”

स्टे० मा०—“ऐ-आप !-आप ही का नाम गोवर्द्धनदत्त है ? महाशय, आपके साथ मैंने यह बड़ा अन्याय किया है । क्षमा कीजिये ।

गो० बा०—“नहीं नहीं, आपने कुछ भी अन्याय नहीं किया ।”

स्टे० मा०—“यह अन्याय नहीं है कि आप यहां तीन घण्टेसे बैठे हैं, मैंने आपसे पूछा भी नहीं कि आप कौन हैं ? यह अन्याय नहीं तो; और क्या हो सकता है ?”

गो० बा०—कुछ भी अन्याय नहीं; बल्कि आप मेरी पुस्तक पढ़कर उन्मत्त हो रहे थे, यह मेरे लिए सौभाग्यका विषय है । आपने मेरे बनाये हुए और कौन २ उपन्यास पढ़े हैं ?”

स्टे० मा०—“और कोई भी नहीं पढ़ा । हाँ; सुनीपत्रमें आपके बनाये हुए बहुतसे उपन्यास देखे हैं । यह पुस्तक कोई यात्री छोड़ गया था, मुझे खजासीने लाकर दी थी । इसमें एक पत्र भी था, मैंने उसका कुछ भी तान्त्रिक नहीं समझा । यदि आप मध्यम सके तो सीजिये ।

गोवर्द्धन बाबूने चरपा लगाकर पत्र पढ़ना प्रारम्भ किया—

माई कुल !

मंगलवारकी रात्रि और शत्रु दुर्ग आक्रमण; याद है! तुम दल सहित हो, अतः उसी दिन शामको यहां उपस्थित होना, अन्यथा कार्य निगड़ नायगा। सबको यहां शामिल होकर शामको चलना होगा। रात्रिके दो बजे कार्य (युद्ध) शुरू होगा। कार्य समाप्त होनेपर प्रातःकाल ही चले जा सकोगे। अलमतिविस्तरेण ॥

तुम्हारा हितैषी—

निताई चन्द्र ।

पत्र पढ़कर गोवर्द्धन बाबू समझ गये; यह स्वदेशी डकैती है।

गो० बा०—“बे सब कितने आदमी थे ?”

स्टे० मा०—“बीसके करीब होंगे।”

गो० बा०—“उनकी अवस्था कितनी और चेहरा कैसा था ?”

स्टे० मा०—“अवस्था सोलहसे लेकर बीस तक और चेहरा सांवल था।

गो० बा०—“टिकट किस क्लासकी थी ?”

स्टे० मा०—“इन्टर क्लासकी।”

गो० बा०—“सिद्धल या रिटर्न ?”

स्टे० मा०—“रिटर्न।”

गो० बा०—“टिकटें निगड़लिये तो सही।”

स्टेशनमास्टरने डेस खोला, और उसमेंसे सब टिकटें निकाल लीं और उनमेंसे छल २ टिकटें छानकर गोवर्द्धन बाबूको दीं। गोवर्द्धन बाबूने उन्नीस टिकटें छँदी। उन सबके नम्बर नोट-

बुकमें लिखना प्रारम्भ किया। सब टिकटोंके नम्बर क्रमवार ही थे।

गो० बा०—(गम्भीर भावसे) “स्वदेशी डकैती !”

स्टे० मा०—(विस्मित हो कर) “स्वदेशी डकैती ! ऐं स्वदेशी डकैती ! आप यह क्या कह रहे हैं ?”

गो० बा०—“स्पष्ट स्वदेशी डकैती ! आपके पास म्यामि फाइंग्लास (जिस कांचसे स्पष्ट दीखता है) है ?”

स्टे० मा०—“नहीं, किस लिए चाहिये ?”

गो० बा०—“लिफाफेकी मोहर साफ नहीं दीखती है। यदि वह ग्लास होता तो स्पष्ट पढ़ कर इन डकैतोंका पता लगाता।”

गोवर्द्धन बाबूने चशमा लगाकर ही पढ़ना चाहा लेकिन वह प्रयत्न बूझा हुआ। निदान बहुत प्रयत्न करने पर कुछ २ पढ़ सके।

गो० बा०—(गम्भीर भावसे) “आज ही नौ बजेकी डिलिवरीमें बहुबमारके पोष्ट-आफिससे यह लिफाफा बांटा गया है”—यह कह कर लिफाफा स्टेशन मास्टरको दे दिया।

स्टे० मा०—(गोवर्द्धन बाबूसे हाथमें पत्र लेने हुए) “आपकी बुद्धिको धन्य है !”

गो० बा०—(स्वगत) इन डकैतोंमेंसे कोई कुछ नामक डकैत बहुबमारमें अवश्य रहता होगा। आन किसी घनिष्ठता पर इन लोगोंने डकैती की है (प्रकट) “आन प्रातःकाल ही इन लोगोंसे पकड़ना होगा।”

(४)

गोवर्द्धन बाबू—(स्वगत) “यदि मैं इन



“उन्हें तो को पकड़ सका, तभी रायचहादुरकी पदवी पा सकूंगा, अन्यथा नहीं ।” -

बहुत दिनोंसे गोत्रछेन बाबू इस (रायचहादुरकी पदवी)के लिए आशा रखने थे । आज गोवर्द्धन बाबूका मनोरथ सफल होगा ।

देन चली गई । स्टेशनमास्टर टिकट चेक करके ऑफिसतोलौट आये । जेबसे पानका डिब्बा निकालकर खाया, और गोवर्द्धन बाबूको दिया । निरुद्धस्थ कुर्सीपर बैठकर बोले—“न मालूम आज किसका सर्वनाश होगा ।

गो० बा०—“देखिये आज इन टिकैतोंको पकड़कर मनोरथ सफल करना होगा ।”

स्टे० मा०—“कौन पकड़ेगा ?”

गो० बा०—“आप और मैं ।”

स्टे० मा०—“क्या कहा, मैं ?—“सर्वनाश” उन लोगोंके पास तमझे है, हम दोनोंकी गोपडी अलग ही दीवाई देगी ।”

गो० बा०—(हँसकर) “नहीं, अब उन लोगोंके पास तमझे नहीं है । वे (छेन) उन तत्त्वोंको आपसे साथ नहीं लावेंगे । कड़ी गाड़ कर आवेंगे ।”

स्टे० मा०—“तो भी उन लोगोंको पकड़ना सरन नहीं है । वे उन्नीम नीम आठमी और रहा हम दो—”

गो० बा०—“कौशमे पकड़ना होगा ।”

स्टे० मा०—“उमके बाट ।”

गो० बा०—“उसके बाट गारड—”

स्टे० मा०—“उसके बाट—”

गो० बा०—“श्री पर, अर्थात् केहें होगी !”

स्टे० मा०—“उमके बाट ।”

गो० बा०—“रायचहादुरकी पदवी—”

आइये, आप हमारे इस कार्यमें यथाशक्ति सहायता कीजिए ।

स्टेशनमास्टर गालपर हाथ रगकर विचारने लगे ।

गो० बा०—(ठंहरकर) “क्या आप कुछ भी सहायता न करेंगे ?”

स्टे० मा०—(हाथ जोड़कर) “गोवर्द्धन बाबू मुझे माफ कीजिये ? मैं गरीब हूँ, मैं इस कार्यके लिये असमर्थ हूँ । मुझे इस फंडमें मन डालिये ।”

गो० बा०—मैं क्या माफ करूँ ? आप यदि मेरी सहायता न करेंगे, तो मैं ही उनको पकड़नेके लिये यथासाध्य प्रयत्न करूँगा । मैं अकेला उन टिकैतोंको पकड़ सकूँगा ?

स्टे० मा०—(हाथ जोड़कर) मुझ पर कृपा-दृष्टि रखिये । आप भद्रात्मा पुर्ण हैं—इस गरीबके ऊपर दया कीजिये । मुझे इस फंडसे बचाइये ।

गो० बा०—(राश पकड़कर) ‘उठिये, उठिये’ यदि आप इस कार्यसे डरते हैं, तो आप सहायता मन कीजिये । मैं जो कहता हूँ उसे ध्यानसे सुनिये—“यहां कोई एक ऐसा मकान है जिसमें कि उनको खंड किया जाय ?”

स्टे० मा०—“है, है बहुत अच्छी जगह पर है ।”

गो० बा०—“यहां पर है ?”

स्टे० मा०—(बाहर पलकर) वह देखिये ।



जो बड़ी कोठी दीख रही है ! उसमें उन उन्नीस डकैतोंको बंद कर सकेंगे ।

गो० बा०—“वह मकान खाली है ?”

स्टे० मा०—“जी हां, खाली है । और उसमेंसे निकलना भी कठिन है । जब तक पुलिस न आवेगी, तब तक ‘डकैत’ इसीमें बंद रहेंगे । फिर तो ‘श्रीघर’ (कैदखाना) तैयार ही है ।”

गो० बा०—“कृपाकर आप लालटेन लेकर आइये, मैं घर देखना चाहता हूं ।

गोवर्द्धन बाबू भर देखकर फिर आफिसको लौट आये । आफिसमें जाकर करीब एक घण्टे तक नानुसे परामर्श किया । इसके बाद इधर उधरकी बातें करने लगे । इतनेमें पौने दो बजेकी गाड़ी भी आ पहुंची । (कामशः)

अहिंदपुराण ग्रन्थः

→ पूरः छफः गयः

जो भगवजिनसेनाचार्यकृत पड़ा भारी ग्रंथ मूल सहित सरल हिंदी भाषामें बहुत दिनसे छप रहा था वह पूरा हो गया । मोटे और मजबूत कागजपर बड़े टाइप-में खुले पत्रोंपर छपा है । न्योछावर अभी १६) सोलह रुपये ही रक्कत है । डाकमार्फ अलग लगेगा । जिन्हें चाहिये वे शीघ्रतासे भेगा लें ।

• लालाराम जैन

महाराज-इंदौर.



वार्षिक चिवरण-जैनशिक्षा प्रचारक

सोसाइटी पहाड़ी प्रीतन, देहली । इसमें प्रथम सोसाइटीके कार्यकर्ताओंकी नामावली है फिर निरीक्षक महाशयोंकी शुभ सम्मतियां, पत्र-क्रम, निधमादि तथा ३१ मार्च १९१७ तकका खुलासा हिसाब है । रिपोर्टमें अंग्रेजी सम्मतियोंका मापानुवाद भी होना आवश्यक था ।

द्विपती वार्ता विदार-प्रकाशक श्रीभाभाधर छेलावाल चौधरी - लभासपुर, अभदावाद ५० २०० छुट्टे डिमें छ आना । येमां छुट्टे छ वार्ताया छ नेमां ओक तो 'अतु'भाधर नाग अमे पदार पडेला दिंदी पुस्तकेता अतु वाद छे. प्रकाशक तरुधी द्विपती धर्म पुस्तक-भासा प्रकट थाप छे नेमां ४००-५०. नुं वांयन द्वा आनामां अपाय छे तेना आ पेयी १०मे संयुक्त ग्रन्थ छे. श्रीनां पथ-पवित्र प्रभु प्रेभने प्रभाव, नवीन-शुद्धिणी अने नरेन्द्र अथवा मे विदार्थां ये पुस्तके अमनीन तरुधी भय्यां छे ने आभार सदिन रवीशरीये छीये. आ सस्ता वांयनेता-दरेक गुनराती जंभुये लाभ सेवे लेछये. द्विपती द्वितेन्धु नामे मासिकपत्र पथ आना श्रुदस्थ लदन भइत पदार पडे छे के नेनु पोस्टेन मात्र छ आनान भरनु पडे छे.

वार्ता-वारिधि-५ वर्ष ८ अ-५-६ प्रका-सक ५०. उदयधर धास्यद-अभदावाद. वार्षिक ही ३. २१ येमां खुदी खुदी मोधप्रद वार्ताता संयक प्रकट थाप छे.

पाटीदारमुयोध सव्यभासा भाग ३ लेा-प्रकाशक-श्रीभाभाधर काण्ठास, मदीधर-पुरा-भरत हि. नाग येमां पाटीदाशने उपयोगी खुदी खुदी हायेता संयक छे. साधनप्रभावमां किंगल मजीन वधाये छे.



સોલાપુર જૈન પાઠશાળાનો રિપોર્ટ-
એલક પત્રાલાલજી દિ. જૈન પાઠશાળાનો આ
૧૯૭૧-૭૨નો સંયુક્ત રિપોર્ટ જોતાં જણાય છે
કે આ પાઠશાળા સૌથી જુની એટલે ૩૨
વર્ષ થયાં ગયાં છે જે એના સંસ્થાપક શ્રી
દોશરાજ નેમચંદ દોશીને જ આભારી છે.
કુલે ૭૧ વિદ્યાર્થી પૈકી ૪૯ જૈન છે,
જેમાંના બહારના ૧૬ વિદ્યાર્થીઓ નાથારંગજી
જૈન બોર્ડિંગમાં રહે છે. આશરે ૪૦૦૦૦) તુ
ફંડ છે, જે સોલાપુરના શહેરને ત્યાં જ નમે છે
અને તેઓ જ એનું વ્યાજ આપે છે. એનું પાકું
ટ્રસ્ટીડ થવાની જરૂર છે. ૭૧ વિદ્યાર્થી પૈકી
૧૯ તો સંસ્કૃત અને અંગ્રેજી બોલે છે. દેખરેખ
ધણી સારી છે. આ રિપોર્ટમાં વિદ્યાર્થીઓનો
શુષ (ફીચ) પણ છે.

જૈનોનું મરણ પ્રમાણ-“મુંબઈ જ્ઞાપકની
જૈન પત્રીમાં પ્રાન્તવાર આવતું મરણ
અને જૈન કોમના નેતાઓની દરજ્જા” નામે આ
પુસ્તકમાંના જૈનોના મરણ પ્રમાણના આંકડા
એના પ્રકાશક શ્રી નરસિંહ બી. શાહ, ૧૯૫૫,
મૈમનગઢ, મુંબઈની સંસ્થાપન કરી પ્રકટ કર્યા
છે, જે જોતાં જણાય છે કે દિનોદિન મરણની
સંખ્યા વધતી જાય છે અને તે ઘટે તેવા ઉપા-
યો યોગ્ય એ જૈનોની મુખ્ય દરજ્જા છે. જે
પેસાની દોઢી બીડી આ પુસ્તક ગંગાવી વાંચીને
વિચારવા લાયક છે.

બાલકુલ્યા પ્રતિબંધક શુદ્ધ અને અનાથ
બાલકાશ્રમ પંડરપુરનો ૧૯૧૪-૧૫-૧૬નો રિપોર્ટ
માથો છે, જે જોતાં જણાય છે કે એમાં અનેક
બાળકો અને નિરાધાર સ્ત્રીઓ પગાય છે.

હિંદુ અનાથાશ્રમ નડિયાદનો ૧૯૧૫-
૧૬ નો ૨૫૦ ય. નો રિપોર્ટ મરથો છે. આ
સંસ્થા દિનપરદિન મોટા પાયાપર આવતી જાય
છે અને મદદ પણ ધણી જ સારી મળે છે જે
ઉપરોક્ત પ્રયાસોના ફળ છે. અમારે કહેવું
જોઈએ કે આ રિપોર્ટની ૪૦૦૦ પ્રતપર લખ-
વડે અર્થ કરવામાં આવ્યો છે. એટલી જ પ્રતો

આથી વધારા અર્થમાં હપ્તવી રાશત. સાર્વજન-
નિક મદદ મેળવીને તેનો ઉપયોગ હાથ રાખીને જ
કરવો જોઈએ.

પંચામૃત પ્રશ્નાલ-પ્રકાશક, બુદ્ધજાલ
શ્રાવક-દમોહ (સી. પી.) મૂલ્ય હેડ ગાના ।
ફક્ત મધ્ય અમિષેકપાઠ શબ્દાર્થ ઓર માવાર્થ
સહિત સમલ ભાષામાં દિવા ગયા હૈ । હમારે
કઈ મઈ સંસ્કૃત પંચામૃત અમિષેકપાઠ
પડતે હૈં પરંતુ ઉત્તકા અર્થ તો જાનતે હી નહીં
ઓર વિના અર્થ જાને ઉત્તકા ફલ મિલના
અસંભવ હૈ ફલ હિયે જો કુલ મી પાઠ પઢા
જાય ઉત્તકા અર્થ તો જાનના હી ચાહિયે ।
હરેક પાઠશાલામાં મી યહ પુસ્તક પ્રવેશકરને
યોગ્ય હૈ । પ્રકાશકસે પ્રાપ્ય ।

શ્વે. તેરાપંથી સભાની રિપોર્ટ-
શ્રી જૈન શ્વે. તેરાપંથી સભા કલકત્તાની યહ
તૃતીય વાર્ષિક રિપોર્ટ દેલનેસે વિદિત હોતા હૈ
કિ યહ સમાકા કાર્ય ઉત્તરોત્તર મદતા જાતા
હૈ । ૧૧૦૦૦) વા તો સ્થાયી ફંડ હૈ જો
૧૧ મહાસર્વોકે પાંચ ૨ હમ્મર દેનેવર હુઆ
હૈ, જિસમેસે પાઠશાલા, વ્યાખ્યાન સભા, પુસ્ત-
કાલય, લામુવેરી આદિકા કાર્ય ઉત્તવનાસે હોતા
હૈ । ફલ વર્ષમેં કુલ ૪૮૦૪૧-) વર્ષ હુઆ
યા । ફલકે મંઘી કેશરીચંદ્રની કોઠારી (ક્લ-
હવ સ્ટ્રીટ, કલકત્તા) મદુત હી ઉત્તાહી માલુમ
પડતે હૈં । હરેક સ્થાન પર એસી સમા હોમેકી
કાવચક્તા હૈ ।

સર્વિયાકા ઇતિહાસ-લેલક-રાજરાના
મજાનોસિંહ મહાદુર, માઝાવાડ ઓર પ્રકાશક-રામપૂ
તાના હિન્દી સાહિત્ય સભા-આલરાપાટન સિદ્ધી-
પુ. ૮૦ ઓર મુલ્ય પાંચ જાને । માઝાવાડ



नरेशने युद्ध व्याख्यानमें पठा हुआ यह व्याख्यान उनके फोटो सहित है जिसके पढ़नेसे एकता, स्वाधीनप्रियता, शूरीरता आदि अनेक प्रकारकी शिक्षाएं मिल सकती हैं। इस समाकी वार्षिक फी १) है, जिसमें समाकी ओरसे प्रकाशित पुस्तकें विनामूल्य मिलती हैं, और कोई भी महाशय आठ आना प्रवेश फी देनेपर स्थायी ग्राहक हो सकता है और उन्हे सर्व ग्रन्थ लागतके मूल्यसे मिलते हैं। इसका फुटकर मूल्य भी कम रखना उचित था जिससे कि विशेष प्रचार हो।

भारतीय जै०सि०प्र० संस्थाकी रिपोर्ट—जैन साहित्यकी सेवामें रात्रिदिन छवलीन, निःस्वार्थी समानसेवक और बाल-ब्रह्मचारी पं० पन्नालालजी बाकलीवालने कलकत्तेमें भारतीय जैनसिद्धांतप्रकाशनीसंस्था नामक संस्था तीन वर्ष हुए स्थापित की है जिसका यह १४४१-४२ का हिसाब है। इतने थोड़ेसे समयमें इस संस्थाने संस्कृतके और भाषाके कई ग्रन्थ जैसे कि तत्त्वार्थरामायणिकनी, शब्दार्णवचंद्रिका, आत्ममीमांसा, शब्द-नुशासन, जैनेन्द्र प्रक्रिया, संस्कृत प्रवेशिनी आदि संस्कृत भाषा टीका सहित तथा हरिवंश पुराण, अथर्वप्रकाशिका, तत्त्वज्ञानतरंगिणी, न्यायदीपिका (बंगला अनुवाद) सहित आदि हिन्दी भाषाटीका सहित बहुत उत्तमताके साथ प्रकाशित किये हैं। संस्थाकी बहुतसी रक्म पुस्तक प्रकाशनमें लग गई है और अब रोकड़ सिद्धक न होनेसे आगे कार्य रुका

हुआ है इस लिये हरएक जैनीका फर्ज है कि इस परोपकारी संस्था द्वारा प्रकाशित ग्रन्थ खरीद करें और नहां तक हो इस संस्थाके स्थायी समासद भी बनें। यह हिसाब और संस्थाकी नियमावली निम्न लिखित पतेपर पत्र लिखनेसे सुफ्त मिलती है—मंत्री, भारतीय जैनसिद्धांतप्रकाशनी संस्था, नं ९, विधको-श लेन, बाग बाजार, कलकत्ता।

पारमार्थिक संस्थाकी रिपोर्ट—

जैन समाजके सुपरिचित श्रीमान दानवीर रायनहापुर सेठ हुकमचंदनी साहब (इन्दौर)ने करीब तीन लाख रुपये लगाकर इन्दौरमें दि० जैन पारमार्थिकसंस्थाये स्थापित की हैं जिनकी वीर सं. २४४२की यह रिपोर्ट मंत्री लाल हजारीलालजीने प्रकाशित की है। इसमें जैन मंदिरजी, सार्वजनिक विशाल धर्मशाला, महाविद्यालय, बोर्डिंगहाउस, कंचनबाई धाविकाश्रम, औषधालय आदि संस्थाएं उत्तरोत्तर वृद्धि पूर्वक चल रही हैं। महाविद्यालय और बोर्डिंगमें तो छात्रोंकी इतनी संख्या हो गई है कि अब ज्यादाकी भर्ती करनेका स्थान नहीं है। सेठ साहबको उचित है कि इस विद्यालयको विशेष सहायता देकर महाविद्यालयका नाम बरान सार्थक करें। इस वर्ष धर्मशालासे १०२२७ यात्रियोंने सुगमतासे लाभ लिया था। बोर्डिंगमें ५६ विद्यार्थी रहते हैं। कंचनबाई धाविकाश्रममें सिर्फ २० धाविकाएं पढ़ती हैं इसलिये इनकी संख्या बढ़ानेका प्रयास होना चाहिये। इस रिपोर्टमें पांचों संस्थाओंकी अलग अलग रिपोर्ट और आंकड़ा भी सामिल



किया गया है और प्रारंभमें इस संस्थाके दार्शनिक द्वाजेका भव्य चित्र भी प्रकट किया है ।

जैन पुस्तक अङ्गारना रिपोर्ट—घोरा-
ल (आडियावाड) भां १५ वर्ष तथा जैन पुस्तक
अङ्गारना स्थापना यथेली छे, जेना १८९८थी
७२ सुधीना पांच वर्षना आ रिपोर्ट जेवां
अध्याय छे के आ संस्थानुं काम नियमित रीति
थाय छे. ओरिङ्ग, स. पाठशाळा अने व्या-
खेरी अदायवा उपरांत पुस्तकालयभां नये द्दि
काना जैन ग्रंथोना वधाये यथेन नय छे.
भासिक आठ आना भरनाथी आ संस्थाना
स्थापी मेअर थाय छे भन्नी, कामदार पोष्ट
वनभाणी, घोराल (आडियावाड) ने लभवाथी
रिपोर्ट तथा सर्वे गाहीति भये छे.

अन्वय—प्रकाशक—पुस्तकालय—गीमावाड
साह, अधिपति, जैन शासन—आपनगर—आप-
नगरथी जैन शासन नामे अह्वाडिक (डि-
टी—गुजराती) ५१ प्रकट थाय छे तेना
सातभा वर्षना आठकोने आ २५० पुस्तुं पु-
स्तक मेर आपवाभां आब्युं छे, न्यारे छुट्ट
किमत १) छे. आ अिक भराडी पुस्तकने
अनुवाद छे, जे पांचवाडी साति अक्षरालोनी
दाखनी क्शोडी स्थितिथी क्शोडी अननति यती
नय छे तेनुं दिग्दर्शन द्ध्यांत रूपे थाय छे.

अधिक मास निर्णय ।

भाद्रमास ही अधिक है ।

(१) जैनचार्यकृत ज्योतिष ग्रन्थोंमें अधिक
मासका 'निमित्तवारा', 'जैनसंहिता', 'द्विजनी-
कल्प' 'भावप्रबोध' आदि अनेक ग्रन्थोंमें वर्णन

है, परन्तु 'निमित्तवारा' छोटासा ग्रन्थ है
उसमें इमका अच्छा वर्णन किया है ।

(२) यदि मूल पाठ लेकर उसकी व्याख्या
की जाय तो लेख वह जानेका भय है, इसलिये
खुलासा भाषामें लिखता हूं जिसको लघु दीर्घ
सब समझ सकें ।

(३) अधिक मास उसको कहते हैं जिसमें
संक्रांतिन हो, जैसे कभी वैशाख क० ३०को
संक्रांति हुई और दूसरी ज्येष्ठ शुक्ल १को जो
हुई तो वैशाख मास अधिक होगा । यथार्थ
यह नियम असली जानो, और भेदाभेद स्थूल
मन हैं यथार्थ नहीं ।

(४) अधिक मासका विचार शाका शालि-
वाहनसे है परन्तु जो प्राणी विक्रम सम्मतसे करते
हैं, उसमें अंतर पड़ जाता है ।

(५) चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ, आपाद, धावण,
भाद्रपद, अश्विन यह सात मास ही अधिक
मास होते हैं । कार्तिक, मार्गशोर्ष, पौष, माघ,
फाल्गुण यह पांच कभी भी अधिक नहीं होते ।
और प्रत्येक मास १९ वर्षमें आता है, केवल
ज्येष्ठ मास १९ वर्षमें दो बार आता है, ८में
और ११ में ।

(६) यह नियम शाका शालिवाहन १७०१
से लगाकर १८०० तक रहा, फिर इसमें
परिवर्तन हो गया । मयार्थ—विक्रम सम्बत्
१४४० के पश्चात् इसमें भेद पड़ गया ।
जो आगे दिखलाया जाता है और पूरे
१०९ वर्ष पश्चात् परिवर्तन अवश्य हुआ
करता है ।

(७) आजकाल ज्योतिषियोंने एरुसिवा



बना रक्खा है, वह इस प्रकार है कि जितने विक्रम सम्बत हों उनमें ४ अंक और जोड़कर उन्नीसका भाग देंगे जो अंक शेष बचे उनमें २-३-४-८-११-१२-१६-०० इतनी पर ही अधिक मास होता है, और पर नहीं, और २ पर चैत्र, ३ पर आश्विन, ५ पर श्रावण, ८-०० पर ज्येष्ठ, ११ पर वैशाख, १२ पर माद्रपद, १६ पर आषाढ़। इसी हिसाबको यथार्थ मान आनकल अनेक ज्योतिषी आश्विनको १९७४ में अधिक होना बताते हैं परन्तु यह विचार उनका ठीक नहीं है।

(८) शाका १८०० तक यह हिसाब ठीक रहा। उसके पश्चात् मासभेद हो गया, जैसा कि १९४५ में वैशाखके स्थान पर चैत्र, १९६४ में वैशाखके स्थान पर चैत्र १९६६ में माद्रपदके स्थान में श्रावण, १९७२ में ज्येष्ठके स्थान में वैशाख अधिक मास हुए हैं।

(९) ज्योतिष शास्त्रका यथार्थ आधार सूर्यकी गतिपर है, और देशभेदसे सूर्यका उदयास्त भी पृथक् है। वस, जहां संक्रांति अमावस्यके दिन हो और दूसरी शुक्ल प्रतिपदाकी हो वहां वही मास अधिक होता है।

(१०) जहां कहीं अमावस्यकी घटिका दिनमानसे थोड़ी हों और जब शुक्ल प्रतिपदा उस दिन ही आ जाय और प्रतिपदाकी घटिकाओं में संक्रांति प्रवेश करे तो वह मास अधिक नहीं हो सकता। कुछ ग्रन्थकारोंका ऐसा भी मत है, परन्तु अप्रमाण है।

(११) १९७४ में हमारे पंचांगमें माद्रपद कृष्णा १४ वृहस्पतिवारको ३२-२० पर

सिंहार्क है और कन्यार्क अगली अमावस्यको रविवार ३३-०८ पर है और उस दिन अमावस्य २१ घटि है, इस लिये इस वर्ष माद्रपद ही अधिक मास-निश्चय है।

(१२) यदि किसीको पूर्वोक्त लेखपर कुछ शंका हो तो लिख भेजें, फिर समान उत्तर दिया जावेगा, और सम्पूर्ण जैन सम्पादक समानको चाहिये कि इस लेखको अपने अपने पत्रमें स्थान देकर जैनियोंका उपकार करें, क्योंकि माद्रपद मास जैनियोंका उत्तम मास है। अलम्।

जैन मात्रका दास—

आ० मा० ज्यो० २० पं० जियालाल चौधरी-फरखनगर (गुजरात-पंजाब)

वार्षिक भ्रमण श्री ऋषभ ब्रह्मचर्या-

भ्रम-हस्तिनापुर और

जैनचिद्री मूलचिद्रीकी

महान् यात्रा ।

अवकी बारका आश्रमका भ्रमण अपूर्व ही होगा। इस भ्रमणमें सबसे बड़ा लाभ श्री जैनचिद्री मूलचिद्रीकी बन्धनासे विशेष पुण्यबन्ध और विशुद्ध परिणामोंकी प्राप्ति होगी। दूसरा लाभ ससंगतिका होगा। अवकी बार ब्रह्मचारियोंके साथ बाबा मागीरधनी वर्णी, छा० गेदूनलालजी-अधिष्ठाता आश्रम, पं० मन्मथलालजी शास्त्री-न्यायालंकार-मुमुक्षा-ध्यायक आश्रम तथा बाबू ज्योतिषसादनी-सम्पादक, जैनचिद्री आदि विज्ञान साथ



रहेंगे, इससे मार्गमें तत्त्वचर्चा, शास्त्रसमा, व्याख्यान समाजोंका अच्छा आनन्द रहेगा । विशेष हर्ष यह है कि अवकी बार श्रीमान् ला० जग्गीमलजी—समापति आश्रम रहंस, देहली तथा साहू जुगमन्दरदासजी—ऑनरेरी मजिस्ट्रेट, नजीबाबाद—मंत्री आश्रम भी कुछ समयके लिये भ्रमणमें साथ रहेंगे ऐसी आशा की जाती है । इसमें सन्देह नहीं कि अवकी बारका भ्रमण महत्त्वका होगा । जो महानुभाव इस समागमके साथ इस महान् यात्राका लाभ लेना चाहें वे कृपाकर हमें सूचित करें ।

विशेष—अवकी बार १५-२० ब्रह्मचारी भ्रमण करेंगे, शेष कुल ब्रह्मचारी सिद्धेश्वर श्री सोनागिरजीमें रहेंगे ।

प्रोग्राम इस प्रकार है:—

१ देहली	१-२ अगस्त
२ ग्वालियर	३-४
३ खंडवा	५-७
४ नांदगांव	८-९
५ बारामती	१०-१२
६ बार्सी-टाउन	१३-१५
७ कुंजलगिरि	१६-१८
८ शोलापुर	१९-२१
९ हुबली	२२-२४
१० धवणपेलगुल (जैनविद्वी)	२५-२८
११ मूलभिट्टि	२९-१ सितम्बर
१२ बैंगलोर	२-४
१३ मैसूर	५-८

१४ दावनगिरि	९-१२
१५ बेलगांव	१३-१५
१६ कोल्हापुर	१६-१७
१७ सांगली	१८-२०
१८ पुना	२१-२३
१९ नमई	२४-२७
२० गजपंथाजी	२८-३०
२१ हस्तिनापुर	१ अक्टूबर

नोट—कारणवश नियमित तारीखोंमें एक दो दिनका परिवर्तन होनेसे आगेके स्थानोंमें तार द्वारा सूचना दी जावगी ।

समाजसेवी—

गेंदनलाल, अधिष्ठाता—आश्रम
हस्तिनापुर (मेरठ)



(१)

रात्रिका समय है, सम्पूर्ण पशुपक्षी वगैरह निद्रादेवीकी गोदमें पड़े हुए हैं, चन्द्रदेवमानो अपना कलङ्क प्रगट होनेके डरसे आधा मुत्त छिपाने हुए आकाशमें गमन कर रहे हैं । सत्र जगह शान्ति देवीका राज्य स्थापित है; ऐसे समयमें मैं अपने पाठकोंको बनारसके धर्म नामक उद्यानमें लिये चबूटा हूँ । पाठको ! चलो, हम लोग आज ऐसे समयमें बागकी बहार लें । एक मनुष्य जिसने शुभा अवस्थामें अभी ही प्रवेश किया है एक मटेको रम्मीसे बांधकर लिये



जा रहा है, हाय ! हाय ! अरे पापी ! तू ये क्या करने लगा ? क्या तुझे पापका डर नहीं ? तू समर्थ है तो क्या दूसरे निर्बल जन्तुओंको मारनेके लिये.... हाय ! पर वहां ऐसा कहनेवाला ही कौन है ? आखिर उस पापीने वहां पर उस मेढेको मार ही डाला और उसका मांस भक्षणकर नौ दो ग्यारह हो गया।

(२)

“महाराज अब मैं क्या करूं ! मेरा नीच पेशा है। मुझे प्रतिदिन फांसी देनेका कार्य करना पड़ता है। अब मैं आपके उपदेशका पात्र कैसे बनूं ?”

सर्वोपधि मुनिके निकट एक मनुष्य हाथ जोड़े हुए बैठा है और उक्त प्रकारके वचन कह रहा है इसी समय सज्जन दुर्जन और नीच ऊँचमें रागद्वेष रहित सर्व हितकारी मुनि महाराज बोले—

मुनिराज—यमपाल, यद्यपि तेरा पेशा बहुत खराब है किन्तु “तू मेरे उपदेशका पात्र नहीं है” यह कहना भी ठीक नहीं। यदि तुम अपना रोजगार नहीं छोड़ सकते तो चतुर्दशीके दिन इस कामसे दूर रहा करो। तेरा इसमें भी बड़ा कल्याण होगा परन्तु याद रखना कि इस प्रतिज्ञाको जन्मभरमें कभी घटका न लगे।

यमपालको मुनिराजके अमृतमय वचन सुनकर बहुत आनन्द हुआ—

(३)

भयोंरी, आज तेरा पति वहां गया !

श्री—महाराज, आज वे प्रादःकालसे ही

दूसरे ग्रामको चले गए हैं।

आगन्तुक—(अपने आप नरा जोरसे) अरे-अभागो ! आज तू ग्रामको चला गया ! आज सेठके लड़केकी फांसी लगना थी। तेरा तो उसके गहनोसे ही जन्मदारिद्र्य चला जाता।

हाय लोभ ! तू सचमुच पापका बाप है। बड़े-वीरोंके भी तेरे साम्हने छत्के छूट जाते हैं। फिर चोरी चण्डालिनीकी क्या ताकत है जो तेरे साम्हने चू भी कर सके। आखिर तुम्हारे बागने चण्डालिनीके ऊपर असर कर ही दिया। अब यह विचारी शोक सागरमें निमग्न हो गई। अब वह क्या करे ? यदि कहती है तो धन हानि होती है परन्तु आज लोभ महाराज अकेले ही नहीं आए थे किन्तु अपनी प्राण प्यारी मायारानीको भी साथमें लाये थे। आखिर उस बेचारीने मायारानीकी शरण ली और कोटपालसे तो यही कहने लगी कि वे ग्रामको गये हैं और अंगुलीसे अपने पतिकी तरफ इशारा करने लगी। आखिर बेचारे चाण्डालको बाहर आना ही पड़ा।

(४)

आज तुमको श्रेष्ठ पुत्रकी फांसी लगाना होगी।

महाराज ! आज तो चतुर्दशीका दिन है इसलिये मैं फांसी नहीं लगा सकता।

(जोरसे) अच्छा, तू हमारी आज्ञाका उल्लंघन करता है। आज मैं तुझे इसका मना चलाऊंगा, देख, फिर तेरी प्रतिज्ञा कहां रहती है।

नरकथ ! आज समर्थ हैं जो धरें पर सकते



हैं किन्तु मैं अपने व्रतका भंग नहीं करूँगा ।
चाहे मुझे ही फांसीका हुकम भले ही हो
जावे किन्तु मैं अपने इस नश्वर शरीरको ऐसे
कामोंमें लगा देत बहुत प्रसन्न हूँगा ।

(कोपसे) कोटपाल ! इस दुष्ट चाण्डालको
और श्रेष्ठिपुत्रको ले जाकर मगरमच्छादि स-
हित सरोवरमें बांधकर गिरा दो ।

लेखक—अहाहा ! यमपाल तुम्हें धन्य है !
एकवार नहीं सहस्र बार तुम्हें धन्य है ! धन्य
है ! तुम ऐसी कठोर आत्माको सुनहर भी नहीं
हिले, धन्य है तुम्हारे साहसको ! तुम
कभी नहीं घबड़ाता, इस रागाने अभी तुम्हारे
व्रतके प्रभावको नहीं जाना है पीछे तो ये
आप ही पड़तायगा । अब मैं तुमसे क्या कहूँ !
कोटपालने तो तुम्हारी मुसके ही बाध दी
और अब तुम सरोवरमें गिरा दिये जाओगे ।

(९)

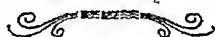
बनारस वासियोंके झुंडके झुंड एक छोटसे
सरोवरकी ओर जा रहे हैं ! न पालन आग
वहाँ क्या उत्सव है !

पाठको ! चलो इन्हींके साथ हम भी चलें ।
अहाहा ! यह तालाबके बीचमें क्या चमक रहा है !
ओ हो ! यह तो राज सिंहासन है और उसके
ऊपर एक आदमी बैठा हुआ है । ऐसा कहते-
र और देखते २ मनुष्योंके झुंड तालाबके पास
पहुँचे । वहाँ देखते क्या है कि उन सिंहासनपर
बैठे हुए मनुष्यका देव अभिषेक कर रहे हैं ।
अरे ! उसके ऊपर तो हमारा पूर्वपञ्चिन
यमपाल ही बैठा हुआ है ।

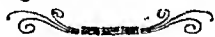
लेखक—यमपाल, धन्य है तेरे प्रतिज्ञा

पालनको ! अन्यथा तेरा अभिषेक देव क्यों करते !
हाय ! काल ! तू वास्तवमें काल है । तूने मेरे वे
दिन कहाँ खो दिये ! हाय ! अब वे दिन कहाँसे
पावें जब कि चाण्डालकी भी देव सेवा करते थे ।
हाय ! हम लोग नरासी भी प्रतिज्ञा दो चार
दिनके लिये भी पूर्ण नहीं कर सकते । जैन
जातिके वीरो ! क्या तुम भी इस प्रकारका
प्रतिज्ञा पालन कर जैन धर्मकी प्रभावना करोगे !
पाठको ! कह बैठना कि ये कहाँका रोना गाना
मचाया है इससे मैं स्वतः पहिलेसे ही शांत
हुआ जाता हूँ । आपको मैं ज्यादा तकलीफ
नहीं दिया चाहता लेकिन एक बार वीर प्रभु-
की जय बोलकर प्रतिज्ञा पालनमें तत्पर हो
जाओ ।

दरबारीलाल जैन—दमोह सी. पी.



मनुष्यजन्मका कर्तव्य और
सुख प्राप्ति का उपाय ।



(ले० मोहनलाल बडजात्या—वृचामन)

प्रिय पाठक युन्द !

“मनुष्य जन्म अति दुर्लभ है” ऐसा ज्ञानी
श्रुत्य, वैरागी महात्मा, तपस्वी जन, कह गये
हैं और यह यथार्थ है क्योंकि निगोदरूपी
स्वयम्भू समुद्र, एकेन्द्रियरूपी लवण समुद्र,
विकलेन्द्रियरूपी कालोदधि समुद्र और पशु
आदि पर्याय रूपी महा सागर पर करके इस
मनुष्यरूपी कुडमे माग्योदयसे शुभकर्म प्रमा-
वात् ही आ पड़े हैं अर्थात् भयंकर दुःख

और सागरोपम आयुष्यरूपी अपार जलको तैर कर थोड़ी आयुष्य और तुच्छ सुखरूपी थोड़े जलमें यानि मात्र पांव डुबे इतने जलमें आ गये हैं । और अब हमको विशेष-दूर भी नहीं जाना है क्योंकि परम सुखरूपी जो मोक्षमहल है उसका द्वार यह नर देह है, इस द्वारको खोलकर बन्धुगण आगे बढ़नेका प्रयत्न करिये, कार्यसिद्धि आपको अवश्य मित्र नायगी ।

मनुष्य भवमें स्वर कल्याण करनेके लिये अन्य भवोंकी अपेक्षा इतनी अधिक सामग्री मिली है कि उसका वर्णन करना कठिन है और यह बात आप जानते ही हैं कि अनन्त पुण्यराशीके बलसे यह भव मिलता है और इस भवमें पाँचों इन्द्रिय, मन, वचन, काय और ज्ञानके प्रयोग द्वारा इच्छित वस्तुकी प्राप्ति कर सकते हैं । इन्द्रियोंके प्रयोगसे यह तात्पर्य नहीं है कि इन्द्रियोंसे सांसारिक काम लो-विषय-सेवनादि करो, लेकिन मतलब यह है कि शरीरसे तप आदि करो, हाथसे दान देओ, रसनासे यह ही नहीं कि अच्छे २ पदार्थ खाये, पराद निंदा करी, असत्य मापण किया आदि, लेकिन उपदेश दो, सत्य बोलो, कभी किसीकी निंदा न करो, जिन्हाइन्द्रियके बशी-भूत होकर आप मानते ही हैं मच्छीकी क्या गति होती हैं । घ्राणेन्द्रिय इन तेज यौगैः सुगंधित पदार्थोंसे दूर रहो ये पदार्थ रागउदय करते हैं । ध्रुम इसी इन्द्रियके बरा कमलके भीतर ही रह जाता है । चक्षुइन्द्रियके प्रयोगसे यह अर्थ नहीं है कि आप सांसारिक पदार्थों-

को देखकर आनंदित होवो, दुनयवी सुन्दरताको देखकर नयन चृत करो, यह रमणी अच्छी है यह स्त्री सुन्दर आदिसे पाप बन्व करो, लेकिन इन दो नेत्रोंसे जिन दर्शन करो, तीर्थोदि पर जाकर वहाँ जिनराजके दर्शन करो, इनके द्वारा शास्त्र पढ़ो आदि । श्रोत्रसे यह तात्पर्य नहीं है कि इनसे आप रागादिकके गीत सुनो, वेदयादिके भण्डगान श्रवण करो, अपनी कुंठ कामिनियों द्वारा महान निन्दनीक सीढनादि सुनो, लेकिन श्री जिनवाणीका श्रवण करो, उपदेशादि होते हो वहाँ जाकर सुनो ।

इस असार मनुष्य देहको ही विद्वानोंने संसारसमुद्रसे तिरनेका एक मात्र वरण कहा है:-

संसारवाधेस्तरणेकदेहम्, असारमयेन

मुशन्ति येस्मात् ।

तस्मात् निरोधैः अपि रखणीयः कायः

परं मुक्तिरता पश्यै ॥

अतः मुक्तिकी वेद इस नर कायाका-उत्तम साधनों युक्त इस नर देहका दुरुपयोग न करके सदुपयोग ही करना आवश्यक है ।

स्व-पर (अपना तथा दूसरेका) हित करना मनुष्य जन्मका वर्तव्य है इसलिये जो मनुष्य तन मन धनसे पर-हित करता है और परोप-कारी कार्य करके वीरि सम्पादन करता है उसी मनुष्यका नरान्नम सार्थक है । कहा है कि-

यश्मिन्नीवति जीवन्ति बहवः स तु जीवति ।

फा कोऽपि किं न कुर्वते चक्षया स्वोदरपूरणं ॥

जित्तके जीनेसे बहुत मनुष्य जीते हैं वही जीता है बाकी तो कौवा भी अपनी उदर पाटना घोंच द्वारा करता है इस लिये



जो प्राणी स्वोदर निर्वाह उपरांत अन्य अनेक प्राणियोंको जीवित रख सकता है—पाल सकता है, उनके निर्वाहादि साधनोंमें सहायभूत हो सकता है उसीका जीवन यथार्थ जीवन है । लेकिन जो जन्म धारण करके मात्र अपने हितमें अचरित रहता है—अपनी पेट पालना ही में लीन रहता है और पर-हितके लिये एक क्षण भी उद्योग नहीं करता उसका जीवन कागके जीवनके समान जगतको निरुपयोगी है ।

यह न समझें कि भोजन मात्र ही जीवन साधन है यानि भोजन दान ही प्राणियोंको जीवित रख सकता है । नहीं नहीं, विद्यादानसे भी जीवित रह सक्ता है यानि विद्या पद लेगा तो अपनी जीविका उत्पन्न कर लेगा । शास्त्रोंमें दान चार प्रकार कहा है और हम विद्यादानमें अन्न दान आ जाते हैं लेकिन अभी यह विषय नहीं है अतः यही कहना काफी है कि दान करते रहना चाहिये ।

अब स्वपर कल्याण क्या है ? कैसे करना ? किस किमने किया है इत्यादि बातें जाननेके लिये शास्त्र अध्ययन एवं श्रवणकी आवश्यकता है । कितने मनुष्य शास्त्र श्रवण करके मष्टिमें विपरीत वर्तना देखकर कालको दोष देने हैं, कइ धर्मको दोष देने हैं, कइ भावी भाषपर आधार रतने हैं तो कइ भवस्थितिही बाट जोने हैं । कइ ऐसे कहते हैं कि जैसा केवली भगवानके ज्ञानमें झलका है वैसा होगा तो कइ क्षेत्रपर दोष मटने हैं हम प्रकार कइ निरुद्धमे कारणोंकी शोभना वरके समय बरसाद करने हैं लेकिन हमसे क्या बनेगा यह विचार-

ते भी नहीं हैं । ऐसा नहीं चाहिये, धर्म कृत्यमें गुरुपतासे उद्यम करना योग्य है—अतः प्रत्येक छोटे बड़े, धनवान, दरिद्र मनुष्य देहधारीका कर्तव्य है कि जो अन्य मानव बन्धुगण किसी आधि व्याधिकर पीडित हो, ज्ञानसे विमुक्त हों, धर्म ज्ञान रहित हो उनका दुःख दूरकर सन्मार्ग बताना, कुमार्ग छुड़ाना, यह मनुष्य जन्मका बड़ेसे बड़ा और सच्चा कर्तव्य है ।

स्वयं तरना—परको तारना—उद्धारना ।

अब पाठक घृष्ट ! धर्म तथा मनुष्यजन्मकी उत्तमताके संभवमें महान तपस्वी, अनुमवी, महर्षी, महात्माओं द्वारा कथित चार अति उत्तम श्लोक लिखना हूँ उनको आप सदैव ध्यानमें रखें:—

त्रिवर्गं ध्यायन्नमत्तरेण, पञ्चो रिवायुर्विफलं न रस्य ।
तत्रापि धर्मे प्रवरं वदन्ति, न तं विनायक्यतोर्थकामौ ॥

अर्थ:—त्रिवर्ग (धर्म, अर्थ, और काम) के साथे विना मनुष्यकी आयु पशुके समान व्यर्थ है और इनमेंसे धर्मको श्रेष्ठ कहा है क्योंकि इसके बिना अर्थ और काम नहीं साथे जा सकते हैं ।

यः प्राप्य दुष्प्राप्यमिदं नरत्वं, धर्मे न यत्नेन करोति मूढः ।

ऋषभमुनेन सङ्गमन्यौ, चिन्तामणि पातयति प्रमादात् ॥

अर्थ—जो मूढ पुरुष इस दुष्प्राप्य नर देहको पाकर यत्न सहित धर्म साधन नहीं करता है वह अति कष्टसे मिले हुए चिन्तामणि रत्नको प्रमाद पूर्वक समुद्रमें फेंकता है ।

स्वर्ण स्थाले श्रियति सरजः पादयोजन विधत्ते ।
दीक्षुषेण, प्रवर करिण वाहयत्नैवभारे ।

चिन्तारत्नं विकसति करादायसोद्भवनाथम् ।
यो दुःप्रायं गमयति सुधामर्त्यं जन्मप्रसक्तः ॥

अर्थ—जो पुरुष अति दुःखसे प्राप्त हुवे मनुष्य जन्मको व्यर्थ खोता है वह सोनेके थालमें धूल फेंकता है, अमृतसे पांव धोता है, उत्तम हाथी द्वारा काष्ठ भारा दुहाता है, और कागके उड़ानेके लिये चिन्तामणि रत्नको हांपसे फेंकता है ऐसा समझना चाहिये ।

ते घसुरतरं वपन्ति भवने प्रोण्मूल्य कल्पद्रुमम् ।
चिन्तारत्नमपास्य काचशकले स्वीकुर्वते ते जटाः ।
विकीर्णद्विरदगिरीन्द्रसदृशं क्रीणन्ति ते राशयः ।
ये लब्धं परिहस्य धर्ममधया धावन्ति भोगाधयाः ॥

अर्थ—जो अधम पुरुष प्राप्त हुवे धर्मको छोड़कर विषय भोगादि वाञ्छनाके लिये दौड़ते हैं वे मूल्य अपने गृहांगणमें उगे हुवे कल्पद्रुमको उखाड़कर उसके स्थानमें घटुरेको बोते हैं । चिन्तामणि को त्यागकर काचके टुकड़े-को स्वीकार करते हैं तथा पर्वतके समान ऊंची काचके हांथीको बेच कर गया मोल लेते हैं ।

अतः पाठकगण, इस संपारमें चौरासी लाख योनीमें भट्कते भट्कते अत्यंत पुण्य राशीसे मिले हुवे इस दुर्लभ मनुष्य जन्मको व्यर्थ न खोओ और मोक्ष साधनके उपाय करते रहो । उन उपायोंमेंसे मुख्य धर्मसाधन, इन्द्रिय दमन, परोपकार आदि हैं ।

अन सुख प्राप्तिके उपाय सुनिये—सुख प्राप्तिके उपाय ये ही हैं जो कि मनुष्य जन्मके कर्तव्य हैं—लेकिन सुख तथा वस्तु हैं यह विचारणीय है । सुखके लिये प्रत्येक प्राणी प्रयत्न करता है लेकिन सुख क्या है, वह

किस रीतिसे प्राप्त हो सकता है, इस बातका ज्ञान कइयोंको नहीं है । कइ पैसमें—धन द्रव्य में सुख मानते हैं तो कइ अधिकारमें—ओहदा पद आदिमें मानते हैं, और कइ स्त्री पुत्रादिकमें सुख मानते हैं और कुछ वैराग्यानंद तथा ज्ञानानंदमें सुख मानते हैं, लेकिन उन सर्व भिन्न भिन्न दिशामें प्रयत्न करनेवालोंने मता-ग्रही होनेके कारण जो सुख मान लिया वही सुख है अन्य कोई सुख नहीं है—ऐसा निषेधक कहते हैं लेकिन पाठकगण, सच्चा सुख तो वही है कि जिसका परिणाम दुःखरूप न हो ।

दौलत—उश्मी में ही सुख माननेवाले यह बिचाते नहीं कि—

जनयत्यर्जने दुःखं तापयन्ति विपत्तिषु ।
मोहयन्ति च सम्पत्तौ कथमर्थः सुखावशाः ॥

अर्थ—जो धन उपार्जनके समय दुःख देता है विपत्तिमें परिताप करता है और सम्पत्तिमें मोह भरता है ऐसा धन सुखकारी कैसे होसकता है । अतः धन सुखकारी नहीं ऐसा सिद्ध होता है ।

फिर स्त्री पुत्रादिक भी शणिक सुख ही देनेवाले हैं क्योंकि ये शाश्वत और चिरस्थायी नहीं है इसलिये इनमें सुख माननेवाले भी गलती करते हैं । जिसमें हम सुख मानते हैं वही वस्तु परिणाममें यदि दुःख उपजावेवाली हो जाय तो हमको समझना चाहिये कि हमारा माना हुआ सुख, सच्चा सुख नहीं है । सुख तो उसे ही कहना योग्य है कि त्रिकालमें कोई भी कारणवशान



उसका परिणाम दुःखरूप न हो । इसलिये क्या स्त्री पुत्रादिककी 'प्राप्तिमें' सुख मानने वालोंका विचार ठीक है ! देखिये, स्त्री आदि यदि सद्गुणी, धर्मशील और व्यवहारउत्तम हों तो व्यवहारमें सुखदाई हैं लेकिन ऐसा होते हुये भी स्त्री पुत्रादि अजर अमर नहीं हैं लेकिन नाशवत हैं इसलिये जब वे नाश होते हैं—तब योगसे उनका और आपका वियोग होता है तो वह वियोग अमरुय दुःखदाई होजाता है, उनके संयोग समागमसे जो सुख मित्रता उससे विशेष अधिक दुःख उनके वियोग होनेसे भोगना पडता है । फिर कहा भी है कि—

चल विरल चल मित्र चल भार्या च मंडली ।

चलाचले च सवारे धर्म एको हि निश्चल ॥

अर्थ—धन, मित्र, स्त्री, मंडली आदि सर्व चळ हैं । ऐसे चळ और अचळ रूप संसारमें सिर्फ एक धर्म ही निश्चल स्थिर है । इस प्रमाणसे स्त्री, पुत्र, धन, मित्र, आदिकी प्राप्ति सचे सुख और आनन्दको देनेवाली नहीं है लेकिन ये क्षणिक अस्तित्वशील होनेके कारण आरम्भमें सुख देकर मोह उत्पन्न करते हैं पर अंतमें सब ही अति दुःखदेनेवाले हो जाते हैं ।

फिर धन और अधिकारकी प्राप्ति भी यथार्थ सुख है या नहीं सो विचार करिये तो उम सुखनी भी दशा ऊपर वर्णित सुखके समान ही है कारण कि धन भी अचळ नहीं चळ है । अधिकारका भी प्रारब्ध नियमानुसार परिमित समय तक अस्तित्व रहता है और जब धन तथा अधिकार पुण्य क्षय होते ही हाथमेंसे चने

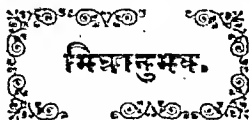
जाते हैं तो अपनी अंतरात्मा सृष्टि नियमको न समझकर दग्ध होता है, अपना मन विह्वल और व्यग्र हो जाता है, अपने चेहरे पर शोक छा जाता है और फिर सोना, बैठना, खाना पीना कुछ भी अच्छा नहीं लगता है । इस प्रकार धन और अधिकारका नाश अनेक प्रकारसे दुःखदायी हो जाता है, इस प्रकार प्रमाणित है कि धन और अधिकारकी प्राप्तिसे मिला हुवा सुख शाश्वत् और यथार्थ सुख नहीं है पर क्षणिक—अचळ होनेके कारण मिथ्या है । अब एक ही प्रकारके सुख पर विचार करना रहा है और वह ज्ञानानन्द अथवा वैराग्यानन्दसे उत्पन्न हुवा सुख है । जिस ज्ञानसे वस्तुका यथार्थ और ज्ञान हो वही सच्चा ज्ञान है । वैराग्य धारण करनेवालोंका ज्ञान प्राप्त करनेकी इच्छा वालोंको इन्द्रियजीत होना चाहिये । मोह, माया, और ममताका त्याग करना चाहिये । समार बसार है इम विषयका यद्यपि ज्ञान होना चाहिये, और पहिले जो शोक लिखा गया है उनके प्रमाण पुत्र मित्र स्त्री धन आदि चळ ह, और सिर्फ एक धर्म ही निश्चल है, ऐसा विश्वास होना चाहिये, इस प्रकार सर्व प्रकारकी पात्रता प्राप्त करनेसे ही सचे सुखकी प्राप्ति करके उसका आनन्द ले सकते हैं ।

यद्यप्यज्ञा अज्ञानी मनुष्यको यदि कभी मत्स्य प्रमादवान् सचे सुखको प्राप्त करनेका मार्ग मित्र नाय तो भी वह उसको ग्रहण नहीं कर सकता है जो मत्स्य सुख क्या है उसे पहिचान भी नहीं सकता अब पाठकगण



યદિ આપકી સચ્ચા સુખ પ્રાપ્ત કરનેકી ઇચ્છા હો તો સદ્વિદ્યા સંપાદન કરો, શાસ્ત્રકાશ્રવણ, મનન, ઔર અભ્યાસનકા અભ્યાસ રક્ષો, સત્સંગ કરો, ધર્માચરણ કરો, જગત તથા સ્ત્રી પુત્રાદિ ઔર ધન દૌલતકે મિથ્યા મોહકા ત્યાગ કરો, પુણ્ય ઔર, પરમાર્થકે કાર્મોકી સાધના કરો ઔર વ્યર્થ તત્ત્વકા-સત્ય સ્વરૂપકા જ્ઞાન પ્રાપ્ત કરો ઇત્યાદિકી જિંતની આપ સાધના કર સર્કેને તો સચ્ચા સુખ ઉતના હી આપકે સમીપ ર આતા, જાયગા । આપ યહ બી નિશ્ચય રલિયે કિ નાશવંત પદાર્થોંમેં મિથ્યા મોહસે માના હુવા સુખ સચ્ચા સુખ નહીં હૈ લેકિન સચ્ચા જ્ઞાન ઔર વૈરાગ્યકે ફલ સ્વરૂપ મિલા હુવા સુખ હી શાશ્વત, ચિરસ્થાયી ઔર તીનોં કાલમેં આનંદ દેનેવાલા હૈ ।

સદ્ગ્રહપો, આશા હૈ કિ સચ્ચે સુખકો ઇસ પ્રકાર પર્હિચાન કર ઉત્તકી પ્રાપ્તિકા ઉપાય આપ કરેંગે ઔર સાંસારિક મિથ્યા સુખમેં ન ફંસકર અધ્યાત્મજ્ઞાનકી પ્રાપ્તિદ્વારા સચ્ચે સુખકો પ્રાપ્ત કરેંગે તથા અન્ય વસ્તુઓકો બી સન્માર્ગે બતાવેંગે । આપકા પ્રયત્ન ફલદાયી હો એસી ઇચ્છા કરતા હુવા મેં લેલિનીકો વિશ્રામ લેતા હું । ઇતિ શુભમ્ ।



મિથ્યાનુમ્મક.

અતિ પ્રિય છે અને તેથી મણે આનંદ થાય છે, વનરપતિ આંખને તાકી કરનાર છે અને હૃદયમાં શાન્તિ આપે છે, પણ આ બંને કરતાં મિત્ર વધારેમાં વધારે સુખ, આનંદ અને શાન્તિ આપનાર છે. મિત્ર વગર કોઇપણ માણુસ જોઇએ તેવો સુખી થઇ શકતો નથી. અને ખરો શાન્તિ તથા અત્યંત આનંદનો ભોગી પણ નજ થાય.

મિત્ર કેવો જોઇએ ? આપણે એવું લઇએ તે કસોટી પર ધસીને લઇએ છીએ. પતિ પતિનો સંબંધ થાય છે, તે પણ ગુણ દોષની ઓળખાણ કરીનેજ થાય છે. ગમે તે વસ્તુનો સંબંધ કરતાં પહેલાં તે કવી છે તે તપાસવું પડે છે અને તપાસીનેજ ગ્રહણ કરીએ છીએ. સારે મિત્ર કરવો તે પણ તપાસીને અને તેના ગુણ દોષ જાણીનેજ કરવો કારણકે પાછળથી કેટલાકને 'પરતાવું' પડે છે.

મિત્ર સદ્ગુણી, નિર્માની, અદાળ પ્રેમી, નિસ્વાર્થી અને સારે રસ્તે દોરનાર હોવો જોઇએ. જોનામાં આવા ગુણ છે તેજ સારો મિત્ર છે. નહિ તો પોતાનો સ્વાર્થ સાધનાર, આપણે કાળે દૂર ખસનાર કપડી કે લોખી હોય તે મિત્ર નહિ પણ શત્રુજ છે. મનુષ્યના ગુણ દોષની પરીક્ષા સદવાસચી થાય છે, માટે મિત્ર તા કરતા પહેલાં તેના ગુણ-દોષની પરીક્ષા કરી લેવી.

મિત્ર શા માટે જોઇએ ? દરેક મનુષ્ય જાતિને ધણી વખતે ધણાં સંકટો આવે છે, તે સંકટોને દૂર કરવા, હૃદયને શાન્તિ મળવા, મનને આનંદથી ભરપૂર બરવા, અને સારે માર્ગે જવા સાર સલાહ પૂછવા માટે મિત્ર જોઇએ. કંઈ કારણસર અકાળાયલા મજબૂતે શાન્તિ આપનાર પણ તેજ છે. અરે ! તેના વગર તે વખતે બીજું કોઈ શાન્તિ આપવા સમર્થ નથી.

કારણકે જે વિચાર માતાને ન કહી યજ્ઞાવ, પિતાને ન કહી સમય કે બીજા કોઈ

દરેક મનુષ્યને સુખ તથા શાન્તિ આપનાર જગનમાં ત્રણ વસ્તુ છે. એક મિત્ર બીજું સંગીત અને ત્રીજું વનરપતિ છે. ગાળન કાનને



પણુ મર કેડુંબીને ન કહેવાય તે એક મિત્રનેજ કહેવાય છે. કારણકે બનેના વિચાર મળતા આવે છે અને હૃદય પણ એક સલાહથી કામ કરે છે. આમ બ્યારે થાય ત્યારે મનનો ભાર તરફ હલકો થઇ જાય છે. મિત્રને પોતાની યુક્ત વાત કહેનામાં ભય હોતો નથી કે લજ્જા આપતી નથી અને કાંઇ વાતને સંકોચ પણ થતો નથી અને પોતાના હૃદયનો ખુલતો ખુલ્લા હોયથી વાત કરીને કે પત્ર લખીને કહે છે.

મિત્ર બે રીતે થઇ શકે છે.

એક સ્વાર્થ સાધનારો અને બીજો નિ સ્વાર્થ રીતે એક બીજાને પ્રાણ અર્પણ કરનાર હોય છે, તે હમેશા પોતાનો સ્વાર્થ કેમ સધાય, તેમાંજ પોતાના વિચાર જમાવી બેઠેલો હોય છે. તે પહેલાં તો એટલો બધો પ્રેમ દેખાડે છે કે જાણે આપણે અને એકજ છીએ પણ સ્વાર્થ સધાય એટલે ધીમે ધીમે દુઃખ પસવા માડે છે. કહ્યું છે તે પ્રમાણે પોતાનો સ્વાભાવ તે પ્રગટ કરે છે—

इहैव प्रियवादी च नैतद् विश्वस्तकारणम् ।

મહુ તિષ્ઠતિ તિહૈવિ હરિયે હુ હલાહલ્ય ।

અર્થ—જો દુર્જન માણસ હોય છે તેના પ્રિય વચનો પર કોઇ પણ કાળે વિશ્વાસ રાખવો નહિ કારણકે તેના જીભ પર મહુ હોય છે (એટલે સારા પ્રિય વચન બોલી બીજાને કહે છે) પણ તેના હૃદયમાં તો તત્કાળ અટકે પ્રાપ્ત કરનાર વિષ હોય છે (એટલે તેના મનમાં એટલું તો કપટ હોય છે કે આપણુ છુર કરના જરીએ ચોંભતો નથી અને વરત ખરાબ નિયતિમાં આણી મકે છે), તેથીજ સાનુ પુરોને પણ આવા દુર્જનનોજ ભય હોય છે તેઓને બીજા કોઇનો ભય હોતો નથી આવી યોગા દ્વિવેસો માટેની સ્વાર્થો અને કપટી મિત્રનાને ન વિચાર છે. યશુ દોષની પરીક્ષા ન કરી હોય તો આનુ થાય છે. નહીંતો ખરુ પ્રેમમાં હમેશા અને મિત્ર સુચનાંજ રહે છે.

મિત્ર માત્ર બે અક્ષરનુંજ નામ છે, પણ તેમાં શું રસવતા અને શું એકતા બરામલી છે તે સમજાવું નથી.

सोऽराति परित्राण प्रीति विभ्रमभाजनम् ।

કેન રત્નમિદે મૃષ્ટ મિત્ર મિત્યદાર દ્રવ્યમ ॥

જો કદાચ કોઇનો કુમિત્રથી પ્રસંગ પડ્યો હોય અને તેની સાથે અવપ્રતાની બેઠાયો હોય તો તે મૂર્ખ અને દુરાચરણી બનાવી દે છે. કારણકે જેના તરફ વધારે બળ હોય, તેના તરફ તેનું વલણ આપોઆપજ થાય છે. જો મારો સદગુણી મિત્ર હોય અને તેની સાથે સાધારણ ગુણવાળો બેઠાયો હોય, તો તે પણ મારો કે ઉત્તમ થઇ જાય છે. લોહુ જો પારસમણીનો સ્પર્શ કરે તો તે સુવર્ણરૂપ ધારણ કરે છે. આ ઉપરથી સહજ વિચાર આવશે કે 'સોનને બસર થાય છે'.

સારા મિત્રથી કાયદા અને મણોજ આનંદ થાય છે. જો કાંઇ કુરસે દોરાતો હોય તો તેને સુધારી મારે રસે દોરે છે, અજ્ઞાન હોય તેને સુવિચાર સુઝાડી જાન આપી સવાન કરે છે. કંઈ નાના નાના અવગુણો હોય તો તેને પણ હમેશા ટોકતા રહી સુધારવા તરફ તેનું મન સતત પ્રયત્ન કરે જાય છે.

ખરો મિત્ર જે હોય છે તે એક વખત બાધેલી મેની તોડવા કોઇ કાળે ઇચ્છતો નથી કહ્યું છે કે "પીડાની બરેલી પ્રિત તોએ કરે પડિન, દુઃખ પામે તોએ ચ્હાવના મટી" તેમ તે છોડતો પણ નથી જો તે મરીજ હોય કે ધનવાન હોય, સુખી હોય કે દુઃખી હોય અથવા બીજી કંઈ પણ આપતિ આવે તોપણ તે તેને છોડતો નથી.

उपदेव व्यसने वैत्र दुर्मिसे शत्रुवेमदे ।
रात्रद्वारे स्मशाने च यस्तिष्ठति स चात्थव ॥

જોઇએ તો આવોજ બધુ જોઇએ મિત્રની કંચોટી માટે ખરેખર જાણી વિન આવે છે. પણ તે બધાને ધીરજ ધરી સહન કરવાથી આમજ સુખ મળે એમ લાગે છે.



મિત્રનો વિચાર કરવાથી અતિશય આનંદ થાય છે. તેનો સહવાસ અત્યંત પ્રિય થઈ પડે છે અને એનાથી જરૂરી ક્ષેત્રે ખસવાનું મન થતું નથી. અહા ! મિત્રના સંયોગથી શું આનંદ થાય છે, તે વખતના હૃદયની લાગણીને જણાવતા. અરે ! હું તો અસમર્થ છું. સતત તે આદ્ય પ્રેમપણામાં મગ્યાં રહે છે અને તાદાત્મ્ય ધારણ કરવા ઇચ્છે છે.

તેજ પ્રમાણે તેનો વિરહ પણ હૃદયના આંતરિક ભાગને અત્યંત બાળે છે. આદ્ય પાતાળ ભેગાં કરી દે છે, અને આપું જગત શૂન્યતામાં સમાધિ લેાય છે. તેના સંયોગમાં ધણુંજ સુખ છે અને તેના વિયોગમાં અત્યંત દુઃખ છે. દુઃખ થવાનું કારણ એ છે કે એક બીજાનું હૃદય આઘી યથેચ્છું હોતું નથી. જેમ સાગરમાં મોજ આવે છે અને તેમાં તેમાં સમાધિ લેાય છે, તેમ તેજના હૃદયમાં દરિયાની ક્રિયા થયા કરે છે, વિચારોના શુચ્છો વળતો લેાય છે, અને મન મુંઝાયા કરે છે પણ મન વશ રાખવાની વિદ્યા જેને આવડે છે, તેને વિશેષ કંઈ થતું નથી.

પ્રેમ એ પ્રકારનો છે. એક સંસારિક ધર કુંડોનો પ્રેમ અને જીવે પ્રભુ પ્રેમ. સંસારિક પ્રેમમાં અચળતા હોતી નથી થોડીવાર પ્રેમથી સુખ થાય છે, અને થોડીવાર દુઃખ થાય છે; કેટલીક વખત હર્ષ થાય છે, અને કેટલીક વખત શોક થાય છે, પણ પ્રભુપ્રેમમાં આ કશીએ ક્રિયાઓ થતી નથી. ફક્ત સુખ, શાન્તિ, નિરાકુલતા અને આનંદ ખરેખર અનંદજ સર્વ અંગમાં વ્યાપી રહે છે. પ્રભુપ્રેમ-દર્શન થવાથી આખા સરીરના દર્બારે સ્તુરાપમાન થાય છે, આત્મસીનતામાંજ ખરેખરી શાન્તિ પડેલી છે. અહા ! અવિચળ આત્મરસ પીવાથી શું એટલો આનંદ થાય છે ? અત્યંત શાન્તિમય થવાય છે. અહાહા ! અતિશય ચિત્તનંદમય બની જવાય છે. પણ જેણે પ્રભુપ્રેમ ઓગળ્યો હોય તેનેજ આ બધું છે નહીંના કંઈના નથી. જે

સુખ આત્મતાની મળે છે, તેજ સુખ સંસારિક પ્રેમથી મળે છે, એમ ને માની જોડે તે તદ્દત બોલું છે. સંસારિક સ્નેહમાંજ મિત્ર પ્રેમ આવી જાય છે.

દુધ તથા પાણીની મિત્રતામાં સંયોગ તથા વિયોગનું સુખ દુઃખ કંઈ થાય છે તે દ્વાંત તો જગ જાહેરજ છે. અહા ! કેવી મિત્રતા ! મિત્રપણું જોઈએ તો આવુંજ જોઈએ. એકતા વિના મિત્રતા કંઈજ કામની નથી.

એક પક્ષી હતું. તે એક જંગલમાં એકબીજા ધણું સુખ ભોગવતું હતું. તે એટલું તો ખુબસૂરત હતું કે તે સુંદરપક્ષી નામથી ઓળખાતું હતું તેનું આંધુપ્ય પંચ ધણું મોટું અને જે જોઈએ તે ખાવાનું જંગલમાં મળતું હતું. એવા આ સુંદર પક્ષીને પોતાની અવરથા બદલવાની આવે, ત્યારે તે પોતાનાં ઓળખીયાને ચંદનનાં લાકડાં વીણી લાવી અગ્નિ સંસ્કાર કરતો. એટલે તેને તે પક્ષી બીજું સુંદરપંચ ધારણ કરી અવનિમાં મોઝ માનતું હતું, તેમાં એક વખત બીજું નવું પક્ષી આવ્યું તેને મળ્યું. તેણે પ્રશ્નઃ અલ્યા, તું અહીં આ એકલો કેમ જણાય છે, ત્યારે સુંદરપક્ષીએ પોતાની એકલવિહારી સ્થિતિ કહી બતાવા. એટલે પેલા નવા પક્ષીએ કહ્યું કે તને - એકલું - રહેતું તે કેમ ગમે છે ? આજે હું બૂઝો પડી અહીં આવ્યો તો મને ગમતું નથી તો તું હમેશા શી રીતે રહે છે ?

ગમે તે સુખ હોય પણ એકલવિહારીમાં સુખ કે શાન્તિ નથી. કાષ્ઠપણ માંચસ હોય, પણ તેને હૃદય ખોલવાની જગ્યા અવરથ જોઈએ. તે જગ્યા યોગ્ય જોઈને પસંદ કરવી. મિત્રતા એવા જોડે બંધીતી કે જેના વિચાર આપણી સાથે મળતા હોય, જેની સાથે હમેશા રહેવાય, જન્મેના છટ એક હોય, અને કાર્યની સિદ્ધિ મેળવવાનો એક વિચારપર બનેતું મન હોય, એવા સુખચળા જોડે મિત્રતા બંધવી. અથવા શુભો જેનામાં ન હોય તેની પ્રીતિ મરજો વચન રહી નથી અને જેનામાં આવા શુભો



होय तेनी मैत्री अथवा तेनो प्रेम धर्योण
वખત કે भरથુ સુધી ટકી રહે છે. અને તેજ
મિત્ર ખીજા ભવનો પથુ સંગાતી થાય છે
અથવા થવો શક્ય છે. આ ભવમાં પથુ
જે કોઈની સાથે પ્રેમ બધાયો હોય છે તે
પથુ પૂર્વભવના સંસ્કારથીજ બંધાય છે. માથુમ
કંઈ કરી શકતું નથી. માત્ર પહેલાનાજ સંસ્કાર
એક ખીજાના હૃદયનું વખથુ કરી એક ખીજાને
ગાઠ સંબંધ રૂપે જોડે છે.

હોયે, એજ કહેવાનું કે દરેક માથુસને
કોઈપથુ એક સહયુધી માથુસ સાથે સંબંધ
જોડવો જોઈએ. કારણકે તે આપણને અનેક
વિપત્તિ કાળે ધીરજ, શાન્તિ અને ગમે તે વાતે
અથવા પૈસા ટકે મદદ કરે છે એકલાથી કંઈ
કામ થઈ શકતું નથી માટે હરેકને મિત્રની
જરૂર છે.

ખડું જોતાં અને નિશ્ચય પર દષ્ટિ ફેંકતા તો
કોઈનું કોઈ છેજ નહીં પથુ વ્યવહાર દષ્ટિથી કોઈ
પથુ માથુસ સયાક પૂછવા જોઈએ છે. હૃદયના
ભાવ ગમે તેને કહેવાથી ધણી વખતે તુકલાન
પડેજો છે. માટે જો એકજ સ્થાન હોય તો
તેથી આપણને હાનિ પહોંચતી નથી.

આ લેખનો સારાંશ એજ છે કે—યથુ—
દોષની પરીક્ષા કરી ચોખ્ખામિત્ર કરવો આવશ્યક છે.
આવિકાશ્રમની સેવિકા—પ્રલાયતી !

શ્રી વીર નિર્વાણ સમ્વત્તમે અશુદ્ધિ ।

લેખક—વં. વિહારીલાલજી જૈન, ઈ. ટી., અમરેશ ।

ઇસ સમ્વત્ત્કો-જ્ઞાનનેકે લિયે દિગમ્બર આ
મ્નાયમે શ્રી નેમવન્દ્રાધાર્યજીન મૈલૌક્યસાર પ્ર-
ત્યક્તી નિમ્નેલિખિત ગાથા હે —

પગ છસ્ય વસ્ય પગ ।

માઘ જુદે ગમિય વીર ગિન્ધુ વદો ॥

સગ રાજાદો કલ્કી ।

ચતુ ગવલિય મહિય સગમાલ ॥

અર્થ—૬૦૫ વર્ષ ૫ માસ પહિલે શક
રાજાસે શ્રી વીર મગવાનકા નિર્વાણ હુઆ ઔર
૩૯૪ વર્ષ ૭ માસ પીછે કલ્કી હુઆ ।

ગવ ચૈત્ર સુદી ૧ સે શક સમ્વત ૧૮૩૯
કા આરમ્મ હૈ, અર્થાત્ ચૈત્ર કૃષ્ણા ૩૦ તક
શક રાજાકે રાજ્યાભિષેકકો ૧૮૩૮ વર્ષ હો
ચુકે । (લેખો ઇસ વર્ષકે તીથિ પત્ર)

અવ યદિ ઉપરોક્ત ગાથાકે અનુપર શ્રી
મહાવીર નિર્વાણકા સમય શક રાજ્યકે
રાજ્યાભિષેકસે ૬૦૫ વર્ષ ૫ માસ પૂર્વક
લગાયા જાય તો શ્રી વીર નિર્વાણકો ગત
ચૈત્ર કૃષ્ણા ૩૦ તક ૧૮૩૮ વર્ષ ઔર
૬૦૫ વર્ષ ૫ માસ અર્થાત્ ૨૪૪૩ વર્ષ ૫
માસ વીત ચુકે, ઇસલિયે ગવ કાર્તિક કૃષ્ણા
૩૦ તક પૂરે ૨૪૪૩ વર્ષ વીત ગયે । ઇસ
હિસાબસે ગવ કાર્તિક શુક્લા ૧ સે શ્રી વીર
નિર્વાણકા ૨૪૪૪ વાં વર્ષ પ્રારંભ હોતા હૈ,
અર્થાત્ ગવ દિવાલીકે પીઢેસે શ્રી વીર નિર્વાણ
સમ્વત ૨૪૪૪ પ્રારંભ હોતા હૈ, ન કિ ૨૪-
૪૩ । વિદ્વાન મહાશય ઇસપર મને પ્રકાર
વિચાર કરે । ઔર યદિ ઉપરોક્ત ગાથા હી કે
આધારપર શ્રી વીર નિર્વાણકા સમય શક રા-
જાકે જન્મકાલસે ૬૦૫ વર્ષ ૫ માસ
પૂર્વકા માને તો શક રાજા (શાલિવાહન) કે
જન્મકાલસે રાજ્યાભિષેક કાલ તકકે ૧૮ વર્ષ
જોડ વેનેસે ગવ દિવાલી પીઢેસે ૨૪૪૪×૧૮
અર્થાત્ ૨૪૬૨ વીર સમ્વતકા આરમ્મ માનના
ચાહિયે । મેરી રાયમેં યહી અર્થાત્ ૨૪૬૨

वीर निर्वाण सम्बन्ध गत कांतिक शुद्धा १ से मानना निम्न लिखित कारणोंसे किसी प्रकार अनुचित नहीं, किन्तु सर्व प्रकार शुद्ध है:—

(१) श्री त्रैलोक्यसारकी उपरोक्त गाथाके पूर्णतया अनुकूल है ।

(२) कई अन्य जैन व अजैन विद्वानों तथा इतिहासज्ञ महानुभावोंकी भी ऐसी ही सम्मति है ।

(३) बौद्ध ग्रन्थोंमें लिखा है कि जब बुद्ध भगवान शाक्य भूमिको जा रहे थे तब उन्होंने देखा कि पावामें “ नात्पुत्त महावीर ” का निर्वाण हो गया है । जिससे जाना जाता है श्री वीरका जिनका निर्वाण बुद्धदेवके निर्वाणसे कुछ समय पूर्व हुआ, और बुद्ध निर्वाण सम्बन्ध आजकल २४६० माना जा रहा है, इसलिये श्री वीर निर्वाण सम्बन्ध इस २४६० सम्बन्धसे अवश्य अधिक होना चाहिये ।

नोट १—इस उपरोक्त लेखसे प्रकट है कि आजकलका माना हुआ वीर निर्वाण सं० २४४२ तो किसी प्रकार भी शुद्ध नहीं है । या तो २४४४ होना चाहिये या २४६२ । दिग्म्बर व श्वेताम्बर सर्व ही जैन विद्वान् महाशय इसपर विचार करें और जैन समाचारपत्रोंद्वारा अपनी २ योग्य सम्मति प्रकट करनेकी कृपा करें, जिससे यदि वास्तवमें इस सम्बन्धमें अशुद्धि हो तो वह शीघ्र दूर होकर शुद्ध सम्बन्धका प्रचार हो ।

नोट २—नब तक यह विषय निर्णीत न हो जाय तब तक इस सम्बन्धमें कोई परिवर्तन न किया जाये ।



लेखक—भूषणचंद जैन—अमरगढ़ ।

प्रार्थना ।

स्थिर रहे सुख शान्तिमें, नृप आजका शासन यहां ।
कपटी कुचाली क्रूरका, वमथिर न हो आसन यहां ॥
खर्चें सदा सत कार्यमें, धनवान् धनेहिय खोलकर ।
हो कार्यकर्ता कार्य तत्पर, सम्मिलित जिय खोलकर ॥

मान्यर पाठकगणों ! आज में श्री परब्रह्म परमात्माको नमस्कार करके हमारी जमि कैसी है इस बातका विचार करता हूँ ।

मैं सोचता हूँ कि आजकल रोगियोंकी संख्या क्यों अधिकतर बढ़ती हुई नजर आती है जिसमें ज्यादातर पेटकी निमारियाँ अधिक दिखाई देती हैं तो मालूम होता है कि हम परहेज नहीं करते और निद्राके छोलुपी होकर जो चाहे अनाप सनाप भक्षण करते हैं उसका नतीजा यह होता है कि हम निमारियोंद्वारा घेरे जाते हैं और हकीमोंको तलाश करते फिरते हैं । यदि बहुत खोज करनेसे कोई जानकार हकीम मित्र भी गया और हमारे पूर्व कर्मके निमित्तसे उस समय कुछ आराम हो भी गया तो किया हुआ किन्तु फिर शरीरमें बुढ़ापा शीघ्र समा जाता है और दाढ़के मुलमें भी शीघ्र ही प्रवेश होता है ।

दूसरी यह बात कि जो पदार्थ शरीरको हानिकारक होते वही बुद्धिको भी । अगर हम मांस, शराब, दाहद, द्विद, आदि का



भक्षण करते हैं या भूकसे अधिक स्वादके कारण भक्षण करते हैं। यह तो सोचते नहीं कि जिन्हाके स्वाद चाहनेके कारण क्या २ हानियाँ होती हैं। हम स्वाद ही स्वाद करते २ विद्वाके इतने लोलुपी हो जाते हैं कि अगर एक समय भी बड़े २ खुशनुमा खट्टे माँटे चटपटे तरह ९ के स्वाद पहुँचानेवाले भोजन न मिले तबतक भोजन न करें। एक दिन वह आता है कि हमारी सारी पूंजी खर्च हो जाती है और हम कंगाल हो जाते हैं और ऐसे भोजन करनेसे काम वास्तना भी बढ़ती हैं जिसके कारण आज जैन समाज विधवाओंका धर्म भ्रष्ट करना चाहती है। सोचिए ! अगर आप मांस ही खाते हैं उससे भी महान हानियाँ होती हैं। प्रथम तो यह बात कि हमारा हृदय कठोर होता है, अगर साफ भोजन किया जाता तो हमारा हृदय भी साफ स्वच्छ और निर्मल हो जाता और हमारे हृदयमेंसे दयाकी भरी छुई और जीवोंके कल्याण करनेवाली ऐसी वाणी निकलती, क्योंकि 'जैसा खावे अन्न वैसा होवे मन, जैसा पीवे पानी, वैसी होवे बानी' यह कहावत चिट्ठकल ठीक है। क्योंकि हम मनुष्योंको देखते हैं कि अगर उनकी आलसोंकि सामने किसीकी गर्दनपर छुरी भी चल रही हो तब भी उनके बचानेका प्रयत्न नहीं करते। क्योंकि देखिये, हमारे देशोंमें नित्य प्रति सैरुडों गाय भैंसादि निरपराधी जानवर बध किये जाते हैं और हमको जरा भी रुखाल नहीं होता इसका यही कारण है कि हमने भ्रष्ट पशुओंको भक्षण करके अन्ते डिलो दियागको

भी भ्रष्ट कर रखा है और दयाको हृदयसे निकाल दिया। जब हृदयमेंसे दया ही निकल गई तब हम धर्मके मार्गको कैसे ग्रहण कर सकते हैं ? जब हमने मनुष्य योनि प्राप्त की अगर तब भी धर्मको न संभाल और सदा पाप कार्योंमें लीन रहे तब बनलाईये हमको अगली गतियोंमें कितने कितने दुःखोंका सामना करना पड़ेगा ? उन दुःखोंको मैं क्या कोई भी वर्णन नहीं कर सकता इसलिए मनुष्योंको उचित है कि इस मनुष्ययोनिको प्राप्त करके अपना धर्म तो अवश्य ही संभाल लेना चाहिए, धर्म तम ही सुधर सकता है जब हम रसना इन्द्रियको वशमें कर लेंगे, क्योंकि बिना वशमें किए हम उपवास वगैरे नहीं कर सकते। बिना उपवासके किये न तो धर्मकी ओर दृष्टि हो न शास्त्र पढ़ने या सुननेमें मन लगे और आलस्य चढ़ा रहेगा।

इसलिए हमको उचित है कि हमको जैसा भी रुखा सुखा भोजन मिल जाय उसीको बहुत खुशीके साथ ग्रहण करले किंतु इतना जरूर रुखाल रहे कि शुद्ध हो, साफ हो, बुद्धि और बलको बढ़ानेवाला हो और मूलसे अधिक खा लेने पर भी रुकसान न देता हो।

मेरी अन्तिम प्रार्थना समाजसे यही है कि इस रसना इन्द्रियको तमाम हानियोंकी जड़ समझकर इसके फन्देसे सबको छूट जाना चाहिए और अष्ट मूल गुणोंको हमेशके लिए ग्रहण करना चाहिये क्योंकि यही ध्वाङ्क बनानेके लिए जड़के समान हैं और इनके बिना हमको जैनी नाम घगना शोभा नहीं देता।

इति शब्दम् ।



प्रिय भ्राताओ और बहिनो ! श्रावण शुक्ल १५ के दिन जैनियों में ही नहीं, किन्तु सब हिन्दुओं में रक्षा-बंधनका त्योहार (उत्सव) बड़े आनंदके साथ मनाया जावेगा और रक्षा-के निमित्त शुभ मंगल सूचक धागा हाथमें बांधा जावेगा । भिक्षु आशीसात्मक यह धागा कनसे और क्यों बांधा जाता है और इससे हमको क्या शिक्षा मिलती है । इस बातके जाननेकी इच्छा मनमें उत्पन्न होना सहज बात है । इसलिये शास्त्रोंमें जो कुछ इस विषयमें कहा गया है उस संक्षिप्त रूपसे आपके सम्मुख निवेदन करती हूँ ।

उज्जैनी नगरीमें श्री वर्मा नामका राजा बड़ा धर्मात्मा था । उसके चार मंत्री बलि, नमुचि, वृहस्पति और प्रल्हाद नामके थे । ये चारों विद्याके मद करि उन्नत और धर्म विरोधी थे । अचानक उस नगरके वनमें अकंपनाचार्य मुनि सातसौ मुनियोंके संघसहित पधारे । वनमें आनेके साथ ही श्रुतिपात्र मुनि आहारके निमित्त नगरमें चले गये । पीछे अवभिट्ठानके वस्त्रसे आचार्यने जाना कि आज मुनि-संग पर कुछ उपसर्ग आनेवाला है । इसलिये आचार्यने सब मुनिपोंसे कह दिया कि कोई लोग आकर तुमसे कुछ कहे तो तुम लोग कुछ न कहना, मौन धारण करना । नहीं

तो कोई न कोई उपसर्ग आवेगा । मुनिकी ऐसी आज्ञा सब संघने हृदयमें धारण की और अपने २ धर्मकार्य ध्यानादिमें प्रवर्त हो गये । नगरके लोग मुनि संघका आगमन सुनकर दर्शनको आने लगे । तब नगरके लोगोंके समूहके समूहको नगरसे बाहिर जाते देख रानाने इसको कारण पूछा तो ज्ञात हुआ कि वनमें मुनियोंका संघ पधारा है इसलिये ये लोग दर्शनको जाते हैं । ऐसा जानकर राजा भी मंत्रियों सहित दर्शनको गया । राजाने वहां जाकर मुनियोंको नमस्कार किया तो मुनि मौनसे रहे किसीने आशीर्वाद तक न कहा, तब वे चारों मंत्री बोले—ये सब मुनि मूर्ख मालूम होते हैं इनको “कूर जोगी मौन साध” की कहावतके अनुसार कुछ भी ज्ञान नहीं, ऐसे कई दुर्वचन कहे । राजा सबकी बंदना करके मंत्रियों सहित लौटा । तो रास्तेमें आहार करके लौटते हुए श्रुति सागर मुनि मिले, तो उन चारों मंत्रियोंने उनसे वाद-विवाद किया और अन्तमें हारकर लेजित हुए, मनमें बहुत कोषित हुए परन्तु राजाके साम्हने क्या कर सके थे । अपने २ घर गये । मुनिराजने संघमें पहुंचकर रास्तेमें हुआ सब वाद-विवादका हाठ आचार्यसे निवेदन किया तब आचार्य बोले—तुमने ये काम अच्छा नहीं किया, ये लोग सर्व संघको दुःख देंगे, इससे उचित है कि तुम रात्रिको कायो-सर्ग धारण कर वाद-विवादके स्थानमें तिष्ठो । गुरुकी आज्ञा पाकर श्रुतिसागरजी वहीं कायोत्सर्ग करि जा तिष्ठे । यहाँ चारों



मंत्रियोंने क्रोधके बश मुनियोंके मारनेका विचार किया और तलवार लेकर रात्रिके समय चारों मारनेको चले । रास्तेमें जाते हुए देखा कि वे ही परास्त करनेवाले मुनि उसी बाद स्थानपर स्थिर खड़े ध्यान लगाये हैं । वस चारोंने इकदम तलवार मारनेके लिये ऊंचा हाथ उठाया । उस स्थान पर नगरका रक्षक यक्ष देव था वो इस महा अनर्थ और अधर्मको देखकर दुखी हुआ और तत्काल चारोंको ज्योंका त्यों कील दिया । ज्योंके त्यों वे चारों पत्थरके पुनलेके समान रह गये । प्रातःकाल नगरके लोगोंने यह हाल देखा, कोलाहल मचा, राजा तब खबर पहुँची । तब इनके कुटुम्बियोंने आकर मुनिसे क्षमा प्रार्थना की, तब मुनिने यक्षसे इनको छोड़ देनेके लिये कहा । यक्षने छोड़ दिया । राजाने इन चारोंको काला मुँह कर गधे पर चढाय अपने राज्यसे निकाल दिया । मुनिराज अपने संघमें गये ।

ये चारों मंत्री उज्जैनसे निकलकर हस्तिनापुर गये । वहाँका राजा महापद्म, रानी लक्ष्मी मती, पुत्र पद्मरथ और विष्णुकुमार थे । यह राजा महापद्म अपने पुत्र विष्णुकुमार सहित मुनि हो गये और राजा पद्मरथ राज्य करता था । ये चारों वहाँ पहुँच कर राजासे मिले । बुद्धिमान और राजकार्मके ज्ञाता तो थे ही । इनसे राजा खुश हुआ और चारोंको अपने यहाँ रख लिये । एक दिन राजाको अति चिन्तावान देख इन मंत्रियोंने चिन्ताका कारण पूछा, तब राजाने कहा कि कुम्भनगरका राजा हरिवंश

मुझसे विरोधी हो गया, आज्ञा नहीं मानता इसी बातकी चिन्ता है । यह सुन वे मंत्री बोले— महाराज, ये क्या बात ? अभी हम लोग जाकर उसे बश करते और पकड़ लाते हैं । राजाकी आज्ञा पाकर सेना ले उस राजा पर गये और उलबट कर पकड़ उसे राजा पद्मरथके आधीन किया । इस बातसे राजाने खुश होकर कहा कि जो तुम वरदान मांगो सो लो । तब चारोंने सम्मति कर कहा कि हमारा वरदान भंडारमें जमा रहे । जब जरूरत होगी मांग लेंगे ।

कर्मयोगसे वे अकंपनाचार्यजी चौमासा लगते ही संघ सहित हस्तिनापुर पहुँचे और वनमें चार मास रहनेका निश्चय करि ठहरे । यह बात इन चारों मंत्रियोंने सुनी तब इनने सोचा कि हमने जो दुष्टता इनके साथ की थी, यदि वो बात यहाँ प्रगट हो गई तो बड़ी खराबी होगी । इस वास्ते ऐसा करना चाहिये, जिससे ये सभी मुनि कष्ट या २ कर यहीं मरे । ऐसा विचारकर भण्डारमें अमानत रखवा हुआ वरदान राजासे मांगा और वरदानमें ७ दिनका राज्य मांगा । राजा पद्मरथने प्रतिज्ञालुसार वरदान दिया, राजकाज इनके सुपुर्दे कर आप राजमहलोंमें जा पधारो । वस, राज पाकर, इनने मुनियोंके रहनेके वनमें नरमेव यज्ञ रचा । मुनियोंके चारों ओर बाड़ा बांध फूँडा करकट हाड मांसादि जमाकर अग्नि लगाई । यज्ञका बड़ा भारी धुमा कराया । इस प्रकार ऐसे २ कार्य किये जिससे मुनिराजोंको महान् कष्ट (उपसर्ग) हुआ । आचार्यकी

देशी, पवित्र, स्वादिष्ट पाचक दवाइयोंका अपूर्व संग्रह

दिलबहार चूरन

(खाना शीघ्र हजम करने व भूख बढ़ानेवाला)

किसी भी उत्तम चूर्ण में तीन गुण होना आवश्यक हैं (१) स्वादिष्ट यानी जायकेदार (२) पाचन करनेवाला (३) भूख बढ़ाने वाला । हर्ष है कि इस चूर्ण में तीनों गुण हैं। बहुत से लोगों को रोज चूरन खाने की आदत होती है उन के लिये भी यह बड़े कामकी चीज है, इसकी खुराक १॥ माशे की है परन्तु जायकेदार होने से अगर थोड़ा ज्यादा भी खा लिया जावे तो गर्मी वगैरह कोई हानि नहीं करता है क्योंकि चूर्ण होने पर भी हमने इसमें किसी तीक्ष्ण चीजका प्रयोग नहीं किया है सन दवाइयाँ मादिल गुणवाली है इसलिये बीमार आदमी भी खुशी से खा सकते हैं । पवित्र औषधियों के सम्मेलनके कारण सभी सम्प्रदायवाले वेष्टके खा सकते हैं । हम बहुत बढ़कर बात नहीं कहना चाहते हैं । इस में स्वादिष्ट, खाना जल्द हजम करना, भूख बढ़ाना तीन विशेष गुण हैं उनके लिये हम दावे के साथ कहते हैं कि इन बातों में आप को कभी धोखा नहीं होगा तिस पर भी—

आप के विश्वास के लिये—

हमने इसके एक २ तोले के नमूने के पैकेट बनाकर रखे हैं यदि आप इस चूर्णकी परीक्षा करना और इससे लाभ उठाना चाहते हैं तो एक कार्ड भेजकर बिना डांक खर्च के एक पैकेट मंगाकर परीक्षा कर लीजिये फिर आपका मन भरे तो पूरी शीशी मंगाकर लाभ उठाइये । बस इससे अधिक हम और कुछ भी नहीं कह सकते हैं । फी शीशी चार औंस (करीब आध पाव) वालीकी कीमत १) डांक खर्च ॥) तीन शीशी २॥=) डांक खर्च ॥=) आना । मिलनेका पता—

चन्द्रसेन जैन वेद्य,

चन्द्राग्रम-दृटावा ।

शेठ प्रेमचंद मोतीचंद दिगंबर जैन बोर्डिंग तरफथी प्रगट थतुं मासिक

❧ दिगंबर जैन ❧

THE DIGAMBAR JAIN.

नाता कलाभिर्विविधैश्च तत्त्वैः सत्योपदेशैस्तुगवेपणाभिः ।

सचोपयत्यत्रमिदं प्रवर्तताम्, दैगम्बर जैन समाज मासम् ॥

वर्ष १० वॉ.

वीर संवत् २४४३. भाद्रपद. विक्रम सं० १९७३

अंक ११ वॉ.



यह अंक हमारे पाठकोंके पास पहुँचेगा

तब तक तो दशलाक्षणी

उत्तमक्षमाका पर्व पूर्ण होगा और

उपयोग । उत्तम क्षमावणीका दिन

ही निकट होगा । इस-

लिये दशलाक्षणी पर्वके संवत्तमें अब न लिखकर सिर्फ दो बातें उत्तमक्षमावणीके बारेमें लिखना आवश्यक समझते हैं । दशलाक्षणी पर्व पूर्ण

करके हमारे माइयों आपस आपसमें उत्तम-क्षमा मांगते हैं और मित्रों कुटुम्बियों आदि को क्षमावणीके पत्र लिखते हैं यह तो एक

खूबी ही पड़ गई है परंतु सच्ची उत्तमक्षमा निमके पाम मांगनी चाहिये यह तो होता ही नहीं । सच्ची उत्तमक्षमा तो

मित्रोंसे नहीं परंतु शत्रुओंसे ही—अपने विरोधियोंसे ही मांगनी चाहिये । हमारे पाठक चारों ओर दृष्टि प्रसारंगे तो मालूम

होगा कि अनेक शहरोंमें भाई २ में शत्रुता पाई जाती है और अनेक न्यातियोंमें कई वर्षोंसे दो २ तीन २ पक्ष पड़ गये हैं और धर्मकार्योंमें अनेक विघ्न बाधाएं उपस्थित होती हैं । उत्तम क्षमा मांगनेका वर्ष भरमें यह एक ही दिन आता है और उसी दिन यदि परिणाम कोमल करके शत्रुओंकी ही उत्तम क्षमा मांगी जाय तो हमारी जैन कौममेंसे फूटका नाश हो जाय धरता दीलाऊ क्षमावणीके पत्रों लिखनेसे विशेष लाभ नहीं दीलता । क्षमावणीके पत्रों तो खास करके उन भाईओं पर लिखने चाहिये जिसके साथ अपनको अनशन हो । हमारे पाठक इस कथनपर ध्यान पूर्वक मनन करके मित्रों, स्नेहियों, संबंधियोंके साथ २ अपने कोई शत्रु याने विरोधी हो तो उनपर सच्चे दिलसे क्षमावणीके पत्र लिखेंगे तो विशेष लाभप्रद होगा । इन्दौर, सोलापुर आदि अनेक शहरोंमें जहां फूट महारानीका राज्य जोरशोरसे प्रवर्त रहा है वहाँके अग्रगण्य महातुभावों यदि चाहें तो इस उत्तम क्षमावणीके दिन उत्तम क्षमा



दे लेकर अपना सन झगड़ा सुभीतेसे मिटा सकते हैं। सुझेसु किमधिकम् ?



भारतवर्षकी स्थितिमें कई महिनोंसे परिवर्तन हो रहा है और अर्जुनलाल सेठीको सारी भारतकी प्रजा याद नहीं करेंगे ? अपना कर्तव्य समझ रही है और हमारे न्यायी ब्रिटिश सरकारसे उचित हक मांग रही है और हमारी सरकार भी देनेकी तैयारी कर रही है। विना मांगे कौन देता है ? इसलिये मांगना हमारा कर्तव्य ही है और वह भी न्यायपूर्वक आन्दोलन करके ही मांगना चाहिये। हिंदूके हितैषी मि० बिसैंट, बाडिया और एरंडेलको नजरबंदीसे छुड़ानेके लिये सारा हिंदूने न्यायपूर्वक आन्दोलन किया जिसका फल यह हुआ कि यह तीनों व्यक्तियोंका नजरबंदीसे छुटकारा करीब तीन माहमें ही हो चुका है। परंतु खेद है कि हमारी जैन समानके निःस्वार्थी परोपकारी नेता पं० अर्जुनलालजी सेठी जो कि ब्रिटिश राज्यके अन्तर्गत जयपुर राज्यमें तीन वर्ष हुए नजरबंद पड़े हैं उनको छुड़ानेके लिये हमारी जैनसमाजने पहले कुछ आन्दोलन किया था परंतु उसका कुछ भी फल न पाकर अब कई महिनोंसे निराश होकर बैठ रही है। क्या यही प्रत्यक्ष है ? क्या यही जीरदया है ? क्या यही समानसेवियोंकी कदर है ? नहीं, नहीं, ऐसा तो कभी भी नहीं होना चाहिये। अब भी कुछ गया नहीं है। आप फिर न्यायपूर्वक गोर आन्दोलन कीजिए और

भारतमंजी मि० मोंटगु जो दो तीन माहमें हिंदूमें पधारनेवाले हैं उनके कानोंतक इस आवाज़को पहुँचाइये कि हमें सिर्फ न्याय दिलवाइये। यदि पं० अर्जुनलालजी दोषी होते उसका दोष सिद्ध करके दिखलाईये और उनको कड़ी शिक्षा कराइये परन्तु न्यायकी कसौटीपर बिना चढ़ाये इस तरह जयपुर राज्यकी नजरबंदीसे शीघ्र-अतीव शीघ्र छुटकारा करवाइये। देर मात्र हमारे वाइसराय महोदयके ओर्डरकी ही है। हमारे भारत-जैनमहामंडलने आनतक इसके बारेमें अच्छा आन्दोलन किया है और इससे भी ज्यादा आन्दोलन करनेके लिये हम उसके कार्यकर्ताओं बाबू अजितप्रसादजी एम० ए० लखनऊ, मान्यवरजे० एल० जैनी, वज्र साहब, इन्दौर, बाबू दयाचंदजी बी० ए०, चेतनदासजी बी० ए०, बाबू माणिकचन्दजी बी० ए० आदिको आमहपूर्वक निवेदन करते हैं और हरएक स्थानपर फिर समाएं होकर इसका आंदोलन होना चाहिये।



थोड़े ही दिन हुए देहलीमें आर्यसमानियों और जैनियोंमें आर्य-देहलीमें अपूर्व धर्म समानके हॉलमें और प्रभावना। आर्यसमाजी समापतिके समापतिवर्षमें जैन पं०

मकरचन्दलालजी शास्त्री न्यायालंकार (प्रधान अध्यापक ऋषभ ब्रह्मचर्याश्रम) और आर्यसमाजी पंडित नृसिंहदेवजी शास्त्री दर्शनार्थप्रो० टी० ए० बी० कालेलालाहोरके



मध्य ईश्वर कर्तृत्व और तीर्थंकर सर्वज्ञत्व खंडन मंडन विषयक शास्त्रार्थ हुआ था जिसमें जैनियोंकी अपूर्व विनय हुई है जिससे देहलीकी सारी जनसमाजपर जैनधर्मका अच्छा प्रभाव पड़ा है और पं० मन्खनलालजी न्यायालंकारकी विद्वत्ताकी कदर करनेके लिये देहलीकी जैनसमाजने आपको वादीभक्तेशरीका पद प्रदान किया है। आर्य समाजी पंडितोंके सामने और सो भी उन्हीके स्थान और समापतित्वमें शास्त्रार्थके लिये खड़े होकर विनय प्राप्त करना साधारण विद्वत्ताका काम नहीं है। पं० मन्खनलालजी जैसे पचीस पचास विद्वान जब नजर आवेंगे तब ही जैन धर्मका प्रभाव सारे भारतवर्षमें पड़ सकेगा परंतु ऐसे विद्वान तैयार करनेके लिये स्थायी प्रवृत्त करना हमारा प्रथम कर्तव्य है। यह पं०-मन्खनलालजी दूसरे किसीके शिष्य नहीं परंतु आप स्वर्गीय स्याद्वादगारिधि वादिगनकेशरी न्यायवाचस्पति पं० गोपालदासजी चरैयाके ही शिष्य है और आपने पंडितजी द्वारा स्थापित सुरेना जैन सिद्धांत विद्यालयमें ही रहकर यह योग्यता प्राप्त की है तो ऐसे विद्वान तैयार करनेके लिये इस विद्यालयका ध्रुव फंड होना और पंडितजीकी स्मृति कायम रखनेके लिये इस विद्यालयके साथ पंडितजीका नाम जोड़ देना अतीव आवश्यक है परंतु बिना एक लाख रुपयेका फंड हुए यह नहीं हो सकेगा। इसलिये विद्यालयकी ओरसे एक डेप्युटेशन अभी

देहली पहुंचा है जिसमें अधिष्ठाता पं० धनलालजी, मंत्री पं० खूबचंदजी शास्त्री, पं० लालरामजी, पं० बंशीधरजी, व० शीतलप्रसादजी आदि शामिल हैं और देहलीमें इस फंडके लिये उद्योग कर रहे हैं, आशा है कि इस प्रयासका फल उत्तम ही निकलेगा क्योंकि श्रीमान त्यागी ऐलक पन्नालालजी महाराजका चातुर्मास भी देहलीमें है जिससे आपके उपदेशसे भी इस कार्यमें विशेष सहायता मिल सकेगी। इस डेप्युटेशनका कर्तव्य है कि इसी तरह दूसरे बड़े २ शहरोंमें जा नाहिर समाएं बुलाकर विद्यालयके काम बताये जावेंगे तो शेष ४९०००) मरा जाना कुछ मुशकिल नहीं है। जिस तरह हो शीघ्रता करके एक लाख रुपयेकी रकम पूर्ण करके विद्यालयके साथ स्वर्गीय पंडितजीका नाम जोड़ देना चाहिये।



अजमेरनिवासी रायबहादुर शेट मूलचं-

दजी सोनीके सुपुत्र
शेट नेमिचंदजीका रायबहादुर शेट
वियोग। नेमीचंदजी साहेब
जो मेजिस्ट्रेटको कौन

नहीं जानता ? आपकी दानशीलता, धार्मिक प्रेम और उदार स्वभावसे आपका नाम सारी जैनसमाज और अजमेर भरमें विख्यात है। परन्तु आज अतीव खेदके साथ लिखना पड़ना है कि शेट नेमीचंदजी अब इस संसारमें नहीं हैं। आपका स्वर्गवास दि० भादवा व० ९ को होनेका समाचार मिलनेसे हार्दिक दुःख होता है। हमारी समाजमेंसे



तीन चार वर्ष हुए कई नरत्नोंका वियोग हो रहा है उसमें सेठ नेमिचंदजीके वियोगसे विशेषता हुई है। क्या किया जाय ! होनहार बलवान है। सेठ नेमीचंदजीके स्वर्गवामके समय दानकी कुछ बड़ीभारीर कम अवश्य निकाली गई होगी जिसका समाचार मिलनेसे प्रकट करेंगे परंतु हमें पूर्ण आशा है कि आपके सुपुत्र शेट टीकमचंदजी साहब अपने पिताका नाम अमर करनेके लिये अजमेरमें या कोई अन्य उचित स्थलमें एक बड़ी भारी संस्था खोल देंगे। अजमेरमें स्वर्गपूरी समान मंदिरनिर्माणमें तो आपके लख्खे-रूपये लग चुके हैं और आपका नाम विलायत तक विख्यात हुआ है इसलिये अब तो सेठजीके नामका एक विद्यापीठ (जैन बोर्डिंग, जैन कालेज या जैन हाईस्कूल) खोलकर सेठजीका नाम अमर करना चाहिये। आशा है कि सेठ टीकमचंदजी साहब हमारे इस निवेदन पर अवश्य लक्ष देनेकी कृपा करेंगे।



देहलीका जैन समाज ! ध्यान दे।

आजसे १० वर्ष पहले गोम्मटसार त्रिलोकसार आदि सिद्धान्त ग्रन्थोंका रहस्य सर्वथा छिपा हुआ था, परन्तु आज उन्हीं सिद्धान्त ग्रन्थोंकी चर्चा करनेवाले अनेक विद्वान् दृष्टिगत हो रहे हैं। कुछ दिन पहले पाठशालाओंमें सिवा अन्य मतियोंके ग्रन्थोंके जैन ग्रन्थोंका नाम भी नहीं था, थोड़ा कहीं था भी तो केवल साहित्य और व्याकरण ग्रन्थोंका था, न्याय और सिद्धान्तको तो कोई छूता भी नहीं

था, और न उनके पढ़ानेवाले विद्वान् ही दीखते थे, प्रायः सब पाठशालाओंमें ब्राह्मण ही अध्यापक पाये जाते थे इसलिये छात्रगण यथार्थ तत्त्वज्ञानसे शून्य रहते थे, इतना नहीं किन्तु विपरीत संस्कार युक्त बन जाते थे, परन्तु अब वह बात नहीं है। अब हरएक पाठशालामें जैन ग्रन्थोंका ही पाठ मुख्यतोसे होनलगा है, साथ ही उच्च कोटिके ग्रन्थोंके पढ़ानेवाले विद्वान् भी जैन मिलते हैं।

कुछ समय पहलेके व्याख्याता केवल मनुष्य दुर्लभताका व्याख्यान देकर उच्च व्याख्याताओंकी श्रेणीमें समझे जाते थे परन्तु आज जगह-स्थानाद्दि सिद्धान्त, कर्ममीमांसा, जैन सिद्धान्त आदि तात्त्विक व्याख्यानोकी धूम मची हुई है। जो गुणस्थान चर्चा प्रायः सर्वथा छुप्त हो चुकी थी आज उसकी विस्तृत छता सर्वत्र स्वरससे सबको मुग्ध बना रही है, जैन सिद्धान्तके न पढ़नेसे कुछ दिन पहले परवादियोंके समक्ष आनेमें जैनछात्र संकोच करते थे परन्तु आज जैन सिद्धान्तके अकारण हेतुवाद और नयवादको समझनेवाले छात्र परवादियोंका सामना करनेके लिये सदा प्रस्तुत ही रहते हैं। पाठको ! इन सब बातोंपर दृष्टि डालो, और विचार करो कि उपर्युक्त सब कार्य जैनधर्मकी उन्नतिके लिये कितने महत्वके हैं, इनके अभावमें जैनधर्म आज १० वर्ष पहलेकी अवस्थासे भी न्यून हो जाता इतना ही नहीं किन्तु वहत हुए समयके वेगमें धर्मज्ञान शून्य छात्र स्वयं वहने लगने और दूसरोंके लिये सहारा बनते। सज्जनों ! ये



सब महान् उपकार किसके ? स्वा० वा० न्या० श्री० पं० गोपालदासजीके । उक्त पण्डितजीने ही अपने रहस्य पूर्ण असाधारण तार्किक व्याख्यानोसे जैन और जैनपर लोगोंको जैनधर्मके महत्वसे प्रभावित बना दिया । पण्डितजीने ही वर्तमान प्रगति और यथार्थ धर्म परिस्थितिका स्वरूप समझा कर समयसमयमें जानेवालोंसे सचेत कर दिया । अब भी पण्डितजी इतनी विद्वत्सम्पत्ति छोड़ गये हैं जो कि आर्यवाक्योंका अनुपकरण कर यथार्थ मार्गपर पहुँचानेमें समर्थ होगी ।

हम नहीं कह सकते कि ऐसे परमोक्तारीजो जैन जनता कैसे विस्मृत बनाती है ? अन्यथा पण्डितजीको स्वर्ग गता हुआ आज ७ मास बीत गये, परन्तु उनके कीर्तिस्मर सिद्धान्त विद्यालयको अभी तक धुन न बना सकी, यह क्या कम खेदकी बात है ! क्या यही धार्मिक प्रेम है ? धर्मकी गहरी चोखसे जिसका शीणशरीर हो गया, जिस निष्कामसेवीने धर्मकी उन्नतिके लिये अपनी समग्र शक्तियोंको प्राणवशसे लगा दिया, मरते २ समय तक निमको जैन सिद्धान्त प्रचारकी धुन लगी रही ऐसे महात्माके लिये समान थोड़ीसी कृतज्ञता भी नहीं प्रकट कर सका ? ध्यान रहे कि पण्डितजीने तो निम्नके लिये कभी स्वप्नमें भी किसीसे सहायता नहीं चाही, और न समान उनके उपकारोंका बदला कभी चुका ही सका है, परन्तु खेद है कि समान अभी तक अपनी आवश्यकताओंको नहीं समझ मरता । समानको स्मरण रखना चाहिये कि इस समयमें यदि

सिद्धान्तके जानकार छात्र न तयार होंगे तो जैन धर्मकी उन्नति अवश्य ही आर्य समाजियोंकी परिस्थितिमें मिल जायगी, इसमें थोड़ा भी संदेह नहीं है । इसलिये आवश्यक है कि शीघ्र ही मुरेना विद्यालयको ढूँढ बनाकर सिद्धान्त ग्रन्थोंके जानकार छात्र तयार किये जाय । साथ ही कृतज्ञता प्रकाशनार्थ उक्त विद्यालयके साथ पूज्य पण्डितजीका नाम जोड़ दिया जाय । दूसरे लोगोंने तिलक आदि परोपकारी महानुभावोंके लिये उनके निम्नके लिये लाखों रुपयेकी भेंट देकर कृतज्ञता प्रकट की है तो क्या जैनसमाज अपने ही हितके लिये ५००००० की सहायता मुरेना विद्यालयको देकर कीर्तिस्मरको ढूँढ भी नहीं बना सकता ? लोगोंने गोखले आदिके अनेक स्मारक बना दिये परन्तु जैन समाज एक सच्चे धर्मोद्धारक विद्वान्के बनाये हुए विद्यालयको भी अभी तक स्थिर नहीं कर सका । सज्जनो ! विद्यालय तो अब टूट नहीं सकता है, क्योंकि पण्डितजीके ही समान उसको सहारा देनेवाले मिल गये हैं, पण्डितजीके परम सखा माननीय विद्वान् पं० धनालालजीने उसे सम्हाल लिया है इसलिये विद्यालयको कौन चलावेगा, यह बड़ा भारी प्रश्न तो दूर हो गया । अब केवल यही प्रश्न शेष है कि 'विद्यालय कैसे चलेगा, इसको दूर करना समाजके ऊपर है ।

इस समय मुरेना विद्यालयका डेप्युटेशन दिखी गया हुआ है जिसमें समाजके हितैषी अग्रगण्य जैसे श्रीमान् विद्वद् ५० धनालालजी, जैनधर्ममृग २० शीतलप्रसादजी, माननीय



पं० लालारामजी शास्त्री, श्रीमान् पं० खूब-चंदजी शास्त्री आदि गण्य मान्य पुरुष निकले हुए हैं। इन महाशयोंकी प्रार्थना पर देहलीका जैन समाज अवश्य ही पूर्ण ध्यान देगा। देहली इस समय गौरवाश्रित है। ऐसा न हो कि अनमेरकी तरह वह भी अपनी शक्ति-को छिपा-ले। हम धार्मिक, शिक्षा प्रेमी लाला जगजीमलजी तथा ला० सोहनलालजी, ला० तिलोकचंदजी आदिसे प्रार्थना करते हैं कि वे इस अवसरको कमी न चूकेंगे और अपने पूर्ण उद्योगसे कमसेकम (१५०००) की सहायता अवश्य ही करावेंगे। यह रकम बड़ी नहीं है, श्रीमान् बा० मुलतानसिंहजी अकंले ही इसे भर सकते हैं। उपर्युक्त विद्वान (४५०००) की सहायताके लिये हरएक नगरमें धूमेंगे तभी काम चलेगा।

कोल्हापुर ता० २५-९-९७

प्रार्थी-मकखनलालजी जैन।



२९०००)का दान।

इन्दौरके दानवीर रायबहादुर सेठ हुकम-चन्दजी साहबकी धर्मसन्नी श्रीमती कंचनयाईने कौन्सी चारसके व्रतका उद्यापन किया जिसका उत्सव भादवा द्वि० सुदी १२ को हुआ। बड़े भारी लगान्ना सहित गजस निरुद्धा (२९०००) का दान सेठजी साहबने

इस अवसर पर किया जिसमें (१७०००) सेठजीके महाविद्यालय धर्मशाला चालू फंडमें दिये और (१००००) दस हजार दीतवारोंके निज मंदिरजीको दिये और (२०००)के उपकरण इन्दौरके सम्पूर्ण दि० जैन मंदिरोंमें दिये। कुल बिरादरीमें वख व श्रीफलकी प्रभावना भी वितीर्ण की। धन्य है ऐसे परोपकारी सज्जन जो व्यवहारिक कार्योंके साथ साथ धार्मिक कार्योंमें पूर्णतया सहायता देते रहते हैं।

उपहारमें तीर्थ दर्पण—इस अंकके साथ हमारे पाठकोंको दिव्यतरु (भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थदर्पण) भेंट किया जाता है आशा है कि पाठकगण इसको ध्यानपूर्वक पढ़ने और चौकटमें गडवाकर श्री मंदिरजी या पुस्तकालयमें टांकनेकी कुरा करेंगे। इसके प्रकाशक (भगत) निर्मलराम जैन (कटरा अतरफी, देहली) सूचित करते हैं कि इस तीर्थदर्पणमें यदि कुछ त्रुटियां रह गई हो तो उसकी सूचना मुझे करें ताकि आगामीको इसका खयाल रखा जाय। जिनको इस नकशेकी और आवश्यकता हो उनकी कार्ड द्वारा सूचना आनेपर भेज दिया जावेगा। कर्मकी १४८ प्रकृतियोंका नकशा आपहीकी कोशिश और सहायतासे हमारे पाठकोंको उपहार स्वरूप मिठचुका है और यह अतीव उपयोगी तीर्थदर्पण नामक नकशा भी बड़े परिश्रमसे तैयार करके उपहारमें देनेके लिये आप अनेकदा धन्यवादके पात्र हैं। तीर्थयात्राके लिये यह नकशा एक उत्तम माध्यम होगा।



पुलगांवमें खंडेलवाल सभा— आगामी आश्विन वदी ७-८ ता० ७-८ को पुलगांवमें नागपुर प्रा० खंडेलवाल चालसभाका वार्षिक अधिवेशन सेठ पदमचंदजी बैनाडा आपरानिवासीके सभापतित्वमें होनेवाला है जिसके लिये बड़ी २ तैयारियां हो रही हैं । सभी खंडेलवाल भाइयोंको इस मौकेपर अवश्य पधारना चाहिये । स्वागत कमेटीके मंत्री सेठ मोहनलाल मानमठ आपसी हैं ।

वर्धामें घुहलू संमेलन—वर्धा (५ प्रा) में आगामी आश्विन वदी ५-६ को दि० जैन बोर्डिंगका पंचम अधिवेशन सेठ नत्थसाहजी इल्लिचपुरवालोंकी अध्यक्षतामें होगा जिस मौकेपर ब्रह्माट मन्यप्रातिक कान्फरस, रथोत्सव और महिला परिषदका ने० अधिवेशन भी होगा । वर्धाका यह मेला सबसे बड़कर होगा ऐसे अनक सुचिन्ह दृष्टिगोचर हो रहे हैं । मन्य प्रातके सभी भाइयोंको अवश्य पधारना चाहिये ।

‘मुनि’का स्वास्त अंक—‘मुनि’ नामका मासिक ९३ नोदबड (खानदेश) से प्रकट होता है जिसका १५० पृष्ठका सचित्र स्वास्त अंक श्रीश्र ही प्रगट होनेवाला है । इसका अलग मूल्य (॥) और वार्षिक मूल्य २-० है ।

शिकार बंद—देहलीमें जैनियोंके प्रयाससे मनिट शिकार आदि धर्मध्वानोंपर सदैवके लिये परिन्दोंके शिकार करने व गोलीसे मारनेकी गवर्नमेंने नन्दी कर दी है ।

विद्वानोंको इनामकी सूचना—जो सन्तन “जैन सन्या (प्रतिजमण) का रहस्य”

इस विषयपर हिन्दी भाषामें लेख लिखकर भेजेंगे उनमेंसे जिसका लेख उत्तम होगा उसको यह सोसायटी (१०) इनाम देगी । लेख फुल्लसकेप कागजके २० पृष्ठसे कम न हो और ३१ नवंबर तक सभापति, श्री आत्मानन्द जैन ट्रेक्टर सोसायटी—अंबाला शहरको भेजना चाहिये । सर्वोत्तम लेखको छपवाने और स्वाधीन रखनेका सर्व हक सोसायटीको होगा ।

मालवा सभाका औपचालय—बदनगरके उक्त औपचालयका काम दिनोंदिन बढ़ रहा है । इसके मैनेजर सुचित करते हैं कि सारे हिन्दुस्थानके कई पत्र हमारे पास कई भाषाओंके ऐसे आते हैं कि जिसको हम पढ़ नहीं सकते इसलिये इस औपचालयसे औपधियां मगानेवालोंको शुद्ध हिन्दी लीपिमें ही अपना पता साफ २ लिखना चाहिये । इस औपचालयकी ओरसे इस अंकके साथ दो कोडपत्र बाटे गये हैं जिस पर हम पाठकोंका ध्यान आकर्षित करते हैं ।

पशुवध बंद—देहलीमें कालिका देवीपर होता हुआ पशुवध जीवरक्षिणी सभाके परिश्रमसे बिल्कुल बंद हो गया है ।

मैसूरमें ब्रह्मचर्याश्रम—श्री ऋषभ ब्रह्मचर्याश्रम गत ता० १८ को मैसूर पहुंचा था, वहां अच्छा सत्कार हुआ और न्या० ५० मन्त्रनगलनी, ब० गेंदनलाल तथा नेमीसगलजी वर्णीके विद्या, ब्रह्मचर्य आदि विषयोंपर व्याख्यान हुए थे । एम० नेमिसानन्या ।

छालरापाटनमें शोक—यहां शेठ लक्ष्मणलालजी पाटयाका स्वर्गवाम द्वि० भाइया



कुं० १ को हो गया। आपके सुपुत्र कस्तुर-चंदजी पांडथा सूचित करते हैं कि पिताजीके स्मरणार्थ जो रकम निकाली गई है उसमेंसे शास्त्रदानके लिये एक नवीन ग्रन्थ भी प्रकाशित किया जायगा।

कारंजापिशा भट्टारक श्री देवेंद्र-कीर्तिजीका स्वर्गवास आ० सु० १२ को हो गया। आप बड़े विद्वान, अच्छे वक्ता और योगाभ्यासी थे। क्या बड़ाद प्रान्त निवासी आपकी स्मृतिमें कुछ नहीं करेंगे?

५१ उपवास-देहलीमें स्या० जैन छोटेलाहलजीने ५१ उपवास प्र० भा० सु० १ को निर्विघ्न पूर्ण किये थे। आपका स्वास्थ्य अच्छा है।

जैनप्रभात संपादकके इस्तीफा दे देनेसे अभी बंद पड़ा है परन्तु मालवा समाके महा-मंश्री नये संपादककी खोजमें है। इसके पाठक वैयर्थ रहेंगे।

महासभाका अधिवेशन बड़वानीमें आ-गामी मेलपर करनेके लिये आमंत्रण मिला है ऐसे समाचार प्रथम जैनगण्डमें और उस परसे जैनमित्रमें छपा हैं परन्तु उसमें कुछ भी तथ्य नहीं है। अभीतक निर्मयण, नहीं किया गया है ऐसा हमें बड़वानीके पंचोसे मालूम हुआ है।

फिर शास्त्रार्थ-आगामी ३० सित-म्बरसे अंबालेमें आर्यसमाजके भेदियोंमें जैन और आर्य समाजियोंसे क्या ईश्वर कर्मफल दाता है इस विषयपर शास्त्रार्थ होगा। समाजकी ओरसे धुरंधर पं० आनेवाले हैं और जैनोकी तरफसे पं० बनारसीदासजी रहेंगे।

स्वीकार-समालोचना-संग्रहमावसे आगामी अंकमें प्रकट होगी।

उपहार-इस वर्षके उपहारके बारेमें सब खुलासा आगामी अंकमें प्रकट होगा। आगामी अंकके साथ एक उपहार अवश्य बांटा जायगा।

यज्ञोपवित संस्कार-छात्रीसा (अभात) भां ६ ज्येष्ठ आशु सु६ १५ ने दिने जैनविधि पूर्वक यज्ञोपवित धारण कर्तुं हुं।

दा३ भांस त्याग-नवा (अभनगर) भां ६ दशमी रावण अण्येयना उपदेशी ६ दशर अने १ रजपुत भणा ७ ज्येष्ठ जन्म पर्वत दा३ भांसने त्याग कर्तुं छे।

सैद गामनु पंच-छात्रीभां अउडेयना सैद गामनु पंच प्र. भादवाभां भव्य हुं, जभां अक सभां यतां वांछानेर (भीक्ष्ण) निवासी गरीबा पानायन सुलाभयना कुरीति नियेधक, संध, विद्या वगेरेपर आपणो आपवाधी रजतवला धर्म, सुनोवड वगेरे फणवा संधी तथा रजवा डटवा वगेरेना विवाज ओछा करवा संधी ७ करवा यवा दता तेभन नवाभमनी पादसाणाना विद्यार्थीजानी परीक्षा मेवाछ डटवुं छनाम पणु वेयायु हुं।

सोसाधुरभां-यतुरभाध आविवाभमनी पार्यक मेणानडे दि. भादवा सु६ ३ ने दिने जैनभिक्षारण श्रीमती भगनज्जेनना प्रमुभवे यथा दतो, ते प्रसजे निवेद्युभाध, राखुभाध अने श्रीमती भगन ज्जेने विद्या अने सेवा धर्म उपर निवेयना कर्तुं दतां, सवादे यवां दनां तथा सौ. जगनाभाधजे आविवाभमनी स्थितियि सर्वने वांछे कर्तुं दतां।

सुदासभां इयमनायजना प्राचीन भदिरना छुर्वादार भाटे टीप करवा पंच तर-धुथी डेटलाक भाजुसा शुभरातभां नीक्षेला छे तो नभां शुभरातना बाधज्याये भदद आपवी नररनी छे।

पडु (पादरा)भां व्यास भासकी पादसाणा खुली छे अने २० विद्यार्थी लाभ से छे।

मिश्र संवाद ।

मादोंका महिना है। पावस ऋतु अपनी यौवन की तरंगों सहित क्रीडास्थलमें वर्तमान रहती है। कभी गंजना करती है, तो आँखें बनाकर (विनली चमकाकर) ढरवाती है, कभी आंसु बहाती (रिमझिम रिमझिम चरसती) है, कभी पाँड़ें मारमार (नोरमे) रोती है, कभी जीम ही बना देती है (धूप हो जाती है), कभी उष्ण और कभी शीतल ध्यासे भरती है। इस समयकी इसकी नचल गतिका ठिकाना ही नहीं है। इसकी मतवाली चाल निराली ही है। कोई चाहे इसकी इस चालसे दुखी होवे व सुखी, परन्तु इसको क्या है? जो करना है वही करेगी। ठीक है जवानी दीवानी ही होती है। परन्तु स्मरण रहे कि यह जवानी अधिक समय नहीं रहनेकी। जितना काल चाल और वृद्धावस्थाका होता है, उसका एक अणुमात्र काल भी इस जवानीका नहीं होता है। यह तो जल कल्लोलवत क्षणस्थायी है। ए पावस! देव आज तू मधमस्त हुई जैसा औरोंको तिर स्कार कर रही है, ऐसा ही एक दिन होगा कि जब तू भी अन्य ऋतुओंकी अपेक्षा तिरस्त होगी। जैसे तू किमी भी प्राणीके मुख दुपसर दृष्टि न देकर मनमानी करती है, अर्थात् जैसी तुझे किमीने सहायभूति नहीं है वैसी ही याद ग्या। तरेमाथ भी कोई सहायभूति दिखानेवाला न रहेगा। कदा है—

दिन दम, आदर पायसर, करले आप बखान ।
जब लग बाक भाङ पख, तब लग तुझ सम्मान ॥

जबकि पावस ऋतु तस्यानस्याको प्राप्त थी, तब ही प्लेग महाशय वरका रूप धारण कर इससे व्याह करनेकी इच्छासे आये। अब क्या था, लगे दोनों अपना अपना बल दिखाने। पावस ऋतुने गरज कर, बरस कर, तडाका देकर खेतीको सड़ाया, मकानोंको गिराया, ग्रामोंको बहाया, रेल और पुलोंको बिगाड़ा, तो प्लेगने भवसर ताक कर विचारे असहाय जीवोंको (जो कि किसी प्रकार महिनत मजदूरी करके अपना और बाल बच्चोंका पेट पाल लेवे) बस्तीसे निकाला। 'नवरदस्ताफ ठेंगा शिर पर'। बस्तीमें रहे तो प्लेगसे मरे, कोई खबर भी न लेवे, मृतक किया भी न होवे। बाहर जावे तो हवा पानी ओलोंसे मरे, तात्पर्य "सांड साड छडे बाडी मुखत उड़े" इत्यादि अनेकों प्रकारकी विचार तर्गों उठने लगी, कभी दीनोंकी पृकार, कभी वनिकोंकी धुतकार, कभी कालका चमत्कार, कभी मोहकी हुंकार इत्यादि एकते बाद एक बात लगातार पोछे पीछे दौडने लगी, बहुत चाहा कि चित्तको स्थिर करे, परन्तु सब व्यर्थकी चेष्टा थी।

इतने ही में घोडेकी टाप सुनाई दी, तब नयचन्द्र झटके उठा और खिडकीमेंसे झांक कर देखा है तो तांगा आकर द्वारनिपर खड़ा हो गया। मित्र डेकचन्दनी उममेंसे उतर पडे, परसर शुरुार व्यवहार हुवा, फिर यथा-स्थान बैठकवानेमें ना बैठे।

डेकचन्द्र—भाई साहेबको तो कभी अक-



सान ही नहीं मिलता है। आजकल भाताजी तथा आपकी भावना बहुत याद किया करती हैं। दश दिन बाद पर्युषणपर्व प्रारंभ होगा, इसलिए विचार करना है कि अपना प्रोग्राम किस प्रकार रखवा जाय, जिससे कि कुछ सफलता होवे।

जैचंद—भैया, प्रोग्रामकी क्या बात है, वह तो मनमाना स्थिर हो सकता है। तुम पहिले यह देखो कि तुम्हारा मन, तुम्हारे आधीन है या नहीं। यदि तुम्हें धामधूम पसंद हो, जेवरकी झनकार, वस्त्रोंकी फटकार, मुखियोंकी ललकार, पुजारियोंकी व पंडितोंकी वक्ता, परस्परकी तक़ार, और गानेकी बहार इत्यादिका आनन्द भोगना हो तो, मामूली बने हुए नियमानुसार जाइये और जयजयकार उड़ाइये। और यदि इसके विपरीत आप जिनेन्द्र भाषित धर्मका पालन करना चाहते हैं, तो विगत वर्षके आश्विन मासका क्षमावनीवाला दिगम्बरजैनका अंक निकालकर पढ़ जाइये कि मैंने किस प्रकार इस पर्वके दिनोंमें समयका व्यवहार किया था, उसीके अनुसार यदि पसन्द हो तो कीजियेगा। अर्थात्—

नित्य प्रातःकाल ४ बजे उठकर हाथ मुंह धोकर प्रातःकालीन संन्या (सामायिक) करना, नित्य प्रति क्रमसे उत्तम क्षमादि दश धर्मोंकी जाप देवें, उनकी भावना पाँच, इसके विपरीत, क्रोध मान मोया लोभादि कपार्योंको यथा-संभव दमन करें, सामायिकके बाद छह बजे शौनादि क्रियासे निवृत्त होकर स्नान करें और फिर एक अध्याय तत्त्वार्थ सूत्रका सार्थ

पढ़ें, भक्तान्तर सहस्रनाम आदिका पाठ करें, आठ या साढ़े आठ बजे अष्टद्वय संज्ञाकर श्रीजिनेन्द्रकी पूजन करें, जितनी पूजनपाठ करें उनका भाव भले प्रकार समझें, तभी पूजाका फल होता है। बहुत लोग रुढ़ीके अनुसार संस्कृत तथा प्राकृत और भाषादिकी बहुतसी पूजाएं करते हैं, समवशरणादि बड़े बड़े पाठ दो दिनमें व एक एक दिनमें पूरे कर डालते हैं, अथवा केवल गानेकी लयमें लय हो जाते हैं। इस तरह चार घंटे बिता देते हैं, परंतु अर्थ कुछ भी नहीं समझते हैं। इससे उनका चित्त स्थिर नहीं होता है, केवल पूरा पाठ करनेकी पड़ती है। कभी कभी चढ़ानेवाले मिलते हैं तो बाँचनेवाले नहीं मिलते, और बाँचनेवाले मिलते हैं तो चढ़ानेवाले नहीं सड़े होते, और रुढ़ि ऐसी है कि इतनी पूजन होना ही चाहिये। जो हो हम तमालोचना नहीं करना चाहते। हमारा अभिप्राय तो सपञ्चर पूजा करनेसे है कि, पूजा परम भक्ति श्रद्धापूर्वक तन मन वचनकी एकाग्रतासे करना चाहिये।

पूजाके पश्चात् दश लक्षणोंमें एक एक धर्मका व्याख्यान पढ़ें व सुनें। फिर यदि उपवास न हो, तो दो पहरका सामायिक करके प्रातःक, शुद्ध, नीरस या रस त्यागकर एकासनसे ऊनोदर भोजन करें या दो बार नियमपूर्वक भोजन कर लें। भोजनान्तर पुनः पूजन विधान करें अपना स्वाध्याय करें, तत्वोंकी चर्चा करें, आत्माका विचार करें। सांझ होते समय पुनः सामायिक करें, वंदना स्तुति करें, शाश्वतमा



कर व सुने । इस प्रकार सवेरसे १० बजे रात्रि तक यथायोग्य समयका व्यवहार करे । रात्रिको जहां तक निद्रा न आवे, कुछ आत्म चिंतन करता रहे और उन्हीं विचारोंमें निमग्न हुवा निद्राकी गोड़में जा पड़े, इत्यादि यही प्रोग्राम है । तात्पर्य यह कि इन पर्वके दिनों जितना हो सके अपनी कषाय और विषयोंको भंद करे, गृहारम षष्ठा देवे, समयको अमूल्य समझकर एक मिनट भी व्यर्थ न खोवे । चौधके दिनसे पूर्णके दिन तक, अर्थात् धारणाके दिनसे पारणा तक सब प्रकारके गप्पार पंथोंको बंद करके युथासंभव धर्मध्यानमें काल बितावे । रूढ़ीमें धर्म नहीं है । धर्म तो आत्माको विषय कषायोंसे छुड़ाकर अपने शुद्ध स्वभावको प्राप्त करना है । और ये पर्वके दिन उसीकी प्राप्तिके साधनभूत अभ्यास करनेके लिये नियत किये गये हैं ।

टेकचन्द—भाई साहब इस साल मैंने भी यही विचार कर लिया है कि न तो नवीन कपड़े बनवाना, न गहना ही उजरवाना, कुछ कपड़ोंके व्यवहारका निषम रख लूंगा, जो स्वच्छ और साधे होंवें, उन्हींको काममें लूंगा । लुम्हारी भावनेके विचारोंमें भी अब बहुत अन्तर पड़े गया है । अब तो मयमनन (दण्ड) को कभी स्वस्थान च्युत नहीं होना पड़ता है । वह योग्य सम्मति देती है । आपने न जाने क्या जादूसा कर दिया है कि अब वह बहुत शांत हो गई है ।

जैचंद—भैया, यह आश्चर्यकी बात नहीं है, जीवोंके कर्मका उदय तो है, जब ऐसा

रस देने लगे । बाह्य निमित्त मिलनेसे भी वह कार्यकारी हो जाता है । खी हो या बच्चे, उनपर अपने ही लोगोंकी प्रतिभा पड़ती है । भावनेके स्वभावमें अन्तर पड़नेका कारण यह है कि आपके भी स्वभावमें तो अन्तर पड़ गया है । अपन शांत स्वभावके होवेंगे तो अपने आश्रित जन भी ऐसे ही हो जाते हैं । कहा भी तो है “आप भला तो जग भला” आपने जो विचार किया है वह सराहनीय है । तो अपन सब डेढ़दियोंके मंदिर (नरसिंहपुर)में ही पूजन करेंगे, क्योंकि वहां एकान्त रहता है ।

टेकचंद—ठीक है, यह बात तो हुई, परन्तु एक बातकी शंका कई दिनसे हो रही है उसीके लिये आज मैं विशेष करके आया हूँ । जैनमित्रादि पत्रोंमें छया था कि जैनजाति मृपण दानवीर सेठ हुकमचंदजीने एक लाख तोला चांदीकी प्रतिभा (तीन) अपने नवीन मंदिरमें इस शर्तपर विराजमान करनेका विचार किया है कि यदि उनकी सहधर्मिणी आरोग्य हो जावेंगी । तो, सो क्या यह बात सत्य है ? अच्छा, कदाचित्त (ऐसा न होवे) कि उनको डेढ़ वर्षमें स्वास्थ्य लाभ न हुआ, तो फिर क्या होगा ? और क्या इस प्रकारकी कपूलतसे वह स्वास्थ्यलाभ कर सकती हैं या कोई उन्हें स्वास्थ्यलाभ करा देगा ? क्या बात है ? कुछ समझमें नहीं आती । भाई, मैं तो मूढ़ मंती हूँ, कृपया संशय दूर कीजियेगा ।

जैचंद—भैया, ऐसी बातोंमें मौन रहना ही ठीक है, कारण समयकी विरक्षणता ही



समझिये । आजकल यदि यथार्थ बात कही जाती है तो लोग उसे भ्रष्ट, अश्रद्धाहीन, नास्तिक, धर्मघातक आदि शब्दोंमें स्थागत करते हैं, और अनेक प्रकारसे उसके व्यवहार-को अटका देनेका प्रयत्न करते हैं ।

टेकचंद—यह तो ठीक, परंतु वस्तुका स्वरूप तो जानना ही चाहिये ।

जैचंद—हां यह ठीक है, तो समझ लेंगे कि इस प्रकारकी कबूल करना जैनधर्मानुकूल नहीं है । सिवाय इसके एक और भी बड़ी हानि इस सोने चांदी हीरा पत्ता आदि बहु मूल्य पदार्थोंकी प्रतिमा बनानेमें यह है कि फिर इन प्रतिमाओंके दर्शन भी दुर्लभ हो जाते हैं, निरंतर तालोंमें बंद रहती हैं, चारों ओर विद्रोहियोंके द्वारा नष्ट होनेका निरंतर भय रहता है, जैसा कि महमूद गजनवी आदि अन्यायी मुगल सम्राटोंके समयमें हुआ था—काश्मीरके प्रसिद्ध सोमनाथके (शिव लिंग) मंदिरमेंसे मूर्तिको तोड़कर स्वर्ण रत्नादिक डेढ़ाया, कुछ भाग नगरके प्रदर्शनी ग्रहमें रख गया और कुछ गजनीकी मस्जिदके द्वारपर आन जानेके स्थानपर लगाया, इत्यादि । सो भाई, गैरी समझमें तो मनुष्याकार पाषाणकी मूर्तियां ही हम लोगोंके लिये कल्याणकारी हैं । अब रही यह बात कि मैं गरीब हूँ—निर्धन हूँ, सो क्याचित ऐसे भाव आते हों । परन्तु मैं तो यहां तक सोचता हूँ मूर्ति और जपमालादि तो बहुत मूल्य सुवर्ण रूपा, मणि, मोती, रत्नादि की नहीं होनी चाहिये; इसमें रक्षाकी भिन्ना और लालचियोंकी निहास

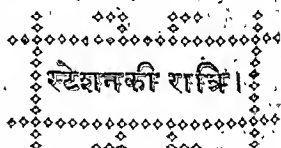
लार टपकना लगा ही रहता है । फिर यह जिन धर्म वीतरागी धर्म है । इसमें कबूल व आकांक्षा न करके ही धर्म कार्योंमें दानादि-की प्रवृत्ति करना चाहिये ।

टेकचंद—बस भाई, समझ गया अच्छा, अब जाता हूँ । जुहार ।

जैचंद—अच्छा भैया जुहार । फिर शीघ्र मिलना । जुहार ।

टेकचंद तांगेपर बैठकर लम्बे हुए और पानी भी टिपटिमाने लगा । जैचंद अपने विचारोंमें निमग्न हो गये और हम भी अब शास्त्रसभामें चले । जुहार ।

दीपचन्द परिवार, नरसिंहपुर ।



स्टेशनकी रात्रि ।

(लेखक—श्यामकुमार जैन स्था. म. काशी ।)

(गतांसे आगे)

(५)

अपने मित्र, निताईचन्द्रकी चारांतमें जो बहुतसे कलकत्तानिवासी आये थे, वे उन्हीं (निताईचन्द्र) के मित्र थे । निताईचन्द्रके हृदयमें बचन ही से शुद्ध सम्बंधी भाव उत्पन्न हो गये थे । उसने पत्रमें जो विवाहको "युद्धारम्भ" और सुसरालको "शत्रुदुर्ग" वर्णन किया था, उसके (उक्त दोनों शब्दोंके) द्वारा उसका यह स्वप्नमें भी विचार न था कि, मेरे चतुर्गुण आपत्तिमें पड़ेंगे ।



जिन ग्राममें विवाह हुआ वह स्टेशनसे दो कोसकी दूरीपर था। विवाह और खान-पानके बाद, निताईचन्द्रसे बिदा लेकर वे सब स्टेशनको चल दिये। सीधी रास्ता है, मूछनेकी कोई आशङ्का नहीं है। ज्योतिस्नाके उजेलेमें गीत-गाते २ अति आनन्दसे गमन करने लगे।

जब रातके दो बजे तब स्टेशनका उजेला दृष्टिगोचर हुआ। थोड़े ही समयमें वे स्टेशन पर आ पहुँचे। वहाँ देखा कि एक बाबू सिरपर साफा बाँधे हुए प्लेट-फार्मपर घूम रहे हैं। उन्होंनेसे एक युवकने बाबूसे पूछा “बाबू सख्त ! देन आनेगें अभी कितनी देरी है ?”

बाबू—वया आप ही लोग आज शामके पाँच बनेकी देनसे आये थे !

युवकगण—जी हाँ ।

बाबू—आप लोगोंमेंसे, कुछ आदमी हाव-देके स्टेशनपर रह गये थे ?

कुछ—यह तो नहीं मालूम, पर और तीन आदमी आने वाले थे, वे नहीं आये; शायद वे ही पीछेसे आये हों ! क्यों ? कोई आया है क्या ?

बाबू—तो ठीक है, आपहीके साथी हैं। दो आदमी आज रातके ९ बनेकी देनसे आये हैं, उनमेंसे एकको बहुत मोरसे ज्वर चढ़ आया है।

कुछ—व कहाँ ठहर रहे ?

बाबू—वह देखिये, जो लम्बीसी कोड़ी दिखती है उसीमें वे ठहरे हैं। मैं अभी

देखनेके लिए गया था, उसको १०५ डिग्री बुखार है।

युवकगण आपसमें कहने लगे—शायद मोहनलाल और रामस्वरूप होंगे। रामस्वरूपको ही ज्वर आया होगा। हाय ! उस बेचारेको हमेशा रोग ही बना रहता है।

बाबू—हाँ हाँ, रामस्वरूपको ही बुखार है। मैं नाम भूल गया था। चलते हैं ? चलिये कह कर, बाबू मकानकी ओर चल दिये। पाठक ! समझ गये होंगे कि, ये वे ही गोवर्दन बाबू हैं, मिनकी इज्जत, महाशयने दिलगी उड़ाई थी।

युवकगण भी उनके पीछे ९ चल दिये। मकानपर पहुँचते ही बाबूने कहा “देखिये यह सो रहे हैं” क्योंकि रात भरके जगे हुए हैं। आप लोग धीरे धीरे जाइये, जिससे उनको शब्द न सुनाई दे, नहीं तो उनकी निद्रा भंग हो जायगी, फिर निद्रा आना मुश्किल है।

युवकोंने देखा कि, उस लंबे मकानके पिछलेसे मागमें एक पलंग बिछा हुआ है। पलंगके पास ही एक मेज़ पड़ी है। उसके ऊपर तीन चार औपचारिकी शीशियाँ रखी हैं, दीवालपर एक लाइटबन लगी है, उसका प्रकाश भी बहुत थोड़ा है।

युवकगण निःशब्द प्रवेश करने लगे। प्रायः सब एक ही साथ शय्याके पास पहुँचे। दो तीन आदमियोंने रुलाई उठाकर देखा तो, वहाँ केवल बिजौने ही बिजौने दिखाई दिये।



अब तो वे घबड़ाये, और बाहर निकलनेके लिए दरवाजेमें धक्का मारा; परन्तु दरवाजा बाहरसे बंद है, यह जानकर तो उनके छक्के छूट गये, और बावू बावू कहकर चिल्लाये लगे । परन्तु सब प्रयत्न व्यर्थ हुए । किसी ने पलंग ही तोड़ना प्रारम्भ कर दिया । इतनेमें तुलसीने कहा “ भाई कुञ्ज, इस काल कोठरीमें कब तक रहेंगे ? मुझे लालटेन दो, इन किवाड़ोंपर तेल डालकर दियासलाई लगा दूं ।

कुञ्ज—धूँआँ भर जानेपर....

केशव—यम घर....

राजेन्द्र—क्यों ?....

केशव—यों की, त्यों....

कुञ्ज—अब इन बातोंको जाने दो । मैं जो कहता हूं उसे ध्यान देकर सुनो, इस पलंगको तोड़के इसकी निवार खोलो, और पलंगके पाटिया व मेज़के पाये, इस निवारसे बांधकर एक नसैनी बना लो । उस नसैनीसे ऊपरके झरोखेमें पहुँच जायेंगे । फिर निवारको खोलकर, उसको दोवर करेंगे, और उसमें एक हाथके फासले पर गांठ देंगे । फिर उसको तुम लोग पकड़े रहना, और मैं उस तरफ उतर जाऊंगा । यदि ताला लगा हुआ देखा, तो सीधे थानेमें जाकर दरोगासे सब हाल कहूंगा जिससे वे सिपाहीको भेजकर हम लोगोंका इस विपत्तिसे उद्धार करेंगे । यह कहकर सचने मित्रवर नसैनी बना ली । नसैनी और निवारके रस्तेके सहारे कुंज बाहर चला आया ।

स्टेशन मास्टर इस विपत्तिसे मयभीत होकर, पहिले ही से ताला तथा साँकल खोल आये थे । उन्होंने विचारा था कि, ये थोड़े ही समयमें निकल भागेंगे । अतएव मेरी भी जान बच जायगी, परन्तु उन विचारोंको दुर्भाग्य ।

स्टेशन मास्टरने आफिसमें जाकर देखा कि गोवर्द्धन बाबू चादरा ओढ़े मेज़पर सो रहे हैं । उस तालीको जहाँकी तहाँ रखकर, स्टेशन मास्टर अपने कार्यमें तत्पर हो गये ।

थोड़ी देरके बाद गोवर्द्धन बाबूकी आँख खुल गई । उन्होंने सूर्यका प्रकाश देखकर कहा (स्टेशन मास्टरसे) “ थानेको आदमी भेना है ? ”

स्टे० मा०—नहीं । एक भी खलासी का पता नहीं, कहिये क्या करूं ?

गो० बा०—अच्छा मैं ही जाता हूँ । थाना यहाँसे कितनी दूर है ?

स्टे० मा०—एक मीलके करीब होगा !

गो० बा०—इससे अच्छा तो यह है कि मैं कलकत्तेको तार दे दूं । जिससे हथियार-बन्द पुलिस आकर, इनको पकड़ लेगी । फिर तों किला जीत ही लिया है ।

स्टे० मा०—मेरी समझमें भी यही आता है, क्योंकि यहाँकी पुलिसका कुछ विश्वास नहीं । आप तार लिखिये, मैं अभी जाता हूँ कहकर स्टेशन मास्टर वहाँसे चम्पत हुए ।

गोवर्द्धन बाबू तार लिखने बैठे ही थे कि, इतनेमें बाहरसे कोलाहल व जुत्तोंके शब्द सुनाई पड़े । गोवर्द्धन बाबूने बाहर आकर देखा, उससे उनके हृदय कमजोर नड़ामार



वधा पहुंचा । इनमें उनसे एक युवकने रुहा यह वही तो है, जिसने हम लोगोंको बन्द किया था ।

इसके सुनते ही, 'मारो मालेसो' कहकर सबके सब गोवर्द्धन बाबूके ऊपर दूट पड़े ।

गोवर्द्धन बाबूने उनको अपनी ओर आंत देख, जंगलकी ओर भागना शुरू कर दिया । जंगलमें दौड़ते दौड़ते उनका जूते गिर पड़े । अतएव कांटोंके मारे उनकी नाकमें टप हो गई । कमश गति मन्द होने लगी । निदान वे एक घुस्के तले गिरे पड़े । होश आने-पर गोवर्द्धन बाबू धीरे धीरे स्टेशनकी ओर चलने लगे । तीन चार घण्टेके बाद स्टेशन पर पहुंचे ।

स्टेशन मास्टरने उनकी यह अवस्था देखकर, उनको अपने कपड़े पहननेके लिए दिये । कपड़े पहनकर गोवर्द्धन बाबूने कहा, 'देन इन आवेगी ?'

स्टे० मा०—क्या ? आपको जाना है ?

गो० बा०—जी हाँ—

स्टे० मा०—आती ही होगी । पाव मिनटकी देरी है ।

गोवर्द्धन बाबू—अच्छा, मैं चला कह कर पहासे चल दिये ।

दुमरे दिन ही वीरेन्द्र बाबूके नाम, एक बटी सी झुक पैकेट आई । उसको खोलकर वीरेन्द्र बाबूने पुस्तकोंको डैकमें रख दीं, और गोवर्द्धन बाबूके लिए धन्यवादपत्र लिखने बैठ गये ।

धन और उसकी प्राप्ति ।

(ले०—मोहनलाल बजाया, कुचामन ।)

धन, दौलत, द्रव्य, लक्ष्मी (Wealth) आदि शब्द एक ही अर्थके वानक हैं । उन बड़ी प्यारी वस्तु हैं । धन बिना हम ससारमें कोई भी कार्य नहीं हो सकता । इसीसे अच्छे अच्छे कपड़े पहिननेको मिलते हैं । इसीसे गाड़ी घोड़े, बगी आदि रख सकते हैं । धन होनेसे ही महल हवेली, बाग बगीचे, धर्मशाळा, मंदिर, सरस्वती भवन आदि बना सकते हैं । इसीसे बेटे बेटियोंका विवाह बड़ी धूमधामसे कर सकते हैं । इसीसे लाखों रुपया धर्म कार्य चन्दे आदिमें देकर स्थापन खोलकर, तीर्थयात्रा कर, नामवरी एवं धर्मोपनिषत् कर सकते हैं ।

जैसे बच्चा समझने लगता है तभीसे पैसेको प्यार करने लगता है । और मनुष्य बूढ़ापे—अत्यंत तीर्थशीर्षि अवस्था तक एवं मरे जब तक इसके उत्पन्न करनेमें—उपार्जनमें लगा रहता है । यानी धन बच्चेसे लेकर बूढ़े तकको प्यारी चीज है । इसकी प्राप्ति हेतु मनुष्य अहर्निश परिश्रम करता है, इतना ही नहीं पर धनहीके लिये जन्म लिया है ऐसी तरहसे धनके पिछाड़ी तनमनसे जीजानसे लग रहा है । जिसके पास धन होता है वह मूर्ख, गुणहीन तथा अन्यायी होनेपर भी चतुर, गुणी और न्यायी कहलाता है । निर्धनी सर्वगुणसम्पन्न होनेपर भी अपन स्थानपर भी प्रतिष्ठा नहीं पाता, और धनी सर्व प्रकारसे अयोग्य होने



पर भी सब स्थानों पर प्रतिष्ठा पाता है । आजकल हमारी सभा सोसाइटियों की सभापति आदि पद पर भी सेठ लोग ही स्थापित किये जाते हैं । यद्यपि विद्या के समान संसार में और उत्तम वस्तु नहीं है । इस आत्मा का कल्याण साधन भी इस विद्या (ज्ञान) के द्वारा ही होता है । संसार की उन्नति का होना विद्या ही पर निर्भर है, एवं धन भी विद्या के द्वारा उत्पन्न किया जा सकता है; तथापि मनुष्य जब तक धनसम्पन्न न हो तब तक उसकी प्रतिष्ठा नहीं होती ।

दृष्टान्त है कि—एक दरिद्री पुरुष अत्यंत दुखी होकर धन कमाने की इच्छा से बाहर निकला । राह में एक गांव पड़ता था, वहाँ उसकी बहिन रहती थी । बहिन एक धनवान को व्याही गई थी । वह बहिन के पास मिलने की इच्छा से गया । बहिन ने सुना कि भाई दरिद्र-वस्थामें आया है, इसलिये उसे कहलवा दिया कि मेरे घर न आवे, और नगर के बाहर ही एक टूटे फूटे मकान में ठहरा दिया और वहीं पर उसके लिये खाने को भेज दिया । उस दरिद्र को बड़ा शोक हुआ और उसने विचार कि वह मुझ निर्धन से क्यों मिलने लगी । हाय ! दरिद्रता बड़ी दुखदायी है—ऐसा विचार करता हुआ वह बरस से चला और देशांतर में जा पहुंचा । वहाँ पर उसने उद्यम किया और बहुतसा धन कमाया । धनवान बनकर वह अपने देश को लौटा और बहिन से मिलने गया । बहिन ने सुना कि भाई बहुत अच्छी दशामें आया है, अपने मकान में

बड़े आराम से ठहराया और भोजन के लिये अच्छी अच्छी सामग्री बनाकर थाल परोसा । भाई जो आभूषण पहिने हुये था वे सब, और रुपयों की एक थैली थालके सामने रखकर देने लगा—“भोजन करो, द्रव्य ! तू भोजन कर ! ”

बहिन बोली—भाई, यह क्या बात है ? “आप भोजन क्यों नहीं करते ? ”

वह बोला “बहिन, तूने भोजन इन्हीं के लिये बनाया है अतः मैं इन्हीं से—धन आदि से ही कहता हूँ कि भोजन करो, यदि तू मुझे ही खिलाती तो जब यहां—पहिले आया था तब ही खिलाती—इसी प्रकार भोजन कराती ।” सच है धनी की वे लोग भी निन्दा करते जिनका उनसे कोई स्वार्थ नहीं सघता । निर्धनी की वे भी निन्दा करते हैं जिनके स्वार्थ के लिये वह सदैव प्रयत्नवान रहता है । हम कहते हैं कि विद्या के द्वारा बड़े बड़े कार्य हो सकते हैं एवं धनोपार्जन भी विद्या से हो सकता है यह नहीं, आजकल इसके विपरीत बात है । आजकल विद्या भी धन से प्राप्त होती है । जिसके पास सैकड़ों हजारों रुपये स्कूल की फीस देने की और प्रुस्तकें खरीदने की रखते हैं वही विद्या पढ़ सकता है । बाकी निर्धन का कुछ सहारा नहीं । निर्धनों का सहारा धनिक हैं । उन्हें योग्य है कि निर्धनों को पढ़ावे उन्हें स्कूल-शिष आदि सहायता देवे पर धनिकों की आँखें खुलें तब ना ? उन्हें अभी पुत्र विवाह आदि में कहो तो लक्षों रुपया लगा दें, पर इन कार्य में परोपकार में वे क्यों लगाने लगे ? उन्हें यह



ज्ञान कहा रखता है कि परोपकारमें । धर्म कृत्योंमें लगाया हुआ द्रव्य खेतीकी भांति है, कि एक गुना बीन डालें और कई गुना अधिक फल पावें । लक्ष्मीसे सम्बन्ध स्थापित रखना है अगर चाहते हो कि आगेको फिर मिले तो इसे सत्कार्योंमें लगावो ।

प्रिय वन्द्युगण ! धन ऐसी ही वस्तु है । पर धनकी प्राप्ति कैसे हो ? हम धनके लिये इतना परिश्रम करते हैं तो भी उसकी प्राप्ति नहीं होती इसका क्या कारण है ? इसका उत्तर यह है कि प्रथम तो हम सचा प्रयत्न ही नहीं करते और फिर प्रेम प्रयत्न करते हैं जैसे साधन नहीं हैं, इसी लिये कार्यकी सिद्धि होना कठिन है । कारणसे कार्यकी उत्पत्ति होती है । और उसके अनुसार चले बिना कार्य सिद्धि की आशा करना नितान्त भूल है । धन लाभ-द्रव्य प्राप्तिके सम्बन्धमें कई तो प्रारब्धको मुख्य मानते हैं और कई उद्योगगो । यद्यपि धनी होना प्रारब्धपर निर्भर है, बिना प्रारब्धके कोई विशेष श्रीमान नहीं हो सक्ता है, तथापि प्रयत्न करनेसे कोई मनुष्य दरिद्री नहीं रह सकता । विचारिये प्रारब्ध भी क्या चीज़ है ? प्रारब्ध भी पूर्वजन्ममें किये हुए शुभ अशुभ कर्मोंका फल ही है, इसलिये हमें निरुपम-आलसी नहीं बनना चाहिये । जो मनुष्य आलसी होता है उसको कभी सफलता नहीं होती । आलस्य मनुष्यका पगम शत्रु है । आलस्यको कभी धन न आने देना चाहिये और सदैव प्रयत्नशील उद्योगी बने रहना योग्य है । इस

जगह में इतना और कह देता हूँ कि उद्योग करनेके पूर्व यह अवश्य विचार लेना चाहिये कि यह हमारा उद्योग शुभ है व अशुभ, नीतियुक्त है व अनीतियुक्त, शुभ परिणामी है व अशुभ परिणामी, इन बातोंका निर्णय करके आगे बढ़ना चाहिये । अन्यायसे, निकृष्ट कर्मोंसे कभी भी द्रव्योपार्जन करना योग्य नहीं है । आजकल धनके लिये लोग नीचसे नीच काम करते हैं, यहां तक कि इन धनके खातिर ही अपनी प्यारी बेटीको भी बेच देते हैं । ऐसा द्रव्योपार्जनका मार्ग कभी ठीक नहीं हो सकता । व्यापारादिमें हम उल्लिखित कष्ट करनेसे बिल्कुल नहीं डरते हैं । पर हमें याद रखना चाहिये कि कष्टसे हमारे व्यापारको बड़ी हानि पहुँचती है ।

मृदु व्यवहार, कष्टनासे हमारा विश्व स छूट जाता है और हम हमारे उद्योगमें, व्यापारमें निष्फल हो जाते हैं । ग्राहक आना है तो हम हमारी वस्तुके दुगुने, तिगुने दाम मांगते हैं । ग्राहक एकदम कम दाम कहता है, फिर क्रोध वह बढ़ता जाता है और हम घटते जाते हैं । यह दग ठीक नहीं । इससे दुकनदारका तथा ग्राहक दोनोंका समय व्यर्थ जाता है, क्योंकि ग्राहकको भी ठीक जचाईक हेतु ३-४ दुकनदारोंके यहां फिरना पड़ता है और तब फिर वही सौदा एक दुकनदारसे पड़ता है । विदेशी दुकनदारोंको लीमिये उनके यहां एक मूल्य नियत रहता है । उसी वस्तुको चाहे एक अनजान बच्चा खरीद खाने चाहे एक समप्रदर मनुष्य, मूल्य एक ही लगेगा । उदा है

Honesty is the best Policy इसको हमें अच्छी तरहसे ध्यानमें रखना योग्य है, क्योंकि निरुद्ध कर्मोंके द्वारा जो प्रतिष्ठा होती है वह यथार्थ प्रतिष्ठा नहीं है। मनुष्यकी यथार्थ प्रतिष्ठाले लिये शुद्ध आचरणकी आवश्यकता है। आचरणके सम्मुख धन किसी भी गिनतीमें नहीं। महात्माओंकी प्रतिष्ठा धनसे नहीं हुई है केवल शुद्धाचरणसे हुई है, अतः शुद्धाचरण ही सबसे श्रेष्ठ है। न्यायका पालन करना ही शुद्धाचरण है। और इसीलिये शास्त्र कहते हैं कि नीतिज्ञ लोग, चाहे निन्दा करो व प्रशंसा, धन सम्पत्ति चाहे रहे और चाहे वह नाश हो नावे, चाहे आज ही मृत्यु हो और चाहे एक कल्पभर जीवित रहे, किन्तु न्यायके पालनेसे कभी विमुख नहीं होना चाहिये। अन्यायसे अधिक धनोपार्जन करके महल बनाकर रहनेसे थोड़ा धन कमाकर झोंपड़ा बनाकर रहना अच्छा है। न्यायसे कमाकर सूखी रोटी खाना अच्छा है पर अन्यायसे विविध प्रकारके व्यञ्जनोंका खाना अच्छा नहीं है। अन्यायसे प्राप्त किया हुआ द्रव्य अल्प काममें ही नष्ट हो जाता है। न्यायसे उत्पन्न किये हुये द्रव्यसे मनुष्यकी विशेष उन्नति होती है, अन्यायसे प्राप्त करनेसे समानको हानि पहुँचती है। अतः अन्यायसे द्रव्योपार्जन करना महा पाम है।

इसलिये प्रियवन्धु गण, न्यायसे द्रव्य कमाना चाहिये और उद्यम सदैव करते रहना चाहिये। निरुद्धमी होनेसे ही भारतवर्षकी यह दशा हो रही है। समय अनमोल है—

उसका मोल नहीं हो सकता, जो समय निकल जाता है वह चाहे जितनी मिहनत करो, व चाहे जितना धन व्यय करो फिर नहीं आ सकता। अतः एक मिनिट भी समय व्यर्थ नहीं खोना चाहिये।

संसारमें जलचर, थलचर, नमचर, सभी कुछ न कुछ काममें लगे हैं, निरुद्धमीका कोई भी आदर नहीं करता। सबको काम ही प्यारा है "Motion means life and stagnation means death" प्रत्यर्थ ही जीवन है और आलस्य या प्रमाद, मृत्यु या ह्रास है। जो प्राणी, जो पुरुष, जो जातियाँ इस प्राकृतिक नियमका पालन करती हैं वे सुखी, समृद्धिशाली और चिरंजीवी रहती हैं और जो इसके विरुद्ध चलती हैं वे दुखी, दरिद्री और अल्पजीवी होती हैं। लोहा जब तक प्रयोगमें रहता है तलवार कहलाता है और शत्रुके हृदयको दहला देता है, परन्तु जब वेकार हुवा तो काटा जाता है और पाती कहलाता है और कोई उसकी कदर नहीं करता। बहता हुआ जल सबके मनको भाता है, पर गढ़के स्थिर जलको कौन पसन्द करता है? कार्य करनेसे, परिश्रम करनेसे ही कार्यकी सिद्धि होती है "There are no gains without any pains." बिना परिश्रमके लाभ नहीं होता। और भी कहा है कि—

उद्यमे न हि विद्विषन्ति कार्याणि न मनोरथैः ।
न हि सुप्तस्य सिद्धस्य प्रविशन्ति मुखे मृगाः ॥

प्रिय वन्धुओं, जिस देश व समानने प्रत्यर्थकी जितनी शर ली है वह उतना ही



विभवशाली, प्रतापी और सुखी हुआ है । पश्चिमीय देशों में प्रहृषार्थपर कमर कसी तो देखिये क्या क्या कर दिखाया है और व्यापार में कैसी उन्नति कर ली है । इसी प्रहृषार्थकी वशीलन गुरुषका प्रभाव सारे संसार पर छा गया है । अमेरिकामें मजदूर तक भी अपना समय व्यर्थ नहीं खोते । एक नवयुवक रोगमारकी तलाश करता हुआ एक दुकनदारके यहां गया, उसने कहा " अभी कोई जगह खाली नहीं है, अगर तुम चाहो तो यों ही (१५) ६० मासिक दे दूंगा । " युवकने यह सुनकर दुकनदारके गोली मारनी चाही और कहा " क्या तुम मुझे मुफ्तखोर समझते हो ? "

पुरातन कालमें जबकि भारतवर्ष पूर्ण समृद्धिशाली था और इसकी सम्पत्ताकी ख्याति सारे संसारमें छाई हुई थी, तब यह सब प्रहृषार्थके कारण ही था । पूर्वकालमें क्यों, वर्तमानमें भी एक व्यक्ति कुछ वर्ष पहिले भारवाड़से मात्र डोर लोटा और कुछ पैसे लेकर बचई गया था वह आन इसी प्रहृषार्थके कारण बहुत बड़ा आदमी बन गया है और लाखों रुपये पैदा कर लिये हैं । हा ! एक वही समय था कि हमारे पूर्वज सुत्रहसे शाम तक पैदल चञ्चते थे, मोटे देशी रेमीके कपड़े पहिन्ते थे, श्रीराम और उनके साथ साथ सीतानी भी १४ वर्ष तक वनमें रहीं तो वे पैदल ही फिरते थे । आन हम ऐसे आलसी हुये हैं कि कुछ कदम भी पैदल चलना कठिन हो रहा है, नोम लाना तो दूर रहा । बिना मोटर,

ट्राम, सवारी आदिके तो हमारी गति ही नहीं है । स्टेशन आया कि बावूजी अपने हैंड-बैगके लिये (जिसमें कि कठिनतासे ५ सेर बोझ भी न होगा) कुली कुली पुकारने लगे । मुसाफिर खानेके बाहिर पहुंचे कि इक्के बग्गीपर सवार हुये । अहा ! क्या ही अच्छा हो यदि रेलगाड़ीसे उतरते ही स्टेशनके बाहिर ले जानेको भी कोई साधन हो जाय ।

मित्र बन्धुओ ! आलस्य, विषयवासना और विलासप्रियताको त्यागो । समय काम करनेका है, और जाति देश समृद्धिशाली बने इसका प्रयत्न करो । उद्योगी बनो, व्यापारी बनो, कारण " व्यापारे वसते लक्ष्मीः " इसको याद रखो और शिक्षाविद्याका प्रचार करो ।

हाय ! यह भारत कैसा समृद्धिशाली था और आन इसकी क्या दशा हो गई है, यह विचार करते ही रोंगटे खड़े हो जावे हैं । यह भारत तुकों, मुगलों द्वारा कई बार लूटा गया, यहांसे लुट लुट कर द्रव्यकी गाड़ियां की गाड़ियां बाहिर चली गईं, इसके लुटके द्रव्यसे कई बादशाहतें बन गईं । लेकिन देखो अब क्या अमनचैनका समय है । न्यायप्रिय ब्रिटिश शासनकी छत्रछायामें कैसी स्वतन्त्रता और निर्भयता हमें प्राप्त हुई है । पर हाय ! उस निर्भयताका—उम स्वतन्त्रताका हमने क्या उपयोग किया ? हम हमारी कला—कुशलता, व्यापार, शिक्षावातुरी, आदि सबको मुझकर निरुध्दमी, आलसी और विजासप्रिय बन बैठे । मित्र भ्रातृगण, उठो

और व्यापार कर, उद्यम कर, कलाकौशल सीखकर भारतको समृद्धिशाली बनावो । और एक दिन वह फिर आवे कि हम बड़े भारतकी पुरातन कालकी भांति फिरसे व्यापारकी, कलाकौशलकी तूती चारों ओर बनने लगे ।

व्यापारका अर्थ यही नहीं है कि बिलायतसे माल मंगवा लिया और यहांपर बैठे बैठे बेचकर अपने देशके धनको बाहिर भेजते रहे, और न यह है कि सौदा सट्टा कर अपने भाइयोंका द्रव्य समेट लिया । बाहिरसे माल मंगाकर बेचना तो उन देशोंकी, उन शिल्पव्यसनी मुलकोंकी दलाली मात्र है । देखो हमें हमारी स्वर्षकी सामग्रीके वास्ते भी पचाये देशोंपर रहना पड़ता है—अन्य शिल्पव्यसनी देशोंकी तर्फ मुंह ताकना पड़ता है । वहांसे सामग्री न आवे तो हाथ पर हाथ दिये बैठे रहो ।

इस महा युद्धके कारण कई वस्तुओंका मूल्य किनना बढ़ गया है और बढ़ रहा है यह बतलानेकी आवश्यकता नहीं—सब जानते हैं, और कई वस्तुओंका तो मिलना भी कठिन हो गया है । ऐसे अवसरको जापानने जाने न दिया—उमका उपयोग कर लिया और देखो कई चीजें बना डालीं और पैसा पैदा कर रहा है ।

हाथ ! हम कुछ भी नहीं कर सकते ! करें कैसे ? हमें हमारे देशकी समृद्धि का विचार हो तब न ? हम तो हमारे पासकी व्यापारिक चीजोंपर बैठे हुये झूठसे ही खुशी हैं ।

नहीं, नहीं, मित्रो, यह झूठी खुशी है और हमें योग्य है कि हम भी जापानकी भांति कलाकौशल, उद्योग धंधों और कारखानों में लग जायें ।

हमें इस महा युद्धसे शिक्षा लेनी योग्य है । बाहिरसे आनेवाली प्रत्येक वस्तुकी ऐसी मंहगीको देखकर मनमें कुछ भय लाना चाहिये और हमें हमारी नित्यकी आवश्यकीय वस्तुओंके लिये भी अन्य देशोंका मुंह न ताकना पड़े इसके लिये प्रत्येक वस्तु जो यहां न बनती हो बनानेके कारखाने खोलने योग्य हैं, तब ही हम धन—सच्चा धन कमा सकते हैं और देश समृद्धिशाली बन सकता है, बनाना इच्छित वस्तुओंका दुगुना, तिगुना, चौगुना एवं कई गुना मूल्य दिये जावो और कंगाल बन जावो ।

अब मैं डाक्टर स्माइलस कथित ५ अति उपयोगी नियमोंको लिखकर लेखनीको विश्राम देता हूं ।

(१) आयसे व्यय कम करो (२) प्रत्येक वस्तु नकद मूल्य देकर खरीदो (३) मावी खामकी आशापर कभी व्यय न करो (४) आय और व्ययका पूरा हिसाब रखो (५) कोई वस्तु व्यर्थ न जाने पावे ।

प्रिय बन्धुओ, ये नियम बड़े उपयोगी हैं । इन्हें सदैव ध्यानमें रखना योग्य है । इनपर चलने वाला मनुष्य कभी दरिद्री नहीं हो सकता । संसारमें सुखी होनेके ये मुख्य साधन हैं ।

(१) आयसे व्यय कम करो—यह बढ़



उपयोगी नियम है। हमें जो कुछ भी हमारी आमदनी हो उसमेंसे अवश्य कुछ न कुछ बचाना योग्य है। कदाचित् ऐसा समय आ जाय कि हमारी आय कुछ भी न रहे तो फिर क्या होगा—यही बचाया हुआ द्रव्य हमारी रक्षा करेगा और हमें दूसरों का मुह न तारना पड़ेगा। हम कह सकते हैं कि हम क्या बचायें, हमारी आय तो बहुत कम है, उसमें तो खर्च भी नहीं चल सकता है। यह कहना भूल मरा है। आय कम है तो व्यय भी कम करो और उसीमेंसे जो कुछ बचे बचाओ। हम भोजनादि व्ययमें २५) रुपया मासिक व्यय करते हैं तो १५) मासिकसे भी काम चला सकते हैं। बख्ताबतमे बढिया कपडे बनाकर ५०) खर्च करते हैं तो शरीर रक्षा हेतु ५) के कपडेसे भी काम चला सकते हैं। जिस प्रकार एक अमीर अपने घर खर्चमें १०००) रुपया मासिक व्यय करता है तो एक १०) रु० मासिक पानेवाला मजूर भी ८) रुपयेमें काम चलाकर २) रुपये बचा सकता है। जो काम कम राशियोंमें हो सके उसमें अधिक खर्च न करना चाहिये और आमानीसे खर्च कम होना चाहिये।

(२) दूसरा नियम पालन करेंगे तो हम अति सुख पावेंगे। देखिये नरुदाम देनेपर वस्तु भी अच्छी एवं सस्ती मिलती है, और उधार देनेपर चीज अच्छी नहीं मिलती और दुःखनदार भी मनमान दाम लगाना है। नरुदामसे तो हम ३-४ दुकानोंपर वस्तुकी अच्छी प्रतीति परीक्षा तथा मुख्य-

की अच्छी तरह जाच कर सक्ते हैं। उधार का ठेक स्वभाव ही नढालना चाहिये। पासमें पैसे न हों तो न सही वस्तु मत खरीदिये और आवश्यकताको दबानेका प्रयत्न करिये, बरना यदि आवश्यकता आपको दबा लेगी तो वह आपको बार बार दबाये ही जायगी, और तब आपको ऋणके बड़े बोझ तले दब जाना पड़ेगा और फिर उसके चुकानेको चिन्तित रहना पड़ेगा। चिन्ता चिन्तासे भी बढका है।

(३) भावी आशापर व्यय मत करो। इसपर अधिक कहनेकी आवश्यकता नहीं। क्योंकि शायद आशा फलीभूत न हो तो कैसा मय-कर समय उपस्थित होगा और हमको गीशा देतना पड़ेगा। मेरा जो उमड़ा हुआ देवकर घडा फोडना बुद्धिमानो नहीं है, वैसे ही भावी आशापर व्यय करना मूर्खता है।

(४) आय और व्ययका लेखा रखो—आय व्ययका लेखा रखना आवश्यक है। हि साब रखे बिना हमें यह भी कैसे मालूम हो सकता है कि हम क्या बचा सके हैं। देखिये हम किसी दुःखनदारसे नरुदामपर वस्तु खरीद लाये। दुकानदार फिर मूल्य मागने आया तो हमारे पास हिसाब होगा तो तब दिखान देंगे कि देखो फला मिनीमे इतने रुपये हमने तुमको दिये।

(५) कोई वस्तु व्यर्थ न जाने पावे—इसके साथमें हमें यह भी ध्यान रखना योग्य है कि कोई व्यर्थकी—बिना कामकी वस्तु मोल भी न लें। कभी हम विचारते हैं यह वस्तु अच्छी है चञ्चो खरीद लें। पर अच्छी है, सुन्दर है तो



इससे हमें क्या ? यह हमारे क्या लाभकी ? यह विचारना चाहिये, क्योंकि संसारमें वस्तुएं तो अधिक हैं हम क्या क्या खरीद करेंगे । कभी कभी कोई वस्तु कुछ सस्ती मालूम होती है तो हमारा मन झट खरीदनेको हो जाता है । पर बिना कामकी चीज़ यद्यपि सस्ती हो तौभी खरीद कर पैसेकी तंगी करना योग्य नहीं है । क्या मालूम वह अभीसे भी अधिक सस्ती हो जाय, परहमें सस्तीसे भी क्या मतलब ? हमारे तो वह कामकी ही नहीं है । हमे कोई भी वस्तु पहिले उसकी आवश्यकता अनावश्यकतापर विचार कर खरीदनी योग्य है । और यह तो याद रखनी ही चाहिये कि कोई वस्तु हमारे पास रखी है, वह अभी हमारे कुछ काम नहीं आती, पर ऐसा विचार कर उसे व्यर्थ न जाने देना चाहिये, न मालूम उससे कभी क्या काम पड़ जाय और फिर हमें उसके लिये दाम खर्चने पड़ें ।

જૈનોમાં નવજીવન પ્રગટાવતું કેમ થતું છે ? હાથ.

આદર્શ જીવન (માસિક)

જૈનોમાં નવજીવન અને ઐશ્ય પ્રગટાવવા અને સમતુલ્યજી જૈનના ત્રણે ક્ષેત્રમાં ઉદાર વિચાર પાતાવરણ પ્રેરવાના ઉચ્ચ આદર્શ જૈન સુવાનો હારા પ્રગટ થાય છે. તેના નકલો ૩ ભાગ ગરીબ જૈન વિદ્યાર્થીઓ માટે ખસ્યાય છે; નવા ચાર આઠક કરનારને ખીરસામાં રાખવાનું ધડીયાળ ધનામ મળે છે. લવાજમ શિખરો સવા અને નમુનાનો અંક અર્ધો આનાની ટીકટ ખીડવાથી મળશે. આઠક થવા આજેના લજો-વાડીલાસ મુજબલાઈ દેની

શ્રીમદી-શ્રીમદીવા.

શરીર-રચના વર્ણન

ભાગ ૨ જો ।

(હે. હાથોચદ માણેકચંદ દલાલ)

इन्द्रियविज्ञान, याने तेनी किया.

શરીરની અંદરની ઇન્દ્રિયો અથવા અવયવોના જીવનવ્યાપાર સંબંધી જ્ઞાનને ઇન્દ્રિયવિજ્ઞાન શાસ્ત્ર કહે છે. આગલા ભાગમાં શરીરરચના અને તેના મુખ્ય ભાગોનું વર્ણન કરવામાં આવ્યું છે. હવે આ ભાગમાં શરીરનો જીવન વ્યાપાર ચલવનારાં કયાં કયાં યંત્રો છે અને તે યંત્રો અથવા ક્રિયાઓ શરીરમાં શું શું ક્રિયા કરે છે તેનું સંક્ષિપ્ત વર્ણન કરવામાં આવ્યું છે. વૈદ્યકશાસ્ત્રના જ્ઞાનની જુદી જુદી શાખાઓમાં આ ઇન્દ્રિયવિજ્ઞાનશાસ્ત્ર સૌથી વધારે મહત્વ ધરાવે છે. આ જ્ઞાન વગરનું વૈદ્યકજ્ઞાન નકામું છે. શરીરમાં ચૈતન્યવાળી ક્રિયા થતી તેનું નામ જીવ છે, અને એ ક્રિયા બંધ પડતી તેનું નામ મૃત્યુ છે, એ વાત આપણે જાણીએ છીએ, પણ એ ચૈતન્યવાળી ક્રિયા શી રીતે ચાલે છે, અને તેને બંધ પાડનારાં (મૃત્યુ કરનારાં) કેવાં કેવાં કારણો શરીરમાં વનવા પામે છે તેનું જ્ઞાન આ ઇન્દ્રિયવિજ્ઞાનશાસ્ત્ર વગર છે.

શરીરમાં ચૈતન્ય વ્યાપાર ચલાવવાવાળા મુખ્ય અવયવો અથવા મર્મસ્થાનો ત્રણ છે—મગન, ફેફસાં અને રક્તશય. વિદ્વાનો જીવંતીનો મુકાપત્રો ત્રણ પાયાવાળો ઘોટી સાથે કરે છે, તે મરાત છે. શરીરમાં આ ત્રણ મર્મસ્થાનો આ શરીરરૂપી તીરપાઈના ત્રણ પા છે. તીરપાઈનો દર પા



માં છે કે છોટકે છે તો, તૌરવાઈ નક્કામી થાય છે. એવીજ રીતે આ ગ્રાણ મુલ્ય મર્મસ્થાનોમાંનું એક મર્મસ્થાન છોટકે કે બટકી પટે તો, શરીરનો જીવન વ્યાપાર તરત અટકીને મૃત્યુ નીપજે છે. શરીરને એક ચંચની ઉપમા આપી શકાય. કામ કરવાનાં કારણનાઓમા જેમ ચંચો અને સાંચા કામો ગોટવેલાં હોય છે, એવી રચના આપણા શરીરની છે. ચંચોમાં જેમ ચક્રો ગોટવેલાં હોય છે, તેમ શરીરમા પણ ક્રિયા કરવાવાળા ચક્રો હોય છે.

શરીરમા જીવનવ્યાપાર યજ્ઞ પ્રકારના ચાલે છે.

આપાના મુલ્ય મુલ્ય વ્યાપારો અથવા ક્રિયાઓનાં નીચે પ્રમાણે વર્ગ પાડી વર્ણન કરવામાં આવશે.

રુધિરાભિસરણ યજ્ઞ-Circulatory System.

શ્વાસોશ્વાસ યજ્ઞ-Respiratory System.

પચનાશય યજ્ઞ-Digestive System.

મૂત્રાશય યજ્ઞ-Urinary System.

અગ્નેન્દ્રિય યજ્ઞ-Generative System.

ચેતના યજ્ઞ-Nervous System.

જ્ઞાનેન્દ્રિય ચક્રો-Organs of Senses

અત્તપ્રાણોત્તરી સ્ત્રિયા-Primary

Secretions.

ગળ દોષ-વાત પિત્ત કફ-Vat-Pit-Kat

સ્વાભાવિક વેગો-Natural Calls

રુધિરાભિસરણ યજ્ઞ-(રોહી Blood)

શરીરમા રોહી એન મુલ્ય જીવન છે. આવા શરીરનું પોષણ રોહી વેટે થાય છે. સૌરાકનો પોષણ કરનારો સારમૂત માગ કેટકીક રસાયણી ક્રિયાવી જુદો પડીને રોહીની સાથે મળે છે. આ પોષણકારક માગ ને રોહી પોતાની ગતિમા જુદા જુદા માપને, મોટા પટલા પ્રમાણમાં વહેંચી આપે છે. રોહી

આ પ્રમાણે શરીરના તમામ માગોનું પોષણ કરવાના કામમાં મદદગાર થાય છે, એટલુંજ નહીં પણ તે માગોની અંદર નક્કામા પદાર્થો અથવા મેલ કચરો હોય તેને પોતાના પ્રવાહમાં સેંચી લઈ, શરીર ઘઘાર કાઢી નાંખવાની જગાઓમાં ફેંકી દે છે; અથવા શુદ્ધ કરવાની જગામાં પોતાની સાથે સેંચી જાય છે. રોહીનું વીજું એક અગત્યનું કામ શરીરમાં ગરમી આપવાનું છે. રોહી ફરતું ન હોય તો છાતીના માગપર એવી ગરમી લાગે છે, એવી હાથપગના છેદાપર લાગતી નથી. મહુ મંદવાદમાં ડ્યારે રોહીનું ફરતું બરાબર નથી થતું, સ્વારે પ્રથમ હાથ મગ ઠંડા પટે છે, તેનું એન કારણ છે. રોહી મદપથી ફરે છે, અને તેની ગરમી એક સરસી હોવાથી તે શરીરના સગળા અવયવોને સમાન ઉષ્ણતામાં રાખે છે. રોહીની રચના-શરીરમાં જે રોહી ફરે છે તે બે જાતનું છે. હૃદયના ઢામા સંદર્ભમાં, તથા ધમની એટલે ધોરી નમોમાં લાલ કીરમજી રંગનું રોહી હોય છે, અને હૃદયના જમણા સંદર્ભમાં તથા કાઠી નસોમા તે મેડા માંજુડા અથવા કાઠા રંગનું હોય છે. આ કાઠા રંગનું રોહી કેટકીક રોહી ઘારે છે તેમ નિરુપયોગી નથી. ફેકમામા જઈ શુદ્ધ થયા પછી એન રોહી શરીરનું પોષણ કરે છે. રોહી જરા થાકું, ચીકાસમાઝું, અને પાણી કરતાં સહેજ ખારે છે, તેમન સ્વાદમાં જરા તારું છે. રોહીમાં ઉષ્ણતા ૧૦૦ ડિગ્રીની છે. રોહીના બે માગ વરી શકાય છે. એક માગ રક્ત રગજળો, અને બીજો માગ રક્ત નક્ક. રક્ત રગજળો એટલે રોહીમાં



અસંખ્ય બારીક રાતાં રત્નકળો હોવાને લીધે તે રાતું દેખાય છે. લોહીનો પ્રવાહી ભાગ જે રક્ત જલ તેમાં રંગ હોતો નથી. આ રક્તજલ યે પદાર્થોનું બનેલું છે, જેમને અંગ્રેજીમાં ફિવ્રિન અને સીરમ કહેવામાં આવે છે. લોહીના એક હજાર ભાગમાં ૭૯૦ ભાગ પાણીના અને ચાકીના ૨૧૦ ભાગમાં ૧૨૦ ભાગ લોહીના ઘાણાના, ૬૭ ભાગ આલ્બ્યુમેનના, ૨ ભાગ ફિવ્રિનના, અને ૧૧ ભાગમાં ચુનો, મેગનીશિયા, સોડા, લોહ વગેરે પદાર્થો આવે છે, એવું રસાયણી પ્રયોગથી પ્રથક્કરણ કરી જોનારા વિદ્વાનોને માલુમ પડેલું છે.

લોહીનું ફરવું—મોટી ધમની, નસો, ફસો, કેશવાહિનીઓ એ લોહીને ફરવાની મ્હોટી ન્હાની નદીઓ છે. આપણા શરીરમાં લોહી ચક્રની પેઠે ફર્યા કરે છે. તેને ફેરવાનારું મુખ્ય હૃદયિયાર અથવા સાધન રક્તાશય છે. રક્તાશય એ લોહીનો એક હોજ છે, જેના યે ભાગ છે. ઢાઢી વાજુના ભાગમાં રાતું અથવા શુદ્ધ લોહી ભરેલું છે અને જમણી વાજુના ભાગમાં કાઠું અથવા અશુદ્ધ લોહી ભરેલું છે. ચિત્ર આપીને બતાવવાથી લોહીના ફરવાની વધારે સારી સમજણ પડી શકે છે. ઢાઢી વાજુના રક્તાશયમાંથી શુદ્ધ લોહીનો એક નલ જેને ધોરી નસ કહેવામાં આવે છે, તે નીકળે છે, જેની એક મોટી શાખા પેટ તથા બન્ને યગમાં જાય છે, અને બીજી શાખાઓ બન્ને હાથ તથા માથામાં જાય છે. આગલ જતાં વૃક્ષની માફક આ મોટી શાખાઓમાંથી બારીક નસો અને તેમાંથી છેવટ કેશવાહિની એટલે વાલ જેવી સુક્ષ્મ નડીઓ

જાલની માફક, છેક ત્વચા સુધી પથરાઈ જાય છે. આ જાલમાં રાતું લોહી ફરી રહ્યું એટલે તેમાંથી પાછી એવીજ બારીક ફસો નીકળે છે, અને જેમ ન્હાના ન્હાનાં વહેલાઓ મઝીને આગલ જતાં એક મોટી નદી થાય; અથવા વૃક્ષનો ઢાલો લઈએ તો જેમ ન્હાની ન્હાની ઢાલોઓ અને પછી ઢાલોઓ મઝીને એક થઈ જાય છે, તેવી રીતે આવી ન્હાની ન્હાની અનેક ફસો એકત્ર મઝીને, એક મોટી ફસ શરીરના નીચલા ભાગમાંથી, અને એક બીજી મોટી ફસ બન્ને હાથ તથા માથા તરફની શાખાઓમાંથી ઉપરના ભાગમાંથી, એમ બે મ્હોટી ફસો કાઠું લોહી હૃદયે રક્તાશયના જમણા સંઘમાં ઉતરે છે; અને ત્યાં તે લોહીને રેટે છે. ત્યાંથી એ કાઠા લોહીના બે પાંદડાં થઈ એક એક રંગ બન્ને ફેફસાંમાં જાય છે. ફેફસાંમાં ગયેલી આ રંગો પળ, શરીરની કેશવાહિનીઓની પેટે, જાલની માફક પથરાઈ જાય છે; અને ફેફસાંમાંના હવાનાં શાઢાઓની ડીળી નસની જાલ સાથે સંબંધમાં આવતાં એ કાઠું લોહી ત્યાં શુદ્ધ થઈ કેશવાહિનીઓ મારફતે સ્વચ્છ રાતું લોહી ત્યાંથી પાહું ફરી છે, અને એ જાલો આગલ જતાં એકત્ર મઝીને તેની એક એક ધમની થાય છે. તે શુદ્ધ લોહીને પાહું રક્તાશયની ઢાઢી વાજુના સંઘમાં ઢાલલ કરે છે કે જ્યાં આગલથી પ્રથમ જળાબ્યા પ્રમાણે શુદ્ધ લોહી સૌથી મોટી ધમની થોડે નીકળ્યું હતું. આ પ્રમાણે શુદ્ધ લોહી રક્તાશયના ઢાઢા સંઘમાંથી મોટી ધમની થોડે નીકળીને શરીરના ભાગોમાં ફેલાય છે; અને ત્યાંથી કાઠું લોહી



શુદ્ધ થઈને પાછું રક્તાશયના નમણા સ્વંદમાં ફાલ્લુ થાય છે, અને ત્યાંથી ફરી શરીરના પોષણ માટે મોટી ધમની વાટે શરીરમાં ફેલાય છે. લોહીનો આવો એક પેરો થતાં ૧૥ મિનિટ લાગે છે. હોનરી, આંતરડાં અને ચરોહની શિરાઓનું લોહી પરમારું રક્તાશયમાં નહિ જતાં, કઢેનામાં જાય છે. ત્યાં ફેફસાંની પેટન તેની ચારીક શાલાઓ વચરાઈને તે લોહીની શુદ્ધિ થાય છે; અને પછી રક્તાશય તરફ વહે છે. સ્ત્રીઓના ગર્ભાશયમાં આ લોહીની ગતિ વઢી જુદા પ્રકારની થાય છે. કહેવાય છે કે ગર્ભનાં ફેફસાં કામ કરતાં નથી અને ગર્ભને તાજું લોહી ઓરમાંથી મળે છે. ગર્ભની નામિમાં નાઢ હોય છે, તે વાટે કેટલુંક લાલ લોહી ગર્ભના પેટમાં નાય છે, અને ચાકીનું લોહી પરમારું, અને થોડો માગ કઢેનામાં ચડેને રક્તાશય તથા ફેફસામાં ફરી વઢી ગર્ભ નાઢની ધમની વાટે, ઓરમાં શુદ્ધ થવા જાય છે; એવું કેટલાક વિદ્વાનોનું માનવું છે.

લોહીને ગતિમાં કોણ મુકે છે—

લોહી શરીરના નિરંતર ફર્યા કરે છે, એ વાત તો સરી છે, પણ એવી રીતે ગતિમાં મૂકનાર વસ્તુ શું છે, તે એક અમત્યનો સવાલ છે. પ્રથમ તો લોહી બહુ ઘટ્ટપથી અને ગુસ્સાથી ફરે છે તેનું કારણ એવું છે કે રક્તાશય માંસમય કોષ-ઢીનું મનેહું છે. તેની અંદરના માંસના સ્નાયુઓ તંગ પડેને, ઘટ્ટે સંકોચાઈ તેને નહાર વઢાડવાનો પ્રયત્ન કરે છે, અને છાઢી થાય છે ત્યારે તેમ સ્નાયુઓ પાઢા ઢીલા પડે, કોષ-ઢીને પહોઢી કરી, ચીના લોહીને આવવાનો

સ્ત્રો કરે છે. સ્નાયુઓનો આવો ધર્મ છે. હવે રક્તાશયમાં રક્તના જુદા જુદા સંઢો છે, અને તેની વચમાં પઢ્ઢાવાઢા દરવાજા છે, તે એના છે કે વારંવાર ડગઢે છે અને મીઢાય છે. રક્તાશયના એક સ્વંદમાં લોહી મરાય છે, ત્યારે સંકોચ પામે છે; અને તેમ વલતે સામેનો સ્વંદ પહોઢો થાય છે, જેથી લોહી ચીના સ્વંદમાં ઘકેલાય છે અને ત્યાંથી ધમનીઓમાં ઘકેલાય છે. રક્તાશયના આ સ્વંદો વારાફરતી તંગ ઢીઢા થાય છે, અને તેથી રક્તને ઘકો મઢ્યા કરે છે. વઢી ધમનીઓમાં રક્તની નોઢા નોઢ મવન હોય છે તે પવન રક્તને ગતિ આપ્યા કરે છે. આ શિવાય રક્તને ઘકેઢનારાં ચીનાં ન્હાનાં કારણો પણ ઘણાં છે. ધમનીઓ સ્થિતિ-સ્થાપક હોવાથી લોહીને ગતિ મળે છે. શરીરના સ્નાયુની નિરંતર ગતિથી પાસેની રક્ત શિરાઓ ડપાળ થવા કરે છે; અને તેથી પણ રક્ત આગઢ ઘકેલાય છે. શ્વાસોશ્વાસની ક્રિયાથી પણ રક્તની ગતિને કાંઈક ડત્તેમન મળે છે. આમ ઘણા પ્રકારની શરીરની ક્રિયાઓ લોહીને ઘટ્ટપથી ફરતું રાલે છે. આ ક્રિયાઓ એન શરીરનું ચૈતન્ય છે.

નાઢી—લોહીના ફરવાને અને નાઢીને શું સંચં છે તે પણ જાણવા જેવી વાત છે. ઢાવા રક્તાશયમાંથી રક્ત મોટી ધમનીમાં જાય છે, તેથી ધમની પહોઢી થાય છે, અને તેનો ઘકો ધમનીના છેઢાઓ સુધી પહોંચે છે. એવા દેરેક ઘકાને ‘નાઢી’ અથવા નાઢીનો ધવકારો કહેવામાં આવે છે. રક્તાશયના દેરેક વલતના સંકોચવાથી દેરેક નાઢી ડત્પન્ન થાય છે. આવી



સંકોચનની, ઘક્કાની અને ઘવકારાની ક્રિયા અથવા નાહી; જીવાન આદમીના શરીરમાં દર એક મીનિટમાં આશરે ૭૫ વસ્ત્ર થાય છે.

શ્વાસોશ્વાસ યંત્ર—૧ શરીર માંહેની એક ઘણીજ અગત્યની ક્રિયા છે. લોહી ૧ શરીરનું જીવન છે, પણ ૧ લોહીને જીવનવાહું બનાવનાર શ્વાસોશ્વાસની ક્રિયા છે. લોહી શરીરમાં ફરે છે અને ફેફસાંમાં શુદ્ધ થાય છે. ત્યાં તેને શુદ્ધ કોળ કરે છે ! એક પ્રાણ આપનાર વાયુને દાલ્લ કરનાર, અને (બાહરથી આવીને પ્રાણને હરે) એવા એકે બીમા ફેરી વાયુને ફેફસાંમાંથી બહાર કાઢી નાંત્રનાર શ્વાસોશ્વાસની ક્રિયા. આપણે શ્વાસ હઈએ છીએ ત્યારે બહારની હવા અંદર જાય છે; અને શ્વાસ મૂકીએ છીએ ત્યારે, શરીરની અંદરની હવા બહાર જાય છે. આ વાત આપણે જાણીએ છીએ, અને દર પહે પ્રત્યક્ષ અનુભવીએ છીએ, પણ તે હવા અંદર વ્યાપી જાય છે અને શું કરે છે, તે વાત થોડા જાણે છે; અને જ્યાં પુષી ૧ વાતનું જ્ઞાન હોતું નથી ત્યાં પુષી ૧ વાતને જ્ઞાતી અગત્યતા પણ આપવામાં આવતી નથી.

શ્વાસ નઠી—શરીરની અંદરની સુક્ષ્મ રચનાનો એ ઘડી વિચાર કરતાં આપણે સ્વેચ્છા આંતરિન થઈએ છીએ ।

શરીરની અંદર જ્ઞાન અને ગતિ તંતુઓની, અપાર મુઠીઓ, ધમનીઓ, તથા રાગોની વાલ્લ કરતાં પણ વધારે મારીક જાણે સર્વત્ર પથરાયેલી છે. આવીજ એ મ્હોટી જાણે એ ફેફસાંમાં, વાયુ નઠીની ફેલાયેલી જોવામાં આવે છે. નાકના નસકોરાંથી ફેફસાં પુષીયા માર્ગને

વાયુ માર્ગે; અથવા શ્વાસ નઠી કહેવામાં આવે છે. હવા નાક થાટે ગઠાના પાછલા ભાગમાંથી સ્વર નઠીમાં થઈ શ્વાસ નઠીમાંથી ફેફસાંમાં જાય છે. સ્વર નઠી અને શ્વાસ નઠી ૧ બને એકજ માર્ગ છે, પણ તેની જુદી જુદી ક્રિયા સમજાવને માટે તેના એ માગ કરવામાં આવે છે. ઉપરનો ભાગ જે જીમનો થઈ આગળથી ગઠના નઠ ગોટા પુષી આવેલો છે, તેને શ્વાસ નઠી નામ આપવામાં આવેલું છે. અને નીચેના ભાગને, શ્વાસ નઠી નામ આપવામાં આવેલું છે. શ્વાસ નઠીનો ઉપરનો ભાગ પહોલો અને મ્હોટો છે ગઠના ઉપરના ભાગમાં બહારથી જે ટેકરો મારે પડે છે, તે ૧ સ્વર નઠીવાળો ભાગ છે; અને તે આપણે નઠ ગોટો એવા નામથી ઓળખીએ છીએ. ૧ નઠ ગોટા અથવા સ્વર નઠીનું કામ અવાજ પેદા કરવાનું છે. એના મધ્ય માર્ગને વધે વાજુએ, મને તાર છે. તે તાર તંતુના તારનું કામ કરે છે, એટલે જુદા જુદા સ્વા ઉત્પન્ન કરે છે.

૧ તારની પુષ્પનો રસ્તો હાંબો, સાંકડો અને ત્રિકોણકાર છે, તેમાંથી હવા જાય આવે છે. તે કંઠદ્વાર કહેવાય છે. આ તાર સ્નાયુના સંચયથી હાલે છે, અને તેથી તે રસ્તો સાંકડો પહોલો કે બંધ કરી શકાય છે. આ સ્ત્રો હવા સિવાય બીજો કોઈ પદાર્થ જઈ શકતો નથી, અને કદાચ કોઈ પદાર્થ અકસ્માત મનાવું કરે છે કે તુરતન આ રસ્તો બંધ પડી જાય છે. પાણી પીતાં કે છાતાં હાલું આવવાથી, ગઠમાં ગયેલો પદાર્થ પોતાનો માર્ગ મૂકીને, સ્વર નઠી તરફ જાય છે; તેને કંઠદ્વાર બંધ પાડી અ-



काची दे'छे. 'आवी गरवट थाय'छे तेन, 'ओ-
नाळ गंधु' कहिए छीए, तेन कारणथी जैन
शास्त्रोमां नमतां बोलवानी मुनाई करी हजे,
आ नळगोटाथी नीचेना मार्गने श्वासनळी क-
हेवामां आवे छे.

(अपूर्ण)

अध्यात्मिक, धर्मिक ।

जिन भगिनियोंको अपनी जातिकी अपनत
दशापर दुःख होता है और जातिकी दशाको
सुधारनेके लिये अध्यापिका, उपदेशिका तथा
सुयोग्य गृहिणी बनना चाहती हैं वे श्राविकाश्रम
धर्म्ममें आकर शिक्षा प्राप्त करें। यह आश्रम
आठ वर्षसे यहां स्थापित है। इतने ही समयमें
इस आश्रमके द्वारा अनेक स्त्रियां तैयार होकर
अध्यापिका, तथा उपदेशिकाका कार्य करके जा-
नितेवा कर रही हैं। आश्रममें जैनधर्मानुयायिनी
जैन कन्याएं, सधवा तथा विधवा स्त्रियां भरती
को जाती हैं। असमर्प स्त्रियोंको छात्रवृत्ति भी
दी जाती है। यदि कोई अजैन स्त्री आश्रममें
प्रवेश होना चाहे तो वह भी आश्रमके नियमा-
नुसार चलनेपर प्रविष्ट हो सकती है।

यह आश्रम एक बहुत रमणीक, एकान्त
और सुरक्षित स्थानमें है। इसमें कई बाइयां आ-
नरेरी रीतिसे कार्य संपादन करती हैं। भरती
होने वाली बाइयोंको निम्न लिखित धर्मेपर फार्म
और नियमावली गंगाधर मेमना चाहिये।

निवेदिका-मगनवाई माणिकचन्द्र—

सचालिका 'श्राविकाश्रम'

बुबिलीबाग, तारेदव-बम्बई ।

दिगंबर कोमे शुं करवुं जोईए ?

धर्म्मज्जेना आ देशमां आगमन पञ्जी
मद्रासीओ, अंगालीओ, मद्राराष्ट्रीय आल्लेशु,
अने पारसीओओ छिजीश डेजवथी देवा भांडी.
तेमांथी छपन्न धयेकां छतम क्यो आतेथी
अजरातीओओ पथु तेनी शरओत करी. अ-
जरातना दिगंबर जेना सिनाय अन्य समस्त
डोमोओ तेमां धखोज वधारे क्यो. पोतानी
नगर सागा अन्य डोमोना अतीराय आगज
वधवानां दृष्टतो मेणुद छतां अजरातना दिगं-
पर जेना दता ताने त्यों अंधाराभां रहेवा
बाग्या. तेमनी आवी अधम रिमतीने समये
स्वर्गस्थ शैठ भावेक्य'द हीराय'द जे.
थी. अ अजरातना पाटनगर अमदावादमां
अक भोडिग रथापी छय डेजवथीने प्रकाश
प्रकाशवाचुं मडान भान प्रथम संपादन कहुं
अने तेमजे डेजवथीनां पीज भोडिग अपी
क्षेत्रमा वाच्यं, जानेना दीप सगगाव्यो भो-
डिगने रथापन यथाने आने धया वर्षीं बीती
गया. न्यारे भोडिग रथापन थधु तयारे आपथी
डोमभा डेजवथीनी शरओत हती. ते मभये
अक भोडिग अजरातना दिगंबराने भाटे पुरती
हती. ते भोडिगभां सज्जानो सभावेश यतो
हता. काधने नीरास थधु नयुं पडुं न होतुं.
काध पथु दिगंबर जैनने मद भोटे पीज
नयुं शरभ भरेखुं बागवुं द्युं. शैठो विद्या-
थीओ प्रत्ये अट्टो अधो प्रेम हतो के नि-
द्याथीओ तेमने पिता पृथ्व गणी काध पथु
जगतनी मद अने शैठ साहेमनी भीकत पथु
पोतानीज होय तेम पोतानो छक समज्जता
हता. न्यारे आपथी डोमना पीज ता'जरे
पोतानी भीकत वधाववाना न्यार वमगभा
तथावी हता. न्यारे आपथी पडितो अने
भटारडो धर्म्मनी नकापी तडारोमां या तो
पोतानी भोजमगभा पोतानो वधनं व्यतीत
हता हता; न्यारे शैठ अट्टो डोमने आगज
वधाराने अतर, डोमना हीनने आत, इन



પરમાર્થને માટે પોતાની મીલકતનો એક મહાન ભાગ કાઢીને માટે અર્ચી નાંખ્યો. આપણી કોમે કૃત્તવણીના ફળનું આસ્વાદન કર્યાને ધણો સમય થયો. કૃત્તવણીનાં મીઠાં ફળ ચાખ્યા પછી કામના યુવાનોને તે વધારે આવડી તોત્ર ઇચ્છા ઉપેક્ષા થયેલી નજરે પડે છે. ઇચ્છીશ કૃત્તવણીનો પવન પુર જોશમાં સમસ્ત દિગંબર કામપર કુદાતો જાય છે. અને દર વર્ષે ધણા વિદ્યાર્થીઓ કૃત્તવણી લેવાને બહાર આવતા જાય છે. વિદ્યાપિપાસુ વિદ્યાર્થીઓની વધતી જતી સંખ્યાને પહોંચી વળવાને અમદાવાદ બોર્ડિંગ તથા મુંબઈ બોર્ડિંગનું કંઈ પુરતું નથી. બોર્ડિંગનાં ખર્ચ આવક કરતા વિશેષ થાય છે. ધણાઓને મદદ સિવાય અભ્યાસ અટકાવવો પડે છે. મદદ નહિ મળવાથી ધણા નિરાશ થઈ અન્યસ્થ થઈ મદદને માટે પ્રયત્ન કરે છે, અથવાતો ટ્યુશનેરી કરી પોતાનો અમૂલ્ય સમય બગાડી અભ્યાસને હાનિ પહોંચાડે છે. જે દિગંબર કામમાં કરોડપતી શેઠીઓ છે, જે દિગંબર કામમાં ચાંદી તથા રૂના બખરને કબજે રાખે એવા શેઠીઓ છે, જે દિગંબર કામ ધર્મપરાયણ હોઈ, સાસ્ત્રને આધારે ચાલી, વિદ્યાદાનને સૌથી મહાન દાન ગણે છે, તેજ દિગંબર કામની ઉજરતા આશાવંત યુવાન વિદ્યાર્થીઓને વિદ્યા સંપાદન કરવામાં આટલી બધી વિટંબણાઓ નડે, તેજ દિગંબર કામના વિદ્યાર્થીઓને પોતાની કામમાંથી મદદ નહિ મળવાથી બીજી કોમે પાસેથી મદદની યાચના કરવી પડે, છતાં પણ દિગંબર જૈન શેઠીઓ તેને માટે કંઈ ન કરે તે કેટલું શરમાવા જેવું છે ? માણેકચંદ શેઠે આપણી કામની સાંચી રાખેલી આજર તેમના સ્વર્ગમાં સીધાયા પછી આપણા આગેવાનો ગુમાવવા બેઠા છે. ઉપર મેં જે લખ્યું છે તે આગેવાનોની નજર બહાર નથી. તેઓ રૂઢિચુસ્ત જાય છે, પણ આગસમાં પોતાનો વખત ગુમાવી ન્યાતને માટે કંઈપણ કરવા તેઓ

પ્રયત્ન કરતા નથી. બંધાસુધી શેઠસાહેબ જીવતા હતા ત્યાં સુધી એકપણ દિગંબર વિદ્યાર્થીને બીજી કામના માણસ પાસે મદદ માટે જવું પડતું નહોતું. મુંબઈની જૈન બોર્ડિંગ બંધારે શ્વેતાંબર અને સ્થાનકવાસી વિદ્યાર્થીઓથી બરપુર રહેતી ત્યારે શ્વેતાંબર બોર્ડિંગમાં એક પણ દિગંબર વિદ્યાર્થી નહોતો. બંધારે અને શ્વેતાંબર વિદ્યાર્થીઓ આપણી બોર્ડિંગમાંથી મદદ મેળવતા હતા ત્યારે એકપણ દિગંબર વિદ્યાર્થી શ્વેતાંબર શેઠ પાસેથી પાઠ પણ મેળવતો નહોતો. આ ઉપરથી આપણી દિગંબર કામને કેટલું મંગર થવા જેવું હતું. આ ઉપરથી હું એમ નથી કહેતો કે દિગંબરોએ શ્વેતાંબરો પાસેથી મદદ ન મેળવવી; અથવા દિગંબરોએ શ્વેતાંબરોની બોર્ડિંગમાં ના રહેવું. શ્રેષ્ઠ શેઠીઓ વિદ્યાર્થીઓને બેંગાં રહે તો ઉત્તમ વાત છે. પણ મારે એટલું જ કહેવાનું છે બંધાસુધી અને ત્યાં સુધી એક કોમે પોતાના વિદ્યાર્થીઓને એકલી મદદ આપવી જોઈએ. બીજી કોમે નવી નવી બોર્ડિંગો પા રકોલરશીપ ફાડી કાઢી જેમ જેમ તેમ કૃત્તવણી અને તેટલી વધારવા પ્રયત્ન કરી રહી છે, ત્યારે આપણી કામમાં વિદ્યાર્થીઓની વધતી જતી સંખ્યાને મદદ કરવાનો કાષ્ઠપણ પ્રમાસ જોવામાં આવતો નથી. ખરેખર આ બીના શોચનીય છે અને કામને શરમોવનારી છે. જે ઇચ્છીશ કૃત્તવણીથી આપણા દેશમાં જાયતી આવી છે, અને જે કૃત્તવણીથી દિલ્હીસ્તાનની જુદી જુદી કોમે એક થતી જાય છે, ત્યારે આપણી કામવાળાઓ તેને આગળ વધારવામાં, અથવા આગળ વધતાં અટકાવનાર અડચણોને દૂર કરવામાં જરાપણ મદદ નથી કરતા, જે આપણી કામને ઉત્તર દશમાં આવેલી, સારી સ્થિતિએ પહોંચેલી, અથવા મુશ્કેલી જેવા ચઢાતા હો, તે આપણા યુવાનોને જરૂર કૃત્તવણી આપે. દુનીયાના ઇતિહાસપર નજર ફેરવેશો તો માલમ પડશે કે જે જે રોશ અને જે જે કોમે બેપાદ, સગા, અને સંપાદના



શીખરપર પહોંચેલી હતી, તે દેશો તથા કોમો બીજા દેશો અથવા કોમો કરતાં કેળવણીમાં અગ્રસ્થાન લેવાગતી હતી. અમેરિકા, જર્મની અને ઇંગ્લંડની પ્રજામાં કોઈ પણ કેળવણી વિનાનો મનુષ્ય નહોતો પડતો નથી. સ્પેન, પોર્ટુગલ, ઇટલી, ગ્રીસ વગેરે રાજ્યો કેળવણીના અભાવે કરીને આગળ વધતા દેશો સાથે રહી શક્યાં નહિ અને પડતીમાં આવી પડ્યાં. ફક્ત એક જર્મનીનો દાખલો લેશો તો માત્રમ પડશે કે જર્મની કેવી રીતે આમળ વધુ અને જર્મનીની સત્તા આટલી કેમ નથી. આજથી પચાસ વર્ષ પહેલાં જર્મનીની ગણના નાનાં રાજ્યોમાં થતી હતી. ત્યાંની સરકારે એકદમ કેળવણી વધારવા માંડી, અને ત્યાંના લોકો દુનીઆના કોઈપણ દેશ કરતાં કેળવણીમાં આગળ વધ્યા, કેળવણી વધ્યા પછી નવી નવી શોધખોળો ત્યાં થવા લાગી. આ શોધખોળોને લઈ ત્યાંના માનવ સોષાલ થવા લાગ્યા, અને દુનીઆના બનરોમાં જર્મનીનો સોપા માલ વધારે ખપવા લાગ્યો. જોમ જોમ માલ વધારે ખપતો ગયો તેમ તેમ તેમનો બેપાર વધતો ગયો, અને બીજા દેશોના હાથમાંથી ધણું ખરો બેપાર જર્મનીએ કાઢ્યો. બેપાર વધવાથી ત્યાં પૈસા પણ વધ્યા અને દેશ એકદમ આત્મક થયો, અને પોતાનો બહોળો બેપાર ચાલુ રહે, તેને માટે દુનીઆના દરેક ભાગમાં પોતાના બેપારી મથકો લુચ્યાઈ થી અથવા લડાઈ જાહેર કરવાની ધમકી આપી મેળવ્યાં. ગ્રીસને ધમકી આપી પામીશીક મહા-માગર પર કીઆઈચીઆઈ લીધું, ફ્રાન્સ અને ઇંગ્લંડ સાથે ખટપટ કરી પૂર્વ આફ્રિકા અને પશ્ચિમ આફ્રિકામાં કેટલોક સુલક મેળવ્યો. ત્યાં પછી પોતાના દરીઆપાટના બેપારને માટે અનેક આગળોટા બાધી અને તે બધાની મળ-મળી માટે, બેપારમાંથી પ્રાપ્ત કરેલા પુષ્કળ પૈસામાંથી કરોડો રૂબીઆ ખર્ચી એક મહાન લડાયક ફાલ્સો તૈયાર કર્યો. દેશમાં પુષ્કળ પૈસા આવતા હોવાથી દર વર્ષે મદમરી નીતેરી

પણ ટેકસના પૈસાથી બરચક રહેવા લાગી. આ પૈસાનો ઉપયોગ જર્મનીએ નવી નવી મહાન તોપો તૈયાર કરવામાં, જંગી અ-લેધ પોલાદી કિલ્લાઓ બનાવવામાં, નવી નવી નવતર્નો લડાઈનાં યત્રો પોતાના લશ્કરમાં દાખલ કરવામાં અને પોતાનું લશ્કર વધારવામાં ખર્ચ્યાં. પોતાનો તૈયાર ફરિયાદ કાઢ્યો તથા લાખો લડવધ્યાઓ નેહ જર્મનીની મહાતા-કાંક્ષા એકદમ આગળ વધી. જર્મનીની આગાહી તથા સત્તાનું મૂળ કારણ કેળવણી છે. દુની-આમાં એક પણ દેશ જર્મનીની સામે કેળવણી-માં દરીયાઈ કરી શકે તેવો નથી. આપણા એશિયામાં વમતા જપાનનો દાખલો પણ તેવોજ છે. આજથી ચાલીસ વર્ષ ઉપર જા-પાનની સ્થિતિ આપણા કરતાં પણ વધારે ખરાબ હતી, લશ્કરમાં દમ નહોતો, પરદેશો નેહ બેપારજ ન હતો, લોકો અંદર અંદર લડતા હતા, અને દેશ ધણો ગરીબ હતો. પરદેશીઓને જપાનીઓ પોતાના દેશમાં પેમવા દેતા નહોતા, તેથી બેપાર નહોતો અને બેપાર નહોતો એટલે પૈસા નહોતા. આ સ્થિતિ હતી તે સમયે અમેરિકાના કેટલાક લોકો ત્યાં ગયા. તે લોકોને જપાનીઓએ દેગ-મા આપવા દીધા નહિ, તેથી અમેરિકાએ જપાન ઉપર ચાર પાંચ લડાયક વહાણોની ચડાઈ મોકલી. જપાનીઓ આથી બંદી ગયા, અને અચુક સહેરો પરદેશીઓ માટે ખુલ્લાં સુક્યાં. આ બનાવથી ત્યાંના લોકોને ઘણુંજ ધરમ બરેલું લાગ્યું. તે વખતથીજ જપાનની ચંદનીનો આરંભ થયો, તે સ્વિમથીજ જપા-નનાં નવા જમાનાનો ઉદય થયો. ત્યાંની સર-કારે એકદમ હજારો વિદ્યાર્થીઓને યુરોપ, અમેરિકા આદી પરદેશોમાં ઉચ્ચ કેળવણી લેવા મોકલી આપ્યા. ત્યાં તેઓ નવા ઉદ્યોગ દુનિયા શીખ્યા, અને પોતાના દેશમાં આવી તેવા ઉદ્યોગો ચલાવવા લગ્યા. આવી રીતે દર વર્ષે હજારો જપાની યુવાનો પરદેશોમાં નવા લાગ્યા,



જાપાનમાં નવી નવી અનેક જાતની ધણી કાલેજો ઉઘાડવામાં આવી અને કેળવણીનો પ્રચાર એટલો બધો કર્યો કે આત્યારે જાપાનમાં એક પણ માણસ કેળવણી વગરનો છે નહિ. જાપાનીઓએ જોયું કે દેશની ચઢતી યા પડતીના આધાર દેશના કેળવણીના યુક્તિ ઉપર છે. આપણા અધમ સ્થિતિમાં આવી પડેલા દેશની અને તેની સાથે આપણી સૌથી પછાત પડેલી કોમની ચઢતી કરવી હોય તો આપણા યુવાનોને અને તેટલી કેળવણી આપો. કેળવણીને માટે જોઈતા સાધનો પુરા પાડો. ગરીબ વિદ્યાર્થીઓની મદદને માટે નવી નવી યોજના યા સ્કોલરશીપ ફંડો કાઢો. કેળવણી ચઢતીની ખરી ચાવી છે, કેળવણી સુધારા યા આગાહી પહેલું પગથિયું છે, કોમને આગળ વધારવાનું યંત્ર છે. હુંકામાં સઘળી જાતનાં મુખોને ઉત્પન્ન કરનાર કષ્ટપટક છે. આપણાથી અને તેટલી પૈસાની મદદ આપી કેળવણીને ઉત્તેજન આપો, મદદ વિનાના વિદ્યાર્થીઓને મદદ આપો, કેળવણીનો બહોળો ફેલાવો કરો અને જુઓ કે પૈસા, તન્દરસ્તી, આગાહી, ચઢતી વીગેરે સર્વે ગીએ આપોઆપ આપણી કોમને મળી રહેશે, આથી બીજી કોમો આપણી કોમને માન આપતાં શીખશે. ગામડામાં વસતા આપણા કોમના માણસોને બીજી કોમોથી દખાવું પડે છે તે બંધ થશે, ગામડાના હલકા પગારદારોથી જે આપણે બીજું પડે છે તે નહિ થાય. પારસી, દક્ષીણી વીગેરે કોમોના કેટલા પુરો સરકારી નોકરીમાં છે, કેટલા આપણા દેશની કાઉન્સિલોમાં છે, કેટલા ડાક્ટરો છે, કેટલા મેજિસ્ટ્રેટ વહેપારીઓ છે. આપણી કોમમાં કેટલા છે તેનો વિચાર કરો. રેલ્વેમાં જતાં તમને કેટલી હાડમારીઓ વેઠવી પડે છે, તેનો વિચાર કરો. ત્યાં જોશો ત્યાં પારસી વીગેરે જોવામાં આવે છે, તે સોડાને બીલકુલ વેંટું પડતું નથી. આ બધું ફક્ત આપણી કોમમાં બજેલાઓની સંખ્યા ઓછી છે તેથી જ છે, કલ્પ કેટલાકોને

ખ્યાલ આવે. છે કે મેજિસ્ટ્રેટ વહેપારીઓ કંઈ બજેલા નથી હોતા; પણ યાદ રાખજો કે તે વિચાર ભૂલ અવગણનાર છે. આપણી કોમ પહેલેથી વહેપારી કોમ છે, આપણાનો ધંધો ચાલતો આવેલો હોય કેટલાક વહેપારીઓ તમારામાં છે, પણ જગતો જેમ જેમ બદલાતો જાય છે, તેમ તેમ અન્ય કોમો વહેપારમાં પ્રવેશ કરવા લાગી છે. વહેપારી હરીફાઈ વધતી જાય છે. પરદેશ સાથે આપણો સંબંધ ઘણો ઓછો હતો, હવે તે સંબંધ ઘણો વધી ગયો છે, અને દુનીઆના વહેપારનાં સાધનો પણ બહુ બહોળાં થયાં છે.

યુરોપીય વહેપારીઓ આપણા દેશમાં આવી આપણે વહેપાર પોતાના હાથમાં લેવા લાગ્યા છે, આજકાલ જાપાનીઓ પણ રતું બજાર હાથ કરતા જાય છે આવી સ્થિતિમાં, જે આપણા વહેપારીઓ અગાં રહેશે તો જરૂર જે કંઈ યાકી રહેશે, તે વહેપાર પણ યુમા માવશે. જ્યારે હિંદુસ્તાનમાં ચારે બાજુએ કેળવણીની આટલી બધી જરૂર સોડાને જણાવા લાગી છે, જ્યારે તે વધારવાને અનેક પ્રયત્નો થાય છે, ત્યારે અમદાવાદ યોડિંગમાંથી વિદ્યાર્થીઓની સંખ્યા કમી કરી અથવા કલમ સીસ્ટમ દાખલ કરી વિદ્યાર્થીઓને મળતી મદદ કમી કરી આવક નીવડે સંપાદન કરવાની વાતો સંભળાય છે. અમદાવાદ યોડિંગની વ્યવસ્થામાં જે ફેરફાર કરવામાં ન આવે, અને હાલમાં ચોંસે છે તેમ જો ચાલતા દેવામાં આવે તો આવકના કરતાં નીવડે વધારે હોવાથી ચોડા વર્ષોમાં યોડિંગનું કાયમ ફંડ ખર્ચાઈ જાય, અને તેને સ્થાપન કરી દાખલો બેસાડવાનાર નરવીર સ્વર્ગસ્થ થોડું નામ નાણુદ થઈ જાય, માટે એ યોડિંગ કાયમ ચાલવા માટે એનું ખર્ચ આંવકની પ્રમાણમાં રાખવું જોઈએ. આવા સંજોગમાં આપણા વિદ્યાર્થીઓને પુરતી મદદ મળે તે માટે ફંડ એકત્રી કરવાને દરેક ગાંતિના આગેવાન કિસાદી યુદ્ધ



સ્થાની એક કમીટી બોર્ડિંગના આવતા મેળાવડા વખતે નીમાલી જોઇએ તે કમીટીએ પોતાના સમયતો અમુક બોગ આપી કંડ એકડું કરવાને બનતો પ્રયાસ કરવો જોઇએ. જે આવી કમીટી નીમવામાં આવે તો હું નથી ધારતો કે જે જેનો હનરો રૂપીઆ દેહેરા મધાવવા પાછળ, સંઘ દાહવા પાછળ, સોડાને જમાડવાને આતો પાછળ ખર્ચ છે, તે જેનો વિદ્યાદાનને માટે પોતાનાથી બનતી મદદ નહિ કરે ? માદ રાખતુ જોઇએ કે પ્રત્યેક જમાનામાં પૈમા ખર્ચવાની રીતો બદલાતી જાયછે. એક વખત એવો પશુ હતો કે જ્યારે દેહેરા વીગેરે બધાંબા સિવાય પૈસા અરચવાનો રસ્તો નહોતો. તે સમયે કેળવણી દાહવા જેટલી મોટી નહોતી. અને દાહમા જેવી કેળવણી આપરામા આવે છે તેની કેળવણી પશુ નહોતી. દાહમા કોલેજનુ ખર્ચ વર્ષે ૪૦૦) રૂપીઆ આવે છે. ગુજરાતના દિગંધરા બધાખરા સાધારણ મિથિતાના માણસો છે. દરેકની સરેરાશ વાર્ષિક આવક ૨૦૦) થી ૭૦૦) રૂપીની હોય છે. આવી થોડી આવકમાંથી જેને કંડેબનું પોપણ કરવાતુ હોયછે, જેને કંડેબમા થતા મરણુ યા લગન પાછળ ખર્ચ કરવું પડે છે તે ૪૦૦) રૂપીઆ રોકડા કેવી રીતે આપી શકે તેનો મુબબમા વસતા તરંગરો કે જેને ત્યા ૫૦૦) થી હનર રૂપીઆતુ માસિક ખર્ચ થાય છે તેમને ખ્યાવ પશુ કયાથી અને ? સ્વર્ગરથ શેઠ ગુજરાતના દિગંધરાની સ્થિતી સમજતા હતા તેથી તેઓ સપૂર્ણ હંદારદત્તિ થા જોઇએ તેટલી મદદ આપવાને હમેશાં તેયાર હતા. તેમનાથી બનતુ તેટલુ તેઓ કરી ગયા છે. પોતાના કંડેબના બચા કરતા કેમનુ બનુ તેમણે વધારે ગણ્યુ છે મરતા મરતા પશુ તેઓ અડીલાખ રૂપીઆની બાદશાહી સખાવત કરતા ગયા છે તે કંડેબ પામેથી હવે એક માત્ર પશુ મેવી સમસ્ત દિગંધર કામને હીનપન લખાડે તેની છે. સ્વર્ગરથ શેઠ સાહેબ જેટલીજ ખોતરાવાળા બચા શેડીઆઓ મુબબમા વસે છે

તેમને ગરીબ સોડાની વીટબજારું બાન નથી. ગરીબો પોતાનુ ગુજરાન વર્ષે દિવસે ૨૦૦) રૂપીઆમા કેવી રીતે કરતા હશે તેની કલ્પના પશુ તેઓ કરી શકે તેમ નથી તમના કાન હાથવાની આપણા આગેવાનોની ફરજ છે. તેમની પાસે જરૂર તેમને બધું અસરકારક રીતે સમજાવવાની જરૂર છે અને હું ખાતરીથી કહું છું કે જે એક લાગવગવાળા, વજનદાર શુદ્ધ સ્થાની એકકમીટી તેમની પાસે જરૂર કંડની માગણી કરે તો જરૂર એક સારી રકમ તેઓ મેળવવાને શક્તિમાન થશે. આપણી કામમાં મદદ મેળવનાર વિદ્યાર્થીઓની સખ્યા બહુ મોટી નથી. ૫૦ હનર રૂપીઆતુ કંડ થોડા વર્ષો માટે પૂરતુ થશે.

પ્રેક્ષક.

અમિદુપુરાણ મંત્ર

પૂરુષ છપ મચા

જો ભગવજ્ઞિનમેનાચાર્યકૃત વડા ભારી ગ્રંથ મૂલ સહિત સરલ હિંદી ભાષામાં વહુત દિનસે છપ રહા થા ઘહ પૂરા હો ગયા । મોટે ઔર મજબૂત કાગજપર વહેટાઈપ મેં છુલે પત્રોંપર છપા હૈ । ન્યોછાવર અમી ૧૬) સોલહ રૂપયે હી રક્ષી હૈ । હાકલ્લર્ચ અલગ લગેગા । જિન્હેંં ચાહિયે વે શીઘ્રતાસે મંગા લેવેં ।

લાલારામ જૈન

મલ્હારગંજ-ઈંદોર.

ગુજરાતી કંડેબોમાં માનીતું થઇ પડેલું

માસિક પત્ર

વિવેચક

જેમા દરેક પ્રકારના અને દરેકને ઉપયોગી થઇ પડે તેવા લેખો, માગ્યો વાર્તાઓ વગેરે પ્રગટ થાય છે. દર વર્સે આડકોત્રે, જેટલુક મરતુ નજે છે. વાપક લવાજમ રા. ૨-૨-૦ નમુના માટે ૩ આતાની ટીકીટ ખીડવી. લખો- વિવેચક આદિસ-લાહરસ (નાદોહ)

देशी, पवित्र, स्वादिष्ट पाचक दवाइयोंका अपूर्व संग्रह

दिलबहार चूर्ण

(खाना शीघ्र हजम करने व भूख बढ़ानेवाला)

किसी भी उत्तम चूर्ण में तीन गुण होना आवश्यक हैं (१) स्वादिष्ट यानी जायकेदार (२) पाचन करनेवाला (३) भूख बढ़ाने वाला । हर्ष है कि इस चूर्ण में तीनों गुण हैं । बहुत से लोगों को रोज़ चूर्ण खाने की आदत होती है उन के लिये भी यह बड़े कामकी चीज है, इसकी खुराक १॥ माशे की है परन्तु जायकेदार होने से अगर थोड़ा ज्यादा भी खा लिया जावे तो गर्मी बौरह कोई हानि नहीं करता है क्योंकि चूर्ण होने पर भी हमने इसमें किसी तीक्ष्ण चीजका प्रयोग नहीं किया है सब दवाइयाँ माहिल गुणवाली हैं इसलिये बीमार आदमी भी खुशी से खा सकते हैं । पवित्र औषधियों के सम्मिलनके कारण सभी सम्प्रदायवाले वैद्यके खा सकते हैं । हम बहुत बढ़कर बात नहीं कहना चाहते हैं । इस में स्वादिष्ट, खाना जल्द हजम करना, भूख बढ़ाना तीन विशेष गुण हैं उनके लिये हम दावे के साथ कहते हैं कि इन बातों में आप को कभी धोखा नहीं होगा तिस पर भी—

आप के विश्वास के लिये—

हमने इसके एक २० तोले के नमूने के पैकेट बनाकर रखे हैं यदि आप इस चूर्णकी परीक्षा करना और इससे लाभ उठाना चाहते हैं तो एक कार्ड भेजकर बिना डांक खर्च के एक पैकेट मंगाकर परीक्षा कर लीजिये फिर आपका मन भरे तो पूरी शीशी मंगाकर लाभ उठाइये । बस इससे अधिक हम और कुछ भी नहीं कह सकते हैं । फी शीशी चार औंस (करीब आध पाव) वाली की कीमत १) डांक खर्च १) तीन शीशी २॥=) डांक खर्च १=) आना ।

मिलनेका पता—

चन्द्रसेन जैन वैद्य,

चन्द्राश्रम—इटावा ।

विषयानुक्रमः ।

नं०	विषय.	पृष्ठ.
१-२	नवीन वर्ष, नूतन वर्षाभे अभिवदन	३
३	महावीरगठर स्तोत्र (सतीशचन्द्र गुप्त, सूरत)	४
४-५	सम्पादनीय वक्तव्य, स्वीकार-समालोचना	५-६
६-७	सेठ नरलचन्द्र हीराचन्द्र स्मारक पत्र, जैन समाचार... ..	१६
८	एक लुप्तप्राय तीर्थरे उद्धारणी आवश्यकता	२१
९	द्वाल्पाग्रयुष्मा कविता (प० उमरामहोदय व्यापती, राशी)	२३
१०	Analysis of Tattvartha Sutra (Justice J. L. Jaini M. A., Bar-at-Law, Indore)	२५
११	Optimism of life, (Herbert Warren, London)	३१
१२	To Friends of the Jain Community. (Babu Chaitan Das B. A. Laphmumpur)	३१
१३	मनुष्य व्यवहार (श्रीमती चन्द्राप्रदा, आगरा)	४२
१४	जैन पारिभाषिक शब्द कोष (प० पराशरदास धामजीवाल, मलमता	४४
१५	दिवाली और दो मित्रोंका संसर्गाप (बाबू दीपचन्द्र पटवार, नरसिंहपुर)	४६
१६	वीथी रक्षा (हीराचन्द्र मल्लुचन्द्र दोशी काका, सोलापुर)	५६
१७	व्याख्यान, (जैनधर्मभूषण श्र० नीतलप्रसादजी)	५८
१८	अथ उच्चार 'प्रेमो' हो-कविता ('प्रेमी' हजारीलाल जैन, आगरा)	७३
१९	भद्रा उन्नतिनी जन्म द्वे (जैनधर्मभूषण श्र० नीतलप्रसादजी)	७३
२०	उपयोगी दितवचन (रामलाल मोदी, देवरी)	७९
२१	मम वीर प्रभो !!! (लोकमणि जैन मोदेगांव C. P)	८१
२२	ध्यान देन योग्य सूचनार्थ (हीराचन्द्र मल्लुचन्द्र दोशी काका, सोलापुर)	८५
२३	" सन्ता दीजिमे स्वामिन् " (मुलामचन्द्र परमानन्द जैन मोरेगांव)	८९
२४	आगेम्यताका प्रश्न पत्र, (हीराचन्द्र मल्लुचन्द्र दोशी काका, सोलापुर)	८७
२५	जीवनके उद्देश्य, (मणीलाल जैन, आगरा), हास्य और व्यंग्यचार	८९-९०
२६	दयालु दीलदायकीने विनती (C. G. Samllis)	९२
२८	महावीरचरित्रांग, (सतीशचन्द्र गुप्त मयूरपुर)	९३
२९	सम्पा धर्मानि स्वप्ना, (बाबूचन्द्र मोतीचन्द्र पटवर्, मलमतापुर)	९८
३०-३१	महामन्दल, भद्रविजय (ललिताबाई आविहाभ्रम, ववाई)	१०३-१०५
३२	अनुवादक-सजल (बा० प्रवर्तीगल वर्मा, सूरत)	१०७
३३-३४	महालय (D. B), आश्रमके एक प्रश्न (लुट्टोगी)	१०८-११०
३५	जोईशाला जेनेने दिव्य संदेशो, (मन्नी, कापीगा मित्रमहोदय, कापीगा)	१११
३६	सांसारिक वधारण अने तेनी मुक्त परजो (हिमन्तो... ..	११३
३७-३८	पुस्तकावय, सोमिजानी दिग्गमर जैन परने मूलना (श्री कापीगा मित्रमहोदय, ११९-१२०	११९-१२०



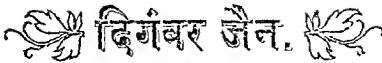
बड़ी सूची मुफ्त मंगा देखिये
रोग, सारदी, बवासी, मुँहके छाले, प्रमेह, रक्त-शुद्धि, जलना, ताप (बुखार)
नहारुआ, हिचकी, दुर्गन्धी खट्खल आदि प्रायः सर्व रोगोंका पूरा २ इलाज
है । गृहस्थोंको एक शीशी अवश्य पास रखना चाहिये । कीमत अमीर गरीब
सबके लिये थोड़ी रखी है खाने लगानेकी तरकीब दवाके साथ मिलती है ।
की० फी शीशी ॥१॥ तीन शीशी २) रु० डा० खर्च अलग ।

दवा मंगानेका स्थल:—

चन्द्रसेन जैन वैद्य, चन्द्राश्रम-इटावह. U. P.

आजकल करते २ अरसा २०
सालसे, मैं एक ऐसी दवाकी खोजमें
था जो जगतको आशीर्वाद रूप हो जाय,
एक ही छोटी शीशी अपने जेबमें रख-
नेसे सारा दवागाना निवारा हो जाय
यानी अपनी जाकिटकी जेबमें एक
छोटीसी गीशीके अंदर सारा दवागाना
आजाय । परदेशमें, रेलमें, जहाजमें,
अंगलमें, छोटे मोटे गांवमें जहां जिस
वक्त कोई बिमारी उमड़ आई उसी
दम-उसका इलाज, अपने जेबमेंसे
निकल पड़े । कई आशा-निराशाके
शोकें खाते आज २० वर्षके बड़े
परिश्रमके बाद मेने यह "चन्द्रामृत"
पाया है ।

इससे बादी, बुदहनमी, दस्त,
कै, खांसी, दमा, शिरदर्द, जुखाम,
आंखका दर्द, दांत व डाढ़का दर्द,
घर्ष रोग, दाद, खुजली, खान,
हैजा, सूक्ष्म गठिया, वात, लकवा,
कमजोरी, अशक्ति, नामदी, नहरी
डंक, प्लीहा, अण्डवृद्धि, प्रदर,



THE DIGAMBAR JAIN.

नाना कलाभिविविधैश्च सत्त्वेः सत्योपदेशैस्तुगवेषणामि ।

सबोधयत्नमिदं प्रवर्तताम्, दिगम्बर जैन समाज मानम् ॥

वर्ष ११ बाँ. || वीर संवत् २४४४. कार्तिक-मार्गशर्ष विनम स० १९७८ || अंक १-२.

नवीन वर्ष ।

(१)

नवीन वर्ष, नवीन हर्षे
नवीन दर्श, लोभने ।

(२)

वीती रात, प्रभु प्रताप,
दिव्य प्रभात, देशमे ।

(३)

कनक सूर्य, नवीन सूर;
भारत अपूर्व, देशमे ।

(४)

नवीन भाष, अह प्रभाष,
नवीन चान, देशमे ।

(५)

नवीन नेत्र, अह तरङ्ग,
नवीन रंग, देशमे ।

(६)

'प्रतिष्ठाता', भारगभज,
द 'सराज्य' देशमे ।

(७)

कलित चप, पुनित भाष,
"नवीन" आर्य देशमे ।

गुनराजिने अनुपद-
सर्वादाचन्द्र एम, नृत ।

नूतन वर्षारंभे अभिवन्दन.

नोट्स उत्तर ।

शुभ वर्ष ननु महावीर तणु,
नीरडो ज्ञानत गदाय घणु,
सत् आग कलो नवता वरने,
परिचार मंदव ह्यो हर्षे. १.
गुप्त केळवणी रक्षण हर्षे,
पर हुनर हाथ धर चहने;
वन धाम्य अनं गुग सशक्तिनी,
नवनी रररो हस्ता मनधी. २.
दिंद व्योम विरे गुग रश्मीवधो,
परिताप-दया दारिणे दुरजो,
यजी आधु सीमावध लन प्रणी,
नीति प्रगणे सत् विध विरे. ३.
भगपुर ररो जन महलने,
मेतीमद' रडे प्रभु महावीरने,
वर सप अने सु सादहरी,
जन महल ह्यो सुख शांति धरी. ४.

कट वर्ष स्ते मुत्ता ह्य वन्या,
नदु पंचेन नेन राजो मुत्तमा,
टजो कलेस वेली रण रणहचो,
कल रवेन ए प्रभु तक्ष भयो. १
जय प्रिडिस गगन गगोत्रभजो,
गुह क्षेत्र विरे जय लो वरजो,
सुख शांति व्यो अग्नि हर्षने,
कह जेज ए प्रभु तक्ष भयो. २.

मोतीलाल प्रिन्समदास मन्डरी वाकरेल



दिगम्बर जैनका जन्म दश वर्ष हुए गुजरात

प्रान्तके भाइयोंकी हि-

हिन्दी भाषाका तार्थ गुजराती भाषामें
आदर। ही हुआ था परंतु जैनः

२ इसका क्षेत्र बढ़ता

गया इस लिये हमें भी हिन्दी भाषा और देवनागरी लिपिको स्थान देना पड़ा, वह यहां तक कि अब विशेष करके हिन्दी भाषाके लेख ही प्रकट करने पड़ते हैं। कड़े वर्षोंसे हिन्दमें एक ही राष्ट्रभाषा होनेके लिये चर्चा चल रही है जिसको अब तो विशेष अनुमोदन मिल रहा है और उसमें सारे हिन्दमें हिन्दी भाषाको ही राष्ट्रभाषाका मान देना सभीको स्वीकृत है क्योंकि हिन्दी भाषा एक ऐसी भाषा है कि जिसको हिन्दके सभी प्रान्तोंके लोग तो क्या परन्तु विदेशी भी समझ सकते हैं। हमारे लोकनायक लो० तिलकने भी इसीको स्वीकार किया है और आप भी हिन्दीमें बोलने और लिखने लगे हैं, जब आप मराठी भाषा भाषी हैं। दूसरी ओर महात्मा गांधीजी गुजराती भाषाभाषी होनेपर भी हिन्दीका ही आदर कर रहे हैं तो क्या हम सबका कर्तव्य नहीं है कि हम भी जहांतक होसके हिन्दी भाषाको ही राष्ट्रभाषा बनानेका उद्योग न करें ? आशा है कि हमारे सभी पाठकगण भी इसी कार्य प्रणालीसे संतुष्ट होंवेंगे और हिन्दीको राष्ट्रभाषा बनानेका पूर्ण उद्योग करते रहेंगे।

गत वर्षमें उपहारके कई ग्रन्थ देने रह गये

है परन्तु इस वर्षमें

इस वर्षके तो श्री महावीरचरित्र, उपहार। धर्मचर्चासंग्रह, आदि

५-६ ग्रन्थ अवश्य

उपहारमें दिये जावेंगे। अनेक कार्यवशात् इस बार यह विगेषांक प्रकट करनेमें विलम्ब हुआ और फिर वार्षिक मूल्य वसूल करनेके लिये वी० पी० से विगेषांक भेजे जाय तो फिर और भी विलम्ब हो जाय इसलिये इसवार तो सभी पुराने और नये ग्राहकोंको विगेषांक सामान्यरूपसे ही भेजा जाता है इसलिये सभी पुराने और नवीन ग्राहकोंको आप्रह पूर्वक निवेदन करते हैं कि ये वार्षिक मूल्य १-१२-० शीघ्र ही मनिओर्डर द्वारा भेज दें। यदि किसीको इस वर्षमें ग्राहक रहना अस्वीकार हो तो ये इस विगेषांकको पढ़कर वापिस भेजे या रख करके ही संतुष्ट हो जावें और एक कार्ड द्वारा हमें सूचित कर दें ताकि उनको आगामी अंकसे भेजना बंद किया जाय परंतु सभीको हम चिन्ताये देते हैं कि क्रागनकी अतीव महँगीके समयमें भी भगवान् महावीरस्वामीका वृहत् जीवनचरित्र (अण्डे भवों महिन) आदि करीब द्वाद्वी या तीन रुपयेके ग्रन्थ उपहारमें मिलेंगे जिससे आपको मासिक जैसे मुफ्तमें ही पढ़ जायगा।





जैसे दान और परोपकारके लिये स्वर्गीय दानवीर जैन-कुलभूषण पं० अर्जुनलाल सेठ माणिकचन्दजी-सेठीजी । से हिन्दुस्थानके जैन परिचित हो गये थे उमी तरह जैन समाजकी सेवाके लिये अपना जीवन अर्पण करनेवाले पं० अर्जुनलाल सेठी जी० ए० जैसे बहुमुख्य व्यक्तिको जयपुर राज्य और फिर ब्रिटिश राज्यने विना न्याय नजरबंद कर रखा है जिससे हिन्दुके सारे जैनोंमें तो क्या परन्तु समस्त हिंदुस्तान भरमें सेठीजीका नाम परिचित हो गया है । करीब साढ़े तीन वर्ष तक तो जयपुर राज्यने सेठीजीको जयपुरमें नजरबंद रक्खा तब उनको छोड़नेके लिये या तो उनका न्याय करनेके लिये हजारों तार भिजे गये जिसकी कुछ भी सुनाई नहीं हुई तब हमारे बाईमराय महोदयको कई तार और चिट्ठियाँ भेजे गईं तो बहुत फरक उत्तरही नहीं मिला और कही मिला तो सिर्फ इतना ही कि हम जयपुर राज्यके कार्यमें हस्तक्षेप नहीं करते आदि । ठीक, यह भी सही, अब आगे हाथ पुनिये । जयपुरमें नजरबंद करनेसे यह तो साफ २ मालूम होता था कि सेठीजी जयपुर स्टेटके कैदी हैं परन्तु गत २० नवम्बरको एक आश्चर्यकारक घटना यह हुई कि सेठीजीकी जयपुर जेलमें भोगमें बैठकर जयपुरके ग्ले स्टेशनपर लाने गये और वहाँसे कहीं भेजे गये जिसका पता कुछ दिनों बाद मालूम हुआ कि सेठीजी तो ब्रिटिश राज्यमें और

दक्षिणमें बेल्लोर (मद्रास) जेलमें भेजे गये हैं । अब जैपुर जेलमें सेठीजीके दर्शन-पूजनके लिये जिनेन्द्र प्रतिमाजीका प्रबंध था परन्तु बेल्लोरमें ऐसा प्रबंध न होनेसे जैपुर छोड़नेके बाद ही सेठीजीने आहारपान लेना न्याय कर दिया और ८ दिन तक बराबर उपवास किया परन्तु फिर शरीरस्थिति पर विचार करके सिर्फ दूध लेना स्वीकार किया परन्तु बिना अनाहार किये दिन व्यतीत करने लगे । इस समाचारसे जैन समाजमें बड़ी भारी खलबल और अशांति उत्पन्न होगई और सेठीजीकी पत्नी और बच्चे जैपुरमें ही चिल्लाते रहे !!! ऐसे विकट समयमें सरकारसे पत्रव्यवहार करना और बेल्लोर जाकर सेठीजीके आहारका प्रबंध कराना कुछ सहज बात नहीं थी । उधर समय बीतने लगा और सेठीजी भूखे ही अपने दिन काटने लगे और शरीर भी कृप होता चला । ऐसी घोर विपत्तिमें अविश्रात परिश्रम करनेवाले दो वीर नर बाबू अजितप्रसादजी (लगनऊ) और बाबू भगवानदिनजी निक्कल आये और आपने खूब आन्दोलन किया यहाँ तक कि सरकार द्वारा कुछ संतोषजनक उत्तर न मिला तब इस मामलेको कोंग्रेसमें आ उपस्थित किया तो इस बारकी कोंग्रेसकी प्रमुखता श्रीमती एनी बिसेन्टने इस मामलेको स्वीकार किया और इस मामलेका प्रस्ताव खुद अपनी तरफसे कोंग्रेसमें उपस्थित किया और संशुभमतिमें पास कराया । इसके बाद श्रीमतीची वाइमरॉयसे मित्री और बेल्लोर जेलमें प्रतिमाजी गवने और सेठीजीकी पत्नी



और बच्चेको मिलने देनेकी स्वीकारता छी तब बाबू भगवानदीनजी जयपुर गये और वहाँसे प्रतिमाजी, पत्नी गुलाबबाई, पुत्र प्रकाशचन्द्र और तीन पुत्रियोंको लेकर बेलोर खाना हुए और सोलापुर होते हुए बेलोर पहुँचे और वहाँ दोएक दिन कोशिश करनी पड़ी तब सेठीजीका मिलाप सभीको हुआ, प्रतिमाजीकी स्थापना जेलमें की गई, सेठीजीने ११ दिन बाद १६ वें दिनको (ता० १५ जनवरीको) प्रतिमाजीका दर्शन-पूजन करके अन्नाहार ग्रहण किया और अपने बच्चोंको जेलमें पढ़ानेकी आज्ञा मिली । अभी श्रीमती गुलाबबाई आदि वहाँ ही हैं । अब सेठीजीको आहार मिलनेका प्रबंध हो गया इससे अपनेको संतोष कर चुप बैठ रहना ठीक नहीं है । हमें तो अब विशेष आन्दोलन करना चाहिये तब ही सेठीजीका हटकारा कर सकेंगे । इसलिये दो बातोंकी आवश्यकता है । एक तो यह कि इसके लिये धर्मप्रेमी बाबू अजितप्रसादजीने अजिताश्रम, लखनऊमें खास आफिस खोल रखी है और रात दिन तार चिट्ठी आदिका कार्य होता है जिसमें तथा भ्रमण और गुलाबबाईके निषाधके लिये सर्वकी आवश्यकता है इसलिये हर एक स्थानसे कुछ न कुछ चन्दा करके वह मनिओर्डर द्वारा लखनऊ भेजते रहना चाहिये । तथा बार २ समा करके उसमें सेठीजीके छोड़ देनेका प्रस्ताव करके वाइमरायको भेजते रहना चाहिये । बिना घोर आन्दोलन

किये हमारी सुनाई कभी भी नहीं होगी । और हमारे न्यायी ब्रिटिश सरकारको हम एकवार और आप्रहपूर्वक निवेदन करते हैं कि आप चाहे सेठीजीका न्याय करके यदि वे दोषी टहें तो उचित दंड दीजिए या तो छोड़ दीजिए । जैन एक शांत प्रजा है और उसमें राजद्रोहकी गंध तक नहीं है, इसलिये सेठीजीको छोड़कर जैनसमाजमें फैली हुई अशांतिको मिटाइए । सेठीजीका चित्र हमने इस अंकमें मुखपृष्ठपर इसीलिये प्रकट किया है कि हमारे पाठक सेठीजीको भूल न जायें और इनको छुड़ानेके लिये हर एक प्रयत्न जारी रखें ।

हमारे स्व० दानवीर सेठ माणिकचन्दजीके तीन भ्राताओंमें सिर्फ

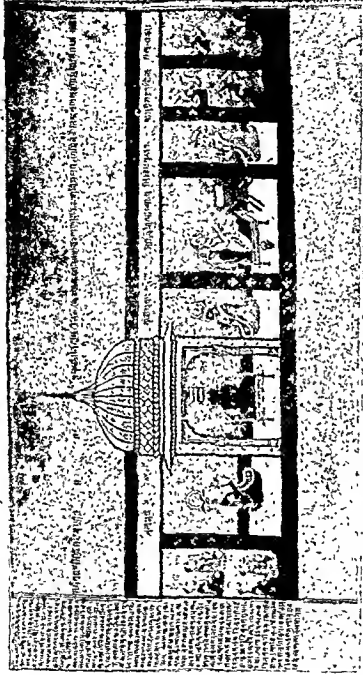
सेठ नवलचन्दजी । श्रीमान् सेठ नवलचन्दजी मौजूद थे जिनसे भी

हमारे पाठक अच्छी तरहसे परिचित है क्योंकि गत दाहोदवाले अधिवेशनमें आप ही सभपति हुए थे और आपका चित्र गत वर्षमें प्रकट किया गया था परंतु अतीव दुःखके साथ प्रकट करना पड़ता है कि आपका स्वर्गवास मगध सुद १० ता० २४ दिपम्बरको बम्बईमें ६२ वर्षकी आयुमें हो गया जिससे सेठ हीरानंद गुमानजीके चारों पुत्रोंमें अब एक भी मौजूद नहीं रहा है । सेठ नवलचन्दजीकी मृत्युसे हमको एक भर्मात्मा महा दुःखकी कमी हुई है क्योंकि आपकी श्री सम्मदशिवरणी, मन्मथीजी, अंतरीसजी, मांगीशुमीजी आदि

" द्विपरा मेन ।

विशेषांक.

वीर, सं० २४४४.



श्रीमद् नेमीचन्द्र सिद्धान्तचक्रवर्ती चामुंडरायको उपदेश दे रहे हैं ।
(एक हस्तलिखित ग्रन्थके एक पृष्ठसे उद्धृत)

जन्मविजय प्रेम-माला. ५२५



तीर्थों की आत्मीय भक्ति सुप्रसिद्ध है और स्वर्गीय सेठ भाणिकचन्द जी सभासेवाके ओकों कार्य कर गये हैं वे सब आपके संयुक्तपन और सहायभूतिते ही हुए हैं । आप दो पुत्र सेठ ताराचंद और रतनचंद तथा एक पुत्री विद्यमान हैं । हमारी यही भावना है कि आपकी आत्मा को शान्ति, और कुटुम्ब को धैर्य प्राप्त हो तथा दोनों पुत्र अपने वाकानी और पिताजीके दानका और समाजसेवाका अनुसरण करें तथा आपकी विधवा श्रीमती परस्मनबाई भी अपना शेष समय दान धर्ममें निगमन कर मनुष्यपर्यायको सकल करें । सेठ नवलचन्दजीके शोक प्रशान्त-नार्थ बम्बईमें सेठ मुखानन्दजीके सभापतित्वमें दो सभा हुई थीं जिसमें एक स्मारक फंड भी स्थापित होकर ८००) भरे गये हैं जिसमें खास करके हमारे गुजरातके भाइयों को कुछ न कुछ सहायता भेजना चाहिए जिससे इन सेठजीका भी कुछ स्मारकचिन्ह कायम हो सके । हर्ष है कि आप मृत्यु समय २५०००) तीर्थोंके जीर्णोद्धारके लिये निकाल गये हैं जिसकी व्ययम्पाका हाउ मिलनेपर प्रकट किया जायगा ।



हमारी स्मार्कमेंसे तैयार हुए अनेक युव-
कोंका वियोग हो रहा
बाबू भाणिकचन्दजी है जिसमें सेठवा नि-
वकील-खंडवा । बाती बाबू भाणिकने
दनी वकील बी०ए०
२५०० बी०का कलकत्तामें गन ता. १७ को

अचानक स्वर्गवास अतीव खतरनाक है । आप अंग्रेजी पढेलिखे, धर्मप्रेमी, उत्साही नेता और लेखक भी थे । आपने अंग्रेजीमें महावीर-चरित्र, स्त्री शिक्षा आदि पुस्तकें प्रकट की हैं, भारत जैन महामंडलके मंत्रीका काम भी आपने कई वर्षों तक किया था, और भारत जैन महामंडलके लखनऊ वाले अधिवेशनके सभापति आप ही बनाये गये थे । आप जैसे विद्वान् और उत्साही पुरुषकी क्षति पुरी होना मुश्किल है । आत्मीय आत्मा को हम शान्ति चारते हैं ।

गुजरात प्रान्तमें जागृति फैलानेवाली नाम कोई संस्था है तो वह प्रान्तिक सभा । बम्बई दिगंबर जैन प्रान्तिक सभा ही है । बम्बई प्रान्तिक सभाने आज तक ठीक काम कर दिया है जिसका कारण प्रतिवर्ष भित्त २ स्थानों पर आधिवेशन होनेका है । वर्षमें एकवार आधिवेशन होनेसे ही सभाके कार्यमें चैन ता रहती है । गत वर्ष तो दहो-दके भाइयोंने बम्बई और मालवा दोनों प्रांतिक सभाओं को आनाई थीं परंतु इस वर्ष अभी तक दोनोंमेंसे किसीको कहीं भी आमंत्रण नहीं भिजा है । सुना है कि आमोद (मडोंच, गुजरात) में प्रतिष्ठा होनेवाली है जिसपर प्रांतिक सभाको आम-त्रण मिलनेके प्रयत्न चरु रहे हैं । आशा है कि आमोदमें सेठ जेठामाई गोरबन्ध स, सेठ

हरजीवन रायचंद शाह, सेंट शंकर बाल तापी-
दास जैसे प्रान्तिक सभा में उत्साहसे योग
देनवाले, मौजूद हैं तो आशा है कि आप
लोग, इस सभा को अवश्य अपनावेंगे और
गुजरात प्रान्त को धर्म कार्य में वित्तप जागृत
करने का एक प्रयत्न करेंगे ।

आ धनवी शश्याव अमदावादी शेड
प्रमथंद मोतीयंद दिगंबर
‘दिगंबर जैन’ जैन भोर्डिंग पुरथी यथ
स्वतंत्रता। उती अने १४ वष थायां आ
भोर्डिंग पुरथी प्रकट थुं
सुतु, अरुथे जेना नश डेरानो सुअथ भोर्डि-
ंग पर-उतो, पथु डवे आ भोर्डिंगतो वहीवट
हानार-ही। या जैन भोर्डिंगनी अनेउंग अनी-
उमे आ पुरतो वहीवट अपने सोपी देवानो
शिव पसंथ थो छे, नेथी आ वरसथी आ
अथी आ पत्र स्वतंत्र भांडिपथी प्रकट थाये
छे अपने अथी, नेथी डवे अमदावाड भोर्डिंग
अने स्वतंत्र भोर्डिंगनी निजिअर अमेरि-
का मेअअनेने अथना प्रवभां थावे छे छे
हो छे पोतानी मेअअर शी भोर्डिंगभां भोडवरी
अने आ वरथी तेभवे आ पत्र लसंगम
३० १-१२-० ७७ड अरु पुरथी, ने अनी-
भोर्डिंग अपने भोडवी आपथुं हानार थो
मेअअरने ‘दिगंबर जैन’ भंगववा विचार न
होय तो तेनी अमर अमेने पत्र हानार आपथी।

आवश्यकता-ता० २० सेंट डुकमनंद
दि० जैन महाविद्यालयके लिये विशारद सेंटके
१० विद्यार्थियोंकी और केचनवाई अ विकासप्रम-
के लिये एक सुपरिन्टेन्डेंट बाईकी आवश्यकता
है । बाई अनुपवी और ३० वर्षसे अधिक
उमरकी होनी चाहिये । प्रत्ययवहार-मंत्रो
हनारीवाल जैन, जयरीयाग-इन्दौर ।

नूतन समाचार ।

कुशलगढ़में सभा और कन्या-
विक्रय बंद-बाबू धूलचन्द धनराज लिखते
हैं कि यहां गन ता० ३ जनवरी को एक आम
सभा दरबार सेक्रेटरी मि० शाकरीप्रसादजीके
सभापतित्वमें हुई थी जिसमें ५०० स्त्री पुरुष
एकत्र हुए थे । कुंवरी का अर्द्धदेवी (वेंगलां)-
ने जैनियोंके सामाजिक सुधार पर मनोहर
व्याख्यान दिया । तत्पश्चात् सभापति साहबन
व्याख्यान देते हुए कहा कि ‘‘अति शोककी
बात है कि जो जैन धर्म ‘अहिंसा’ पर मोधर्मकी
तालीम दे रहा है, उनके माननेवालोंमें ऐसा
क्रूर रिवाज क्यों जारी हो रहा है कि वे
अपनी प्यारी पुत्रियोंको घनेके लालचसे धर्मके
विपरीत चलकर ब्रूड बनाकर आदमियोंसे
व्याह देते हैं । वे विचारी अभाग्यनी थोड़े
ही ममयमें विवेका होकर बरबाद हो जाती
हैं और नौजवान कौम इस कुरीतिसे घनहीं
होकर व्यभिचारमें फंसी जाती है आदि ।’’ इस
व्याख्यानका इतना अपा पड़ा कि सब सज्ज-
नोंने प्रतिज्ञा की कि जब तक हम इस कुरी-
तिको न मिटा लेंगे तब तक यहां से न हटेंगे ।
तत्पश्चात् निश्चय हुआ कि आयन्देसे कोई
सल्ल आनी लडकीके विवाहमें लड-
केवालेसे दापा (राये) न लेगा । फि-
ता० १३ को उमी मदानमें दूसरी सभा
वही सेक्रेटरी माहयंक सभापतित्वमें हुई जिसमें
१००० जन मंग्या उपस्थित थी जिसमें



सबने समापति तथा कुंवारीवाईका आभार माना।

लखनऊ में माघ सुदी ९ को बड़ी धूमधामसे रथयात्रा होगी।

औरंगाबाद में—कनैयालाल गजालके सुपुत्रका विवाह चमरावनीकी पुत्रिसे हुआ जिसमें आतिशाजी, वैश्यानृत्य, कुदेवादिक पूजन आदि न होकर राक्षस-सुवनके मंदिरमें (१२१) और कचनेर पाठशालाको (१५) दान दिये तथा (१००) चन्द्राके वसुल हुए तथा पाठशाला के लिये (१५०) का चन्द्रा लिखा गया। यहां त्रैशाखमें बंदी प्रतिष्ठा होनेवाली है तथा कचनेरवाली पाठशाला यहां आकर ठीक चल है। ५० छात्र पढ़ते हैं।

—इन्दौरकी हुकमचन्द ओडिंगमें पौष शुद्ध ८, मीको सभा होकर बाबू भाणिकचन्दजी खंडवा तथा एक गजान हीरालालके मृत्यु पर शोक प्रकट किया गया।

—माचीन प्रतिमा—चिरगांव (झांसी) में वेन्गा नदीके किनारे पर एक मूर्ति निकली है। प्रतिविंब पद्मान्न मनोज्ञ और पापाणके है। आसनमें दो सिंह हैं, दोनों तरफ इन्द्र चक्र लिये खड़े हैं। चित्रसे महावीर स्वामी मालूम होते हैं। इसके लेआनेका प्रबंध हो रहा है।

दक्षिण म० जैन कोन्फरंसका २० वां अधिवेशन श्री स्तानिधि क्षेत्रमें सोलापुर निवासी सेठ हीमचंद नेमचंद दोशीके सभापतित्वमें ता० १०-११-१२ फरवरीको होगा

जिसमें जैन महिला परिषद् तथा राजकीय विषयक स्वतंत्र परिषद् भी ता० ११ को होगी।

—अम्बालामें—महा एभाका अधिवेशन ता० २३ से २८ फरवरी तक होगा जिसमें नारायण जैन महिला परिषद्का वार्षिक अधिवेशन श्रीमती सुशीलादेवी धर्मपत्नी रा० ब० लाला सुलतानसिंहजीके सभापतित्वमें होगा।

भदुवा (हाडीयावड) गैरक्षेत्र मल्हानो २७ मे वापडावत मकरसंक्रांतिने दिने भारे हाडीया धरो हने जे प्रसंगे, सर्वे २००० आधेने शत्रुगारी आप्पा शङ्करभां तेलुं तर्धम ईन्दी तमने आपनगर महासम्म, दीवान वगेरे तरुथी भलेथी रकमभाया हाडवा भचडावाभां आप्पा हता तथा भीष्ट (१००) नी भदथी सर्वे आपान भड अने अपाम भवाडाय हतुं वणा अक आप सभा भडता भलेथी वनभाणा ना प्रमुअपया नीये घट हती, जेभां जियेई वगेरे वयाध आ सरेयाना दुशपक आपवथ राभथ सरेयाना गतिभोगतुं धियेयन यधुं हतुं।

नृसिंहपुरा साविता आश्विन २० थी ३० ना वनरना अक भडनतु, प्रभाषिक अपने आशाक आहंभीनी जशर जे. रडेवा तथा मोहननी संगवड भजेशी, पगार (वार्षिक पं०) थी (१००) भुंथी तरतम धयो-सरेया प्रधस जैनी-धन।

—शिगवरजी केस—पूनावाले मुकद्दमा न० २८८ की जो अपील हाईकोर्टमें दायर है उसमें अपनी तरफमें दरख्वास्त दी गई थी कि थै० लो० जं० मंदिरके आसपास परकोटा खोदकर हमारी रास्ता रोक रहे हैं तथा



धर्मशालामें ठहरने और टोंकोंमें पूजा प्रसार करनेमें बाधा करते हैं अतः उन्हें रोक दिया जाय, तदनुसार हाईकोर्टसे श्वेतांवरी से इंजंक्शन जारी हो गया है । और पहाड़के पट्टे संबंधी मुकुद्दमा नं० २७५ की अपील पटना हाईकोर्टमें दायर हो चुकी है उसमें अपनी तर्फसे दरखास्त दी गई थी कि सरकार श्वेताम्बरियोंको पहाड़ वेंच देना चाहती है लेकिन जब तक पट्टेवाले मामलेका अंतिम निपटारा न हांवे तब तक पहाड़का बंदोबस्त किसीके माथ न किया जाय । अपनी यह दरखास्त भी मंजूर होकर इतका हुक्म राजा पाल्मोन पर जारी हो गया है ।

मुफ्त-केवल ८) सर्व मात्र भेजनेवालेको " बलवर्द्धन वटी " जो कि वैद्यक शास्त्रानुसार उमदा वनन जड़ी चूडियोंसे बनाई है वीस दिवसकी खुराक मुफ्तमें मिलती है । पता-सत्येन्दु गुप्त, चंद्रावाडी-सुरत ।

मोरेनामें मुनिजी-मुनिश्री अन्तर्जती-तिर्तजी महाराज बम्बई, आगरा, शिसरजी आदि होकर आगकल मोरेना (रवालिपर)में विराज रहे हैं और कई दिनों तक यहां ही ठहर कर विद्याध्ययन करेंगे ।

उपदेशना प्रसाध-भाषीसा मित्रमंडणी लक्ष्मी के नया वर्षने दिने अनेना भाष्यो साधना दशन भट्टे गया हता हों सभा करी उपदेश आध्याधी आभना-पाटीदार तथा भारना भाष्योके कथुं के तमे नेना ने भाषरवा सुं १४ ने दिने आभार धर्षो अध करीने थिक दिवसनी पेशाध धर्षाया करी तो

अभो आधुं गाम प्रनिना लक्ष्मी के ते दिवसे कोषये जणदनी भाषे लुंसी मुकरी नदि, ते दिवसे जम धर्षो कन्वा नदि, दार भांस दि धंथोनुं से न कन्वा नदि तथा दिस्ता करवी नदि, अ डिपर ययी यतां आभरे नेनाये विथक-रकम-दरेक इकान दीठ धर्षासा हाठगानुं स्तीमर्थ नेयी अथा लोको अ दिवसे पानाये पथु पीठनां कामों छोडी देवा जन्मया हता ।

लग्नभां दान-इष्टधर्मां मुंभाध्यागा स्व० भाष्येयद लाभयंद मेकसीना पुत्र दीरायदना लग्न भागशर शुद्ध हने दिने यथां हतां, नेनी धुयालीनां श्रीनती भाष्येयधये (२५) अक्ष-यर्षाधम, २५)-छडर-पाठशागा, २०) मुंभाध अर्षवधम, १५) कुंषवागनी आधम, १०) मुंभाध पठशागा, १०) मेरसद लाधये १, ११) अहंरां मुगा रक्ष, १०) सत्याधराधम अमदा वाद तथा परसुरथ भंगी १५८) दान मेक-लाभां आधुं हत ।

स्व० चाचूधन्नुलाल अटनी के भतीजे स्व० चाचूप्यारेलाल स्मरणार्थ

मात्र ॥२॥ का मनीओर्डर अथवा टिस्ट भेजनेसे २) रुपया मूल्यके ग्रंथ भेंट स्वरूप भेज दिये जावेंगे । ५०० कार्पा वितरण करनेका निश्चय किया है, जल्दी मंगवाइये ।

ग्रंथोंके नाम:-

१. तीस चौबीसी पूना मूल्य १॥२॥
२. कैलाश यात्रा -)
३. बलसुगल कथा -)

मंगानेका पता:-

जिनवाणी प्रचारक कार्यालय,

८, मदनमोहन चटर्जी लेन-कलकत्ता



‘मुनि’का विशेषांक श्री महावीर मुनिमण्डलके मुख मासिकपत्रका सचित्र खाम अंक। वर्ष २. अंक १. प्रकाशक काल्याण खिलानी शर्मा, बोटवड (पूर्व खानदेश)। उत्तम वागन और उपाईवाले इस १७१ पृष्ठके खाम अंकमें सैठ राजमलजी जामनर, स्व. दा. माणिकचन्दजी, पं. लालन, महात्मा गांधी, सेटीनी, संसारवृक्ष, रूपनरसिचन, व डीलाल मो. शाह अरनक श्रावक और मिश्याखी देव, बाललग्न वृद्ध विवाहके दुष्परिणामोंके हृदयद्रावक दृश्य, सट्टेवानकी दुर्दशा आदि १८ चित्र हैं और कुल ३७ लेख और कविताएँ हैं जिनमें भेदभाव कहाँ है, हमारी वर्तमान स्थिति, पापका प्रकाश, हमारे समानकी उन्नति कैसे हो, गद्दी पदार्थोंका उपयोग, मुनि सुगरकी आवश्यकता, आनन्दकी उपवेशावृत्ति, साधु और मुनियोंका वर्तन, ध्यानरुवासी मुनियोंको खुल्ला पत्र, साधुग, साधु-मुनियोंका महत्त्व, क्या कुछ और कसर है आदि लेख पढ़ने योग्य हैं। कागजकी अतीव महँगीके समयमें भी इतना सुंदर और बड़ा अंक निकालना महावीर मुनिमण्डल ही साहस है। इसके संचालक स्थानरुवासी बपु होनेपर भी इनमें सभी लेख तीनों संप्रदायके पढ़ने योग्य रहने हैं। यह तो विशेषांक है परन्तु सामान्य अंक भी ३२ पृष्ठोंका निरमि। प्रकट होता

है। वार्षिक मूल्य २) और इस अंकका मूल्य ॥= मित्रोंका पना-मैनेजर, मुनि, बोटवड (पूर्व खानदेश)

जैन संसार—संपादक प्रेम और उप संपादक नेमिन्द्र कोठारी। वर्ष २. अंक १२, वार्षिक मूल्य २=) यह सयुक्त जैन ध्वजार वराड प्राणिक कान्तरन्तका मुखत्र है। इस १६० पृष्ठोंके अंकमें साधुओं, श्रीमती मगनबाई, सेटीनी आदिके १२ चित्र भी हैं। मुखपृष्ठ पर चित्र आकर्षणीय है जिसमें जैनमगजरूपी नौकामें दि. धे. और स्थानक-वासी तीनों संप्रदायके साधु और श्रावकोंको बैठाये हैं और यह दिखाया है कि तीनों सयुक्त होकर इस नौकाको चलाते रहेंगे तो नौका संपाररूपी समुद्रसे मार हो जायगी और यदि एक भी भिन्न होगा तो नौका डूब जायगी। लेखोंमें मानव धर्म, रंगे गीदड़ोंसे बचो, प्रेमसे जाति उद्धार (कविता), विचार और उ-की फिलासफी, भ्रमशाह आदि पढ़ने योग्य हैं। वार्षिक मूल्य २=) और इस अंकका ॥)

विश्वविद्या प्रचारक—रत्नउत्से प्रभा शित सचित्र मासिक पत्र। वर्ष १० अ २ और वार्षिक मूल्य ११) लेख अच्छे रहते हैं। इस अंकमें मालवीयजीका सचित्र जीवनचरित्र पढ़ने योग्य है। मुखपृष्ठ पर हिन्दू देवीकी आकर्षणीय चित्र रहता है।

चंद्रप्रभा—सनातन (नीमारे) से प्रकाशित नवीन सचित्र मासिक पत्र। वर्ष १. अंक १. पृ. ३२. वार्षिक मूल्य २॥) इस अंकमें, भरतपुरके



प्रतापी राजा मुरजमल जाटका सचित्र परिचय पढ़ने योग्य है। साईजके प्रमाणमें मूल्य ज्यादा ही होता है।

जयाजीप्रताप—श्रीमान् ग्वालियर नरेशके जन्म दिनका यह विशेषांक बड़े ५० पृष्ठोंका और प्राचीन कारीगरीके २० चित्रों सहित है जिनमें चंदेरीके जैन मन्दिरका चित्र भी है। कुल ४४ लेखोंमें ६ इंग्लिश हैं। हिन्दी लेखोंमें कई लेख महत्वके और पढ़ने योग्य हैं। यह साप्ताहिक पत्र राजकी ओरसे ही प्रकाशित होता है और अपने अपनी और ग्वालियर राज्यकी प्रज्ञाकी बहुत उन्नति की है और कर रहा है। वार्षिक मूल्य ३) है। पता—मैनजर, जयाजी प्रसाद, लखनऊ (ग्वा.)

सुभाषित रत्नसंदोह—श्रीमद् अमिताभगति आचार्य कृष्ण महान् ग्रन्थका हिन्दी अनुवाद पं. श्रीलाल जैन काव्यतीर्थने किया है और जैन साहित्योद्धारक मं. पन्नालालजी वाकलालने भारतीय जैन सिद्धांत प्रकाशिनी संस्था (विश्वकोशलेन, बाग बाजार, कलकत्ता) द्वारा अभी ही ग्रन्थकारमें प्रकाशित किया है। छपाई सफाई और कागज बहुत बढ़िया है। प्रथम पृष्ठपर संस्थाके खाम सहायक सेठ हरिभाई देवकारण (सोलापुर) के तीन पृष्ठों सेठ बाटचंदमाई आदिके चित्र भी हैं। इस ग्रन्थ के २८२ पृष्ठोंमें ९२२ श्लोक अर्थ सहित हैं जिसकी विषय सूची पढ़नेसे ही ग्रन्थ कितने महत्वका है यह मालूम होता है। कुल ३३ विषयोंमें मुख्य २ निम्न लिखित हैं—संप्रसारक विषय निराकरण, कोप दूर करनेका उपाय, छाप

दूर करनेका उपाय, स्त्रीके गुणदोषोंका विचार, सम्प्रादर्शन—ज्ञान—चारित्र्यका निरूपण, जन्म—जग—मृत्यु निरूपण, अनित्यताका वर्णन, जीव संशोधन, दुर्जन—सज्जन निरूपण, दान निरूपण, मद्य—मांस—मद्य—वेश्यासंग—द्युत निषेध, गुरु विवेचन, धर्म निरूपण, शोक निराकरण निरूपण, शौन और श्रावक धर्म निरूपण, तप निरूपण आदि। इसकी भाषा भी इतनी सरल है कि सामान्य पढ़ा लिखा मनुष्य भी इस ग्रन्थका स्वाध्याय करके लाभ उठा सकता है। अनेक विषयोंपर व्याख्यान देनेके प्रमाणोंमें इसके बहुतसे श्लोक कटाग्र करने योग्य हैं। मूल संस्कृतमें तो इस ग्रन्थको निर्णयसागर प्रेम (बम्बई) ने कई वर्षोंमें प्रकट किया है और इसका संस्कृत भाषियोंमें बहुत आदर है परंतु इसका हिन्दी अनुवाद प्रकट करके पं. मन्नालालजीने जैन समाजका बहुत ही उपकार किया है। इतने बड़े ग्रन्थका २॥) मूल्य अल्प ही है। हाएक जैनीका कर्तव्य है कि इस ग्रन्थको मंगाकर अवश्य २ स्वाध्याय करें।

मोहिनी—लेखक, भैरवाजी जैन। प्रकाशक—प्रेमपुनारी (कुमार देवेन्द्रप्रसाद), प्रेम मंदिर, ज़ारा। पृ. ८३. छपाई सफाई उत्तम और पृ. ॥) हमने बार वर्ष हुए 'रूपसुंदरी' नामक पुस्तक गुजराती भाषामें प्रकट करके पाठकोंको उधार स्वरूप दी थी उसका यह हिन्दी अनुवाद है। इसका मुख्य सिद्धान्त सियोंमें शीघ्र रक्षाका उपदेश है। शीघ्रके प्रभावसे स्त्री अपनी आत्मिक शक्तिमें कितनी



उन्नति कर सकती है, समारम्भ वह कितनी है। इसके पढ़नेसे बहुत कुछ शिक्षा मिल उज्ज्वल रिखा हो सकती है आदि बातों का समझती है। अवश्य मंगाना चाहिये। पता-चित्र इसमें भी समांति दर्शाया है। माया भी हिन्दी साहित्य भंडार-लखनऊ।

सरल है। इस उपधासको मंगाकर अवश्य मोक्षमार्गकी सची कहानियाँ-लाभ उठाना चाहिये। प्रकाशक, बुद्धशाल श्रवक, पाठक, जैन शाला

The Householder's, Dharma.

(श्री रत्नकरंड श्रावकाचार) श्री सप्त-भद्राचार्य कृत सुप्रसिद्ध रत्नकरंड श्रावकाचार-का यह अंग्रेजी (English) अनुवाद बाबू चम्पतराय जैन बेरिस्टर (हरदोई) ने किया है और कुमार देवेन्द्रप्रसाद जैनने ही सन्दूक जैन पब्लिशिंग हाउस-आरा द्वारा अभी ही प्रकाशित किया है। छपाई सफाई उत्तम, पृ. १२५ और मूल्य ॥३॥ इसमें ४७ पृष्ठोंमें तो अनुवादक महाद्वयने इस ग्रन्थपर स-मालोचना लिखी है जो अतीव महत्वकी है। इन शास्त्रीय ग्रन्थका अंग्रेजी अनुवाद करनेके लिये जैन सभा, बेरिस्टर साहबकी आभारी है। अंग्रेजी पढ़े लिखे भाइयोंका फर्न है कि इस पुस्तकको मंगाकर अवश्य पढ़ें।

सद्यविचार पुस्तकमाला—बाबू दयाचंद्र गोयलीय जैन बी. ए. एक हिन्दी साहित्य भंडार स्थापन करके उसके द्वारा इस पुस्तकमालाको प्रकट कर रहे हैं जिसके तीन ग्रन्थ (१) जैसे चाहो वैसे बन जाओ (पृ. ६०); (२) सुख और सफलताके उपाय (पृ. ३०); (३) सुखकी प्राप्ति का मार्ग (पृ. ७३) हमारे सामने हैं। यह तीनों पुस्तक प्रसिद्ध अंग्रेजी लेखक जेम्स एलनकी पुस्तकोंका हिन्दी अनुवाद है। मूल्य क्रमशः ॥१॥, ॥१॥, और ॥१॥

प्रकाशक, बुद्धशाल श्रवक, पाठक, जैन शाला दमोह (पृ. ८० और मूल्य ॥३॥) इसमें सम्प्रदाशके आठ अंगोंकी आठ कथा, पांच अणुव्रत और पांच पापोंकी १० कथाएँ, चार दानकी चार कथा और पुनाके फलकी कथा आदि २३ कहानियाँ (कथाओं) का संग्रह सरल भाषामें संक्षेप रूपसे है। स्वाध्याय करने और प्रवृत्त करनेयोग्य है।

Love-Buds (प्रेम-रुली, प्रकाशक-प्रेम पुजारी, प्रेम मंदिर-आरा। इसमें कुमार देवेन्द्रप्रसादजीने अनेक कवित्वियोंकी प्रेम विषय-दर्शक कविताओंको और कई अंग्रेजी लेखकोंकी प्रेमदर्शक अंग्रेजी कविताओंको हिन्दी अनुवाद सहित प्रकट की हैं। पुस्तककी समावृत्त अवश्य देखने योग्य है। कई चित्र भी हैं। सारी पुस्तक बढ़िया छाल स्याहीसे छपी हुई है। पृ. १५० और मूल्य ॥१॥ हर-

एक हिन्दी साहित्यप्रेमीको ऐसी पुस्तकका अवश्य संग्रह करना चाहिए।

हितैषी गावण-प्रकाशक, पं० मनीराम नन्दिमल जैन, घमपुरा, देहली। बालक भजन संग्रहका यह चौथा भाग जैनमित्रमंडल देहली ने देवट नं० ६२ में प्रकट किया है। मूल्य -) चारहमासा तथा स्तवन संग्रह-प्रकाशक, आत्मानंद जैन सभा, अंबाला शहर। पृ. ६३ और मूल्य -) सिर्फ ॥१॥



देहली शास्त्रार्थ—देहली में गत जुलाई
सम ६ दिन तक जैनी और आर्यसमाजके बीचमें
प्र कर्तव्य और तीर्थंकर स्वतंत्रत्व खंडनमंडन
पत्रक शास्त्रार्थ हुआ था जिसमें जैनमित्र
डलीकी तरफसे न्यायालंकार वादीमकेशरी
० मखनलाडजी शास्त्री (प्र. अध्यापक श्री
द्वयमं ब्रह्मचर्याश्रम) और आर्यसमाजकी तरफसे
वितार्थिक पं. नरसिंहदेवजी शास्त्री थे। इस
न्यमें इस शास्त्रार्थका विवरण है जिसको
कट करके जैनमित्र मंडली, धरम-
रा, देहलीने जैन समाजका बहुत कुछ
प्रकार कि॥ है। इसको पढ़नेसे साफ २
रूप हो॥ है कि जैन समाजकी युक्तियां
कैानी प्रचल थीं और आर्यसमाजके पंडितकी
युक्तियां कितनी पोष थीं। इस शास्त्रार्थसे
हली मरमें क्या सारे पंचाय प्रांतमें जैन
मैका अच्छा महत्व प्रकट हुआ है। पृ. ११२
और मूल्य. लागत मात्र, चार आना ही है।
इसको मंगा लेना चाहिए।

श्रीधर्म-सार—प्रकाशक—बाबू पुरन-
कट गोखलीय जैन-सिंगोडी (छिंदवाड़ा) पृ.
८२ और मू. ॥ यह तारनपंथी समाजकी
रुस्तक है और इसमें पं. शिरोमणिदास कृष्ण
कविताओंमें धर्मका उपदेश है। मापा पुरानी है।

जैनशिक्षण पाठमाला—प्रकाशक-
कुमार मोतीलाल राय—गुवा (गानपूतान)
पृ. ६० और मू. २) और पाठशालाओंको ८)
सेकड़ा। इसमें २५ पाठोंमें विद्यार्थियोंको
पढ़ाने योग्य धर्म, जाति, और व्यवहारिक विष-

योंका उपदेश है। टाइप भी बने हैं। स्था०
जैन पाठशालाओंमें प्रवेश करने योग्य है।

वर्तमान जैन तीर्थंकर दर्पण चार्ट
नं. १-प्रकाशक मनीराम नन्मूलनी, धर्मपुरा,
देहली, मूल्य २) इसमें वर्तमान २४ तीर्थंकर-
करोके माता, पिता, वर्ण, चिन्ह, कामकी
ऊंचाई, आयु, गणधर, एक दूसरे तीर्थंकरका
अंतर समय, दिसा पृथ, पूर्व भव, कल्याण-
कोंकी तिथि, और निर्वाण स्थानका कोष्टक है।
मंगाकर संग्रह करने योग्य है।

आत्मावबोध-प्रकाशक—भारतीय जैन
सिद्धांत प्रकाशिनी संस्थ, विधकोश लेन, बाग
बाजार-कलकत्ता। ग्रन्थाकार, छपाई सफाई सु-
न्दर पृ. १६० और मूल्य ॥)। तेरहवीं
शताब्दीमें श्रीकुमार नामक कवि होगये हैं
जिन्होंने इस ग्रन्थको १४९ श्लोकोंका बन-
वाया था जिसका अनुवाद पं. गंगाधरलाल
न्यायतीर्थसे कराकर पं. पन्नालाल बाकलीवालने
प्रकाशित किया है। साथमें अध्यात्म-
प्रेमी स्वर्गीय स्वरित श्री वीरसेन स्वामी मट्टा-
रकका सुन्दर चित्र भी है। इसमें संक्षेपमें आत्मा-
का स्वरूप बताकर अनेक प्रकारका उपदेश
सरल भाषामें दिया गया है। इसका स्वाध्याय
करनेसे चित्त शांत होकर हृदय निर्मल होता
है और सुमार्गपर चलनेका उपदेश मिल
सकता है।

जैन समाज सेवक मंडलकी टेंकट-
इन्दौरमें इस नामका एक मंडल स्थापित हुआ
है जिसका उद्देश विशेष करके इन्दौरमें कई
दशोंसे पड़ी हुई फूटकी मिश्रानेका प्रदान करना



है। इसके तीन ट्रेड प्रकट करके उनका मुफ्त प्रचार किया है जिनके नाम हैं—(१) जैनों का धर्म, (२) इन्हें पूजे जैनियों ! अन्के पर्युषण पर्वमें क्या करना होगा, (३) इन्दौरका जैन समाज और फूटका राउप । इसमें खूब ही तेज भाषामें फूटको मिट नेका उपदेश दिया है।

पदसंघ-सम्मेलन-प्रकाशक जीर्णोद्धारक जैन तार-मंडल-सिंगोडी (त्रिम्बका)
मूल्य -) यह भी तारनपथी समानका एक ट्रेड है और इसमें तारनसमाजके ५ सरस वर्णन और कुछ उपदेश भी है ।

सप्तभंगी नय-पह आत्मानन्द जैन ट्रेड
सोसायटी अवाला शहरकी २२वीं ट्रेड है ।
पृ. ३२ और मू -) इसके लेखक हैं लाला कृशो मल एम. ए. । इसमें सप्तभंगी नयका स्वरूप संक्षेपमें सरल रूपसे दिया गया है ।

पंच परमेष्ठीके १४३ मूलगुण-
(चार्ट नं० ५) यह भी एक वंशरूपी नकशा है जिसमें पाचो परमेष्ठीके १४३ मूल गुण वंशावलीके रूपमें दर्शाया है । समझ करने योग्य है । मूल्य -) मिलनेका पना-कुमार देवेन्द्रप्रसाद जैन-आरा ।

कृपण-प्रकाशक-बी० एक० सी० डी जैन, शिक्षोदाचार्य पु० पी० । यह एक प्रहसन है । पृ. सत्तरा सिक १३ होनेपर भी मूल्य -) अधिक है ।

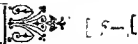
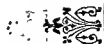
मन्त्रा विश्वास-प्रकाशक, कुमार देवेन्द्रप्रसाद जैन, प्रेस मन्दिर आरा । इसमें कुत्तल उपदेश अच्छा है । सुतष्ट पर महात्मा गोधीका चित्र है । उगई सकाई सुन्दर, पृ

४३ और मूल्य -)

वालिका विनय-सम्पादिका एक जैन महिला और प्रकाशक उपरोक्त महाशय ही ।
पृ. ४४, उत्तम छाई और मूल्य -) इसमें बालिकाओंके लिये अच्छा उपदेश है । कन्या पाठशालाओंमें प्रवेश करने और बॉटने योग्य है ।

जैनसिंहांत विद्यालयकी रिपोर्ट-
स्या. पं. गोपालदासजी बरेया द्वारा स्थापित मोरेनाकी संस्थाकी यह सार्वर्षिक रिपोर्ट है । इसमें संस्कृत विभागमें २७ और हिन्दी विभागमें ४५ विद्यार्थी हैं । इसमेंसे आगतक कई पंडित तैयार हुए हैं । अंग्रेजी भी पढ़ाई जाती है । बोर्डिंगमा भी प्रवेश है । आजकल प. घन्नालाटजी अधिष्ठाता और मंत्री पं. खुर चद्रजी शास्त्री हैं । इसके लिये एक लाख रुपयेके फंडकी आवश्यकता है जिसमें करीब ६०-७० हजार भरे गये हैं ; श्रीमानोंका फर्ज है कि शेष रुपयेकी शीघ्र पूर्ति कर दें और विद्यालयके साथ स्वर्गीय पं. गोपालदासजी बरेयाका नाम जोड़कर पंडितजीकी कीर्ति अमर करें । इस रिपोर्टवाले वर्षमें कुछ ७७६४।) सर्व हुआ है । नडा स्थायी फंडन होनेसे श्रीमानोंको मासिक सहायता पहुंचाते रहना चाहिये और छोटे बड़े प्रसंगोंपर कुत्तल सहायता भी भेजनी चाहिए ।

सप्तम हिन्दी साहित्य सम्मेलन
कार्य विवरण दूसरा भाग-इसमें सम्मेलनमें आये हुए लेखोंका समग्र है । अनेक लेख पढ़ने योग्य है । साइज बड़ी पृ २१२ और मूल्य



સિર્ફ ૥૭) મિત્રનેકા પતા-હિ. સાં. સ્વાગત
 • કારિણી સમા કાર્પાલય-જેચલપુર ।

સૌનાગિર—સિદ્ધક્ષેત્રકી પ્રા સંપાકા
 પ્રથમ વાર્ષિક વિવરણ । પ્રકાશક—ચાવૂ ગોપીલાલ
 ગોવા—લડકર ।

દિ. જૈન પ્રાન્તિક સમા ચમ્ચડકી
 ૧૬વી વાર્ષિક રિપોર્ટ । પ્રકાશક—ચાવૂ માળિ-
 કચડ વૈનાડા મહામંત્રી, હીરાચાગ—ચમ્ચડ ।

ભારત દિ. જૈન તીર્થક્ષેત્ર કમેટી
 કા ૧૨વી વાર્ષિક વિવરણ—વીર સં. ૨૪૪૦ કા,
 પ્રકાશક લાલા ભાગમલ પ્રમુદયાલ મહામંત્રી,
 હીરાચાગ, ચમ્ચડ । વહુત શિક્ષાગત હોનેવરે યહ
 રિપોર્ટ રહુત દેરસે પ્રકટ હુઈ હૈ । ઇસમેં સવ
 તીર્થોકા હિસાબ ઓર શિક્ષરની આદિકે મુક-
 હમેકા હિસાબ મી હૈ । ૮૮ પૃષ્ઠકી યહ રિપોર્ટ
 વિના મૂલ્ય મિલતી હૈ ।

દુધગાંવ શિક્ષણ પ્રચારક સંસ્થાકા
 છઠા વા. રિપોર્ટ—પ્રકાશક નાના રાવજી ચેટે-
 કર—નુચંગાંવ (મતારા)

જૈન ઍંગલો વર્નાક્યુલર સ્કૂલ વાંદાકી
 ૪થી રિપોર્ટ—પ્રકાશક નાયક રાનારામ મંત્રી-
 વાંદા ।

જૈન પાઠશાલા મેરઠકા—ચતુર્થ
 રિપોર્ટ—પ્રકાશક રત્નાપ્રમસાદ ગોવત્, મેરઠ ।

દિગમ્બર જૈન આવિકાશ્રમ મુલા-
 દાવાંદકી ૧૯૧૬—૧૭કી રિપોર્ટ—પ્રકાશકા
 સંચાલિકા ગંગાદેવી મુલાદાવાદ । યહ આશ્રમ
 મી ઠીક કાર્ય કર રહા હૈ । સવકો સહાયતા
 દેતે રહનાં યાહિં ।

વ્યતરચ્યા આરાધને આસુન લુકસાન
 લેખક અને પ્રકાશક—સેં હીરાચંદ નેમચં
 દોશી—સોલાપુર. પ. ૨૪ અને કિ. મોત્રે આ
 આનો. આ મરાઠી પુસ્તકમાં વ્યતરોની આરા-
 ધના કરવાથી થતાં લુકસાનોનું યજ્ઞન દોષભલા
 દલીલો સાથે છે. મરાઠી આપા નાંચુનારે અવસ્ય
 મંગાવી લેવું નોંધ્યો.

બદારક ચચ્યા—લેખક અને પ્રકાશક—સેં
 હીરાચંદ નેમચંદ દોશી—સોલાપુર. પ. ૩૨ અને
 કિ. બે આના. મરાઠી-આપાના આ પુસ્તકમાં
 બદારક શબ્દની વ્યાખ્યા, અને બદારક કોણ
 હોય શકે અને બદારકમાં કેટલી ચોખ્ખવા હોવી
 નોંધ્યો, વગેરે દાખલા દલીલો સાથે બંધોળી
 હાલના નામના બદારકોના શિથિલાચારનું વર્ણન
 દરી હવે પછી બદારક નામ બદલી મહસ્થાયામાં
 નામ સ્થાપન કરવા માટે સંમતિ દર્શાવેલી છે
 એ સમવાતુસાર ચોખ્ખા છે.

મસ્તકચનામુત અને સ્વાતુલચ
 પ્રકાશ—પ્રકાશક—હરીદાસજી નગરજનદાસ,
 લીમગણિંગ. વડોદરા. આ અને દુકાન તદન
 મકલ મળે છે.

નીતિની શિખામણી—પ્રકાશક સુનીલાલ
 બાપુજી મોદી, ખપાટિયા ચકલા, સુરત. આ
 પુસ્તક ગુજરાતી સ્કુલોમાં ચલાવવાં લાયક છે
 તથા એનો હિન્દી અનુવાદ પણ થયાં લાયક
 છે. વિચય તે નામથીજ પ્રકટ થાય છે. કિ.
 એક આનો.

અનાથ વિદ્યાર્થી શુદ્ધ-પુત્રાને આદમે
 રિપોર્ટ—આ અનાથાશ્રમ ઉત્તમ કાર્ય કરી રહેલું
 છે. એની કાર્યપ્રણાલી અનુકરણ કરવાં યોગ્ય છે.

ધી ઇલેક્ટ્રો-મેટલ મીટાઈનીંગ કંપની
 લીમીટેડ—ના ઉદ્યોગ અને નિયમો—આ કંપનીની
 સ્થાપના અમદાવાદમાં થય છે, જેણે પાંચ
 લાખની યાજ્ઞ કરવા ૨૫) અને ૧૦)ના એમ બે
 નવના શેરો હોદયા છે. એનો ઉદ્યોગ અમદાવાદ
 કે ગુજરાતમાં વાંચા, પીતલ, લોખંડ, ઝેરન
 સીકર, એપુમિનગ વગેરે ધાતુની ધરામની,



મુકાન કામી-ચીન્ને-તથા અનેક જવના ખારો .
વગેરે ખનાવવ તથા વેચવાનો છે. આ ઉદ્દેશ
અત્યુત્તમ છે. અને એ જો મોટા પોયાપર સ્થપાય
તો ધણોજ મોટો લાભ મેળવવા ઉપરાંત રસ્તેની
વસ્તુને ઉત્તેજન મળી દેશતો પૈસો વિદેશમાં નહીં
ધસાઇ જતાં દેશમાં જ રહે. ગમે તે રીતે
ભાંગીદારને સંકેતે સાંતે દેકાતે વ્યાજ આપવા
કંપની બંધાય છે. શેરે શેવાની પ્રજા રાખનારે
વધુ માહિતી માટે નીચેને સ્થળે પત્ર લખી
નિયમો વગેરે અવશ્ય મંગાવવાં-થી હાલકેટ્ટો મેટલ
રીફાઇનીંગ કંપની-રીચીસ્ટ-અમદાવાદ.

શેઠ હીરાચંદ ગુપ્તાનહેની સંસ્થા-
ઓના રીપોર્ટ-શ્રીમાન સ્વર્ગ્ય દાનવીર જૈન-
હેલમુખે શેઠ માણેકચંદ અનેક સંસ્થાઓ
સ્થાપી ગયા છે તે પૈકી જે જે સંસ્થાઓ
ખાસ પોતાની મુજબ ચાલી ગયેલી છે અને
જેનો વંદીવટ કરવા માટે શેઠ હીરાચંદ ગુપ્તાનજી
બોર્ડિંગની રૂઠ કમીટીને નીચેની છે જે બધો
વંદીવટ કરે છે અને બધી સંસ્થાઓના મોજા
ગિરોટ ખાસ પાડે છે તેનોજ આ ૧૮૧૫-૧૬
નો રિપોર્ટ છે, જે જોતાં જણાય છે કે એમાં
(૧) હી. ગુ. જૈન બોર્ડિંગ મુખામ, (૨) હી.
ગુ. મુખશાળા (હીરાચામ) મુખામ, (૩) શેઠ
માણેકચંદ પાનાચંદ ટ્રિગંધર જૈન બોર્ડિંગ
રત્નલામ, (૪) શેઠ માણેકચંદ હીરાચંદ ગુપ્તેલી-
આમ ટ્રસ્ટ કંડ, અને (૫) શેઠ પ્રેમચંદ મોતીચંદ
ટ્રિગંધર જૈન બોર્ડિંગ, અમદાવાદના ગિરોટો છે.
આ પાંચ સંસ્થાઓ ઉપરાંત બીજી સંસ્થાઓ
પણ જે વંદીવટ કરવાનું મેળે તો તે પણ
ઉપથી ટ્રસ્ટ કમીટી કરે છે, એટલે લગભગ ત્રણ
લાખ રૂપાની સંખ્યાવતોના વંદીવટ આ કમીટી
કરે છે. સ્થાનાભ્યપથી અગો- દરેક સંસ્થાની
અમાલોચના કરી શકતા નથી. જેથી એકંદરે
જનમાનીશ કે મુખામ, અમદાવાદ અને રત્નલામ
બોર્ડિંગથી ગુજરાત અને મળવા પ્રાંતને અતી
લાભ પડેલો છે તેમજ મુખામમાં હીરાચામ
ધર્મેશાખાનો સાર્વજનિક લાભ તો જગજગર

છે. વળી વુખીલીયામાં ટ્રસ્ટ-કે જે લગભગ
અઢી લાખની મિલકતનું છે તેની ઉપજમાંથી
શેઠ માણેકચંદ ગુપ્તાનહેના સંસ્થાઓનો
નિભાવ કરવાની સ્થાપી ગોઠવણ કરી ગયેલા
છે જે સંવેન ફાંચમાં લેવા યોગ્ય અને ખીમ
શ્રીમાનોએ અનુકરણ કરવા યોગ્ય છે જે જે ફાંચ
કરોડાપતિઓ મથી કરી શક્યા તેવાં કાર્યો શેઠ
માણેકચંદ ગુપ્તાનહેની મીલકતમાં અને શ્રોડાસમ
માં સ્થાપી તરીકે કરી ગયા છે. લગભગ ૨૨૫
પાનાંતો આ રિપોર્ટ દરેક વાંચવા અને વિચારવા
લાયક છે. પોસ્ટે માટે મોટું એક આનાની
ડીપ્ટ ખીટાથી સુપી-ટે-કંટ, હી. ગુ. જૈન
બોર્ડિંગ, તારદેવ. મુખામને લખવાથી મુદત
મળી શકશે.

મુખામ, શહેરમાં સામાન્ય અને મધ્યમ
વર્ગના જેનો માટે સરવા બાડાના અને સુખાકારી
મકાનોની આપસ્યક્તા સંબંધી પુનરુત્થાપન
પ્રકાશક-નરોત્તમદાસ ખી. શાહ, (મેમ્બર
શેઠ-મુખામ). મકાનોના બાડાં મુખામમાં એટલા
બધાં ચડી ગયાં છે કે જેથી મરીમ જેનોને
ત્યાં રહેવાની અતીવ અગવડતા છે, જેનાં બોગે
તેઓને ઘણા મંકડો સહેવા પડે છે, દેટલાંક તો
માંદા ચમ દેગ સીધાવે છે, કેટલાકનાં મુલ્ય
ચાપ છે તેમજ વ્યાપાર માટે મુખામ નવા જનારા
પાછી પાની કરે છે. આ અગવડો દૂર કરવા
ત્યાં સરવા બાડાંની હયા ઉત્તસવાલી ચાલીઓ
થવાની જરૂર છે, જે સંબંધી મી. શાહ, ત્રણ
વર્ષ થયાં ધણોજ પરિશ્રમ અને અર્થબ્યય કરી
રહ્યા છે અને એ સંબંધી કરેલી હિલચાલોનો
રિપોર્ટ આ પુસ્તકમાં છે. મુખામ શહેરની તસ્તી
અને મરણ પ્રમાણના આંકડાઓ ધણુ રજુ
કરેલા છે. આ ૫૦ પાનાનો રિપોર્ટ પોસ્ટે
માટે એક આનાની ડીપ્ટ ખીટાથી મુદત મળે
છે. શ્રીમાનોએ આ ગાખત ખાસ લક્ષમાં
લેવા યોગ્ય છે.

શ્રી ધુખીઆ પાંજરાણીને હિસાબ-
આ ગાખતો સં. ૧૯૦૨નો આ રિપોર્ટ જેનાં

જણાય છે કે શહેરના અમુક લાગાએથી એમાં ખોડાં દોરા પળાય છે. સાદ સુધાદાઈની ગોઠવણ અતિ ઉત્તમ જણાય છે.

શ્રી અજરામર- જૈન વિદ્યાશાળા- (હિંબડી) નો ૧૯૧૮ થી ૭૨ નો રિપોર્ટ- સ્થાનકવાસી બહુએની આ પાઠશાળા આલુ મદદથી હીક ચાલે છે પણ સ્થાયી-કંડની જરૂર છે.

દશમી શ્વે. જૈન કેન્દ્રરસનો રિપોર્ટ- મુંબાઈમાં શ્વેતાંબર જૈન કેન્દ્રરસ ૧૯૧૬ માં બરાબ હતી તેનો અહીં બેઠકોનો આ સવિસ્તર હવાલ છે. જે આપણા હિંબડી બાઈએએ વાંચીને અતુરેણુ કંડમાં ચોવ્ય છે. આલો રિપોર્ટ આપણી મેંદાસબા અને મુંબાઈ પ્રાંતિક સભા ક્યારે બહાર પડશે ?

જન શ્વે. કેન્દ્રરસનો રિપોર્ટ-મં ૧૯૭૨.

શેઠ હીરાચંદ ગુમાનજી જૈન બોર્ડિંગ સ્કુલમાં ખેલવામાં આવેલું-

શેઠ નવલચંદ હીરાચંદ સમારક કંડ- 'દિગંબર જૈન'ના મુજ વાચક વર્ગ,

વિં ૦ વિં ૦ સાથે લખાણું કે ઉપરોક્ત સરથા તરફથી મરહુમ શેઠ નવલચંદ હીરાચંદની બાઈમીરી કાયમ રાખવાને શેઠ નવલચંદ હીરાચંદ સમારક કંડ આ સરથાને અંગે ખેલવામાં આવ્યું છે.

આપ શ્રી અંબારી સરથા પ્રતે સહાનુભૂતિ ધરાવતા હોવાથી, તેમજ આપ હંમેશ ગુણગ્રહણ માટે સારી બાવના રાખતા હોવાથી આપને વિનંતિ કરવાની કે આપ મરહુર કંડમાં એક સારી રકમ બરી આ સરથાના મુપરીન્ટેન્ડેન્ટના સરનામે મોકલી આપવા કૃપા કરશે.

બરાચલી રકમની પહેાંચ મોકલવામાં આવશે, તેમજ તેઓ થીના મુથારક નામે 'દિગંબર જૈન' પત્રમાં બહાર પાડવામાં આવશે.

લી. શેવડા.

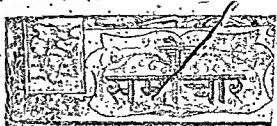
માસ્તર મગનલાલ દામોદરદાસ.

મુપરીન્ટેન્ડેન્ટ.

શાહ દાલીદાસ શુલચંદ.

સેક્રટરી, લીટરી મેમ્બર.

શ્રી હી. ગું. જૈન બોર્ડિંગ સ્કુલ, વાન્દેવ-મુખર્ધ.

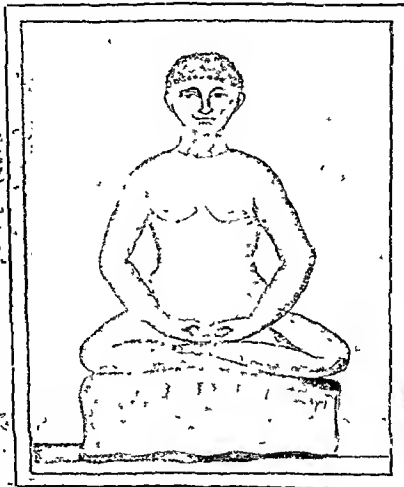


સૌં ગુલાવવાઈકા આગમન-

પં. ૦ અર્જુનજાલ: સેઠીનીકી ધર્મવત્ની સૌં ગુલાવવાઈ અપને તોન કંચોંકો ઓર પ્રતિમાનીકો લેમ વાંચુ મગવાનડીનનીકો સાંચમે લેકર જવણુસે વેહોર ના રહીથી તુવ સોલાપુર પધારી થી । વહાં આપકા અંછા સ્વાગત દુઆ થા । વહાંકી સ્ત્રી સમાન ગુલાવવાઈકો મિઝ નેકે લિર એકત્રિત હુઈ થી ઓર સ્ત્રીયોને સેઠીનીકે સંકટ નિવારણાર્થ રં ૨૫૦) કા વેશ કર દિયા થા ।

મૈનાવાઈ આચિકાશ્રમ-પૂનાસે

પાંચ માઈલપર હિંગળે ગાંધમે પ્રોં ૦ કંચેલા અનાય ચાલિશાશ્રમ ઓર વન્યા મહાવિચાલય કઈ વર્ષોસે હે ઓર ૨૫૦ વન્યાએ પંડતી હે તયા કાલેનકે પડતકવ તક પદાઈ હોતી હે, વહાંપર જૈન વન્યાઓંકો મી શિક્ષા મિલે દસ લિયે સોલાપુર નિવાસી સેઠ હરીમાઈ દેવકર-જવાલે સેઠ હીરાચંદ રામચંદને અપને માતાની મૈનાવાઈકે નામકે વહાં જૈન વન્યાઓંકે લિયે રોટિંગ ઓર બાઘવં સોલનેલા મુદ્દત ગત તા. ૬ નવમરીકો શ્રીમતી. કંકુવાઈકે સમા પતિતવમે કિયા થા । સેઠનીને વહાં ચોટિંગ હાડત જોલ દિયા ઓર માસિક દમ રૂ ૨૫૦ રૂપયેસી છ મહાવરશિન જૈન વન્યાઓંકે લિયે અપની તરફસે રક્તી હે । ૨૫મે સોગતીકી મંદગીને ૧૦૦૦), સૌં મુજોવનાવાઈ તેમજ-



श्रीमद् नेमोचंद्र सिद्धांतचक्रवर्ती ।

(श्री गोमटसार, लब्धिसार, क्षपणासार, त्रिलोकसार, द्रव्यसंग्रह आदिके कर्ता महदाचार्य.)

(एक हस्तलिखित प्राचीन चित्रमे उद्धृत)



लकर ५००) और अमुन तवनापा गरगट्टेने ५००) स्वीकार किया । सौ० गोदुवाई उपाध्ये और उनका पातेने और रती काम करना स्वीकार किया है । अभी तीन वन्याएँ प्रवेश हो चुकी है ।

अजैनोंको बिना मूल्य—'जैनधर्मके विषयमें अजैन विद्वानोंकी सम्प्रतियाँ' नामक ट्रेन्ट निम्नलिखित पतेसे डाँट लिखनेपर मुफ्त मिलता है । बाँटनेके लिये ३) सेफडा है—उपमंत्री, जैनधर्म संरक्षणी सभा—अमरोहा (मुसादाबाद) ।

अध्यापकके स्मरणार्थ १००००)
का दान—कुनामन (मारवाड़)की जैन पाठशालामें बृद्ध पं० जिनेश्वरदासजी कई वर्षोंसे उत्तमतासे पढ़ा रहे थे उनका करीब एक मास हुए स्वर्गवास हो गया है । आपकी योग्यताकी वजह से यहां तक हुई है कि कन्कत्तेण आपके लिये शोधमया होकर उसमें सेठ चैतसुग मंभीसलने १००००) पंडितजीके स्मरणार्थ देना स्वीकार किया है । यह रसम इस पाठशालामें लगाकर इसका नाम 'जिनेश्वरदास जैन पाठशाला' रखा जायगा । उक्त पंडितजी एक कवि भी थे ।

नैनागिरिजीका मैला—भगसर सुद १५को इस शेषपर मेला हो गया व्र० पं० गणेशचरणजी न्यायानार्थ, व्र० मणीरयजी वर्णा, पं० मुनारामजी, मा. दीनचंदजी आदिके पयारनेसे लोकममूह भी अच्छा जमा था और घर्मोद्देश भी खुब हुआ था । विशेष उल्लेखनीय बात यह हुई कि गोलापूज्य ज्ञातिमे

पंचवीसे और बीसवीसे भाइयोंमें रोटी व्यवहार था परंतु कई वर्षोंसे बेटी व्यवहार बंद था जिसके लिये पंचोंने मिलकर खाम प्रस्ताव कर लिया, कि पंचवीसे भाइयोंके साथ बीसवीसे भाई सहर्ष रोटी व्यवहारके साथ बेटी व्यवहार करें—इस मौके पर पंच सों ग्रामके पंच उपस्थित थे और सबके हस्ताक्षर हो गये यानी यह सामान्य प्रस्ताव नहीं परंतु अगली प्रमान हो गया है । और इस मेलमें सागर जैन पाठशालाके २५ और अन्य २५ जैनोंने विधिपूर्वक यज्ञोपवीत धारण किया । वहां धर्मशाला बनानेके लिये भी १३५०) का चंडा हुआ था ।

२५०००) का दान—उम्बई निवासी सेठ नवलचंद हीराचंदजीने अपने मृत्यु समय तीर्थोंके जीर्णोद्धारके लिये—२५०००) का दान किया है ।

श्वेताम्बर कॉन्फरंस और एक लाख रुपयेका फंड—गा माघमें कांग्रेसके समय कलकत्तेमें ग्यारहवीं थे । ११ जैन कोन्फरन्स सम्बन्ध निवासी सेठ सेनशी खीयशीके सभापतित्वमें हुई थी जिमें महात्मा. गांधी, लो० तिलक, मालवीयजी आदिने भी पयार कर व्याख्यान दिया था और बनारस हिंदू युनिवर्सिटीमें जैन तत्वकी शिक्षा प्रबंधके लिये और जैन विद्यार्थियोंके टहरने, खानेपीने, दर्शन पूजा आदिके प्रबंधके लिये अपील हो गई थी उसी वृत्त करीब १०००००) भर गये हैं जिनमें १२५००) तो सभापतिजीने ही दिये हैं । अन्य है ऐसे दानरीतोंको !



दक्षिण महाराष्ट्र जैन कान्फरेंस-
 इस कान्फरेंसका वार्षिक अधिवेशन इसवार ता० १०-११-१२ फरवरी (माघ वदी १४ से माघ-सुदी १ तक) श्री **स्तवानिधि** क्षेत्र पर होना निश्चिन्त हुआ है । समापतिका आसन बहुत करके सोलापुर निवासी सेठ हीराचंद नेमचंद दोशी ग्रहण करेंगे । अधिवेशनके लिये सब प्रकारकी तैयारियां चल रही हैं ।

कान्ग्रेसमें सेठीजी-कलकत्तेमें गत कांग्रेसमें पं० अर्जुनलालजी सेठीके कष्ट निवारणार्थ खास प्रस्ताव प्रमुखा श्रीमती एनी-विसेन्टने तीसरी बैठकमें अंग्रेजी भाषामें खुद पेश किया था जो सर्वानुमतसे स्वीकार हुआ था । इस प्रस्तावका भावार्थ इस प्रकार है—‘यह कांग्रेस बेल्लोर (मद्रास) जेलमें अब पड़े हुए जैन पंडित अर्जुनलाल सेठीका मामला समापति द्वारा बहुत जरूरी समझकर कि अपने धार्मिक सिद्धांतोंके कारण उनका जीवन आहार न लेनेसे बहुत संकटमें है, भारत सरकारसे प्रार्थना करती है कि वे बीचमें पकड़कर उनकी जान बचावें ।’

‘श्रीगंधहस्ति महाभाष्य’ का पता—श्री समंतमद्राचार्य कृत इस महान् ग्रन्थराजका कहीं पता नहीं था और इसका दर्शन यदि कोई महाशय करा दे तो स्व० दा० सेठ मणिकचंदजीने (१०००) इनाम देना प्रकट किया था । हमारे सेठजी तो इस अभिठापामें स्वर्गपुरीमें प्रयाण कर गये और अनीव हर्ष है कि पं० बंशीधरजी न्यायतीर्थ (सोलापुर) को पृनाकी टकन कोलेन लायब्रेरीमेंसे ‘अन-

गार धर्माभ्युत्’ का पता लगाते २० इस महान् ग्रन्थराजका पता क्रांतिक वर्ष ८ को लगा गया है कि **आस्ट्रिया** (यूरोप) के विघेना शहरकी लायब्रेरीमें रखे हुए दिगम्बर जैन ग्रन्थोंकी सूचीमें इसी महान् ग्रन्थराजका नाम है । इसकी प्रतिलिपि करनेको पं० बंशीधरजी आस्ट्रिया जानेके लिये तैयार हुए हैं जो महा सुदृढके अन्तर जा सकते हैं परंतु वहां जाने आने, ठहरने आदिके लिये एक फंडकी आवश्यकता है जिसमें (१०००) तो सोलापुर निवासी सेठ हीराचंद अमीचंद शाहने देना स्वीकार किया है । करीब दो वर्ष तक ठहरने पर ही नकल तैयार हो सकेगी जिसमें बरीब (१५०००) लगना संभव है । श्रीमानोंका फर्म है कि इसका शीघ्र ही प्रबंध कर देंगे ।

भारत जैन महामंडल और जैन पोलिटिकल कान्फरेंस—हमारे भारत जैन महामंडलका वार्षिक अधिवेशन कान्ग्रेसके समय कलकत्तेमें श्रीमान् जैनधर्मभूषण ब्र० शीतलप्रसादजीके सभापतित्वमें समारोहके साथ हुआ था । इसमें छ० मा० तिलक और दादासाहेब सावरके भी पधार कर वक्तों दी थी । समापतिका विद्वत्तापूर्ण व्याख्यान अन्वय प्रकट किया है जिसको हमारे पाठक अवश्य पढ़ें । कुल ११ प्रस्ताव हुए थे जिनमें सबसे महत्त्वका प्रस्ताव सेठजीके चारमें था जिसको यहां हम अक्षरशः प्रकट करते हैं—
 ‘यह मंडल अपनी गाढ़ धृदा और दृढ़ विधानसे प्रकट करता है कि पंडित अर्जुनलाल सेठी गर्वनया निर्दोष, धर्मरायण, शिक्षाप्रेमी,



जैन जाति के नेता पंडित हैं और आशा करता है कि इस सीम राजभक्त और शांतचित्त चुपचुपाती जैन जातिके हृदयको शांत करनेके अर्थ भारत सरकार पं० अर्जुनलाल सेठोको नजरबन्दीसे शीघ्र ही मुक्त करके अपना कर्तव्य पालन करेगी और नजरबन्दी कि वह मुक्त न किये जावें उनको किसी ऐसे स्थानपर जहां दिगम्बर जैनियोंकी संख्या पर्याप्त हो, रखेगी जिसमें वह अपना धर्मपालन करते हुए शरीर-रक्षा कर सकें। भारतवर्षीय समस्त जैन जातिको यह मानकर घोर सन्नाह हो रहा है कि २० नवम्बरसे पंडित अर्जुनलाल सेठोने भोजन नहीं किया है क्योंकि उनके मूर्तिपूजाका कोई प्रबन्ध बेल्लोरमें नहीं किया गया जहां कि वह आजरुल नजरबन्द हैं। समस्त जैन जाति और यह कांग्रेस देशनेताओंसे निवेदन करती है कि वह शीघ्र ही उचित प्रबन्ध करके इस जैन जातिके नेता और पंडितको नजरबन्दीसे मुक्त करा कर उनके कुटुम्बियों और जैन माइयोंको शान्तहृदय और निर अनुग्रहीत करें।

जैन राजकीय कांग्रेसका प्रथम अधिवेशन भी इसके साथ दा० सा० खाण्डेके सभापतित्वमें हुआ था जिसमें सभापतिने जैनोको खास उपदेश दिया कि वे राजकीय कार्योंमें अवसर हस्तक्षेप करें, इसीसे ही वे उन्नति कर सकेंगे। इसमें सेठोनीका उपरोक्त प्रस्ताव और कांग्रेस तथा मुसलिम लीगकी स्वराज्य स्कीमको स्वीकार करनेका ऐसे दो प्रस्ताव खास पास हुए थे।

बम्बईमें मुनिजी—मुनिश्री अनन्त-कीर्तिजी महाराज यादार्थ शिवराजी जा रहें थे तब ता० १४-१२-१७को तीन दिन बम्बई ठहरे थे। मुनिजीके दर्शनके लिये खूब भीड़ रहती थी। आपने एक दिन हीराबागमें श्राविकाश्रमकी बाइयोंसे आहार ग्रहण किया था और एक दिन सेठ मुखानंदजीके यहां आहार ग्रहण किया था। इनके निरंतराय आहार होनेपर हमारे धर्मप्रेमी और दासी सेठजी इतने आनन्दिता हो गये कि आपने उसी वक्त ३१००) धर्मचार्यके लिप्रे अलग निकाले। ता० १४को हीराबागमें मुनिजीका धर्मादेश हुआ था। नगरावस्था होनेपर पुलिस कमिश्नरने राजकीय कानूनसे महाराजको बाहर आनेकी आज्ञा नहीं दी। इसके लिये पूरा ९ आन्दोलन होना चाहिए और जैनी साधुओंको आवागमनमें बाधा न हो इस प्रकारकी आज्ञा सरकारसे ली जावे।

खास उपदेशक—स्व० दानवीर सेठ माणिकचन्दजीके दृष्टिके अनुसार 'माणिकचन्द हीराचन्द उपदेशक संस्था' स्थापित होकर कार्य प्रारंभ हुआ है। अभी पं० दौबेलि शास्त्री महाराष्ट्र प्रान्तमें दौरा कर रहे हैं। इसके मंत्री सेठ रावजी सखाराम दोशी सोलापुर हैं।

सवालालख रु० का दान—बम्बईके श्रे० जैन सेठ खेनशी खीयशीने १०१००१) निराश्रितोंको अन्न तथा वस्त्रदानमें, ५००१) कच्छी जैन बेटिंग, ५००१) कच्छी जैन बालाश्रम और १००१) फरगुसन कालेजको मिलकर करीब सवालालख रुपयेका दान अर्पण ही किया है।



कान्ग्रस और जैनी-आगामी बान्घे-
स देहलीमें करनका आमंत्रण देहलीके भाइ-
ओंकी ओरसे हमारे आ० रायबहादुर बाबू
सुलतानसिंहजी रईम बा० आ० मजिस्ट्रेटने
किया है और अभी ही देहलीमें
देहली और अजमेर प्रान्तके लिये प्रांतिक
कान्ग्रस केमिटी स्थापित हुई है जिसके सभा-
पति हमारे रायसाहब बाबू प्यारेलालजी वकील
और एक उपसभापति रा० बा० सुलतानसिंहजी
ही नियुक्त हुए हैं । यह मार्ककी खबर है ।

रायबहादुरका अपमान-कलकत्तेसे
देहली स्टेशनपर आते ही रा० बा० लाला
सुलतानसिंहजीका एक गोर सैनिक अपसरने
अपमान किया था जिसके उपर रा० बा० ने
मुझ्झा चलाया तो देहलीके मजिस्ट्रेटने
उस गोर अपसरको २५ जुर्माना किया है ।
इस मामलेमें रा० बहादुरकी ओरसे चार
वकील उपस्थित थे, लोगोंकी बहुत भीड़ थी
और सबको आशा थी कि मजिस्ट्रेट साहब
बहुत कड़ा दंड देवेगा क्योंकि उस अपसरने
बिना कारण रायबहादुरके मुंहपर झूठा सारखट
सड़में तकको चुर २ कर डाला था और मुंह-
पर इना भी की थी ।

महासभाका अधिवेशन आगामी ता०
२७-२८ को अंबाला छावनीमें उत्तमके समय
होगा, जिस बहान भारत० दि० जैन महिला
परिवर्तन अधिवेशन होना भी निश्चित हुआ
है जिसके लिये श्रीमती मगनबाईजी प्रयास
कर रही हैं ।

कचनेरजी मेला और खंडेलवाल

सभा-श्री कचनेरजीके गत मेले महा-
ष्टीय खंडेलवाल दि० जैन पंच मससभाका ७-
८ वां बा० अधिवेशन खंडेलवालकुलभूषण
पं० घलालालजीके सभापतित्वमें हुआ था-
जिसमें जाति सुधार संबंधी अनेक उपयोगी
प्रस्ताव हुए और कचनेर पाठशालाके लिये
५०००) का चंदा हुआ था और कचनेर पाठ-
शालाका स्थान बदलनेका निश्चित हुआ जो
अमलमें आ चुका है यानी अब यह पाठशाला
औरंगाबादमें लाई गई है जहां अच्छा सुभीता
है ।

श्री हस्तिनापुरजीमें कार्तिक शुद्ध
१५ पर मेलेके समय श्री ऋषभ ब्रह्मवर्षाश्र-
मका वार्षिक अधिवेशन हुआ था जिसमें
आश्रमके लिये १३००) का चंदा हुआ
और आश्रमका स्थान मयानेमें लेनानेका
निश्चय किया और वहीं भक्तान बर्नवानेके लिये
१००००) की सहायता सेठ हुकमचंदनीसे
लेनेके लिये इन्दौर डेपुटेशन लेनानेका ठराव
हुआ था । आश्रमके अधिष्ठाता ब्रजवारी शीत-
लप्रसादजी और उपअधिष्ठाता ब्र० गेंदलालजी
हुए हैं ।

चम्पई आचिकाश्रमको अजमेरनि-
वासी रा० बा० सेठ नेमिचंदनीकी ओरसे
१००१)की सहायता प्राप्त हुई है ।

सेठजी अर्जुनलालजीके संघट निवार-
णार्थ पालीताणाके धर्मप्रेमी वृद्ध मुनीम घर-
मचंदनीने १००) दिये हैं । हमारे श्रीवानोंसे
तो हमारे मुनीमजी चढ़ गये । जाति प्रेम
इसीका नाम है ।



ज्वरा-पूजा चूर्ण—इस चूर्णसे सब प्रकार का ज्वर दूर हो जाता है । सिर्फ आध आनेका टिबिट जैनसु मुफ्त मिशनेरका पता—भाऊनाथ कनैयालाल पाठणी—कांची (अहमदनगर)

डोक-छरती पाठशाळांना अध्यापक बाध नापासाले सोभागयद गत इतिहास १६८ ने दिने ध्येयधी जोगिता श्रुत्य पाभवाधी जे पाठशाळाने तथा छरती बाधाने जेक लेनधर्मे-त्रेभी वरमाधी श्रुती ज्योत पडी छे. आ लाध धर्मेना ज्येकार तथा शुक्रराती जैन साक्षिसना इकार भाटे धर्मे प्रयास करता छता. आदि पुराणु शुक्रराती बापांतर ज्येभा लणी ग्या छे, जे प्रकट थवाली जर छे. शु डोक छर-नाथ बाधु आ अन्धने इकार बाध नाथासालना स्मरणार्थे क्री ज्येना भक्त इशाने नडी करे ?

मेरठ पाठशालाके लिये शिका-घत—इस मसुदाके जैन बँकर मेरठ शहरसे 'अच्छी लखी' शीर्षक चिट्ठीमें लिखने हैं कि—यहांकी दि० जैन पाठशालाके कार्य-कर्त्ताओंमें मुख्य भाग जैनैनोंका है, धार्मिक शिक्षा बराबर नहीं होती है, श्रद्धाके लङ्के क्यों लिये जाते हैं? अब कार्यकर्त्ता जैन समाजसे १०००) मांग रहे हैं और स्कूलको सकारमें रिक्रनाइज्ड करानेवाले हैं। क्या समान अपने बारेमें कुछ विचार न करेगी और अपनी एक धार्मिक संस्थाको इस तरहसे रोककर सदाके लिये पश्चात्ताप करना पसंद करेगी? मैं तो मसझा हूँ कि कभी नहीं। समान बिना विचार चन्दा देनेके लिये तैयार नहीं होगी किन्तु सुवचन करनेके लिये विचार करेगी।

एक लुप्तप्रायः तीर्थके

→ उद्धारकी आवश्यकता ।
करोड़ों रूपयोंकी संवात्ति,

सरकारके पास जाती है ।

तारीख १० नवम्बरको तीर्थक्षेत्र कमेटीकी एक चिट्ठीसे मालूम हुआ कि 'देवगढ़ तहसील जलिनपुर जिला झांसीके जैन मंदिर संयुक्त प्रान्तकी गवर्नमेंट अपने अधिकारमें लेती है। इस आज्ञाका विरोध झांसीकी जैन पंचायतसे होना चाहिये' तदनुसार मैं उसीदिन देवगढ़को अपनी आंखोंसे प्रत्यक्ष देखकर पश्चात् उचित कार्रवाई करनेके लिये देवगढ़ खाना हो गया। देवगढ़के लिये मासलौन जी. आई. पी. आर. के स्टेशन पर उतरना पड़ता है। मासलौन गांव स्टेशनसे १॥ माईल है वहांसे देवगढ़ गाड़ीके मार्गसे ८ माईल और पैदलका मार्ग ६ माईल है।

देवगढ़ गांवसे रातत लोग पहाड़पर मंदिर चतलानेके लिये मिछ जाते हैं। पहाड़ बहुत ऊंचा नहीं है, श्री सोनागिरजीके सपान ऊंचा समझना चाहिये।

देवगढ़का वर्णन ।

देवगढ़की ऊंचाई तय करने पर एक दर-वाजा मित्रता है। यह कोटका द्वार है। कोट और द्वार दोनों ही खंडित हो रहे हैं। द्वारसे चक्कर आध माईलके फासले पर एक और कोट मित्रता है। यह कोट मंदिरोंको घेरे हुए था पर अब यह भी धराशायी हो रहा है। इस कोटके अंदर सैकड़ों जैन दिगम्बर मंदिर हैं। लाखों जैन मूर्तियां हैं। मूर्तिगण ऐसी मनोहर हैं कि मैंने तो आज तक इस अवसरकी नहीं देखी। आधीसे अधिक मूर्तियां अखंडित हैं। एक पाषाणका सहस्रकृत कैलाश-लय है। बड़ा मंदिर शान्तिनाथ भगवानका है।



शान्तिनाथ स्वामीकी १२ फीटकी ऊंची खड्-
गासन मूर्ति है। ६-७ फीटकी कई हैं।
एक १० फीटकी भी है। करीब आधी
मूर्तियाँ खड्गासन हैं। शान्तिनाथकी मूर्ति
अतिशयवान भी है। जालखौनके बड़े बूट
जैनियोंका कहना है कि इस मूर्तिको शिरके
ऊपरका क्षेत्रका पत्थर एक अंगुलके फासलेपर
था पर अब वह २ हाथके फासले पर है,
अर्थात् मूर्ति छोटी होती जाती है। यह उन
लोगोंका कहना है कि जिन्होंने एक अंगुलका
फासला अपनी आंखसे देखा है, किन्तु समतल
भागमें कुछ अन्तर नहीं पड़ा है। मूर्ति एक
मोहरके अन्दर है इससे इस मंदिरका नाम
मुसमंदिर भी है।

बड़े मंदिरें सब समूचे मालूप होते हैं कुछ
मरम्मतकी जरूरत है। किवाड जोड़ी किसीमें
नहीं है। दो मंदिर कुमंगले में हैं। मंदिरोंपर
पुरानी चित्रकारीके बड़े अपूर्व नमूने हैं। दो
पापणके मानस्थंभ भी हैं। इनपर ऊपरकी
ओर चारों ओर चार मूर्तियाँ हैं। एक मंदिर
पर संवत् १२०५ निर्माणकाल लिखा मिला
है। दो और मंदिरोंपर भी सम्बन्ध देखा है,
पर वे इससे पुराने नहीं हैं। आठसौ वर्षके
पुराने मंदिर अभी तक समूचे रहनेका कारण
यह है कि यह सब मंदिर पापणके बने हुए
हैं। कुछ शिखरोंकी नकल पं. नवारलाल
शास्त्रीजी नकल करनेके लिये अपने साथ
ले गये हैं, अभी वापिस आया नहीं। शास्त्रीजी
जैनगर्ज्जमें अपना लेख प्रकाशित करावेंगे उसमें
कुछ शिखरोंका विवरण पढ़नेको मित्र मायगा।
छोट मंदिरोंको अधिकांश गिर पड़नेसे अच्छी
२ मनोज्ञ और अजेडिन मूर्तियोंकी बहुत

दुर्दशा हो रही है। वे मैदानमें खर उधर
बिखरी पड़ी हैं। वरसातमें बड़े जपनेसे,
घाससे आच्छादित हो जानेसे, मूर्ति-
योंसे रूख रंगमें भी अन्त पड़ता जाता है।
शापद इसीसे सरकार इनको अपने अधिकारमें
लेग चाहती है। यह इरादा सरकारने एक
दफा पहले भी किया था और ३५ मूर्तियाँ
लखनऊके अजायब घरमें लेनाना चाहती थी
पर यह जालखौनके पंचोंके उज्र करनेसे बच
रहीं, किन्तु इन्होंने अपनी आर्थिक अवस्था
अच्छी न होनेके कारण उस वक्तसे अब तक
मंदिर और मूर्तियोंकी रक्षाका कोई प्रबंध नहीं
किया इससे सरकारको पुनः अपना हुक्म निका-
लना पड़ा है। यदि अब भी इनकी रक्षाका
प्रबंध न हुआ और उज्जदारीके घमंडमें बैठे रहे
तो कोई परिणाम नहीं निकलेगा। अंग्रेज सं-
स्कारके यहां मरहटी चिस-चिस नहीं चलती।
यह आपकी हीलपपोल देखकर अपना
अधिकार जपा लेगी जैसा कि उसने अभी
सफ तौखर लिख दिया है "सरकार
अपने अधिकारमें लेती है, कोई चिना
सरकारी आज्ञाके उनके रूख रंगको न बदले
और न उनके आसपास कोई नया मंदिर
बनावे" ऐसा हो जानेसे आपको पूजा बंदना
करनेमें भी अनेक प्रकारकी बाधाएं उत्पन्न
होंगी। मूर्तियोंको लखनऊके अजायबघरमें
ले जानेसे भी आप नहीं रोक सकेंगे। जितना
रुखा अब उनकी मरम्मतमें लग सकता है
उतना रुखा पीछे उज्जदारीमें गवर्न कर देनेसे
भी उनका मिलना कठिन हो जायगा। अतः
शीघ्र चेतिये, अपनी करोड़ों रुपयेकी सम्पत्ति
की रक्षा कीजिए। प्राचीन मंदिरका जीर्णोद्धार



करा देने। नये मंदिरके बनवा देने जैसा फल होता है इसमें ध्यानमें रखकर मिर्च, सेठ और श्रीमंत सेठ को इस अतिशय क्षेत्री रक्षा करनी चाहिए ।

केवल २५-३० हजारमें सब मरम्मत हो जायगी, शिवाह जोड़िए भी लग जायगी । किन्तु मंडित मूर्तियोंके लिये एक वर्षीय अनायवर और कोटकी मरम्मतके लिये तथा एक नीचे धर्मशालाके लिए अलग रकम की जरूरत होगी ।

यह स्थान बड़ा रमणीय वेतवा नदीके किनारे है । इस किनारेको घाटी कहते हैं । सुभ हे घाटीमें एक पत्थरमें ७ दि० जैन मूर्तियाँ खुदी हुई हैं । यहावर पांडवोंकी भी मूर्ति है तथा एक शिवालय है । किन्तु पहाडार सिवाय जनके दूसरे मन्त्री कोई मूर्ति ही है । हमसे यह स्थान गोरख देवगढ़ तो है ही पर जैन गढ़ भी कहा जासकता है । मरम्मत हो जानेसे आशा है सरकार बहूतक पत्नी सब बनवा देगी और पहाडक जगत्तर कुछ असेंसे कायम किया हुआ आना अविचार भी उठा लेगी । हमसे पुन कहता हूँ कि एक अतिशय क्षमका उद्धार काजिए, करोड़ों रुपयोंकी प्राचीन कीर्तिकी रक्षा कीजिए और जैनसमाजपर अपन देव म्यानोंकी रक्षा नहीं करेका भना मन लगने दीजिए ।

जिनको अपने धर्मका और द्रव्यक सदुपयोगका अत्राग है उन्हें देवगढ़क मदिरोंकी रक्षा के लिये शीघ्र एक बन्नी रजम निकालनी तीर्थयेन बमेठीको सुनना करनी चाहिये ।

विश्वभरदाम गार्गीय, वासी आजी ।

द्वादशानुप्रेक्षा ।

(वसन्ततिलका)

तू देव खोठार अनार दृष्टि प्यारे ?
ये जो कभी पुन गये नहीं आन हं वे ।
दे ओह मान मनका जग है अनित्य,
व्यर्थ कदर्थयसि किं नर-जन्म मित्र ॥१॥
है मौनका तू जन आ बनना नफारा,
कोई नहीं तब बन सकना किसीको ।
कलमाणकारि जगमें कर कार्य नित्य,
व्यर्थ कदर्थयसि किं नर-जन्म मित्र ॥२॥
ये देव शरक पशू नर योनि भाई,
तून घरी बहुत हे अरु हे गैवार ।
तू मान ले, सफल लेखर एकको तो,
व्यर्थ कदर्थयसि किं नर-जन्म मित्र ॥३॥
मा, बाप, बन्धु, पुत्र, दार, व दास, स्वामी,
सम्बन्ध कोई इनसे तेरा नहीं है ।
आपा मुझाय फल नित्य ममत्वमें तू,
व्यर्थ कदर्थयसि किं नर-जन्म मित्र ॥४॥
तू है नित्यर जिने प्रतिपालतारे ?
होना शरीर वह भी तुमसे निराश ।
तू एक मान मिनको अरु देह को ने ?
व्यर्थ कदर्थयसि किं नर-जन्म मित्र ॥५॥
दुर्गन्ध युक्त निज हे यह देह तेरा,
या यों कहो कि मन्-मूत्र मल पड़ा है ।
हो बापन राम भग्न हममें मड़ा तू,
व्यर्थ कदर्थयसि किं नर-जन्म मित्र ॥६॥
मिन्यत्व, अनन्य, प्रमाद उपाय योग,
य हे महा दुर्गन्ध आन्धव रूप भाई ।
ते शीघ्र रोक इनको करके प्रयत्न,
व्यर्थ कदर्थयसि किं नर-जन्म मित्र ॥७॥



है कर्म संवरण ही सुखका निबान;
 हो बादमें न जिससे परतन्त्र आत्म ।
 हैं कर्म रोक बहुते भव खो गये तू—
 व्यर्थ कदर्थयसि किं नर—जन्म मित्र ॥८॥
 ज्यों योगसे अनलके जल नष्ट होता,
 त्यों कर्मके प्रचयको शुभ ध्यान खोता ।
 सद्ब्रह्मसे विमुक्त हो, कर पाप कृत्,
 व्यर्थ कदर्थयसि किं नर—जन्म मित्र ॥९॥
 दोनों पसार पद और कटि धार हस्त,
 ज्यों हो सड़ा मनुज त्यों यह लोक चित्र ।
 तू भेष धार “इसमें कर नित्य नृत्य,
 व्यर्थ कदर्थयसि किं नर—जन्म मित्र ॥१०॥

सारे सुयोग यदि जीवनमें मिलें भी,
 पाया विवेक नहि तो फिर व्यर्थ हैं वे ।
 तू आत्म बोध नहि पाकर मूर्खतासे,
 व्यर्थ कदर्थयसि किं नर—जन्म मित्र ॥११॥
 जैनन्त्रसे कथित, सत्य—ः रूप धर्म,
 शान्ति, क्षमा, विनयमूल, प्रशस्त—कर्म ।
 ले शीघ्र धार मनमें काके प्रगल्भ,
 व्यर्थ कदर्थयसि किं नर—जन्म मित्र ॥१२॥

मोह-नामको नकुल-सम, बोरह भाषन सार ।
 भाकर नर पा अमरपद, हो जाने भवपार ॥
 नोट नं० १—प्रत्येक छंदके चतुर्थ चरणमें
 यह पद भी बोला जा सकता है—“सोवो
 निरर्थक नहीं नर—जन्म मित्र”

नोट नं० २—“व्यर्थ कदर्थयसि किं नर—जन्म
 मित्र ?” इस समस्याको प्रायः रमस्वीन
 पुण्यपाद वं. गोपालदासजी शैवः कभी २

बोला करते थे, और इसको बनाकर उन्होंने
 अपने एक मित्रकी विकट समस्या को हल किया
 था, उसी समस्याको लेकर मैं तारक माधु-
 नाके रूपमें यह तुकबन्दी ला रहा हूँ, पहले मुक्तजीक
 जमानेमें “जैनमित्र” में “समस्यापूति” की
 भी कुछ चर्चा रहा करता थी, जिससे पाठ-
 कोंके मनोरंजनके अतिरिक्त विद्यार्थियोंका भी
 लिखने पढ़नेका उत्साह बढ़ता था, जिससे
 महाशयोंसे निवेदन है कि इस प्रथाको फिर
 चलायका चल करें । इस उपर्युक्त समस्याकी
 पूर्ति बीर, श्रृंगार, कदम्बा आदि कई रसोंकी
 रचना द्वारा हो सकती है, इसलिये यदि कोई
 महाशय इसपर लिखनेकी कृपा करेंगे तो बहुत
 उत्तम होगा ।

निवेदक—उपरावसिंह ग्नायतीर्थ ।

बोरगांवमंजु (अकोला)के एक मौसामें
 प्राचीन मन्दिर हैं जिसकी वसा बड़ी शोच-
 नीय है । इसमें ११ महाप्रापन और १९
 महाप्रापन प्रतिमा अति प्राचीन हैं । ऊपरसे मन्दिर
 गिरकर मैदान हो गया है । इससे इनके जीर्णो-
 द्धारकी आवश्यकता है । यहाँ पहले परदेवाड़ा
 दाळे संदेशवाल महाप्रापन आकर (१८५०)
 चेरा किया था जो गेर पाव है जिसमें २००)
 भेन भी दिया था । और विदेव महाप्रापनकी
 आवश्यकता है तब ही कार्य शुरु हो सकता
 है । परदेवाड़ाके और उसके पासवाले गैटे-
 रुवाड़ भाईयोको इसकी पूर्ति करना चाहिये ।

गंगाधर अजमेरा,

बोरगांव मंजु (अकोला)



ANALYSIS OF TATTVARTHA SUTRA.

BY-

Justice J. L. Jaini M.A., M.R.A.S., Bar-at-Law,

Judge High Court, Indore.

The book is an exposition of the 7 Principles of Jainism, i.e., the 7 *Tattvas*.

The opening sutra serves the purposes of an Introduction, Justification and Recapitulation of the whole book. It was necessary to indicate the position of the Principles (*Tattvas*) in the whole range of Jain Knowledge. They are the subject-matter of right belief, and the relation of the two cannot be appreciated fully, unless we consider the position of right belief in the scheme of Jain philosophy. This position is indicated by the first Sutra. This brings us to the Justification also. The first purpose of everything Living is Happiness. Happiness to be worth anything must be eternal, faultless and independent. Such happiness is identical with the Jain conception of Liberation. Right belief in and right knowledge of the 7 Principles, along with a life led in the light of the knowledge, and firmly established on the basis of the belief is the sole threefold one path of final and everlasting deliverance. Thus the first Sutra is a justification of the book which deals with these basic principles of belief and action. It is also a Recapitulation, because the whole book can easily be seen to be merely an expansion of the various aspects, details and developments of this mighty and all comprehensive Sutra of Jainism.

The ground-plan of the book itself admits of analysis as follows.

The whole book consists of 377 Sutras, divided into 10 chapters with 33, 53, 39, 42, 42, 27, 39, 26, 47, and 9 Sutras respectively.

Chapter I.

Sutra 1 introduces the Subject.

„ 2 defines Right Belief.

„ 3 gives the two means of acquiring Right Belief.

„ 4 develops the definition of Right Belief, and gives the names of the 7 Principles.

„ 5 gives the 4 different senses in which these names may be employed.

„ 6-8 develop the modes of acquiring *Adhigama* (Right knowledge).

Sutra 6 gives the two means of acquiring it.

„ 7-8 give the modes of employing these two means.

„ 9-32 deal with *Pramana*, the first means of acquiring knowledge (*Adhigama*).

Sutra 9-12 classify and name the *pramanas* or 5 kinds of knowledge.

„ 13-19 deal with Sensitive Knowledge, (*Mati jnana*), the first kind of knowledge.



Sutra 13 gives the *Nirdeśa*, definition or description of Sensitive Knowledge.

„ 14 gives the *Sadhana*, or means of acquiring it.

„ 15 gives the *Vidhana*, or divisions of it.

„ 16 gives its sub-divisions and thus the *Sankhya*, or number of it.

„ 17 limits the Scope of these sub-divisions.

„ 18-19 give the exceptions.

„ 20 refers to Scriptural Knowledge (*Sruta jnana*).

„ 21-22 refer to Direct Visual knowledge (*Avadhi jnana*).

23-25 refer to Direct Mental knowledge *Manah paryaya jnana*.

„ 26-29 deal with the subject-matter of the 5 kinds of knowledge.

Sutra 26 of Sensitive & Scriptural.

„ 27 of Direct Visual.

„ 28 of Direct Mental.

„ 29 of Perfect (*Kevala*).

„ 30 gives the extent (*Alpa Bihutva*, Less or more), combined with number (*Sankhya*), and habitat (*Sramitva*) of the 5 kinds of knowledge.

„ 31-32 deal with wrong knowledge.

Sutra 31 gives its three kinds.

„ 32 defines wrong knowledge.

„ 33 deals with *Naya*, the second means of acquiring *Adhigama*, or knowledge.

Chapters II-IV.

Chapters II, III & IV deal with the first Principle only, namely with *Jiva* (the Living Substance) or Soul.

Chapter II treats of Soul generally; of its nature, differentia, classifications, processes of incarnation, bodies, and sex. It treats of Life here and hereafter in the world.

Chapter III treats of the hellish, human, and sub-human beings, and of the regions occupied by them.

Chapter IV treats of the various orders of celestial beings, and of the regions in which they live.

Chapter II.

Sutras I to 7 deal with the thought-nature of *Jiva*.

Sutra 1. gives the classes of thought-natures.

Sutra 2 gives the number of sub-divisions.



Sutra 3 names the sub-divisions of 1st thought-nature.

Sutra 4	"	"	2nd	"
5	"	"	3rd	"
6	"	"	4th	"
7	"	"	5th	"

Sutras 8-9 give the differentia of *Jiva*.

Sutra 8 names it.

" 9 classifies it.

Sutra 10 classifies the *Jivas* into Mundane & Liberated.

Sutras 11-24 deal with the Mundane Souls.

Sutra 11 and 12 give their classes.

Sutra 11 According to whether they have mind or none.

Sutra 12 According to the number of their senses :-
Atthura with 1 sense. *Trasa* with more.

Sutra 13-20 deal with this

Sutra 13 gives kinds of *Sthavara*

3-1 *Atthura*

Sutra 14 gives kinds of *Trasa*

Sutra 15-20 deal with the senses.

Sutra 15 gives their number.

" 16 gives their 2 classes.

" 17 subdivides the 1st class.

" 18 subdivides the 2nd class.

" 19 names the senses.

" 20 subdivides their functions.

Sutra 21 gives the function of mind.

Sutras 22 & 23 give the *Svāmītra* of the senses.

Sutra 22 of 1 sense.

" 23 .. others

Sutra 24 gives the *Svāmītra* of mind.

Sutras 25-30 deal with the transition of the soul from one condition of existence to another.

Sutra 25 gives the concomitant of transmigration.

Sutra 26 gives the character of transmigration.

Sutra 27 gives the character of Liberated souls.

Sutra 28 gives the character of Mundane souls.

Sutras 29-30 give the time of transmigration.

Sutras 31-35 deal with the different kinds of birth.

Sutra 31 gives the kinds.

" 32 " " different embryos

" 33 " " *Svāmītra* of 2nd kind of birth.

" 34 " " " 3rd " "

" 35 " " " 1st " "



Sutras 36-49 deal with the various bodies.

Sutra 36 gives names of bodies

„ 37 „ their distinctions.

„ 38-39 „ „ constitution.

„ 40-41 „ the capacity of the last 2 bodies.

„ 42 „ „ *Swamitva* „ „ „ „

„ 43 „ „ number of bodies with a Soul.

„ 44 „ „ a special quality of the "last body."

„ 45-49 „ the *Swamitva* of the bodies.

„ 49 deals with the 3rd body.

Sutra 50-52 deal with the sexes of the different *Jivas*.

Sutra 53 names the *Jivas* whose mundane life cannot be cut short.

Chapter III

Sutras 1-6 describe the hells.

Sutra 1, names the 7 earths i.e., the 7 parallel planes of earth below ours.

„ 2, gives the number of hells in each earth.

„ 3-5, describe the hellish beings

„ 6, gives their ages.

Sutras 7-39 describe the *Madhya Loka* or middle regions, the abode of human & subhuman beings.

Sutra 7 names the Oceans & continents.

„ 8 gives their form & dimensions

„ 9-32 deal with *Jambudvīpa*, the central continent, which contains us.

Sutra 9 gives its dimensions.

„ 10 „ „ 7 divisions.

„ 11 „ „ 6 mountains, which make the 7 divisions.

„ 12-13 describe the mountains.

„ 14 names the 6 Lakes on them.

„ 15-16 give the dimensions of the 1st Lake.

„ 17 describes the island in it

„ 18 gives dimensions of other lakes & islands.

„ 19 describes the goddesses of the 6 islands.

„ 20 names the 14 rivers which rise from the 6 lakes & traverse the 7 divisions, 2 in each division.

„ 21-2 name the direction in which the rivers flow & fall into the Ocean.

- „ 22 gives their thought-colours
 „ 23 gives the limits of the 2 divisions.
 „ 24-25 deal with the *Laukantikas*.
 „ 26 deals with the 4 *Anuttaras*.
 „ 27 defines the sub-human species.
 „ 28-42 deal with the ages of celestial beings.
 „ 23 gives maximum age of Residentials.
 „ 29-32 give maximum age of Heavenly beings.
 „ 33-34 gives minimum age of Heavenly beings.
 „ 35-36 gives minimum „ „ hellish beings
 „ 37 gives minimum „ „ Residentials.
 „ 38 gives minimum „ „ Peripatetics.
 „ 39 gives maximum „ „ Peripatetics.
 „ 40 gives maximum „ „ Stellars.
 „ 41 gives minimum „ „ Stellars.
 „ 42 gives age of *Laukantikas*.

Chapter V.

It treats of the Ajiva (Non-Soul) Tattva.

- Sutrās 1-3 give the 5 *Astikayas*, which are *Dravyas* also
 „ 4-7 describe them, *Nirdeśa*.
 „ 8-11 give the *Saṅkhyā*, number of their *pradeśas*.
 „ 12-16 give their *kṛtrā* & *sparsana*.
 „ 17-22 give their functions.
 Sutra 23 gives the definition (*Nirdeśa*) of matter.
 „ 24 gives the kinds of conditions of matter.
 „ 25 gives the 2 kinds (*vidhāna*) of matter.
 „ 26-28 give the Cause (*sādhaṇa*) of the 2 kinds.
 „ 29-30 give the definition of Substance.
 „ 31 gives the meaning of Permanence.
 „ 32 gives the mode of dealing with contradictory attributes in the same substance
 „ 33-37 give the rules of atomic combination to form molecules
 „ 38 gives another definition of Substance.
 „ 39-40 deals with Time as a Substance.
 „ 41 defines Attributes.
 „ 42 „ Modifications.

Chapters VI & VII deal with *Aśrava* or Inflow.



Chapter VI

It deals with Asrava generally.

- Sutras 1-2 define Inflow, in its 2 aspects of Subjective (*Bhāta*) & objective (*Lāvya*) Inflow
- " 3 classifies Inflow into (*Punya & Papī asrava*) merit and Demerit Inflow.
- " 4 gives *saṃmitra* of Inflow & its *Vidhana*.
- " 5 gives *vidhana* of *Samprayika* (mundane) Inflow.
- " 6 gives *Sadhana* of *Samprayika*.
- " 7 gives *Vidhana* of a *Sadhana* or cause named *Adhikarana* (*Jiva & Ajivadhikarana*)
- " 8 gives *nirdeśa* & *vidhana* of *Jivadhikarana*.
- " 9 gives *nirdeśa* & *vidhana* of *Ajivadhikarana*.
- " 10-27 give cause of *Asravas* of the 8 *Karmas*.

Sutra 10 gives the *Sadhana* of knowledge & cognition-obscuring *karmas*.

- " 11 gives *Sadhana* of Pain-feeling *Karmas*.
- " 12 gives *Sadhana* of Pleasure-feeling *Karmas*.
- " 13 gives *Sadhana* of right-belief-deluding *Karma*.
- " 14 gives *Sadhana* of right-conduct-deluding *Karma*.
- " 15-21 gives *Sadhana* of age *Karmas*,

Sutra 15 of hellish beings,

" 16 " sub-human "

" 17-19 " human "

" 20-21 " celestial "

" 22-24 gives *Sadhana* of Body-making *Karmas*.

Sutra 22 for (bad) *subha* *Karmas*.

" 23 " (good) *subha* "

" 24 " *Tīrtīka* "

" 25-26 gives *Sadhana* of family-determining (Status)

" 25 for low-family-determining (Status)

" 26 for high-family-determining (Status)

" 27 gives *Sadhana* of Obstructive *Karmas*.

Chapter VII.

Sutra 1 gives *Nirdeśa* and 5 *vidhanas* of *Vrata*, vow.

" 2 " 2 *Vidhanas* " "

" 3 " 5 *Sadhana* for each vow.

" 4-8 " the kinds of 5 *Sadhana*s.

Sutra 4 " " " " " for 1st vow

" 5 " " " " " 2nd "



"	6	"	"	"	3rd	"
"	7	"	"	"	4th	"
"	8	"	"	"	5th	"

" 9-12 " more sadhanas:

" 13 " Nirdeśa of subject-matter of 1st vow.

" 14 2nd ...

" 15 3rd ...

" 16 4th ...

" 17 5th ...

" 18 Nirdeśa of a man with vows, *Vratī*.

" 19 Vidhana

" 20-22 Nirdeśa of a man with partial vows.

" 23 Sadhana, of a *Vratī*.

" 24-37 gives 5 Sadhanas for each of the 5 Vidhana of vows and 7 of a *Vratī*. And 5 for Peaceful death.

" 38-39 Nirdeśa of Charity.

Chapter VIII.

It deals with Bondage.

Sutra 1 Sadhana of Bondage

" 2 Nirdeśa of "

" 3 Vidhana of " 4 kinds

" 4 Nirdeśa and 8 Vidhanas of 1st kind

" 5 gives number of these 8 Vidhanas

" 6-13 " names of classes of these 8 Vidhanas

" 14-20 " the Vidhana of the 2d kind

" 21-23 Nirdeśa of the 3rd kind

" 24 " " 4th "

" 25 Nirdeśa and vidhana of *Punya*

" 26 " " " of *Papa*

Chapter IX.

It deals with Stoppage and Shedding.

Sutra 1 Nirdeśa, of Stoppage.

2 6 Sadhanas of "

3 1 " " " and of Shedding.

4 Nirdeśa and Vidhana of 1st Sadhana.

5 2d ...

6 3d ...

7 4th ...

8-17 deal with the 5th Sadhana



Sutras 8 gives Nirdeśa

9 „ Vidhāna.

10-12 „ Svāmītya.

13-16 „ Sādhanā.

17 „ Sthiti and Adhikarāna.

18 Nirdeśa and Vidhānas of 6th Sādhanā.

19-44 deal with the 7th „ (Tapa).

Sutra 19 Nirdeśa and 6 Vidhānas of External austerity (Tapa).

„ 20 „ „ „ Internal „

„ 21-25 Vidhānas of 5 „ „ „

„ 22-26 Nirdeśa and vidhānas of these 5 Vidhānas.

„ 27 Nirdeśa and Svāmītya; and Sthiti of the 6th Internal tapa, i.e. Concentration.

28-44 Vidhānas of Concentration.

29 Nirdeśa of the 4 „ „ „

30-33 „ and Vidhāna of the 1st or Arta concentration.

34 Svāmītya.

35 Nirdeśa, Svāmītya and Vidhāna of 2nd.

36 „ „ and Vidhāna of 3rd.

37-8 Nirdeśa, Svāmītya and Vidhāna of 4th.

39 Names of 4 Vidhānas of 4th.

40 Sādhanā and Adhikarāna of these 4 Vidhānas.

41-44 Nirdeśa of the first two of these 4 Vidhānas.

45 give Svāmītya and Sthiti of Shedding.

46 Nirdeśa and Vidhāna of Nirgrantha.

47 Sādhanā of Nirgrantha

Chapter X.

Sutra 1 Sādhanā of Perfect Knowledge.

2-4 „ and Nirdeśa of Liberation.

5 Adhikarāna of Liberation.

6-8 Sādhanā of this Adhikarāna.

9-12 Sādhanā and Vidhānas of Liberated Souls.

The Scope of the Book.

As to the Scope of the contents of the different chapters, the following analysis may be useful.

I.

Sutras. -

4,5,6,7,8, Categories and Predicables & *Logic*.9-33 Pramana. *Psychology, Induction, Deduction, Logic*.

II.

1-10 *Metaphysics*.11-12 *Psychology*. 13-22 *Mineralogy, Physics, Zoology*.15-20 *Physiology and Anatomy*21-24 *Psychology*.23 *Zoology. Psychology*.25-30 *Transmigration. (Theology)*.31-35 *Embryology. (Theology-Hellish and Celestial beings.)*36-43 *Physiology. Anatomy. Theology (Angels.) Physics (Electric body.)*50-53 *Physiology* " " "

III.

1 *Mineralogy and Geology*.2-6 *Theology (Hells)*7-35 *Geography. 36-39. Anthropology*.

IV.

1-12 *Heavens. Theology; and Astronomy (12, 13, 14, 15)*

V.

*Metaphysics. Physics. Chemistry (25-28) Space 1,4,6,7,9,12,18 Matter 1,4,5,10, 11,14,19,20,23,28 33,37**Time 22,39,40. Heat 23**Motion { 1,4,5,7,8,13,17 Light 23,24.**Rest { Sound 24,19.**Soul 3,8,15,16,21.**Substance 29,30,31,38,41,42.*

VI.

Psychology-Connection between mind and matter. (The mighty influence of mind on matter).

VII.

Ethics in the light of Psychology.

VIII.

Physics and Psychology. Kinds and Character of Connection between mind and matter.

IX.

Asceticism in the light of Psychology and Physics-Psychology.

X.

The GOAL



OPTIMISM OF LIFE.

(By Herbert Warren, 81 Shelgate road, Batter sea, London S. W.)

Some of our suffering is caused by ourselves. If I have a sore knee through carelessly getting off a moving omnibus, the suffering is due to my own action. Is all our suffering caused by ourselves? If not, we must assume the possibility of suffering without causing it: is such an assumption rational? It is very common, and is the cause of much pessimism; but upon reflection it will be seen that it is not reasonably tenable; for it would be against the law of justice, and there would be no guarantee against suffering, we should always be liable to be the victims of circumstances. If by being careful we can avoid suffering, then it is impossible to suffer if we are careful to avoid it; this means that it is not possible to suffer without having a hand in bringing it about. So we must conclude that all our suffering is caused by ourselves.

It is necessary to remember, however, that events have two causes, namely, the substantial

(upadana) and the instrumental (nimitta); and when we say that all our suffering is caused by ourselves it means that it has ourselves as its substantial cause; we cannot be the instrumental cause of our own suffering; in order that we may suffer there must be some not-self thing or being acting upon us. And when we suffer something which we cannot connect up with any action of our own as its substantial cause, we are apt to blame the instrumental cause, especially if it be a person or other living being. It would be absurd to blame the earth for hurting our knee, and it would not be proper to blame a cat if we tease it and it scratches us in return; the earth will not hurt us if we are careful, nor will the cat scratch us.

If we are to believe that all our suffering is caused by ourselves, we must believe in the extension of our life backwards into the past before our birth here; because there are many things we suffer in this life which cannot be accounted for by anything we have done in this life. This is especially the case in young life, such as where kittens die from starvation through being born to a cat without milk; it is



impossible to explain such a case by anything done by the kittens in this life. But this belief in previous existence is certainly preferable to the belief that we suffer without causing it. It is sometimes objected to on the ground that we do not remember it. But this fact is not proof; during sleep we do not remember the previous day's existence.

The search for an explanation of suffering is one of the main themes of philosophy; and if we believe our suffering to be caused by ourselves, then we have an explanation of it. When we know the cause we have the explanation,—that our sore knee, for instance, is due to falling down,—and we do not go on asking questions as to why were we born to suffer, why is God so unkind as to let us have a sore knee, and so forth. On the other hand, if we do not believe that our suffering is caused by ourselves, then we shall find it difficult to get a satisfactory explanation of the suffering. If we are the causes of our own suffering, then we need not repent the causes, and consequently need not suffer. This is surely an optimistic view.

Is optimism possible while the world suffers? This is perhaps

a side issue, but it may very well be brought in at this point. Is it possible for one man to be happy while he knows that another is miserable? Is it possible for one soul to be enjoying the blissfulness of heaven while he knows others are suffering the torments of hell? While we are the cause of our own suffering, we are to a large extent the instrumental cause in the suffering of others; and anybody who sees to it that he does not inflict cause, or consent to the suffering of any other being will be able to be optimistic; he will know that he is not and will not be instrumental in the world's suffering. And he will relieve each suffering as he can. Also, pity, sympathy, etc., are not contradictory of optimism, a state of pity is not a miserable state.

If, then, we stop renewing the causes of our suffering, we shall not suffer, and life will be entirely enjoyable. In order to stop the causes, we must know what they are; and one of the chief ones is himsa or being instrumental in the suffering of others. Generally speaking, if we know that some particular kind of action causes us pain, we stop it. Others have found out what



activities do cause pain, and have stopped them; and have given us no benefit of their discoveries. These are embodied in the ordinary moral codes, that is to say, we stop the causes of much suffering by practising kindness, truthfulness, honesty, morality, and contentment with limited possessions.

Much of the suffering we endure is the result of something we have enjoyed doing; so to stop the causes means in some cases to stop doing something we enjoy doing. And here comes in difficulty.

After we have left off repeating those activities which cause suffering, we have to wait until the old effects have worn off, and here comes in the question of the possibility of getting rid of the effects more quickly than they would naturally take. This possibility is illustrated by the tale already elsewhere mentioned of a man who had just committed a murder and was walking through a wood carrying the head of the person whom he had just decapitated. He came across a meditating monk, and said to this monk, "Now tell me what my proper duty is. I have just committed this

murder, and if you do not tell me I will cut your head off too."

The monk did not wish to be killed; he uttered three words of duty, namely, concentration, self-control, and stopping the inflow of karma, and then, having the power of levitation, rose up and disappeared. The murderer had heard of these things in his youth; he stood still and began to think; his body was more or less smeared with blood, ants crawled up and eat into his body; he went on meditating, and in about half an hour all his karmas worked out and he was in the final condition of blissfulness called Moksha. This undoubtedly would be an exceptional case, but it would show the possibility. The theory upon which these things are based is that the soul is already in existence in each living being, complete; it does not have to be constructed; it is choked up with dross and as soon as this is removed, be it done a minute or a million years, the soul is clean and pure, with all his qualities liberated, no more ignorance, no more mistakes.

If all our suffering is due to something we do or have done, if we never suffer anything which we have not started,

then if we cease renewing the causes, our life will be entirely enjoyable as soon as the effects of past wrong actions have exhausted themselves. We none of us have any knowledge of a life which is entirely enjoyable; such a thing is necessarily for us a matter of inference, hope, belief, faith; but there are one or two facts which support the belief. First, life at present is not altogether painful, part of it is enjoyable; and so we can conclude to the possibility of a life entirely so. Secondly, pain is always resented, and looked upon as an intruder; we always try to avoid it, and there is in the mind the permanent though perhaps unrecognized conviction that life ought to be entirely free from pain and misery; we instinctively take it for granted that pain is wrong and something to be got rid of. And we do not, according to Jainism, have to cease to exist in order to avoid it.

It may perhaps be as well to mention here that our present actions are not the effects of past actions. It is our present sufferings which are the effects, the reaction upon us of the not-self universe; our present actions are free at every moment. If

our present life is the effect of our previous life or lives, and is therefore necessarily what it is; and in its turn becomes the cause of our future life, then there would be no hope; but the relation of cause and effect does not subsist between actions and subsequent actions; it subsists between actions and subsequent experience or reaction upon us. Action is free.

So it would seem that by believing that there is the relation of cause and effect between our doings and our experiences, and that by ceasing to renew the causes of suffering and so come into an entirely enjoyable life,—by so believing and acting accordingly it will be possible to be optimistic in spite of all the pain and misery that there are in life.

H. WARREN.

London.

NEW PUBLICATIONS.

Dravya Sangraha (Ill.-td.)	Rs. 5-0
Key of Knowledge	„ 10-0
Outlines of Jainism	„ 3-0
Jain Law	„ 0-12

Can be had from,

Manager,

Digambar Jain Poostakalaya,

Chandavadi-SURAT.



Lakkimpur
30-11-17.

To,

FRIENDS OF THE JAIN COMMUNITY.

My dear friends,

The day of activity has dawned in the world. People of other nations have not only shaken off their slumber and got up from their laed^s, but are actually busy with their ploughs in making the soil of thoughts fertile. They have joined hands for the common weal and are helping their neighbours if they are short of ower or the plough. This co-operation is not a new thing in India. It has been in existence in all its villages from time immemorial. The dawn has, however, given a new life to it. They are all very busy for, common good and are gradually banishing the idea of private property of dark ages. Some are engaged in weeding and some in irrigating the soil; some are making now plantations and some are working as partners of a common firm.

You also awake and arise and have your share of work in the common struggle against the evil spirits which take pleasure in ruining the fruits of all labour

towards making the field refreshing green-pleasant and useful. Your sleep too has not been undisturbed by them.

Now rub your eyes and see what is going in all around you. The *afimehi* (opium-eater) China is also on her legs and has shaken off narcotic influence. Democratic spirit has infused a new life into it. The battles of freedom and justice are being fought all over the world against tyranny and oppression of the Control Powers. Evil spirits are being quickly banished. Even in India the Moslems and Hindus have started a Limited Company for certain common objects. No religious animosities stand in their way. Its branches and off-shoots are spreading all around and making the growth of the mish-rooms and fungi impossible. Fortunately some of the shares are yet to be sold and unless you hasten to purchase them even with a premium, you lose your opportunity for ever. Your Capital (the potential energy) will remain buried under ground. It will bring no interest and is likely to be lost for all generations to come; as often this upheaval they will not be in a position to dig it out and spend it on useful purposes.



The Swatambar Jain Conference, the Digamher Jain Mahasabha, the Sthanakvasi Jain Conference, the Swetamher Graduates' Association, the Swetambar Jain Association of India, the Maharashtra Digamher Jain Sabha, the Madras Jain Association, the Arrah Central Jain Publishing House, and Jain periodicals and newspapers are different parts of your body and their movements show that your corporal body is still active. This indicates that you have got life and are not yet dead. There is still hope that you will recover from torpor sooner or later. This emboldens one to predict that re-birth will not be necessary for fresh activities. There is hope of renewed energies in this very life.

However, your spiritual and ethereal self are not working. You cannot be said to be awake when they are asleep. Drums in the form of public meeting and agitations are beating near you. It is wonder that you are even then unaware of the fact that the sun has risen up; and you still on your bed like the Delhi Mogol Emperors of the nineteenth century.

During your sleep the community has lost many jewels

which are now shining in other places and forming an ornament to them. It has lost its respect in the eyes of the Government, in the eyes of other communities, nay, in the eyes of even its own people. It has been censured, maligned, & severely criticised. It is considered to be a thing of no consequence in the comity of nations and in the arrangement of nature. It is regarded as a useless freak of nature on the surface of the earth. You are responsible for this state of things. God helps those who help themselves. Seeing that you do not care for them, they have also deserted you. Indra has reserved its showers of blessing for others. Varuna does not fertilize your soil. Sarasvati is playing on the harp of your opponents. Eloquent speeches are not therefore your spare. Important offices of state are too high for you. The cabinet and the Council do not find you worthy of their society. The Hindus are obliged to believe that your name on the list of members is only a vocenary vil in the court of the Hindu University. You cannot enlist yourself even among the followers, nothing to say of being a leader or a commander. The total annihilation is there



at the rate of about one percent a year. 200 much sleep naturally shortens life.

Arise and be awake, therefore, if you want to have your place in the world. Remember, you are Jains, the followers of Jinas—those who conquered those evil spirits that were a plague to the whole world, a curse to gods, and a trouble to *Allah*. Think for a while of the potent strength in you which is lying dormant. The world wide war which is making a havoc in the world might have been over long since by the melodious beating of your peaceful heart. Young hearts and old heads might have cooperated in putting an end of it. But, alas! you are asleep. The Jain papers are slow in publishing what is useful to peace & welcome news of hair splitting which add, fuel to fire. What a great fall! mutual admiration, co-operation & support in times of need are things of the past for the Jain Community. However, there is yet time. Other people have made the iron pot. It is your duty now to strike while it is hot. If it grows cold, no human labour will be able to mould it into the desired and useful shape.

Arise and be awake. Life may not become extinct. Work for the salvation of the world if you want to have your salvation.

Yours Cordially,
Chaitandas

(one devoted to the spirit of the world and the heavens.)

कुमार देवेन्द्रमसादजी द्वारा प्रकाशित—
अंग्रेजी और हिन्दी भाषाके सर्वांगसुंदर

नये २ ग्रन्थ ।

Rs. 2.

The Key of Knowledge

(by Champat Ray Jain) 10-0

Out Lines of Jainism (J. L. Jaini) 3-0

Dravya Sangraha (S. C. Ghosal) 5-0

Paramatma-Prakash (B. Rikhabdas) 2-0

The Practical Path... .. 2-0

Warren's Jainism 1-0

Dictionary of Jain Biography ... 1-0

Naya-Karnika (Mohanlal D. Deshai) 0-8

The Jaina Law (J. L. Jaini) ... 1-4

Science of Thought (Champat Ray) 0-8

Nyayavahara (Satish Chandra V.) 0-8

Jaina Jom Dictionary 1-0

Pure Thoughts, (Samayik Path) 0-2

उपदेश-रत्नमाला ॥) शान्ति धर्म १=)

धार्मी-कर्म-प्रकाश १) प्रेम-गुणपञ्जलि ॥)

प्रेम-कली ?) बालिकाविनय =)

त्रिवेणी =) भावना लहरी =)

सच्चा विश्वास (महात्मा गांधीजी) =)

सत्ता-धर्म १) ऐतिहासिक क्षिप्रां ॥)

मिलनेवा पता—

भैरव, दि० जैन पुस्तकालय-सुरत ।



मनुष्यके लिये प्रत्येक समाजमें अपना व्यवहार शुद्ध और हितानुकूल रखना बड़ा कठिन कार्य है, परन्तु विचार करके देखा जाय तो मनुष्य जीवनका सारा दारमदार इसीपर निर्भर है । जो लोग प्रति समय अपने आपको स्थिर नहीं रख सकते व्यवहारमें बड़ी-गलतियाँ कर डालते हैं । जो कि जन्मभर उनके लिये कष्टक स्वरूप खटकती रहती हैं । हमको हर समय इस बातका पूरा ध्यान रखना चाहिये कि कोई गलती कभी हमसे न होने पावे । यद्यपि ऐसा होना अत्यन्त कठिन एवम् असंध्य है कि मनुष्य सदैव एकसा योग्य आचरण करता रहे । कभी भोजनके समय एक प्रकारके भाव रहते हैं कभी अन्य प्रकारके भाव रहते हैं, कभी शयन करते समय वैराग्य रहता है, कभी रागांश रहता है, परन्तु तौ भी जो मनुष्य अपने अन्तरंगमें असावधानीसे बचनेका उपाय सोचता रहता है वह अनुचित गलती कभी नहीं कर सकता । यद्यपि कमायोंके उदय-से परिणामोंमें किञ्चिन् हेरफेर होता रहता है तथापि कमाय उसके इनकी प्रवृत्ति नहीं हो सकती जिससे कि वह कोई बड़ी गलती कर बैठे । अतएव हम लोगोंका प्रथम कर्त्तव्य है कि हम अपने अग्याप्तोंको सुधारें । कभी अपने मन वचन कायसे कोई अर्थ वितण्डावाद न होने दें ।

बहुतसे मनुष्य यह सोचते हैं कि हम सम्य हैं । हम कभी गाली गुफ्तार नहीं करते तौ भी नौकरको कभी २ जाँच वे जाँच डाँटनेमें या जोरू (खी) को कभी २ दो चार धौल तमाचे मारनेमें क्या हर्ज है, हमारा छे छमासेका क्रोध कुछ हानिकारक नहीं होगा इत्यादि २ परन्तु विचार करके देखा जाय तो प्रति समयका वर्त्ताव मनुष्य जीवनमें हेरफेर करता है ।

किसी मनुष्यको यदि हम एकदिन क्रोध या ईर्ष्यादिके वश कुछ मर्मभेदी वचन कह डालें तो हम तो क्षणभरके पश्चात् शान्ति सुखमें आकर सब भूल जायेंगे । परन्तु जिस मनुष्यसे मर्मभेदी वचन कहे गये हैं वह बहुत दिन तक नहीं भूलेगा । सम्भव है कि जन्मभर न भूले । इससे यह होगा कि वह अपने हृदयमें सदैव हमारी ओर घृणाकी दृष्टिसे देखेगा तथा समय-पर अन्यान्य लोगोंसे भी हमारी मन-मानी निन्दा करेगा । इस एक ही समयके क्रोधसे सैकड़ों मनुष्योंमें हमारा अपयश फैल जायगा । इसी प्रकार अनेक ऐसे व्यवहार हैं जिन्हें असावधानीसे मनुष्य क्षणिक समय तक करता है और बहुत समय तक फल भोगता है ।

हमारी बहुतसीं भोली बहिनें प्रथमावस्थामें अपने प्रति पुत्रादि मनुष्योंसे कोई परकी वस्तु छिया लेती हैं या झूठ बोल बैठती हैं वस फिर चाहे वे अपने इस अग्याप्तको बार २ काममें न लवें या छोड़ ही दें परन्तु उनका जो गौरव चञ्चा जाता है वह फिर वापिस नहीं आता ।



पृथ्वी पर जितना मान या जितनी इज्जत आग्रह है, वह सब व्यवहारके बल पर ही खड़ी है। अहा; वह मनुष्य किनना धन्य है जिसने अपना व्यवहार हर समय और हर मनुष्यके साथ समुचित रीतिसे सदा पालन किया हो।

मनुष्य उचित रीतिसे संसार यात्रा पूरी करे तो कर्मबन्ध भी बहुत कम होता है। सदैव क्रोध, मान, माया, लोभ, इन चार कषायों की तेजीसे कठिन और मन्दतासे मन्द कथ होता रहता है। यदि मनुष्य एक बार १ क्षणके लिये भी तीव्रतर कषायोंमें मग्न हो जावे तो करोड़ों वर्षोंके लिये अशुभ कर्मोंका परदा आत्मा पर आ जमता है, नर्क निगोदके दुःख भी यही कर्मबन्ध सहन कराता है।

अपनी समाजमें मनुष्यके कर्त्तव्यका ज्ञान अत्यन्त कम है, यही कारण है कि घर २ में कलह फूट दीखती है, तथा अनेक घृणित कार्य निरत्य प्रति सुने जाते हैं। जो लोग विद्याहीन हैं उनकी तो बात ही क्या परन्तु नाममात्रके स्वाध्याय करनेवाले और अपने आपको योग्य समझनेवाले नरनारी भी योग्यायोग्य मिश्रित व्यवहार करते हैं। शर शास्त्र भी सुन आए, मन्दिर भी हो आए, उबर वरमें आकर भंग, तमाखू, तार, जुआ आदि सभी करने लगते हैं।

इस व्यवहारका यह फल होता है कि पढ़े लिखे मनुष्योंकी साख भी पृथ्वीसे उड़ी जाती है।

अतएव समस्त सुज्ञकण्डु ! एवं बहिनोंको चाहिये कि अपने प्रत्येक कार्यको शुद्धतासे

करें। यदि धर्मात्माओंमें गणना कराई है तो अपने बचनोंको सदैव मिष्ट हितकर बोलनेका प्रयत्न करना उचित है।

और हृदयको शुभ चिन्तनकी तरफ खींचना उचित है। तथा शरीरसे यदि बहुत परोपकार न हो सके तो न सही परन्तु दूसरोंके सतानेमें व कुशीलादि घृणित कार्योंमें कभी नष्ट न करना चाहिये।

यदि किसीको शिक्षा भी देनी हो तो सरलतासे गंभीरतासे दो। अपने व्यवहारमें कालिमा मन लगाने दो।

व्यापारादि गृहस्थीके कार्यकरनेमें भी इहलोक परलोकका विचार कर न्याय मार्गका अवलम्बन करके साफ २ व्यवहार करो। मनुष्य समस्त जीवनभर धनार्जनके लिये परिश्रम करते २ मृत्यु शब्दापर पड़ जाते हैं परन्तु अन्तमें सुखी वही होते हैं। जिसका व्यवहार ठीक रहा होगा, यश भी उसीका रहता है। जो मूर्ख लोग हैं वे धनको इस तरह अटका देते हैं कि न आप ही सुख पाते हैं न पीछेसे देश या जाति या सन्तानको ही कुछ लाभ होता है। यह पाप हमारी बहिनोंके शिरपर बहुत है। जो बहिनें लाखों करोड़ोंकी स्वाभिनी होती हैं जो कि अपने धनसे धर्मका, जातिका, देशका सैकड़ों अनाथ बच्चोंका भडा कर सकती हैं। वे बहिनें सब कामोंसे मुख मोड़ झूठा सचा एक लड़का गोद लेकर हांडी गृहस्थी बसा जाती हैं। बड़े पुण्य कर्मसे प्राप्त हुई लक्ष्मीको जबरदस्ती सुनार, दर्जी, आतशबाजी वालोंको दे डालती हैं। और व्यर्थही देशके धनको बरबाद करती हैं। अपने धनका व्यवहार



जैसी चाहिये वैसी विद्याकी उन्नति नहीं हुई। पाँच सात मोरेना जैनसिद्धांत विद्यालयके ही पंडित नजर आते हैं। इसका कारण क्या है? इसके कारण न होना हमारी समझमें तीन हैं।

१. पढ़ाईका क्रम ठीक न होना ।

२. समस्त पाठशालाओंकी पढ़ाई एक न होना ।

३. योग्य अध्यापकोंका न मिलना ।

क्रम ठीक न होनेका कारण पाठशालाओंमें पढ़ाने योग्य समस्त प्रकारके ग्रंथ बने हुए व छपे हुए तैयार नहीं हैं। और समस्त पाठशालाओंका एकसा क्रम न होना, पाठशालाओंके संचालकोंकी मान कमाय व अज्ञानताके प्रभावसे है और योग्य अध्यापक थोड़ा वेतन होनेसे आदर सरकार न होनेसे जैनी तो तैयार ही नहीं होते। जो होना चाहते हैं उनके लिये अध्यापक तैयार करनेवाली पाठशालाओंमें स्कॉलरशिप व सर्वका अभाव है। लाचार थोड़े साधारण वेतनके अजैन (ब्राह्मण) पंडित रख कर ही विद्यार्थियोंके पढ़ानेका प्रबन्ध करते हैं सो ब्राह्मण पंडित जैनियोंकी परिभाषा व जैन ग्रंथोंसे अनभिज्ञ होनेसे कुछका कुछ पढ़ाते व जैन ग्रंथोंकी जगह लघु सिद्धान्त कौमदी, तर्क संग्रह आदि अजैन ग्रंथोंको पढ़ानेकी प्रक्रिया ही चलाते रहते हैं।

इन कारणोंमेंसे पढ़ाईका क्रम ठीक करनेके लिये तो जो प्राचीन पाठ्य ग्रंथ हैं वे ठीका टिप्पणी सहित छपने चाहिये और जो पाठ्य ग्रंथ प्राचीन ग्रंथोंमें दुष्प्राप्य हों वे विद्वानोंको द्रव्य सहायता देकर नये बनवाना चाहिये ।

और प्रकाशकोंको द्रव्य सहायता देकर छपवाना चाहिये । और समस्त पाठशालाओंकी पढ़ाई एकसी करनेके लिये महासभाके विद्यालय और परीक्षालयके संचालकोंको बम्बई जैन प्रांतिक सभाके परीक्षालयवालोंसे मिळकर महासभामें प्रस्ताव करके दोनों परीक्षालयोंको मिलाकर एक ही परीक्षालय द्वारा समस्त जगहकी पाठशालाओंका क्रम ठीक करना चाहिये। इसके लिये कमसे कम ४ योग्य इन्स्पेक्टर तनखा देकर नियत करने चाहिये। जैन व अजैन विद्वानोंको योग्य अध्यापक तैयार करनेके लिये जैन परिभाषा शब्द कोष व पढ़ानेकी तरकीब व सिखानेवाली पुस्तकें तैयार कराकर उनको पढ़ाकर मोरेनाके जैन सिद्धांत विद्यालयमें एक अध्यापक क्लास खोलना चाहिये व परीक्षालयमें अध्यापकोंकी परीक्षा भी होना चाहिये। इन सब उपायोंका प्रबंध करनेके लिये महासभा व मालवा जैन प्रांतिक सभा व बम्बई जैन प्रांतिक सभा आदिको मिलकर काम बांटकर केवल कागदी प्रस्ताव न करके काम करनेका शीघ्र ही प्रयत्न करना चाहिये ।

पाठक महाशय ! उपर्युक्त व्यवस्थामें एक जैन पारिभाषिक शब्दकोष बननेकी केवल अध्यापकोंके लिये बनाने व छपवानेकी जरूरत बताई है सो केवल अध्यापकोंके लिये ही नहीं किंतु जैन विद्या संबंधी समस्त कार्योंमें व अजैनी विद्वानोंमें जैन धर्मके प्रचार करने वा प्रभावना करने, स्वाध्याय प्रचार करने व इंगरेजी बाबूलोगोंको जैन सिद्धांत समझा कर जैन सिद्धांतोंके पक्क



वनाने वगैरह समस्त कार्योमें इसकी बड़ी भारी आवश्यकता है इसकी कितनी आवश्यकता है सो पीछे बताई जायगी । पहिले आप यह समझ लीजिये कि यह पारिभाषिक शब्दकोष कैसा बनेगा ।

वर्तमान समयमें जितने कोष हैं और जितने बड़े २ कोष छपे हैं उनमें जैनियोंके ग्रंथोंमें जो जो शब्द आते हैं उनका अर्थ नहीं मिलता और जिनका साधारण अर्थ मिलता भी है तौ पारिभाषिक जो खास जैनाचार्योंने जो अर्थ माने हैं वे अर्थ नहीं आते । जैसे उन कोषमें सम्यग्दर्शन, स्पष्टक, अवग्रह, आत्तव, ईहा इत्यादि शब्दोंका अर्थ देखेंगे तौ सापान्य अर्थ मले प्रकार सम्यग्दर्शन शब्दको देखना, स्पष्टक शब्दका शब्दा करनेवाला, अवग्रह शब्दका ग्रहण करना, आत्तव शब्द ही नहीं मिलेगा । आश्रव शब्द मिलेगा तो उसका अर्थ सुनना आदि मिलेगा । ईहा शब्दका अर्थ इच्छा मिलेगा । तब बताइये कि अजैनी बिद्वान् जैन ग्रंथ देखें और जिन शब्दोंका अर्थ न आवे तौ कोषकी सहायता लें परंतु कोषमें उक्त अर्थ ही मिलेंगे । सम्यग्दर्शनका निर्दिष्ट श्रद्धान करना, स्पष्टक शब्दका अर्थ कर्मोंकी वर्णना विशेष इत्यादि अर्थ थोड़ा ही मिलेगा ? इसी लिये जैन पारिभाषिक शब्दकोषमें पहिले बड़े २ अक्षरोंमें वह शब्द रक्खा जायगा । वह शब्द संस्कृत है व प्राकृत वा अवभंश (हिन्दी भाषा वगैरह) इसका निम्न लिखा जायगा । उसके बाद उस शब्दका क्या अर्थ है सो लिखा जायगा । वह अर्थको कौनसे ग्रंथोंमें किस

जगहपर माना गया है, उन सबके श्लोक व वाक्योंका प्रमाण लिखा जायगा । प्रमाण वाक्योंका हिंदीमें अर्थ लिखा जायगा तत्पश्चात् इस शब्दकी परिभाषा व लक्षण जैनियोंने क्या माना है वह अर्थ हिंदीमें लिखा जायगा और कौन २ से ग्रंथमें उसके लक्षण किस २ प्रकारसे माने हैं, सब ग्रंथोंके मूल वाक्यके श्लोक लिखे जायेंगे । उन लक्षण वाक्योंका शब्दार्थ लिखा जायगा । जब शब्दका एक मुख्य अर्थ व लक्षणोंका उक्त प्रकारसे उल्लेख हो जायगा तब उस शब्दके दूसरे क्या क्या अर्थ होते हैं और वे अर्थ कौन २ से कोष वा ग्रंथमें माने गये हैं उनके प्रमाण सहित लिखे जायेंगे । भावार्थ—जिस किसी भी पदार्थका स्वरूप जानना होगा उसे यह कोष कदावृत्तकी तरह बता देगा ।

इस प्रकार जैन मतके तत्त्वार्थसूत्र व इसकी समस्त टीकायें तथा चारों अनुयोगोंके प्रसिद्ध २ ग्रंथोंके सपरत शब्दोंको स्वतंत्रतासे संग्रह करके अक्षरादि क्रमसे लिखकर यह कोष तैयार करना पड़ेगा । और इस शब्दकी उत्पत्ति कौनसे धातुसे कौनसे प्रत्ययसे जैन व्याकरणा-नुसार हुई सो लिखी जायगी ।

इस कोषके छप जानेपर फायदे क्या क्या होंगे सो सुनिये ।

१. स्वाध्याय करनेवाले भाई जब स्वाध्याय करेंगे और उस समय कोई भी शब्द ऐसा आ जायगा कि उसका लक्षण व स्वरूप समझे बिना आगे समझमें हो नहीं आता है, उस समय यह कोष पास रखनेसे सारे खोटर



उस शब्दका अर्थ - स्वरूप समग्र लगे जान बढ़ी सकेंगे ।

तौ स्वाध्याय तपका पूरा फल मिलेगा ।

२. जब कोई महाशय समाका शास्त्र बाँचेगा तौ उनके शब्दोंके अर्थ नहीं आनेसे संशय करके या गोलमाल करके श्रोताओंको समझा देंगे हैं, किसी शब्द व पदार्थ का स्वरूप श्रोता पढ़ने हैं तौ वक्ताको याद न रहनेसे कह देते हैं कि इसका स्वरूप कठिन है, विस्तारसे है, सो फिर कभी समझना । इसमें श्रोतावाँकी ज्ञानोन्नतिमें विघ्न पड़ना है । यदि कोपपातमें रक्ता होगा तौ नष्ट निरालकर बना देंगे वा समझा देंगे ।

३. छोटी २ जैन पाठशालाओंमें अल्पज्ञ जैनी अन्यायक तथा जैन धर्मसे निगे भगवान् अजैनी व्याख्यान अ-यावक ही जैन धर्म पढ़ाते हैं विद्यार्थीगण उसमें अनेक शब्दोंके अर्थ भावार्थ पढ़ने हैं तौ वे भी टाल देते हैं यदि कोप पाठशालामें रहेगा तौ प्रत्येक शब्द व पदार्थका स्वरूप अन्यायक समझा सकना है तथा चतुर विद्यार्थी स्वयं कोप देखकर मालूम करके अपना पाठ सार्थ पाठ कर लावेगा ।

४. अखबारोंके द्वारा उपदेश मिलनेसे हमारे दक्षिणी, वर्णाटकीय गुजराती भाई भी स्वाध्याय करने लगे हैं। ग्रंथ उनकी भाषामें हैं नहीं, शास्त्र प्रायः हुंदाड़ी व हिंदी भाषामें छपे हुए वा हस्त लिखित मिश्रित हैं उनमें हुंदाड़ी वगैरह हिंदी शब्दोंका अर्थ मालूम न होनेसे स्वाध्याय नहीं करने सो इस कोपके पास रहनेमें हरएक देशका भाई प्रत्येक पदार्थका मन्त्र हिंदीमें सविस्तर समझकर अपना

५. अंग्रेजी संस्कृत पढ़े हुए अनेक जैनी अजैनी विद्वान् आजकल प्राचीन ग्रन्थोंका अंग्रेजीकरण करनेमें उत्सुक हुए हैं उनको अंग्रेजीमें ग्रंथ मिश्र जाय तो कहना ही क्या? सो बौद्ध ग्रंथोंका प्रायः सर ही ग्रंथोंका अंग्रेजीमें अनुवाद मिश्र जानेसे ये लोग सबसे श्रेष्ठ बौद्ध मतको ही शिरोमणि मानने लगे । बौद्ध धर्म-जैन धर्मकी नकल है सो अपल मतको देखनेके लिये अंग्रेजीमें ग्रंथ नहीं । यदि संस्कृत ग्रंथ भी हों तौ वे देख सकते हैं परन्तु जैनियोंके पारिभाषिक काव्योंका अर्थ व शैली मालूम न होनेसे ग्रंथ नहि देख सकते । यही कारण है कि आजकल जैन धर्मकी आलोचना न करके सर्वत्र बौद्ध धर्म व पाली भाषाका ही पठनपाठन व प्रचार हो रहा है, यहाँ तक कि प्राचीन प्राकृत भाषामें हजारों जैन ग्रंथ होनेपर भी कॉलेजोंमें पालीभाषाका कोर्स रक्ता जाता है । और बौद्ध ग्रंथोंके देखनेका (जो कि सिंहाय ग्रन्थ पाली भाषामें हैं) सुमीता कर दिया जाता है । इस प्रकारके ओ विद्वान् दर्शनोंकी आलोचना पठनपाठन करनेवाले हैं उनके लिये यह कोप बहुत ही लाभदायक होगा । सब विद्वान् जैन धर्मके कठिन २ ग्रंथ हिंदीमें देखनेमें समर्थ हो जायेंगे और जब यह कोप क्षणात्मक अर्थ चतानेवाला तैयार हो जायगा तो अंग्रेजी बंगाली वगैरहमें भी इसका अनुवाद होकर वृत्त छप जायगा । तौ जैन धर्म देखनेका प्रचार विद्वानोंमें बहुत जल्दी हो जायगा



इत्यादि अनेक लाभ हैं ।

इस कोषके शब्द संग्रह करनेमें कमसे कम आठ दश हजार रुपये और कमसे कम दो मंडित निरंतर बैठकर काम करें तौ चार पांच वर्षमें तैयार कर सकते हैं। फिर उसकी प्रेस कापी लिखने वा छपानेमें पांच सात हजार रुपये व दो तीन वर्ष काळ चाहिये। ऐसा एक प्राकृत कोष श्वेतांबरी जैन साधु राजेंद्र-लालजीने बनवाया है जिसमें १ लाख रुपये तौ बनानेमें ही खर्च हो गये और अन्य १० वर्षसे छप रहा है। सो हाल आधा ही हो पाया है। इसी प्रकार काशीकी नागरी प्रचारणी समाने एकदम २५-३० मंडित रख कर हिन्दी शब्दोंके संग्रह करनेका काम कराया था जिसमें २५-३० हजार रुपये खर्च हो गये। अब वह भी छप रहा है सो दो तीन वर्षमें छप जायगा।

छपानेके लिये रुपया लगानेवाले तौ अनेक जैन अजैन बुक्सेलर मिल जायंगे क्योंकि इसको छपाकर बेचनेमें हजारों प्रतिघोंकी खपत होगी सो छपानेवाला हजारों रुपये पैदा कर सकेगा परन्तु बनानेमें पांच सात वर्ष तक रुपया लगा सके ऐसा कोई भी ग्रन्थ प्रकाशक बुक्सेलर वा धार्मिक संस्था नहीं है। धनपात्रोंमें कोई महाशय ऐसा समझदार नहीं है जो इस कोषकी जरूरत समझे व इसके बनानेमें रुपया लगाकर धनको सार्थक कर सके। ऐसे कोषके बनानेके लिये एक बार बाबू अर्जुनलालजी सेठी व दयाचन्दजी गोयलीयने प्रस्ताव करके एक लेख किसी जैन पत्रमें दिया

था परन्तु उसका कोई फल नहीं हुआ। किसीने किसी प्रकारकी सहायभूति तक न दिखाई। उसके बाद भारतीय जैन सिद्धान्त प्रकाशिनी संस्थाने भी एक बार साहस करके बनानेके लिये विचार किया था और शब्द संग्रह करनेके लिये १६००० कांडे (कागजके टुकड़े) व ग्रंथोंकी नामावली छपाकर कई स्वाध्याय करनेवाले विद्वानोंके पास भेज भेजकर शब्द संग्रह करते जानेकी प्रार्थना की थी परन्तु किसीने भी कुछ जवाब नहीं दिया। कई धन पात्रोंसे प्रार्थना की थी कि एक मंडित रखकर यह काम चलाया जावे परन्तु उन्होंने कुछ भी इस कामको जरूरी न समझा। लाचार वे कांडे और इस्तहार ज्योंके त्यों पड़े हैं।

अब हम समानके विद्वानों और जैन धर्मकी उन्नति चाहनेवाले समझदार धर्मात्मा धनपात्र दानी महाशयोंसे प्रार्थना करते हैं कि इस कोषके बनाये बिना हमारे सब कामोंमें पूरी र हानि है, उसे दूर करनेके लिये स्वाध्याय करनेवाले विद्वान् तो कुछ २ समय खर्च करके शब्द संग्रह करना स्वीकार करें और दानवीर धनाढ्य महाशय अपने यहां घर पर वा किसी संस्थामें कमसे कम दो विद्वानोंको बतनसे रखकर व ग्रंथोंकी प्राप्ति करके इस कोषके बनानेके लिये शब्द संग्रह करानेका पांच वर्षके लिये मार लें। यदि वे महाशय इतनी उदारता दानशीलता दिखानेके लिये धर्मार्थ रकम लगानेमें असमर्थ हों तौ बतौर कर्मके ही रकम लगावें। जिस दिन यह कोष तैयार हो जायगा उस



दिन जितनी रकम उममें लगी उतनी रकम व्याज सहित देकर अनेक बुक्सेलर लेनेके लिये तैयार हो जायेंगे । परन्तु यह कार्य सिवाय धनपात्रोंके कोई दूसरा कारा ही नहीं सकता । इसलिये चिद्वानोंको चाहिये कि—अपनी सत्संग-तिमें रहनेवाले धनपात्रोंको उपदेश देकर इस कार्यमें द्रव्य लगानेको तैयार करें । और निम्न प्रकार हो इस कोषको ग्रीष्म ही बनानेका प्रारम्भ करावें ।

समानका हितैषी, दास—

पन्नालाल वाकलीवाल ।

दिवाली और दो मित्रोंका वार्त्तालाप ।

(वीर) (२४) (अमावस)
तीर्थंकर मुक्ताई गये, कार्तिक भौ अधियार ।
गति घाती घाती नमो, गौतम प्रभु सुखवार ॥

कार्तिक कृष्ण १२की रात्रिको टेकचन्दजी जल्दी सोगये इसलिये नींद भी जल्दी ही खुल गई और फिर न आई । कर्बटे बदल रहे थे कि दीवालीकी याद आ गई तबसे अपनी पत्नीको पुकारा, वह चौक उठी, परन्तु टेकचन्दजीने उसे सान्त्वना देकर दीवाली पर कहीं सिद्धक्षेत्रपर जानेकी बात छेड़ी, तब स्त्री बोली अच्छा हो यदि यह सम्पत्ति हम-लोग लाया जदचन्दजीके पास चल कर करें । तब प्रातःकालका समय था सोचा चलो वायु सेवन भी होगा और सामायिक जदचन्दके चागमें ही करेंगे । पश्चात् सलाह करके नहा-

घोकर वहीं चैत्यालयमें पूजन करके चले आवेंगे । तब गाड़ी कसाई और चल दिये, वहां पहुंचकर सामायिक स्नान पूजन स्वाध्यायादि करके टेकचन्दजी बोले—क्यों भैया जयचंद ! दिवाली देखने कहां चलोगे ? और दिवालीका क्या अभिप्राय है, क्यों और कबसे चली, सो कुछा करके कहिये आपकी भौजी इसके लिये बहुत लाञ्छित हो रही हैं ।

जयः—मुना है कि दिवालीकी अमावस्याको पंडित गणेशप्रसादजी वर्णी रेसंदीगिरि (नैनागिरि) जावेंगे, इससे मालूम होता है कि कदाचित् आसनामके ग्रामीण जन भी १००—१२९के लगभग पहुंचेंगे । यह वर्षका दिन है, श्रीमत् परम देवाधिदेव १००८ महावीर प्रभुके निर्वाणका दिन है, इस दिन कितने भाग्यवान भव्य जीव श्री पादापुरीजी (जो कि उक्त महावीर प्रभुकी निर्वाण भूमि है) को जाते हैं और जहांपर इस परमोत्सवका आनन्द भोगते हैं । परन्तु यदि अपनी शक्ति न होवे, तो यथाशक्ति अवकाशानुसार ऐसे ही अपने निःश्वर्ती निर्वाण क्षेत्रपर जाकर पूजन वंदनादि कार्य किया करें तो भी बहुत कुछ लाभ हो सकता है ।

२. यदि मनुष्य अपनी शक्तिको न छिपाकर और शक्तिको उल्लंघन किये बिना असली पदार्थके अभावमें उसकी कल्पना भी कर लेवे तो भी उसे वही उत्कृष्ट फल मित्र सकता है । देखो न आज महावीर प्रभुको मोक्ष गये हुए २४४३ वर्ष हो चुके हैं, और वे समस्त ब्रह्मोंसे रहित हुए आज लोकके



अंतमें निश्चल हुए स्वात्मानंदमें निपग्न हुए सदाके लिये अवस्थित हो रहे हैं । यद्यपि वे आज साक्षात् इस मृत्यु लोकमें किसी भी स्थानपर नहीं हैं, और जब ये तब भी किसी एक क्षेत्र व्यापी ही तो रहने थे, जिनसे एक ही क्षेत्रवाले जीवोंको उनके दर्शन स्तवन और उपदेश श्रवणका लाभ मिळता था । न कि सब क्षेत्र और सब कालोंमें सब ही प्राणियोंको ऐसी अवस्थामें बहु संख्यक जनोंको जिन्हें प्रत्यक्ष लाभ नहीं मिल सकता है, परोक्ष कल्पना करना ही कर्तव्य होता है । और इस परोक्ष कल्पनामें भी कभी कभी प्रत्यक्ष जैसा आनन्द आ जाता है । यह कल्पना वाली बात कोई नई नहीं है, प्रायः बहुत कालसे चली आती है और आगे भी चलेगी ही, क्योंकि यदि यह कल्पना विस्तृत भी न की जाय तो संसारका व्यवहार ही नहीं चल सकता है । व्यवहार तो सब इच्छित ही है । हां ! यदि अमली पदार्थके सद्भावमें भी हम कल्पना करें जैसे कि पुष्पोंको रंगीन चांचलोंमें, दीपको रंगी हुई गरीकी चिट्ठोंमें, नैवेद्यकी गरी व चिट्ठोंकी आदिमें जैसी कि हमलोग कर लिया करते हैं, निःसंदेह निष्फल है । क्या अग्निमें खेनेके बदले धूपको द्रव्य बढ़ानेके घालमें ही बढ़ा देनेमें सुगंधी आजावेगी ! और घृत्र दूशों दिशामें व्याप्त होनावेगी ! क्या कभी असूत्र पदार्थकी भी उत्पत्ति होसकती है ! क्या धूपके लिये अग्नि, दीपके लिये शुद्ध प्रसूत घी और कपासकी रत्ती या कर्पूर, नैवेद्यके लिये पूरी

पकौड़ी खाना आदि जैसा कि पूजाके पाठमें पढ़ते हैं, और पुष्पोंके लिये साक्षात् गुलाब, चंपा कमल, आदिके फूल नहीं मिल सकते हैं ? जब कि हमारे भोगोपभोगोंके लिये प्रत्येक प्रकारके उत्तमोत्तम फल, फूल, दीप, धूप, नैवेद्य, आदि मिल सकते हैं तो क्या पूजाको नहीं मिल सकते हैं ? यदि कहो कि शुद्ध प्रासुक नहीं मिलते हैं तो फिर खानेको कहाँसे आते हैं ? और पूजामें कल्पनाहीसे फल होनाता है तो फिर भोजनमें केवल पानी आदिमें सब भोज्य पदार्थोंकी कल्पना करलेवे और रात्रिको घरोंमें दीपकके बदले रंगी हुई गरी रखदेने, पुष्पमालके बदले चांचलोंको रंग कर माला ही बनाकर पहिर लिया करें परंतु क्या ऐसा करनेवाले लोग संसार में हंसीके पात्र न होंगे ? क्या उनके घरका अंधेरा मिट जावेगा ? नहीं नहीं कभी नहीं, ऐसी कल्पना कुछ भी फलदायक नहीं है किन्तु उल्टी हास्यजनक है । कल्पना सदैव साक्षात् पदार्थके न होनेपर ही की जाती है, जैसे कि आज न तो इस क्षेत्रवाटमें महावीर प्रभु हैं और न गौतम गणधर । न उनकी दिव्य ध्वनि ही सुनाई दे रही है और न निवारणका महोत्सव ही परंतु तोभी कल्पनामें हमें उसी काल और मावका अनुभवानंद आता है जो कि प्रत्यक्षमें आया होगा ।

यह दूसरी बात है कि लोगोंका सच्चा उपदेश न मित्रनेसे और अधिकांश कारणसे सच्ची बात का लोप हो जाय और पदार्थका सार निकल जाकर ऊपरका ढांचा और फोहही रह जाय और काष्ठान्तरमें उन ढांचे का भी रूपान्तर हो जाय,



परंतु किसी कालमें वही ढांचा खोखट मात्र ही न था किन्तु सभी । था; ठोस था । आनकल भारत-वर्षके प्रायः सभी नगरोंमें, ग्रामोंमें, शहरोंमें, और रानवाड़ोंमें ऐसा कोई भी व्यक्ति और क्षेत्र न मिलेगा, जो इस परम पवित्र दिवाली (दीपावलि) के त्योहारसे अपरिचित हो । यह पर्व भारतके सभी वर्ण और सभी क्षेत्रोंमें सभी धर्ममाले मानते हैं, यदि वास्तवमें देखा जाय तो इसके समान सर्व मान्य और उत्तम पर्व कदाचिन् ही दुपरा होता हो क्योंकि दिवालीके आनेके पहिलेही से लोगोंके घरोंमें सफाई होने लगती है । घर छाप (परम्पत) किये जाते हैं, पोते जाते हैं, लीपे जाते हैं, धोये जाते हैं, घरके वासन वर्तन मांजकर साफ किये जाते हैं, कपड़े धोये व धुलाये जाते हैं, वर्षोंका कचरा साफ किया जाता है, हिसाब किताब आदि ठीक किया जाता है, दुकानका आंकड़ा बांधकर हानि लाभका लेखा निकाला जाता है, नवीन व्यापार आदिका विचार भी किया जाता है, इस दिन लोग अपने घरके किसी स्थानमें चौक पूर कर वहां दीपक जलाते हैं । प्रत्येक प्रकारके फलपूख मिठाई आदि पदार्थ जो उन्हें मिल सकते हैं लाकर रखते हैं वहाँ कहीं कहीं एक मिट्टीकी पुतली जिसके मस्तकार और मुनावोंपर आठ दीपक रहने हैं रखी जाती है । चौकके भीतर सोलह दीपक और पांच दीपक घीके ऐसे २१ दीपक रखे जाते हैं, सभीमें चार बत्तियाँ जलाई जाती हैं, उस समय पासमें जिसके जो नरुद रुपया सुहरें आदि होते हैं

उसी चौकके पास रखे हैं और नवीन वही नूनाकर नवीन कलम और रसाहीसे प्रथम ही ॐ लिखकर साथिधा काढ़ते फिर पांच महात्माओंके नाम लिखकर मिनी संवत् आदि लिखते हैं और तब उसमें नरुद रोकड़ बाकी लिखकर नवीन (आगामी) वर्षका हिसाब प्रारंभ करते हैं । रुखा और वही दोनोंपर चन्दन, अशन, पुष्पादि क्षेपते हैं और रक्षाबीमें घावकी मूची (खोलें, या लाई) और मेवा, फल, मिठाई आदि रखकर दीपक लेकर आरती करते हैं, अर्वा करते हैं, धूप खेतें हैं, अगरबत्ती जलाने हैं, पैर पड़ते हैं, उस समय वहां उपस्थित मान्य व आश्रित जनोंको प्रसाद (लाई लड्डू आदि) और कुछ नकद पैसा रुखा आदि भी देकर संतोषित करते हैं । रात्रिमें नागरण करते हैं, घरके चहुँ-ओर दीपक जलाते हैं (नगानोत लगाते हैं) फटाका फोड़ते बन्दूक छोड़ते हैं इत्यादि अन्यों प्रकारके उत्सव मनाते हैं । यह वर्ष दिवाली या दीपावलि इस नामसे प्रसिद्ध है । और इस दिन उक्त पूजन, अर्चन, आदि जो होनी है सो लक्ष्मी पूजन या वही-पूजनके नामसे प्रसिद्ध है । लोग इस रात्रिको जूभा भी खेखते हैं परन्तु यह जूभा (छा) कुछ क्षुद्र लोगोंके सिवाय उत्तम प्रकृति वाले सम्पन्न नहीं खेखते हैं । अतः इसमें यह विचारना है कि वह सब क्या है ? और कहाँसे कबसे क्यों चला ? यद्यपि स्थानान्तरोंमें अवश्य उक्त रूढ़ियोंसे कुछ अंतर होगा तो भी बहुत ही बातें मत भेद रहिन भी होंगी, जो कुछ भी हों, हमें



इसका मूल भेद जानना चाहिये । हमारी बुद्धिके अनुसार तो हमें यही प्रतीत होता है कि यह पर्व जैनियोंके द्वारा ही चलाया गया है, क्योंकि इनके पुराणों और आचारोंसे बहुत कुछ ये बातें मिलती जुलती हैं, यद्यपि कहीं २ रूपान्तर भी होगया होगा तो भी अभी तक कई बातें सार रहित खोखेके समान अवश्य ही प्रचलित हैं । जैन पुराणों और श्रावकाचारोंके अनुसार महावीर (चौबीसवें) तीर्थंकरको मोक्ष हुए अभी २४४३ वर्ष हुए हैं जिसदिन उनका मोक्ष हुआ था । वह कार्तिक कृष्ण (गुजराती अश्विन कृष्ण) चतुर्दशीकी रात्रिको अंत और अमावस्याका प्रातःकालका समय था । इन दिन महावीर प्रभुको मोक्ष प्राप्ति और उनके मुख्य शिष्य (गणवर) गौतम रश्मीको केवलज्ञान (आत्मिक सम्पूर्ण ज्ञान) प्राप्त हुआ था । इसलिये महावीर प्रभुको निर्वाण प्राप्त होनेसे उनको जो स्वाधीन स्वसम्यक्त्व स्वात्मानन्दका लाभ हुआ और उन्होंने संसार गर्तमें डूबते हुए मोही जीवोंको मोक्षका मार्ग बताया इसलिये उस परम स्वाधीन स्वप्रप्ति (मोक्ष) के प्राप्तिके हेतु मोक्ष लक्ष्मीकी पूजा की जाती है । जिसका रूपान्तर होकर अब लया पैसादि नाण्य लक्ष्मी (जड़पदार्थ) की पूजा होने लगी है । और गौतम गणवर (गणेश) को केवलज्ञान हुआ, इसीसे और स्वती (जिनवाणी) की पूजा की जाती है, जिसका रूपान्तर होकर बही (कापड़ों) की पूजा हो गई है । पुराणोंमें लिखा है कि जब किसी महात्माको

केवलज्ञान प्राप्त होता है, तब इन्द्रादिक देवगण समवशरणकी रचना करते हैं वहां वह महात्मा यद्यपि एक मुखधारी ही है तो भी चतुर्मुख दीवता है और वहां दिगंरात्रिको कुछ भी भेद नहीं दिखाई देता है, तात्पर्य वहां अंधकार नहीं होता है । सो जब गौतमप्रभुको केवलज्ञान हुआ तो देवोंने समवशरण (गंधकुटी) बनाई और बड़ा भारी उत्सव मनाया । सो लोगोंने भी उसीकी नकल की और रात्रिको दीपक जलाकर अंधकार दूर किया । एक स्त्रीके भुजाओंपर आठ दीपक और मस्तकपरका कलश यह द्योतन करता है कि अष्टकर्मको जलाकर प्रभु ज्योंही मुक्त हुए त्योंही वह (मोक्ष लक्ष्मी) सिरपर कलश रखकर आपके स्वागतके लिये आई है । सोलह मिट्टीके दीपोंका यह अभिप्राय प्रतीत होता है कि इन महावीर प्रभुने अपने पूर्वजन्मोंमें तीर्थंकर प्रकृति को कारणभूत दर्शनविशुद्धि आदि षोडशकारण भावनाएं पाई थीं जिससे उनका आत्मा इतना विशाल हुआ कि उन्होंने संसारके बलघाणार्थ जन्म लिया सो उस महात्माके उत्पन्न होने (गर्भमें आने) के समयसे इन्द्रादि देवोंने पंच बलघाणक (गर्भ जन्म तपज्ञान और निर्वाण महोत्सव) किया जो कि पांच घृतके दीपकोंसे संकेत प्रकट होता है । दूसरा भाव पांच दीपोंसे यह भी है कि प्रभुने स्व परहितार्थ विषयमोगोंको त्यागकर सर्वप्रथम साधु पद ग्रहण किया और उन्हें जो जन्मान्तरके सम्बन्धसे शुभज्ञान था उससे वे (ग्यारह अंग



और चौदह पूर्वके घाटी) उपाध्याय भी कहाये, फिर उस समयमें उनसे विशेष ज्ञानी कोई न होनेसे वे ही दीक्षा शिक्षा देनेवाले हुए इससे आचार्य भी कहाये । और चार घातिकर्मोंको नाश करके सर्वज्ञपदको प्राप्त हुए इससे आस व अर्हन्त कहाये और आयुके अंतमें कार्तिक (गुजराती आश्विन) कृष्ण ३० को प्रातःकाल शेष अघाती कर्म नाशकर सिद्ध हुए । इस प्रकार प्रभु पांच परम इष्ट (उत्कृष्ट) पदोंको प्राप्त हुए इसीको बतातेवाले वे पांच प्रीके दीपक हैं । चौमुखे दीपक चार गतियोंको जलती हुई, जिनसे प्रभुने मुक्ति पाई है बताते हैं । पूजाकी द्रव्योंमें जल, गंध, अक्षत, पुष्प, नैवेद्य, दीप, धूप, बफल ये अष्ट द्रव्य भी जैन मन्थानुसार देखे जाते हैं । रात्रि जागरण करनेमें मगनादिके बदले मनोरंजन करनेके हेतु लोगोंने जुआ आदि खेल तथाशे प्रारंभ कर दिये हैं यह रूपान्तर होगया है । इससे प्रतीत होता है यह वर्ष जैनियों ही के द्वारा प्रचलित हुआ है इसे सबको श्रद्धा सह मानना चाहिये और भी देखो—वर्ष और मास भी अमावस्या ही को पूर्ण होता है, दूकानदार व्यापारियों आदिकी दूकानोंके खाते नये बदले जाते हैं और मासका अंत अमावस्याको समझना चाहिये कि अमावस्याको ३० का अंक लिखते हैं और पूनमको १५ का इसलिये पूनम मासके मध्यमें आती है, और गुजराती व दक्षिणी लोग अपना मास शुद्ध एकमसे प्रारंभ करते हैं । कृष्णपक्षकी प्रतिपदाको प्रतिपदा और शुद्ध प्रतिपदाको एकम कहते हैं गुजरात व दक्षिण

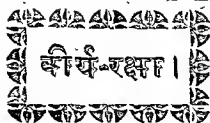
वालोक कार्तिक मास हमारे कार्तिक शुद्ध एकमसे प्रारंभ होता है और हमारे कार्तिक कृष्णा अमावस्यको उनका आश्विन पूर्ण होता है । तब कि हमारा आषा मास वीच चुकता है । तात्पर्य उनका मास हमसे १५ दिन बाद शुद्ध पक्षसे प्रारंभ गिना जाता है और हमारा १५ दिन पहिले कृष्ण पक्षसे यथार्थमें यदि उक्त पाठों परसे विचारा जाय तो उनका हिसाब ठीक प्रतीत होता है । पहिले तेईस तीर्थकरोंका निर्वाण उत्सव लोकमें इतना प्रसिद्ध न होनेका कारण यही है कि महावीर प्रभु अंतिम हुए । यह वर्तमान शासन इन्हींका है और इस समय भी अधिक नहीं हुआ है । निर्वाण क्षेत्रका स्थान भी शास्त्रानुसार लक्षणोंसे लक्षित पाया जाता है । इन्होंने संसारके सभी प्राणियोंके हितार्थ उपदेश किया सबको समान भावसे देखा । इसी लिये सब ही ने इनके उत्सवको मनाया और मनाते हैं तथा मनावेंगे । धन्य है जिन्होंने 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की नीतिको चरितार्थकर दिखाया । इस प्रकार आज जयचंदजीका व्याख्यान समाप्त हुआ, और टेकचंदजी भी चलने लगे इतनेमें टेकचंदजीकी स्त्री-बोली लालानी नैनागिरि न चलोगे ?

जय०—भावीजी अवश्य चलेंगा । क्यों मैना टेकचंद ?

टेक०—हां अवश्य । अच्छा समय बहुत हुआ जुहार । जुहार भैया—अब तो नैनागिरिमें खूब आनन्द आवेगा, उपदेशका भी बड़ा लाभ होगा, जुहार ।

दक्षिचंद परवार

नरसिंहशर्मा (C.P.)



वीर्य-रक्षा ।

(लेखक—हिराचन्द मनुकचन्द दोशी (काफ़ा)
ऑनरेरी अध्यापक, मारवाड़ी और
म्युनिसिपल कसरतशाला शोलापुर)

वीर्यरक्षा कमसे कम बीस वर्षकी उम्र तक करनी चाहिये क्योंकि इससे मनुष्यका शरीर दृढ़, दीर्घायु, निरोगी, बन सकता है और मनुष्य सर्वश्रेष्ठ के लिये निरोगी रह सकता है, तथा धर्म कार्य भी कर सकता है । क्योंकि किसी महात्माका वचन है “शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्” अर्थात् शरीर ही धर्मसाधनका आद्य कारण है, इसकी रक्षाके लिये बीस वर्ष तक चटकीला अन्न (भोजनादि) न खाना, स्त्रियोंको कुछदिने कदाचित् भी नहीं देखना, खराब काव्य, उपन्यासादि नहीं पढ़ना, नाटक, सिनेमा, शृङ्गारिक खेल तमाशे नहीं देखना, इन्द्रियको बिना कारण दुष्ट विचारसे हस्तस्पर्श नहीं करना, चाय नहीं पीना, बीड़ी, चुरट, पञ्जादि मादक चीज़ें नहीं पीना, पान सुपारी नहीं खाना, बीस वर्षतक विवाह नहीं करना, पौष्टिक पदार्थ खाना, और निम्न नियमित रूपसे सर्वाङ्गव्ययी प्रातःकाल व्यायाम करना, व्यायाम करनेसे वीर्य रक्तमें मिल कर बल बढ़ाता है । कसरत न होनेसे वीर्य पतन होता है । गरम और मादक चीज़ें नहीं खाना, मिर्च कम खाना, और

रात्रिको ९ बजे सोजाना, और सुबह ५ बजे उठना चाहिये । उल्टे सोना अच्छा नहीं, क्योंकि उल्टे सो जानेसे मूत्राशयका दाब वीर्यपर पड़ता है और स्वभावत्या प्राप्त होती है । रात्रिको सोजानेके पहिले कमसे कम १ घंटे पूर्व पेय पदार्थ लेना चाहिये । सोनेके समय खाना पीना नहीं । हमेशा दाहिने व बाईं करवट सेते रहना उचित है । नाँद खुलते ही विछौनेको त्याग देना, बीस वर्षके उपरान्त उम्रवालोंको नियमित रूपसे स्त्री प्रसङ्ग करना । यदि वीर्य विगड़ा हो तो वीर्य शुद्ध होने समय तक स्त्री प्रसङ्ग नहीं करना ।

शरीर यदि रोगी हो तो उसको औषधि आदिसे निरोग करना, फिर कसरत करके पौष्टिक पदार्थ खाकर पौष्टिक पदार्थ पचाना । वर्ष दो वर्ष तक सेवन करनेसे वे भलीभाँति पचने लगेंगे और वीर्य अवश्य अच्छा हो जायगा । अतएव ऐसा न हो तबतक तो ऊपर लिखे नियम उनको अवश्य पालने होंगे । वीर्य स्तम्भक बड़ी आदि औषधि लेनेसे कुछ भी नहीं होता, खाली पैसे खर्च करनेका धंधा है । उसके जालमें मड़ना वही श्रीमन्तोंके लिये पिस्ता, बदाम, दूध, घी हैं । लेकिन गरीबोंके लिये यह बात मुश्किल है । अतएव उनके लिये पदार्थ-द्विदल चान्य और मृगकन्ठी आदि हैं । चने, मूंग, मटर, उड़द, आदिकी दाउ थोड़ेसे पानीमें भीगोकर साँरे कसरत करके खाना । दाउ जैसे हनम होती जाय, जैसे दाउना परिमाण बढ़ाना । इसके मनुष्य



चलनेसे वीर्यकी रक्षा ग़रूर होगी। वीर्य शरीरका राजा है यह खूब ध्यानमें रखना। प्रजोत्पत्तिके सिवाय इसका व्यर्थ कामान्व होकर व्यय नहीं करना व्यर्थ व्यय करोगे तो अल्पायुपी बनोगे। इत्यलम्।

इस विषयमें जिनना लिखा जाय उतना ही थोड़ा है।

कसरतकी तरकीबें ।

कसरत नाम शरीरको यथायोग्य रीतिसे सर्वाङ्गावयवोंको हलन चलन मिलना है। शरीरको हलनचलन मिलनेसे सर्व अवयव सतेज रहते हैं। और पचनेन्द्रिय सर्वात्कृष्ट रहती है पचनेन्द्रिय अच्छी होनेसे अन्न भी भजीभांति हज़म होता है। अन्न हज़म होनेसे शरीरमें रक्त बढ़ता है, रक्त बढ़नेसे वीर्य बढ़ता है और वीर्य बढ़नेसे शरीर सशक्त होता है।

शरीर बीर्यही होनेसे मनुष्य दीर्घायु होता है और आनन्दित रहता है। आनन्दित रहनेसे सर्व प्रकारके कार्य सुन्दरता पूर्वक होते हैं।

कसरत करनेकी तरकीबें वर्तमान समयमें दो प्रकारकी हैं एक इंग्रेजी तरकीब और दूसरी देशी तरकीब।

इंग्रेजी तरकीबसे शारीरिक क फायदा थोड़ा और खर्च बहुत होता है। और समय भी बहुत लगता है।

देशी तरकीबसे शारीरिक और इतस्तत फायदे बहुत होते हैं और खर्च (पैसा) कम लगता है। देशी तरकीबमें दण्ड, बैठक, पानीमें तैरना, मछलंमपर चढ़ना, लाठी

फिगाना, कुम्ती लड़ना, दौड़ना, नमस्कार करना, कबड्डी खेलना, खे खो, आटिया पाटिया, शूर करेज, मुद्रल आदिके खेल होते हैं।

इंग्रेजी तरकीबमें, क्रीकेट, हौकी, टेनिस, फुटबोल, पैरिल बौग, सिंगल बौर, डबल बौर, बौर बैज, एम्बिक्स, बोटिंग आदि खेल होते हैं।

कुछ इंग्रेजी खेलसे एकाङ्गावयवी कसरत होती है और यह कसरत परतन्त्र, परावलम्बी मूलवान, अनियमित होनी है। देखिये क्रीकेट खिलनेवालोंको ग्रामसे दूर जाना पड़ता है। कमसे कम ११-१२ आदमी इकट्ठे हुए बिना यह खेल नहीं होता, क्रीकेटके सामानके लिये पैसा बहुत खर्च करना पड़ता है और हमेशा टूटफूट भी होती रहनी है, धूपमें खेचना पड़ता है, जाड़ा समय दोपहरकी धूपमें खेचना हानिकारक है। देशी कसरतमें पैसा कुछ नहीं पड़ेगा। कमजब स्वतंत्रतामें चाहे जित स्थानपर नियमित रूपसे होगी। कभी बर नहीं रहेगी, भगवान्के सामने नमस्कार करनेसे भाव शुद्ध रहेंगे। भाव शुद्ध रहनेसे शरीरको गिराड़ने वाले गुण अंगमें पैदा नहीं होंगे। नमस्कारमें एक ही समयमें कसरत भी होगी और ईश्वर भक्ति भी होनायगी। नमस्कारमें दंड बैठककी मिश्रान होती है, इससे शरीर खूबसूरत होता है। देशी कसरतसे शारीरिक लाभ होकर और जो कुछ अन्य लाभ होते हैं वे नीचे लिखे अनुमार हैं।

कुम्तीसे-शरीरमें चपलता आती है, बुद्धि मतेज होती है, और दुर्गन्धोंका पड़ाव करनेके गुण प्राप्त होते हैं।



दौड़-दुष्ट लोगोंके हाथमें वक्त पर पड़ते नहीं। तैरना—स्वयं पानीमें गिर जायें तो तैरनेसे बच जायेंगे। और दूसरा कोई मनुष्य बावड़ी आदिमें गिर जाय तो उसको बचावेंगे।

महत्त्वम् चढ़ना—परको अङ्गार लोगी तो खम्भेपरसे नीचे अट उतर आवेंगे, जंगलमें हिंसक जन्तुओंसे बचाव करनेके लिये शीघ्र वृक्षपर चढ़ जानेसे शीघ्र रक्षा होजायगी।

छाठी फिराना—छाठी फिरानेसे सभीको पादाक्रांत करेंगे, शरीरमें चपलता रहेगी।

शरीरको प्रातःकालीन धूप अच्छी होती है। वर्षा ऋतु आती है तब यह खेल बंध करना पड़ता है। हिंसाभय आदमी नहीं आवे तो खेल बंध करना पड़ता है। इससे आनियमितपन आजाना यह भी अच्छा नहीं है, कारण कि शरीरको कसरत नियमित रूपसे होना चाहिये, नहीं तो हानिकी संभावना है। यह खेल आनन्ददायी होनेसे कभी कभी ज्यादा कसरत करनी पड़ती है। यह भी शरीरको बड़ा भारी धक्का पहुँचाती है। इससे शरीरका रक्त भीगना जाता है, और क्षय रोग बढ़ता है और खानपान भी देखा जाय तो चेवड़ा, चाय, सोडा लिमनेड, बिस्कुट, आदि, गरीब होतो कमेंटीक नत्रका पानी, ऐसे निमित्त पदार्थ पेटमें नानेसे शरीरमें अशक्तता क्यों नहीं बढ़ेगी! और शॉर्ट साईट क्यों न होगी? और सब तरफ चम्मे वाले क्यों न दीवेंगे? और रोती सूरत वाले क्यों न देगे

जायेंगे। जरा विचार करनेकी बात है कि-एसा होनेका कारण ऐसे खेल खेलने वालोंका संसर्ग दूसरा कुछ नहीं। इस प्रकार इंग्रेजी खेलमें बहुतसे लुप्तान होते हैं। क्लबमें ब्रह्मचर्यका महत्व प्रधानतासे नहीं माना जाता।

अब देशी कसरतमेंकी "नमस्कार" नामक तरीका लीजिये—भगवान् के सामने प्रातःकाल शौच, मुख मार्जनादि करके पश्चात् सर्वदा नियमित नमस्कार शुद्ध हवामें करेंगे तो सर्व अवयवोंको कसरत होकर शरीर अच्छा रहेगा।

इससे राजनिष्ठता रहती है और ब्रह्मचर्यव्रत पाला जाता है। और उसके अनुसार अपना वर्णव रखना तथा तदनुसार चलनेका अभ्यास करना चाहिये। अनीतिका कुछ भी प्रचार नहीं होने देना जबतक ऐसा अखाड़ा नहीं बने तबतक अपने गृहमें ही शुद्ध जगहपर नियमित रूपसे प्रातःकाल (शीत ऋतु) में दंड, बैठक, नमस्कार करना। १० से १५ वर्ष प्रमाण वालोंको ३० बैठक और पन्द्रह दंड प्रथम ७-८ आठ दिनतक निरालना अथवा नमस्कार २० करना, फिर आठ दिनके बाद प्रत्येक हफ्तामें ५ दंड और १० बैठक बढ़ाना चाहिये अथवा ५ नमस्कार बढ़ाना चाहिये।

इस प्रकार बढ़ानेका कार्य १०० दंड और सौ बैठक तक बढ़ाना अथवा १०० नमस्कार बढ़ाना इससे ज्यादा नहीं करना। १५ से ३० की अवस्था वालोंको इससे दुगुणी कसरत करनी चाहिये। प्रारम्भमें १०-१५



वर्षवालोंको तथा १० से ५० तक उम्रवालों-
को १-१५ उम्रवालेकी तरह करना चाहिये
और ५० से ऊपर वर्ष वालोंको प्रकृति अनुसार
करनी चाहिये । नहीं तो प्रातःकाल शुद्ध
हवामें टहलने जाना संन्यासो कभी भी टहलने
नहीं जाना क्योंकि इस समय वायु खरान रहती
है । तरुणोंको केवल टहलनेसे ही कमरतकी इति-
श्री नहीं करना चाहिये । यह रीति बृद्धोंके लिये है ।

कसरत करके पश्चात् आधा घण्टे विश्रान्ति
लेना, फिर स्नान करके पौष्टिक पदार्थ अच्छा
रुचिके साथ खाना । स्नान हुए बाद शीघ्र
कसरत करना अच्छा और लाभदायक है ।
किन्तु कमरतके पश्चात् शीघ्र स्नान नहीं
करना चाहिये ।

सर्वाङ्गावयवी सात मिनटमें कसरत होती है ।
आठिया, पाठिया, कवड्डी, खो खो इस खेलसे
शत्रुका वेड़ा तोड़ देना आदि गुण प्राप्त
होते हैं सर्वाङ्गावयवी और थोड़े समयमें
सशास्त्र शरीरको कमरत देनेवाली तरकीब
कुछ हैं तो कुस्ती, नमस्कार, मल्लखम्भ
चढ़ना, पानीमें तैरना, लाठी फिराना,
दंड बैठक यह है । दंड बैठक और
नमस्कार इन तरकीबों को कोई भी साधारण
कमरत करनेवाला बना सकता है ।

अब रही लाठी फिराना, मल्लखम्भ चढ़ना,
तैरना, कुस्ती खेलना, आदि तरकीबें जो म-
नुष्य कमरतमानमें उस्ताद होता है वह
जरूर पढ़ाता है । ऐसे उस्ताद बहुतसे शहर-
में थोड़े बहुत मिलते हैं, उनके पास आप सज्जन
मण्डलीका अखाड़ा बनवाकर उनमें सीख लेना ।

अज्ञानी (दुरवर्त्ताशक) लोगोंके अखाड़ेमें
जाना नहीं कारण कि उसमें जानेसे दुर्गुण
लगते हैं । देशी कमरतकी तरकीबें बहुत करके
वर्त्तमानमें भूख लोगोंके हाथ मौजूद हैं । वह
जो सुज्ञ मनुष्य अपने सद्गुण संभालकर बड़े
कष्टके साथ देशी कमरतकी तरकीबें प्राप्त कर
लेंगे । और दूसरेको बतावेंगे तो उनको बहुत
उपकार होगा । यह नहीं होगा तो प्रथम
चार पांचमौ रक्खा वर्ष करके एक अच्छा
अखाड़ा बनवाया जाय और उनमें अच्छे
नियम रखकर और राजनिष्ठतासे सुव्यवस्थित
चलायेंगे और देशी कमरत जाननेवाले उस्ताद
को तनखा देके सौ-पचास मनुष्य तैयार हो
जायेंगे तो सर्वोत्तम बात होगी । पुनः उसका
सज्जन मनुष्योंमें प्रमिद्ध होनेकी देर न होगी ।
कमरतशालामें राजा लोगों और ब्रह्मचारि-
योंके चित्र लगाना चाहिये । धूपमें कमरत
नहीं करना, एकाङ्गावयवी कमरत नहीं करना,
वर्षमें कमसे कम एक दिन उपवास करना
“ जबतक जीमते (भोजन लेंते) हैं तब तक
कमरत हर हावतमें करना पड़ेगी । ”

कमरत करते समय मन आनन्दित रखना,
और ब्रह्माङ्गदेही बनना ऐसी भावना रखना,
व्यर्थ फिक्र न करना, “ फिक्र करनेसे
सुखमानके सिवाय कुछ नहीं ” यह विश्वास
रखना । शरीर दुबला भी हो तो कुछ हर्ज
नहीं कमरतसे शरीर सशक्त होगा लेकिन कुछ
देरी लगेगी, हां ऊपर लिखे अनुसार कर्त्ताव
होगा तब, “ गुरु बिना विद्या नहीं ” यह
युक्ति कुछ झूठ नहीं है । इत्यत्र विस्तरेण ।



व्याख्यान

जैनधर्मभूषण ब्रह्मचारी

जीतलप्रसादजी,

मेमापति, भारत जैन महामंडल, अधिवेशन,
कलकत्ता।

मंगलाचरण।

गाथा—इदं सद वंदिषाणं तिहुअण हिद मधुर
विसद वक्काणं।

अंतातीद गुणाणं जमो जिणाणं जित्द भवाण ॥

श्लोक—भुवनाभोजमार्तदं धर्ममृतपयोधरम्।

योगिकल्पतरुं नौमि देवदेवं वृषभजम् ॥

भावार्थ—सौधर्म आदि १०० इन्द्रोसे
बंदनीक, तीन भुवनके जीवोंको हितकारी,
मिष्ट और निर्मल बाणीको प्रकट करनेवाले,
अनंत गुणोंके धारी, और संसारको जीतने-
वाले जिनोंको नमस्कार होहु। तीन भुवनके
प्राणी रूप कमलोंको विकसित करनेके लिये
सूर्य, वर्षारूपी अमृतको वर्षानिके लिये मेघ,
योगियोंके लिये कल्पवृक्ष और देवोंके देव
ऐसे धर्मकी ध्वजा रूप व वृषभके चिन्हको
रखनेवाले श्री ऋषभदेव इस अवसरपिणी
कालके प्रथम तीर्थंकरको नमस्कार करता हूं।

प्रिय सज्जन महोदयगण और सत्तारी वर्ग !
कलकत्ते ऐसे भारतके बृहत् नगरमें इस “भारत
जैन महामंडल” का वार्षिकोत्सव होनेपर यह
बहुत उचित होता यदि इस सम्मेलनको सफलता
पूर्वक निर्वाह ले जानेका उत्तरदायित्व
अर्थात् मेमापतिका पद जैन समाजमें उपस्थित
अनेक विद्वान् और प्रतिष्ठित पुरुषोंमेंसे कि-
सीको दिया गया होता। मुझ अल्पश्रुत,

तुच्छबुद्धि और साधारण पुरुष पर ऐसे महान्
कार्यका भार सौंपना एक अल्पवयस्क बालकके
मस्तक पर कई मन भार लाद देना है। पर
जब जब आप महानुभावोंने मुझ अल्पज्ञसे
ही इस महान् कार्यके सम्पादनको लेना एक
मत हो प्रकट किया है तब यह अनुचित
जान पड़ता है कि मैं आपकी इच्छाका अप-
मान करूं। अतएव मैं इसे स्वीकार करता
हुआ आप सज्जनोंसे इस बातकी दृढ़ आशा
रखूंगा कि मेरे द्वारा यह कार्य निर्विघ्न पूर्ण
हो, इसमें मुझे हर प्रकारकी सहायता दे
और ऐसा प्रयत्न करें, जिससे हम आप
सर्व परम मंगल सहित कुछ वास्तविक
कार्यका उपाय करके सहर्ष अपने २ स्थानको
विदा हों।

प्रथम इसके कि मैं आसन ग्रहण करूं यह
उचित जान पड़ता है कि मैं अपने विचार
आपके सामने उपस्थित करूं और आप उन्हें
एक चित्त हो श्रवण करें। आप यह अवश्य
ध्यानमें रखें कि जो कुछ मेरा वक्तव्य होगा
वह मेरा अपना ही विचार होगा। उसका
उत्तरदायित्व मेरे पर होगा। वह विचार इस
मंडलका है व जैनसमाजका है ऐसा उस समय
तक नहीं माना जासकता जब तक वह प्रस्ता-
वरूपमें स्वीकार न कर लिया जावे।

जिनधर्म।

जिस धर्मकी शक्तिने आज हम आप सबको
इस स्थान पर आकर्षित कर लिया है, वह
धर्म कैसा जगत्के जीवोंका कल्याणकारी है,
पहले मुझे इस पर थोड़ासा विचार करना है।



किसी भी वस्तुके स्वरूपको विचारते हुए व उसका वर्णन करते हुए समयमें उसका सर्व स्वरूप विचारना व कहना खास कर उस व्यक्तिके लिये जो सर्वज्ञ न हो पिल्कुल असंभव है । एक समयमें सर्व पदार्थोंके सर्व स्वरूपको जाननेकी शक्ति केवलज्ञानमें होती है । यह ज्ञान आत्माका स्वभाव है । योगियोंके ईश्वर-इस अवसरपिणी कालमें होचुके श्री ऋषभ आदि श्री महावीर पर्यंत २४ तीर्थंकर व श्री भरत, सगर, विजय, अवल, बाहुबली, हनुमान, प्रद्युम्न, गौतम, सुधर्म, जंबूस्वामी आदि, अनगिनती केवली-इन्होंने केवलज्ञान प्राप्त कर वस्तुके सर्व स्वरूपको एक कालमें जान लिया था । हम इस समय अल्प-ज्ञानी हैं इससे एक वस्तुके स्वरूपको घीरे २ ही विचार सकते और कह सकते हैं ।

यद्यपि एक पदार्थमें अनंत गुण होते हैं पर किसी पदार्थको पहचाननेके लिये कि यह अमुक पदार्थ है व अमुक नहीं है कुछ थोड़ेसे गुण छोट लेने पड़ते हैं-इन्ही गुणोंके द्वारा हम वस्तुओंकी भिन्न पहचान कर सकते हैं । ऐसा होने पर भी हम उस वस्तुके छोट्टे हुए गुण या स्वभावोंको भी अपने वचनोंके द्वारा एक साथ दूसरोंको नहीं समझा सकते । हमको अपने शब्दोंसे काम लेना पड़ेगा । वे शब्द अक्षरोंसे बने होते हैं इसलिये अक्षर या शब्द कहनेमें समय तो बहुत चला जायगा पर सुनने व समझने वालेको उसके एक स्वभावका ही ज्ञान होगा जब कि दूसरे स्वभावोंको बचानेके लिये दूसरा शब्द व्यवहार करना

पड़ेगा ।

एक शब्द द्वारा वस्तुका स्वरूप बताते हुए समझनेवालेको यह ज्ञात रहे कि इसमें और भी स्वभाव हैं । जैनाचार्योंन “ स्यात् ” शब्दका प्रयोग बनाया है । जिसके अर्थ हैं “ कथंचित् ” या किसी अपेक्षासे “ from some point of view ”.

वस्तुके स्वरूपको किसी अपेक्षा कहनेको ही “ स्याद्वाद ” कहते हैं, स्याद्वाद द्वारा पदार्थका स्वरूप अनेकांत या अनेक स्वभाव-वाला है ऐसा प्रतीत होता है । जिससे समझनेवालेको एक अंशरूप मिथ्याज्ञान नहीं होने पाता है । “ अग्नि दाहक है ” ऐसा कहना ईंधनको जलानेकी अपेक्षा ठीक है पर सर्वथा उसमें इतना ही गुण नहीं है किन्तु वह भोजन पकानेकी अपेक्षा “ पाचक ” और प्रकाश करनेकी अपेक्षा “ प्रकाशक भी है । इस स्यात्के लिये स्यात् दाहक, स्यात् पाचक, स्यात् प्रकाशक है । जिस समय हम स्यात् या कथंचित् या किसी अपेक्षासे दाहक है ऐसा कहेंगे तो सुननेवाले को यह अवश्य ध्यानमें आयगा कि इसमें और भी स्वभाव हैं । वह मात्र दाहक ही है, पाचक या प्रकाशक आदि रूप नहीं हैं ऐसा ऐकान्तिक मिथ्याज्ञान न होगा । अग्निमें दाहक, पाचक या प्रकाशक तीनों स्वभाव एक ही समयमें रहते हुए शब्दोंसे एक कालमें तीनोंका कहना असंभव है । पर जो अग्निको समझना चाहता है उसे अग्निका यथार्थ ज्ञान होना चाहिये अन्यथा वह अग्निसे अपना काम न निकाल सकेगा ।



इस दृष्टान्तसे यह सिद्ध है कि किसी पदार्थका ज्ञान करनेके लिये “ स्याद्वाद ” की अतीव आवश्यकता है, यह बात सत्य है—यथार्थ है—इसीलिये विक्रमकी २ री शताब्दीमें होनेवाले दिग्विजयी न्यायवेत्ता स्वामी समन्तभद्राचार्यने आसमीमांसामें कहा है—

तत्त्वज्ञानं प्रमाणं ते गुणपक्षवेभासनम् ।

क्रमभावि च यज्ज्ञानं स्याद्वादनयसंस्कृतम् ॥१०१॥

स्याद्वादकेवलज्ञाने सर्वतत्त्वप्रकाशने ।

भेदः साक्षादसाक्षाच्च ह्यवस्त्वन्यतमं भवेत् ॥१०२॥

भावार्थ—जैसे एक कालमें सर्व पदार्थोंको प्रकाशनेवाला केवलज्ञान प्रमाण अर्थात् सम्यग्ज्ञान है ऐसे ही क्रम २ से होनेवाला जो स्याद्वाद नयके द्वारा संस्कारित व प्रकाशित ज्ञान है सो भी प्रमाण ज्ञान है ।

सर्व तत्त्वोंके प्रकट करनेमें केवलज्ञान और स्याद्वाद दोनों ही समर्थ हैं भेद केवल प्रत्यक्ष और परोक्षका है । इन दोनोंके सिवाय जो वस्तुका स्वरूप है वह अवस्तु सदृश ही होता है । अर्थात् स्याद्वाद नयके बिना पदार्थोंका स्वरूप हम छद्मस्थों द्वारा ठीक २ नहीं जाना जा सकता ।

वस्तुके भीतर एक ही कालमें नित्य, अनित्य, एक, अनेक, अस्ति, नास्ति आदि विरोधी स्वभाव हैं इनका कथन स्याद्वाद नयके द्वारा अविवोध हो सकता है । जैसे वस्तु अपने गुणोंके ध्रौव्यपनेकी अपेक्षा नित्य है पर उन गुणोंमें जो समय २ पर परिणमन या पर्याय होती हैं उनकी अपेक्षा अनित्य है—योंकि हर एक वस्तु या द्रव्य ११ यह दृष्टान्त है—

‘ सत् द्रव्यलक्षणम् ’ ‘ उत्पादव्ययध्रौव्ययुक्तं सत् ’ गुणपर्ययवत् द्रव्यम् (२९, ३०, ३८ अ० ५ तत्त्वार्थ सूत्र श्री उमास्वामीकृत वि० सं० ८१)

भावार्थ—जो सत् हो सो द्रव्य है, जिसमें एक ही काल उत्पत्ति, विनाश, और ध्रौव्य या अविनाशी या नित्यपना पाया जाय सो सत् है अथवा जिसमें गुण और पर्यायों या अवस्थाएं एक कालमें रहें उसे द्रव्य कहते हैं । मतलब यह हुआ कि गुण सदा बने रहते हैं और उनमें जो समय २ स्वाभाविक या वैभाविक, सदृश या विसदृश अति सूक्ष्म समुद्रकी कलोलें व रत्नकी क्रांतिकत् परिणमन होता है वह अनित्य है अर्थात् समय २ नया २ परिणमन होनेसे पुराने परिणमनका व्यय अर्थात् नाश और नएका उत्पाद अर्थात् उपनना होता है । वृक्षमें आमके भीतर वर्ण गुण रहते हुए उस वर्णकी हरी अवस्थाका पीला होते जाना परिणमन है अर्थात् हरेपनका व्यय होकर पीलेपनका उत्पाद है ।

नित्य और अनित्य दोनों स्वभावोंको समझनेके लिये हमें कहना पड़ेगा कि ‘ स्यात् नित्यं ’, ‘ स्यात् अनित्यं ’, तथा दोनोंको एक साथ लगाकर कहनेकी अपेक्षा ‘ स्यात् नित्यानित्यम् ’, क्योंकि बचनोंमें एक समयमें इनके कहनेकी शक्ति नहीं है । जब कि दोनों स्वभाव एक समयमें ही हैं इस अपेक्षा ‘ स्यात् अवतत्त्वम् ’ अर्थात् इस अपेक्षासे स्वरूप कथन बचनगोचर नहीं है । परंतु ऐसा अवतत्त्व होने पर भी नित्य है, या अनित्य है या



नित्यानित्य है। इस तरह नित्य, अनित्य और अव्यक्त तीन स्वभावोंके सात भेग बन जाते हैं। इसीसे स्याद्वादनयको सप्तभंगी भी कहते हैं। विक्रम सम्वत् ४९ में होनेवाले श्री कुंदकुंदाचार्य महाराजने श्री पंचास्तिकायमें इस सप्तभंगीकी आवश्यकता बताई है—

गाथा-सिय अतिथि पतिथि उहयं अव्यक्तव्यं पुणोय
तत्तिदय ।

देव्यं खु सप्तभंग आदेशपसेण सभवादि ॥१४॥

इस स्याद्वादके स्वरूपको शंकराचार्यने कुछका कुछ समझकर अपने भाष्यमें खंडन किया है। प्रयागके विद्वान् महामहोपाध्याय डा० गंगा-नाथ झा ने साफ तौरसे कहा है कि यदि शंकराचार्यजैनशास्त्रोंका मनन करते तो उनको ऐसा कहना न पड़ता। इस स्याद्वादकी यथार्थताको पूनाके डा० भण्डारकर और जर्मनीके प्रोफेसर जैकोबीने यथार्थ माना है।

वर्तमान जैन विद्वान् बाबू चम्पतराय बैरिष्ठर हरदोईने अपने की ऑफ नॉलेज Key of Knowbrgeमें सफा ७२९में इस सिद्धांतके महत्त्वको बताते हुए कहा है It gives us a many-sided, and therefore, necessarily true view of the truth which we are all seeking to discover " यह हमें सत्यका अनंक आपेक्षिक और इसलिये निरुक्त सत्य स्वरूप बता देता है जिस सत्यकी हम सब खोज कर रहे हैं-। सप्तभङ्गीतरंगिणी और स्याद्वादमंजरीसे इस स्याद्वादका स्वरूप निम्नासे प्राप्त हो सकता है।

इस अनादि जगत्में आत्माका हित करने-वाला जो वस्तुके स्वरूपका यथार्थ ज्ञान है वह "स्याद्वाद" के द्वारा होता है और यही जिन आगमका मूल बीज है। इसलिये इस तरफ आपका लक्ष्य दिलाना इसीलिये उचित समझा गया कि आप धार्मिक तत्वोंको यथार्थ जानकर अपना हित कर सकें। यही स्याद्वाद या अनेकांत नय परस्परके वादियोंके विरोधोंको दूर कर एकता और समताका लाने वाला है इसीलिये स्वामी अमृतचंद्र आचार्यने विक्रमकी १०वीं शताब्दीमें अपने पुरुषार्थसिद्ध्युपाय ग्रंथमें कहा है "विरोधमथनं नमाम्यनेकांतं" यह अनेकांत विरोधको मेटनेवाला है इसीलिये मैं नमस्कार करता हूं। यह जिनवर्म किसीका ऐसा सिद्धांत नहीं है कि जिसको हमें बलात्कार मनाया जाय—यह वास्तवमें आत्माकी उन्नतिको एक सत्य विज्ञान है इस कारण इसको 'Self Science' या 'Key to Self realisation' यानी आत्म विज्ञान या आत्मानुभवकी कुंजी कहें तो कोई अत्युक्ति नहीं है।

हम और आप या सर्व प्राणी सुख और शांति peace and happiness चाहते हैं पर उसके लिये बाहरी चीजोंके भोगनेमें जाते हैं। उसका फल यह होता है कि तृष्णा और आकुलता बढ़ती जाती है। सुख शान्तिके बदलेमें अशांति और दुःख हमें प्राप्त होता है। जहांतक विचार गया है व आप विचार करेंगे तो प्रकट होगा कि सुख और शांति हमारे ही आत्माका स्वभाव है । हम जब



अपने और इस कागज़के मध्यमें जो हमारे हाथमें है क्या अंतर है इसपर लक्ष्य देंगे तो विदित होगा कि समझने, देखने, जाननेकी शक्ति हमारेमें है पर इस कागज़में नहीं है । इस शक्तिको चेतनाशक्ति कहते हैं । शक्ति गुण है । गुणका लक्षण है “द्रव्याश्रया निर्गुणागुणाः” (४० अ० ९ त० सूत्र) जो द्रव्यके आश्रय रहें व उनमें और गुण न हों सो गुण हैं । अतएव जिस द्रव्यमें चेतनागुण है उसीको जीव या आत्मा तथा जिसमें नहीं है उसीको अजीव या अनात्मा या जड़ कहते हैं । वस इस लक्षणसे यह प्रकट है कि जो वस्तु हमारे शरीरमें रहती है वह जीव या आत्मा है । उसके रहते हुए शरीरके अगोपांग काम करते व इन्द्रियोंके द्वारा ज्ञान होता पर उसके न रहते हुए कुछ नहीं होता है ।

आत्मामें जैसे चेतना गुण है ऐसे ही शान्ति या वीतरागता भी गुण है क्योंकि जब हम क्रोध, मान, माया, लोभकरते हमारा आत्मा हेसित होता-दुःखी होता । पर जब वे नहीं होते या मन्द होते हैं तो हमारा आत्मा शान्त और सुखी रहता है तथा इसीसे यह भी सिद्ध है कि सुख भी आत्माका स्वभाव है । इसलिये आत्माके विशेष गुण चेतना, शान्तता और आनन्द हैं—जो परमाणु या स्कंदरूप पदार्थ हैं उनसे पुद्गल कहते हैं जिनमें द्रव्य आत्माके तो विशेष गुण नहीं हैं पर स्पर्श, रस, गंध और वर्ण हैं जो प्रत्यक्ष प्रकट हैं ।

ये दो मुख्य द्रव्य हैं । इन्हीं दोनोंके सन्तुलनसे जगत्की नाना क्रियाएं हो रही

हैं । प्रकृतिमें मेघोंका पानी होना, पानीसे मेघ होना, नदी बहना, पृथ्वी तटकी मिट्टीका बहना, नदीके मध्यमें उसका जमा हो पृथ्वी बन जाना, बर्फ गिरना, आतप व चंद्र प्रकाश होना आदि कृत्य पुद्गलके परस्पर सम्बन्ध और वियोगके कार्य प्रत्यक्ष प्रकट हैं । घर, बट, पट, वर्तन आदि वस्तुओंका बनाना इस शरीरी प्राणधारीका प्रकट है । ऐसी ही क्रिया अनादि कालसे चली आ रही है और चली जायगी । इसीसे यह जगत् सत् है अर्थात् जो २ पदार्थोंका यह समुदाय है वे सर्व सदासे हैं सदा रहेंगे । केवल उनमें अवस्था बदलती दीखती है इसीसे यह जगत् असत् है ।

प्रत्येक आत्मा अपने शरीरप्रमाण आकारको लिये हुए शलकता है सो सत्य है क्योंकि प्रदेशत्व, अस्तित्व, वस्तुत्व, द्रव्यत्व, अगुल्लघुत्व, प्रमेयत्व साधारण गुण हैं जो सर्व आत्माओंमें, सर्व परमाणु व अन्य स्कंधोंमें तथा अन्य चार द्रव्योंमें पाए जाते हैं जिनकी भी सत्ता इस जगत्में है । स्थान धरनेके स्वभावको प्रदेशत्व गुण कहते हैं । इसलिये हर एक वस्तु आकारको रखने-वाली है, आत्मा और पुद्गल जगत्में ४ कार्य करते हैं—चलना, टहरना, स्थान पाना और निन्य परिणमन करते रहना । हर एक कार्यके लिये उपादान और निमित्त कारणकी आवश्यकता होती है । इन चारों कार्योंके उपादान कारण वे स्वयं हैं पर निमित्त कारण ये चार मूल द्रव्य हैं । धर्मास्तिजांत्य



और अधर्मास्तिकाय जो दोनों अखंड, अमूर्तिक लोकव्यापी अजीव द्रव्य हैं चलने और ठहरनेमें क्रमसे उदासीनपनेमें कारण हैं तथा आकाश द्रव्य सर्वको स्थान देता और काल द्रव्य पर्याय पलटनमें सहाई है। आकाश अखंड और अनंत है। कालके कालाणु लोकाकाशके असंख्यात प्रदेशोंके समान असंख्यात हैं।

सुख शांति जो हमारे ही आत्माके स्वभावमें है उसीको प्राप्त करना हमारे आत्माका परम हित है। इसलिये हमें अपने ही आत्माके असली स्वरूपको जान कर उसपर दृढ़ श्रद्धानुष्ठान कर उसका ध्यान, मनन, पूजन, भजन करना चाहिये। यही जिनधर्म है। आत्मामें जो मिथ्याभाव, अज्ञान और असंयम या रागद्वेषादि विकार हैं उनको मेट कर आत्माको सच्चा श्रद्धावान, ज्ञानी, और संयमी या वीतराग बनाना सुख शांतिका पूर्ण लाभ करना है। और इस उपायको जितने अंश किया जायगा सुख शांति प्राप्त होगी। आत्मा आप ही अपना बिगाड़ या सुचार करने वाला है। यह आप ही कर्ता और भोक्ता है। सुखशांति और चेतना आत्माका स्वभाव होने पर भी हमारे और आपके आत्माओंको इसका ठीक और पूर्ण लाभ नहीं है। यह इस बातको प्रमाणित करता है कि हमारे आत्मामें कुछ अशुद्धता है। अशुद्धता दूसरी वस्तुके भेदसे होती है। जिस वस्तुका भेद है उसे कर्म या पाप पुण्य कहते हैं। जैन सिद्धांत कर्मोंको

पुद्गलकी वर्गणाएं बतलाता है। जब २ हमारेमें शुभ या अशुभ कोई अशुद्ध भाव होता है इनका आकर्षण या आश्रय होता है—साथ ही रागद्वेषके निमित्तसे इनका आत्माके साथ कुछ कालके लिये बंध होजाता है—उन्हींका असर होते रहना दुःख या संसारिक सुखका भोगना है। आत्माको इनसे बचानेके लिये वे शुद्ध भाव करने होंगे जिनसे इनका आना रुके या संवर हो तथा जो पूर्व बद्ध हैं उनकी निर्जरा हो जावे जिनमें आत्मा सर्व बंधनोंसे छूटकर मोक्ष हो जावे। और अपने परम सुख शांत मय चैतन्य स्वरूपको प्राप्त कर सदाके लिये पवित्रात्मा हो जावे।

आत्माका आत्माके सिवाय पर पदार्थोंमें मोह करना जब बंधका कारण है तब अपने ही शुद्ध स्वरूपका ध्यान करना मोक्षका कारण है। इसी उद्देश्यके लिये जो इन्द्रिय विनयी होते हैं वे सर्व परिग्रह त्याग निर्ग्रह हो निरंतर स्वाध्याय करते हुए इसी तरह साधुमार्ग धारण करते हैं जैसा श्री महावीरस्वामीने किया था। प्रसुने वत्तादि रहित परम हंसकी अवस्थामें केवलज्ञान प्राप्त किया था।

जो इस मार्गको धार नहीं सकत वे गृहस्थमें रहते हुए धर्म, अर्थ, काम, पुरुषार्थोंको पालते हैं। न्यायपूर्वक द्रव्य कमाना, जीवदयाके तत्त्वको ध्यानमें रखकर भोजनपान वस्त्राच्छादन आदि करना जिससे शरीर त्याग्ययुक्त रहे और पशुपक्षी आदिकोंको



कष्ट न पहुँचे । तथा आत्मोन्नतिके उद्देश्यको ध्यानमें रखते हुए जिन तीर्थकारोंने व अन्य आत्माओंने अपनेको शुद्ध कर लिया उनकी भक्ति उनके नाम लेकर, उनकी ध्यानाकार मूर्तिओंके द्वारा उनके ध्यान व मोक्ष स्थानों व उनके परमपदके कालका निमित्त मिलाकर व उनके गुणोंको स्मरण करके करते हैं, निर्गुण साधुओंकी सेवा करते हैं, पवित्र शास्त्रोंको पढ़ते हैं, मन और इन्द्रियोंको वशमें करनेके लिये संयम पालते हैं, प्रातः और संध्याको ध्यानका अभ्यास करते हैं और यथायोग्य पात्रोंको धर्मसे व करुणाबुद्धिसे सर्वको आहार, औषधि, अभय और विद्यादान करते हैं । अहिंसागुणवत, सत्यागुणवत, अचौर्यागुणवत, स्वस्त्रीसन्तोष और परिग्रह प्रमाण इन पांच व्रतोंका अभ्यास करते हैं । यही जिनधर्म है जिसको अनादिकालसे तीर्थकरादिकोंने पाया था और इसीका उपदेश किया था ।

स्याद्वाद नयके द्वारा पदार्थोंको जानकर तथा समदृष्टी होकर रागद्वेष त्यागनेका अभ्यास करते हुए स्व और परकी उन्नति करना ही जिनधर्म है ।

ऐसा ही श्री कुंदकुंदाचार्य और उनके शिष्य उमास्वामी ने कहा है:—

इत्थं पाणवरित्ताणि सेवि दय्याणि गाहणा निधं ।
तांणि पुन जाण तिज्जिणि अभ्याणं सेव जिन्हेयदं

॥१॥ ग० गार

सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्र्याणि मोक्षमांगः ॥ १

: अ० १ त० सूत्र ॥

अज्ञानमवच्छां । सदृष्टानदो ह्येव सम्मत्तं ।

वक्थय असेत्त दोसो सयल्लुण्णया ह्वे अंत्तो

॥५॥ नि० सा०

बुद्ध तरह भीरु रोसो रागो मोहो चिंता
जरा रुजा मिच्छू ।

स्वेद खेदं मदो रई विण्णिय निदा ज पुण्वेगो

॥६॥ नि० सा०

तस्स मुहम्मद वयणं पुव्वावरसो विरहिय सुद्ध ।

आगममिदि परिकहिंयं तेणदु कहिया हवन्ति तद्धत्था

॥८॥ नि० सा०

जीवा पुण्णल काया धम्माधम्माय काल, अयासं ।

तद्धत्था इदि भणिदा णाणा गुण वज्जः एहि

सज्जुत्ता ॥९॥ नि० सा०

जीवाजीवाश्रवणं वंशं वरनिर्जरा मोक्षास्तत्त्वम् ॥ ४

अ० १ त० सूत्र

भावार्थ—सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान,

सम्यक् चारित्र आत्माकी शुद्धिका उपाय है

निश्चयसे तीनों ही आत्माका गुण है—इसीसे

उसीकी रुचि, ज्ञान व उसीमें तन्मय होना

मोक्षका मार्ग या अपनी स्वतंत्रताका लाभ

करना है । व्यवहारसे आस, आगम, तत्त्वार्थोंका

श्रद्धान करना सम्यग्दर्शन, उनका ज्ञान सम्य-

ग्ज्ञान, उनका सेवन सम्यक्चारित्र है । क्षुधा,

तृषा, भय, द्वेष, राग, मोह, चिंता, जरा,

रोग, मरण, स्वेद, खेद, मद, रति, विस्मय,

निद्रा, जन्म, उद्वेग ऐसे १८ दोष रहित सर्व

आत्मिक गुणोंसे पूर्ण आस या पृथ्वी देव हैं

उसके द्वारा प्रकट पूर्वापर दोष रहित और

शुद्ध आगम ह । जीव, अजीव, आश्रव, वंश,

सिर, निर्जरा, और मोक्ष ये मान तत्त्व हैं ।

जीव अजीवमें जीव, पुद्गल, धर्म, अवर्म, काल

और आकाश छः द्रव्य गर्भित हैं । जीव और

अजीवके सम्बन्धसे ही आश्रवा आदि पांच

तत्त्व हैं । यही जिनधर्म है । जगत्के अन्य



सिद्धांतोंसे मुकाबला किये जाने पर एक निष्पक्ष तत्त्वज्ञानीको इसीके द्वारा 'सन्तोष' होता है । उक्त चम्पतराय वैरिधर १००० सफेकी पुस्तक "की ऑफ नोलेज" Key of Knowledge में वादानुवाद और विचारके पीछे सफा ८४६ में कहते हैं—

"When we approach religion as humble seekers after Truth, and not in the spirit of bigotry or conceit, it will be seen that Jainism stands unrivalled among the systems which claim to impart the Truth."

भाव—जब हम धर्मको हठ या छलकी दृष्टिसे नहीं किंतु सत्यकी खोजसे देखेंगे तो हमें मालूम होगा कि सत्य बतानेका दावा करनेवाले सिद्धांतोंमें जैन सिद्धांत सर्वोच्च स्थान पाता है ।

हम आप जब जैनी या जिनधर्मधारी या यों कहिये वीतराग विज्ञानी, भाव, कर्म, रागद्वेषादि, द्रव्यकर्म ज्ञानावरणादि तथा नोकर्म शरीरादि इन तीनों प्रकारके कर्मोंको जीतने वाले जिनके भक्त प्रसिद्ध हैं तब यह तो सबसे पहले हमारा कर्तव्य है कि हम इस जिन धर्मका पक्का श्रद्धान करके इसको अपने अभ्यासमें लें ।

हम जानते हैं कि आपने बहुतोंका यह उत्साह है कि यह पवित्र धर्म निमग्न उत्पत्तिक पता इतिहासकी खोजके बाहर है जो आज २४४४ वर्ष हुए श्री महावीरस्वामीके समय भी विद्यमान था । श्री महावीरस्वामीने

इसे चलाया नहीं था क्योंकि बौद्धोंके त्रिपिटक आदि प्राचीन ग्रंथोंमें भी महावीरस्वामीको जिन धर्मका चलानेवाला न लिख कर उपदेश दाता लिखा है । उस धर्मका प्रचार करें अर्थात् और अनेक जनोंको इसकी सच्ची रोशनीमें लाकर उनकी आत्माका कल्याण करें । पर यह आपकी भावना तब ही सफल होसकेगी जब आप इसको धारण करेंगे—स्वयं अपने चारित्र्यसे अपनेको श्री महावीरस्वामीका अनुयायी प्रकट करेंगे । जैसा पहले क्षत्रियवीर चंद्रगुप्त चाण्डेरायादि जैनी राजाओंने जब ग्रहस्थ में रहे तब न्यायपूर्वक राज्य किया, शत्रुओंसे देशको बचाया और जब निर्वृत्तिमार्गी हुए तब कर्मोंको परास्त करनेका यत्न किया ऐसा ही वीरत्व जब आप धारण करेंगे, आपकी छायामें अनेक आत्माएं आकर अपना कल्याण करेंगीं ।

इस समय जो इस पवित्र धर्ममें दिगम्बर और श्वेतांबर भेद है सो न श्री ऋषभदेवके समयमें, न श्री पार्श्वनाथके वक्तमें और न महावीरस्वामीके समयमें थे । इस भेदका प्रारंभ यद्यपि राजा चंद्रगुप्त मौर्यके समयमें हुआ था पर इसकी प्रथक् २ स्थिति विक्रमकी द्वितीय शताब्दीमें हुई हो ऐसा प्रकट होता है ।

जो कुछ भी हो, इस समय हम सब जैन नामधारियोंका यह कर्तव्य है कि मूल सिद्धांतोंको जानकर उन पर चले और अपना हिन करें । तथा जब हम सब जैनी कहलाते हैं तब हम अपनी एक श-



क्तिसे जो कुछ काम परस्पर मिलके कर सकते हैं उनको करें । परस्पर एक दूसरेके श्रद्धान, ज्ञान, चारित्र्यमें बाधा न पहुँचाकर परस्पर एकता रखकर हम जो कुछ काम कर सकते हैं उसे अच्छी तरह सफाईसे करें ।

भारत जैन महामंडल ।

वर्तमानमें इस मंडलका यही उद्देश्य मालूम होता है । यद्यपि यह मंडल सन् १८९९में जैन यंग मेन्स एसोसियेशनके नामसे भारत-वर्षीय दिगम्बर जैन महासभाके कुछ सदस्यों द्वारा इसलिये खुला था कि इंग्रेजी पढ़े जैनी भाई अपने धर्मका ज्ञान प्राप्त करें व महासभाके कार्योंकी उन्नति करके जैन समाजको तरकीपर लावें । उस समय इसका क्षेत्र अप्रकट रूपसे दिगम्बर जैन समाज ही था पर पीछे इसका क्षेत्र कुल जैन समाजके अंदर एकता रखते हुए जैन समाजकी उन्नति और जैन धर्मकी प्रभावना करना हो गया है । इस मंडलने १८ वर्षमें यद्यपि कोई बहुत बड़ा अमली काम करके नहीं बताया है पर अपने इंग्रेजी 'जैन-गङ्गा' मासिकपत्रको चलाकर अंग्रेजी पढ़ोंमें धर्मकी जागृतिको बनाए रखनेके सिवाय इसने पश्चिममें जैन धर्मका बीज बुवाया है व जैन ग्रंथको इंग्रेजीमें प्रकाशित करा इंग्रेजी पढ़ी दुनियांको जैन धर्मका रस पिलानेका उपाय किया है । परमात्मा प्रकाशका उल्था पढ़के बहुतसे भारतके विद्वानों जैन धर्मकी प्रशंसामें पत्र भेजे हैं । Key of Knowledge, Practical Path, Draya Sangrah, Outlines of Jainism आदि ग्रंथोंका

इंग्रेजीमें प्रकट होना मंडलके उत्साही सदस्योंका ही काम है । यह मंडलकी ही प्रेरणाका फल है जिससे बाबू सरचंद्र घोषाल एम. ए. जैसे कई बंगाल देशके विद्वानोंको जैन ग्रंथोंके अवलोकन व उल्थाका शौक पड़ा है ।

मंडलके मुखिया मि. जुगमन्दिराल जैनी जन हाईकोर्ट इन्दौर कई वर्षोंसे कई जैन ग्रंथोंके उल्था करनेमें लीन हैं । मंडलकी सोची हुई प्रणालीके अनुसार आपने जैन धर्मके मुख्य २ शब्दोंका एक छोटा कोष भी बना दिया है जो Central Jain Publishing House, Arrah के व्यवस्थापक बाबू देवेन्द्रकुमार द्वारा छप रहा है । परम विद्वान् श्री. नेमिचंद्र सिद्धांत चक्रवर्ती द्वारा रचित सूक्ष्म विद्याके भंडार श्री गोमटसार जीवकांडका सामान्य उल्था समाप्त करके अब उसके कर्मकांडका उल्था कर रहे हैं ।

वर्तमान दशा ।

यद्यपि मंडलने कुछ किया है ऐसा कहा गया है पर वर्तमानमें जो दशा जैनजातिकी हो रही है वह भी अतिशय शोचनीय है ।

(१) पहली बात तो यह है कि हमारे धर्मग्रंथ बहुतसे अभी तक तालोंमें बन्द हैं, दीमकोंके भक्ष्य हो रहे हैं । उनमें अनेक रख हैं पर वे प्रकाशित नहीं होते । कर्णाटक देशमें घवळ, जयघवळ, महाघवळ व अन्य बहुतसे ऐसे ग्रंथ हैं जिनका प्रकाश करना अतिशय जरूरी है । धर्मकी उन्नतिके कोई योग्य साधन नहीं हैं । न हमारे अनेक



उपदेशदाता भ्रमण करते हैं और न हम अपने सिद्धांतोंको अनंक भाषाओंमें उल्था कराकर प्रकाशमें लाते, न उनका भाव बनानवाली लाखों पुस्तकें प्रकट कर सुफ्त वितरण करते हैं। धर्मप्रचारके ये दो जो बड़े साधन हैं जिनके बलसे बौद्धधर्म फैला व ईसाई धर्म फैल रहा है, हमने अपने हाथमें नहीं धारण किये हैं।

(२) दूसरी बात यह है कि हमारेमें एकता नहीं है। हम परस्पर ईर्ष्या रखने हुए एक दूसरेको हानि पहुंचानेका उपाय करते हैं।

(३) तीसरी बात यह है कि हमारेमें शिक्षाका बहुत कम प्रचार है। जिस शिक्षाको श्री ऋषभदेवने स्वयं अपने पुत्र व पुत्रियोंको बताया था वह शिक्षा हमारे सर्व बालक व बालिकाओंमें नहीं है—१००० में ५०५ बालक और ९६० बालिकाओंका अशिक्षित रहना क्या हमारी जातिकी पशु समान नहीं बनाए हुए है? जिस जातिकी माताएं मूर्ख हैं वहां शिक्षाका प्रचार कैसे हो?

(४) चौथी बात यह है कि हमारे यहां बालविवाह, वृद्धविवाह, कन्याविक्रय, व्यर्थ व्यय आदि कुरीतियां अभी तक फैली हुई हैं।

(५) पांचवी बात यह है कि हममें चारित्रिकी हीनता होती जा रही है; शुद्ध खानपान, व्यायाम और ब्रह्मचर्य जो खास शरीर रक्षाके साधन हैं उनसे हम विगुण हो रहे हैं। हमने अपने मृत्यु न्याययुक्त

व्यवहारको कलंकित कर दिया है। हमने न्याय व शांतिसे व्यवहार करना छोड़ दिया है। हम दुनियांके फेशन पर चलकर चमड़ेकी अधिक वस्तुएं व्यवहार कर दिन पर दिन हीन चारित्र होत जात हैं।

(६) छठी बात यह है कि कुछ उच्च विद्याके अभाव व कुछ प्रमाद वश हम देशकी सेवामें भाग नहीं ले रहे हैं। हमारे जैनियोंका कोई मेम्बर वाइसरायकी लेजिस्लेटिव कांसिलमें मेम्बर नहीं, कोई हाईकोर्ट जज नहीं, कोई देशका नेता नहीं।

हमारी सामाजिक गुराइयोंके कारण व परस्पर धर्म स्थिरताका उपाय न होनेसे स्वास्थ्यकी रक्षा अपनी व अपने बालिकाओंकी खासकर न करनेसे हमारी संख्या दिनपर दिन हीन होती जा रही है। इत्यादि जैसी कुछ हीन दशा इस हमारी जैन जातिकी है उसको देखकर सिताय रोनेके और क्या कहा जा सकता है?

हमारा कर्तव्य ।

(१) एकता—दशा जैसी कुछ है वह प्रकट है। राग जैसा कुछ है वह विद्यमान है। अब आवश्यकता है कि रोगको दूर करनेका उपाय किया जावे। पहली ज़रूरी बात यह है कि हम सब जैन नामधारी भाइयोंको परस्पर एकताका भाव स्थापित करना चाहिये—अब समय एकताका है। जब शिया मुन्नी मुसलमान एक हैं—अपनी २ अद्भुतभार धर्म पावते हुए मुसलमानानेके



नातेसे एक आवाज़से बोल रहे हैं, जब शैव, ब्राह्म, शाक्त आदि भेद होनेपर भी सर्व हिन्दू एक स्वरसे हिन्दूपनका शब्द निकाल रहे हैं, जब प्रोटेस्टेन्ट कैथलिक आदि भेदोंको रखते हुए भी सर्व ईसाई एक स्वरसे हो रहे हैं, जैन महायन और हिनायन भेदोंको रखते हुए सर्व बौद्ध एकतामें गूंज रहे हैं तब क्या यह असंभव है कि हम अपनी श्रद्धाके अनुकूल भेद रखते हुए भी परस्पर एकता न रख सकें ?

एकताका साधन न्याययुक्त नम्र व्यवहार और सहिष्णुता है। जिनके साथ हम एकता रखना चाहते हैं उनसे हम नीति और धर्म पूर्वक मान मत्सर छोड़कर नम्रतासे व्यवहार करें तथा कभी कोई तुच्छ दोषको भी सह कर उसको समतासे निवारण करनेका यत्न करें—तो एकता रह सकती है।

२५ वर्ष पहले दिगम्बर और श्वेताम्बरमें बहुत अंशोंमें एकता थी। अब इस एकताके हटनेका कारण यदि देखा जाय तो इन्हीं दोनों गुणोंका अभाव है।

उन तीर्थ स्थानोंपर जहां दोनों आच्चायकाले पूजन करते हैं जबसे एक दूसरे स्वामी होना चाहने लगे तथा एक दूसरेके धर्मसाधनमें विघ्न उपस्थित करने लगे तब ही से ऐसे झगड़े बढ़े कि जिनके कारण लाखों रुपये अदालतोंमें व्यय हुए व हो रहे हैं। हमें यहां यह विवेचनकी जरूरत नहीं है कि किसका दोष है व किसका नहीं है व किसका अधिक व किसका कम है।

निष्पक्ष महाशय स्वयं इस बातको जान सकते हैं।

वास्तवमें तीर्थ उन तीर्थकरोंके हैं जो वहांसे मुक्त पहुंचे हैं। उनके स्थानोंकी पूजा कोई भी जैनी करे उसको जैनत्वके नातेसे पूरा हक है। तथा एक जैनीको तो यही समझना चाहिये और यही भाव रखने चाहिये कि इन तीर्थोंकी भक्तिसे जितने अधिक जीव लाभ उठावें उतना ही श्रेष्ठ है।

श्री शिखरजी—हमारे सर्व तीर्थोंमें परम माननीय श्री शिखरजी या सम्मोदाचल पर्वत है जो इसी बंगालमें है व जहांसे अनंत तीर्थकर मोक्ष गए व जावेंगे। इस तीर्थके सम्बन्धमें जो अदालतें परस्पर हो रही हैं, क्या जैन धर्मके सिद्धांतपर लक्ष्य देनेसे एक दिनमें नहीं दूर हो सकती हैं ? दिगम्बरी भाइयोंका फर्ज है कि श्वेताम्बर भाइयोंके धर्मसाधनमें कोई विघ्न न करें। श्वेताम्बरी भाइयोंका फर्ज है कि दिगम्बरी भाइयोंके धर्मसाधनमें कोई विघ्न न करें। जो पूज्यनीय स्थान स्मारकके रूपमें सदासे चले आ रहे हैं उनको उसी प्राचीन रूपमें चिरस्थाई रखें। यदि कोई धर्मस्थान इतने बड़े पर्वतपर बनाना चाहे तो उसमें कोई एक दूसरेको विघ्नकारक न हो। तथा सब ही पर्वतकी ऐसी पवित्रता कायम है उसीको स्थिर रखनेका यत्न करें। उसपर कोई यस्ती न बसने दें। उचित तो यह है कि पर्वत पर कोई कार्य जैनियोंकी श्रद्धाके प्रातिकूल न हो ऐसी जितनी पड़ी समझ व समझाव।



लेना चाहिये । यदि दोनोंकी एक सम्मतिसे उद्योग हो तो यह बात सिद्ध होसकती है । तब इसकी कोई आवश्यकता नहीं कि पर्वतको पट्टेकी लिया जाय या खरीदा जाय । आवश्यकता इस बातपर ही है कि पर्वतकी पवित्रतामें भविष्यमें कोई सन्देह न हो । पर परस्पर अनैक्य होनेसे जैन जातिकी सर्वथा हानि होगी व अन्योको लाभ पहुंचेगा । यह सर्वकाम परस्पर विश्वास और दिल खोल कर बात करने ही से हो सकता है । आप सर्व भाइयोंका कर्तव्य है कि इस तीर्थ संधी चिंताका समाधान कराके अनैक्यके शीनको मिटा दें । यदि मंडलके सदस्योंने इस कार्यमें सफलता पाई तो कहना होगा कि उन्होंने एक बड़ी भारी फूट राक्षसीका विजय करके अपने निर्मल यशको स्थापित किया है ।

(२) जैन कालेज—जैन जाति एकताके सूत्रमें बंध कर जैन समाजको उन्नतिको जो सर्वसे मुख्य उपाय जैन कालेजका स्थापन है उसको सुगमतासे कर सकनी है ।

जैन कालेजकी आवश्यकता जैन जातिमें मुद्दतोंसे होरही है । पर यह काम अभी तक नहीं हुआ है । यद्यपि स्वर्गवासी दानवीर सेठ, माणिकचंदके उद्योगसे कालेजके स्थानों पर जैन बोर्डिंग खुल गए हैं और उनसे कुछ लाभ भी हुआ है पर जातीय कालेजके लाभसे फोट गुणा कम है ।

यदि निचार कर देला जाय तो कोई भी जाति ऐंसे विद्वानोंके बिना उन्नति नहीं पासकती गो उच्च शिक्षाके भंडार हों व जातीयताका

अभिमान रखने वाले परोपकारी हों । मुसलमानोंको अलीगढ़ कालेजने, हिन्दुओंको हिन्दू कालेज व हिन्दू विद्यालयने जीता जागता हुआ रक्खा पर जैनियोंमें जातीयताके पैदा करनेका साधन अबतक न हुआ । १२॥ लाख जैनी एक कालेजके लिये थोड़े नहीं हैं । यदि औसत दरजे एक २ रुपया भी दें तो कालेज स्थापित कर सकते हैं । यह काम जैन जातिके विद्वानोंका है । यदि दो चार भी विद्वान् परोपकारी गेजुएट अपना जीवन कालेज स्थापनके लिये अर्पण कर दें और आमकलकी आवश्यकतानुसार विज्ञान शिल्पादिकी शिक्षाको देनेवाला कालेजका मसौदा व नियम बनाकर जगह २ जाकर बिना किसी भेदभावके उद्योग करें तो कालेजके लायक रुपया क्या नहीं होसकता हैं ? अवश्य होसकता है । एक आध्याय कम दे या ज्यादा दे इस प्रश्नको बीचमें न लाकर सर्व जैनी मात्रसे उसकी शक्ति व भक्तिके अनुसार लेना चाहिये । जैन जातिमें रुपयोंकी कमी नहीं है पर सच्चे कार्य कर्ताओंकी कमी है । यदि सर्व आध्यायोंमेंसे तीन चार विद्वान् इस बातका बीड़ा उठावें तो यथाशक्ति मैं भी सहाय कर सकता हूं । सर्व जैनी लौकिक विषय साथ १ पढ़ सकते हैं । धार्मिक विषयोंमें अपनी २ आध्यायके भिन्न २ अध्यापकों द्वारा भिन्न २ पुस्तकें पढ़ सकते हैं अथवा तात्विक पुस्तकें ऐसी भी हैं जिनको सर्वा सम्प्रदायके छात्र एक साथ पढ़ सकते हैं । यह एक कार्य है जिसमें हम सर्व जैनियोंको मिलके करना चाहिये । कोई २ इस कामको



भी असंभव खयाल करते हैं ? यह उनकी भूल है क्योंकि जब आर्यसमाजी मूर्ति अपूजक व मूर्तिपूजक हिन्दू जो प्रायः लड़ा करते हैं हिन्दू विश्वविद्यालयके काममें परस्पर मिल गए तो क्या हम इस विद्योन्नतिके काममें नहीं मिल सकते ? प्रश्न यह होगा कि इस कालेनको कहां स्थापित किया जाय । मेरी सम्मतिमें काशीसे बढ़ कर दूसरा स्थान नहीं है जहांपर हर प्रकारके विद्वानोंका सुभीता व हिन्दू विश्वविद्यालयका सम्पर्क है ।

(२) जीवदया प्रचार—यह एक ऐसा कार्य है जिसको हम परस्पर मिलकर बहुत कुछ कर सकते हैं । हमें जगह २ सोसायटी खोलनी चाहिये, जीवदयाकी पुस्तकें व नोटिंग बांटने चाहिये, उपदेश देना चाहिये व मांसाहार निषेधार्थ शाकाहारी भोजनालय खुलवाना चाहिये जिससे मांसाहारी स्वच्छता, स्वादिष्ट व स्वास्थ्ययुक्त भोजन पानेका अभ्यास करके मांसाहारसे बचे तथा स्थान २ पर जो बलि देवियोंके मठोंपर होती हैं उसे एक साथ उद्योग करके बंद करावें ।

(४) एक जैन सहायक बैंक (A Jain Co-operative Bank) खोलनेसे नव-युवक छात्रोंको कलाकौशलमें शिक्षित होनेको व उन्हें व अन्य जैनियोंको व्यापारादिमें लगानेको उबार रुपया दिया जाय । इससे समग्र जैनजातिकी आर्थिक दशाका सुधार हो सकता है । इसी बैंकमें हम अपनी जातिके उग्र हथकेको भी रग सकते हैं जिन्हें हम अन्य बैंकोंमें लगान पर रखते स्थिते हैं ।

(५) अमली कार्रवाई—समजमेंसे जिन २ कुरीतियोंको निकालना है व धर्मसे अविरुद्ध सुरीतियोंका प्रचार करना है उसके लिये मंडलके सभासदोंको स्वयं अमली कार्रवाई दितलानी चाहिये व उसकी रिपोर्ट मंडलके वार्षिक जत्तेमें पेशकर अमली कार्रवाई करनेवाले सभासदोंको धन्यवाद देना चाहिये । बालविवाह, वृद्धविवाह, कन्याविवाह कोई न करे, संतान जन्म व मरण होनेपर साधारण खर्चके सिवाय विरादरीके जीमन आदिमें द्रव्य न लगवें । विवाह शादी थोड़े खर्चमें निव-
टावें । अपने २ सन्तानोंको धार्मिक शिक्षा देवें व उन्हें धर्मरीतिसे चलावें । तथा हर एक सभासद गृहस्थके नित्य कर्म देवपूजा, दर्शन, स्वाध्याय, सामाध्यायिको करे, पानी छान-
कर पिये । अभक्ष्यसे बचे । न्याययुक्त व्यवहार करें, यही उपाय है । जनतामें धर्मज्ञान व धर्माचरण फैलाने व परस्पर धार्मिक विश्वास जमानेका है । मंडलको चाहिये कि एक २ फार्म प्रत्येक सभासदसे मासिक अमली कार्रवाईका प्रचार मंगावें उसमें यह भी नोट हो कि असुख ग्रन्थका स्वाध्याय इतना किया व इसमें यह विषय उपयोगी निकला आदि ।

(६) जैन धर्मके ग्रंथ—जिनमें जीवन गुणस्थान मार्गणा व कर्मवच आदिका वर्णन हो व जो अव्यात्म सममें गर्भित हों—जिनमें तत्त्वज्ञान विशेष हो उसको अनंश भाषाओंमें प्रकाशित करना । इस कामको इमीतगद एकतासे किया जासकता है जिस तरह नवईका परमधुतप्रभावक मंडल रायचंद



शास्त्रमाला द्वारा तात्त्विक ग्रंथोंको प्रकट करता है—परस्पर आमनाप सम्बन्धी पूजा पाठ व साधुओं श्रावकोंके बाहरी आवरण सम्बन्धी व कथा ग्रंथों प्रकट करनेकी बहुत आवश्यकता है—मंडलके पान इस ग्रंथ प्रकाशनके लिये कुछ व भंडार रहनेकी जरूरत है ।

(७) स्त्री शिक्षाका प्रचार—मंडलका यह भी फर्ज है कि वह एक बृहत् कन्या-महाविद्यालय उसी ढंगका स्थापित करे जिस ढंग पर एक जैन कालेज स्थापित करना है । जब तक योग्य माताएं न बनेंगी योग्य संतानका होना दुःसाध्य है ।

(८) प्राथमिक शिक्षाका प्रचार—प्रत्येक जैन बाइर व बालिका शिक्षा लेती है या नहीं इसकी देवभाव करके इसका प्रत्येक स्थानकी विरादरीसे कराना मंडलका सर्वसे बड़ा कर्तव्य है । जहां जुदी पाठशाला व कन्याशाळा स्थापित हो सकती है वहां स्थापित कराना व जहां नहीं हो सकती हैं वहांके लड़के लड़कियोंको सरकारी शालाओंमें भिजवाना तथा इसकी रिपोर्ट वार्षिक जलसेमें प्रकट करना चाहिये ।

(९) विधवाओंकी उपयोगिता—मंडलका यह कर्तव्यभी है कि विधवाओंकी कमीके लिये उनके कारणोंके मेटनेके सिवाय हमें उनका जीवन पवित्र और उपयोगी बनानेकी प्रेरणा करनी चाहिये । आर्य सनातनी विदुषी कुमारी राजवंशी देवीन ता० २५ नमस्तरको लखनऊमें व्याख्यान देते हुए विधवाओंके लिये

कहा कि उनके लिये श्रेष्ठ मार्ग यही है कि उन्हें शिक्षा देकर परिचारिका, शिक्षिका, प्रचारिका, पाचिका आदि बनाया जाय—उन्हें स्वार्थ त्यागकी मूर्तियां बनाया जाय । देशका अधिकांश सुधार इन विधवाओंसे हो सकता है । उन्हें बताया कि सारा देश ही तुम्हारा घर है व सारे देशके बच्चे ही तुम्हारे बच्चे हैं । इनसे जनतामें शिक्षाकी वृद्धि हो सकती है । धर्मका प्रचार भी इनसे खासा हो सकता है । बौद्ध कालमें सम्राट अशोककी कन्याने सीलोन जाकर धर्मप्रचार किया था । मंडलका कर्तव्य है कि विधवाओंकी शिक्षाका पूर्ण प्रयत्न करवे ।

(१०) जैन सेवा समिति—जैन उत्साही नरयुवकोंका कर्तव्य है कि अपने यहां जो जैन भेले होते हैं उनमें जाकर स्त्रीबच्चोंकी रक्षा कर व दुःखियोंकी सहायता करें, सर्वसाधारणके लाभार्थ उपदेश दें, दुःखोंका निवारण करें तथा जैन संस्थाओंमें काम करें, धर्मोपदेश दें व बोर्डिंगोंके सुप०का काम करके छात्रोंको सुप०गामी बनावे ।

(११) श्रीमान् पंडित अर्जुनलाल-जी सेठी—अंतमें मैं आपका ध्यान जैन जातिके सेवक सेठीजी पर आकर्षण करता हूं । वह किम विषयमें हैं यह बात आपसे छिपी नहीं है । अब वह बिलौर जिले मद्रासमें भेज दिये गए हैं । मा० दि० जैन महासभाके महायुक्त मंत्री मूलचंदजी वकीलने ता० १० दिग्बलको रेजिस्ट्रार जैपुरको तार किया था—वह तार तथा उसका उत्तर जैन गजट ता०



१७ दिसम्बरमें मुद्रित है। वह यह है—

Kindly inform if provisions made by Government for Arjunlal Sethi's religious scruples in Villore. Jain Sabha shall be grateful to know his offence and period of internment—भावार्थ—अर्जुनलाल सेठी-के धार्मिक विचारोंकी रक्षामें क्या प्रवन्ध हुआ है तथा उनपर क्या जुर्म है व कबतक मुहलत नज़रबंद रहनेकी है। इसका उत्तर आया—Your telegram 10th. Arrangement being made but at present none of his family willing proceed Villore. Stop for latter portion telegram refer, Villore. भावार्थ—तार पाया। प्रवन्ध हो रहा है पर अभी तक उनके कुटुम्बका कोई आदमी बिलौर जानेको राजी नहीं है। दूसरी बातके लिये बिलौर पूछो—इन तारोंको सुनकर आपका यह कर्तव्य है कि सेठीजीका शरीर व धर्मकी रक्षाके लिये शीघ्र दो भाइयोंके मेननेका प्रवन्ध करें। कुटुम्बकी अकेली स्त्री व बच्चे वहां बैसे जाकर नया कर सकते हैं।

यह इस समय बड़ी भारी सेवा आपके लिये उपस्थित है। यदि सेठीजीका शरीर न रहा तो जैन बौद्धको भी एक भारी कलंक लगेगा। सेठीजीको तीन वर्षसे अधिक नज़रबन्दीमें हो चुका। शासनकर्ता कोई सुनाई नहीं करते, परंतु इसमें मैं कहूंगा कि समग्र जैन जाति का पूर्ण उद्योग नहीं है। आन सेठीजी पर मंरू है कल दूसरे पर आमरूता है इससे आप

सर्वहोका कर्तव्य है कि जिस तरह बने वाइसराय और भारत मंत्रीकी सेवामें जाकर अपना दुख सुनाओ। यदि सुनाई न हो तो इंग्लैंडमें पार्लियामेंटमें जाकर पुकार करो—एक जाति बंधुके संकटको दूर करना आपकी जाति व धर्मकी रक्षाका उपाय है। स्वतन्त्रता माइयोंको भी दिगम्बरियोंके साथ पूर्ण योग देकर इस परम कर्तव्यको निर्वाह करना चाहिये।

अंतमें मैं ब्रिटिश राज्यकी इस महा भारी युद्धमें विजय कामनाकी भावना करता हुआ इस हिंसामय युद्धकी शीघ्र शांति चाहता हूं। और अपने उपस्थित अनुपस्थित जैनी भाइयोंको प्रेरणा करता हूं कि वे अपनी सरकारकी युद्धमें विजय होने तक हर तरह तन मन धनसे मदद करते रहें।

मैं अपने जैनी भाइयोंसे यह भी कहूंगा कि वे अपने देशके सुधारके कार्योंमें भी पूरा योग दें। वे भी भारतके एक अंग हैं। भारतमें शिक्षा प्रचार हो, स्वास्थ्य स्थिर रहे, दुर्मितियोंका अंत हो; व अहिंसा धर्मका प्रचार हो, इस विषयमें पूर्ण योग दें। यहांके गरीब मजदूरोंके लाभार्थ यहांका बना कपड़ा आदि सामान यथामेव व्यवहार कर देशको लाभ पहुंचाएं।

प्रिय भाइयो। जो कुछ मैंने कहा है उसका मारांश यह है कि आप लोग अपने जीवनको जिनधर्ममय बनाओ और उस आनन्दका सुवाद लो जो अपने आमाता स्वभाव है। तथा हम जिनधर्म व जैनधर्मकी उन्नतिके लिये जो उपाय मैंने विनांग सौ



आपके सामने उपस्थित किये हैं। आशा है आप लोग हंसवत् इसमेंसे सार ग्रहण कर मुझे कृतार्थ करेंगे। और जैन जातिकी आवश्यकताओंको विचार कर इस कल्पस्तेके अविवेचनको स्मरणीय बना देंगे। आपलोग पारसी कौमसे १२ गुणे हैं—यदि आप प्रमादको हटाकर अपनी उन्नतिके लिये कमर कसके खंडे हो जावेंगे तो मुझे कुछ भी निराशा नहीं है कि आम उन्नतिपथ पर आरुढ़ होनापगे। आप कभी अपने चित्तमें निराशाको न आने दें। सदा सचे मनसे श्रद्धापूर्वक पुरुषार्थ करने चले जावें। वास्तवमें 'पुरुषार्थका फल अवश्य होता है।

मगल भगवान् बीरो । मगल गौतमो गणि ।

मगल बुद्धकदायो जैनपमोस्तु मगलम् ॥

अब उद्धार कैसे हो ?

लगी दिन रैन है चिन्ता कि अब उद्धार कैसे हो ।
पड़ी मज्जाधारमें भगवान् येनिया पार कैसे हो ॥१॥



चले आँधी निराशाकी न सूझे अपना बेगाना ।
खिषैया चोक्की, गूँचे प्रभो निस्तार कैसे हो ॥२॥



नदी जीवन समरकी है विजय उद्देश्य जिसका तट ।
पहुँच उसतक अविद्याकी यह हका भार कैसे हो ॥३॥



भयानक भ्रम भँवरमें पड़ गई राध नान मयदा ।
हुए मदमत्त स्वारथमें सुमति सन्चार कैसे हो ॥४॥



गमी कर्तव्य विचारमें न निश्चय आम राक्षीपर ।
अल फिर सत् विचारोंका अमय उद्गार कैसे हो ॥५॥

“मेमी” हजारीलाल जैन—आगरा ।

श्रद्धा उन्नतिकी जड़ है ।
(ले० जैन धर्मप्रण १० शतिलप्रसादजी)

यह उद्धारका शीर्षक एक ऐसा मूल मंत्र है, जिसके आधार पर सारे जगत्की सर्व प्रकारकी उन्नति निर्भर है। जिसकी जिस बातमें पहले श्रद्धा होती है तब उसका प्रयत्न हार्दिक प्रेमसे होता है। जिसका उद्योग हृदयसे किया जाता है उसमें यदि बाधक कारण कोई उपस्थित न होकर साधक कारण मिल जाय तो वह कार्य अवश्य सफल हो जाता है। पहले हम लौकिक 'कार्यो ही में देवने हैं—जिस किमीको यह श्रद्धान हो कि वह युद्धमें शत्रुका सामना कर सकेगा और वह युद्धमें जाए भी तो उसके भीतर अश्रद्धामात्र सहस्रके गुणको भग्न कर देगा। वह या तो कायर हो भाग जायगा या शत्रुसे पराजित होगा। मे बीर हूँ—पारसी हूँ यही श्रद्धा उसे साहसी बनाएगी और पर बहुत अशमें सख्खता पालेगा। एक व्यापारी मनुष्य किसी बालको उमी समय सरोद करता है जब उसके चित्तमें यह श्रद्धा गाढ़ हो जाती है कि उनका व्यापार करनेसे मैं अवश्य लाभ उठाऊंगा। यदि अश्रद्धा भावसे करेगा तो घोसा खा जायगा।

श्रद्धाके बगैरे ही पश्चिमात्य देशोंने आश्चर्य-कारक बड़ पदार्थोंकी उन्नति कर डाली है। एक विद्यार्थी इस श्रद्धा से कि मैं इस विषयपर ध्यान दूंगा तो अवश्य सील पाऊंगा, उस

विषयका पारगामी हो जाता है। यदि संश-
कित व अध्रद्धालु हो तो उसका प्रयत्न उसी
थके हुए बैलके समान होता है जो जाना तो
न चाहे पर कोड़ोंकी मारसे चलाया जाय।
श्रद्धाके बलसे एक विज्ञानवेत्ता किसी पदार्थके
गुणोंकी गरीबतामें एकचित्ता व धैर्यके साथ
काम कर सकता है और अपने चिर प्रयत्नसे
इच्छित खोजमें सफल हो जाता है। यह
श्रद्धा है जो उसको आगे उत्तेजित उसी तरह
करती रहती है जैसे एजिन गाड़ीके डबोंको
ढकेलता व खींचता रहता है। श्रद्धाके बलसे
ही वेतारका तार, टेलीफोन, हवाई जहाज़,
विजलीकी शक्तिकी खोज आदि संसारोप-
योगी आविष्कार निकल पड़े हैं। एक जानेवाला
तब ही किसी स्थानपर पहुँच सकता है जब
उसके चित्तमें यह श्रद्धा हो कि मैं चढ़ सकता
हूँ और वह हार्दिक भावसे उत्साहसे भरा
हुआ चढ़ने लग जावे-देखा जाता है कि
श्रद्धाके बलसे एक ८ या ९ वर्षका बालक
६ मीलकी चढ़ाई श्री सम्मेदशिखर
पर्वतकी कर लेता है। उसके दिलमें यह
विश्वास होता है कि मैं पहुँच जाऊँगा वस यह
विश्वास उसके चित्तको उत्साहित करता है।
यह उत्साह उसे बेवड़क इच्छित स्थानपर
पहुँचा देता है।

श्रद्धाके प्रभावसे ही एक शिल्पकार या एक
चित्रकार अपना उपयोग किसी शिल्प या
चित्रके यथोचित बनानेमें ठीक २० दिनपर
उपमें सफलता पावेता है। वास्तवमें श्रद्धा
कार्यकी जननी है। श्रद्धा चारित्र्यको सज्जो-

भूत करती है। श्रद्धा ही ज्ञानको सार्थक
बनाती है। श्रद्धा विना ज्ञान अज्ञान है-त
होनेके समान है।

जापान देशने जो लौकिक उन्नति इतनी
आश्चर्यजनक करवाली है उसका मूल कारण
उसके शासनकर्ता व प्रजामें इस बातका दृढ़
श्रदान होता है कि हम अन्य देशोंके समान
अवश्य हो सकते हैं। यदि अपनी शक्तिकी
अश्रद्धा होती तो उन्नति पर्यपर 'रुचिसे' न
चलने हुए कभी भी सफलता न होती।
भारतवर्षमें जो लौकिक उन्नतिकी गति
अति मंद हो गई है इसका कारण इस उन्नति
कर सकते हैं और करें इस गाढ़ श्रद्धाका
अभाव है। विना श्रद्धाके एक चींटी दीवार
व टेढ़े स्थान पर नहीं चढ़ सकती है। चाहे
उसे चाहें व्यक्त न हो पर उसकी आत्मामें
यह श्रद्धा है कि वह चढ़ सकती है इसीसे
पुनः पुनः गिरने पर भी चढ़ती है और एक
दफे अपने कार्यमें सफल हो जाती है।
यहा आठसी मनुष्यको भी श्रद्धा महापरिश्रमी
बना देती है। एक आलसी आदमी बेकार
बैठा हो पर हो बढ़ छोमी। यदि उसे कोई
कहे कि अमुक स्थानपर जानेसे तुझे १०००
की प्राप्ति होगी पर तू जागगा तो होगी
अन्यथा नहीं होगी। जिस समय वह छोमसे
प्रेरित हो उस बातपर दृढ़ विश्वास कर लेगा
उपका मन पर ईश्वर बाँध लेगा कि चाहे
किस तरह वरों पहुँचना वस उस श्रद्धावश
अदृश्य नापगा और जाना लाभ पायगा।
लौकिक उन्नतिके जो २ साधन हैं उनको



इसप्रकार करनेसे सफलता होगी ऐसा उपदेश भारतवासियोंके दिलों तक पहुँचना चाहिये । उनके भीतर यह उपदेश जमना चाहिये । वास्तवमें, वचनमात्रका उपदेश चित्तमें अंकित नहीं होता जब तक कि उसके साथ उदाहरण भी न हो । दृष्टान्त सहित उपदेश सच्चा काम करता है और अवश्य उस उपदेशपर श्रद्धान जमा देता है ।

यदि भारतवासी शिल्पकर्मी लौकिक उन्नतिके साधनोंका श्रद्धान करके उस श्रद्धाके अनुकूल स्वयं परिश्रम करने लग जायें और तब उपदेश करें अवश्य उनका वचन अनपढ़े किसानोंको, अनपढ़े शिल्पकारोंको अंतर कर जायेंगा और वे इस बातमें श्रद्धा करलेंगे । वचन श्रद्धाके होते ही उनको जो कुछ ज्ञान हुआ है उसको अमली काममें परिणमन करने लग जायेंगे ।

कहते हैं सब कोई कि भारतवासी अपने देशकी चीनी चीजें ही काममें लावें । पर ऐसी चीजें जो सस्ती और सुंदर हों, विदेशी चीजोंके मुकाबलेमें ठहर सकें हम तैयार करके बचावें ऐसा उद्योग नहीं होनेसे कोई सफलता नहीं होती । इसका कारण यही है कि जो कहते हैं वे स्वयं श्रद्धालु नहीं । यदि सच्ची श्रद्धा होवे तो स्वयं उद्यम करें वचन तब फिर उनका उपदेश व्यापक होके अपना अमर कर डाले ।

और जो एक दो भारतवासी कुछ उद्यमी हैं और कुछ चमत्कारिक लौकिक उन्नति बना रहे हैं जैसे डा० बोस, डा० प्री० ली० राय उनकी इस उन्नतिकी क्या कारण है ।

पता लगेगा कि उनका दृढ़ श्रद्धान ही इसमें कारण है ।

दूर क्यों जाइये । जिस स्वराज्यके लिये आज सारा भारत छाछावित हो रहा है—हिन्दू मुसलमान एकचित्त हो स्वराज्य स्थापनकी भावना भा रहे हैं—इस स्वराज्य भावके इतने व्यापक होनेका कारण क्या है ? यदि आप देखेंगे तो पता चलेगा कि यह लोकमान्य तिलक, व मिस एनी बेसेन्टकी दृढ़ श्रद्धा सहित होकर उसके अनुकूल वर्तन करना है । यदि लोकमान्य तिलक स्वयं दृढ़ श्रद्धानी न होते व अनेक आपत्ति आने पर भी अपने श्रद्धानके भत्यागी न होते—श्रद्धान बख्खनेके बदलेमें प्राणत्याग ऐसे फलकी भी परवाह न करते होते तो आज उनका श्रद्धान इतना व्यापक न होता और उनकी कैसी गाढ़ मान्यता भारतवासियोंके दिलोंमें है वह हरगिज न होती । यदि मिस एनी बेसेन्ट जेलमें पड़नेके भयसे अपनी स्वराज्यकी श्रद्धा छोड़ बैउतीं तो कभी भी सफल न होती । श्रद्धा दृढ़ रखकर जो उन्होंने कष्ट भोगा उसहीका परिणाम उनकी श्रद्धाका भारतव्यापी होना और उनकी सम्मति भारतियोंके चित्तमें सहस्र-गुणा बढ़ जाना है ।

इसीसे यह कहना सर्वथा सत्य है कि “श्रद्धा उन्नतिनी जड़ है” ।

अब विचारना यह है कि मानवको क्या उन्नति करना है निम्नके लिये उसे श्रद्धाकी आवश्यकता है ।

एक मानव केवल जड़ परमाणुओंसे बना



हुआ भौतिक शरीर नहीं है किन्तु एक आत्मा पदार्थके साथ जड़ वस्तुओंसे बना हुआ बाँचा है । वास्तवमें देखा जाय तो मानव तो वह आत्मा है—और यह शरीर उसके रहनेका झोंपड़ा है । जगतमें जो दो प्रकारकी उन्नति प्रसिद्ध है उसमें पारमार्थिक उन्नतिका सम्बन्ध आत्मासे और लौकिक उन्नतिका सम्बन्ध इस जड़के बने झोंपड़ेसे है । इस झोंपड़ेकी ही रक्षा, इसीको ही खिलाने पिलाने, नहाने, सुलाने, पहनाने, चलाने, किराने आदिके कामोंके लिये अनेक लौकिक वस्तुओंकी आवश्यकता पड़ती है—उनका बिना किसी कष्टके रहना—उसमें कोई बाधक न होना यही लौकिक उन्नतिकी हद्द है । एक व्यक्ति लौकिक उन्नतिका फल अपने उस शरीरमें रहने तक ही भोग सकता है आज वह फल उसके लिये नहीं हो सकता—हां इसमें कोई इनकार नहीं हो सक्ता कि उसका फल उसकी सन्तान व अन्य जन भोगें । पर पारमार्थिक उन्नतिका फल इतना सुन्दर है कि जितनी उन्नति मानव करता जायगा उतना फल पाता जायगा । क्या वह फल भविष्य जीवनको भी उत्तम बनानेका मूल कारण पड़े जायगा । इतना ही नहीं उसका संस्कार, उसे और अधिक उन्नतरूप होनेके लिये बाध्य करेगा । यहां तक कि उन्नतिकी चामत्सीना जो परमात्मसंद है उसको पहुँच जायगा ।

पर इस पारमार्थिक उन्नतिके लिये भी श्रद्धाकी आवश्यकता है । श्रद्धा बिना आत्माकी

कोई भी उन्नति नहीं होसकती ।

आत्मा, धर्म, उसका फल, यद्यपि ज्ञानीकी दृष्टिमें प्रत्यक्ष है पर अज्ञानीको परोक्ष मातृम होते हैं—इसीलिये उसे इनका या तो विश्वास ही नहीं होता और यदि होता है तो यथार्थका नहीं होता चाहे जैसेका होता है पर इससे काम सिद्ध नहीं होता । जैसे कोई दिहलीसे कलकत्तेको जानेकी इच्छा करनेवाला यदि वह उल्टा श्रद्धान करले कि दिहलीसे पश्चिमकी ओर कलकत्ता है और इस श्रद्धावश उधर गमन भी करे तो भी वह कभी कलकत्ते नहीं पहुँच सकता । वह तो लाहौर व पेशावर आदिकी तरफ जाता हुआ कलकत्तेसे और अधिक परे हटता हुआ खेदखिन्न और दुःखी ही होगा परंतु यदि उसे यह श्रद्धान होगा कि दिहलीसे पूर्वकी ओर कलकत्ता है और वह उसी तरफ गमन करेगा तो वह अवश्य पहुँचेगा । इसलिये पदार्थ या कारण-मई मार्गका श्रद्धान यथार्थ होना चाहिये । तब ही हमारे कार्यमें सफलता होगी । आत्मोन्नति जब वांछनीय है तब उसके अर्थ यही होसकते हैं कि आत्मा जहां तक शुद्ध होसकता है वहां तक यह शुद्ध और पूर्ण होनाय । इसमें कोई विकार या दोष न रहे—अतएव इस बातके दृढ़ विश्वासकी आवश्यक है कि आत्माका स्वरूप तो अमृत है तथा यह अपनी अमृताका भोग सकता है । इन दो बातोंका दृढ़ श्रद्धान होना ही आत्मोन्नतिकी जड़की प्राप्ति पर लेना है ।

आत्माके स्वरूपके विषयमें मनुष्यके



बुद्धिमानोंके भित्र २ मत हैं उनमें किसीको ठीक मानना यह बड़ा दुष्कर कार्य है । अतएव यदि न्यायशास्त्रका ज्ञान हो तो उसके द्वारा परीक्षा करके निर्णय कर परंतु यदि ज्ञान न हो तो इस खटपटको छोड़कर अपने ही अनुभवसे विचार करें ।

न्यायशास्त्रके जोसे जिसने आत्माको सिद्ध कर लिया हो तौभी उसको अनुभव द्वारा समझनेकी जरूरत है ।

वास्तवमें जब तक अपने अनुभवमें कोई बात न खुलेगी तबतक उसपर श्रद्धा नहीं बैठ सकेगी । इसलिये स्वानुभवसे जाना हुआ पदार्थ ही प्रथम ज्ञेय होकर हेय उपादेयमेंसे किसीमें छांट लिया जाता है ।

एक स्थूल ज्ञानवाला भी थोड़े विचारसे समझ लेगा कि मेरेमें और मेरे कंठम या कागजमें क्या भेद है । मेरेको कोई थप पपावे में तुरत जानकर उसकी तरफ राम या द्वेषका कोई न कोई भाव कलंग्मा परंतु कलमको चाहे जैसा करने पर भी इसमें इसके साथ की हुई क्रियाका इसे ज्ञान नहीं होता । इसीसे इसमें राग द्वेष कोई पैदा नहीं होता । यही हाल किसी जंतुके मुँह शरीरका है । एक गन्तरी अभी २ खून दौड़ती कूटती फिरती थी, मेरी थालीके चारोंओर आती थी—वृत्तकी मुण्ड उस भोजनकी तरफ खींचती थी—उस हथले में वह फिर आती थी, पर जब कहीं वह घीमें गिर पड़ी और मर गई तब वह फिर क्रिया करनेसे रहित हो गई । इसकी जिन्दा और मुर्दा दशामें क्या अंतर रहा । इन्हीं

मोटी २ बातोंको विचारतेसे पता लग जायगा कि कोई शक्ति हमारेमें व जिन्दा मक्खीमें ऐसी है जिससे ज्ञान पूर्वक क्रिया होती है पर वह शक्ति कलममें या मुर्दा मक्खीमें नहीं है । इसीको चेतना शक्ति कहते हैं । यह शक्ति जिसमें होती है वही आत्मा या जीव है जिसमें नहीं होती वही अनात्मा या अजीव है । क्योंकि कोई भी शक्ति या गुण किसी शक्तिधारी या गुणी पदार्थमें ही रह सकती है । गुणीसे बाहर, उसका कहीं भी दर्शन नहीं होता । सफेदी सफेद वस्तुमें, गुलामी गुलाममें, कालस कोयलेमें सुनहरावन सुवर्णमें ही नजर आते हैं । इनके सिवाय कहीं अलग पाए नहीं जाते । आत्मामें चेतना है, इसके सिवाय और भी क्या २ गुण हैं तो भी कुछ हमारे ध्यानमें अपने अनुभवसे ही आ जायगे । जब हमारे ही अंदर क्रोध, मान, माया—लोम चारकी तीव्र क्रिया होती है तब एक प्रकारका भारीपन संकेशपन व आकुलतापन हो जाता है और जब कम होते हैं तब हलकापन, सातापन व निराकुलतापन हो जाता है । बात यह है कि क्रोध, मान, माया, लोम आदि विकारी भाव हमारे असली स्वभाव नहीं हैं इसीसे इनके होनेमें केश होता है—आत्माका असल स्वभाव इनसे रहित शुद्ध वीतराग है । यह विकारी भाव शरीरादि निमित्तोंके संयोगसे ही होते हैं । और अधिक विचारोगे तो यह भी पता लगेगा कि आनन्द भी आत्माका गुण है । जब कभी हमारे भावोंमें शांति आती है व

मोह कम होता है—स्वयं सुख झलकता है यह सुख सच्चा सुख है और यह आत्माका एक गुण है।

आगे विचार करते हैं तो मालुम होता है कि यह आत्मा हमारे शरीरके आकार है क्योंकि स्पर्श की हुई, वस्तुका ज्ञान पगसे मस्तक तकका होता है—उससे बाहरका नहीं होता है। जब प्रत्यक्ष रूप रस गंध स्पर्श गुणोंको रखनेवाले जड़, पृष्ठलमें कि जिससे यह कलम या कागज बना है चेतना नहीं है और हमारी आत्मामें है तब यह स्वयं सिद्ध है कि जब वह मूर्तिक है तब यह आत्मा मूर्तिक नहीं किंतु अमूर्ति है। यदि मूर्तिक हो तो यह भी जड़ पदार्थकी तरह अपनी इन्द्रियोंसे ग्रहणमें आने लगे। अमूर्तिक होने पर भी यह अपना आकार रखती है क्योंकि बिना आकारके तो कोई वस्तु जगत्में हो ही नहीं सकती। जिसमें गुण होंगे वह वस्तु होगी। अने वस्तु होगी वह आकाशमें रहेगी। अतएव कुछ न कुछ जगह धरेगी।

इत्यादि बातोंसे विचार करनेपर मालुम हो जायगा कि यह आत्मा जो गैर ही शरीरमें है शरीरसे भिन्न है—शरीरके आकार है। चेतनामई अर्थात् ज्ञान दर्शन-मई है, क्रोधादिभूत रहित वीतराग है। तथा आनन्दमय है। और यह अधिनाशी अर्थात् नित्य भी है क्योंकि कोई भी वस्तु जगत्में प्रत्ययरूप नहीं होती, केवल आत्मा अवश्य बदलती है। लकड़ीसे कोयला होता है पर

जिन परमाणुओंसे लकड़ी बनी है वे सबके सब स्थिर रहते हैं। केवल उनकी दशा बदलती है—इसीतरह आत्मा कभी नाश नहीं होता पर अवस्थाको बदलता है। मालक से युवा, युवासे वृद्ध, पशुसे मनुष्य, मनुष्यसे पशु इत्यादि स्थूल अवस्थाको तथा भावोंकी अपेक्षा समय २ अपनी परिणतियोंको बदलता है इसीसे यह जिस समय नित्य है उसी समय अनित्य है। इसतरह द्रव्यकी अपेक्षा नित्य पर पर्याय बदलनेकी अपेक्षा अनित्य है।

तथा अभ्यासके बलसे यह सिद्ध हो जायगा कि यह अपनी अशुद्धताको थोड़ा २ मेट सकता है। जो कोई एक क्षणमान भी अपने भावको सर्व पर द्रव्योंसे हटाकर अपने ही आत्माके अमल स्वरूपकी तरफ ले जावे और उठे उसी समय विदिन होगा कि एक विशुद्ध क्षण शान्तिका लाभ होता है। इसतरह निरग्न अपने आत्माका परद्रव्यसे भिन्न अगुपन करते २ व उसका गुण विचारते २ आत्माकी दशा उन्नतरूप होती है।

ऐसा ही श्री अमृतचंद्र आचार्यने कहा है—
निजमहिमातमानं भेदविज्ञानशक्त्या
मयति नियतमेषां शुद्धतत्त्वोपलम्भः।
अचलितमधिलक्षणं द्रव्यं दूरं स्थितानां।
अवति गति न तस्मिन्नाशयः, फलं मोक्षः ॥१॥
भावार्थ—जो कोई मानव भेद विज्ञानकी शक्तिसे अपने आत्माकी महिमामें रत होता है उसको शुद्ध आत्मनस्वरूप लाभ अवश्य होता है। उसके लाभ होनेपर जो निश्चयसे अन्य द्रव्योंसे दूर रहने हैं उनको अवश्य उन

कर्मों में मोक्ष या छुटकारा हो जाता है जिनके कारण यह अशुद्ध हो रहा है।

जब स्वानुभवसे मैं आत्मा की अशुद्धता को क्रमशः भेट सकता हूँ इसका पूरा २ श्रद्धान हो जायगा। यही श्रद्धाभाव आत्मोन्नतिकी जड़ है।

जो कोई मानव अपने जीवनके अपूल्य समयको जो कि मध्यकी अवस्था का है केवल मात्र शोकाशील रहनेमें व आत्माके व धर्मके जाननेकी वे पराही रखनेसे व जानकर भी श्रद्धाभाव लानेमें विना देते हैं उनका आत्मा रागद्वेषादि विकारोंसे निरंतर मैला रहना है। तर्क करते २ व झगडा करते २ उमका अमूल्य समय नष्ट हो जाता है। घृद्धावस्था आनेपर वे कुछ न कर सकते हुए एकाग्र मरण आने पर पड़ताके रह जाते हैं।

इसलिये उचित है कि एक ठके श्रद्धा पत्री जमाकर अम्बास पर लग जाना चाहिये।

प्रिय पाठको! धार्मिक और लौकिक हर प्रकारकी उन्नतिकी जड़ श्रद्धा है ऐसा जानकर श्रद्धा, रचि, प्रतीति, शौकके साथ हर एक काम करो अवश्य सफलता प्राप्त करोगे। जैन धर्मका तो यह मूल मंत्र है कि सम्यक्त्व विना ज्ञान अज्ञान और चारित्र कुचरित्र है। सम्यक् श्रद्धावान थोडा भी चारित्र पाले तौमी वह अच्छा है तसुमार्गी है क्योंकि वह श्रद्धा व रचि विशेष चारित्र पालनेकी रचना ह पर अधिष्ठ करनेकी अयोग्यता व लाचारी पर ही नहीं २२ सज्जा है।

इत्यादी वचनको समझ कर श्रद्धाको जमा

कर हर एक मानवको विचार पूर्वक पारमार्थिक और लौकिक उन्नतिमें दक्षित रह कर आचरण करना चाहिये। प्रमाद, आलस्यमें समय न खोना चाहिये।

सुखशांति चाहनेवाले बन्धु

वाहिनोके लिये

उपयोगी हित वचन । *

(१) समा ही वीरका मूण है। अपराधी जीव तकके लिये भला विचारना कि जिससे वह किसी समय सद्भाग्योदयसे प्राप्त शुभ अवसरका लाभ लेकर अपना मावी जीवन सुधार सके और स्वयं सुखी बनकर अन्यको सुखी कर सके।

(२) स्व-परहितके लिये प्राप्त शक्तियोंका सदुपयोग करना ही मानव जीवन पानेका उत्तम फल है।

(३) जिनके विचार, वचन और आचार शुद्ध-निर्दोष होंगे वे ही अचूक स्व परहित कर सकते हैं।

(४) जिनके विचार, वचन और आचार पल्लित नहीं वे स्व परहित करनेको समर्थ नहीं।

(५) किसी भी शुभ या अशुभ कार्यका आदि कारण विचार ही कहा जा सकता है, इसीलिये विचार शुद्धिकी अधिक जरूरत है।

(६) जिनने ही शुभ विचार करके ठेके पड़ जाते हैं। उत्पन्न हुए शुभ विचारोंको कार्यरूपमें परिणत करनेमें ही वास्तविक लाभ है।



(७) कार्यर पुरुष कोई भी उपयोगी हिन-कार्य नहीं कर सकते। मध्यम श्रेणी वाले शुभ कार्यको शुरू तो कर देते हैं, परन्तु तनिक भी विघ्न आने पर उस कामको अचूरा छोड़ देते हैं। सिर्फ उत्तम कोटिके मानव ही चाहे जिस तरह हो अपने हाथमें लिये हुए कार्यको पूरा करके स्वपुरुषार्थकी सिद्धि प्राप्त करते हैं।

(८) अविश्रान्त प्रयत्नसे, धैर्य और श्रद्धा रखकर जगत्का हित करने वाले विरले होते हैं ऐसे ही नररत्नोंकी बहुत जरूरत है।

(९) “जननी। जनिये भक्त जन, कै दाता कै शूर। नहीं तो रहिये बांझ ही, मती गवावे नूर।” सच्चे भक्तों, सच्चे दाताओं और सच्चे शूरवीरोंकी ही कमी है। ऐसे ही नररत्नों की माताएं रत्न-कूँड बाली कहाती हैं।

(१०) जिनका लक्षविंदु सदा काळ एकसा रहता है वे ही समानका हित कर सकते हैं। कहने मात्रसे कुछ नहीं होता यह निर्विवाद सत्य है।

(११) जो निःस्वार्थ भावसे समान सेवा कर सकते हैं वे ही सांघे समान सेवकके गुणों की यथार्थ कदर कर सकते हैं।

(१२) बहुत कुछ कहा सुना और तत्त्वसार बात की शोष की, अब तो उसका अमल करना ही रहा है।

(१३) जिनमें हिताहित समझ सहनेकी बुद्धि जागृत करनेवाला विवेक-दीपक प्रकट हुआ है उनके लिये इशारा काफी है।

(१४) परंतु जिनमें चौर जड़ता, अज्ञानता

व्याप रही है उनके लिये चाहे जितना कहा जायतव भी “भैसके आगे भागवत पसारता है।

(१५) सुख—साचा सुख, सुख—दुःख रहित स्थायी सुख किसे प्रिय नहीं? और दुःख अशांति अन्याय अनीति किसे प्रिय होगी? परंतु सच्ची भक्ति—स्वार्थत्याग रहित भक्ति। आत्यंतिक सुख, कि. जिससे अनंत दुःखमेंसे दुष्टकारा हो सके, कैसा?

(१६) बाण्ड शत्रुओंकी अपेक्षा काम, क्रोध, मोह, मद, मत्सर आदिक अंतरंग शत्रु अधिक बलवान और दुःख देनेवाले हैं। इनका नाश करना सबसे पहले अत्यावश्यकिय है। अंतरंग शत्रुओंको जो अपनी शक्ति बढते जीत लेगा उसके सामने सभी बाण्ड शत्रु पानी भरेंगे।

(१७) दूसरेकी गलती देखना सहन है, पर अपनी अनंत भूलें जान लेना, लक्षमें आना बहुत कठिन है। जब अपनी खुदकी भूलें जो क्षम्य न हों—बराबर बातका उन्हें जीती जागती दुःख देनेवाली बाधन ज्ञान ले तभी अनंत शक्तिवाला अपनेको गिनना ठीक है।

रामलाल, मोदी—देवरी (सागर)

पुत्रीको माताका उपदेश

(समुराल ज्ञाते समय)

लग्नादि प्रसंगोंपर घांटनेके लिये अथर्व्य मगाइये। पृ. ४०

मूल्य सिर्फ -॥) और ६) सैंकड़ों।
मिनेजर दि. जैन पुस्तकालय-मुरत



मम 'कीर' प्रभो !!!

(लेखक-लोकमणि जैन-महावीर औपचार्य ।

गोटेगांव C. P.)

दयाप्रमुद्र, गुणनिधि, दीनानाथ, अनन्त ज्ञानी, सर्वदर्शी, सर्वहितैषी, क्षमाभूषण, सत्य-सिन्धु, जितेन्द्रिय, शान्तिमूर्ति, सर्वबन्धु, और कर्मभेत्ता महावीर, गमवीर प्रभो! आइये! आइये! मम हृदयमें विराजिये, ज्ञानज्योतिसे हृदयान्ध-कार नष्ट कीजिये । आइये! शान्तिप्रमुद्र सन्तप्त हृदयको शीतल कीजिये । हमें अपना रास्ता बनवाइये-स्वतन्त्र बनाइये, सरल परोपकारी एवं परम वीरताका पाठ सिखाइये । तब आइये! शीघ्र ही आइये, अब विलम्ब न कीजिये ।

प्रभो! हम पतित हैं, कर्तव्यभ्रष्ट हैं, लक्ष्य भ्रष्ट हैं, हृदयशून्य हैं, प्रेमरहित हैं, ऐश्वर्य बंधसे कर्मबंधकी तरह आपसे विच्छिन्न हैं, तब हमारा पुण्य दूर है, शुभकर्म दूर हैं, अभीष्ट फलानु-मवन दूर है, सच्चा हृदय दूर है, वास्तव्य दूर है और हमारा आत्मिक स्वभाव भी दूर है । प्रभो! आइये हमें पावन कीजिये, प्रेमी बनाइये, कुछ कार्य सिखाइये! अब चैन नहीं, सुख नहीं, विश्राम नहीं और तनिक भी शान्ति नहीं है । कपार्यें बढ़ रही हैं, अपमान कर रहे और हो रहे हैं । माया विनकाम नहीं चलता, लोभ विन पद नहीं चले, दरवाजेसे निकलते समय चोखट लग गई तो बिना लाठी प्रहार किये क्रोध शान्त नहीं होता । प्रभो! हमारी स्थिति विगड़ती जा रही है, समान सच्चे सेवकोंसे खाली है । पुरानी लकीरें

मिटनी नहीं । समान गहरी नींद ले रही है, व्यसन छाया जैसे साथ छोड़ते नहीं । ज्ञान दीपक बुझ गया-तुम्हारे वाक्य शास्त्रोंसे बाहर हो गये, उनके बदले हमें तुमसे बिछा रखनेके लिये बहुतसे असम्बद्ध वाक्य उनमें योजित कर दिये, पर प्रभो, छाया तुम्हारी ही है । आश्रय तुम्हारा ही और साक्षी तुम्हारी ही है । जैन नाटकशालामें यह तुम्हारा ही परदा आगे लग रहा है 'अहिंसा परमो धर्मः' प्रभो । परदा सुन्दर है, तुम्हारा नाटक बनार्या भी श्रेष्ठकर है, सामान सब सुन्दर है, पर प्रभो! परदेके अन्दर खेल जो आज हम खेल रहे हैं, वे सुन्दर नहीं हैं, 'इस नाटकशालामें हम छुपे २ तलवार चलाते हैं, लाठी मारते हैं । परछी सेवन करते हैं । चोरीसे चूकते नहीं । डाँके डालते हैं । शराब पीते हैं । मांमका भी कभी कभी स्वाद ले लिखा करते हैं । झूठ बोलते हैं । मुकद्दमें लड़ते हैं । भाई भाईको शस्त्री चढ़वा देते हैं । मान करते हैं । छलरूप विन दिन नहीं खोते । दो चारको मृत्क चर्मावान किये सोते नहीं । गरीबोंका खून बिना चूसे पानी नहीं पीते । किसी बड़े आदमीको बिना कोसे कबल गृहण नहीं करते । अब हमारे यही व्रत हैं और येही धोखे अनन्त-मार्ग हो रहे हैं । नाटकके पात्र 'पात्र माने वर्तन हो रहे हैं, चाहे तो आग रखलो । चाहे पानी भरलो । चाहे धान्य मरलो । चाहे मृमासे मरे रहो । चाहे उल्टे रखदो । चाहे सीधे रखे रहने दो । हो सके तो सुंहपर दहन भी रखदो उन्हें इतरान नहीं । प्रभो! इसीके



अन्दर उसी परदेकी आड़में बड़े २ रत्न, मोती, हीरा, पन्ना, चन्द्र अग्रे कृत्वा तकिया लगाये तोंद बढ़ाए शरद मेयके समान सुन्दर बैठे रहते हैं। नगरनारी निजनारी हो रहीं है। उनकी उर्वशी उनकी प्यारी, उनकी दुलारी अब वे ही 'स्याही सोख' जैसी हो रहीं हैं—शुभ अवसरों पर हम्हीको रंग रंगीले और चमकीले वस्त्राभूषणोंसे सुसज्जित कर समामंडपमें प्रातिहार्याकी उनमें स्थापना कर स्थापित कर देते हैं। ये सब खेल अब तुम्हारी परम पुनीत नाट्यभूमिमें हो रहे हैं—पात्रोंने बिदुषक भी बड़ा योग्य चुन लिया है—देखो वह सड़ा है—लाल पीली आखें किये। क्योंजी तुम्हारा नाम क्या है। हमारा नाम-विदूषक, आका नाम, सास राशिका नाम है। पंचमकाळ....। क्यों घुना। जी हा कहना नहीं होगा। आजकल कई पण्डितोंकी राशि भी पंचमकाळसे मिलती जुलती है, न मानो तो किसी ज्योतिषीसे पूछ ले।

प्रमो ! आइये ! आनेका समय है। हम नहीं; पर समय तुम्हारा अवतरण चाहता है। प्रेमरन्ध्रन हमारा टूट गया। इसमें गांठ बांध जाइये। पैर शिथिल पड़ गये, बिना सहारे मुंहकी प्रतिस्पर्धा नहीं उड़ती। स्वतन्त्रताका सबक पढ़ा जाइये। परतन्त्रताकी बेड़ी काट जाइये। एक घड़ीके लिये गिन मंदिर ही में आकर जैनियोंको उपदेश दे जाइये। वापाण-मूर्तिसे ही कहला दोमिये कि तुम सच्चे जैनी बनो। बाहर सफेदी और भीतर कालिमा मल रक्खो। बगलावृत्ति छोड़ हंसवृत्ति धारण

करो। तुम सब मिलजुलकर ऐक्यसूत्रसे सम्बद्ध हो जावो। आपसी फूट, कलह, तीर्थविषयक झगड़े और घृणादृष्टि इनको चकनाचूर कर स्वातन्त्रगिरिकी प्रचण्ड पवनसे उड़ा दो। प्रेमकी निर्मल धारामें बहादो। और अब समयानुकूल कार्य करो।

प्रमो ! लाखों गिन मंदिर बन गये। बनते जा रहे हैं। कई लक्ष मूर्तियोंमें आपकी स्थापना कर चुके। जन्मसे ही आज तक तुम्हारी निर्मल वाणी मंदिरोंमें तुम्हारे साम्हने सुनी। तुम्हारी पूजा, भक्ति जन्मसे ही की। अहर्निश तुम्हारे नामकी बड़ी २ एकसौ आठ गुरियावाली मालाएं फेरीं। आपकी पूजाके साथ साथ लाखों भाइयोंकी पेटपूजा भी करा चुके। अनेकवार आपके दर्शन शिखरनी, गिरनारनी, सोनागिरिनी जाकर कर आए। कई लक्ष रुपया तुम्हारे निर्वाणस्थानोंकी रक्षा हो एतदर्थ विद्वेषाग्निमें मस्म कर दिये। उनकी रक्षासे अनेकोंकी रक्षा होने लगी। पर प्रमो ! हमारी अवनति बढ़ती ही रही। हमारे अधःपतनने अपनी गतिको मंद न की। हमें स्तिर सुख और शान्ति न मिली। दश बीस कोड़ाकोड़ीके उपासकोंका फल नजर नहीं आया। शायद सुनते २ कान बहरे हो गये पर हमारी कपाएं तनिक भी कृश न हुईं। अज्ञान हमारा जरा भी न पिघड़ा, मिथ्यात्व हमारा बना ही रहा। चंडी, मुंडी, भैरों, काळीकी उपासना तब भी करते ही रहे। जैनी शब्दका अर्थ समग्र भी न सके। पर जैनी हम बने ही रहे। प्रमो !



हमारी रक्षा करो । जैनियोंको सद्बुद्धि दो कि वे समयका, द्रव्यका सदुपयोग करना सीखें ।

वीर प्रभो ! आइये, अब हमारी दशाको सुधारिये । हमारी संवशक्ति तेरह तीन हो गई । हथ, सबकी दृष्टिमें बुरे नजर आने लगे हैं । हमें प्रेम विहीन देख सन ही धिक्कार देते हैं । हमारी जातिमें ये दीनमुख तो अनेक बच्चों सहित भूखों मर रहे हैं । भूखके मोरे उदर पीठसे मिटा जा रहा है । छातीकी हड्डियां धनुष जैसी तन रहीं हैं । बच्चे मुंह फाड़ फाड़ कर रो रहे हैं, बख बिन सच्चे दिगम्बर बन रहे हैं । उनकी बेटी व्याह योग्य हो गई है । पैसा उबार नहीं मिलना । पापी पेटको भरनेके लिये तरस रहे हैं । पर प्रभो ! हमें उसकी दीन दशापर जरा भी दुःख नहीं होता । कुबेरचन्दनी बड़ी २ सुवर्णमाला गलेमें पहिने गद्दीपर बैठे हैं । पीकदान लिए नौकर आगे खड़ा है । नये मकान बन रहे हैं । नई शादियां दो दो तीन तीन हो रही हैं । कुत्सी टेबुलोंसे धर भर रहा है । बड़े २ प्रतिष्ठित अंग्रेजों, रईमों, बकीलों और बैरिष्ठोंके मोन करा रहे हैं । सड़के गुलाबनलसे सिंन रही हैं । पर विचार दीनमुखकी ओर दृष्टि भी नहीं जाती । क्योंकि वह जातिफा है । गरीब है । शौच-झीमें रहता है । कुल्ला है । मैला रहता है । भय फिर कुबेरचन्दकी निर्मल दृष्टि उसे स्पर्श क्योंकि कर सकती है ? उनकी पवित्र लक्ष्मी क्यों उसकी सड़ी शौचझीमें रहना पसंद करेगी ? उनका पवित्र उज्ज्वल मोनन क्योंकि उनके

पापी पेटमें जाना स्वीकार करेगा । उनकी निर्मल कीर्ति क्यों उसकी शौचझीके चक्कर लगाना स्वीकार करेगी । उनके रसिक कान उसकी दुःखमरी कर्ण कटुक आवाज कैसे सुन सकते हैं । अनेक मंद सुगन्ध पवनके झकोरोंसे वेष्टित उनका शरीर, कैसे दीनमुखका मलिन शरीर स्पर्श कर अपनी इज्जतमें बड़ा लगावेगा ? कुबेरचन्दजी 'चार घोड़ोंकी टपटम पर चल रहे हैं और उन्हींके जातिभाई भूखे, बख रहित, उनके आगे २ दौड़ते जा रहे हैं । प्रभो ! कैसा भयानक दृश्य है । कैसी विषम समस्या है, एक ओर तो स्वर्गीय सुख दूसरी ओर नरकयातनाका भीषण दृश्य, प्रभो ! रक्षा करो, अवलम्ब दो—

प्रभो ! ओइये जातिको बचाइये उन्हें बताइये । जैसी चलाई-ब्यार पीठ पुन तैसी दीजै । जैनियोंके हृदयमें विराजकर उन्हें समझाइये । उन्हें कमसे कम यह ज्ञात करा दीजिये कि जाड़ेके दिनोंमें गरमियोंके उपचार न करे । सब समय एक ही गीत न गाया करे । आज जो कार्य हिनकर हट-पड़ते हैं निनसे हमारा कल्याण होता है, कालान्तरमें वे हमें दुःखदायक भी हो सकते हैं.... इसका दृष्टान्त यह हो सकता है कि गरमियोंके दिन ये, सूर्यके प्रखर प्रभावसे पृथ्वी कोषित हो रही थी । समस्त ठंडक मगरमच्छोंकी तरह जलशयोंकी ओर भागी जा रही थी । कोई पर्वतोंकी तलहटीमें भी जा छिपी थी । ऐसे महागरमियोंके दिनोंमें पं. मोलानाथ तिवारीके यहां उनके परमपूज्य गुरु महाराज



शान्तिमालाजी यन्मान होकर पधारे । वे दुप-
हरको आये थे इसलिये उनके आते ही तिवारीजी आतिथ्य करने लगे । ठंडा जल लाकर पैर धोए । नरफके जलसे स्नान कराये, ठंडे २ भोजन कराए । ऊपरसे ठंडाई पिनाई । रात्रिका समय हुआ तो बाहर चौकमें पलंग बिछवाया, नाम स्वच्छ गद्दे पर गुरु महाराजको लिटाया, एक महीन वस्त्र गुलाबनजमें भिगोकर गुरु महाराजको उड़ाया और फिर सब कुटुम्बी जन लगे पंखा करने । गुरु महाराज कुछ दिनों के बाद घर चले गये । जब और कुछ दिन बीते तब तिवारीजी भी चले बसे सो भी सदाके लिये रहे घरमें उनके लड़के । गुरु महाराज तिवारीजीकी सत्कारको फिर आए । अबकी बार नौदंडा मौसम था ठंड बहुत जोरकी पड़ रही थी । घर पर अग्नि देवकी पूजा हो रही थी । अबका पहिलेसे बिल्कुल उच्छा समय था, बह था । ज्येष्ठका महीना और यह है पौषका महीना । गुरु महाराजके आते ही तिवारीजीके पुत्रोंने आतिथ्यमें कुछ उठा न रखी, उनके स्वर्गीय पिताने जैसा आतिथ्य किया था वह था बारह आने तो पुत्रोंने चार आने और बढ़ा कर आतिथ्य किया था । वही जब संन्यासाल आया तो गुरु महाराजका बाहर चौकमें पलंग बिछवाया । उस पर गुरुमहाराजको लिटा कर नही गुदाबी जलसे मीठा वस्त्र उठाकर सब ही लगे पंखा करने । (कारण कि) उन्होंने सोचा कि निम्नमें गुरुमहाराज यह न कहने पावें कि पिताके घरमें तब वे लड़के हमारा कुछ आदर नहीं करते । गुरुमहाराजकी पड़ी प्राणोंकी,

क्या करें वेचारे आतिथ्यकी अवहेलना कैसे कर दें । थोड़ी देरमें लड़के हाथ जोड़ कर गुरु महाराजसे बोले । पूज्यपाद गुरु महाराज, हम बालक हैं, कृपा कर कहिये हमारे सत्कार करनेमें तो कुछ कमी नहीं है ? यदि हो तो हम प्रति करें । गुरु महाराज बोले । पुत्रो !!! तुम्हारे आतिथ्यमें, सत्कारमें, खाने पिशनेमें कुछ भी कमी नहीं है । तुम खूब ही मत्किमें रहे हो—पर ये मेरे पापी प्राण नहीं निकलते । तो इसके लिये तुम क्या करोगे !!!..... यही हाल हमारी जैन जातिका हो रहा है ।

प्रमो ! आइये, हम स्वागत करते हैं । जातिको रसातल जानेसे बचाइये । कूपमें गिरते आलकोंकी रक्षा कीजिये । दिन पर दिन बहुतसे अनर्थ बढ़ते जा रहे हैं । जैनियोंको आत्मदेवने मोहित कर लिया है । अज्ञानने घेर लिया है । गरीबी तंग कर रही है । फूट बढ़ रही है । पढ़े लिखोंकी संख्या कुछ बढ़तीपर है पर जातिकी संख्या बहुत ही घट रही है । धर्मकी सत्ता समूल जाना चाहती है । जैनी दयासे डरनेलगे । हिंसामें रमने लगे नास्तव्य से मुख मोड़ रहे हैं । तुम्हारे परम पवित्र धर्मको अब ये कलंक लगाने लगे । कार्योमें इनकी गिनती होने लगी । संनारमें उपहास करवाने लगे । चारित्रहीन, श्रद्धा हीन, और ज्ञान हीन हो गये । अवतारनके निम्न कारण हैं वे सब जैनियोंके घरमें पुपते जा रहे हैं । ऐसे समयमें तुम्हारा आना प्रमो, पथप्रदर्शक होगा, धर्माशक्त होगा । कल्याणकारी और जैनियोंका पुनर्गन्म करानेवाला होगा । (१३



समय आपके परमापदेशसे, ज्ञान वृद्धि, धर्म-वृद्धि, चारित्र्य शुद्धि जातिमें हो जायगी। आपसी बलह और द्वेष मिट जायंगे। घनवान मानगिरिसे उतर परोपकारमें लग जावेंगे। पंडित चारित्र्यशुद्धि कर जैन धर्मका वास्तविक स्वरूप जनताको सुनावेंगे। जातिमें कपटी नेताओंके बदले, सच्चे नेता और सच्चे सेवक तैयार हो जावेंगे। पण्डितोंमें जो ज्ञानवृत्ति, और वैसे ही जो नीच भाव पड़ गये हैं वे समूल नष्ट हो जावेंगे इत्यादि। प्रभो! तुम्हारे अवतरणसे इस समय बहुतसे सुधार होंगे, अनकोंकी जान बचेगी। अनकों भ्रम दूर होवेंगे। तब हे प्रभो! अब आनमें विलम्बन कीजिये। क्योंकि जब भूखसे व्याकुल हो हा हा सासें ले रहे हैं। दुःखसे अधुचारा बहा रहे हैं। ऐसे समयमें तुम्हारा आना न होगा। तो फिर कब जैनियोंके हृदयमें, मलिन हृदयमें ही सही। एकवार, बिना आदरसत्कारके ही, बिना बुलाए ही आनेकी कृपा कीजिये। मम वीर प्रभो। यही हमारी विनय है।

हृदयान् देने की चेष्टा

सूचनार्थ ।

१-शरीरका सुख सभी चाहते हैं। वह सुख सभी मिल सकता है जब कि शरीर नीरोग व प्रष्ट हो। इसके लिये दो उपाय हैं; (१) वीर्यकी रक्षा, व (२) कसरत।

२-जिन्हें चाहिये हमारे पाससे वीर्यरक्षा व कसरतकी तरफसे लिखकर मगाले।

३-एक हालतमें और चाहें जिस उम्रमें कसरत व वीर्यकी रक्षा हो सकती है। जो लोग

वीर्य बिगड़नेपर व कमजोर होनेपर तथा उम्र ज्यादा हो जानेपर हताश हो जाते हैं, सुधारनेकी इच्छा छोड़ देते हैं उन्हें चाहिये कि हमसे एकवार सलाह तो पूछें। थोड़ा बहुत उपाय हरएकका हो सकता है।

४-धर्मके प्रेमियो, हमारा जो मोक्षमार्ग पंचम कालमें रुक रहा है वह ध्वजवृषभनाराच नामके सर्वोत्कृष्ट संहननके खो जानेसे रुक रहा है। आगसे उस शक्तिको संभालोगे तो तुम्हें फिर भी बहुतसे सुख मिलेंगे और पुण्यकी प्राप्ति भी होगी। स्वगादिमें जन्मने लायक पुण्य जो अभी भी मिल सकते हैं उनका लाभ भी बिना शरीर शक्ति बढ़ाये नहीं मिल सकता। तुल्लारी कोई न कोई संतान मोक्ष प्राप्त करनेवाली भी आगे होने लगेगी, अगर तुम अपनी शक्तिको अभीसे बढ़ाना शुरू करदोगे।

५-अगर बताए हुए उपाय करोगे तो सुखी व बलवान रहोगे; नहीं तो दुःख भी पीते हुए भी सुखी नहीं बनसकोगे।

६-दूध घीकी खुराक न मिलनेपर भी कसरत व वीर्यरक्षाके बताये हुए उपायोंपर चलनेसे शरीर बलवान व आनंदी बन सकता है, यह खूब विधास रखो।

७-देशी कसरतको पैसा कम लगता है, समय कम लगता है, स्वतंत्रतासे होती है, सर्व अवयवोंको होती है, फायदा सशास्त्र होता है, चपलता धैर्य और स्वसंरक्षणकी तर्कीवें प्राप्त होती हैं, आयुष्य बढ़ता है, झंझनी कसरतको पैसा बहुत लगना है, परतंत्र होती है, स्वसंरक्षणकी तर्कीवें प्राप्त होती नहीं; कभी कभी वह एकांगी कसरत होती है और अनियमित होती है, इससे यथायोग्य आरोग्य प्राप्त न



होकर उल्टा मनुष्य कुछ रोगी बनता है
८-सब कसरतोंमें कुस्ती, पानीमें तेरना, मलखंभ चढ़ना, बनेटी, छाठी आदि खेलना, दंड बैठक, निकालना, नमस्कार करना-इससे थोड़े वक्तमें अल्प खर्चमें सर्वांग स्वतंत्रतासे चाहे उस ठिकानेपर नियमित कसरत होकर धैर्य, चपलता, स्वसंरक्षणके गुण प्राप्त होते हैं और शरीरस्वास्थ्य एकदम अच्छा रहकर ब्रह्मचर्यका महत्त्व समझनेसे (आवश्यकतासे) वीर्यकी रक्षा होती है । इससे आयु बढ़ता है; बुद्धि संतोज होकर उद्योगी सद्विचारी परोपकारी नररत्न तैयार होते हैं। ऐसे नररत्न होनेसे राष्ट्रकी उन्नति होकर धर्मकी रक्षा होती है ।

९-जगह जगह औषधालयोंमें सुव्यवस्थासे कसरतकी शाखा स्थापित होगी और उनमें शरीरका महत्त्व, ब्रह्मचर्यका महत्त्व, दुर्गुणोंका त्याग, निःसत्त्व मादक पदार्थोंका त्याग और सर्वापयोगी सर्वगुणी सदात्म कसरतकी शिक्षा दी जायगी तो सार जगमर आरोग्यका फैलाव होकर रोग नष्ट हो जायगा । रोग पैदा करके नष्ट होनेका उपाय करनेसे रोग नहीं होने देना ही ठीक है ।

१०-प्रत्येकको आरोग्य रहनेके लिये नियमित आहार, नियमित कसरत करना चाहिये और सात्विक अन्न ग्रहण करना चाहिये । वीर्यकी रक्षा पचीस वर्षतक अच्छी रखना चाहिये और नाटक, कादम्बरी पढ़ना, चुरट पीनका, खराब चीजोंके देखनेका त्याग करना चाहिये और सद्वर्तनसे रहना चाहिये । इसीसे आरोग्य रहेगा ।

११-इस विषयपर मालवा व सुवर्हकी प्रांतिक जैन सभाओंके दोहदवाले संयुक्त अधिवेशनमें पास हुआ प्रस्ताव-जैनसमाजमें शारीरिक रक्षाके उपायोंमें दुर्लक्ष होता देखकर यह संयुक्त सभा प्रस्ताव करती है कि व्यायाम, ब्रह्मचर्य रक्षा और शुद्ध खानपानके नियमोंका अभ्यास अच्छी तरह किया जाय । प्रस्तावक-हिरानन्द मलुकचन्द (काका) । समर्थक-कुंवर दिग्विजयसिंहजी । निवेदक-

हिरानन्द मलुकचन्द दोशी (काका)
व्यवस्थापक, गौ. ने. जै. व्या. शा. सोलापूर.

‘सहारा दीजिये स्वामिन्’।

प्रभो तुमसे विनय मेरी सहारा दीजिये स्वामिन् ।
हमारा हाल दिगढ़ा है सहारा दीजिये स्वामिन् ॥
कहां मैत्री धरम हमरा ओं ये आपसकी लक्ष्मरों ।
मिले ये सो विदुइते हैं सहारा दीजिये स्वामिन् ॥
कहां पनारी भाता सम गिनो उपदेश था तुम्हारा ।
हुए न्यमिचारी खामे अब सहारा दीजिये स्वामिन् ॥
नसोते दूर तुम भागो पास उनको न आने दो ।
चरानी अब बने जाते सहारा दीजिये स्वामिन् ॥
पतिवत धर्मको पालो दीलपर प्राण भी पारो ॥
पतिवत इदु जाता है सहारा दीजिये स्वामिन् ।
इया पागे बनो प्रेमी लगाओ तुम गले सबको ।
कपायी बनगये पंडे सहारा दीजिये स्वामिन् ॥
दयाका कर्य निषयाओको दुपसे जान देना है ।
उन्दे सपना बनाते हैं सहारा दीजिये स्वामिन् ॥
हमारी जाननी गैया मोटाटिया सब झगड़ करके ।
सुखते सुप्रसन्नगरे सहारा दीजिये स्वामिन् ॥
उपाते जैन जातिको हुंदे चरपाद सब रंगते ।
विनय हर वक्त है तुमसे सहारा दीजिये स्वामिन् ॥

सुभाषचन्द परमानन्द जैन मोटियाँ,

श्री गौतम नेमचंद जैन व्यायामशाला-सोलापूर ।

व्यवस्थापक:-श्रीयुत हिराचंद मलुकचंद दोशी, (काका) सोलापूर ।

सप्रेम जुहार,

हमारा शरीर प्रकृतिका विवरण इस प्रकार है:-हम कसरत

नित्य देशी पद्धतिसे करते हैं । हमारा वजन हालमें रत्तल
कभी कभी इंग्रेजी सेर

है । दंड निकालनेकी गिनती.....बैठकोंकी गिनती..... ।

चाह पीते हैं । कुस्ती करते हैं । विवाहित हैं । शरीर वात
दूध दौड अविवाहित पित्त

वाला है । रातको सोनेका समय..... । आलस रोग
निरालस भीरोग

की अवस्था है । छातीकी लंबाई..... इंच । दंडोंकी गोलाई..... इंच ।

शरीरकी जंचाई..... फुट व..... इंच । जाति..... है । कसरत

करनेका समय..... है । अम्बाडे में कसरत करते हैं ।
घर

पढ़ने लिखनेकी तादाद..... ।

कसरत खुली हवा में करते हैं । पानीमें तिरना आता ।
बंद मकान नहीं आता

तंबाखू चिरुट पीते कसरत शुरू करते समयका वजन ।
नहीं पीते

कसरत शुरू करनेकी तारीख.....उम्रकी ताकाद

है । परस्त्रीका त्याग हैं ।
नहीं हैं ।

(पीछे देखो)

नोट:—१. पीछेकी खानापूरी वरकै व्यवस्थापकके पास जरूर भेजना चाहिये और जो माई कसरत नहीं करते हों उन्हें जरूर करना चाहिये ।

२. जहां जहां बीचमें लकीर लगाकर ऊपर नीचे दो दो बातें लिखी हैं वहां जो कबूल हो उसे कायम रखना चाहिये और दूसरी बातको काट देना चाहिये ।

३. कसरत करनेवालोंके बीस बीस फार्मोंमेंसे हम अब्बलकी छान्ट करेंगे और अब्बलको इनाम व सर्टिफिकेट भी दिया करेंगे । यह कार्रवाई छह छह महीनेमें एक बार होती रहेगी ।

पूरा नाम _____

मुकाम _____

पोष्ट _____

जिल्हा _____

हस्ताक्षर _____

तारीख _____

जीवनके उद्देश्य ।

जैन-मनीषाल जैन-आ० मनी-जैन चमार-
पुस्तकालय भागसा ।

उद्देश्य वह होता है, जो किसी मनुष्यका श्रेष्ठ हो । मनुष्यके लक्ष्यके कई लक्ष्य दृष्टिमें हो सकते हैं । उन पर ही मनुष्यका जीवन सफल या निष्फल होना निर्भर है ।

१-निर्वाह योग्य जीविका-किसी न किसी सीमा तक यह उद्देश्य अच्छा है । मनुष्यको स्वयं और अपनी गृहस्थीका पालन करने पड़ाना करना चाहिए । स्वयं काम करने योग्य होने हुए भी दूसरोंके जमीन रहना निर्लज्जता है । गृहस्थीका मुक्त या दुःख उसकी आय-न कि उसकी पूँजीको अच्छे तरह व्यय करने पर निर्भर है ।

अपने चारित्र्यको उज्ज्वल करने और लाभदायक कार्योंमें सहायता देनेके लिए दान करना चाहिए ।

यह उद्देश्य मुख्य उद्देश्य न होना चाहिए, जिसके लिए और श्रेष्ठ कार्योंकी आहुति दी जाये ।

२-आत्मोन्नति-किसी मनुष्यको धन संचय करनेमें ऐसा लीन न होना चाहिए कि उपकारक अध्ययनको कुछ समय ही न दिया जाय ।

यह रोडकी बात है कि बहुतसे युवक विद्यालय (College) छोड़ने पर अपनी पुस्त-

कोंको एक ओर फेंक देते हैं और सब प्रकारके पढ़नेको तिष्ठान्त्रि देते हैं । यह बहुत बुरा कार्य है ।

एक प्रसिद्ध अमेरीकी बकीलका कहना है कि मैं नहीं समझता कि मैंने कोई काम जिनमें मैं सर्वथा अनभिज्ञ था-विश्वविद्यालय (University) और पाठशाला (School) छोड़नेसे पहिले सीखना प्रारम्भ किया, तिम पर भी उसमें मैं पूर्ण विज्ञ हो गया ।

३-अध्ययनके लिए समयकी इच्छा करना, उस ओर मुझका मानकी आवश्यकता है । जीवन भर एक समय क्रम रखनी । प्रातःकाल एक घण्टा अध्ययनके लिए अवश्य रखना चाहिए । यह समय विज्ञान, इतिहास, जीवन चरित्रादि मित विषयसे भरित उन्मज्जल और जीवन उन्नत हो-में लगाया चाहिए । दिन प्रतिदिन अविकल ज्ञाता और उत्तम होनेकी इच्छा हममें सदैव रहनी चाहिए । मनुष्य स्वयं जिनका इस ओर बड़ेगा उसका ही वह दूसरोंका उपकार पर मुक्तता है । समाचारपत्रावलोकन आदि भोजनक परमात् तथा सारा समय करना चाहिए ।

४-परोपकार-सर्वश्रेष्ठ अच्छी शिक्षा उदाहरणसे दी जासकती है । परन्तु और प्रसारसे भी बनाई की जासकती है ।

जिस नगरमें आप रहते हों उसका स्वास्थ्य बचानेका प्रयत्न करें । इसके लिए स्वच्छता पड़ी, आवश्यक है । औषधालय, वैद्य, उपवासालि चिकित्सा और व्यायामको उत्तेजना दो । अच्छी सड़कें, रात्रिमें

प्रकाश, सार्वजनिक उद्यान आदि भी इष्टि-
पात चाहते हैं।

भारतमें जो समान-सुधार करनेवाला दल
है उसको हर स्तरहसे उत्तेजना देना आवश्यक
है। इसके कर्तव्य-स्त्री-शिक्षा प्रचार, विवा-
होंमें सुधार तथा अन्य कुुरीति निवारण है।
आर्थिक और नैतिक सुधार और भी आव-
श्यकीय है। सच्चाई, सफाई, परमात्माके विप-
यमें सत्य ध्यान और धर्म जैसे बने उन्नत
करने चाहिए।

स्वयं करके दिलानेके सिवाय हम बहुत
सुधार अपने मित्रों और पड़ोसियोंसे कह
कर कर सकते हैं। व्याख्यान (lecture) देना
भी बहुत चाहिए। (बहुतसे ग्राम ऐसे हैं
निर्धन आदि किसी बातका ज्ञान है
ही नहीं। उनको उपदेश देनेको उपदेशक
भेजने चाहिए। विद्या प्रचार होनेसे
साहित्यकी उन्नति बहुत अधिक हो रही है।
वाचनालय स्थापित करने चाहिए। उनमें
उपयोगी भासिक व अन्य शिक्षावद् समाचार
पत्र प्रसारित चाहिए।

अंग्रेजी आदि अन्य भाषाओंको अच्छी
तरह जानने वाले मनुष्य मातृभाषा हिन्दीमें
पुस्तकोंका अनुवाद कर सकते हैं। या इससे
भी अपेक्षित मौखिक पुस्तकोंकी रचना कर
सके हैं।

भारत-जिसमें सत्कारके पंचमांश जीवधारी
रहते हैं। उनका कर्तव्य छिन्न-मूर्खीत्तम स्थान
है। बीसवीं शताब्दी में इन और युव उन्नति
करनेका प्रयत्न करो। जोन वैज्ञानिक नियम

जो नीचे दिए जाते हैं सबको पालने चाहिए।

जितना भी उपकार तुम कर सको,
जिस प्रकार भी तुम कर सको,
जितनी तरह भी तुम कर सको,
जिस स्थान पर भी तुम कर सको,
जिस समय भी तुम कर सको,
जितने भी लोगोंका तुम कर सको,
जितने समय तक तुम कर सको, करो ॥

हास और व्यभिचार- वाला विवाह

(१)

हो रहा है जैन-जातिका हास,
वृद्धि गत होता है व्यभिचार।
नहीं है हमको कुछ अवकाश,
धरै जो इसपर स्वीय विचार।
धनी हो धन-प्रदसे उन्नत,
कौं छोटे बच्चोंका ब्याह।
न रहता फिर उनमें पुरुषत्व,
निरी सधेवा भी मरती आह-॥
बोयें जो जीवनका है मूल,
कराते मर जाते उसे बेकार।
स्व-सुत-जीवन मगमं कुत्रिण,
बो रहे पिता तुम्हें धिक्कार ॥

कई करत यों बाल-विवाह,
श्रीय वीरादिक सुख हो प्राप्त।
पितानीकी तो भी यह चाह,
हुई सुतकी भी आयु समाप्त ॥
अगर वे जीवें धृष्ट-कुमार,
उहोंका जीवन ग्राम समाप्त।

* एक अर्थको देखा भाषावृत्त।



सदा रहते हैं वे। नीमल,
प्रमेहादिक रोगोंके स्थान ॥
अग्नि हो जाती है अतिमन्द,
न पचता थोड़ा भी जो खाया
न रहती उद्यमकी, तो मग्न्य,
सर्वतः होय शुष्क—सी काय ॥

(३.)

दिन ब दिन बढ़ते जाते रोग,
कई आते हैं वैद्य हकीम ।
न मिटते कृत कर्मोंके भोग,
उगे क्या आस्र बुओ यदि नीम ।
अपुष्ट्योत्पादक, शक्ति न रहे,
वीर्यमें क्यों कर हो सन्तान ।
इसीसे "वांश" दोषको लहे—
नारि, नरके न दोषका ज्ञान ॥

देव वंश होने यदि सदान,
शीघ्र—निर्बुद्ध, अरु रोगी देह ।
बने मुश्किलसे उसके प्राण,
रहे वह भय—आलसकी रोह ॥

(४.)

शीघ्र जब हो जाता है व्याह,
न रहता शिवा पर तत्र ध्यान ।
ग्रहण करते कुपथोंकी राह,
न होता धर्म कर्मका ज्ञान ॥
बूझें प्रमद—जननके वक्त,
मरे पाकरके बड़े अग्रह ।
हेतु इसका यह ही है फल,
करे गुड़े गुड़ियोंसे व्याह ॥
अन व्यभिचार—हासता भूल,
छोड़ दो प्यारो ! बाल विवाह ।

रखो स्वातन्त्र कभी मन भूल,
"बालकोंको" हो वे परवाह ॥
वृद्ध विवाह ।

(५.)

हाथ धनके वंश हो मा बापे,
आत्मता करे वृद्धके साथ ।
पौत्रिको सम कन्या हा पौत्र,
बने स्त्री पकड़े वृद्धका हाथ ॥
अरे ! पापियो ! न आर समान,
कमाईका भी हृदय कठोर ।
जरा दुखसे बरता निष्प्राण,
न अबलाके दुखोंका छोरे ॥
भीनती थी गीलेमें आप,
बालिकाकी न आर्द्र हो देह ।
मात ! देती अब यो सनाप,
गया वह अब तेरा वह स्नेह ॥

(६.)

पूर्ण हो गई वृद्धको चाह,
किन्तु कन्या न नाथके योग्य ।
युवतिको जन हो मन्मथदाह,
न जनेर रहना उसके योग्य ॥
वृद्ध खाते पारठ अरु बंग,
न तो भी मित्रता है पुरुषत्व ।
रहे कब तेरु मुलमेंसा जंग,
ताज क्या पा सका कमन्द ॥
बड़े ज्यों चन्द्र शुद्ध पशुपति,
सामिनीके त्यों जग रह ।
समीचीन गृह्यद वैधम रबीय,
शक्तिसे बरता व्यथित अनंग ॥



(७)

स्वामी करते पानीको प्यार,
वित्त-व्ययका समझ साफल्य ।
सुन्दरीके हों कई विचार,
मिटानेको भन्मय प्राक्ल्य ॥
अंतमें पतिसे होय निराश,
न सहकर मनसित-बाण कटोर ।
देख सुत-यौवनका सु-विकाश,
चलाती चञ्चल नेत्र चकोर ॥
जान सुत भी अनुरोध अपनन्द,
मानिनीका न घटाता मान ।
अग्नि कापा कालके संबन्ध,
छोड़ देता घृत अपना स्थान ॥

(८)

बुद्धके समुत्पन्न ही यह हाल,
हुआ करते सुत-माँके संग ।
उठा ले नव बुद्धको काल,
खुन-हों तब उस घरमें रंग ॥
कई युवकोंके संग आनन्द,
उड़ाती पतिका संक्षित वित्त ।
गर्म जब रह जाता दुःखकन्द,
जाति मयसे हो बलुपित चित्त ॥
सौपती गर्भ-पतनका यत्न,
कटुक औषधियाँ करती पान ।
होंच जब निष्कल निखिल प्रयत्न,
बरे फिर अन्य देश प्रस्थान ॥

(९)

इसतरह फैलाती व्यभिचार,
अज्ञात ह्मणों नरनी चोर ।
ओरी पनो ! कुछ नरो विचार,

बनाते क्यों नहीं नियम कटोर ॥
हाथ ! उन बुद्धको धिक्कार,
न डरते करते जो यों पाप ।
डुबते जो खुद गहरी पार,
सुताको धिक् ! वे भी मानाए ॥
न होकर यों अयोग्य संवध,
शुद्धि युवकोंका हो यदि व्याह ।
नहि रहे यों फिर विवाह-वृन्द,
न करना होगा पुनर्विवाह ॥

Pt. G. C. G. Jaipur.

दयाणु हील दाऊकोने विनंति.

गजल.

आजाने थप आधा, आभारा लांछणो इस्ती,
दयाणु हील दाऊको, तमे ते क्या नदि जेदा ?
पुरा दा पाणलज्जेजे, लुआडी तेभनी लुदि,
दयाणु हील दाऊको, हलु क्या न आवे सुदि ?
हजारो आलुडी लुआ, वध वैभव पावे छे,
दयाणु हील दाऊको, हवे ते क्या अलपलु छे ?
रगवगती अलुभोली, घर जेक डालुमां लुआ,
दयाणु हील दाऊको, भरे न भेद क्या आलु ?
ललु आ क्या दुभी लुआ, ओभरी वार निद्राजे,
दयाणु हील दाऊको, वधव नरही पडी आवे !
हमारां वधे रगवगती, दुभी हल्लिजे दुभी नाना,
दयाणु हील दाऊको, पिनां डेम उडे तरवाना ?
दयाणु हेमने आर्षी, अति रिद्धि अने सिद्धि,
दयाणु हील दाऊको, पतांथे व्यय क्या लुआ !
धनिआ सांभजे विनती, हमारी न्ने नदि नार,
होनामा इन्धनी आते, हमारे क्या नर छे इस्ती !

(C. G. Gopalji)



महावीर-चरित्रम् ।

मन्त्रि प्रसिद्धाः श्री नम्वृद्धीपे लवणोदार-
षवोद्धोलकल्लोलशायसरसीरुहक्षिसमणिमुक्तानी-
लचन्द्रकान्तादिहारमालाविट्पुमशोभिततटप्रदेशा-
लङ्घने सति । अस्मिन् विट्पानो द्वीपान्तरे दत्तमा-
नेऽपि परमशोभातिशयेन प्रख्याते कलिकालनक
परिवर्त्तने निखिष्ठमुवनानां पञ्चजनानां परमवीरः
श्री महावीरः, ज्ञानार्चमः, स्वपरोद्धारकः, परम
क्षत्रियः, भारतवर्षस्यार्चकः, श्री महावीर-
तीर्थकरः ।

अद्याच्च श्रीमद्भिः यस्मिन् मार्गे असेधौत्,
तस्य हि हितोद्देशः स्वजीवनमुक्तावस्थायां-
अखिलान् जीवान् सम्पददर्शनज्ञानचारित्राण्ये-
तान्यपवर्गमार्गं संवोधयित्वा च कुर्वन् किञ्चरुद-
मिति ककुमाम्बरमतस्योपरि । अनादिनिघा-
विट्पे, कल्लमालस्य द्वितिथावसर्पिणः चतुर्थपादे,
जैनधर्मस्य प्रचारकः, लालकपालकश्चेति, अ-
स्माकं भारतवर्षीयजनानां चरित्राणां चरित्र-
नयकः, सुधारकश्च, श्री महावीर तीर्थकरः ।

श्री स्वामिना तस्मिन् धर्मक्षेत्रे कुण्डप्रवृ-
त्ताम्भि नगरे जन्म अकार्षीत् । यत्र हि अखिल-
नगरनिकषायमाणं, नारतागव्यपण्यप्रसारितरत्ना-
ल्लवणविट्पुमगुणमणिनिचयदि द्रव्यसमूहाख्यात-
पारावारमहाम्भ्यं, विदेहदेशगोतरीभूतं, कुण्डप्रवृ-
त्तामिव, नगरमिति ।

परम्पानान् वत्तपरीक्षितानि तस्मात् कुर्वन्तः

जीवात्मानः सततं शरीररहितमनेऽसुखसंपत्ति-
शालिन् मोक्षधामं प्राप्नुवन्ति । यत्र पदे पदे केव-
लिनां, तीर्थकराणां च निर्वाणभूमयः प्रत्यक्षी-
भूय विमान्ति येषां वन्दितुं भक्तिभरानतसग-
गद्गदहृषितदक्षितरागभावाः पुरुषदेवदेवाङ्गनाः
विद्याधराध्यागमनं प्रकुर्वन्ति ।

यत्र च धर्मसेविनां, देवविमानानां, चानेकवना-
ल्यानां, मोरेण भरितमिव, महत्सुन्दरमुमनसमा-
नमानां पौराङ्गनानां समानगुणधारिणां देवानामिव
गगनतलचुम्बनेषु राजसदनेषु प्रवासाः प्रकुर्वन्ति
राजप्रतिता ।

यत्र किञ्च राजसदनेषु दंष्ट्रप्रमानामुरुधूमवतिः
मेघप्रदमिव विभाति, धूमाच्छन्नसुवर्णलक्षानि
वर्णाक्षतुमेवपदले विद्युलता इव, विभाति, तेन-
परि संलग्नपताकाः विदेशादागताः ये मानवाः
तान् आतिथ्यसत्कारं प्रकुर्वन्ति ।

यत्र जिनमन्दिराणि स्वर्गशृङ्गास्पर्शं कुर्वन्ति ।
तेषां अनिर्वचनीया शोभा, शोभने । पौरजना-
ध्यागत्यानेरुष्यविशेषफलैः शालिना भवन्ति ।
अहर्भूतां कुर्वन्ति यस्मात् स्वर्गसम्पत्तिकलस्य
प्राप्तिर्भावते ।

नानारसोपेनगानवाद्यादिशृङ्गारिकजना-
दीपोत्सवं, जिनमहिमां च चमरक्षत्रमामण्डलपे-
तपूजां केविम्बमिव श्री जिनप्रतिविम्बमण्डलं,
अर्चयन्ति धर्मोत्सुकाः साधुवन्त । यत्र
देवसमूहाल्लुनाः स्वर्गा इव मार्गाः विदेह-
क्षेत्रशृङ्गासयन्तो हारा इव विहाराः, यस्मिन्
सखु विविधचिन्हाः दृश्यन्तेऽन्तः प्रचुर-
प्रमादाः, बहिश्च गच्छन्ति, सुशोभितरङ्गा-
शोभन्तेऽन्तः संगीतायशाला, बहिश्च गीतायु-



कुलकमलदीर्घिकाः, प्रचुरधानि निरुद्धाः कथम-
प्यभिजानन्ति, अन्तःपण्यत्रियो बहिश्च क्षेत्र-
भूमयः, नानाशुकविभूषणाः, विराजन्तेऽन्तः-
समा, बहिश्च आम्नवनराजयः, ससौगन्धिकप्र-
साराः शोभन्तेऽन्तर्विषणयो, बहिश्च सलिलाशयः ।
अक्षरसावधानाः कविसमयेषु कव्यो दृश्यन्ते,
राजद्वारेषु ।

यस्मिंश्चासति सिद्ध्यर्थं न कस्यापि
कदाचिदपि, दुःखमभूत्, यदि चेत्तहि
केवलं, अन्ययमावो व्याकरणोपसर्गेषु; न धनि-
नां धनेषु, वृत्तिकलहो वैष्वाकरणश्रेष्ठेषु, न
स्वामियनेषु, स्थानभेदश्चित्रकेषु न सत्पुरुषेषु,
दानविच्छित्तिरुत्साद्यत्तरिकषोडशमण्डपमण्ड-
पेषु, न तर्थागिप्रेष्ठेषु, भोगमन्त्रो मुन्येषु न वि-
लासिप्रियलोकेषु, स्नेहक्षयो रजनिविरामविरम-
प्रदीपपत्रेषु, न व्ययवहारिषु, एवं महत्सुखेन
वरी-वर्चस्ते सर्वे कुण्डलपुरस्य नागरिकाः ।

तस्य कुण्डलपुरस्य रत्नकः निखिल-वृत्थीवति-
शिरः, स्वर्णाद्रिसिंह इव समप्रधितिरान्येन्द्र-
इव परः चतुः रत्नाकर्मालाकर्मैकया मुचो स्वामी
कान्तिमयप्रतापावरागो नक्षत्रीभूत सम्पूर्णराजनयकः
चक्रवर्तिलक्षणोपेतः, चक्रधर इव कर्मणालदण्ड-
कमलोपलक्ष्य लक्ष्यमाणः, शङ्खे चकलाच्छेदनकि-
णाङ्कितः हरिश्च निर्मलरस्मरः गृह इव प्रत्युत्त-
क्तिनीलावलयोनिर्वि-तिरस्तेन राजनमन्त्र-
मुधाकर, रत्नाकर इव लक्ष्मीनितः नेकलक्ष्म्य-
प्रवाह इव भागीरथवारप्रवृत्तोऽकाशमणिः इव
दिवसोपनाथमानोत्तुङ्गः स्वर्गाद्रि इव सम्पूर्ण-
जीवमानवाद्योच्छ्रायः । दिग्दिग्गम इव तावत्स्य
रतदानाद्रितिरकः कर्त्ता, महात्मयनामाहर्ता,

कतूना मुकुट इव सर्वशास्त्राणां त्रैलोक्यवाचस्पतिः
कलानामृतसिक्तकुण्डविषयगुणानामागमः, उदयार-
त्ताचलदिनकरमणः, प्रहोतराहुहितजनस्य प्रव-
त्तमानाः, गोष्ठीभूषणानां रसिकानामाश्रयः,
प्रत्यदेशोकोदण्डकारिघटुभूता, साहसिकानां
धौरेयो गुणी विदग्धानां चाक्कोटिसमुत्सा-
रितारातिकुञ्जचलो हरिवंश इव मेघमा-
लयाः सूर्य काश्यापान्धवागुधारि मतिशुद्ध-
वन्द्येत्प्रितयज्ञानानां गणितरतिः नीतिमार्गप्रवर्त-
श्रीजिनेन्द्रागमप्रज्ञानां भक्तो, परमोत्कृष्टमनो-
हर्गलक्षणोऽयोक्तः, कुलवंशोपावनः सिद्ध्यर्थ-
इति नामराजा कुण्डलपुरस्यासीत् ।

अस्य राज्ञः कान्ताऽधिकान्ता, महिषी, महिता
विश्रुता मनमोहनविलोचनजितद्वयसंज्ञातमकुण्ड-
मालतीमञ्जरीलतानुकारिणी प्रियकारिणी विशाला-
नामाधेयकान्ता परमप्रिया, जितवर्ममकागुण-
वती, आसीत् विश्रुता मोहपी तस्य श्री
सिद्ध्यर्थयेति । एवं जम्पत्यो गृहस्पवर्मयोग्या
हिंसासत्यधर्माचार्योद्विग्नान्याचरन्तो राजनीत्या-
कररहितमुखादिभिः सुखावुमन्तो परमशौर्य-
प्रभापात प्रेमायाः पालनं चक्रुः ।

अन्यसर्वे दुःखसंक्रिमावसाताः शुद्धहृदय-
परिशालने च धर्मनीत्या स्वनीदने इन्द्र इव
यावयावामस्तु ।

यस्माच्चैवावशस्तस्य जन्म लोभो बहिः किट-
शुण्डविशेषवर्मात्मानः मोक्षगामिनिः आपादि
मातृगर्भं तहि पुण्यादयोत्तु शुभकर्मोदयमुक्-
कानि सर्वशान्त्यावाप्ति ।

एकस्मिन्नेव भोगमात्रतुलीरनिगनिगारा-
नक्षत्रचन्द्रचन्द्रांशोपातिशयेनमन्दमन्दममीगन्दी



लिताङ्ग तमिश्रायां रजनीमुखे मियकारिणी
पोडससवेशानि ददर्श ।

प्रातस्त्याग प्रभोस्मरणं सामायिकं च श्री
मगवन्तं नमस्कृत्य नित्यक्रियां कृत्वा सुत-
नाङ्गुल्येन शुभप्रावरणानि कर्तुं गुरुपूज्यैः कृत्यैः पूज-
ाङ्गुल्येन शुभप्रावरणानि कर्तुं गुरुपूज्यैः कृत्यैः पूज-
ाङ्गुल्येन शुभप्रावरणानि कर्तुं गुरुपूज्यैः कृत्यैः पूज-

श्रीमहीपतिः आगच्छन्ती, लावण्यवती
हृदयकमलप्रफुलितनयनद्वयोः कला इव मुदृशी
परममित्रा बोध्यं मुदुलवचनैः समाप्य तस्मै
मुदादीप्तं ददौ ।

अत्रादिश च मियकारिणा मुदितमनसा इमानि
शोडससवेशानि । प्रष्टुं च ।

महाराज ! एषां सवेशानां किं फलं भविष्य-
ति ? राज्ञः किञ्चित् काले स्थित्वा विज्ञानद्वारेण
सम्यक्कारेण ज्ञात्वा ज्ञवीत ।

प्रिये ! दृष्टः मनः तत्कालं तव तीर्थकर-
पुत्रस्य जन्म भविष्यति । इत्याहुः कृत्यं च वृषभो
मृगोन्मादिनां समस्तानां सवेशानां मित्रं मित्र
प्रकारेण कलाभ्यादात् ।

आगतं शुचिशुक्लरूपं चोत्तरावादनसंघे श्री-
वीरप्रभो आत्मा शोडसाच्युतनामविशाल-
पादमरुपधाय सम्पूर्णं कृत्वा प्रियकारिणेः गर्भे ।
यथाशुक्तिकायामाम्यन्तरे सलिलचिन्दुः सुखेन
प्रतिवसति तथैव सुतोऽमुं स्थितोऽपि । मना-
मयं यामपि नाभवत् ।

माता सलोहेन ब्रह्मनामां स्वज्ञानवलेन सरार-
सुतरं देवाङ्गनाम्य अशान्, यथा कलिमालि-
काम् परिविविज्जमाप्ये हि त्वेयं ! पंचरमेष्टि-
नां प्यायं, त्रिनामर्गं, सत्तत्त्वविद्यादिदृश्योत्त-

राणां पैः आनन्दनिमग्नवद्वरीलताचंचरीमिः, सर-
लागत एव नेत्रमासि पर्याप्तिमापूर्णयत् । परमशोभित
प्रसूतिगृहे मधुशुक्लवज्रोदशयत् । श्री तीर्थकर-
स्य जन्म अभूत् खलु । सुवनतिलकः श्रेष्ठज्ञाता
मतिश्रुतावधिज्ञानसहितहेममयपरमनाज्वल्यमानः
वज्रशक्तिमयैकलीलकवज्रवृषभनाराचसंहन-
नसमुक्तशरीराङ्गोपाङ्गः तीर्थकरः ज्ञानितराजित-
मुक्तशरीरं च सलीलपरिरक्षणं मधुशिक्षित-
सारसं मंजीरचाह्वहन्ती च सेगयताललशयंच-
चुरप्रचुरचारनारीसंचारिणीकरणव्यशोऽपेपांगो-
मुसज्जाउज्जालसरसीरुहललितेकिसलय इव फलो-
मलबाहुवह्नी तह्नीवविद्वबाहुः । याम्यदिश्यकोदय-
इव गर्भस्थानांत प्रकटी यभूव । १००० १००० ।

अस्मिन्नेव काले परमपवित्रमिन्द्रासनविभूति-
सज्जितस्वानुरूपेणात्मेन वाकशासनः देवसेना-
न्वितः मत्तधर्ममागमत् । श्री महावीरस्वामिनं
इन्द्रवारणस्योपरि निषाय कनकागण्डस्योपर्य-
नयत् ।

अथ चन्द्रकारपोडुकशिलांमध्ये रत्नालंकारशो-
भितपद्मनेन महावीरं स्थापयामास ।
सीरार्णवसीरादष्टोत्तरशतानि कण्डशानि प्रहीत्वा
दृष्टेण प्रभोऽजम्भामिषेकोत्सवमकारीत् । तदन-
न्तरं दिशमृषणरत्नालंकारेण अलङ्ककार । तदैव
देशनवाटस्तुतिपूजां च विधाय पुनः ऐरावते-
स्योपरि निवेष्टमनान् कृत्वा पटहनिनादिकेनेसह
कुण्डपुरे आगतवान् । मातुः समीपे प्रभुं समर्पितवा-
त्तदा हर्षितमनसा जन्मोत्सवं व्यधात् । एवं विधाय
सर्वं विदुषा अमरावलयगच्छन् । श्रीमहावीर-
मतिश्रुत्यवधिज्ञानानिदिष्येन बभूव, उत्कर्षतां
प्राप । अतः विश्वपरिज्ञानकलादयः धार्मिक-



विचाराश्चादिगुणाः स्वयं परणति प्राप ।

श्री वीरप्रभुः हरिन्मणिनिर्मिताङ्गणे क्रीडन्-
तथा दन्तछाविं प्रकाशयन् पूर्णसुधांशु इव
विराज । परिफुल्लकमलदलाकृते उत्तानशयने मुष्टि-
धारयन्, उदितसरसीरुहस्य समानतां दधौ । अथ
कदाचित् पवनविहारिहारिगुलुच्छुद्युगलगोस्तनी-
शिरीषलतिकापरिवेष्टितवनराजिविहारखाटिकायां
अन्यैः बालकैः सह क्रीडां कुर्वन् श्री वीरः,
अस्मिन्नेव काले मदोन्मत्तगजेन्द्रः समुद्रतटस्थी-
तले, चिच्छेद च वनजातवृक्षाः घूर्लिषु चिक्री-
डुत्सु श्री वीरसमीपे समागतवान् । गजेन्द्रेण
मयमीताः सर्वे बालका इतस्ततः पलायंचके ।
किन्तु वीरप्रभुः तस्य मस्तिष्कोपरि स्थित्वा
स्वकलेन गजेन्द्रं कदर्यितं चकार ।

अस्यामवस्थायां खलु श्री महावीर तीर्थकरः
गजाधिपदः, गजेनसह नानाप्रकारक्रीडां
कुर्वन्तु कदाचित्, दन्तगुल्लसर्पसमुत्पन्नपुत्रवन्,
कदाचित् मुण्डालदण्डेन सह समुजसाम्यमपार-
यन् तथा युद्धं च कुर्वन् कदाचित् मुण्डालदण्डे
पानीयं निक्षपन् एवं विधे विहारं कुर्वन्,
कर्मप्रमिते लयीयसि वयसि स्वात्मानं शुद्ध-
निश्चयनयात परगानन्दगमयन्मुभवं कुर्वन्, गार्हस्थ्य-
योग्यान्यहिंसाप्रत्याचौर्यादिव्रतानुरीचकार ।
पित्रोरस्याग्रहेऽपि परिणयं चकार । ब्रह्मवर्चस्यी
ब्रह्मचारी, एवासीत् । यस्मात् श्री महावीरः
त्रिशतवत्सरे स्थायिकरूपम्यक्तत्वं प्राप्तवान् ।
तस्मिन्नेवकाले यदा स्थायिकरूपम्यक्तत्वं प्राप्ति
अभूत् तदा मनसि वैराग्यं विनम्रम्
तदा श्री महावीरस्वामिनिर्वेदप्राप्ताय द्वादशानु-
प्रेक्षामनुष्ठायन् तस्मिन् काले पंचम मन्वन्तस्थाः

लौकान्तिकदेवा आत्तवस्त्रालंकारमणयः अक्षत-
पुष्पाशोभधूपचमरंछत्रादिवस्तूनि ग्रहोत्वा गाय-
वाद्यवेणुवीणादिकेन हर्षं प्रकर्षं तत्स्वन्तः समु-
पस्थिताः विबुधाः, श्रीमद् भगवन्तं मोक्षमार्ग-
प्रमितां प्रदक्षिणां विधाय नमश्चक्रुः । श्रीभगवतः
वैराग्यभावनां मुग्धलादिस्तुत्यारात्तिकां
कृत्वा प्रार्थयामासु । यत्किञ्च दीक्षायाः ग्रहणं
विचारितं स्वया तदतिप्रशंसनीयम् । इदं खलु
धर्मप्रवृत्तेः कार्यं कः कर्तुं शक्यः, धन्योऽसि
त्वम् । धन्यश्च भवतः परमाविश्ववैराग्यवृत्ति-
इत्यादि स्तुतिपूजां च भगवतः वैराग्ये
मानसं दृढं विधाय, सर्वे किञ्च विबुधा अगच्छन्
तदनन्तरं चतुर्णिकायाः देवाः स्वीय स्वीय वाहनेषु
अधिरुह्य कुण्डलपूरनगरं समागच्छन् अष्टोत्तर-
सहस्रैः कलशैः प्रमुमभिपिच्य नूतनमेकविमाने
अपूर्वरचना रुचिरे केनाप्यवर्णनीय काचाभ्रपट-
लादिमण्डिते शुभ्रवताकामिसंयुक्ते श्री विमाने
भगवन्तं संस्थाप्य दीक्षार्थमालोकशब्दं कुर्वन्तः
प्रसवानां बन्दुकं निर्मायान्योपरि निक्षिपन्तः
पूर्वदिशाप्रदेशे अन्दनवने अनेशियुः विबुधाः ।
श्री भगवन्तम् तत्र किञ्च चन्दनवृक्षतलस्थस्तदिक-
शिखरतले विनिचरन्नादिकेन चूर्णेन साधियां
निर्माय पुष्पमालादिमुग्धवस्तुष्वन्येन मण्डपं
रचयामास । श्री वीरप्रभुः विमानादवतरित्वा
तत्रस्थमण्डपमलंचकार ।
समुपस्थिताः सर्वे देवमनुष्यादयः धर्मप्राप्तवान्
श्रुत्वाभ्यनन्दन् । श्री वीरभगवान् इत्ये-
वमिति वदन्ति दीक्षां गृह्णात्याकर्ष्य सर्वे
गार्हस्थ्यगताः दुःखिताः पशून् । माना तु त-
स्यादिशयमुत्पन्नगरे निमग्ना बभूवुः, हा पुत्र ।



हा ग्रहस्तनप्रदीप ! हा हृदय ! एवं विडम्बन्ती
 दुःखस्तनकरे निमज्जयन्ती एवं कथयन्ती भयि
 प्रिय पुत्र ! तव मुकुमारशरीरं शिरीषकोमल-
 मद्यापि चत्वरस्यातपं सोढुमशक्यम् । अधुना
 किल दिगम्बरपि कथं बहिस्त्वमातपं सहस्यने
 इत्येवं हन्ती तां विलोक्य सौमन्येन्द्रः पातरं
 तोषयामास । तदन्तरं चतुर्विंशत्पकारकमन्तरा-
 बहिरङ्गारिग्रहं परित्यज्य सिद्धनमस्कृतिं च-
 कार ततः पंचगुष्टिना शिरचिबुकादीनां केशा-
 नां छेदनं विनाय महाप्रतप्तगुणे च धारया-
 मास । एवं किंचिन् कालव्यत्यये मार्गशीर्षकृष्ण-
 पक्षदशम्यां हस्तनक्षत्रे त्रिंशत्संस्कारे महता म-
 गवता श्री जैनीदीक्षा ग्रहीता । पारशासेनेन
 कचानादाय स्तननडितलचितकिलचित्रविचित्रे
 पेटके धृत्वाखिलदेवाः निनाददङ्कारमांकारमी-
 ररवाद्यतालमृदङ्गवैष्णवीगादिकेन सह स्त्रीपारा-
 शरं जम्बुः किलक्षोभं वक्षुम् । परन्तु मातुपोत्तर
 शैत्र्ये पुल्लपुष्पीयांशोर्गन्धपात्रात् तत्रैव तेषां
 ग्रणेन तस्मिन्नेवमणिविचित्रे पात्रे मन्दमुगन्धव-
 वनमनोहे श्री मातुपोत्तरशैले मगवन्तं श्री दिव्य-
 वन्तं महावीरस्वामिनं पूजास्तुत्यारतिं कं विनाय
 स्वरसद्वनमनमुगीचक्रुः । महोजम्बुः श्री महा-
 वीरः योगप्रारणं विधाय साधुरित स्मितं बभूव ।
 यस्मात् द्रव्यप्रतिभासे गते सति तपप्रभावे
 मनःपर्यवसानं जातम् । तत्पश्चात् अष्टत्रे
 दशनपुर नाम्नि नगरे आजगाम । चरित्व निज-
 मन्दिराणि राजमदनानि चान्तुरीक्षं चुम्बन्नेन
 विमान्ति तस्मिन् कुठनामको राजा आसीन्
 तेन महन्तं श्री मगवन्तं दृष्ट्वा नमस्कृतिं मो-
 क्षमार्गप्रमितां प्रदक्षिणां विनाय स्वसदने पट-

रसाद्यशानशनं कर्तुमादिदेश ।

तदा किल स्वामिनं स्वसदने ममानय पादप्रशा-
 लनं च विधाय पायमादिमोज्यद्रव्यं समर्पितवान्
 येनदेवैः तत्पुहोपरि पंचाश्र्ववृष्टिर्विहिता ततः
 किलाशरणनीर्णारण्ये श्री महावीरो जगाम
 तत्र तपप्रभावेनाणिमाद्यष्टविधैः सिद्धयश्च
 संनातः पश्चात् श्री वीरप्रभुः ध्यायन् सन्
 एकस्मिन्नहनि उज्जयनी नाम नगर्यामभ्याशेस्म-
 दाने यथासनेन ध्यानं धृत्वातिष्ठन् तदानीं
 भगवद्दर्शनसंज्ञातपूर्वपात्रिकशास्त्रवस्मृतिर्ज्ञातः
 किल स्याणुनाम्न एकादशस्तुद्रम्येति तदा-
 रम्य तेनानेकविधाम्युपसर्गाणि वक्षुं समार-
 व्धानि परं च स्वस्त्याकहितविकरालकाल इव
 विशालचमूशुकरव्याघ्रडाकिनविशाचपञ्चानना-
 दिभीषणवैषे, बहुविधं मयं नीतोऽपि श्री भगवान्
 स्वस्वमपि योगात् विचलितवान् स्वैरावधानात्कः
 समाप्तसमस्तसमुद्रवः चरिमोरुदः भगवन्तं महन्तं
 परिज्ञाय प्रणम्य गतवान् ।

एवं विचरन्नेकताश्रणादिकादीन् कुर्वन् सन्,
 तदा द्वित्र्यारंशमे सम्बत्सरे जृम्भितगामस्य
 सतिस्तरण्ये शालवृक्षमूलभागे स्थितशालवां
 ध्यानं अकरोत् । तत्र भगवतः तपःप्रभावेना-
 रण्यस्यानि निखिलान्तुसम्पत्तानि तस्मिन्नेव समये
 प्रफुल्लगन्पवनम् । सर्वं स्वापदाश्च स्वकीयवद्वैरं
 परित्यज्य एकस्मिन्नेव स्थाने कृतसौहार्दः
 परस्परमूर्तिं वर्धयन्तः सन्तः अभवन् स्यामितः
 ध्यानप्रभावेन यातिकर्मणां त्रिषष्टिपकृतीनां नाशं
 विनाय चेशालशुक्रादृशदशम्यामुत्त हस्तन-
 क्षमपद्मे केवलदानं प्राप्तवान् ।



तस्मिन् काले भगवतो महावीरस्य केवल-
ज्ञानं नवलज्जयन्तचतुष्टयादीनां प्राप्तिरभूत् ।
इति इन्द्रेण विज्ञाय तत्रैव स्थानादुत्थाय परोक्षं
नमश्चकार तदनन्तरं धर्मापदेशश्चरणार्थं संसार-
जीवोपकारार्थं समवशरणारूपं सभामण्डपं
विरचयामास तथा भगवत्सहस्रनाम्नां व्याख्या-
य व्याख्यानं पापनाशनकरणशीलधर्मपुष्टताः
बभूवुः । सज्जलजलदमेघध्वनिरिव धर्मतत्त्वव्या-
ख्यान् पटीयान् दिव्यध्वनि प्रचचार । प्राणिनां
हृदयपथेषु चामिततत्त्वव्याख्यानं भगवतो दाणीं
गुणगणधरं गणधरं विनावधारयितुं शक्नु-
यात् । ततः श्री बाणभूतिरेवधर्मसुतिः गण-
धरत्वेन मण्डयामास । तदनु कर्मशत्रुमारणमहा-
वीरस्य श्रीमतो वीरस्य दिव्यध्वनौ सप्ततत्वा-
दिमज्ञानां व्याख्यानमभूदिति एवमुपश्रुक्त
प्रकारेण धर्मापदेशं कुर्वन् सन् द्विप्रसूतितमे संव-
त्सरे विहारप्रान्ते पावापुरनामके नगरे विहारं-
कृतवान् । तत्र पावापुरस्थारण्ये वरीवर्त्तते किलैकं
सरोवरं तस्मिन्जल्पन्तराले मृशिण्डे स्थित्वा
श्री महावीरः शुक्रध्यानं प्राप्तववान् । येन
शुक्रध्यानेनावशेषपञ्चाशीतिप्रकृतिनां मवर्तो
मायेन नाशं विनाय कार्तिककृष्णपक्षचतुर्दश्यां
गणरात्रत्यये अमावस्यायाः प्रसक्तं किञ्च स्वा-
तिनक्षत्रे श्री महावीरप्रभो मोक्षं जगाम ।

लेखेऽस्मिन् या काचिदनुद्भिद्येत्तर्हि क्षतन्या ।

ॐ शान्तिः, शान्तिः, शान्तिः,

चन्दावाडी,
सूर्यपुरम् }

सतीशचन्द्रो गुप्तः

स्वच्छा वर्माचं स्वरूपः

वाचक हो, धर्म म्हणजे काय व त्याचें
स्वरूप कसे काय आहे व तो कोणी उत्पन्न
केला वगैरे प्रश्न मनुष्यापुढे सहज उभे राहतात.
ह्या विषयीं वर्तमान पत्रातून वेळोवेळीं प्रसिद्ध
होता असलेले लेख आपण वाचलेच असतील
अशी माझी खात्री आहे व पुनः पुनः त्याच
विषयाचें जर चर्चितवर्षण होऊं लागलें तर
त्याविषयीं वाचणाराच्या मनांत एका प्रकारचा
तिटकाराहि उत्पन्न होतो. Too much
familiarity breeds contempt.
अशी इंग्रजीत म्हण हि आहे. ह्याचा अर्थ
असा कीं अति परिचया पासून तिरस्कार
उत्पन्न होतो. आपल्या येथे जर कां एकादा
पाहुणा आला तर आपण त्याचा पहिल्या
प्रथम मोठा आदरसत्कार करितों. परंतु तोच
जर दोन तीन दिवसा आड येऊं लागला तर
त्या विषयींची आपली पृथ्य बुद्धिनेष्ट होऊन
जाते. ही झाली मनुष्याची गोष्ट. परंतु लेखा
विषयीं तसें नहीं. विषय जरी तोच असला
तरी प्रत्येकाची विचारपद्धत व लेखनशैली
भिन्न भिन्न असल्या मुळे तो आपण मजूर
वाचल्या पाहिजे. विषय जुना म्हणून सोडून
न देता त्यांत नवीन काय सांगितलें आहे
ते परोक्ष आहे किंवा नहीं हे वाचणाराने
पुणें लक्षांत घेतलें पाहिजे.

या प्रमाणे प्रसारना देण्यानेंनर आपण ज्ञा-
पल्या प्रस्तुत विषयाबद्दें वळूं. पहिल्या प्रथम



धर्म या शब्दाची व्याख्या देऊन नेतर त्या खाली येणाऱ्या तत्वांचे वर्णन करूं 'सद्विज्ञान-वृत्तानि धर्म धर्मेभ्यः विदुः । यदीय प्रत्यनी-कानि भवन्ति भवपद्धतिः ॥ अशी रत्नकरंड धावकाचारांत अमितगति आचार्यांनीं धर्म या शब्दाची व्याख्या सांगितली आहे. सम्यग्दर्शन,

सम्यग्ज्ञान, आणि सम्यक् चारित्र्य ह्यांस पंडित लोक धर्म म्हणतात. ह्या विरुद्ध जें असेल त्यास अधर्म असे म्हणतात. फिंल्ट साहेब म्हणतात 'Religion is man's belief in a being or beings mightier than himself and in accessible to his senses but not indifferent to his sentiments and actions, with the feeling and practices that follow from such belief,' अशी फिंल्ट साहेबाची धर्माची व्याख्या आहे. धर्म म्हणजे ईश्वराचे अस्तित्व कबूल करणे व त्या प्रमाणे त्याची भक्ति करून त्याने सांगितलेल्या नियमांचे आचरण करणे. या प्रमाणे फिंल्ट साहेबाने सांगितलेल्या धर्माच्या, व्याख्याची व अमितगति आचार्यांनी दिलेल्या धर्माच्या व्याख्यांची तुलना केली तर आपणास आदळून येईल की दोन्हीही व्याख्यान नवल नवल सारख्याच आहेत. व्याख्या जरी सारख्याच असल्या तरी आपण असे समजू नये की फिंल्ट साहेबाचा धर्म व आपला धर्म एकच आहे. जगांत निरनिराळे धर्म उत्पन्न होण्याचे कारण दूसरे काही नसून त्या त्या संस्थापकांची ईश्वरा विषयी निरनिराळी कल्पना हेच होय. याप्रमाणे ज्या ज्या लोकांना जी

जी कल्पना पसंत पडली त्या त्या प्रमाणे ते त्या संस्थापकांना मिळून त्या धर्माचे अनुयायी बनले. येणे प्रमाणे निरनिराळे धर्म अस्तित्वांत वसे आले हे आपण थोडक्यात पाहिले आतां धर्माचा उद्देश काय ह्याकडे आपण आपली दृष्टि फेकू.

ज्या सुखाची इच्छा नाही असा एकहि प्राणी ह्या जगांत सांपडणे वठीण. मनुष्यच नव्हे तर जगातील यच्चयावत् प्राणी सुख मिळविण्या करितां वाटेळ त्या प्रकारचे प्रयत्न करीत असतात. तात्पर्य हेच कीं दुःखाचा परिहार करून सुख मिळवावे हेच सर्वांचे ध्येय आहे. Mill says, 'Happiness is desirable and the only thing desirable in the world, all other things are desirable as means to an end.' आतां साहजिकच असा प्रश्न उद्भवतो कीं सुख जर प्रत्येकाचे ध्येय आहे तर ते सुख कोसे काय आहे व ते मिळविण्याची साधने कोणतीं-वर वर विचार करणारास हे प्रश्न सोपे वाटतील, परंतु सूक्ष्म विचार केल्या असता असे आदळून येण्या सारखे आहे कीं दिसतात तितके सोपे हे प्रश्न नाहीत. मोठमोठ्या विद्वान लोकांनी ह्या प्रश्नाचा खोल विचार करून असे प्रतिपादन केले आहे कीं नेहमीं सुख देणारी अशी ह्या जगांत एक हि वस्तु नाही. ज्यास आपण सुख म्हणतो ते खरे सुख नसून केवळ सुखामास आहे. ऐहिक वस्तु पासून मिळणारे सुख भणिक आहे. ह्याचा अनुभव रोम घडून येणाऱ्या गोष्टींत, आनंद पाहूनच आहोत. हे फिरून सांगजे अशी



कांहीं माझी इच्छा नाही; परंतु विषयानुरोधने त्याचा येथे उल्लेख करणे भाग पडते. मुख म्हणून जी अदृश्य वस्तु आहे ती आपणांस पंचेंद्रियांचे द्वारे मिळविता. येते ही पंचेंद्रिये शिथिल झाली म्हणजे अर्थातच सुखोपभोगाची साधने हि नष्ट होतात हें वरून अगदी स्पष्ट दिसून येते. जी इंद्रियांची वाट तीच स्त्रीपुत्रादिकांची व इष्टमित्रादिकांची. जोपर्यंत आपल्या जवळ चमकाजी आहेत तो पर्यंतच सर्व कामगार ठीक चालतात. परंतु पैसा एकदाचा हांतून गेला म्हणजे तूं कोण आणि मी कोण अशी स्थिति होऊन जाते. म्हणून संत तुकाराम म्हणतात की 'मुख पाहतां जवा एवढें । दुःख पर्वता एवढें ॥ मुखदुःखाची तुलना केली असतां मुख जवा एवढें तर दुःख पर्वता एवढें असे आपणांस आश्चर्य येईल.

बरें, मुख मुख म्हणतां तर तें मुख आहे तरी कोठें याचा आपण पूर्ण विचार केला आहे काय ? आतां मुख कशांत आहे हें आपण पाहूं. अशी कल्पना करा. कीं आपणा पुढें नाना प्रकारच्या पक्कजांनीं मारलेले एक ताट आणून ठेविलेले आहे, व त्यांतला त्यांत कांहीं कारणामुळे आपली शुद्धादि कारखान्यावळेली आहे. अशा प्रसंगीं तें अन्न आपणांस किती नरें गोड वाटते ? ज्यांच्यावर असे प्रसंग ओडले आहेत त्यांना त्या आनंदाची कल्पना होणार; इतरांस होणें अशक्यच. परंतु मला ओं वाटते कीं अशा प्रकारचे प्रसंग प्रत्येकावर केव्हां केव्हां तरी आडेव असतील तर मग आपणच सांगा कीं अशा प्रसंगीं आ-

पणांस जें मुख होते तें कशापासून होते ? मुख त्या पक्कजांत आहे किंवा आपल्या जिह्वेत आहे ? मुख हा शब्द वापरण्यापेक्षा हा स्थळीं स्वादिष्टपणा हा शब्द वापरणे हेंच सोयीचें होईल. परंतु स्वादिष्टपणा असला म्हणजे त्या ठिकाणीं मुख हें असतेंच. म्हणून स्वादिष्टपणाच्या ऐवजीं मी मुख हाच शब्द येथें राहूं देतो. मुख कशांत आहे ? मुख पक्कजांत आहे असें आपल्या पैकीं कांहीं म्हणतील. पण धावा. थोडा विचार करा आणि मग उत्तर द्या. आतां मी आपणांस असा प्रश्न विचारतो कीं मुख जर अन्नांत आहे तर तें अन्न केव्हांहि घेतले असतां त्यापासून मुख मिळालेंच पाहिजे परंतु खरी स्थिति अशी नाही. मुख अन्नांत नाही किंवा मुख जिह्वेत नाही तसें जर असतें तर मग माझे पोटा मरल्यावर किंवा अजीर्ण होई पर्यंत खाऊल्यावर मला त्या अन्नाचा कां बरें तिटकारा वाटतो ? ह्यावरून सिद्ध होतें कीं मुख पक्कजांत नाही किंवा मुख जिह्वेत हि नाही. मुखाची जागा ह्या बाबत वस्तूत नाही. बाब वस्तूत जर मुख असतें तर जी वस्तु मला प्रिय वाटते तीच दुस्न्यास अमिय वीं वाटायी ! आपणां हिंदु लोकांना पान सुयारी पार आवडते. परंतु ती इंग्रज लोकांना मुलीन आवडत नाही. असे नां ? आपणां पैकीं बहुतेकांस त्या प्रभावे उत्तर कदाचित् माहित हि असेल परंतु मला पूर्ण खात्री आहे कीं कारण थोड्यांना तें माहित आहे परंतु सर्वांच्या ऐवजीं मीच त्या प्रभावे उत्तर देतो. मुख बाबत वस्तूत नाही किंवा मग इंद्रियांमार्फत नाही.



मुख सर्वस्वी प्रत्येकाच्या मनात अवलंबून आहे. मनाचे परिणाम जसे अन्नात त्या त्या मानाने प्रत्येकाची मुखदुःखाची भरनाहि बटलत असते. 'मन एव मनुष्याणां कारणं बंधमोक्षयोः' अशी संस्कृतमध्ये म्हण आहे. मन हेंच कर्मांच्या बंधनाचे किंवा मोक्षाचे कारण आहे. Mind is the only cause either of the bondage of the soul with karmas or of its freedom from them. आरुद्रा हातून ज्या ज्या काही वस्तू वाईट गोष्टी घडतात त्या सर्वांचे उत्पत्तिस्थान मन हेंच होय. इतकंच नाही तर जे जे मी पाहतो आणि ऐकतो ते ते सर्व मनावर अवलंबून असते. शोषण असताना डोळे असून देखील मला पाहतो येत नाही. कान असून देखील ऐकू येत नाही. कारण अशावेळी मनाची क्रिया दुसरी कडे कोठे तरी चाललेली असते. या वस्तूत आपल्या लक्षात आलेच असेल की मन हेंच मुख दुःखाचे किंवा मन मोक्षाचे कारण आहे.

- आतां मुख आणि आनंद या दोहोंत कोणता भेद आहे ते पाहू. मुख याच ईश्वरान्वये Pleasure म्हणतात, आणि आनंदात joy म्हणतात. मुन म्हणजे इंद्रियगन्य सुख हे शक्ति व मेकरी दुसऱ्याक आहे. व समस्वरुपी लय लागण्यामुळे उत्पन्न होणाऱ्या मुन हे अर्पण म्हणजे सगळ्याकडे डिकगारे आहे. या सुखाने म्हणजे मत्तानंदात दुःखाचा छल्लेश देखील राहत नाही. मुख आणि आनंद याचा भवटा भेद उग्राहणे घेऊन मागिल्या असतां छत्र समकणामाग्या आहे जो पर्यंत प्रकृति

चागली आहे तो पर्यंतच आपणांस इंद्रियाकडून मुख मिळण्याची थोडी बहुत आशा असते. एकदां पंचेन्द्रिये आपापलीं कामे करव्यास असमर्थ झालीं म्हणजे मग सुखाची आशा बहुतेक संशयीच असे म्हणावयास कांहीं हरकत नाही. परंतु इंद्रिये असून देखील काम भागत नाही. त्यांच्या कडून मुख ध्यावयाचे असेल तर आपणांस आणखी एका गोष्टीची अत्यावश्यकता आहे. ती गोष्ट म्हणजे पैसा. आपली इंद्रिये अगदी सुरक्षित आहेत परंतु पैसा नसेल तर ह्यांचा कांहीं उपयोग नाही. "दात है वन चने नही, चने है पर दांत नही" अशी आपली स्थिति होउन जाते. यश कदाचित् कर्मधर्म संयोगाने दोन्हीहि साधने अनुकूल असली तरी तीं सदैव मुख देणारीं नसतात. उदाहरणार्थ एकदां पोट भरल्यावर आपणांशुट पकाळांचे ताटचे ताट जरी भरून ठेविलेले असले तरी त्यांचेकडे आनण फिरून देखील पाहत नाही. कारण आपली खुषा शांत झालेली असते. उलट तेच पकाळ व्यास्त खाल्ल्यास विषासारखे होतात. सारांश इंद्रियगन्य सुख हे दुःखमिथिन असून क्षणिक आहे.

आतां आनंदाचे स्वरूप कोस काय आहे ते पाहू अशी कल्पना करा की एकदा वडीन प्रभ सोडावधान आणजे मन अगदी मडून मेरेले आहे. अशा वेळी जर तो प्रभ आपल्या वडून सुटला नाही तर मनास वाईट वाटते. परंतु तो जर का आपणा कडून सुटला तर त्यापासून आपणांम जो आनंद होतो तो कांहीं



मिळालाच असतो. शालेतीत एकाधा मुठाची गोष्ट ध्या. परीक्षा पास झाल्या बद्दल त्यास जितका आनंद वाटतो तितका एकादा गोड पदार्थ खाल्ल्यावर त्यास खास वाटत नाही. आपण ही परीक्षा पास झालो. ह्या परिक्षेन पुनः वसण्याची आख्याता आतां मुळीच जरूर उरली नाही असे तो म्हणतो. सांगण्याचे तात्पर्य एवढेच की त्या परिक्षेच्या कटकटीतून जन्ममर मोक्कल झाल्या बद्दल त्यास एका प्रकारची खात्री होऊन त्यापासून त्यास आनंद होतो. तशाच प्रकारचा आनंद आपल्या हातून एकादें सत्कृत्य झाल्याच आपणांतहि होतो. तो आनंद शब्दांनी व्यक्त करता येत नाही. ज्याचा त्याने स्वतः अनुभव घेऊन पाहिला. त्या आनंदापासून आपणांस एका प्रकारची शांति उत्पन्न होते व ती शांति केव्हाहि नष्ट होते नाही. ह्या मनाच्या शांतिच परमानंद म्हणतात. ती सुखकारी व चिरकाल टिकणारी असते.

येणें प्रमाणें सुख व आनंद किंवा आरमानंद अथवा परमानंद ह्यांच्या मधील भेद समजल्यावर आतां नव व मोक्ष यांचें थोडे वर्णन करून मी हा लेख संपवितो। जगाकडे दृष्टि फेकिली असतां एकेंद्रियादि जीवा पासून तों पंचेंद्रियादि जीवा पर्यंत आपणांस नाना प्रकारचे प्राणी आढळून येतात. परंतु अगदी एकाच नमुन्याचे असे दोन प्राणी आपणांस कवितान आढळले असतील. ह्यांचे वागणूक काय बरे असते ? इतरांना तर टांच्यात फेरफट्टे केला नसेल ! पण हे गैरी करतानाच मुळीं करारापास नको.

कारण ईश्वर न्यायी आहे. एकास दुःखांत लोटणें व दुसऱ्यास सुखांत घाटणें हे न्यायी-पणाचें कर्तव्य नव्हे. म्हणून ईश्वर हा आपला कर्ता नाही. जो तो आपल्या स्वतःचा कर्ता आहे. Man is the architect of his own self. मी म्हणजे, आत्मा व पुढील ह्यांचा संबंध होण्याचें कारण काय ? मनुष्य हा स्वभावतःच इच्छामय आहे. इच्छे शिवाय आपण कोणतेंहि कार्य करीत नाही. नाही म्हटल्यास प्रायेक प्राण्यांत जन्मतःच कोणत्याना कोणत्या तरी प्रकारची उपजत बुद्धि असतेच. तिच्या योगाने केव्हां केव्हां त्याचाकडून फार मंहे-त्वाची कामे घडून येतात. परंतु ही उपजत बुद्धि कोणांत चांगल्या प्रकारची असते तर कोणांत वाईट प्रकारची असते. तद्गतच इच्छेचें हि आहे. परंतु दोहोपेक्षां इच्छा किंवा तृष्णाचें बळवत्तर आहे. जो पर्यंत आपल्या पाठीमागें तृष्णा लागली आहे तो पर्यंत आपली ज्ञापासून कधींच मुक्तता बहावयाची नाही. शिवाय जो पर्यंत तृष्णा आहे तो पर्यंत आपल्या हातून कर्म हें घडेलच पाहिजे; आणि जोपर्यंत आपली कर्मांपासून मुक्तता होणार नाही तो पर्यंत आपणांच मोक्षहि मिळणार नाही. कारण “कृत्स्नकर्म विमोक्षो मोक्षः” अशी तत्त्वार्थोक्ति मोक्ष शब्दाची व्याख्या सांगितली आहे, करितां सुसुखी भातापास तोडून टाकून मुक्त होण्याची सटसट करावी. हा आश्वासना सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान, व सम्यक् चारित्र्य ह्या रत्नत्रयानांनं तोडतां योग्य मार्ग आहे. हा पाहतां तोटण्यास रत्नत्रयानेरी व नगांत कोणतेच शब्द मर्याद नाही.

સમ્યક્દર્શન, સમ્યક્જ્ઞાન, સમ્યક્ ચારિત્ર હૈં તર
ધર્માર્થે મુલ્ય માગ આદેશ. પરંતુ ત્યાંજ્યા
ત્યાં ચારિત્રાર્થે કારણ મહત્ત્વ આદે. મનુષ્યકિની
હી શક્ષણ અપણા પરંતુ ત્યાંજ અર્થ જ નર
ચાંગણે નસેલ તર ત્યાંજ્યા ત્યાં વિદ્વર્ત્તે જગત
કાંઈજ કિંમત રાહત નાહી. જો જ્ઞાનાર્થે
પરિપૂર્ણ આદે વ ચારિત્રાંત્ર હી નિજગત આદે
તોજ જરા જરા મહાત્મા ઉપદેશ કરે જો કાર
સોર્થે આદે પરંતુ ત્યાં પ્રમાર્થે આપણે આચરણ
ઠેવર્થે હૈં ત્યાંજ પેશાં શતપટીને કઠોળ બહે.
જ્યોર્ત્તિ અશી મ્હણહિ આદે કી " It is
better said than done સર્વ શિક્ષણ જા
ઉદ્દેશ શીલ મનવિષ્ણા કહે અસદા પાહિજે
હૈં જ્યેય ઘરૂન જર આપણ આપણ માર્ગ નમું
લાગણે તરજ આપણ સુરસિત ટિંકાળી નાહા
પોહોંજૂ નાહીંતર મધ્યે કોઠેં જરી આહ
રસ્યાને જાહત આપણાં સંપાર્ણજાંત મટર
ફિરવેલાગેટ. હા મર્મ રૂપી માર્ગ આજપણ કર-
પ્પાકરિતાં સમ્યક્દર્શન, જ્ઞાન, વ ચારિત્ર હૈં ત્રીન
ત્યાં માર્ગોંજે પદ્યદર્શક હોત ત્યાંજ્યા; સત્યાને
આપણ જર જાગું લાગણેં તર આપણ ચોક્ક
ટિંકાળી જાહત પોર્થેજૂ. હૈં જણા ઠેવું
પ્રત્યેજ્ઞાને આપણી વ સાધન્યાત્ર દુસત્ય ચોહી
આત્મોક્તિ કળ્યાચા સતત પત્તન ચાલ
ઠેવાવા. ઐ શાન્તિરમ્ ।

ચાલચંદ મોતીસાવ પેઠકર-મટકાપૂર.

પ્રતિષ્ઠાસારોહાર ।

(પ્રતિષ્ઠાપાઠ હિન્દી ટીમ મહિન)

૧૬મી જિલ્દ. મૂલ ૨)

મેનેજર, દિ. જૈન પ્રત્યક્ષાલય-સૂરત.



લખનાર:—સંધર્મી વાઘીલાલ મુળજીભાઈ
હાંબડી.

" જીંદગી નિશ્ચા છે " " આયુષ્ય અર્થ
છે, " " સંસારમાં જો માલ છે. " " જાણું
જનવામાં જો માર છે, " " વહેતું મોઢું પથ
મરતું છે. " આવા માલ વગરના અને નિરા-
શાના વિચારો અને સંકેતોએ જીંદગીના મહ-
ત્ત્વને ઉઠારી પાડવામાં તથા તેની અલ્પતામાં
ઉમેશ કરેલો છે. જીંદગી દુઃખી થવાનાં કારણોમાં
અયોગ્ય ખાનપાન, આહારવિહારાદિ નિયમોનું
ઉલ્લંઘન, સાંસારિક હાનિકારક વ્યવહારો અને
ઉપજ થતા રોગો ક્ષમાદિ અનેક કારણોની
અત્યાર સુધી વિકાસ ઠોકરો અને વેધો મળ્યા
કરતા આવ્યા છે, પણ એ જીંદગી દુઃખી થવાનું
એક ખીજી કારણ પ્રમથે પોતાના જ મર-
જારો ચલાવે જાય છે તે આપણા લક્ષમાં નથી.
એ કારણ મનને મદદ છે સમજાણા રક્ષા
છીએ ત્યાંથી જ મૃત્યુના અમની અને જીંદગી
વ્યર્થતાની વાતોના સંકેતો આપણા મન સાથે
જોવાના મોડે છે. કાણે કાણે મૃત્યુના બાજુકારા
આપણા ખીજી અને જાયલા અનેલા મનને
બડાવે છે. " કાલની ઝોને ખનગ છે, કાળનું
ચક્ર મારે જ્યાં કહે છે, જીંદગી દુઃખી અને અસાર
છે. " આની આવી જાયલી શીલસુધી (નીતિ)
અને શેઠ કહાપણુધી લોકો નિર્માત્ર, પ્રાધિક્ષા અને
પુરુષાર્થદીન થયા અને સમજાણા આવ્યાની સાથેજ
આપણામાં આવા હાનિકારક અને વિનાશકારક
સંકેતો જોવાતા ગયા. એ સંકેતો જોવાતા
મયા અને કિતરોતર વારસામાં મળતા ગયા અને
ક્રમેક્રમે એ નંકેશપુર્ણ બધું વધતું ચાલ્યું, તે એટલે
સુધી કે હાલના જગી નીકળતા બી કે પુરુષના
અંતઃકરણમાં પણ સામાન્યતઃ નિગ્રહાના જાયલા
વિચારો સુધી નીકળે છે, અને તે એ કે મારે



લાંચુ છવવાતું નથી; ખડું તો ૫૦૦ કે ૬૦૦ આજના વખતમાં પચાસ કે સાઠ વર્ષ જીવે તે તો ભાગ્યશાળી! આવી રીતે તેઓ સંકલ્પ કરી બેઠા હોય છે અને મૃત્યુના બાસુસેનિ તે આ દુષ્ટ મર્મદામાં ઉભેલા દેખતાં હોય તેમ તેઓ મૃત્યુની વાટજ નેહ રહેલાં હોય છે.

માણસના મન ઉપર સંકલ્પબળ ગોટી અસર કરે છે અને ડાંગી વયના માણસોના મન ઉપર તેની જાગી અસર થાય છે. એક બાળકના મન ઉપર બચપણથી જેવા સંસ્કારો અને સંકલ્પો તેમનામાં પ્રત્યક્ષ દેખાશે તે સંસ્કારો અને સંકલ્પોનાજ તેઓ જાગીદાન અથવા બોદતા થશે. એક બાળકને બચપણથીજ નિરંતર ભય બીકણુપણની વાતો કરો તો તેનું પરિણામ શું આવશે? તે નાખી બીકણુ અને ખાયહું થવાનું, મોટપણે પણ ખીવાના અથવા ભય પામવાના પડેલા સંસ્કારો જતા નથી, એવીજ રીતે એક બાળક પાસે ભયની કે બીકની વાતજ નહિ કરતાં, જે તેની પાસે નિરંતર ખદાહરીની, શરપીરપણાની અને પરાક્રમનીજ વાત કરો તો તેનું પરિણામ અવસ્ય એવું આવશે કે તે બાળક મોટું થતાં ખદાહર અને પરાક્રમી થશે. હથિયાર લઈ લડાઈના મેદાનમાં ઉતરી પડવાને માટે વણિકને ગમે એવી લાલચ, ધનનામ કે પગાર આપશે તોપણ તે જવાની હિમત કરશે નહિ, અરે હથિયાર કેળીનેજ બડકશે; પણ એક રજપુત ડાંગી કે બીકડને નાનો છોકરો પણ હથિયાર પકડવાને તૈયાર થઈ જશે, તેનું શું કારણ? વણિકને તે જવાના સંસ્કાર નથી, અને રજપુત વગેરેને તેવા સંસ્કારો અને સંકલ્પો વારસામાંજ મળેલા છે. કેટલાક માણસો અમુક કાર્યને માટે પોતે લાયક છતાં પોતે પોતાનાજ મનથી પોતાને નાલાયક માની બેસે છે, અને પોતામાં નાલાયકનો દૃઢ સંકલ્પ કરે છે કે જેથી તે હમેશાં એ કાર્યને માટે નાલાયકજ રહે છે. મારામાં કંઈ ખાસ નથી એવું માનીનારાઓ હમેશાં ખાસ યગદનાજ રહે

છે, અને જે એવો સંકલ્પ કરે છે કે અમુક કામ લાઈ ધરીનેજ તે પાર પાડું છું અને તે કામ કરવાને હું સંપૂર્ણ લાયક છું તથા તેમ હું કરીશજ તે માણસ તે કાર્ય અવસ્ય સિદ્ધ કરે છે. આ સંકલ્પબળને સારાં કાર્યોમાં જોડો તો સારાં કાર્યો થશે, નહારાં કાર્યોમાં જોડો તો નહારાં કાર્યો પણ થશેજ. હું રોગી છું, મારામાં કંઈ શક્તિ નથી, અને મારે ઝાડું છવવું નથી, એવા સંકલ્પો કરનારો માણસ સદા રોગીજ રહે છે, સદા અશક્તજ હોય છે અને યોડું જીવે છે. એથી ઉલટું, જે દૃઢ સંકલ્પી માણસ પોતાના મનમાં એવો દૃઢ સંકલ્પ કરે છે કે, મને કંઈ રોગ જેવ નહિ, હું સંપૂર્ણ સ્વસ્થ અને મુખી છું અને મારે મરવુંજ નથી, તે માણસ સદા નિરોગીજ છે, જાગવાન રહે છે અને લાંબો કાળ જીવે છે. સંકલ્પબળનો મહિમા ઘણો મોટો છે અને ગોમતિવાએ જાગની શિદ્ધિ થાય છે. અમુક નિયમ કે નિશ્ચય ઉપર મનનો નિશ્ચય તેનું નામ યોગ છે, અને એવું માનસિક જગ અથવા નિશ્ચયજગ ગમે તે પ્રકારે પ્રાપ્ત કરે તે યોગી છે. આ જગ પ્રાપ્ત કરવા માટે ખાસ કરીને ભગવાં પહેરવોની જરૂર પડતી નથી, હજી ભોંયસમાં જઈને સગામિ ગડાવનાની જરૂર નથી, અથવા પ્રાણાયામ કરીને શ્વાસ ધુંટવાની પણ ખાસ કરીને જરૂર નથી. આગત તે જગા મનનો નિશ્ચય કરવાનાં સાધનો છે ખરાં, પણ એ સાધનો વિના પણ યોગીક અવધારી માણસો પોતાના સંકલ્પ જગ અને મનોબળથી યોગીના જેવું કાર્ય કરવાને સમર્થ થયા છે, એટલુંજ નહિ પણ સંકલ્પ જગથી અને એ સંકલ્પના પ્રતાપથી પ્રજા, દીર્ઘાયુ ગોમતવાને પણ બાગ્યશાળી થયા છે.

૫૦ અનુનંદાલ સેરી કૃત-

સહનંદકુમાર નાટક

ગવરપ રંગમંદાલ પરિચે। પૃ. ૧૨

મોજા. વિ. જૈન પુસ્તકાલય-મુદ્રા.



(લિખક-લલિતાબાઇ, આવિકાશ્રમ, સુખમ)

ભેદ વિજ્ઞાન=ભેદ એટલે પરસ્પર એક બીજામાં મળેલી ચીજોનું પૃથક્કરણ એટલે ભિન્ન ભિન્ન કરવું અને નિર્માન=એટલે વિશેષ ન ન, અર્થાત્ કોઈ પણ વસ્તુમાં અનેક વસ્તુ મળી હોય તેને નયની યુક્તિથી એક જાણવું તેને ભેદ કહે છે । જેવી રીતે તલમાં તેવ મળેલું છે તેને ધોળી વુદ્ડ કરી દે છે. વળી આપણે પણ એવો અનુભવ કરવાથી માત્રમ પડે છે. તેમજ લાકડામાં અગ્નિ ગ્રમ રહેલી છે તેનું સઘર્ષણ કંચથી સાક્ષાત્ અને અનુભવથી પગેલ અગ્નિ અને લાકડાનું પૃથક્કરણ આપણને પ્રાપ્ત પડે છે તથા દૂધમાં પોણી મળેલું છે તેપણ આપણે વુદ્ડ વાળી શકીએ છીએ તેમજ ઉંના પાણીમાં ગરમપણું અગ્નિના સંબંધથી છે અર્થાત્ ગરમ પાણીમાં ગરમ શુણ પાણીનો નથી પણ અગ્નિનો છે એ આપણે ભેદ વિજ્ઞાનથી વાળી શકીએ છીએ

આપણી વર્તમાન અવસ્થા એટલે મનુષ્યગતિ શરીરધારી જીવની અવસ્થા જીવ અજીવનું મિશ્રરૂપ મનુષ્યપણું છે. જીવનું સ્વરૂપ નિશ્ચયનયથી શુદ્ધ જ્ઞાન દર્શનમયી, આનંદરૂપ અવિનાશી, અમરતિક સ્વર્ગવેદનરૂપ છે. અજીવ દ્રવ્ય પાંચ પ્રકારનાં પુર્ણ, ધર્મ, અધર્મ, આકાશ, અને કાળ, આદિ સ્પર્શ, પથ રસ, બે મધ, અને પાંચ વર્ણ એ પુદ્ગલના શુણ છે, એ પુદ્ગલને છોડીને જીવન કોઈ દ્રવ્યમાં કદી પણ મેલેલો નથી. પુદ્ગલ સાથે એ જીવેલો અવિનાશી સંબંધ છે. જીવ અને પુદ્ગલને આલસ્યમાં ઉત્તરિપણે સહાયતા કરનાર તે નર્મદ્રવ્ય અને જીવ પુદ્ગલને ઉભા રહેવામાં અસહાયતા કરે તે અધર્મ દ્રવ્ય, સર્વ દ્રવ્યને અવકાશ એટલે

જગ્યા આપનાર તે આકાશ દ્રવ્ય અને વસ્તુની નવજાત અવસ્થા કરનાર કાળ દ્રવ્ય છે. આ પાંચે દ્રવ્ય જડ હોવાથી એમાં જ્ઞાન, દર્શન, અવિચલ સુખ કે આનંદ કાંઈ પણ નથી.

બહાલી બહેનો ! તથા બધુઓ, અનાદિ

કાળથી તમારો આત્મા કર્મોથી બંધાયેલો છે એ કર્મો ધડીમાં હસાવે છે અને ધડીમાં રહાવે છે, બ્યારે પુણ્યનો ઉદય થાય છે સારે આપણે ધટ વસ્તુ પ્રાપ્ત થાય છે અને તેથી આપણે સુખ માનીએ છીએ પરંતુ એ સુખ નિલ નથી કારણ પુણ્ય હમેશા એક મગ્નું ગેતું નથી. સસાગમાં મર્ચ પર્યટાર્થ ક્ષાયુક્ષણમાં પર્યાય અપેક્ષા નામ થાય છે એમ જાણીને તીર્થિક-ગએ મવાન નહિ છોડી અને ભેદ વિજ્ઞાન દાગએ અચિત્ત આત્મિક સુખની પ્રાપ્તિ કરી બ્યારે પાગોદયનું નેર આપણા પરિન આત્મા પર ચક્રાકર છે તેવારે આપણે મા, બાપ, બાઈ, વિગેરેની તથા અન્ય જનોની શરણની આશા રાખીએ છીએ પણ એ આશાથી કાંઈ પણ લાભ થતો નથી, પરંતુ ઉવદ્દ જમનમોહની કર્મ મજબૂત થાય છે નેથી સુખકર શરણ નિશ્ચયથી આપણા આત્માનું મેલણ કરવું જોઈએ. આ પંચ પરવર્તનરૂપ સંસારમાં મગલ કરતાં કરતાં જીવને કંઈ પણ શાંતિ મળી નથી તો સત્ય સુખશાંતિના હજીક બહેનોએ તથા બધુ-ઓએ આત્માનુભવથી શાંતિ મેળવવી જોઈએ ?

આ જીવ એકલો આલેલો છે અને એકલો જન્મલો છે. એકલાને કર્મદળ ભોગવવા પડે છે માટે આપણા મંબધીએને માટે આપણે અન્યાય કરવો નહિ કારણકે એનું જીવ આપણે એકલા-નેજ ભોગવવું પડે છે હસ જેમ પેતાની આંચવટે દૂધ અને પાણી પૃથક કરી નાંખે છે તેમજ આપણે પણ આત્મરૂપી હંસની ભેદ વિજ્ઞાનરૂપી માય અંતરંગના કર્મરૂપી પડકામાં નાંખીને જીવ અને પુદ્ગલ પૃથક કરી તેવા જોઈએ. નિત્યાત્વ, અવિરત, ક્યાય, અને યોગ દાગ કર્મનું આવનું થાય છે તે કુખદાયી છે



માટે એ આત્મવને શેકવાનો ઉપાય શોધવો જોઈએ એનો સાચો ઉપાય આત્મ સ્થિરતા સિવાય બીજો કંઈ નથી. બધાં સુધી કર્મોનો ઉદય વિદ્યમાન છે ત્યાં સુધી પૂર્ણ સુખ મળતું નથી માટે ધીરે ધીરે કર્મોના નાશ કરવો જોઈએ. કર્મ ત્રણ પ્રકારના છે. ભાવકર્મ, દ્રવ્યકર્મ અને નોકર્મ. ભાવકર્મ, રાગદ્વેષ, ક્રોધ, માયા, અને શોભરૂપ વિકારી ભાવને કહે છે એ આત્માનું સ્વરૂપ નથી, પણ મોહની કર્મના કારણથી થાય છે. દ્રવ્યકર્મ, જ્ઞાનાવરણ, દર્શનાવરણ, વેદની, મોહની, આયુ, નામ, ગોત્ર, અને અંતરાય આ આઠ છે.

જ્ઞાનાવરણ આત્માના જ્ઞાનશુભને પ્રગટ થવા દેતું નથી. દર્શનાવરણ આત્માના દર્શનશુભને પ્રગટ થવા દેતું નથી. વેદની ક્ષત્રીક સુખ દુઃખનો અનુભવ કરાવનાર છે, મોહની કર્મ સત્યાર્થ આત્મસ્વરૂપનો અનુભવ કરવા દેતું નથી અને પરપ્રકાર્યમાં રાગદ્વેષ કરાવે છે. આયુ જીવને શરીરરૂપી જ્ઞેયમાં શેરી રાખે છે. નામ કર્મ નાના પ્રકારના શરીરના આકાર બનાવે છે. ગોત્ર નીચ કુલમાં જન્મ ધારણ કરાવે છે. અંતરાય કર્મ આત્મજલમાં વિષ નાખે છે. નોકર્મ આહારિક, વૈશ્યિક, અને આહારિક શરીરની રચના કરે છે. આ ત્રણે પ્રકારના કર્મોથી આત્મા બ્યવહારનયથી બંધાયેલો છે એમ કહેવાય છે, પણ ખરું જોતાં શુદ્ધ નિશ્ચયનયથી આત્મા બંધાયેલો નથી. જેની રીતે એક ગાગરમાં લાડવા ભરેલા છે અને તેમાંથી આપણે આપણા હાથમાં લાડવા લઈને હાડવા વ્હાએ તો તે આપણા હાથમાં લાડુ હોવાથી હાથ ગાગરમાંથી નીકળવા નથી તેને જો એમ માનવામાં આવે કે એ ગાગરે અમને બાંધી લીધેલાં છે તો 'તે ખોટું' છે તેમજ કર્મથી શુદ્ધ નિશ્ચયનયથી આપણે બંધાયેલા નથી, પણ આપણી મન્યતા એવી થઈ રહી છે કે બંધાયેલા છીએ, તેથી જ એ માન્યતા આપણને દુઃખ દે છે. આપણે આત્માને આપણો લોક અર્થાત્ જોતાં છે. બીજો દેશ પર અર્થ લોક નથી કારણ કે તેમાં

દર્શનનો શુભ નથી. ખરેખર ! આ જીવે અનેક પર્થાય પ્રાપ્ત કરી, કોઈ વખત રાગનો ઓહો મળ્યો, સંસારમાં રસાવવાવાળું કેરોન પ્રણ અનેક વાર પ્રાપ્ત થયું, તેમાં આપણે હોશિયાર કહેવાયા તેમાં કંઈ પણ ફેલેલતા નથી, પણ સમ્યક્ જ્ઞાનની પ્રાપ્તિ અર્થાત્ આત્માનું ચતુર્થ જ્ઞાન થતું ફેલેલ છે, તે મેળવવાની કોશીલ કરવી જોઈએ.

બહાલી ખરેખર ! તથા બધુઓ ! અમે અને તમે પૂર્વે કલા પ્રમાણે ત્રણ પ્રકારનાં કર્મોથી બેભાર થઈ રહ્યા છીએ; એ કર્મ બધાં સુધી રહે ત્યાં સુધી પૂર્ણ સુખની પ્રાપ્તિ થતી નથી. એ ત્રણ કર્મોનું મૂલ કારણ દ્રવ્ય કર્મ છે માટે દ્રવ્ય કર્મને નાશ કરવાના સાચો ઉપાય સ્વરૂપ લાભ છે તેને પ્રાપ્ત કરવો જોઈએ કારણ કે સ્વસ્વરૂપની પ્રાપ્તિથી જ સુખ શાંતિ મળે છે અને સ્વસ્વરૂપની પ્રાપ્તિ આત્માનુભવથી થાય છે આત્માનુભવ ભેદ વિતાનથી થાય છે જેની રીતે અમૃતચંદ્રસુરીએ સમયસારમાં કહ્યું છે—

લોક—

મંદજાનોનુદ્ધનકલનાચ્છુદતત્ત્વોપલક્ષ્મ્યા-

દ્રાગપ્રાપ્તપ્રલયકરણાદ્દર્મગાં સંવરણ ।

વિશ્વતોપવરમમલા લોકમસ્તાનમેકમ

જાત જ્ઞાને નિવૃત્તમુદિત શાશ્વતો ચોતમેતલ્લ ॥

અર્થાત્ ભેદ જ્ઞાનના ઉત્તરવાના અબ્યાસથી શુદ્ધાત્મતત્ત્વની પ્રાપ્તિ થાય છે અને શુદ્ધાત્મ બાવની પ્રાપ્તિથી રાગાદિ, આમનો પ્રલય થાય છે અને રાગાદિ માનના પ્રલયથી કર્મોનો સંવર થાય છે અને સંવરથી ઉત્કૃષ્ટ સંતાપને ધારણ કરનાર, નિર્ભય, પ્રકાશવાન, કલ્પતા રહિત શાશ્વત ઉપોત્તમાન આ. એક જ્ઞાન તે નિશ્ચયજે જ્ઞાનમાં પ્રગટ થાય છે.

આતુ સર્વોત્કૃષ્ટ અને પૂર્ણ સુખનું મૂલ જે ભેદ વિજ્ઞાન તેને સર્વ આવક અવિકાએ એકાંતમાં સામાયક દ્વારે વિચાર કરવાથી અથવા ધ્યાનથી પ્રાપ્ત કરી લેવું જોઈએ, તેને માટે પહેલાં સર્વ ખરેખર અધારજ્ઞાન દર્શન અધ્યાત્મિક અથવા વાંચીને સમજવામાં તેની



સુદ્ધિનો વિકાસ કરવો જોઈએ. કેટલીક બહેનોનું એમ માનવું છે કે સ્ત્રીઓને ક્યાં કમાવા જવું છે એમ કહીને અમણ રહે છે, પણ બહેનો! જ્ઞાનની પ્રાપ્તિ કાંઈ શકત ખસા કમાવાને માટેજ નથી, પણ આપણે સાચું સુખ મળે તેને માટે છે માટે કાંઈ પણ બહેનોએ અમણ રહેવું નહીં, પણ ભણી ગણી અધ્યાત્મિક ગયોતો સ્વાધ્યાય કરવો અને તે દ્વારા એ સર્વેશુભનું મૂલ ભેદ વિજ્ઞાન તેને પ્રાપ્ત કરીશું' જોઈએ અથવા અધ્યાત્મિક પૂજન કરીને જન્મ સંકળ કરવો જોઈએ.

કારણકે ભેદ વિજ્ઞાનથી વર્તમાનમાં સુખ-શાંતિ, અનુભવાય છે, આત્મવીર્યની વૃદ્ધિ થાય છે, મનુષ્યમાં હિંમત અવસ્થા પ્રાપ્ત થાય છે તેમજ દુઃખનું મૂળ કારણ કર્મ તેનો ધીરે ધીરે નાશ થતો જાય છે. માટે સ્ત્રી અને પુરુષ બન્નેએ મનુષ્ય જન્મ સંકળ કરવાને ભેદ વિજ્ઞાન કરવું જોઈએ. એનેજ માટે બાલ્યમાં શ્રાવિકાના બાર વ્રતો પાળવાં જોઈએ તથા બાર પ્રકારે તપ તપવા જોઈએ તથા શ્રુતસંતાનો અભ્યાસ કરવો જોઈએ, જેની રીતે નેમીચંદ્ર મુનિએ દ્રવ્ય-સંપ્રેક્ષમાં કહ્યું છે—

આધા.

તવસુદવદવ ચેદા જ્ઞાણરહ ધુરધગે દુરે જન્દા ।
તમ્હે સત્તિવગિરદા તઠ્ઠવીણ સદા હોદ ॥

સાધાર્થ—તપ શ્રુત અને વ્રતનો ધારી આત્મા ધ્યાનરૂપી ધુરને ધારણ કરી શકે છે તેથી તમે પણ ધ્યાનની પ્રાપ્તિને માટે તપ, શ્રુત અને વ્રતમાં રત રહો. ખારી કેટલીક વિધવા બહેનો યુવા સમય બરબાદ કરે છે, તેઓએ જાણવું જોઈએ કે અમને ભેદવિજ્ઞાન પ્રાપ્ત કરવાનો સુચવમર પ્રાપ્ત થયો છે, માટે એ સુચવસરમાં જોગ બને તેમ તપદ્વારા, જ્ઞાન દ્વારા, ધ્યાનદ્વારા, અથવા તો કોઈ પણ પ્રકારથી ભેદવિજ્ઞાનની પ્રાપ્તિ કરી લેવી, ભેદવિજ્ઞાન મેળવે કાંઈ આપણે આખો દહાડો નિર્ગમન યથ શક્તિ નહીં તો શેષ સમય પરોપકારમાં વિતાવવો જોઈએ.

અંતમાં ખાર કહેવાનું તત્ત્વર્થ એજ છે કે આપણે સર્વ બહેનોએ તથા બધુઓએ ભેદ-વિજ્ઞાનનું સ્વરૂપ સમજવું જોઈએ અને તે દ્વારા આપણા આત્મામાં કેટલે અંશે રાગ દ્વેષ ભણેલા છે તેનું નિરાકરણ કરવું જોઈએ અને રાગ દ્વેષને હેય જાણીને તેથી રહિત-થવાની કોશીલ કરવી જોઈએ અને એને માટે વ્રત પાળવાં જોઈએ. સ્વાધ્યાય કરવો જોઈએ, તપ તપવા જોઈએ, તથા બીજા નિયમને પાળવા જોઈએ શેષ સમય ખાસ કરીને વિધવાઓએ પરોપકારમાં નિર્ગમન કરવો જોઈએ, જેથી આલોકમાં સુખ શાંતિ યથ મળે અને પરલોકમાં શુભગતિ મળે તથા પરંપરાય મોક્ષ મુખની પ્રાપ્તિ થાય. અંતમાં ખારી બહેનોનું ગુતન વર્ષ સુખદાયી અને પરોપકાર કર્ય કરવામાં ઉત્સાહી નિવડો એવી જ્ઞાવના ભાવીને લખવું બધે કહું છું.

અનુનયાષ્ટક ।

(ગજલ)

હમરી દશા હે યવા અવ, જિનવર ! જરા નિદારો,
હમરે કલેશ અવ યે, કુપયા જરા હદા દો ॥૧॥
આવમમે માંદે મન્યુ, વહુ હાદ કર રહે હૈ,
શુભ જ્ઞાન મન્વસે અવ, શુભ દેવકો મદા દો ॥૨॥
વિન દેવકે ન હોગ, ઉદાર અવ હમારા,
દસ દી સે યહ વિનય હૈ, પ્રમુ ! એકતા વદા દો ॥૩॥
અજ્ઞાનની અન્વેરી, મન ચૂન છા રહી હૈ,
શુભ-જ્ઞાનકા દિવાકર, હૃદયમે અવ લગાદો ॥૪॥
અઠ કામ-પ્રોધને મી, હમને સતા રલા હૈ,
વરકે કુપા હમોપ, 'પદ-દ્વોષ' કો મગાદો ॥૫॥
અધર્મની અન્વેરી, ચહે ઓર છા રહી હૈ,
અધર્મ-તપમે જન્દી, અર્ધેન્દુ જગ-મગાદો ॥૬॥
'આવમમે માંદે હમ સવ, શુભ-પ્રેમ કરના સીલે,'
પ્રમુ વીર ! સવ હૃદયમે, ઇમ મન્વકો જગાદો ॥૭॥
અતિર વિનય 'પ્રવાસી' વગ્ના પ્રમો ! યહી હૈ,
શુભ નામ 'વોર જિનવર' ગવેદે હૃદય લગાદો ॥૮॥
પવાસીજાત વર્ગો-સૂરત ।



આરોગ્યમાં પ્રથમમાં પ્રથમ જરૂર અન્નચર્ચની છે. આજકાલ આપણા સમાજમાં બાલ લગ્ન વધી પડવાથી નાની ઉંમરમાં બાલક અને બાલકીઓ અપકવ વીર્યને નિરર્થક કેટી દે છે, તેથી ૪૦ વર્ષની ઉંમરે પહોંચતાં પહેલાં તેમના શરીર બોખા થઇ જાય છે અને મનની માદ-શક્તિ અને વર્કશક્તિ કમી થઇ જાય છે.

બાલ લગ્નથી જે કે આપણા સમાજ સામાન્ય રીતે સારું અભિચાર પાલી શકે નથી પરંતુ તેથી પણ વધારે માદી અસર દુષ્ટ સંસ્કારને લીધે ઉત્પન્ન થાય છે અને તેનું મુખ્ય કારણ આપણી અજ્ઞાનતા છે.

બાળક જન્મથી જન્મે છે સ્વાસ્થ્ય મોટાના મગજ ઉપર દરેક પુરુષગતી અસર લેતું જાય છે અને માળાપોતું જે અસહ્ય વર્તન, વાણીમાં અથવા ચાલિમાં જુએ છે અને સાંભળે છે તે વાત મનથી સહેલાઈથી લાંબા કાળ સુધી યાદ રાખી શકે છે અને તેના પ્રમાણે ધર્મી વર્ણવે વર્તે છે. આપણને જે વપાસીને જોવાની ટેવ દશે તો જગુસી કે, આપણે જેવા માદા અથવા સામાન્ય દરેક જોલતા હોય તેવાજ સારા અથવા માદા જોલ જોલવાની જાણને ટેવ પડશે. હુંકમાં બાળક જે કે પહેલાં આઠ વર્ષમાં જોલી શકતું નથી, બહુી શકતું નથી તેમજ કાંઈ પણ કામ કરી શકતું નથી તે છતાં પણ ઘણું જ્ઞાન મેળવે છે માટે આ સ્થિતિમાં ઉચ્ચ જ્ઞાન આપવા માળાપોતે જલ્દ કાળે રાખવી જોઈએ. એટલે જાલકની સન્મુખ વિનયની વાત અથવા ઇસારા દલાદિ પણ થવા પામતા હેતુ જોઈએ નહીં, જો આમ ન અને

તો આપણે મોટી ઉંમરે તેના લક્ષ્ય કરીશું. તોપણ તેથી વિશેષ કાંઈ કામદો થવાનો નથી કારણ કે જેનું તે પંદર અથવા સોળ વર્ષની વયે સમજણ શક્તિ અને સામાન્ય કામ કરવાની અથવા વિચારવાની સ્વતંત્ર શક્તિ પામશે કે વરતર તેના વિષયના સંસ્કાર જગત્ થશે અને સમય આવે દુષ્ટ વાસનાનો ભોગ કરશે અને કુમારો ચકશે.

વીર્ય પાલી થવાના અનેક માર્ગ છે. સ્ત્રીનો શારીરિક સંભોગ; સ્ત્રીના માનસિક સંભોગ; જન્યુ અથવા સ્વપ્નાવસ્થામાં હાથરસ, પુરુષ સંભોગ દલાદિ અનેક રીતે વીર્ય નષ્ટ પામે છે.

જ્યારે જ્યારે આપણા મનમાં આ વાસના ઉત્પન્ન થાય છે સારે આપણી આજ્ઞા બાજુએ રૂં થાય છે તે જુલી જાણે છીએ, માન મર્યાદા બાજુ ઉપર મૂકીએ છીએ, શરીર ધુન્ને છે, રોમાંચ અનુભવીએ છીએ, હુંકમાં દારીઆ અને ગોંડા માણસ એ જે જાતના મનુષ્યો એક વ્યક્તિમાં જન્યુ થાય તોપણ કામોં માણસ જે સ્થિતિ અનુભવે છે તેના ખ્યાલ આવી શકે જો નથી. હુંકમાં પુરુષ, મનુષ્યત્વ ગુમાવી દેશે, સ્ત્રી કરતાં પણ શારીરિક અને માનસિક બળમાં તે મમ્મે નબળો અને છે અને પછીની માદક જોરજુલમથી વાસના નષ્ટ કરવા મયે છે.

વાસના નષ્ટ થવા પછી ગાત્રો શિથિલ થઇ જાય છે, શક્તિ મંદ પડી જાય છે, પરતાવો થાય છે, ખુદ્ધિ અને બીજી બધી દંડીઓ બહેર માદી જાય છે અને ઘણોવાર સુષી બેચેન રહે છે.

વિનયસેવનથી માણસને માનો કે એક અનદદ સુખ એક રાજુ માટે થાય છે પરંતુ અનદદ દુઃખ પણ અથવા છ કલાક સુધી અનુભવવું પડે છે. જે મનુષ્ય વિચારશીલ દશે, જેને શારીરિક અને માનસિક બલની દિશા જાણી દશે, જેનો બીજા અધિક સુખનો સ્વાદ માણે દશે, જેને ગોંડા ધર્મ



કરતાં (rational) રહેવું વધારે પસંદ પડ્યું હશે તેને આ રતિ બર સુખના ભોગ માટે આટલો બધો મોટો બ્યય કરવો ઉચિત નહીં લાગે અને તેના સેવનથી દૂર રહેશે.

શ્રી પુરુષના પ્રેમમાં પણ ઘણો મોહ છે કારણકે પ્રેમનું સ્થૂળ સ્વરૂપ સેવા છે. અને ન્યાં ન્યાં આદર્શ પ્રેમ છે ત્યાં ત્યાં મોહઓહો હોયો જોઈએ અને સેવાના રૂપમાં બદલાઈ જવો જોઈએ. કારણકે જેને ખારીકાદથી જોવાની ટેવ પડી હશે તેને જાણ્યો કે બાલ શરીર પણ આપણને ઘણા જોરથી આકર્ષે છે અને તે પણ સ્વભાવિક છે. બાલ શરીરથી આકર્ષાઈ જનાય તો તેના કાંઈ બાધ નથી પરંતુ પ્રેમનું કાર્ય સ્વરૂપ સેવા છે અને વિયયવાસના અથવા શારીરિક ભોગો નથી.

કોઈ પૂછે કે તો સંપ્તિમાં શ્રી પુરુષની જોડ કેમ હશે ? લગ્નના ગાંઠ કેમ સંસારમાં બંધાય છે, જે વિયયસેવન ન હોય તો પ્રત્યેત્પત્તિ કેમ થાય અને સંપ્તિ કેમ વધે ? આ બધા પ્રશ્નનું નિરાકરણ યદ્ય શકે એમ છે.

મનુષ્યનું આધ્યાત્મિક અધારણુ જે ભાગનું બનેલું છે-એક તો સ્થૂલ અને બીજું સૂક્ષ્મ સ્થૂલ ભાગ મનુષ્યમાં દેખાય છે અને કેમકે ભાગ જાણ્યું રહે છે; જ્યારે સ્ત્રીમાં ઉધું ઘણું છે પરંતુ એના સંલગ્નથી એક આપ્ત કાર્ય પેદા થાય છે એટલે કે દુઃખના સંપ્તિની સંપૂર્ણતા જે જાતની સંપ્તિયા અથવા સ્ત્રી અને પુરુષની સંપ્તિની સંપૂર્ણ થાય છે. આ સામાન્ય સ્પષ્ટિકરણ છે, પરંતુ ઉત્પત્તિના પ્રશ્ન આપણાથી સંપૂર્ણ રીતે ચર્ચા શકાય નહીં.

લગ્નની ગાંઠથી બધાવાનાં કારણુ અલેક છે. માણસ એકલો દરેક જાતની પ્રવૃત્તિ આદરી શકે નહીં અને આદર તો ઘણાજ યોગ્ય પ્રમાણમાં અને કેટલીક જાતની વૃત્તિ તો જીવનનાં આધાર માટે દરેકને ખાસ અગત્યની હોય, તો ત્યાં પણ જ્ઞાનની વહેચણી થાય તો કીટ અને તેથીજ દીર્ઘ પુરુષ સ્ત્રીનું કપમા જોવાય છે.

લગ્નનું ઉદ્ધુ સ્વરૂપ સ્ત્રીને મિત્ર તરીકે સ્વીકારવાનું છે. મનુષ્ય એકલો હોય તો, તે ઘણો વખત સુખ અને દુઃખનો ભોગને ઉઠાવી શકતો નથી જેમકે માંદગી ઇલાદિ, અથવા સુખના વખતમાં, અર્થસાધ વિગેરે અને તે વખતે અને ખાસ કરીને દુઃખના વખતમાં, મિત્ર તરીકેનું કામ સ્ત્રી સારું છે. દુઃખમાં સ્ત્રીમાં મિત્ર કરતાં વધારે હું કાંઈ પણ જોવા જેવું હોય તેમ માનતો નથી. મિત્રને જેટલા પ્રેમથી, જેટલી સેવાથી અને જેટલા માનથી ખોલાવીએ છીએ તેટલું જ પત્નીને આપવું ઘટે છે.

એ વાત સત્ય છે કે કુદરતજ આપણને વિયયનો ભોગ શિખવે છે. પરંતુ વિયયનો ભોગ, ક્રૂર સુખ ભોગવવા માટે નહીં-પરંતુ જેમ કોઈ કીર્તિ અથવા અમર નામ મેળવવા માટે તરવારથી યુદ્ધમાં લડતો હોય અને પરમાર્થિક જોરસાથી સ્વાર્થ ભોગ આપતો હોય તેમ વિયય સેવનમાં, પ્રત્યેત્પત્તિ કરી અમર નામ કરવાની ઉચ્ચ લાક્ષણ હોવી જોઈએ અને તે માટે વીર્યેશ્વીર અને વ્યક્તિએ ઉચ્ચ સ્વાર્થ ભોગ આપવો ઘટે છે. વિયય સેવન, રતિસુખ સ્વાદ માટે નથી પરંતુ Landable ambition તૃપ્ત કરવા માટે છે અને તે માટેજ વીર્યેશ્વીર ભોગ આપવો ઘટે છે.

હવે જે બદ્ધ વીર્યવાન ત્રીશ વર્ષનો યુવક હોયતો તેને બદ્ધ વીર્યવતી વીર વર્તી પત્ની સાથે, ત્રણ વખત ભોગ કરવાથી સંતાન પ્રાપ્તિ થાય છે. કારણકે આ ઉમ્મરે જન્મેના વીર્ય ધણું વાકાવરણ અને ઉમદા વાતાવરણનાં સોહીયાથી નિકળેલાં હોય છે અને તેથી સંતાન પણ એક દિવ્ય વીર બન્યું જન્મ કારણકે છે. એવું દૃષ્ટાન્ત સિંદ છે. મિંક ક્રૂર સિંદહણુ માયે વર્ષમાં એકજ વખત ભોગ ભોગવે છે અને સંતાનને જન્મ આપે છે.

વારંવાર સ્ત્રી સેવનથી અને તે પણ અપરિચક્ષ દસામાં સેવવાથી, ઘણો ભોગ આપવો પડે છે. કારણકે એ વખતે ભોગ ભોગવનારી



એક પશુ ખોરાક ખાવાથી જોડણી વધારી મળી હોય તે હોમાઈ જાય છે. અનેક વ્યાધિઓ જોડીકે, ચાંદી, પંચમીઓ છતાંદિ ઉત્પન્ન થાય છે; ચાદશક્તિ અને મગજ શક્તિ ઘટે છે અને આયુષ્ય ઠુંકું થાય છે.

અહ્યર્થના સેવન માટે સાત્ત્વિક અને શુદ્ધ ખોરાકની જરૂર છે. ઉચ્ચ સંસ્કાર તથા કૃણવણી, સ્ત્રીનો અસંગ, એકાન્તનો અભાવ, એ ખાસ સાધવા માટે પ્રયત્ન કરવો જોઈએ. ઉપરાંત વિષય વાસના ઉશ્કેરે એવા વાંચન, તથા શ્રાવ્ય અથવા દૃશ્ય નાટક અથવા સીનેમાનું સેવન પણ અયોગ્ય છે. માનસિક સંયમની ટેવ એ અહ્યર્થનું હૃદય છે. યોગી ઉદ્ધ અને શારીરિક વ્યાયામ અને ખોરાક એ સાધક ઉપાયો છે.

અહ્યર્થ સ્વરૂપ વર્ણન.

ઠુંકમાં હવે આપણા શાસ્ત્રોમાં અહ્યર્થનું સ્વરૂપ શું આપ્યું છે તે જણાવીશ.

સ્મરણં કીર્તનં કેલિઃ પ્રેક્ષણં ગુહ્યભાગણમ્ ।

સંકલ્પોઽપ્યવસાયથ ક્રિયાભિવૃત્તિરેવ ॥

एतन्मैयુનमष्टાङ्गं प्रवदन्ति मनीषिणः ।

વિપરીતં બ્રહ્મચર્યમેતરિવાપ્તલક્ષણમ્ ॥ એટલે

પૂર્વ વિષય સ્મરણ, વિષય સ્મૃતિ, (શ્રાવ્ય, અને વાચ્ય) વિષયવિદાર, વિષય પ્રેક્ષણ (ચિત્રમાં, નાટકમાં સીનેમામાં, અને સંસ્કારમાં), વિષયવાદ, વિષય વિચારો, વિષય જોવાના નિશ્ચયો, વિષયમાં પ્રવૃત્તિઓ, એ આઠ પ્રકારનું મૈયુન છે અને એનાથી એ આઠમાંથી વિરત જનવું એવું નામ અહ્યર્થ છે. એટલે અહ્યર્થ કેટલે જાણ વસ્તુ નથી કે જે આપણી પાસે નથી અને મેળવવા જવાની છે પરંતુ આપણી પાસે એ સક્રિય રહેલી છે અને તેથી અહ્યર્થની વ્યાખ્યા નકારમાં રાખેલી છે. એમાં ઉપાસના પણ સમાવેશ થાય છે અથવા આપણા મોઢા સ્પર્શમાં પણ અહ્યર્થ પાળનારને પાંચ અનિવાર્ય નહે છે એમ જવાબી છે.

શરીરાગકથાશ્રવણતન્મનોઽરાજ નિરીક્ષણપૂર્વક-
તાતુસ્મરણવૃજ્ઞેશ્વરસસ્વતરીસંસ્કારત્યાગાઃ પથ ।

અને એ પાંચ અવિચાર સ્ત્રીમાં મોઢ ઉત્પન્ન કરે એવી કથાઓનું શ્રવણ, તેના સુંદરગીતોપાંગનું નિરીક્ષણ, પૂર્વે જોવાવેલા રતિ સુખનું સ્મરણ, વિષયોપાક રમતું સેવન, અને શરીરને મોઢથી શણગારવું એ પાંચ જનવની ક્રિયામાંથી વિરત થવાથી અહ્યર્થની ભાવના સ્થિર થાય છે (તત્સ્થવાયે ભાષનાઃ પથ પથ)

ઉપરોક્તિથી જણાશે કે આપણા શાસ્ત્રોમાં પણ અહ્યર્થને ઘણું જ અગત્યનું પદ આપેલું છે. એ શારીરિક, માનસિક અને અધ્યાત્મિક ત્રણે આંખોનોની મોટી સિદ્ધિ માટે ખાસ અગત્યનું છે. વિદ્યાર્થીઓમાં ખાસ એની આવશ્યકતા હોવી જોઈએ કારણકે અહ્યર્થના પ્રભાવથીજ, સ્મરણ શક્તિ સતેજ અને ચિરકાલી રહે છે, કુદ્ધિ સપ્ત બને છે અને લાંબા કાળ સુધી વાંચન અને જનન કરવાં છતાં મગજને થાક લાગતો નથી તેમજ મહેશ ઉપર તેજ અને શરીરમાં કાન્તિ વધે છે.

D. B.

માશૂકને એક પ્રશ્ન !

પાંથી શરણી પ્રેમથી ગાફિલ થેશે હું બન્યો !
માથક ! તારી ચારીમાં-અદનામ જાણી શું રહેશે ?
જોડેજલાલી છેડીને-સુશિલ ! બેઠાવત તો કરી !
તુજ પરલ ઇન્તેઝારીમાં-મુશિલત બાકી શું રહી ?
પ્રભુય પથે પરચરી પરિપૂર્ણ પાગલ તો બન્યો !
માથક ! બેઠાવત ખંજરે-જિસ્મીલ જાણી શું રહેશે ?
આરામ સપજો આવરી ! દીલ દર્દ તો બેઠાઈું સહી !
માથક ! મશિ હા માનવી વિવેક બૂઝ્યો શું સહી ?
વશજીર લીધી દસ્તમાં તુજ પેરમાં મલતક ધરી ;
માથક ! મગવા તુજનો સહી રાહાદતે જાણી રહી ?
ક્ષીપણું રે દાખની જો રત્ન હલ્ય મહેલું નથી ;
પરોક્ષ નરે પરખાવે છે પથ નહાયાં કેમ નહિ !

સ્નેહસાગી,



જનોઈવાળા જૈનોને દિવ્ય સંદેશા ।

પ્રિય બ્રાતૃગણ,

આપણા પ્રાચીન શાસ્ત્રોમાં યજ્ઞોપવિત (જનોઈ) રાખવાનું કહેલું છે દાખલા તરીકે વિશિષ્ટોચ્યુપવિતસ્ય વન્કરોતિ ન તત્કલમ્ ॥ બાનાથ=ચોટલી તથા જનોઈ યજ્ઞરો પુરૂષ જે કંઈ ધર્મ કાર્ય કરે છે તે કર્યું ના કર્યું બગાળ છે. જે ઉપરથી જનોઈ અવસ્ય જોઈએ, એમ માલમ પડે છે, તે છતાં આપણા બધાઓ અજ્ઞાનને વશ થઈ જનોઈ પોતે રાખતા નથી, તેમજ તેમના બાળકને પણ પહેરાવતા નથી. જોથી ધર્મબદ્ધ રહી અનેક પાપકાર્યો કરી અણોષાદને પ્રાપ્ત થાય છે, માટે તેવાઓને ઉપદેશ આપી સુધારી તે પ્રથા ચાલુ કરવાનું હિંદી અને સુખ્યત્વે નીચેની બાબતોના વિચાર કરવા આપણી જનોઈ સંસ્કારિત પુરોહીતો એક મીટીંગ બરની જોઈએ.

૧ આપણા બધાઓએ વર્તમાન કાળના શા કારણથી જનોઈ પહેલી છોડી દીધી છે ?

૨ વર્તમાન કાળમાં જૈન પુરોહી તેમજ તેમનાં સત્તાનોંડું મન જૈન ધર્મનાં સુત્રો પર શા કારણથી ચોટવું નથી ?

૩ આપણી સમાજ સા કારણથી મિથ્યા-લી દેવોને પૂજવા લાગી છે ?

૪ વ્યવહારિક ક્રિયાઓ જેવી કે મોળ સંસ્કાર, લાસ ક્રિયા, ગૃહારંભથી વાસ્તુ સુધીની ક્રિયાઓ વિગેરે શા કારણે જૈન વિધિથી થતાં નથી ?

- ઉપરોક્ત પ્રકરણનો વિચાર કરી તેવું જાહેર જોઈ કાઢી તેને સુવર્ણ માટેજ એક કથન છે. કારણ કે-આપણે આજ સુધી વાટ જોઈ જોઈ જતા કે-આપણી રીતિ, જૈન પત્રો જૈન કાન્દરમો, સમાજો, મંદિરો, પાકીયાઓ અને આપણી પાઠશાળાના લોકોમાં લગભગ ન

પડ્યા રહેનારા ભદ્રારકો, કંઈક કરશે, પણ લાખ્યા સિવાય રહેવાતું નથી, કે તેમાંથી કોઈએ પગ આ બાબત માટે કંઈ કર્યું હોય એમ જણાતું નથી, માટે હવે આપ મુલા વિના સ્વર્ગે જવાતું નથી, એ કહેવત અનુસાર સંસ્કારિત સુવાન વર્ગેજ બહાર આવી શાંતિના સ્વયં-સેવકો બની એવું કાર્ય કરી બતાવવું કે જે દેખી દેરકના મુખમાંથી ધન્ય ધન્ય સખ્દ સાંભળવામાં આવે. આ કામમાં નાણાંની જરૂર નથી, પણ મીં વાડીલાલ (એક સ્થાનકવાસી ધર્મબદ્ધ) જેવા દંડ લાગણીવાળા સ્વયંસેવકોનીજ જરૂર છે, અને તેમાં મુખ્યત્વે જોઈ જનોઈ ધારણ કરી છે, તેમણે પોતાનાં પ્રતોનો અમલ કરવા જતી બહાર પડતું જોઈએ-કે જે પ્રતો જનોઈ પહેતી વખતે લેવાય છે કે જૈન ધર્મનાં દેસાવે કરવો, પોતે શુદ્ધ બની બીજને પ્રાયશ્ચિત્ત આપી શુદ્ધ કરવા, ઉદ્ધૃત આમાર પાળવે, જૈન ધર્મનાં સુત્રોપર શ્રદ્ધાન કરવું, વિગેરે પ્રતો લેવાય છે, તો તે વતનો અમલ કરવાનો પ્રમંથ આવી લાગ્યો છે, તો જૈન જનોઈવળા પુરૂષને જવા દશે નહિ અને પોતાનાં પ્રત દાખલ કરશે નહિ, એમ સપૂર્ણ આગા છે. આવા કામમાં જાતિ-બેદગનીજ જરૂર હોય છે ને તે પણ જનોઈ ન આપાય તેને ખરો જૈન સમજવો નહિ, પણ કોઈ ઊંચ પાણજ નજીવો. છેવટે દરેક બધું મિટિગમા ભાગ લેશે એમ આશા છે, તો હવે મિટિંગ ક્યાં ને ક્યાં મિતિએ બરની તે વિરે દરેક સંસ્કારિત બધું પોતાના વિચારો નીચેને ટૂંકણે જણાવશે તો ઉપકાર થશે. બધાના ઉત્તર આવી ગયા પછી ચોક્કસ રથજો અને મિતિ નક્કી કરી આ પત્ર દ્વારા દરેકને જણાવવામાં આવશે તો દરેક જૈન બધું આવા પારમાર્થિક કાર્ય માટે એક પૈસાનું પોસ્ટ કાર્ડ વાપરશે એમ આ મંડળી આશા મળે છે. પ્રતિભામ્

લીં મંચી, કાણીસા મિત્રમંડળી,

સું કાણીસા (ખંભાત)



‘સામાજિક વંધારણ અને તેની મુશ્કેલી ફરજો.’

Society is indeed a contract. It is a partnership in all science, a partnership in all arts; a partnership in every virtue and in all perfection. *Burke.*

‘Caste is the great power and secret of Hinduism.’

M. K. Gandhi.

રાજકીય બાબતોમાં રાજ્ય જેમ પ્રગ્ન સંસ્કાર્ય પૂરું, ધ્યાન આપે છે તે પ્રમાણે હરેક પ્રકારની સામાજિક-સાતિમંડળને લગતી બાબતો (સમાજની હરેક વ્યક્તિની માનસિક અને આત્મિક ઉત્તિ) પર લક્ષ આપવું એ હરેક સમાજની ફરજ છે.

રાજકીય તંત્ર (Political Government) અને સામાજિક તંત્ર (Social construction) બંધારણ અને મૂલ્યમંડળ બંધાયેલ સંસ્કાર્ય છે, ફક્ત બંનેના વલણ યાત્રા પ્રવૃત્તિઓમાં જ વર્ણવેલ છે. રાજ્યતંત્ર પ્રગ્ન હરેક પ્રકારના જાનમાલને લગતા બાહ્ય ઉપદ્રવોથી સંરક્ષણ કરે છે, ત્યારે સામાજિક તંત્ર માનસિક અને આત્મિક ઉત્તિ કરવા વર્ણવેલ લક્ષ આપે છે. સદ્ગતિનો ધણો ખર્ચ બાંધાર સમાજનાજ ઉપર રહે છે. જેવું સમાજનું બંધારણ અને તેના દાર્પકવર્ણિ, તેના વિચાર-શીલ અને વર્તનવાદ તે સમાજના સંબંધીઓ અને છે. સમાજથી વિરક્ત ધણીજ યોગ્ય પ્રકાર રહે છે. હરેક વ્યક્તિ યોગ્યવર્ણિ અંગે પશુ કોઈને કોઈ સમાજ (Society)ને અનુસરે છે. આથી સામાજિક બંધારણ જેમ જેમ ઉચ્ચતર હોય તેમ તેમ તેના સંબંધીઓ પણ ઉચ્ચ વિચાર-વાન અને સદ્ગુણશીલ હોય એ સ્વાભાવિક છે. સામાજિક અને રાજ્યકીય બંધારણોમાં સામાજિક બંધારણ (Social constitution) રાજ્યકીય બંધારણ કરતાં પ્રથમ બંધાયેલું છે એમ કેટલાક પાશ્ચાત્ય વિદ્વાનોનું માનવું છે અને તે વ્યાજબી લાગે છે. તેઓનું માનવું છે કે પ્રત્યેક કોઈ પહેલાં વાન જંગલી અવ-

સ્થામાં હતાં અને વિચાર અને વર્તનમાં સરલ સ્વભાવી હતાં. પોતાનો હવન નિર્વાહ આપતેમ રખડી ફલ ફલાદિ વનસ્પતિ ખાઈ કરતાં હતાં, પહેરવાને માટે ઝાંટી છાંયો શરીર નિંટતા યાત્રા શરીર પર ગુદા ગુદા પ્રકારના રંગો ચોપડતા હતા. તેઓને રહેવાનાં સ્થળ સ્થાયિ ન હતાં. હાલ આપણે જેમ ભરવાડ જાતિને પોતાનાં ઘેરાં બકરાં સાથે આપતેમ ફરતી જોઈએ છીએ તેના જેવી સ્થિતિમાં કાંઈક તેઓ હતાં. પછી કાળે ફરી એક પછી એક એમ ધણા મનુષ્યો એક બીજાના ઘાસ સંબંધમાં જેમ જેમ આવતા ગયા તેમ તેમ તેઓએ પોતાની સાથેનાં ઠોર વિશેર સાથે એકજ સ્થળે સ્થાયિ રહેવાનું પ્રસન્ન થયું. તેમાં જેને ને ફાવે તે સ્થળે તે રહ્યા અને તે જગ્યા તેની પોતાની માલિકીની થઈ પડી. આ પછી એકબીજાના સહવાસમાં રહેવાથી માંડેલાં બંધાર માટે Mutual transaction તેમને ને યોગ્ય લાગ્યા તેવા નિયમો ધડયા. આ પ્રમાણે જન્મ એકા મળી ને એક સમૂહ થયો તેને સમાજ Society નામથી ઓળખવા લાગ્યા. જેમ જેમ એકબીજાના સહવાસમાં તેઓ રહ્યા ગયા તેમ તેમ સ્પર્ધા-ચક્ષા ચડતી અને અદેખાઈનાં મૂળ ફૂટવા લાગ્યાં અને આથી ફરી ‘જાલીયાના બે લાગ’ (Might is Right) ના મારે તેની તરવાર જેવી સ્થિતિ ત્યારે આવળી પડી અને જોગવર કમ-તાકાવતરની નાનકે દેરાન કરવા લાગ્યા ત્યારે તેમાંનાં કેટલાકે એકા ધણ કોઈને આતી રીતે બક્ષવાનું પ્રણયી દેરાનગતિ ન પડે એ



દરેકજના આર્થિકતાના વેપાર ધંધાનું, ધાર્મિક ક્રિયાઓનું અને જનમાલનું સંરક્ષણ થાય તે માટે તેમાંના એક યોગ્ય માણસને પસંદ કરી તેમના પર રાજ્ય કરવા 'રાજા' નીમ્ણે. રાજાને મદદ કરવા રાજ્ય સભા વિગેરે મંડળો સ્થપાયાં અને આમ ધીમે ધીમે સામાજિક તેમજ રાજ્ય-કીય તંત્રી દિવસે દિવસે પોતાની દાજ્જતો અને સંયોગો અનુસાર સુધારો વધારો કરતાં ગયાં અને ઘડાતાં ઘડાતાં હાલની સ્થિતિએ પહોંચ્યાં છે. આતી સાથે એક બીજાના વિચારોની પણ આપ લે થઈ અને આ વિચારોમાં દિન પ્રતિ-દિન બીજા નવીન વિચારોનો ઉમેરો થતો જવાથી તે સઘળા વિચાર અને મિલ્લતમજ હમાંથી સાહિત્ય (Literature) અને તત્ત્વજ્ઞાન (Philosophy) સાથે જનના પામ્યાં, પશ્ચિમના લોકો તત્ત્વજ્ઞાન અને ધર્મ એમ બે જુદા વિષયો માને છે જ્યારે આપણે ભારતવાસીઓ પ્રથમથીજ તે બન્નેને એક વિષય તરીકે ગણીએ છીએ.

પહેલાંના વખતમાં હિંદુસ્તાનમાં સામાજિક બંધારણે હિંદુઓનું ઘણું ધ્યાન ખેંચ્યું હતું અને તેને માટે મનુસ્મૃતિ, યાત્રવલ્ક્યસ્મૃતિ, ગાનવ-ધર્મ સૂત્રો વિગેરે મોટા મોટા ગ્રંથો રચાયા છે.

હિંદુ ધર્મની કર્મ કાંડ (ક્રિયા ભાગ) ની ગણતો સ્મૃતિમાંથી મળી આવે છે અને તે બાળતેમાં વર્ણશ્રમે જ્ઞાતિ ભેદ સુખ્ય ભાગ બન્યો છે. હિંદુ સંસ્કારના નામથી દાહ આપણે જોને જોળખીએ છીએ તે હિંદુ સંસ્કારના ચાર વર્ણના ભાગ પડ્યા. (૧) અલ્પ (૨) ક્ષત્રિય (૩) વૈશ્ય (૪) શૂદ્ર. આમાંના પહેલા ત્રણ દિગ્ધ (જે જનની) નામથી જાણ-ખાતા હતાં. આ ચારમાં બ્રાહ્મણ જાતિને અતિ ઉચ્ચ પદ આપવામાં આવ્યું અને તેની સાથે કેટલીક બાબતોમાં તેમને ખાસ હકો (Special privileges) પણ આપવામાં આવ્યા. વર્ણશ્રમમાં સમાવેલા જિજ્ઞાસુનું પરિણામ આપણે જો આવ્યું કે તે વર્ણશ્રમના બિલ-ભવને નશ્ત્રમ કરના છ. સ. પૂર્વે ૪ થી

સદીમાં મહાત્મા ઝોતમ બુદ્ધ આગળ પડ્યા અને તેમના ઉપદેશ વચનોમાં કસેસના મુજબ આવા બિજા બિજા વાડાઓનો નાશ કરવા બોધ કર્યો, છતાંએ તે વર્ણશ્રમ ભેદો આજ-સુધી જળવાઈ રહ્યા છે. આ જુદા જુદા વર્ણોની એક એક મહાજા યા જ્ઞાતિ (Society) એમ સુખ્ય ચાર સમાન વિભાગ પડ્યા અને વર્ણ શંકરને લીધે અનુવેશન અને પ્રતિવેશન (intermarriages between higher and lower castes) પદ્ધતિ અનુસાર બીજા અનેક હલકા પ્રકારના જ્ઞાતિભેદ પડ્યા, પણ આ દરેક જ્ઞાતિને લગતા અમુક નિયમો હતા જે નિયમો કાજે કની ફરજિયાત અને રીવાજ રૂપે થઈ પડ્યા તેની ઉડી જડો હતી પણ હિંદુસ્તાનમાં સર્વ સ્થળે જોવામાં આવે છે, આ નિયમોમાં મહાભારત જેનાં શાસ્ત્ર પણ દેશ, કાલ, ભાવાનુસાર સુચારો વધારો કરવા ઉપદેશ છે, પણ સ્વાર્થ મા અગાન તેમ કરતાં અટકાવે છે.

આ વર્ણશ્રમના નિયમો આપણે જોનો પણ પાળીએ છીએ. અને 'વટજાયુ' 'અભાજયુ' કહી અત્યંત કોપી બની ચાર ગાઉ દૂર ચાલ્યા જઈએ છીએ બ્રાહ્મણને (૧) તે ગમે તેટલો મદો, દાડડીનો કે માનાધારી હોય પણ તેને આપણે પણ ઉચ્ચ ગણીએ છીએ અને ખુદી રીતે તેનું ગણેલું જમીએ છીએ, અને તેના પામણના તેનાજ માલવાનું પાણી પીવામાં મિત્રફલ બાધ મળ્યા નથી. આના પ્રકારની જાલક્રિયાઓએ હાલ આપણું એટલું બધું ધ્યાન ખેંચ્યું છે કે ક્રિયાકાંડ (ગાંધીકાંડ) અંધ શ્રદ્ધાથી પણ પામવો તેજ મે સકાડ છે એમ મનાયું છે. આ બધું અગાનજ જણાયું છે, જોનાથી આભડડેટ ચિત્રે બનીવાનું છે તે જન-માત્રથી કૃત્ય તીય હોય તેનાથી નથી, પણ તે માંઆહારી, ફરજિયાતી યા મલોન હોય કે જોને જોતાં કે જે મંબોધી વિચાર કરતે પણ આપુ-જોને દેખ ફેરવેલા અને મલોન વિચાર થઈ આવે તે છે. બધે પછી તે સ્વર્ગવાસી દેવ



હો કે ઉચ્ચમાં ઉચ્ચ સાક્ષ્ય હો. ખાલી અમરદાને ન માનતાં કાર્યનું કારણ જ્યાં શક્ય છે ત્યાં તે અવશ્ય જાણવું જોઈએ.

આજકાલ હિંદમાં આ મુખ્ય ચાર વર્ણોમાં પણ બીજા અનેક વિશેષ ભેદો પડ્યા છે અને પડેતા જાય છે તેનું મુખ્ય કારણ સ્વાયં અને કુસંપ છે અને સમાજ યા યાનિ એટલે શું તેના અર્થ સ્પષ્ટ સમજાયા નથી. હાખલા તરીકે જૈન જાતિને લઈએ તો તેના મુખ્ય ત્રણ ભેદ-દિગંબર, શ્વેતાંબર અને સ્થાનકવાસી. તેમાં દિગંબરમાં કુમ્ભ, મેવાડા, તસિંદપુરા, પંચમ, ચતુર્થ દેવતાદિ અનેક ભેદો છે. ખીજા એ ભેદોમાં પણ આવીજ શોચનીય સ્થિતિ છે. આ વિભાગો કેટલેક સ્થળે તો એટલા નાના બન્યા છે કે તે વિભાગની ચૂક સંખ્યા ગણીએ તો ભાગ્યેજ વીસ પચીસ પણ થાય અને જો તેટલી થાય તો તે કક્ષા એ ત્રણ કુટુંબનીજ એટલે કે સાલ્વોક્ત વચ્ચેનાનું ઉદ્ધારણ કરી નહકતી સગાઈમાં લગ કરવા વખત આવે તેવી છે. ધર્મ એકજ હોવા છતાં, જાતિ બહુઓની સંખ્યા નાની હોવા છતાં, ખાવા પીવના પશુ જોવાર હોવા છતાં, એક સાથે રહેવા છતાં, આવે જિજ્ઞાસુ જોવામાં આવે એ અતિ શોચનીય છે. આખી દુનિયામાં હિંદજ એવા દેશ છે કે જ્યાં ધર્મના અનેક ફાંટાઓ અને મિત્ર મિત્ર જાતિઓ અસલથી આવી આવે છે.

આવાં જાતિ જંધારણો (Caste System) એક દષ્ટિએ જોતાં હિંદુસ્તાનને પૂર્ણજ આસીર્વાદ રૂપ છે. જ્યાં તેવીશ કરોડ જોટલી બહોળી વસ્તી છે, તેવા વિશાલ પ્રદેશમાં તેના નાના નાના યોગ્ય વિભાગ પાડી તે દરેક વિભાગ પર દેખરેખ રાખવા એક ઉપરી નીમ્નો દોષ તો કામ થઈ સહેલું થઈ પડે, એ હાલની બીવીશ સહસ્ત્રજંધારણની પદ્ધતિથી સત્વ જણાય છે.

આજ પ્રમાણે ધર્મના પાયા પર પડેલા જાતિ વિભાગો પણ હિંદુસ્તાન જરા બહોળા પ્રદેશમાં નાનાં-નાનાં સંસ્થાનો સમાન હોઈ તે સાથે સંબંધ ધરાવતા વર્ગને તે આસીર્વાદ રૂપ હોય એ સ્વાભાવિક છે, પણ તે વિભાગો ત્યારેજ આસીર્વાદ રૂપ કહેવાય કે જ્યારે તે પક્ષાપક્ષીનું, એક બીજા બાગ વચ્ચે રાગ દેખ કરવાનું જરાયે કારણ થઈ ન પડે, પણ પોતે પોતાના જર્યાનું મધ્યસ્થપણે સત્તની ઉન્નતિ કરવા ખાતરજ બિનસ્વદેશી કાર્ય કરે. કુતરો ઉરદરી માંહોમાંંહેની લગાઈમાં બને પક્ષમાં કોણ વિજય મેળવે છે તે ટગર ટમર જોયા કરી આનંદ માનવો તે અધોગતિને પ્રમાણર, દલકા પ્રકારનો આનંદ છે. આવા પ્રકારનાં પક્ષાપક્ષી જાતિધર્મના ઉપદેશકો ન કરે અને પોતાના આત્મવીર્યને અને જાનને સન્માર્ગે દોરી પોતાના જાતિ બહુઓની મધ્યસ્થપણે આત્મોન્નતિ કરવા પ્રયત્ન કરી આનંદ માને તો તે મહર્ષ આદરણીય છે અને આમ થાય તોજ રાજ્યદારી અને સામાજિક બાબતો એક બીજાને અડચણ કર્યા શિવાય પોતપોતાનાં રાહદારી માર્ગે ચાલ્યા જાય, દરેક ભાગલાળો સત્ત્રેમ સાંકડથી એક બીજા સાથે જોડાય, સર્વાત્મજુ-ભાવ સર્વેત વર્તે અને રૂપ વધી આર્થાવર્તની યુનઃ જોડાઈલાવી અસ્તિત્વમાં આવવાને કોઈ સંકો રહે નહિ.

આ દષ્ટિએ-આ તરફ-મધ્યસ્થ દષ્ટિએ-જાતિ વિભાગો હિંદને આસીર્વાદ રૂપ છે, પણ ધર્મના કગડા અને રાગદેખ કરવાનાં જો કાષ્ઠનો થાય તો તે તિસ્સકારને પાત્ર છે. આવી મધ્યસ્થ દષ્ટિએ વર્તવા છતાં કોઈ વાંધો ઉઠાવે કે 'જાતિ જંધનો રાજ્યદારી બાબતોમાં અડચણ રૂપ છે' તો તે વાંધો ઉઠાવનારને આપણે સ્પષ્ટ સમજાવી 'ચીઠ્ઠા' કે આખી પ્રકારના જાતિ સમાજો રાજ્યદારી ચલવચને કોઈ પણ પ્રકારે ચિકત્તા નથી એટલુંજ નહિ પણ હમી



રીતે તે તેના હેતુઓ સત્વરે પાર પાડવા સા-
હાય કરે છે. રાજ્યદારી બાળતો સામાજિક
બાળેતોનો પ્રતિપક્ષી નથી. -તે બને બાળેતો
એક બીજાની તદ્દન ભિન્ન નથી. બને પછે
એક બીજા સાથે હળી મળી હાથમાં હાથ મે-
ળવી કામ કરવાનું છે. બને પહે એક બીજા
સાથેનો સંબંધ સમજવો જોઈએ કે જ્યાં
નવા સુધારક સમાજને અને ધર્મ સમાજને ફૂટતા
અટકે.

ચાતિ સમાજે પોતાના બધાં જ પ્રતિ જે
વિષે ફરજો અદા કરવાની છે તે બાળતો નીચે
પ્રમાણે છે.-

(૧) લમ (૨) ધર્મ (૩) કેળવણી (૪)
આર્થિક સ્થિતિ.

(૧) લગ્ન-લમ વિષે જે કરવાનું છે તે આ
પ્રમાણે છે.

(અ) બાલવિવાહ યતા અટકાવવા.

(બ) વર કન્યાની યોગ્ય ઉમરે પર
ધ્યાન આપી કન્યેડાં યતાં દુર કરવા.

(ક) કન્યાવિક્રયનો પ્રતિબંધ કરવો.

આમાંની પહેલી બે બાળતો પર જે
પૂરતું લક્ષ આપવામાં આવે તો બાલ-
વિધવા થવાનો સંભવ ઘણો જ યોડો
રહે એટલું જ નહિ પણ વર અને કન્યા
બન્ને પ્રાપ્ત ઉમરે પહોંચતા સુધીમાં કાષ્ટપણ
પ્રકારની અડચણ સિવાય વર દુનિયાદારીનું
વ્યવહારિક જ્ઞાન અને કન્યા ગૃહકાર્યનું
જ્ઞાન સંપાદન કરવા લાયક બને અને બને
લમ પડી સુખી બને. લમ મોડું કરવું
(યોગ્ય ઉમરે) એટલું જ નહિ પણ વિવાહ
પણ મોડો જ થવો જોઈએ કારણકે વિવાહ
થાય ત્યારથી જ બન્નેની દુહિમાં નિકાર
થવા પામે છે, મન વિર્ણ થઈ છે અને પોતાનું
ધારણું કાંઈ જોઈએ તેવું ફતેહમંદ નીવડતું
નથી. ચરીરને હાનિ પહોંચાવે અને કાર્યમાં
ખર્ચ પહોંચાડવાને વિવાહ જ બસ છે. વિવાહ
મવાની આગળથી જ તેઓની જીવન શ્રુતિમાં

ફેરફાર થવા માંડે છે અને લગ્ન થયે (બાલ
વયે) તેની માડી સ્થિતિની કીટીમાં વધારો
થાય છે. બાલવિવાહનું એક માડું પરિણામ
એ છે કે ઘણા અભ્યાસ કરતાં હોશીયાર વિ-
ધાર્થીઓને પણ તેમના અભ્યાસ છોડી દેવો
પડે છે.

કન્યાવિક્રય સંબંધીની વાત હાલ ઘણાં
જ્ઞાન ખેંચી રહી છે પણ તે વાત કન્યાવિક્રય
કરનારાના કાને પહેલી પહોંચે અને તેમના
હૃદયની છૂપી તોભવતિની-સ્વાર્થની-કૂચોને
પહેલો નાશ કરવામાં આવે તો જ તે માટે
કરેલા મર્વ પ્રયત્નો સફળ છે.

કન્યા વિક્રયથી થતી હાનિ:-

(૧) કન્યેડાં-જેવાંકે; વૃદ્ધ અને બાલકુમા-
રિકા, આથી બાળ વિધવાઓની વૃદ્ધિ થાય છે.

(૨) યોગ્ય જીવનવાળા સાથે લગ્ન થાય
તો પણ બન્ને વચ્ચે સત્રેમની લાગણી રહેવા
યોડો સંભવ છે.

(૩) કન્યાવિક્રયને લીધે કન્યાને ગમે તેવા
કુલમાં, અપંગ સાથે કાંઈ ચાતિમાં અને દૂર
દેશમાં અયોગ્ય વર સાથે પરણાવવામાં આવે
છે. આથી કન્યાને દુઃખ પડે છે અને સત્રેમની
લાગણી રહેવા યોડો સંભવ છે.

(૪) ગમેતેવા લાયક વર હોય છતાં તે
કન્યાવિક્રયના લોભોની વૃત્તિને નહિ સંતોષી
ચક્રાચી પરણી ચક્રો નથી, એટલે કે ચાતિના
મધ્યમ તેમજ ગરીબ સ્થિતિના લાયક વર પણ
કુંવારા રહે છે. કન્યાવિક્રયની તેમજ વરની
પહેરામણોની (Dowry) દૃઢ બદારની રીત
પણ નેટવીજ નિંદનીય છે. પહેરામણોને લીધે
જેદારક બનાવો હમણાં બે વર્ષયરજ ખાંગા-
માં બન્યા હતા.

(૨) ધર્મ-ચાતિ મગાડની બીજી અગત્યની
બાળન ધર્મની દેખરેખ રાખવાની છે. ધર્મ
એટલે વ્યક્તિએ કરવું જોઈએ તે સંકાર્ય-ફરજ
(Duty) જે નેતકાર્યથી મનુષ્ય જડ ચેતનને
સ્પષ્ટપણે તદ્દાવત સમજ સચિના સમસ્ત પદાર્થો-



તું' યથાર્થ સ્વરૂપ સમગ્ર જન્મ મરણના દુઃખથી સદાને માટે મુક્ત થાય. સદ્ધર્મનો દેશાવો કરવા અને તેના ગુણ તરવોને યથાર્થ સમજાવવા સદ્ગુરુઓની ખાસ જરૂર છે. અને આથી કરી શાંતિ સમાજને સદુપદેશકોની સંખ્યા વધારવા અને સદ્ધર્મનાં બીજ ઉડા રોપવા બનતો પ્રયાસ કરવો જોઈએ.

પણ સદ્ગુરુ કોને કહેવો એ એક મોટો પ્રશ્ન છે. છતાં તેનાં કેટલાંક બાહ્ય ચિહ્નોથી તેને ઓળખી શકીએ. જેવાંકે:—નીતિવાન, સ્વાર્થત્યાગી, આધ્યાત્મિક તરવોનું ઉચ્ચ જ્ઞાન ધરાવનાર, વિચારવાન. નશ્વરબાવી કે જેનાં મીઠાં વચનો સાંભળવાથી હૃદયને શાંતિ મળે. જ્યાં સુધી સદ્ગુરુઓ મળતા નથી ત્યાં સુધી સન્માર્ગનું જ્ઞાન થતું નથી, સન્માર્ગ સ્પષ્ટપણે સમજાતો નથી અને સત્ય સંયુત જન્મ છે. જ્યાં સુધી સ્વાર્થ ત્યાગી પુરેષો સાચા તારવાનેજ ખાતર (નહિ કે પોતાનું નામ જાહેર કરવા માટે) પ્રજાપક્ષી વધારવા) બહાર પડશે નહિ આંસુથી સદ્ધર્મનો દેશાવો થશે નહિ; અને

જન આપવા પ્રયત્ન કરવા જોઈએ. સદ્ધર્મની લાગણીઓ વંશપરંપરા ચાલી આવતી નથી માટે ધર્મ ગુરુઓ ખરું વંશપરંપરા ચાલ્યા આવવા ન જોઈએ, અને જે વંશપરંપરાનો રિવાજ કાયમ રાખવો હોય તો તે પદવીને યોગ્ય ગુણો તે પદવીએ આવનાર વ્યક્તિએ અવશ્ય અટકણ દર્યા હોવા જોઈએ. આવી ઉચ્ચ પદવીએ આવનાર વ્યક્તિ તે પદવીને લાયક ગુણોથી મુક્ત છે કે કેમ આવો વિચાર કરવામાં પણ જે દોષ ગણે છે તેવા બહોળા અણુસમજી જોને તેને સદ્ગુરુ તરીકે પૂજા ધર્મનો નાશ કરવા કમર કરો છે. બહેતર કે દુરાચરણી ગુરુઓ કરતાં પોતેજ પોતાના ગુરુ યથા બેસવું જે તર્યો નથી તે વારવાનો શું છે? જેની વર્તણૂક વિશે શંકા જાય, જે યનીતિમાન હોય અને તે સાક્ષાત્ સાળીત થયું હોય, ધર્મજ્ઞાનમાં અધુરો હોય તેવો સર્વથી વક્તા તરીકે ન જૂજાય તે માટે શાંતિ સમાજે બનતી કાશીસ કરવી. હાલમાં દિગંબર જૈન કામમાં ધર્મોપદેશકોની સંખ્યા ઘણીજ ઓછી છે અને તેનું પરીણામ એ આવ્યું છે કે દક્ષિણ હિંદુસ્તાનમાં ઘણા જૈન ધર્મીઓ પરધર્મીઓ બની ગયા છે અને અન્ય મતાવલંબીઓ તરફથી ઘણી હેરાનગતિને પડેલ્યા છે. તે શિવાય ગુજરાત તરફ જોઈએ તો ત્યાં પણ જોઈએ તેવા ધર્મનો ગુરુસો નથી એટલુંજ નહિ પણ ધર્મનો મૂળ તરવોનું પણ ઘણાને જ્ઞાન પણ નથી; ફક્ત સમજે અણુસમજે ચોડી ઘણી જાણકિયાઓ કરવામાં આવે છે.

દી. વગા જુના વિચારવાળા ધરડીયાઓ અને ૧૫ જેના કેળવણી જુવાન વર્ગ વચ્ચે જે ધર્મ રાગદુષ્ટી બનતો જોવામાં આવે છે, તેનું કારણ તે જ્ઞાન સંમિશ્રિને યથાર્થ મેળવે શક્યા હોય દક્ષિણ સદુપદેશકોની ખામી છે. હાલનાં જમાનો નીચાડેલો છે. જે વાગ્ય સાધારણ ભુદિ અને દૈનિક અનુભવ વિરહ ન થાય તેજ સત્ય જ્ઞાનવામાં આવે છે. આધિમાત્ય તરવોવાઓનાં આગેમાં આવી તર્કસંક્રિતતાજ બદલા ઉપરોગ

કર્ષો હોય છે. આથી માત્ર સમાજે પૂર્વ અને પશ્ચિમના બન્ને દેશોના તત્ત્વજ્ઞાનનું સાફ જ્ઞાન શરૂઆત હોય તેવા ઉપદેશકો મેળવવા અને તેમને ઉત્તેજન આપવા પ્રયત્ન કરવો. આને માટે સ્થાનિક પાઠશાળાઓનું સંતોષકારક કામ કરે શકે નથી.

ધર્મોત્તમ પ્રચાર કરવા જ્યાં જ્યાં જુના વખતના પુસ્તકોના બંદાર હોય તે ખોલી તેમાંના પુસ્તકોને ઘણી સંખ્યાથી જાળવી રાખી છપાવવા બાંધણી કેટલાક આવા બંદારને ઉઠાડવા હતા નથી અને તેમાંનાં પુસ્તકોને ઉઠાડીને ખવંચવી ધર્મના દીપ્તિ અથોના નાશ કરે છે. આ પુસ્તકોના પ્રસિદ્ધતાઓએ પ્રતાપનારા અંધની ઐતિહાસિક યોગળાણુ આપવા વધુ લાજ આપવું. આ પ્રમાણે ધર્મ પુસ્તકો સંબંધની શોધઓળ કરવાની પણ સમાજની જરૂર છે.

(૩) કેળવણીનાતિની ઉન્નતિનો આધાર કેળવણી ઉપર છે. ગમે તે પ્રકારની (સર્વ) કેળવણી આપાય પણ દરેક સ્તરે તેનું દષ્ટિ બિંદુ તો એક જ હોય છે. તે દષ્ટિ બિંદુ માનસિક શક્તિની ખીલાવણી છે. માનસિક ખીલાવણી સાધાધોનીથી મતોપકારક રીતે ચાલે તો આધ્યાત્મિક ઉન્નતિ પણ આપીઆપજ થાય, એ દેખીતું છે. કેળવણી આપવાના મુખ્ય હેતુઓ રૂઝ અને પર કલ્યાણ છે. અને પર કલ્યાણમાં મુખ્ય સ્વધર્મ શીવા અને દેશ સેવા છે. આ સેવાનો જુરમો રોજગર પ્રસારવા માત્ર સમાજે જનતા પગલા લેવાં જોઈએ. પેસો કંગ મેળવવો એટલું જ નહીં પણ પોતાની આજીવનશ્રુતિ ચતી દરેક પ્રકારની ચળવળથી બચી વાકફ થવું જોઈએ. કેળવણી ઉપર સદૃષ્ટિનેવો પણ આધાર રહે છે. વિદુરતાનમાં કેળવણીના વર્ગનું પ્રમાણ ખીલા દેશે સાચે સરખાતાં ધણુ જોડું ગણવામાં આવે છે.

કેટલાકનું માનવું છે કે આધુનિક કેળવણી લેવાથી વિદ્યાર્થીઓ સ્વનંદી બને છે, ઉદ્ભવ અને છે અને નાના મોટાની મોત મર્યાદા ખતમ નથી. મરે આ વાત બ્યાજખી છે એમ કહી શકાય તો આમાં હોય કોનો કહાડી ચકાવ ? અસમન કંઈક અશે બીન કેળવણી સામેનો જ. જો બધા કેળવણી હોય તો એક બીજાને પોતાના વિશે આગમન રાખવાનો કે ઉદ્ભવ થવાનો પ્રમંથ પણ આવે નહીં. આવા પ્રમંથ હશે જો ન થવા પામે માટે સદ્ગત

નવાતા, માદા અને ઉચ્ચ વિચારવાલા નિશાળ અને કોલેજોમાં શિક્ષકો રોકવા જોઈએ.

વળી કેટલાકનું માનવું છે કે બધી જનતા માણસો કેળવણી લેશે તો હલકા પ્રકારનો ધર્મ પછી કોણ કરશે, તેઓ પોતાનો ધર્મ છોડી દેશે અને તેઓ પોતે બીજાની તાબેદારી નહિ ઉઠાવે. આ પ્રકારનો ખુલાશો જો બધા કેળવણી જાય તો તરત જ થાય તેમ છે. કારણ કે જ્યારે બધાએ કેળવણી હશે ત્યારે કેળવણી સંબંધી પ્રશ્ન ન ઉઠતાં આર્થિક-પૈસા કમાવવા બાળતનો પ્રશ્ન ઉભો થશે અને જ્યારે પૈસા કમાવાનો સવાલ આગળ આવશે ત્યારે જે વસ્તુઓ પેદા કરવાને યોગ્ય માણસો કામે લાગ્યા હશે અને જે વસ્તુઓની ઘણી મોટી માગણી હશે તે વસ્તુઓ પેદા કરવાને કેળવણી માણસો પણ કામે લાગશે એ સ્વાભાવિક છે કારણકે તે ધર્મો કરવાથી વધારે કમાવાશે. બધે પછી ગમે તે પ્રકારનો તે ધર્મ હોય. આટલું જ નહિ પણ આમ થતાં હરિશ્ચંદ્રનો જુરમો વધશે અને તેથી કરી અચુક ધર્મના આસ પ્રવીણ (Speciousness) થવાના પ્રયત્ન કરવામાં આવશે. આની રીતેધીમે ધીમે દેશની આખાઈ થશે.

કેટલાક જે પશ્ચિમની વિદ્યાનો હોય કહાડે છે કે તે વિદ્યા ઉદ્ભવ અને ધર્મશ્રદ્ધા કરે છે તેઓએ તેનો દોષ કહાડીને જ અટકવાનું નથી કારણકે તેની અદર કેટલાક ગુણો પણ છે કે જે ગુણોને લીધે તેઓ હાલ આપણા પર સામ્રાજ્ય બોગવે છે; તે વિદ્યાર્થીઓ જે જે સારથી હોય તે તે અદ્ય કરી નેની સાથે સાચે આપણી પૂર્વની વિદ્યાનો પણ સંતોષકારક અભ્યાસ કરવો જોઈએ.

પણ આ વિદ્યા સંપાદન કરવા પૂરતાં સાધનો હોવા જોઈએ. જો કે આ સાધનોમાં ગણનર વિદ્યાર્થીની પોતાની બુદ્ધિ મુખ્ય સાધન છે છતાં એ તે સાધન ખડકનાં બીજાં સાધનો વિના પોતાનું કામ પાર પાડી શકતું નથી, માટે આ આજ સાધનો પૂરા પાડી આપવા માત્ર મંડોએ જનતા મદદ કરવી. કારણકે વર વધુને પરણવાના અને જમણવાનો બાળતોમાં જ બોજગડ કંઈથી તેમની ફરજે પૂરી થતી નથી.

ઉપર જણાવ્યું તેમ વિદુરતાન ખીલા દેશે કરતાં કેળવણીમાં જુદા પડતો છે અને તેનાં કારણે દુકામ નીચે સુખ્ય છે.



૧. જન સમાજની કેળવણીની જરૂરીયાતના સંબંધમાં પૂરતી ખામી.

૨. જુના વિચારવાલા શોકોની માન્યતા કે:—પ્રાચીન સમયની પૂર્વેની વિદ્યાજ્ઞ સર્વાત્મ છે અને હાલની કેળવણીથી વિદ્યાર્થીઓ રવ-ચંદી અને ધર્મજ્ઞ થાય છે પણ ખતે વિદ્યા સંપાદન કરવાથી ફાયદો થાય છે તેવી સમજની ખામી.

૩. હાલની કેળવણી લઘુ શોકો ઘણે ભાગે સારા તાબેદાર સરકારી નોકરો અને છે અથવા પણ તેથી નેપછે તેવો આર્થિક લાભ થતો નથી.

૪. છેલ્લાં મસો ત્રણસો વર્ષે દરમ્યાન પરદેશીય હુમલાઓથી હિંદમાં રહેલી અશાંતિ.

હવે આવી મુશ્કેલીઓને દૂર કરી કેળવણીને ઉત્તેજન આપાય તો વધારે સારું. અમુક પ્રકારની પદ્ધતિ બોડી હોય તેથી તે વસ્તુ (કેળવણી) જ બોડી છે એમ કહેવું એ ઘણું ભૂલભાગું છે. પદ્ધતિમાં ખામી જણાતી હોય તો નવી યોગ્ય પદ્ધતિ અનુસાર કામ કરો. કેળવણીને ઉત્તેજન આપવા અને વિદ્યાર્થીઓના મોહો મોહો હરીફાઈનો જુરસો ઉત્પન્ન કરવા માટે સમાજને એકત્ર પૈસાનો બંડોળ કરી તેમાંથી યોગ્ય જણાય તેવા લાયક અને ગરીબ વિદ્યાર્થીઓને સહાયરૂપી (જાતરવતિ) આપવી નેપછે. હાલના વખતને લગતા કે:—પિયુ જન સમાજે ઉપયોગી વિષય પર હરીફાઈના છતાં છતાં નિર્બંધ લખવા નેપછે. કેળવણીને ઉત્તેજન આપવા બોર્ડિંગ હાઉસોની પણ ઘણી જરૂર છે. તેવી બોર્ડિંગ રથને રથને રવાની રવ. દાનવીર શોક. મલ્લિકાર્જુન દીરાચંદ જી. પી. એ જૈન કોમને અત્યંત આભારી હશે છે. જન કોમ, તેમાં વિશેષે કરી દિગંધર દેવ કોમ, કેળવણીના સંબંધમાં ધણીજ પગલ છે. અને આથીજ હાલની યજ્ઞવળમાં નેપછે તેટલો ભાગ એ કોમ લઈ ચાલી નથી. જેમ છોકરાઓને કેળવવાની જરૂર છે તેમ છોકરીઓને પણ તેમને યોગ્ય કેળવણી આપી કેળવવાની જરૂર છે અને તેને માટે આવિકાગ્રમ જેવી સંસ્થાઓને સ્થાપવાની તેમજ તેને ઉત્તેજન આપવાની ખાસ જરૂર છે.

(૪) આર્થિક સ્થિતિ.—જ્યાં સુધી આર્થિક સ્થિતિ સારી ન હોય ત્યાં સુધી ઉપરોક્ત કંઈ પણ શક્ય થકે નહિ. માટે માત્રની વર્તમાન આર્થિક સ્થિતિ કેવી છે અને જો તે

બરાબર ન હોય તો તેમ હોવાનું શું કારણ છે તે માત્રિ અંડેજે વપાસવું નેપછે. પોતાના માત્રિ અંધુઓ કંગાલ અવસ્થામાં હોય અને આપણે તવંગર હોઈ મોજમઝામો ભોગવીએ અને તેમની મિશ્કલ દરકાર ન કરીએ તો આપણે તેમના તરફ ટંકણું ફેંક્યું રાખી નિર્દયતાથી વર્તીએ છીએ એમ કહેવાને કોઈ વાંધો નથી. તેમને કોઈ પણ રીતે સારા ધંધામાં ઠેકણું પાડવા એ માત્રિના પૈસાદાર વર્ગની દરખ છે. તેમને કસાહુબર અને વહેપારી રાન આપી આર્થિક સ્થિતિ સારી કરવા ધ્યાન આપવું.

માત્રિ મંડળ—ઉપર કહેલી બધી બાબતો માત્રિ સમાજે વિશેષ કરી ધ્યાનમાં લેવાની છે. આ બાબતો ધ્યાનમાં લેવાં અને કામ સુલભ થાય તે માટે સ્વયંજા માત્રિ બંધુઓમાંથી અમુક અનુભવી અને વિદ્વાન માણસો અમુક સુધી કામ કરવા ચૂંટી કહાડવા. આ ચૂંટી કહાડવાલાઓ સ્વયંજા માત્રિ બંધુઓના એકત્ર પ્રતિનિધિઓ છે. તે પ્રતિનિધિઓએ જેમ અને તેમ સ્વાર્થ તાજ નિષ્કાપાતે માત્રિહિતાર્થે કાર્ય કરવા પ્રતિજ્ઞા લેવી નેપછે. આ પ્રતિનિધિ મંડળે—યા માત્રિ મંડળે યા માત્રિ પંચે દર વર્ષે યા તો અનુકૂલ ન હોય તો દર મીને વર્ષે પણ એકય થઈ તેમના આગળ રજુ કરોમહી બાબતોપર વિચાર કરવો. અને તે અમલમાં મુકવા દરેક પ્રકારનાં હકાવણુઓ પગલાં લેવાં કે જેથી સંપ કરતાં કુસંપ અને એકત્રતા કરતાં અનેકત્રતા ન થાય અને તડ ન પડે

આ પ્રકારે દરેક માત્રિ પોતપોતાની દરજ વિસ્તૃત (ખડોલા) અર્થમાં સમજે અને પૂર જુરસાથી પોતાનું કાર્ય ઉભારી લે તો બારનવંધના હિંદમાં દિવસો પુરી કુંક સમયમાં હિંદ ઉપર મધ્યાત્મ કાલનો અગડગતો પ્રતાપી સુધે પુનઃ પોતાનું સામાજ્ય વર્તારી રહે.

અવિનાશી અરિદંત તું, એક અખંડ અમાન, અજર અમર અજુન-મનું, બધ બંજન બગવાન, એવિ બ્યાધિ ઉપાધિને, દરેક તંત તોદાન, કટાણુ કટાણુ કરો, બધ બંજન બગવાન, નીત પ્રીતિ, નશ્વત, બડી બનિતું બાન, અર્ધ પ્રમદે આપડો, બધ બંજન બગવાન, હર આગ્રસ એટીપણું હર અધ ને અમાન, હર અમણા બારવ તણું, બધ બંજન બગવાન, શ્રીમદ રાજચંદ ! તેમજ—હિંમત.



पुस्तकालय ।



यह बात ज्ञानैः २ लोग मानते जाते हैं कि पुस्तकालय उन्नतिके एक प्रधान कारण है । पुस्तकालयोंके न होनेसे माग्नकी अपोगति बहुत कुछ हो चुकी है । आनन्द भी बहुतमे उन पुस्तकालयोंके अन्द रहनेसे-जिनके मालिक महारक आदि बन बैठे हैं-उन्नतिमें बहुत बाधा पड़ रही हैं । जैन समाजमें एक ऐसे पुस्तकालयकी अत्यंत आवश्यकता है, जहां जैनियोंके संपूर्ण ग्रन्थोंकी मुद्रित या लिखित प्रतियां प्राप्त हो सकें । यह पुस्तकालय किसी ऐसे नगरमें होना चाहिए जो हि भारतके मध्यमें हो और जहां जैनियोंकी अच्छी यस्ती हो । ऐसे पुस्तकालयकी कुछ अंशमें पूर्ति करनेका उद्योग गंगाधर जैनकुमार पुस्तकार्य कर रहा है । अत्यंत बन्हीनताके होनेसे जैसी उन्नति होनी चाहिए थी वैसी यह नहीं कर सका है । किंतु इसके बाद कार्यकर्त्ता और अन्य अनुविद्यार्थियोंको देखने हुए यही कहना होगा कि हमने आशातीत उन्नति कर ली है । इसकी प्रतीति कोरी आलमारीको शोभा ही नहीं बढ़ाती किंतु वे प्रतिभा ६०, ६५ पन्नी भी जाती हैं । अनेक जिन २ विद्वानोंने हमारा निरीक्षण किया है, वे सब ही इसे बेमार प्रशंसित हुए हैं । पुस्तकालयके साथ वाचनालय भी है । इस वर्ष हममें बहुत सुधार हो गया है । आनन्द उसमें २०, २२

समाचारपत्र आते हैं, पढ़नेवालोंकी भी ओसत संख्या प्रति दिवाकी १५, २० है । सबसे बड़ी कमी जो माननीय निरीक्षकोंने इस पुस्तकालय व वाचनालयमें बताई है वह है स्थानकी । जिस कमरेमें वर्तमानमें यह हैं उसमें बहुतसी अनुविद्यार्थी हैं अतः पुस्तकालयके योग्य सर्वथा नहीं है । बड़ी लागतकी धर्मशाला आदि बनानेवाले धर्मात्मा सज्जन क्या इस अत्यंत उपयोगी कार्यकी ओर लक्ष्य नहीं करेंगे ? नहीं, हमें यह आशा नहीं है । किंतु तब यह विश्वास है कि शीघ्र ही कोई माईका लाल धनी धर्मात्मा माई इस शिकायतको दूर कर देगा । और हजार पांचसो रुपए लगाकर एक सुडौल बड़ासा कमरा बनवा देगा या कोई आगेका ही भाई मौकेका बना बनाथा कमरा पुस्तकालयके कामको दे देगा । उक्त प्रार्थनाके सिवाय हम उन विद्यार्थी सज्जनोंका भी वित्तानर्पण करते हैं जो अपनी बचत लक्ष्मीसे जैन ग्रन्थ मोड लेकर बांट कर रहे हैं । हमारी उनसे सविनय प्रार्थना है कि वे ऐसे समयमें इसे न भूलें । पुस्तक प्रकाशकोंसे भी हमारा नम्र निवेदन है कि वे अपनी २ ज्वाई पुस्तकें भेजने रहा करें जिससे सहजमें ही पुस्तकोंकी संख्या बहुत बढ़ी हो जाय । तथा हमारी यह प्रार्थना धर्मात्माओंके कानोंमें पड़ेगी । तथास्तु ।

मोती बटारा,

आगरा ।

मंगीलाल जैन

जो० पंची, जैनकुमार पुस्तकालय



સોજિત્રાની દિગંવર જૈન પંચને સૂચના.

સવિનય જણાવવાનું કે—આપણે ધર્મ-શાસ્ત્રમાં બહુજન પાછળ પડી ગયા છીએ ને તેનું કારણ કંઈ એજ માન્ય થયે છે કે—આપણી પાછળ લગ્યાપગ્યા નેતાર ભટ્ટારકેએ આપણને (આપણા પુદ્ધ વર્ગને) ધર્મસાસ્ત્રનો અભ્યાસ કરના દીધો નહિ, તેમ તેમણે આપણને ધર્મનો ઉપદેશ પણ આપ્યો નહિ, જેથી આપણી ધાર્મિક તેમજ વ્યવહારિક, ત્રિયતિ શોકરપદ થઈ ગઈ છે. હવે જમાનો બદલાયો છે, તો તે આચાર્યોને બાબુપર ચુકી આપણે આપણી જાત મહેનતે પુસ્તકો હાથ માન ગ્રેખનું જોઈએ. તે જ્ઞાનમાં કેટલુંક ઉપરચોરીયુ જ્ઞાન તો આપણને 'દિગંવર જૈન' માસિકદ્વારા પ્રાપ્ત થયું છે, પણ જૈન દર્શનનું પુરેપુરું ગદ્ય-જાણવા માટે આપણને પ્રાચીન આચાર્યોનાં પુસ્તકોનો સ્વાધ્યાય કરવાની જરૂર છે. તેને માટે શુભશતમાં કેટલાક બહારો છે, જેમાંના કેટલાકનો લાભ તો ઘણા જણ થે છે, તેમજ પુસ્તકોની રિયતિ ઠીક છે, પરંતુ એક બંધાર કે જે સોલજી (આપણું મગ વતન) માં હાલમાંથી અર્થાત્ જ્ઞાતિના મંદિરમાં છે કે જેની ચોટી અત્યાર સુધી નાજીના લોહીથી બદારકે કરતા હતા, જેને વીધે તેનાં કાંઈ દર્શન પણ કરી શકું નહિ, જે ઉપરથી તે ગ્રંથોની રચીતિ એવી કહાડી થઈ ગઈ છે કે જે લખતા પણ સમ્યક આવે છે જેમકે જેને અનેક તમ્બથી ઉપાધિ નહતી હોય તેનું કાચ ફક્ત જ્ઞાન થતું નથી તેમજ તે ગ્રંથોને જમાદનું પાખી, જમીનની અદર બીનાય, ઉદરો, કિવઈ ત્રિગેર તરફથી દર હમેશ આધા થતીજ જાય છે, જેનાથી કેટલાક ગ્રંથો નંદ પણ થઈ ગયા છે, જે 'સેરમાના જેનું' છે કે સંમય જ્ઞાતિનાં પુસ્તકોની જ્યારે આ દશા થઈ, તો પછી અરુપત મંદિરની કેવી દશા થાય પુસ્તક વિશે પંચમાં

એવી અથ અદા. ખેસી ગઈ છે કે તેને કોઈને જોવા પણ દેતા નથી. હાખલા વરીકે-૧૯૬૪ ના લગ્ન પ્રસંગે મારતર દીપચંદ્રજીએ લીધે કરવા પ્રયાસ કરેલો, પણ ૨૫-૩૦ ગ્રંથો કાઢી જે તથા બધુની ચેતનશીલી બીજા ગ્રંથો કાઢ્યા નહોતા. કેવો વિચિત્ર પ્રસંગ કે—અંથનું દર્શન કરવાની પણ મનાઈ તો પછી આપણી ઉન્નતિ ક્યાંથી થાય ? અને આપણો યુવાન વર્ગ ધર્મની લાગણીવાળો ક્યાંથી થાય ? જેનું વૃક્ષ રાગવાળું છે તેનું ફળ ક્યાંથી માઈ થાય ? તેમજ વડીયો અથ અદાવાન તો જાળકો ધર્મવાળાં ક્યાંથી હોવા માટે બંધુઓ અને મુખ્યત્વે મંદિરનો વહીવટ કરનારાઓ । નીચેની જાણતોને તમ્બ અમલમાં જો કે—જેથી પુસ્તકોનો જવાબ થાય તે પ્રાચીન સાહિત્ય સચવાઈ રહે, તેની સાથે તમારે માથેથી કોઈક પાપનો જોગો જોઈ જાય ને જાળકો તેમજ સાધારણ જૈનો પણ જૈન દર્શનના જ્ઞાનને લાભ મેળવી શકે.

અ. પુસ્તકોને બંધારમાંથી બહાર કાઢી સાફ કરી લીધે તૈયાર કરવું.

વ. એક લીધે 'દિગંવર જૈન'માં છપાવવું

ને એક મંદિરમાં ચોટાડવું.

ક. પુસ્તકોને કંઈ પણ પદાર્થની આધા ન થાય તેવી જગ્યાએ ગોઠવના (હકત ન હોય તો પાદશાળાવાળાં કમાટોમાં મંદિરના સામેના દોલમાં કે ભ્યાં ગાદી (બદારકની) ગણે છે ત્યાં ગોઠવના જેથી દર્શન-સ્વાધ્યાયનો લાભ મળે)

ટ. હર્ણુ થયેલા ગ્રંથોને શરીયા લખાવવા.

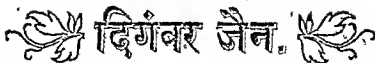
જ. હવેજોગી પુસ્તકોને છપાવી જુનું કિંમતે પ્રમાર કરવો.

ત. લાખજોગી સોરઠમથી પુસ્તકોને વાંચના આપવા.

ઉપરની જાણનો અમલ હાલ તાત્કાલિક થવો જોઈએ અને તોજ આપણી શોખા છે. ઉદ્યમ પણ તેનાથી થશે જે તત્ત્વ જ્ઞાનમાં રાખી, ખામ કરીને આજોગોગી પુસ્તકને જનતા પ્રયાગે અગવડા કોટીશ કરી જોઈએ.

સી. જ્ઞાનિ દિનેશુ—

શ્રી દાણીસા મિત્ર મંડળી-કાળીમા



THE DIGAMBAR JAIN.

नाना कलाभिर्विधैश्च तत्तैः सत्योपदेशैस्तुगवेषणाभिः ।

संबोधयत्यत्रमिदं प्रवर्तताम्, दैगम्बरं जैन समाज-मात्रम् ॥

वर्ष ११ वॉ.

वीर संवत् २४४४. पौष-माघ. विक्रम सं० १९७४.

अंक ३-४.



इस अंकमें अन्यत्र दिये हुए ब्रह्मचारीजीके ले-
खसे पाठकोंको भली-
श्री शिखरजी भांति विदित होगा
और हम पर कि अपने महान् तीर्थ-
संकट। राज श्री सम्मोदशितर-

जीपर हमारे दर्शन-
पूजन होनेकी स्वतंत्रतामें बड़ा भारी संकट
उपस्थित हुआ है। हमारे श्वेतान्तरी भाई-
योंकी चालमानीसे हमें कई वर्षोंसे कई तीर्थों-
पर कष्ट सहन करने पड़ते हैं और वकील
वैरिस्टर्स द्वारा संघर्ष भी बहुत हो रहा है।
आतंक पट्टामें हमारे अगुण उपस्थित हैं
और श्वेतान्तरी अंकेलेको पहाड़ बेचा न जाय
इसकी कोशिश कर रहे हैं। आपसमें मेल
होनेके लिये हमारी तरफसे बहुत कुछ को-
शिश होनेपर भी उसका कुछ भी फल नहीं
हुआ और आखिर कोर्टद्वारा ही हजारों रुपये
खर्च हो रहे हैं और ऐसा खर्च करके हमारे
हकोंकी रक्षा करना हमारा फर्ज ही है। इस

समय इस कार्यके लिये रुपयोंकी बड़ी भारी
आवश्यकता आ उपस्थित हुई है जिसके
लिये हमारी तीर्थक्षेत्र कमेटीकी ओरसे बहुत-
से स्थानोंपर तारद्वारा सूचना दी गई है कि
“ चंदा एकत्र करके भेजिये अन्यथा शि-
खरजीपर हमारे हकोंकी रक्षा नहीं हो सके-
गी ” इसलिये हरएक स्थानके भाइयोंको हम
सूचित करते हैं कि इस हालको सब भाइयों-
को सुनाइये और जितना हो सके उतना
चंदा शिखरजीके लिये एकत्रित करके तीर्थक्षेत्र
कमेटी हीराबाग बम्बईको भिजवाइये। इस
कार्यमें चिल्ल नहीं करना चाहिये।



चार वर्ष हुए सारी जैन कोम तो क्या परंतु

कई महीनोंसे तो सारा

सेठजीका हिंदुस्थान चिन्ता रहा

संकट। है कि बिना जांच

और न्याय हुए नगर-

बंद निये गये जैन समाजसेवरक पं० अर्जु-
नलाल सेठीको बंधन मुक्त किजिये परंतु
हमारी उछ भी सुनाई नहीं होती यह बड़ा
ही आश्चर्य है। हमारी गनपंथमाली प्रांतिक
सभाने इस कार्यके लिये वाईसरोयके पास



डेपुटेशन भेजना निश्चित किया था और उसका मेमोरियल तैयार हुआ था तथा बाबू अजितप्रसादजी, सेठ हीराचंद, अमीचंद, मि. चवरे वकील आदि डेपुटेशनमें जानेके लिये तैयार भी हुए थे परंतु ना० बाईसरोयसे मिलनेकी स्वीकारता ही नहीं मिली। इससे डेपुटेशन योंका यों ही रह गया था। अब अम्बालाकी महिला परिषदमें स्त्रियोंका डेपुटेशन वाइसरोयके पास भेजना निश्चित हुआ है। अब देखते हैं कि वाइसरोय महोदय स्त्रियोंका डेपुटेशन भी स्वीकार करते हैं या नहीं। कैसे भी हो जयपुर राज्य और ब्रिटिश सरकारका फर्ज है कि सेठीजीका न्याय करें या तो उन्हें बंधनमुक्त करके जैनसमाज तो क्या सारे भारतवर्षमें इसके लिये फैली हुई अशान्तिको दूर करें। सेठीजीके कष्ट निवारणार्थ बाबू अजितप्रसादजी (अजिताश्रम, लखनऊ) ने ऑफिस खोल रखी है जिसमें वर्षके लिये रुपयोंकी आवश्यकता रहती है तो भाईयोंका फर्ज है कि सेठीजी और उनके बालबच्चोंके कष्ट निवारणार्थ कुछ न कुछ सहायता लखनऊ भेजते रहें।



आगामी ता० २९-३०-३१ मार्चको इन्दौरमें महत्मा गांधी साहित्य सम्मेलन-धीनीके समापनतिथ्यमें नमं प्रदर्शनी। अष्टम हिन्दी साहित्य सम्मेलन होनेवाला है जिसके स्वागत० कमेटीके अध्यक्ष हमारे दानवीर रा० बा० सेठ हुस्मचंदजी ही हैं। सम्मेलनके साथ २ एक हिन्दी

साहित्य प्रदर्शनी भी होगी जिसमें हिन्दीके पुराने पत्र, प्रसिद्ध साहित्य सेवियों के चित्र, हिन्दी हस्तलिखित और प्रकाशित प्राप्य पुस्तकें, हिन्दी ग्रन्थमालाएँ, शिलालेख, ताम्रपत्र इत्यादि प्रदर्शित किये जावेंगे। ऐसे मौकेपर हिन्दी भाषाके प्राचीन हस्तलिखित और मुद्रित जैन ग्रन्थ तथा चित्रों, शिलालेखादि भी रखने योग्य हैं। हमने भी ६१ पुस्तकें और चित्रादि प्रदर्शनीमें भेजे हैं और हमारे पाठकोंको भी आग्रह करते हैं कि अपने भंडारोंमें हिन्दी भाषाके प्राचीन ग्रन्थादि होवें तो इस प्रदर्शनीमें अवश्य भेज दें। प्रदर्शनीके पूर्ण होने पर सब पुस्तकादि वापिस मिल जायेंगी। पत्र व्यवहारका पता— डा० सरजूप्रसाद रायबहादुर, मंत्री, अष्टम हिन्दी साहित्य सम्मेलन, तुकोगंज, इन्दौर।



श्री सम्मेलन शिखरजी पर जानेके लिये खास करके ईसरी स्टेशनसे ईसरी स्टेशनपर जाया जाता है। अब आवश्यकता। इस स्टेशनपर रेल्वे गाड़ी सिर्फ दो मिनिट

दरहती हैं इससे अनेक यात्रियोंको बहुत कष्ट उठाना पड़ता है जिसको दूर करनेके लिये तीर्थक्षेत्र कमेटीके नाम पर अभी फिरोजपुरकी एक चिट्ठी 'जैनमित्र' में प्रकाशित हुई है जिसमें दर्शाया है कि (१) E. I. R. रेल्वेके एजन्टसे पत्रव्यवहार करके गाड़ीको दस या पांच मिनिट दरहानेका प्रबंध कराना चाहिये (२) ईसरीसे ४-५ माईल पर मैल्गाहीके



रास्तेमें ही रेल्वे लाईन पड़ती है तो वहां ही मधुवनरोड नामक छोटासा स्टेशन होना चाहिये इसके लिये भी E. I. R. Ry. से लिखा पढ़ी करे और (२) मधुवन धर्मशालासे एक मील पर एक छोटासी नदी है जहां पुल होनेकी आवश्यकता है । आशा है कि तीर्थक्षेत्र कमेट्रीके कार्यकर्तागण इसके बारेमें शीघ्र ही रेल्वे कर्मचारियोंसे लिखा पढ़ी करेंगे, यदि प्रयास किया जायगा तो इसमें अवश्य सफलता होगी क्योंकि इसरी स्टेशन पर हमारे हजारों यात्रीगण आते जाते हैं ।



हमारे पाठक दिगंबर मुनि श्री अनंतकीर्तिजी

महाराजसे सुपरिचित हैं ।

मुनि अनंतकीर्ति- क्योंकि आपका चित्र जीका चित्रोप और परिचय भी हम दो बार प्रकट कर चुके

हैं । आपके मोरेनामें रहनेका समाचार हम गतांक्रमें दे चुके थे और वहां आपका केशवोच उत्सव भी होनेवाला था इतनेमें अरुस्मात् ही माघ सुदी ५की रात्रिको ध्यान स्तंभन करते २ अरुस्मात् आपका समाधिपरण हो गया । आपकी आयु सिर्फ ३४ वर्षकी ही थी । आपके स्वर्गवासका हमें इसीलिये दुःख होता है कि आप विशेष आयु भोगते तो हमें आपका दर्शन और उपदेशका अपूर्व लाभ मिलता । मुनिजीके शोक प्रदर्शनार्थ बम्बई, शोलापुर, मोरेना, आगरा, इन्दौर, करहल, बडवाहा आदि अनेक स्थानोंपर समाई हुई थीं और बाजार भी बंद रखकर मंदिरोंमें पूजन किया गया था ।



शिखरजी केस-ता० ११ के तार समाचारसे विदित हुआ है कि पालगंज और नवागंज स्टेट द्वारा शिखरजीका पहाड श्वेतांबरियोंको बेचा न जाय इसके लिये दिगम्बरियोंने इन्जंजसन (मनाईहुकम) मांगा था जिसको पटना हाईकोर्टने गत ता० ८ को खारिज कर दिया है । जिससे दिगम्बरियोंको विशेष कठिनाई-योंका सामना करना पड़ेगा ।

देहलीमें बोर्डिंग और आश्रम-लाला जगन्नाथ जैनी तार द्वारा सूचित करते हैं कि यहां ता० १ मार्चको दरीवाकलांमें जैन बोर्डिंग और ता० १० को पहाड़ी धीरजपर जैन महिलाश्रमकी स्थापना हुई है ।

अम्बालामें महिला परिपद और सेठिजीका प्रस्ताव-महासभाके सायर अम्बालामें गत ता. २५-२६को भारत दि. जैन महिला परिपदका आठवा अधिवेशन देहलीके ओ. रा. व. बाबू सुखनानसिंहजीकी धर्मपत्नी श्री सुशीलादेवीके सभापतित्वमें हुआ था । निममें दो तीन हजार स्थित उपस्थित हुई थीं । यह उत्सव अतीन सफलतापूर्वक हो गया । मंत्र्या चढ जानेसे सभापतिमा व्याख्यान तीन स्थान पर सुनाया गया था । सभापति, श्रीः मगनबाई, पं. बंछुबाई, पं. रामदेवीबाई आदि के महत्पूर्ण व्याख्यान होकर कुछ छह प्रस्ताव



पास हुए जिसमें उल्लेख योग्य प्रस्ताव पं. अर्जुनलाल सेठीजीके बारेमें निम्नलिखित हुआ है । —“श्रीमान् पं. अर्जुनलाल सेठी बी. ए. जैन जातिके अद्वितीय, अनुभवी व स्वार्थ त्यागी विद्वान् हैं । सार्वजनिक विद्या प्रचार उनके जीवनका उद्देश्य था और है और उनकी यह उत्कट इच्छा है कि, जैन छी-समान विद्वान् बनें, उसमें एक भी बालिका ऐसी न रहे जो अशिक्षित हो; और हमारेमें सम्यक्त्व के नाश करनेवाली कुप्रथाएँ हैं वे नष्ट होकर हम धर्मपरायण बनें। इस परिपदको अत्यंत खेद है कि उनको किसी संदेहवश जयपुर सरकारने ४ वर्षसे नजरकैद कर रक्खा है और बहुत कुछ प्रार्थनाएँ जैन समाजके करने पर भी उन्हें मुक्त नहीं किया । जैन समाज अपने एक स्वार्थ त्यागी पंडितके सद्गुणदेशसे, व सत्कार्यसे वंचित होकर कष्टका अनुभव कर रहा है अतः यह परिपद प्रस्ताव करती है कि जैन समाज की महिलाओंका एक मंडल (डेपुटेशन) नामदार बाईसरायकी सेवामें उपस्थित होकर सेठीजीको मुक्त करानेकी प्रार्थना करे । परिपद यह भी प्रस्ताव करती है कि परिपदकी ओरसे सेठीजीको मुक्त करनेके लिये एक तार भी दिया जाय।” परिपदमें श्राविकाश्रम बन्धुईके लिये २०००) का चंदा भी हुआ था ।

पंडितका विद्योग—इसके पं० पुत्र-लालजीका मत ता. ५ को जैन समाजसे वि-योग हो गया । आप अच्छे पंडित थे । ब्र० कुंजर दिग्विजयसिंहजीकी आर्यसमाजीसे

जैनी होनेका सौभाग्य आपके सहवाससे ही प्राप्त हुआ था ।

रावजी सखाराम दोशी, मंत्री, सोलापुर।
अम्बालामें महासभा—अपनी महा-सभाका अधिवेशन अवकीवार अम्बालामें प्र-तिष्ठोत्सवके समय हो गया । संभापति हुए थे न्यायदिवाकर ! पंडित पन्नालालजी, पण्ड-मजेकी बात यह हुई की संभापतिजीका व्या-ख्यान न तो आदिमें हुआ न अन्तमें !!! न्यायदिवाकरजीका तो विचार नहीं था परंतु सबकी अनुमतिसे सेठीजीका ठहराव तो आपको रखना ही पड़ा और पास भी हो गया और देवगढ़के उद्धारका और जैन शास्त्रोंकी सभी शाओंकी एक उत्तरदात्री कमेटीका नियुक्त होना यह दो प्रस्ताव भी महत्वके हुए हैं ।

कुशलगढ़में—सेठ धूलचंद धनराजजीके प्रयाससे सद्गुण-प्रसारक मंडल स्थापित हुआ है जिसके प्रयत्नसे यहां कन्याविक्रय फरज्यात बंद करना, बहारगामकी बरात आई हो और उसीके ग्राममें भी कन्याविक्रय होता हो तो उनसे २५१) मंडलमें लेता, लयोंके फड़, रीतिरिवाजमें बंद या कम करना, व कन्यामें सोड़ आ जावे, नष्टक मालूम हो तो मुगाई छोड़नेका पंचको हक देना आदि ११ प्रस्ताव हुए हैं ।

भटारक श्री गुणचंद्रजी—सोजिवा गां लगभग ७० वर्षकी वृद्ध वयें स्वर्गवास यया छे. गुनरातना जैनोनो उदार थाय व कोइपण कार्य भटारकनी कनी गया होय व गंगाधु नया.



आगरा में ता० १५ से १९ फरवरी तक रथोत्सव हो गया। कई व्याख्यान सभाएं भी हुई थीं। जैसवाल सभाका अधिवेशन भी हुआ था और 'जैसवाल जैन' नामक मासिक शीघ्र ही आगरासे निकालनेका प्रबंध हुआ है।

शास्त्रार्थका चेलेंज—आजकल देवचन्द के बाबू सूरजभानजी वकील अपने आदिपूराण आदि धर्मग्रन्थोंकी मनमानी और असत्य समालोचना कर रहे हैं जिससे उत्तेजित होकर न्यायालंकार वादी भू केशरी पं. मवलनलालजी शास्त्री (प्र० अध्यापक ऋ० ब्रह्मचर्याश्रम) ने वकील साहबको चेलेंज दिया है कि इसके शास्त्रार्थके लिये तैयार हो जाईए। शास्त्रार्थके लिये बम्बई, इन्दौर, गुरैना और देहली इनमेंसे कोई भी स्थान उपयुक्त होगा।

देखें वकील साहब शास्त्रार्थके लिये तैयार होते हैं या नहीं या घर बैठे ही मनमानी कलम चलाया करना पसंद करते हैं।

हार्डस्कूल—सोलापुरमें हरिभाई देवकण्ठवालोंने २७०००) लगाकर सार्वजनिक हार्डस्कूल स्थापित करनेके लिये प्रबंध किया है। इसका प्रबंध जैनोंने हस्तमें होना चाहिये और इसमें जैन धर्मका शिक्षण देनेका प्रबंध भी होना आवश्यक है।

कुंयलगिरि—क्षेत्रका मंज्य पोप मुदी १५ को सेठ हीराचंद नेमचंद दोशीके म्भापतिचमें सकलैता पूर्वक हो गया। कुम्भपूजा जैन विद्यालयको करीब ७००)की सहायता हुई प्राप्त थी। विद्यालयके छात्रगण आजकल

अधिष्ठाता व. पार्थसारथीजी सहित शिक्षकजीकी यात्रार्थ निकले हैं। रास्तेमें पड़ते हुए बहुतसे शहरों और ग्रामोंमें विद्यालयका भ्रमण होगा।

नामधारी भट्टारकका निषेध—लातूर (वहाड)की गादी पर बिना सबकी सम्मति लिये एक बालकको भट्टारक बना दिया है जिसके निषेध प्रदर्शनार्थ कुंयलगिरि के मेलेपर बड़ी भारी सभा रा. नेमीनाथ अनंतराज पांगलके सभापतित्वमें हुई थी। गिममें इस बालक भट्टारकको किसी तरहसे न माननेके लिये तात्या नेमीनाथ पांगल, मि० रणदिवे आदिके व्याख्यान होकर इस भट्टारकका खूब ही निषेध किया गया और उसपर वहां उपस्थित ६०-६५ गांवके मुखियाओंके हस्ताक्षर भी हो गये। गुजरातमें बिना सबकी संमति लिये इस तरह दो भट्टारक बैठ गये हैं जिसका प्रचल विरोध न होना गुजरातके भाईओंकी अंधश्रद्धा और कमजोरी नहीं तो और क्या है?

कुतराओनी अपील—सुरतमां ता० १२मी फेब्रुआरीए श्री एनी क्रिमेंट पवारी हत्ती त्वारे सूरैया ब्रह्मसे जैनी तरफथी विसंयत्नी मोरर थोभात्री एक कुतरा पासे "सुरतना कुतराओनी अपील" नाम हेन्डवीलनो एक तख्तो भेट अपाव्यो हतो जेवां लखेले हतुं के सुरतमां अमारो घोळे दिवसे गोली बहारथी कनरयाण कर्नामां आवेले, माटे कायदानी हदमां रही अमारं रक्षण करो झोरे.

चिवाड और दान-२५० मूलबन्दगी.



स्वा० रावलपिन्डीके पुत्र दीवानचन्द्र फोटोग्राफरका विवाह माहावदी ५ को जैनविधिसे होगया जिसके उपलक्षमें भारत जैन महामंडल, स्वा० जैन कान्फरेन्स, देहली अनायाश्रम, ब्रह्मचर्याश्रम और कई पत्रोंको ४२॥) सहायतार्थ दिये गये जिसमें दिगंबर जैनको भी २) प्राप्त हुए हैं।

प्रतिष्ठा—श्री चम्पापुरी तीर्थमें फाल्गुन शुक्ल ९ को पंचकल्याणक प्रतिष्ठोत्सव सोलापुर निवासी सेठ हीराचंद अमीचंद शाहकी ओरसे होगा।

सूरतमें श्रीमती विसेंट और जैनोका स्वागत।

भारतहितैषी माननीय श्रीमती एनी विसेंट गत ता० १२ फरवरीको एक दिनके लिये सूरत पधारी थीं तब आपका नगरवासियोंकी तर्फसे बहुत ही अच्छा सत्कार हुआ था और दुपहरको आपका एक जलूस सारे शहरमें फिराया गया था तब बहुतसे स्थानोंपर आपकी मोटर ठहराकर द्वारतोर अर्पण किये गये थे जिसमें जैनोकी ओरसे तो चंदावाड़ीमें ऐसा अपूर्व सत्कार किया गया था कि कहीं भी ऐसा सत्कार नहीं हो सका था। चंदावाड़ीके ओटको खूब सजाकर टेबल कुर्सीकी बैठक बनाई गई थी और रास्तेपर भी एक बोर्ड लगाया था जिसपर लिखा था कि—

'वेलेओनी जेलमा ५६ दिवसना अयवमयुं पागुं करावनार—माना एनी विसेंट,

विना न्याये साडा व्रण वर्ष ययां जेलमां पडेला जैन पं० अर्जुनलाल सेठी—
ने बंधन मुक्त करावो."

यहां जनसमूह भी ४००—५०० इकट्ठा हो गया था। श्रीमतीजीकी मोटर शामकी करीब साढ़े पांच बजे आ पहुंची थी आते ही करतल ध्यानियां गूंज उठीं और उनके सहयोगियोंने तो कहा कि श्रीमतीजी नीचे नहीं उतरेंगी यहां ही जो कुछ देना हो दे दीजिये अन्यथा मोटर चला दी जायगी आदि। यह बात जानकर श्रीमतीजी तुरंत ही स्वयं उठ कर मोटरका दरवाजा खोलने लगी और नीचे उतर कर चंदावाड़ीमें पधारीं जिस समय लोगोंका उत्साह अर्धनर्णनीय था। आपका स्वागत करके मूलचन्द्र किसनदास कापड़ियाने समयके अभावसे सन्मानपत्रमेसे सेठीजीवाला हाल १६ कर सुनाया और आपको रेशमी रुमाल पर नरी और रेशमकी कारीगिरीका छपा हुआ मानपत्र सूरतकी अपूर्व बनावटके चंदनके वाकससे रख कर अर्पण किया और द्वारतोरसे सन्मान किया तथा 'दिगम्बर जैन' का खास अंक भी भेंट किया इतनेमें यहाँके वी० एन० म्हेता फोटोग्राफरने एक फोटोग्रुप भी खींच लिया जो अतीव आकर्षणीय और संपद करने योग्य होनेसे हमने इसी अंकमें अन्यत्र प्रकट किया है। मानपत्रकी अंग्रेजी नकल और उत्तरा अनुवाद निम्नलिखित है—

An address from the Jains of Surat To,



MRS ANNIE BEASANT,

Mother of India; President,
Home Rule League for India;
President, Theosophical Society;
President, 32nd National Congress etc., etc.,

Most revered Madam,

1. You are the true builder of India's destiny in that you have awoken India from her age-worn lethargy at the great sacrifice of bodily health and peace of mind and that you only have paved the way to win Home Rule for India under the benign British flag by cultivating public opinion to the core of the people's heart. India shall ever remain grateful to you and your name which has been a homeward to the people's minds shall ever be cherished by them.

2. The well known Jain Pandit Arjunlalji Shethi B. A. who was incarcerated in prison by the Jaipur State without any trial or justice more than 3 long years ago was suddenly brought on 20th November last to Vellore, Madras under British jurisdiction. It was you who nobly raised her voice on the Congress Platform regarding the miserable imprisonment of Shethiji and consequently made all arrangements for Shethiji's wife and children to see their near and dear one

at Vellore by personal interview with the Viceroy and made the venerable Pandit give up his fast 56 days when convenience for an idol was made in his room at Vellore Jail. The Jains of India are ever obliged to you forever by this your life giving deed for they know fully well that nobody in them could have performed this difficult task.

3 You are well aware with Sethiji's case and so we need not say anything more about this. Suffice it to say that you will make all efforts to get him released soon, taking his question over to the Parliament if need be.

4 We cannot find words to express our feelings of love, respect and esteem for you. You are a light in the dark desert of modern India. India can never be more proud of you.

5. Finally we wish that you may live long to see India win Home Rule under British flag, may you ever be happy. May all your efforts ever be crowned with success. Victory to thee, Builder and Ruler of People's minds. May thy name ever rise in the sky from summits of the Himalaya. Hoping to be excused for the trouble and thanking you in anticipation.

Your most obedient servant,



bandawadi,
SURAT
12-2-1918

Moolchand Kas-
andas Kapadia.
(For the Jains of Surat.)

सुरत-जैन समाजकी ओरसे मानपत्र ।

भारतमाता विदुषी एनीबेसेन्ट-प्रमुखा, भा-
रतवर्षीय स्वराज्यसंघ, अध्यक्ष, थियोसोफिकल
सोसायटी, सभापति, ३३ वीं राष्ट्रीय कांग्रेस
इत्यादि की सेवामें ।

परमपूज्या—

(१) आपने पवित्र भारतवर्षकी चिरकालकी
गाढ़ निद्रामेंसे जागृत कर शारीरिक आरोग्य
और चित्तशान्तिके अथाह परिश्रमसे इस महान्
देशके भविष्य बांधनेमें महान् भाग लिया है ।
और अंग्रेज राज्यकी छत्र छायामें स्वराज्य
प्राप्तिके अर्थ जनसमूहकी नसों नसमें स्वरा-
ज्यकी भावना फैलाकर स्वराज्य प्राप्तिका मार्ग
खुल्ला किया है । इसलिये यह देश आपका
सदैव आभारी रहेगा, और आपका नाम जो
सर्वमान्य हो पड़ा है सदोदित चिरस्मरणीय
रहेगा ।

(१) सुप्रसिद्ध पं. अर्जुनलालजी
सेठी बी० ए० जिन्हें लगभग ३ वर्षसे ज्यादा
हुए विना न्याय विना जांच किए न्यायपूर्ण
नज़रबंद किये गये और वे गत ता.
२० नवम्बरको भारत सरकारकी देखरेखमें
बेल्लोर (मद्रास भेजे गये । पंडितजीको बेल्लो-
रके कारागृहमें विविध प्रकारकी जो जो विप-
त्तियाँ झेलनी पड़ीं उसके लिये आपने भारतीय
कांग्रेसमें प्रभुताकी हैसियतसे प्रहार उठाई,
इतना ही नहीं किन्तु माननीय वाइसरायसे

स्वतः मिलकर बेल्लोरके कारागृहमें प्रतिमाका
प्रबंध कराके सेठीजीको ९६ दिनोंके उपवा-
ससे मुक्त करा जीवन दान दिया । सेठीजीसे
पत्नी और बालबच्चोंको मिलनेका अवसर
प्राप्त कराना भी आप ही की कृपाका फल
है । समस्त भारतवर्षके जैनी आपके इस पवित्र
कार्यके लिये चिर ऋणी रहेंगे ।

(३) सेठीजीके केससे आप भलीभांति परि-
चित हैं, अतएव इस विषयमें हमें विशेष
कहनेकी आवश्यकता नहीं । मात्र इतना ही
जता देना बस होगा कि आप आवश्यकता
पड़ने पर पार्लामेंट तक भी यह बात लेनाकर
सेठीजीको शीघ्र छुड़ावेंगी ऐसी हम आशा
रखते हैं ।

(४) आपके प्रति हमारी स्नेह, मान,
और पूज्य भक्ति प्रकट करनेको हमारे पास
पूरे शब्द नहीं । आधुनिक भारतवर्षकी अंध-
कारमय रात्रिमें आप दीपक समान हैं ।
आपके लिये यह देश जितना अभिमान करे
उतना छोड़ा है ।

(५) आखिरमें हमारी यह भावना है कि
ब्रिटिश छत्र तले भारतवर्षको स्वराज्य भोगते
हुए देखनेको आप दीर्घायु हों । आप सदा
सुखी रहें और अपने देशकार्यमें आपको
विजय प्राप्त हो, और अचल कीर्ति सुख
आपको सदैव मिलता रहे ।

मैं हूँ आपका वरण सेवक—

चंद्रानादी सुरत. { मूलचंद किमनदास
ता. १२-२-१८ { कापडिया ।
(सुरतके जैनोंकी ओरसे)



सारे भारतमें सुविख्यात और भारतहितैषी-श्रीमती एनी बेसेंट
 ता० १२-२-१८ को 'सुरत' पवारी थी तब जैनोकी ओरसे; लडावाडीके ओट पर
 भानुपन्न दिया गया था उस समयका दृश्य ।
 (मूलचन्द किसनदासजी कापड़िया मानपत्र सुना रहे हैं और श्रीमतीजी एनी बेसेंट सुन रही हैं)



जैन मत की प्राचीनता ।

— ❦ ❦ ❦ —

(लेखक—ज्योतिस्वरूप जैनी, नजफगढ़)

धम्मपद नामक पुस्तक की भूमिका में लिखा है कि—

गौतम बुद्ध, बौद्ध धर्म का चलनेवाला सत् ईसवीसे ५५७ वर्ष पहिले क्षत्रिय राजा शुद्धोदन के यहाँ कपिल वस्तु में पैदा हुआ था जो कि रोहिणी नदी के किनारे बनारस से १०० मील उत्तर की ओर है । वह बचपन से ही दयालु और बुद्धिमान् था । एक दिन सांसारिक विषय भोगों से विरक्त हो मोह त्याग कर उसने वैराग्य धारण कर लिया, और देश देशान्तरों में भ्रमण कर अपने सत् उपदेश द्वारा सहस्रों मनुष्यों को सच्चे धर्म का रास्ता बतला कर यह शिक्षा दी कि “मोक्ष” न तो शरीर को कष्ट देने से मिलती है और न सांसारिक भोगों में फँसे रहने से । इस मोक्ष सुख की प्राप्ति होने का हक ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र इन चारों वर्णों को है । प्राणी मात्र इस मोक्षपदवी को प्राप्त हो सकता है ।

वह समय ऐसा अंधकार का था कि लोग अपने सच्चे धर्म को छोड़ कर यज्ञादिक क्रिया, शारीरिक दुःख इत्यादि बातों को सच्चा श्रद्धा न कर धर्म मानने लगे थे । बुद्ध देव ने बनारस से ४५ वर्ष तक लगातार सारे मुक्तकों में भ्रमण कर दिया । धर्म का ऐसा डंका बजाया कि निसर्क उपदेश से राजा महाराजाओं ने दिल से वह शिक्षा कबूल की, और लाखों मनुष्य सच्चे धर्म पर चढ़ने लगे । इस प्रकार बुद्ध देव ने तमाम

भारत वर्ष में यह बात प्रसिद्ध कर दी कि सर्वोत्कृष्ट “दया धर्म” ही प्राणी मात्र का उद्धार करने वाला है । अब हम अपने पाठकों को यह बतलावेंगे कि बौद्ध धर्म और जैन धर्म के सिद्धान्तों में क्या अंतर है ? कितने ही विद्वानों ने इस प्राचीन जैन मत को बौद्ध मत की एक शाखा लिखा है यह बात काहें तर्क सत्य है । जो लोग भारत वर्ष के प्राचीन इतिहास से अभिज्ञ हैं उनको उपर्युक्त कथन, अर्थात् जैन मत बौद्ध मत की शाखा है यह लिखना मिथ्या प्रतीत होगा । ? अब हम बौद्ध ग्रन्थों का अवलोकन करते हैं तो यही प्रतीत होता है कि इस मत का मूल सिद्धान्त ‘दया’ है और कितने ही विषय जैन मत से निवृत्त संबन्ध रखते हैं । यथा—गुक्ति, पुनर्जन्म, प्रतिमा-पूजन, ईश्वर, कर्म किलासफी, गुरु इत्यादि । उपरोक्त विषयों में कुछ २ अंतर है । गुरु के लक्षण जो कि जैनाचार्यों ने वर्णन किये हैं उनमें से कुछ गुणों को छोड़ कर कितने ही गुण उनके साधु पालन करने हैं, उन साधुओं को श्रमण कह कर पुकारते हैं । २—अब बौद्ध के समय का निर्माण जैन शास्त्रों से इस प्रकार मिलता है । धर्म परीक्षा श्री स्वामी अमिताभ-त्याचार्य कृपे से जो कि संवत् १०७० में बनाई गई है उसमें लिखा है कि पार्श्वनाथ के चले मौडिलायन ने महावीर स्वामी के साथ बैर रखने के कारण बौद्ध मत चलाया । उसने शुद्धोदन पुत्र, बुद्ध को परमात्मा समझा यह सब काल-दोष के कारण हुआ । यथा—

स्थः श्री वीरनाथस्य, तपस्वीमौडिलायनः ।
शिष्यः श्री पार्श्वनाथस्य, विद्ध्ये बुद्धदीनम् ॥ २ ॥



शुद्धोदनसुतं बुद्धं, परमात्मानमवब्रीत् ।
 प्राणिनः कुर्वते किं न, कोपवैरिपराजिताः ॥२॥
 अर्थात्—पार्श्वनाथ भगवान्का शिष्य एक मौलि-
 लायन नाम तपस्वी था । उसने महावीरस्वामीसे
 विगड़ कर बौद्धमतको प्रकट किया उसने शुद्धोदन
 राजाके पुत्रको बुद्ध परमात्म मान लिया सो डीक
 है । कोउरूप बैरीसे पराजित होकर संसारी
 जीव क्या क्या नहीं कर सकते ? अर्थात्
 सब कुछ कर डालते हैं । उपरोक्त भूमिकामें
 भी गौतमबुद्ध सन् ईसासे ५५७ वर्ष पहले
 लिखा है । और अब संवत् ईसा १९१८
 वर्त्तमान है इस हिसाबसे २४७५ वर्ष व्यतीत
 हुये उस समय बौद्धका जन्म हुआ था, और
 महावीरस्वामीको निर्वाण गये २४४४ वर्ष
 हुये । इससे प्रत्यक्ष यह सिद्ध होता है कि
 बौद्धका जन्म महावीरस्वामीके समयमें हुआ
 था इसमें कुछ विशेष अंतर नहीं प्रतीत होता ।
 हंटर (Hunter) साहब तथा और भी कि-
 तने ही विद्वान् बुद्धको महावीर स्वामीका
 चेला बतलाते हैं उन्होंने इन दोनों (गौतम-
 बुद्ध और गौतम इन्द्रभूति) को एक समझ
 लिया, चूंकि गौतम इन्द्रभूति महावीर स्वा-
 मीका शिष्य था इस कारण उन्होंने गौतम-
 बुद्धको भी महावीरका चेला समझ लिया ।
 हंटर साहिबका यह कहना कि बुद्ध महावीर
 स्वामीका शिष्य था, धर्मपरीक्षा ग्रंथसे मिलाया
 जाय तो सत्य प्रतीत होता है । यही बात
 ग्रंथोंसे भी मिलती है कि बुद्ध और महा-
 वीर एक ही समयमें हुये परन्तु बुद्धका जन्म
 महावीर स्वामीसे ४२ वर्ष पीछे हुआ । धर्म-

परीक्षाके सिवाय अब हम और जैन शास्त्रों-
 को देखते हैं तो यही समय बौद्धका मिलता
 है । दर्शनसार ग्रंथ जो कि ९९० में देवनाग्नि
 आचार्यने उज्जैनमें रचा था—लिखा है कि
 पार्श्वनाथके तीर्थमें बुद्धकीर्त्ति नामक साधु शास्त्र-
 वेत्ता और पिहिताश्रवका शिष्य था । पार्श्व-
 नाथके समयमें सरयू नदीके तटपर पिहिताश्रव
 नामा मुनिका शिष्य बुद्धकीर्त्ति जिसका
 नाम था, तपस्या कर रहा था । उस
 नदीके प्रवाहमें बहुतसे मरे हुये मच्छ
 बहते २ काठे ऊपर आ लगे । उनको देख
 कर बुद्धकीर्त्तिने अपने मनमें ऐसा निश्चय
 किया कि मरी हुई मछलियोंके खानेमें कुछ
 दोष नहीं है । ऐसा विचार करके अंगीकार
 की हुई प्रव्रज्जाव्रत छोड़ धर्मसे भ्रष्ट होकर
 मांस भक्षण किया । और लोगोंको यह उप-
 देश दिया कि मांसमें जीव नहीं हैं । इस-
 कारण इसके खानेमें भी पाप नहीं है ।
 इस प्रकारको प्रव्रज्जाव्रत छोड़कर उसने बौद्ध मत
 चलाया और यह भी कथन किया कि सर्व
 पदार्थ क्षणिक हैं, इस कारण पुण्य पापका
 कर्त्ता और भोक्ता और है, ऐसा कथन किया ।
 इस प्रमाणको अनेक पंडित स्वीकार करते हैं
 और कहते हैं कि बुद्ध वास्तवमें जैन साधु था,
 जिसने ज्ञान भ्रष्ट होकर मांसकी प्रमंशा की और
 रत्नांबर (लाल वस्त्र) पहनकर अपना मत चलाया ।
 स्वामी आत्माराम “अज्ञानतिमिरभास्वर”
 नामकी पुस्तकमें उपरोक्त कथाका निम्न
 श्लोक द्वारा प्रमाण देते हैं ।
 सिरिपासणाहतिर्यं, सरउत्तीरे पलासणदरयं ।



पिहिआसवस्ससीहे, महालुद्धोबुद्धकीत्तिमुणी । १ । प्राचीन जैन मतको बौद्ध मतसे मिलता जुलता
 तिमिपूरणासणेया, अहिगयपन्वज्जावओपरमभट्ठे । देखकर जैनमतको बौद्धमतकी शाखा तथा
 रत्तं वरं धरित्तं, पवट्ठियं तेण एयत्तं ॥ २ ॥ अन्य मतसे निकला हुआ निरूपण किया है
 मंसस्सणत्थिजीवो, जहा फलेदहियदुद्धसकराये । यह कहना कहाँ तक सत्य है । कितने ही
 तत्त्वांतहि मुणित्ता, भस्संतोणत्थिपाविट्ठो ॥ ३ ॥ विद्वान् तो चार्वाक मतके साथ मिला हुआ
 इत्यादि श्लोकोंसे बुद्धकीर्त्ति पिहिताश्रवका चेला सिद्ध होता है, और पिहिताश्रव पार्श्व-
 नाथके तीर्थमें हुआ । स्वामी आत्मारामजी कबलागच्छकी पट्टावलीका पता स्वामी
 पार्श्वनाथसे लेकर निम्न लिखित बतलाते हैं । श्री पार्श्वनाथ, श्री शुभदत्त गणधर; श्री
 हरिदत्तजी, श्री आर्यसमुद्र; श्रीस्वामी प्रभसूर्य, श्रीकेशी स्वामी; फिर यह भी बतलाते हैं
 कि पिहिताश्रव स्वामी प्रभसूर्यके साधुओंमें-
 से एक था । उत्तराध्ययन सूत्र, और दूसरे
 श्वेतान्वरीय जैन ग्रन्थोंसे मालूम होता है कि
 केशी पार्श्वनाथकी मंडलीमेंसे था । और
 महावीरस्वामीके समयमें विद्यमान था; चूंकि
 बुद्धकीर्त्ति पिहिताश्रवका चेला था ! और
 पिहिताश्रव प्रभस्वामीका शिष्य था । इसकारण
 बुद्धकीर्त्ति महावीर स्वामीके समयमें हुआ
 होगा । इन दोनों जैन ग्रन्थोंसे तथा बौद्ध
 ग्रन्थोंसे भी यही प्रकट होता है कि बौद्ध
 महावीर ही के समयमें हुआ । अब मैं अपने
 जातिके विद्वज्जनोंसे प्रार्थना करता हूँ कि
 नूतन ग्रन्थोंसे इसका समय निर्णय करें ताकि
 नूतन अंग्रेज विद्वान् यथा बुहलर (Buhler),
 जैकोबी (Janobi) और विल्सन (Wilson),
 बार्थ (Barth), मैक्स मूलर (Prof
 Maxmuller) इत्यादि जिन्होंने कि इस
 प्राचीन जैन मतको बौद्ध मतसे मिलता जुलता
 देखा है । उनको यथार्थ निर्णय
 करनेके लिये जैन ग्रन्थ नहीं प्राप्त हुये । इसी
 कारण उन्होंने जैन धर्मको अन्य मतसे निकला
 हुआ लिखा है । भानुगण ! इस जैन धर्मके
 विषयमें प्रसिद्ध विद्वान् प्रोफेसर मैक्स मूलर
 (Prof. Maxmuller) ने, “ जैन धर्मपर
 व्याख्यान ” शीर्षक पुस्तकमें जो अपनी राय
 प्रकाशित है उसको मैं यहांपर पाठकोंके अ-
 वलोकनार्थ उद्धृत करता हूँ । सन् १८९९ ई. में
 जब कि उनकी अवस्था ७६ वर्षकी थी, लिखते
 हैं कि मेरी अवस्था इस समय ७६ वर्षकी है ।
 मुझे अफसोस है कि मेरे लिये इस समय
 इतना बक्त नहीं है जो कि मैं इस विषयमें
 सविस्तर वर्णन कर सकूँ परन्तु कुछ थोड़ासा
 मैं आपके सामने वर्णन करता हूँ उससे सहजमें
 ही यह जान सकते हैं कि लोगोंको पुराने
 भारतवर्षका कैसा मिथ्याहाल मालूम हुआ
 है । प्राचीन भारतवर्षमें एक ही मन फिलो-
 सफी (Philosophy) नहीं थी, बल्कि अनेक मत
 और अनेक प्रकारकी फिलोसफी थी । जिनकी
 संख्या ३६३ या इससे भी अधिक थी । ठीक
 २ संख्या तो कौन बनला सकता है ? ऐसी
 दशमें कौन कह सकता है कि जैनमत



बौद्धमतकी शाखा, तथा ब्राह्मण मतसे निकला हुआ है। और यह भी किस तरह कह सकते हैं कि जैनियोंने कपिल, कणाद, पतंजली, गौतम, व अन्य महात्माओंकी नकल की है। यह कथन उक्त महाशयने ७६ वर्षकी अवस्थामें किया था। शोक है कि यह महा विद्वान् जैन मतको नहीं जान सके, उनकी सारी, उम्र वैदिक और बौद्ध मतके प्रकट करनेमें व्यतीत हुई। इस जैन मतके पढ़नेके लिये समय न मिल सका। इस महा-विद्वान्ने एक स्थान पर यह भी लिखा है कि जितना २ अधिक मैंने दर्शनोंका अध्ययन किया उतना ही अधिक विज्ञानवेत्ता विद्वानोंकी सचाईका मुझे विश्वास हुआ कि गृहदर्शनोंमें पारस्परिक भेद होनेके पूर्वकालमें जातीय वा प्रिय तत्त्वज्ञानकी फिलासफी (Philosophy) सामान्य पूंजी थी अर्थात् तत्त्वज्ञान संबंधी विचार तथा मापाका भूतकालमें एक मानसरोवर था जिसमें प्रत्येक ज्ञानवान पुरुष अपने मनोरथ सफल कर सकता था। इनके सिवाय बुहलर (Buhler) और जैकोबी (Jacobi) इन दो विद्वानोंने बौद्धमतके ग्रंथोंको देखकर पीछे यह सिद्ध कर दिखाया है कि जैन मत बौद्ध मतकी शाखा नहीं है। उन ग्रंथोंमें यह लिखा है कि यह निर्ग्रन्थोंका मत है जो कि बुद्धसे भी पहले मौजूद था। बौद्धग्रंथोंमें महावीर स्वामीको केवल निर्ग्रन्थोंकी सुनिया लिखा है। यह नहीं लिखा कि महावीर निर्ग्रन्थ मतके चलने वाले थे। इस प्रकार बौद्ध ग्रन्थोंसे तथा प्राथमिक

विद्वानोंकी खोजसे यह निर्विवाद सिद्ध हो चुका है कि जैन मत, महावीर स्वामीसे भी पहलेका था। और इस मतके चलनेवाले ऋषभदेव थे। इस बातके अनेक प्रमाण वैदिक ग्रन्थोंमें भी मौजूद हैं। इस समीचीनताको सिद्ध करनेवाले प्रमाण, वैदिक ग्रंथोंसे किसी समय फिर मैं पाठकोंकी सेवामें अर्पण करूंगा। जिन महाशयोंका यह श्रद्धान है कि बौद्धमत, जैनमतसे पूर्वका है या जैनमत इस बौद्धमतकी एक शाखा है वे महाशय इस भ्रम कल्पनाके उपरोक्त प्रमाणोंसे अपना भ्रम निवृत्ति कर सकते हैं। यह अल्प लेख मैंने पुस्तकोंसे सर्व साधारण जनताके लाभार्थ लिखा है। मैं आशा करता हूँ कि विद्वज्जन इसे पढ़कर विचार करेंगे और इस प्राचीनताको अन्य दर्शनोंसे स्वयं अनुभव करके स्वतः विचारोंको जैन समाचारपत्रोंद्वारा प्रसार करेंगे। उन्नतिपथप्रदर्शक अनुभवी महा-नुमाओंको इस ओर ध्यान देना परमावश्यक है। इत्यलम्।

आध !

अरे ! शिर भार, धर्मो अथवार;
 युवानीना भडा भडभां (२) अरे !
 'पडे उ-हगी,' सभयचर्ता;
 नीदागी जे—युवानीभां (२) जरे.
 जेधे जेधु' पाणपथ, युवानी भडभांर नय-
 नरा जेउभां आगरे, धर्म नदि सभयनय-
 द्यु नगी, पिय तागी, अरी देई आधुने;
 अरे पियार, सारासार, डिनारे येथरो तो नाय. अरे
 स्नेहयोगी.



सेटीजीका कष्ट ।

जयपुर जेलसे छुटकर सेटीजी वेडोर फेंक दिये गये और उनका परिवार उनके साथ रखा गया, परन्तु नीम मीठा नहीं हुआ । अधिकारियोंकी चोटोंसे सेटीजीका छुटकारा नहीं हो सका । बलबलते तेलसे निकलकर यदि सेटीजी अग्निमें गिरे तो लाभ ही क्या हुआ । धर्मसेवीका अपराध किसीने आज तक सुँह खोलकर न बताया । धृष्टता यहां तक बढ़ी कि, एक अहिंसाधर्म पालरुके कोमल हाथोंमें लोहेकी बेड़ीयां तक पहनायी गयीं । विद्वान्को चोर डाकूकी तरह अपना जीवन बिताना पड़ा । जिसने अपने जीवनमें कभी किसीका अहित नहीं किया, आज वह भी जेलमें धांसा गया । क्या कहा जाय ? बढ़ी विचित्र अवस्था है । निर्धन और निस्सहायकी मुनायी न तो शासकोंमें और न प्रजामें ही है । जैनजातिपर उदासीनताका पर्दा पड़ा हुआ है । वह कभी चेतगी भी नहीं क्योंकि, वह चाहती नहीं कि, धनके सिवा जातिको और कोई उत्तम वस्तु मिले । अभाग सेटीजीके साथ उनकी अबला पत्नी और चार मासूम बच्चोंको भी पिस जाना पड़ा । बेचारोंके दिन कैसे गजते होंगे यह वही विचार, जिसने कालकोठरीकी हवा खायी हो । अपरिचित स्थानमें मन्त्रोंकी शिक्तर बनते हुए, खांसी बुखारका सामना करते हुए, एक बन्द मकानमें जीवन बिताना एक परोपकारी सज्जनकी धर्म-पत्नी और बच्चोंके माथमें बढ़ा है । जातिका

हृदय यदि इन बातोंको सुनकर भी नहीं पसी-जता तो अहिंसा धर्मकी ढेर मचानेवाली जाति अब जिन्दा नहीं ।

जातिका रत्न बिना किसी कारण क्यों दुःख पा रहा है । इस बातको लेकर जैनसंसार क्यों नहीं आवाज उठाता ? क्या कुत्तेकी तरह पेंड्रभर लेना ही जीवनका उद्देश्य है । डा दिये जायें वे महल और जड़से उखाड़ दिये जायें वे बागवगीचे जिनमें मजा छूटनेवाले अपने जाति भाईके दुःख नहीं सुन सकते । सेटीजीके विचार धर्मके अंशोंसे भरपूर हैं । जैनसंसार क्यों नहीं स्वतन्त्र जांच करानेका उद्योग करता । सेटीजी और उनका परिवार क्यों राम सीताकी तरह कठिन वनवास सेवन कर रहा है । यदि जैनी अपने उद्योगसे सेटीजीको न छुड़ा सके अथवा उनकी जांच करानेमें असमर्थ रहे तो यह कलंक कभी न धुलेगा । सेटीजीके कष्ट और उनके परिवारकी वेदनासे हिन्दू हृदय विच जाना चाहिये । ठंडी आहके तीर छाती फाड़कर निकल जाने चाहिये । सेटीजीके हाथोंमें जिसने बेड़ी पहिनायीं वह भी बिना कारण बताये कड़ेसे कड़े दंडका भागी है ; जब सेटीजी पर फोनदारीका कोई मामला नहीं फिर कैसे दुस्साहस किया जाता है कि, वे बेड़ियोंसे जकड़े जायें । जैनियोंको कर्तव्यशील होकर सेटीजी और उनके परिवारको व्यर्थके कष्टसे मुक्त कराना चाहिये इसी जातीय हिन है । सरकारको भी असन्तोषके आग नहीं भभकानी चाहिये । विश्रुत मनुष्योंसे



वचन लेकर सेठीजीको स्वतंत्रता प्रदान करदी
जाय । यदि जयपुर दरबारकी यह कारतूत है
तो उसे प्रजाके मतका आदर करना सीखना
चाहिये । हठ बुरी होती है ।

‘ विश्वामित्र ’ (कलकत्ता) से उद्धृत ।



(ले० पं० उमरावसिंह न्यायतीर्थ ।)

सम्यग्दर्शन ज्ञान चरणको,
मुक्तिमार्ग सच्चा जानो ॥
तत्त्वारथकी दृढ़ श्रद्धाको,
सम्यग्दर्शन पहिचानो ॥१॥
अथवा देव, शास्त्र, गुरु श्रद्धा,
सम्यग्दर्शन कहलाती ॥
तीन मूढता अष्ट मान बिन,
अंगाष्टक-शुभ नष्ट भाती ॥२॥
वीतराग सर्वज्ञ हितैषी,
होकर जो उपदेश करे ॥
वही हमारा सच्चा स्वामी,
मन-सागरसे पार करे ॥३॥
पूर्वापर विरोधसे वर्जित,
जो जग-हित उपदेश करे ॥
आप्त रचित अरु कुमत्त विदारक,
शास्त्र मोक्ष-मार्ग उचरे ॥४॥
विषयोंकी आशा नहिं जिनके,
अरु आरंभ परिग्रह हीन ॥
ऐसे गुरु हैं वंश नष्टमें,
ज्ञान-ध्यान, तपमें लालीन ॥५॥

देव मूढता, लोक मूढता,
गुरु प्रमूढताको त्यागो ॥
देव राग बिन, गुरु कपाय बिन,
जो हो उसमें चित्त पागो ॥६॥
पूजा, ज्ञान, जाति, तप, कुल, बल,
वष्ट कद्दीका मद त्यागो ॥
मार्दव भाव हृदयमें धरकर,
स्वात्म गुणोंमें चित्त पागो ॥७॥
शंका, कांक्षा, विचिकित्सा अरु,
मूढ़ दृष्टिका त्याग करो ॥
उपगूह स्थितिकरण प्रभावन,
वत्सलता शुभ भाव धरो ॥८॥
जीव अजीव वंश अरु आस्रव,
संवर निर्मल शिव भावो ॥
सप्त तत्त्वका ज्ञान प्राप्त कर,
सम्यग्ज्ञानी बन जावो ॥९॥
विभ्रम संशय और विपर्यय,
रहित ज्ञान सच्चा मानो ॥
न्यूनाधिकता रहित वस्तु जो,
जैसी हो तैसी जानो ॥१०॥
हिंसा, चोरी, झूठ, परिग्रह,
अरु मैथुनका त्याग करो ॥
एक देश धावक घन पालो,
सकल रूप मुनि-धर्म धरो ॥११॥
पंच अणुव्रत, तीन गुणव्रत,
अरु शिस्तव्रत चार धरो ॥
पंच पंच अतिचार टालकर,
तीन शक्यका त्याग करो ॥१२॥
दर्शन घन सामायिक प्रौढ,
सचिन रात्रि-मुक्ती त्यागी ॥
ब्रह्मचारि, आरंभ-परिग्रह,
अनुमति अरु उद्विष्ट त्यागी ॥१३॥

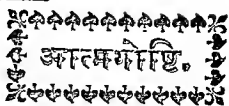


पूर्व पूर्व युत अग्रिम अग्रिम,
 एकादश प्रतिमा धारी ॥
 श्रावक अन्त समाधि मरण कर,
 करता जीवन सुखकारी ॥१४॥
 पंच महाव्रत, तीन समिति अरु,
 तीन गुप्ति पालन करके ॥
 दशवा धर्म पाल, मुनिवन धर,
 द्वाविंशति परिपह सहके ॥१५॥
 सामायिक छेद्रोपस्थापन,
 अरु परिहार शुद्धि घरके ॥
 सूक्ष्म कपाय तथा यथाख्यात,
 संयमको पालन करके ॥१६॥
 अनन्त चतुष्टय तेरहमें धर,
 चौदहमें त्रियोग हरके ॥
 अनादि कर्मबन्धनको काटो,
 “अमर” सुरलत्रय चरके ॥१७॥

वाल विवाहका फल ।

माता पिताने मुझको, दुलहन बनाके मारा ।
 दो दिन बहार गुलशन, मुझको दिखाके मारा ॥
 अंगमें मेरे था बटना, मातमका वस्त्र लगाया ।
 वाली उमरमें खूनी, महीदी लगाके मारा ॥
 मैं तोड़ देती कंगना, होना जो होश मुझको ।
 वस्त्र मेरे हाथ कोरा, कंगना बंधाके मारा ॥
 हाथ हाथ शुहागका सुख, मैं देख भी न पाई ।
 प्रीतम मेरे सिधारे, मुझको सुनाके मारा ॥
 शहरके फूल ताजा, मुरझाने भी न पाये ।
 जब तक शोहाग मेरा, थोड़ी चढ़ाके मारा ॥
 फेंकी चोर मैं हूँ, अय ! धर्म वीर-वेशक ।
 नहीं और सुख मैं देखा, दुखने हलाके मारा ॥

सूरजभान जैन-अद्वैत (आगरा)



प्रातःकालमां एकांत जगह अने शुद्ध चित्ते
 माला गणी, ए साधनथी मनने एकाग्र करी
 पढी बार भावनारूप आ आत्मगोष्ठि करवी.
 (१) हे जीव ! त्हारी आसपास नजर कर.
 जे जे पदार्थों तूं जुए छे ते अने त्हारा पो
 तामां काई तक्रावत त्हने जणाय छे ? त्हारी
 आसपासनो दरेक पदार्थ-त्हारी लक्ष्मी-त्हारो
 वैभव, अरे ! त्हारं पोतानुं शरीर ११ विजळीना
 परपोटा जेवुं विनाशी छे-अनित्य छे. तूं गमे
 तेडली रखेनाल करीश तोपण ते दरेक पदार्थ
 विनाशी ते विनाशीज छे.

अनित्य छे, नाश पामवानो एनो धर्मज छे.
 ए सर्व विनाशी-अनित्य वस्तुओना वचमां तूं
 एरु आविनाशी-नित्य भूखो पडवाथी आवी
 च्छेड्यो हूं माटे ए नाशवंत वस्तुओमां मोह
 न पामतां तूं आविनाशी एवा त्हने पीछान.
 आ क्षणना प्रसंगमां न राच.

(२) हे जीव ! जो तूं अविनाशी-नित्य
 एवा त्हने पीछानवा श्रम नहि ले तो नकी
 मानजे के नाश माटेन निर्मायली ए वस्तुओना
 नाश के वियोगथी त्हने थतां दुःखोमां दिलासो
 कोई रीते नहीं मळे. अने ज्यारे तूं ए वची
 चीजोने छेडी सत्ताम बरी हमेशेने माटे चाली
 नीरुळीश त्यारे तने शरण देखा कोई नहीं
 नीरुळी आने. अविनाशी एवा 'मोक्ष'ने अथवा
 आत्माने जाणना रूप जे 'धर्म' एन त्हारो संगो
 यगे माटे शरण सगुं के संबंधी जो त्हारे



जोईतुं होय तो अविनाशी एवा त्हारा आत्मा-
नेज शोधी एना शरणे जा.

(३) हे जीव ! हमणा तुं जे जे वस्तुओमां
आनंद मानी रह्यो छे ते वस्तुओ-अने तेथी-
पण वधारे खंचाण करनारी वस्तुओ तुं अनेक-
वार पाम्यो छे. दरेक चीजना भोक्ता तरीके
अने दरेक प्राणीना सगा तरीके सर्व प्राणी
पदार्थ साथे त्हे अनेकवार संबंध जोड्यो छे.
पण कोई संबंध टकी शक्यो नहोतो. माटे
कोई प्राणी के पदार्थना मोहमां दीवानो थई
अविनाशी एवा निजरूपने भूलीश नहीं. एवी
भूलथीज तुं अपार एवा संसार-समुद्रमां आदि
वगरना काल्थी भय्या करे छे. अने भ्रमणथी
उद्भवतां दुःखो परवश पणे सहन करे छे.
माटे ए दुःखोमांथी शुक्त यवुं होय तो संसार-
मां आवी पड्या छतां विरक्त पुरुष माफक
वर्त. जळ कमळवत् बनी जा.

(४) हे जीव ! तुं एकलो छे. एकलो आन्यो
हतो अने एकलोज नईश. एक घर छोड़ी बीजे
घेर जती वखत पहेला घरवाळुं कोई पण
सगुं त्हारी साथे आन्युं नथी अने आवश
पण नहि. ए सगाने मदद करवा माटे तें कोरला
पापोतुं फळ भोगववा वखते पण कोई आड़ो
हाथ देवा नहीं आवे; तो एवो राग-एवो
संबंध-एवी मैत्री त्हाळुं शुं लीळुं करनार छे ?
तुं त्हारा पोतामांज मित्र मेळव. निजरूपथीज
सगाई कर.

(५) हे जीव ! जुए त्हारा शिवाय तुं जे
काई छे, नभुं त्हाराथी अलग्न ममजने.
क्षण एना समनतो के ग्री त्हारी छे के

पुत्र त्हारो छे. लक्ष्मी त्हारी छे के देह त्हारी
छे. जो एमज होत तो ए लक्ष्मी त्हारा घरमां
आन्या पडी त्हारी हयातिमां बीजुं घर करत ?
ए स्त्री परलोक तो दूर रह्युं पण काष्ठ सुधी
पण त्हारी सोबत करवामांथी जात ? आ
प्रत्यक्ष जोवाता खेल शुं एम नथी स्पष्ट
समजावता के त्हारे आ इंद्रजाळथी निजरूपने
अलग्न मानवुं अने एमां लिप्त न थतां निज
रूपमां दृढ़ रहेवुं ?

(६) हे जीव ! तुं कोने माटे दगा फटका
करे छे ? आ रुपाळा हाडकांना पुतळां
पोषवा माटे ? जो तो खरो के आ पुतळुं
गंवातुं छे-मळमूत्रथी भरेलुं छे-क्षण क्षणमां
बगड़ी जाय छे-रोग जरातुं निवास धाम छे.
हवे एने साचवी साचवीने केटळुं साचवीश ?
'खातर ऊपर दीवेल' करतां जरा तो विचार
कर, तुं त्हेने साचववा, सुंदर करवा, हृष्टपुष्ट
करवा हजारो प्रपंच करे छे, हजारो प्रकारनी
हिंसा करे छे; पण ते छतां ते तो त्हेने दगो-
ज दे छे. त्हाण खरा खप वखते तें त्हारी
मरजी विरुद्ध लयड़ी पडे छे अने त्हेने फसावे
छे. हवे जो त्हारामां बुद्धि होय तो जेठली
काल्थी ए गुणचोर हाडपिनर माटे धरावे
छे, तेठलीज त्हारा पोता माटे-आत्मा माटे
राखे तो अखुद गुप्त खजाना त्हारे माटे खुला
थाय ए निःशंक वार्ता छे.

(७) हे जीव ! राग-द्वेष-अज्ञान-मिथ्या-
त्व इत्यादि "आश्रव" अथवा त्हारा
आत्मस्वरूपने मयीन करनारां "बलपाट"
छे. प्रतिक्षण त्हेने ए नवां कर्मोनी लपेटो



नाखतांज जाय छे. एनाथीन तुं ठाकुरनी माफक वत्ते छे. एनाथीन भव भ्रमण करवा छतां तुं पोताने सुखी मानवानी सुखाई करे छे. माटे ए चीकणा बळगाटने ओळख,—प्रथम ओळख. एमना स्वभावथी वानेक था अने पछी ए लागेला बळगाटने दूर करवाना तथा हवे पछी न लागे तेवा उपाय,—उप-भोग—परिभोग आदिनी तृष्णा कमी कर. इच्छाओने मर्यादाथी बांध; जे कांडे त्हारी पासे छे त्हेनो मोह ओछो करी परमार्थ एज त्हां सर्वस्व मान के जेथी 'आश्रव' नो मेलो बळगाट घणे दरज्जे मोळो पडे.

(८) हे जीव ! जो त्हने खचीतन एवी श्रद्धा वेठी होय के रागद्वेषथी नवा कर्मोनी आवक हमेशां त्हारामां चालीज आवे छे तो ते आवकने रोकवा ज्ञान—ध्यानमां आरूढ़ था । ज्ञान—ध्यानमां आरूढ़ थयेलो आत्मा सिंह समान देखाव धारण करे छे, जेथी विचारां कर्म तेनी आगळ आवी शक्तां नथी. आमी रीते ज्ञान—ध्यानमां आरूढ़ यहुं एहुं नामज 'सर' कहेवाय छे.

(९) हे जीव ! आत्माने आवती राग—द्वेष—पादि कर्मोनी आवक बंध तो करी पण पूर्व थई चूकेलां कर्मोनी समूह क्षय कर्या वगर काई त्हारो मोक्ष छे ? ए कर्मोनि कापना—निर्जरावा तप—संयम रूप 'निर्जरा' तुं शरणु त्हारे लेवुं जाईए छे. निर्जरा माटेज तप करनारो माणस मान मागतो नथी, कीर्त्तिके धन इच्छतो नथी, लोकछजाने गणकारतो नथी, मात्र आत्मार्थेन निया करे छे अने ते क्रिया ज्ञान माये करे छे. ज्ञान सहित क्रियातुंज नाम "निर्जरा छे."

(१०) हे जीव ! आ प्रमाणे आवतां कर्मोने रोकी, यथेलां कर्मोने निर्जरी, हवे तुं चौद राजलोकतुं स्वरूप विचार. असंख्यात द्वीपसमुद्रनो ख्याल दृष्टि समक्ष लाव; अने पछी जो के आटला विशाल अवकाशमां त्हां घर के तुं शा हिसाबमां छे ? असंख्यात द्वीप समुद्रनी कुदरतनी बळी विचित्रता विचार अने एमां तल्लीन भई तुं देहाध्यास अने हुंपद छोड़.

(११) हे जीव ! वैराग्य प्राप्त करावनारी उपली १० भावना भाव्या पछी तुं विचार के हवे शांत पडेल त्हारा जीवे शुं करवा जेवुं छे अने शुं छोडना जेवुं छे ? आ निर्णय त्हने "सम्यक्त्व" वगर थई शकवानो नथी. सम्यक् एटले साचा ज्ञान बिना त्हारो आत्मा दोरा वगरनी सुई माफक पाप पूंजमां—अज्ञानमां खोवाई जाय छे अने जशे, माटे सम्यक्त्व प्राप्त कर. एज सम्यक्त्व भावनाथी भरते मोक्ष प्राप्त कर्तुं छे.

(१२) हे जीव ! ज्ञान पाम्यो पण ते सार्थक तो त्थारे कहेवाय के ज्यारे ज्ञानने व्यवहारमां मूके अर्थात् धर्म आचरे. सर्व प्राणीने पोता समान गणवा जेठली पायरीचे आवबुं अने सर्वने साता पमाइतां शीखतुं एज धर्मनी साफल्यता छे. माटे एवो उत्तम धर्म धारण कर के जेथी बीजाने साता उपजावनार एवा त्हने अखंड—निराबाध—अमिश्र साता उपजे. एकेक भावना ज्यारे बेडो पार करवा समर्थ छे तो चारे भावना भ्रष्टावाळाना मोक्षमां शुं संशय ?

मुनीम धरमचंद हरजीवनदास
पालीतानी ।



जिस प्रकार मनुष्योंको सांसारिक कार्योंमें भाग लेनेकी आवश्यकता है, उससे अधिक शारीरिक स्वास्थ्यपर ध्यान देनेकी आवश्यकता है। संसारके प्रत्येक कार्यको वही मनुष्य योग्य रीतिसे संपादन कर सकता है जो कि शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्यसे संयुक्त हो। जो मनुष्य सरोग हैं उनको अपना जीवन भार स्वरूप मालूम होता है। और भी संसारके जितने सुखकार्य हैं वे भी प्रायः बुरे ही लगते हैं। वास्तवमें मनुष्य-रूपी वृक्षको ठहलनेके लिये निरोगतारूपी जड़की अत्यावश्यकता है। हम जो कि शास्त्रोंमें सुनते हैं कि अमुक मनुष्य इतना बलिष्ठ था, अथवा कान्तिमान था, इसका कारण यही है कि वे उन नियमोंकी तरफ भी नहीं जाते थे जो कि मनुष्यके स्वास्थ्यको हानिप्रद हैं किन्तु इसके विपरीत अर्थात् (१) प्रकृत्यानुसार भोजन करना, (२) शास्त्र विहित नियमोंका पालन करना, तथा (३) स्वास्थ्योपयोगी शायका अध्ययन करना इत्यादि। इन नियमोंको पालनेसे मनुष्य ऐहिक लौकिक सुखको भोगने हुए पारलौकिक सुखको भी क्रमशः प्राप्त कर लेते हैं। यही तो कारण था कि भारतवर्ष पूर्वावस्थामें सब

देशोंसे शिक्षा, कलादिमें बड़ा बढ़ा था। अपनी धनसंपत्तिसे अपने ही को नहीं बल्कि विदेशियोंको भी पोषण करता था। परंतु शोक ! और महाशोक ! वही भारत आज उन शारीरिक स्वास्थ्योपयोगी नियमोंको न जानकर कितना अवःपतनको प्राप्त हुआ है कि जिसका पारावार नहीं। इसके अतिरिक्त हमारा धन, बल, शरीर भी क्षीण (निसत्व) होता जा रहा है। शास्त्रोंमें लिखा है कि 'धर्मार्थकाममोक्षानामारोग्यं मूलमुत्तमम्।' अर्थात् धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष इन चार पुरुषार्थोंमेंसे निरोगता ही श्रेष्ठ है क्योंकि उसके होनेपर ही चार पुरुषार्थोंको कर सकते हैं। मनुष्यका भोजन ही जीवनाधार है। सबसे पहले यह भोजन जब कि मुखके अन्दर जाता है तब उसकी चर्वण करनेकी आवश्यकता पड़ती है। योग्य रीतिसे चर्वण किया हुआ भोजन आमाशय (नाभिस्तनाऽन्तरं जन्तोरामाशयः) में जाकर बहुत जल्दी पच जाता है और वह क्रमशः (रसाष्टङ्मांसमेदोऽस्ति मज्जाशुक्राणि घातवः) सप्त घातुओंमें परिणत हो जाता है। यदि वह भोजन योग्य एवं प्रकृत्यानुसार हुआ तो शारीरिक संघियोंको दृढ़ एवं बलिष्ठकारी होता है। और यदि मिथ्या हो तो उसके द्वारा ज्वरादि हो जाते हैं। इसीके विषयमें भाषव निदानम् लिखा है कि—मिथ्याहारविहाराम्यां, दोषाद्या-माशयाध्रया; पहिर्निरस्य कोष्ठाग्निं ज्वरादाः स्युस्तज्जुगाः ? अकाले चानिवाग्रम्, अद्यात्म्यं यच्च भोजनम्, विपमाशनञ्च यद्भुजं,



मिथ्याहारः स कथ्यते (२) अशक्तः कुलं
कर्म शक्तिमात्र करोति च । मिथ्याविहार-
मित्युक्तं, सदा चैव विवर्जयेत् ॥ ३ ॥

अर्थात् मिथ्या आहार और विहार इन
दो कारणोंसे कुपित हुए वात, पित्त, कफ,
आमाशयमें प्राप्त होकर रसादि धातुओंको
विगाड़ते हैं और कोठके अग्निकी गरमीको
बाहर निकाल कर ज्वरादि बीमारियोंको
पैदा करते हैं ।

ज्वर, कोई साधारण बीमारी नहीं है यह
बीर २ बड़ता हुआ अन्तिम समय असाध्य
अथवा कष्ट साध्य हो जाता है । जिस आ-
त्माके ऊपर इसका अधिकार जम जाता है
तो यह दुष्ट उस मनुष्यको अपना भोग्य
बनालेता है । इसलिये हमारा कर्तव्य है कि
हम उसके पास ही न जायें । मैं इस बातको
जोरसे कहूंगा कि जो मनुष्य पथ्य भोजन
करनेवाले हैं और उसके साथ २ व्यायाम भी
करते हैं तथा जितेन्द्रिय हैं वे कभी किसी
कालमें भी बीमार नहीं हो सकते । किसी
ग्रामीण मनुष्य या स्त्रीको वैद्य या डाक्टरकी
आवश्यकता नहीं पड़ती क्योंकि उन्हींके योग्य
परिधर्मके द्वारा प्रतिदिनका भोजन योग्य रीतिसे
परिपक्व हो जाता है और सब धातुओं रूप परिणत
होकर उन मनुष्योंके शरीरको दृढपुष्ट बना-
ता है । जिन्होंने गृहमें श्री दुग्धादिकी कमी
नहीं है और जिन्होंने शारीरिक परिश्रम भी
नहीं करना पड़ता है ऐसे मनुष्योंको हम
सुरोग और दुःखित जीवनसे परिपूर्ण देखते हैं
इसका प्रधान कारण यदि वास्तवमें देखा

जाय तो सिर्फ मिथ्याहार ही है । वास्तवमें
जो मनुष्य निरोग होकर जीते हैं उन ही
का जीवन कहा जा सकता है । और वे ही
मनुष्य वास्तवमें जीते हैं और वे अन्य भवमें
जानेके लिये कलेवा भी लेजाते हैं । अल-
मिति । वारि हंम इव क्षीरं, सारं गृह्णाति
सम्जनाः, वादीभस्मिहः ।

हरप्रसाद वैद्य, स्या० म० काशी ।

नये २ ग्रन्थ ।

रत्नकरंडश्रावकाचार (तीसरीवार)	९)
पुण्याश्रव कथाकोष (दूसरीवार)	३)
आदिपुराण (भाषा टीका सहित)	१६)
प्रतिष्ठासारोद्धार (प्रतिष्ठापाठ)	२)
महावीर पुराण १॥॥ हरिवंश पुराण ६)	
अर्थप्रकाशिका (सूत्रजीकी सरल टीका) ३॥)	
तीस चौबीसी पूजा (वृंदावनकृत) १॥॥)	
मोक्षमार्गकी सच्ची कहानियाँ १॥)	
जैनार्णव १)	श्रीपालचरित्र १॥)
बुधजन सतसई १॥)	भक्तामर कथा १॥)
गोमटसार टीका कर्मकांड और जीवकांड ४॥)	
श्री श्रेणिक चरित्र १॥॥)	
नेमिनाथ पुराण २), चंद्रप्रभ चरित्र १)	
प्राचीन जैन इतिहास (प्रथम भाग) १॥)	
सुभाषितरत्नसंदोह २॥)	
तत्त्वज्ञानतरंगिणी १॥)	

इनके सिवाय सब जगहके छोटे बड़े जैन ग्रन्थ
मिल सकते हैं । कमसे कम पाँच ग्रन्थोंके
मगानेसे फी रूपया एक आना कमीशु भी दिया
जाता है ।

मिडनेका पता-

मैनेन, दि० जैन पुस्तकालय, खैरत।



सेठी अर्जुनलालसे

मेरी भेंट ।

सेठीजीको नज़रबंद हुए तीन वर्षसे ऊपर हो चुके, परंतु जनताको अभी तक यह भी पता नहीं कि वे नज़रबंद हुए किसके द्वारा। जब भारत सरकारसे पूछा जाता है तब यही उत्तर मिलता है कि इस काममें हमारा कुछ भी हाथ नहीं है, किंतु जैपुर सरकार ही इस बातकी उत्तरदाता है। जब जैपुर सरकारसे पूछा जाता है तो वहांसे कोई उत्तर नहीं मिलता। अबतक जितने नज़रबंद हुए हैं उनमेंसे सेठीजीका मामिला अपने ढंगका बिल्कुल नया है। कुछ भी हो इस मामिलेसे अंग्रेजी सरकार सम्बंधित नहीं ऐसी कल्पना नहीं की जा सकती। यदि यह मामिला बिल्कुल स्टेटसे ही सम्बन्ध रखता है तब भी अंग्रेजी सरकारको इसमें हस्तक्षेप करना चाहिए। कानूनके अनुसार अन्यायको न रोकना भी अन्याय है। इसी नीतिके अनुसार यदि इस मामिलेमें जैपुर सरकार ही बिल्कुल उत्तरदाता है, तब भी अंग्रेजी सरकारको सेठीजीके प्रति जो अन्याय हुआ उसको व्यक्तिगत न समझकर समानगत होनेसे ख्याल करना ही था, परंतु ऐसा नहीं हुआ।

सेठीजी नवम्बर माससे चेन्नोर सन्दूख जेलमें नज़रबंद हैं। इससे जनता यह अनुमान करती होगी कि इस मामिलेका सम्बन्ध अंग्रेजी सरकारसे ही है, परंतु जैसा हमको चेन्नोरके सरकारी अफ़सरोंसे मालूम हुआ, अब भी

यह मामिला जैपुर सरकारसे ही सम्बन्ध रखता है। सेठीजीसे मिलने आदिकी आज्ञा जैपुर दरबार द्वारा ही प्राप्त होती है। सेठीजीका चेन्नोर जाना भी उन नियमोंके आधारपर है जो अंग्रेजी सरकार और रियासतके बीचमें सुदृढ़ हुए, तब हो चुके हैं।

जनता इस बातके जाननेको बड़ी उत्सुक होगी कि सेठीजीको जैपुरसे चेन्नोर क्यों भेजा गया और जानबूझकर उनको इस कष्टमें कि वे ५६ दिनतक निराहार रहें क्यों डाला गया? इसका कारण सेठीजीको स्वयं कुछ नहीं मालूम और न किसी रीतिसे मालूम ही किया जा सकता है।

हम नीचे वह सब मामिला ज्योंका त्यों लिख देना उचित समझते हैं जो ५ जनवरीसे २५ जनवरी तक सेठीजी अथवा उनके कुटुम्ब और जैपुर दरबारके बीचमें हुआ।

५ जनवरीकी शामको हम जैपुर पहुँचे। उसी गाड़ीसे सेठीजीकी स्त्री और बाल बन्धे चेन्नोर जानेके लिए तैयार थे। जैपुर स्टेटकी ओरसे कुछ सज्जन ग्रेटकार्म पर उपस्थित थे। सेठीजीके कुटुम्बके जानेके लिए चार सैकंड-क्लास टिकट खरीद कर स्टेटकी ओरसे उनको दे दिए गए। ये टिकट सेठीजीकी स्त्री और उनके चार बालकोंके लिए थे। स्टेटने इतना कुछ प्रबंध नहीं किया था कि उनके साथ किसीको जाना चाहिये या नहीं। इसी कारण उनको वे सब कष्ट उठाने पड़े जिनका पहले जिक्र हो चुका है। हम उनको दोहरा कर केवल इतना कह देना उचित



मते हैं कि थर्ड क्लासमें भी विशेष कष्ट सहते हुए १० जनवरीके दुपहरको हम काठपादी स्टेशन पहुँचे, वहाँ मजिस्ट्रेटकी ओरसे एक सज्जन स्टेशन पर उपस्थित थे और अटकों (इक्को) का तुरंत प्रबंध हो गया। घंटे भरके बाद हम लोग बेल्लोर पहुँच गए।

ठहरनेका मकान।

यह मकान बेल्लोर बस्तीसे दो मील जेलसे एक फर्लांग इस ओर सड़कके किनारे पर है। यह स्थान थोरापड़ी नामसे प्रसिद्ध है। वास्तवमें यह एक छोटासा गांव है। यहाँ एक ब्रांच पोस्ट आक्रिस भी है। उस मकानमें जिसमें सेठीजीका कुटुम्ब ठहराया गया है, चार कमरे हैं। दो कमरे हवादार और दो बिल्कुल बंद हैं। इससे मालूम होता है कि वे बंद कमरे सामान आदिके लिए हैं। इस मकानसे दक्षिणकी ओर एक थोड़ासा स्थान घेरके रूपमें इस मकानसे लगा हुआ है। जब हम पहुँचे थे, तब यह मकान साफ किया जा रहा था। इस मकानके पास इधर उधर गलीके छोटे छोटे कुंड हैं जिसकी बजहसे मच्छर बहुत पैदा होते रहते हैं। मकानमें कोई ज़रूरी सामान मौजूद नहीं था। सेठीजीका कुटुम्ब इतनी दूर जानेंके कारण वरका ज़रूरी सामान भी नहीं लेना सका। इसलिए उनको बड़ी दिक्कतमें पड़ना पड़ा और २५ जनवरी तक जब तक हम वहाँ रहे, वे अपनी दिक्कतोंकी किसी प्रकार दूर न कर सके। सेठीजीने स्वयं इन घरेलू कष्टोंको दूर करनेके लिए वहाँके मजिस्ट्रेटको लिख रक्खा

है और आशा है कि वे शीघ्र प्रबंध कर देंगे। यहाँ पर खाने पीनेकी सभी चीजें बहुत महंगी मिलती हैं। वी ९ छांक और आटा ३ सेर मिलता है। इधरके लोग आटा बिलकुल इस्तेमाल नहीं करते, इसलिए वह बड़ी मुश्किलसे और कभी कभी बिलकुल नहीं मिलता। उचित खाना न मिलनेसे और मकान योग्य न होनेसे वहाँके स्वास्थ्यपर बुरा प्रभाव पड़ना प्रारंभ हो गया है। खांसी लगभग सब बालकोंको हो चली है। डाक्टरका अभी तक कोई प्रबंध नहीं हो सका। संक्षेपमें अब सेठीजी नहीं किंतु उनका कुटुम्ब आपत्तिमें पड़ गया और जैपुरकी जनताके हिसाबसे उनका कुटुम्ब भी नजरबंद हो गया।

मिलना जुलना।

सेठीजीकी स्त्री उनसे मिल सकती है। वच्चे सब ८ बनेसे १० बने तक उन्हींके पास पढ़ते हैं। १२ बनेके पश्चात् कोई उनसे नहीं मिल सकता। उनके कुटुम्बके सिवाय और किसीको मिलनेकी आज्ञा नहीं है। हमको सरकारसे आज्ञा प्राप्त करनी पड़ी थी तब उनसे मिल सके थे। ऐसी आज्ञा वे किन नियमोंके आधारपर देते हैं या किसको देते हैं, इसका कुछ पता नहीं, क्योंकि श्रीयुत धनदेव नयनार आनीं निवासी ९ जनवरीको सेठीजीसे मिलनेके लिए आये थे, परन्तु उनको आज्ञा न मिल सकी। उक्त सज्जन आनीं एक प्रतिष्ठित जैन हैं। आनीं बेल्लोरसे २२ मील है। जब हम इधरको वापिस



लौट रहे थे, तब यह भी मालूम हुआ कि मिस हैनकाक एक मिसनरी लेडी भी उनसे मिली थी। हमको नहीं मालूम कि उनको ऐसी आशा कहाँसे और किस प्रकार प्राप्त हुई थी। इसलिए यह नहीं कहा जा सकता कि सरकार किनको उनसे मिलने देना चाहती और किनको रोकना चाहती है।

हमारी भेंट।

जिस दिन सेठीजीके बालकों इत्यादिकी भेंट सेठीजीसे हुई उस दिन हम साथ नहीं थे। हम दूसरे दिन उनसे मिलनेके लिए पहुँचे। मिलनेके पहले हमारे मनमें भांतिके विचार आते और जाते थे। जैसे ही हम जेलके अंदर पहुँचे, फाटवके पास ही एक कमरेमें जानेके लिए सुपरि० जेलमें इशारा किया। हम उसके अंदर पहुँचे ही थे कि सेठीजी दूसरी ओरसे आते हुए मिले। हम शीघ्रतामें कुछ बोलने तक न पाए थे कि सेठीजीने तुरंत हमको गलेसे लगा लिया और आँखोंमें आँसू भर लाए। हमारी आँखोंमें भी पानी भर आया और कोई एक मिनटके लगभग वे हमको और हम उनको देखते रहे। प्रेमसे कहिए या अच. रणसे हम यार्तालाप न कर सके। अंतमें सेठीजीने सुपरि० जेलसे हमारे परिचयके शब्द कहकर उस मौनको तोड़ा और तत्पश्चात् हमसे सेठीजी समाजकी अवस्था और खास खास सज्जनों/कुशलक्षेत्र पृष्ठते रहे। उनको पंडित गोपालदासजीकी श्रुति भी कुछ पता नहीं था। इस प्रकार हाट सुनकर

उनको बड़ा दुःख हुआ और बहुत देर तक रोते रहे। इसी प्रकार बहुत देर तक बातें होती रहीं और उनको कई स्थलोंपर बार बार रोना पड़ा। हम नहीं समझते कि हमने उनसे भेंट करके उनको सिवाय दुःख पहुंचानेके और क्या किया?

सेठीजीके विचार।

पहिले दिन तो हम केवल उनके प्रश्नोंका उत्तर देते रहे परंतु उनसे कोई बात न पूछ सके, परंतु चलते समय एकदिन हमको थोड़ासा अवकाश और मिला और हमने उनसे निम्न-बातें पूछी थीं:—

प्रश्न १. जैपुरसे यहाँ आनेमें आपको किसी प्रकारका कष्ट तो नहीं हुआ।

उत्तर—मैं कष्ट सहते सहते कण्टको समझना ही भूल गया हूँ। हाँ! यह मैं जानता हूँ कि मुझको जैपुर कारागारसे रात्रिको १२ घंजे बाहर मोटरमें बिठलाया गया। मेरे हथकड़ियाँ, डाल दी गईं और उसी रूपसे मैं स्टेशन सांगानेर (जैपुरसे दूसरा स्टेशन) ले जाया गया। वहाँ मैं सैकंडक्लासमें बिठलाया गया। और सरकारी अफसरोंके सुपर्द हुआ। अबतक रॉन्पके अफसर मेरे साथ थे। रेलमें जब मैं एक स्टेशन चढ़ चुका, तब मैंने सरकारी अफसरोंसे पूछा कि मैंने ऐसा कौनसा अपराध किया है जो मेरे हथकड़ियाँ टाल दी गईं हैं। बहुत कुछ समझानेके बाद उन्होंने मेरी हथकड़ियाँ सोल दीं और फिर मैं उसी रूपसे बंदोबस्ताया गया। जब मैं यहाँ आया तब मेरी तयियन कुछ खराब थी



इसलिये मैं कुछ देर जेलके बाहर ही लेटा रहा। थोड़ी देरके बाद मैं जेलके अंदर दाखिल हुआ और जवसे अतक जेलकी परिधि ही मेरी दुनियां है।

प्रश्न २—यदि सरकार आपको इस समय छोड़ दे तो आप आगामी किस कार्य-क्षेत्रमें प्रवेश करेंगे ?

उत्तर—अब मेरा विचार शिक्षाक्षेत्रमें प्रवेश करनेका नहीं है। मैं आगामी जीवन धर्मप्रचार-में किताना चाहता हूँ। मेरी बड़ी अभिलाषा यह है कि मैं अहिंसाधर्मका प्रचार प्रथमतः अपने मुसलमान भाइयों और तत्पश्चात् ईसाई भाइयोंमें करूँ। कुरान मजीदमें ऐसी बहुतसी आयतें हैं जिनसे मुझे अपने कार्यमें बड़ी सहायता मिलेगी। आप जहां तक हो सके शीघ्र अर्बोंकी स्वयं शिक्षक पुस्तकें भिजवानेका प्रयत्न कीजिए।

प्रश्न ३—क्या आपने कोई पुस्तक लिखी है या लिखनेका विचार है ?

उत्तर—मैंने नोट अलबत्ता किए हैं। पुस्तक कोई नहीं लिखी, परन्तु लिखनेका विचार है। इस विचारकी पूर्ति तत्काल नहीं हो सकती जब तक कि मुझको एक गोमटसारका पाठी पंडित मेरे साथ रहनेके लिए मुझे न मिल जाय। यदि ऐसी आज्ञा मुझको मिल गई तो मैं यह सेवा करनेके लिए बिलकुल तैयार हूँ।

प्रश्न ४—क्या आप पत्रोंमें धार्मिक लेख देनेके लिए तैयार हैं ?

उत्तर—हां, इसके लिए मैं बिलकुल तैयार हूँ।

प्रश्न ५—इस समयकी अवस्थाके अनुसार जैनसमाजका सबसे पहला कर्तव्य क्या होना चाहिए ?

उत्तर—जैनसमाजको इस समय सब कामोंको छोड़कर रेडक्रास सोसायटीका हाथ बटाना चाहिए। इस कार्यके लिए उनको स्वयं अपनी सेवा समिति तैयार करनी चाहिए। उसके मन बल, और धनबलका बिलकुल स्वयं प्रबंध करना चाहिए।

इन प्रश्नोंके अतिरिक्त हम उनसे अनेक धार्मिक शंकाएँ पूछते रहे और उचित उत्तर पाते रहे।

सेठीजीका समय विभाग ।

सेठीजी प्रातःकाल उठकर साढ़े सात बजे तक नित्यकर्म और पूजा इत्यादिसे लुट्टी पाछेते हैं। साढ़े सात बजेसे दस बजे तक वे बालकोंको शिक्षा देते हैं। १० बजेसे १२ बजे तक वे फिर पूजा करते हैं और तत्पश्चात् भोजन करते हैं। १२ बजेसे शाम तक वे लिखने पढ़नेमें लगे रहते हैं। कविता करनेका उन्हें खास शौक है। वे खड़े खड़े पूजाके समय नवीन पद्य बोला करते हैं। परमात्माकी स्तुति उनके पद्योंका मुख्य विषय रहता है। कभी कभी देशभक्ति पर भी कविता करने लगते हैं परन्तु वे उन सब पद्योंको लिखते नहीं जाते हैं और न ऐसा कर ही सकते हैं। रातको वे बहुत ही कम सोते हैं। विचारों, श्रृंखलाके कारण उनको नींद ही नहीं आती। इससे उनको अवश्य सुस्तान पड़वेगा। समाजको



चाहिए कि वह इसका उचित प्रबंध करानेके लिए योजना करे ।

कार्यका ढंग (तरीका) ।

(लेखक नाथूराम सिंघई लखनऊ ।)

सेठीजीके बच्चोंकी शिक्षा ।

समानको यह जानकर प्रसन्नता हुई होगी कि सेठीजीके बालकोंकी शिक्षाका कार्य सेठीजीके हाथमें आगया है; परंतु हमारे लिए यह प्रसन्नताकी बात नहीं है। हम नहीं समझते कि सेठीजी स्वयं इस प्रकार विचारोंमें निमग्न रहते हुए कैसे अपने बालकोंको शिक्षा दे सकेंगे। थोड़ी देरके लिए यह मान लिया जाय कि वे ऐसा कर सकेंगे तब यह तो किसी प्रकार समझमें नहीं आता कि वे उन सब विषयोंको निजकी आजकलके समय बालकको आवश्यकता होती है, समुचित शिक्षा दे सकेंगे। हमने सेठीजीसे स्वयं इस विषय पर प्रश्न किया था तो हमें उत्तर मिला कि वे बहुत जल्दी अपने बालकोंके लिए किसी अध्यापकका प्रबंध हो जानेंके लिए प्रयत्न करेंगे।

उपर्युक्त नोटसे समानको यह भली भांति विदित होजाना चाहिए कि सेठीजीके बालकोंकी शिक्षाका अभी तक उचित प्रबंध नहीं हो पाया। सेठीजी पर हुआ अन्याय उनके बालकोंको भी सहना पड़ रहा है। इसलिए समानको सेठीजीको मुक्त करानेके लिए और भी जोरके साथ प्रयत्न करनेकी आवश्यकता है।

कार्यका ढंग उसे कहते हैं जिससे सर्व प्रकारकी असुविधा दूर होजाय। प्रकृतिमें प्रत्येक वस्तु यथास्थान पाई जाती है अतः उसको अपने कार्यमें किसी प्रकारकी बाधा नहीं आती। यदि प्रकृतिमें अनियम कार्य होने लगे तो फिर संसारके नाश होनेमें कुछ भी संदेह नहीं है। इसी प्रकार जिस मनुष्यके कार्य नियम पूर्वक नहीं होते हैं वे नाश हो जाते हैं और ऐसे मनुष्यको कभी सुख वा शांति नहीं मिलती है।

संसारके सम्पूर्ण कार्य केवल एक नियम पर ही अवलम्बित हैं। अनियम कार्य करनेसे किसी व्यापार या सभामें उन्नति नहीं हो सकती। जो उन्नतिका अभिलाषी है और जिसका अंतिम ध्येय उन्नति करना है उसे कभी नियम विरुद्ध कोई कार्य नहीं करना चाहिए।

बहुतसे विभाग ऐसे भी हैं जिनमें नियम विरुद्ध कार्य करने पर भी सफलता होती है परंतु पूर्ण सफलता उसी समय होगी जब कि नियम पर ध्यान दिया जायगा। यदि कोई अनियमित कार्य करने वाला मनुष्य व्यापारमें सफलता चाहता है तो उसको चाहिए कि वह अपने कार्यको किसी योग्य प्रबंधको सौंपदे जो उसकी श्रुतियोंको दूर करदे और सफलता लाने।

समानके बड़े बड़े व्यापार नियमसे ही चलें



हैं यदि उनमें तनिक भी अनियम पाया जायगा तो उनकी उन्नति में बाधा पहुँचेगी । जिस प्रकार प्रकृतिके बहुतसे कार्य नियमपूर्वक एक साथ होते रहते हैं उसी प्रकार मनुष्यके भी बहुतसे कार्य एक साथ और एक समय हो सकते हैं, यदि वे नियमपूर्वक किये जायें । नियम विरुद्ध कार्य करनेवालेका यह विचार रहता है कि यदि कार्य पहिले अनियमपूर्वक किया जाय तो उसमें कोई भी हानि नहीं है; परन्तु उसका अंत ठीक होना चाहिए उसका यह निवार-मूर्खताको लिए हुए है क्योंकि जिस वस्तुका आदि ही ठीक नहीं है उसका अंत किस प्रकार ठीक हो सकता है ।

जो लोग नियम पूर्वक कार्य करना पसंद नहीं करते वे अपना बहुतसा समय और मानसिक शक्ति नष्ट करदेते हैं । उनका बहुतसा समय वस्तुके ढूँढनेमें ही चला जाता है । यदि नियमपूर्वक कार्य किया जाय तो बहुतसा समय बच सकता है और उस बचे हुए समयमें अन्य कोई कार्य किया जा सकता है । नीच और गंदे मनुष्यके यहां किसी वस्तुका निश्चिन्त स्थान नहीं होता है इसलिए उस वस्तुके तलाश करनेमें ही उनका बहुतसा समय चला जाता है । जब किसी मनुष्यको कोई वस्तु ढूँढने पर भी नहीं मिलती है तो उस समय उसको अत्यंत क्रोध आता है, दांत पीसता है और लाल पीली आँखें करता है ऐसा करनेसे उसकी बहुतसी मानसिक शक्ति नष्ट होजाती है जो यदि किसी कार्यमें खर्च की जाती तो बड़ा ही लाभ होना ।

जो मनुष्य नियमपूर्वक कार्य करना जानते हैं उनके समय और शक्ति दोनोंकी बचत होती है । वे कभी किसी वस्तुको नहीं खोते हैं अतः उनको किसी वस्तुके तलाश करनेकी भी आवश्यकता नहीं होती । प्रत्येक वस्तु यथा-स्थान पाई जाती है और अंधेरे या उजले किसी भी समय उसको ढूँढो तो फौरन मिल जाती है । इस तरह नियमपूर्वक कार्य करनेवाले शांति-चिंत और विचारशील होनाते हैं और वे अपनी मानसिक शक्तिके द्वारा बहुत कुछ लाभ उठाते हैं ।

नियममें एक प्रकारकी शक्ति विद्यमान रहती है जिसके द्वारा बड़े बड़े कार्य सुगमतापूर्वक होजाते हैं । नियमानुसार कार्य करनेसे थोड़े समयमें बहुत कुछ किया जा सकता है और उससे उसको तनिक भी परिश्रम नहीं मालूम हो सकता । वह हर समय चैतन्य ही मालूम देगा । ऐसा मनुष्य सफलताकी शिखरपर बहुत जल्दी पहुँच जाता है; परन्तु उसका प्रतिपक्षी जो अनियम कार्य करता है, बड़ी गड़बड़ीमें पड़ जाता है । जो मनुष्य प्रत्येक कार्यमें नियमका बड़ा ध्यान रखता है वह अपने अभीष्टको बहुत जल्दी प्राप्त कर लेता है ।

जितना एक साधु महात्माको अपने पवित्र मतोंका पालन करना आवश्यक है उतना ही आवश्यक व्यावहारिक संसारके कार्योंमें नियमका पालन करना है । यदि मनुष्यको नियम पालन करनेसे उसकी धन सम्पत्ति तथा पहुँचे तो उस समय वह निरम भंग करने लगता है अन्य किसी भी समयमें नहीं । द्रव्य सम्बंधी



मामिलोंमें भी नियम पालन करना अत्यंत आवश्यक है और जो मनुष्य नियमको पूर्ण-रूपसे पालते हैं वे अपने समय, शक्ति और सम्पत्तिको नाश होनेसे बचा लेते हैं ।

मानव समाजकी उन्नति नियमके बिना कदा-पि नहीं हो सकती । थोड़ी देरके लिए साहित्यको ही ले लीजिए, देखिये इसमें कैसे कैसे उत्तम ग्रंथ पाए जाते हैं, कैसे कैसे छन्द बन्ध मिलते हैं और कैसे कैसे व्याख्यान सुनने-में आते हैं जिनके सुननेसे एक बार हृदय भी दहल उठता है और लीजिए एक मनुष्य अपने अन्तस्थ विचारोंको दूसरों पर प्रकट कर देता है यह सब काहेसे होता है । इन सबका कारण एक नियम ही है । यदि ~~अक्षरों~~ नियम-पूर्वक न जोड़ा जाय तो एक मनुष्य दूसरेसे अपने विचार भी प्रकट नहीं कर सकता है ।

दश अंकोंको सिलसिलेसे जोड़नेके कारण ही गणितमें बड़ी सफलता प्राप्त हुई है । कारखानोंमें मशीनोंको चलते हुए और उनसे बड़े बड़े काम होने हुए सजने देखा है । उनके द्वारा कठिनसे कठिन कार्य भी आसानीसे हो जाता है । इसका कारण यही है कि उनके कल प्रभे ऐसी तरतीबसे रखे हुए हैं कि जो न तो आपसमें टकराते हैं और न उनसे किसी प्रकारका शब्द ही होता है ।

कठिनसे कठिन भी कार्य यदि नियम पूर्वक किया जाय तो आसानीसे हो जाता है । नियम कठिन कार्यको आसान कर देता है छोटे छोटे कार्य भी यदि नियमपूर्वक किये जायें तो अंतमें उनका बड़ा परिणाम

निकलता है ।

कार्यमें सफलता प्राप्त करनेका मूल सिद्धांत नियम ही है । इसीके द्वारा संसारके मनुष्य आपसमें मिलकर कार्य करते हैं जब कि उनके सिद्धांत और मन्तव्य विपरीत होते हैं । व्यापार, धर्म, विज्ञान और नीतिमें मनुष्यको नियमकी बड़ी भारी जरूरत पड़ती है क्योंकि इसके बिना कार्य ठीक नहीं होता । दो मनुष्योंकी बातचीतको ही ले लीजिए यदि वे बार्तालापके ढंगको नहीं जानते हैं तो उन्हें एक दूसरेके समझनेमें बड़ी दिक्कत उठानी पड़ेगी ।

वह मनुष्य बहुत ही थोड़े समय तक जीवित रहता है जो नियम विरुद्ध कार्य करता है । उसी समय ज्ञानकी वृद्धि होती है और तब ही उन्नति होती है जब कि कार्य नियम पूर्वक किया जाता है । नियम पूर्वक कार्यमें किसी प्रकारकी कोई बाधा नहीं आती । जो मनुष्य नियम पूर्वक कार्य करता है अथवा ज्ञान उपार्जन करता है उसका वह कार्य ब ज्ञान बहुत बढ़ता है और अरसेमें उसकी सेना न तकलीलाम पहुँचता है ।

प्रत्येक बड़े कार्यका कोई न कोई ढंग अवश्य होता है निम्नसे वह मशीनकी भांति बराबर चलता रहता है । एक बार एक मरे प्रतिष्ठित मियने मुझसे कहा था कि यदि मैं अपने कार्यको साठमर तक न करूँ तब भी यह बराबर होता रहेगा । उसने समय समयपर कई मशीनोंके लिए काम छोड़ भी दिया था; परंतु वह बराबर होता रहा ।



यदि कार्य नियमानुसार न किया जाय तो मनुष्य कभी सफलभूत नहीं हो सकता । नियमानुसार कार्य करनेसे मनुष्यको सुख व शांति मिलती है । जो मनुष्य नियमानुकूल नहीं है, जिनका मस्तिष्क इस प्रकार शिक्षित नहीं है और जो विचार करनेमें ढीले और लापरवाह हैं उनकी आदतें और कार्य प्रणाली कभी अच्छी नहीं हो सकती और न वे सुखी रह सकते हैं । वे अपने जीवनको कंखु-मय बनाने हैं । यदि वे अपने जीवनको नियमानुकूल बना लें तो जीवनके सारे क्लेश और चिन्ताएँ दूर हो सकती हैं ।

उस मस्तिष्कको अशिक्षित ही समझना चाहिए जो नियमानुसार कार्य करना नहीं जानता । यद्यपि अशिक्षित खिलाड़ी शिक्षित खिलाड़ीकी बराबरी कर सकता है; परन्तु अनियम कार्य करनेवाला जीवनकी दौड़में नियमपूर्वक काम करनेवालेसे बाजी नहीं मार सकता । अनियम कार्य करनेवाले समझते हैं कि प्रत्येक वस्तुसे काम निकल जायगा परन्तु काम बननेके बजाय बिगड़ जाता है और उनको फिरसे प्रारम्भ करना पड़ता है । नियमानुसार कार्य करने वालेका यह विचार है कि अच्छी वस्तुसे ही काम चल सकता है बुरीसे नहीं । इसीलिये जीवनकी बड़ी बड़ी दौड़में ये लोग बहुत लाभ उठाते हैं चाहे वे शारीरिक, मानसिक या नैतिक ही क्यों नहीं । जिस मनुष्यको कार्यके समय औजार नहीं मिलने हैं, न सड़ककी कुंजी मिलती है और न विचारोंकी ही कुंजी मिलती है ऐसे मनु-

ष्यको खुदबखुद पैदा की हुई आवश्यकता सामना करना पड़ता है जब कि उसका व्यवस्थित पड़ोसी प्रसन्नताके साथ अपने कार्यमें सफलता प्राप्त करता है । जो मनुष्य कार्य करनेका ढंग नहीं जानता, यदि उसको अपने कार्यमें असफलता हो तो वह अपने भाग्यको दोष देगा ।

कार्यका ढंग एक नियम है । इसीके द्वारा चारित्र्य, जाति और राज्य बना हुआ है । जो मनुष्य अपने कार्यके ढंगोंमें उन्नति कर रहा है तो समझना चाहिए कि वह कार्य सम्पादनकी शक्ति प्राप्त कर रहा है । अतः प्रत्येक व्यापारीको यह आवश्यक है कि कार्यके ढंगमें तरक्की करे । नियम पूर्वक कार्य करने वाला ही कार्यको बनाता और संभालता है, परन्तु अनियम कार्य करनेवाला उसको खराब कर देता है । यदि अनियम कार्य करनेवाला कार्यको ढंगसे किया जाय तो उसकी कार्य करनेकी शक्ति बहुत बढ़ जाय, उत्तम चारित्र्य हो जाय और कारोबार भी बढ़ जाय ।

कार्यमें चुस्ती ही जिन्दगिरी कहलाती है । यह एक प्रकारका जोश है जिसमें कार्य शीघ्रतासे हो जाता है । यदि नियमपूर्वक कार्य किया जाय तो इसकी बहुत ही वृद्धि होती है । प्रत्येक सेनाध्यक्षमें इस गुणका होना जरूरी है; क्योंकि यदि कोई अचानक देवी नटना हो गई या कोई शत्रु सेना सहित चढ़ आया तो वह सेना नाशक अपने हाथ नहीं कर सकता जिसमें तेजी और चुस्ती नहीं है । वह कभी कार्यमें सफलता प्राप्त नहीं कर सकता ।



प्रत्येक व्यापारीको भी इस गुणके प्राप्त करनेकी आवश्यकता है। विचारवान मनुष्यका कर्तव्य है कि जो उत्तम विचार उसके मनमें उठे उसके अनुसार कार्य करनेके लिए तैयार हो जाय ! काम करनेमें आलस न करे; क्योंकि आलसके समान संसारमें कोई महा शत्रु नहीं है। इसके कारण किसी प्रकारकी भी उन्नति नहीं हो सकती बल्कि अयोग्यता और मूर्खता ही बढ़ जाती है। जो मनुष्य कार्य करनेके लिए तैयार रहते हैं, जिनका मन और मस्तिष्क कार्य करनेमें कौशल लग जाता है और जो कार्यको बड़ी योग्यताके साथ करते हैं, वे ही अंतमें सुखानुभव करते हैं। यद्यपि कार्यकुशल मनुष्य सुखको रचमात्र भी नहीं चाहते; परंतु सुख उनको अवश्य चाहता है और उनका पीछा नहीं छोड़ता है। ऐसे ही मनुष्योंको सफलता और सुख मिळता है अन्यको नहीं।

व्यापारिक कार्योंमें सफाईकी भी बहुत जरूरत है। यदि नियम पूर्वक कार्य किया जाय तो सफाई अवश्य रह सकती है; परंतु अनियम कार्य करनेसे न तो सफाई ही रह सकती है और न कार्य ही ठीक तौरसे हो सकता है। अनियम कार्यमें भूल भी अधिक होती है जिनके कारण महा हानि उठानी पड़ती है।

यह मान किसीसे भी अप्रसन्न नहीं है कि मनुष्योंकी आतमीतमें यथार्थता बहुत ही कम पाई जाती है। यह सबसे बड़ा दुर्गुण है और इससे बहुत बुरा असर पड़ता है। बहुत

ही मनुष्य ऐसे मिलेंगे जो साफ साफ कहते हैं और जब कभी उनसे किसी बातमें कोई भूल हो जाती है तो उसके माननेके लिए सहसा तैयार हो जाते हैं।

बहुतसे मनुष्य कामको तो ठीक ठीक करनेका पूरा पूरा ध्यान रखते हैं परंतु ठीक ठीक बात चीतका कुछ भी ध्यान नहीं रखते। इसीसे मनुष्यमें पूर्ण योग्यता नहीं आती और न वह बड़े बड़े महत्वके कार्योंको ही कर सकता है। जो मनुष्य अपनी भूलोंको सुधारनेके लिये अपना या अपने मालिकका समय नष्ट करता है वह संसारमें कभी भी उच्चदको नहीं पा सकता और न वह कभी सुख व शांतिका अनुभव कर सकता है।

संसारमें ऐसा कोई भी मनुष्य दृष्टिगोचर नहीं आता जिसने सफलता प्राप्त करनेमें भूलें न की हों; परंतु उसी मनुष्यको योग्य और विज्ञ समझना चाहिए जो अपनी भूलोंको समझता है और उनके निराकरणके लिये उपाय करता है। ऐसा मनुष्य दूसरेके द्वारा बताए हुए दोषको खुशीसे स्वीकार करता है और उसका बुरा नहीं मानता। जो मनुष्य निरे मूर्ख और अज्ञानी होते हैं वे न तो अपने दोषोंको आप ज्ञान सकते हैं न दूसरोंके बतलाने पर उनको स्वीकार करते हैं किंतु बतलाने पर बुरा ही मानते हैं।

जो मनुष्य उन्नतिशील है वह अपनी ही भूलसे नहीं; किंतु दूसरोंकी भूलसे भी लाभ उठाता है। वह सदा व्यवहारके द्वारा नेक संताहकी परीक्षा कर लेता है और नियमों



ठीक ठीक तौरसे चलनेकी बड़ी कोशिश करता है । कार्यमें यथार्थतासे ही पूर्णता प्राप्त होती है । जिस मनुष्यको ठीक ठीक तौरसे काम करना आ गया, उस समझो कि उसने योग्यता प्राप्त कर ली है ।

मनुष्यके कार्यमें लाभका होना ही इस बातका प्रमाण है कि उसने अपने कार्यको कायदेके अनुसार किया है । यदि परिश्रम ठीक तौरपर किया जाय तो उसका प्रतिकूल अवश्य मिलता है । यदि बागमाली अपने बागसे अच्छी पैदावार चाहता है तो उसको चाहिए कि वह बीजको ठीक समयपर बोवे और ठीक समयपर काटे यदि वह सबसे अच्छी उपज चाहता है तो ठीक समयको कमी हाथसे न जाने दे । इसी प्रकार जो मनुष्य किसी कार्यमें सफलता प्राप्त करना चाहता है उसे चाहिए कि वह कार्य ठीक ठीक और उचित समय पर करे ।

यदि मनुष्य अपने कार्यका अंतिम परिणाम अच्छा देखना चाहता है तो उसको परतक प्रयत्न करना चाहिए । जिन मनुष्योंको व्यावहारिक ज्ञान नहीं होता वे प्रायः ऐसे ऐसे विचार रखते हैं कि जिनका व्यवहारसे कुछ भी सम्बन्ध नहीं होता । जिस मनुष्यको कार्यके द्वारा अपनी शक्तियोंका ज्ञान हो गया है वह अपनेको व्यर्थके वित्तजबादसे बचाता है और अच्छे कार्यमें लग जाता है ।

जो बात व्यवहारमें नहीं आ सकती उसका कमी भी विचार न करो । जिस मनुष्यको व्यावहारिक ज्ञान नहीं है यदि उसको किसी

कार्यमें असफलता हो तो इसमें आश्चर्य ही क्या है ।

जब मनुष्यके विचार कार्यरूपमें परिणत हो जाते हैं तो उस समय उसकी कला, शक्ति ज्ञान और शान्तिकी वृद्धि होती है । जितना ही मनुष्य समानसेवा करता है उतना ही उसे सुख मिलता है । मनुष्य जितना ही अधिक करता है उतनी ही अधिक उसकी योग्यता जाहिर होती है, किन्तु बातोंके प्रभावसे कुछ भी नहीं होता ।

यदि कोई व्यक्ति अपने उत्तम विचारोंके अनुसार काममें लग जाय और उसको तन मनसे करना प्रारम्भ कर दे तो उसे अवश्य सफलता होगी और स्थायी सुख मिलेगा और वही जीवनके युद्धमें उठर सकेगा ।

नियम पूर्वक कार्य करना जानने हैं जो पुण्य, सफलता होती उन्हींको कहते हैं यह सत्पुरुष ॥ नियम ही के सबसे अंग्रेज इतने बढ़ गए, नियम जिन ही मारती कर्तव्यपथसे गिर गए ॥ उन्नति यदि तुम चाहते हो देशवासी माइयो, तो नियमपर दृढ़ रहो तब नाथको अपनाइयो ॥

‘नाथ’

पवित्र धूप और अगरवत्ती २) की स्तल ।

मगानेका पता—

मैनेजर, दिगम्बरजैन पुस्तकालय—सुरत ।

स्वदेशी, काश्मीरी और नई

पवित्र केसर ।

१॥) फी बोला ।

मैनेजर, दि० जैन पुस्तकालय—सुरत ।



समस्त सुखोंका केन्द्र है—

प्रेम ।

(लेखक—पं० लोकमानि जैन, गोटेगांव)

प्रेमकी शक्ति अकथनीय है । जिन्हें उच्च-तम, पूर्ण सुखी बननेकी तीव्र अभिलाषा लगी रहती है उनके लिये 'प्रेम' करना समन्ततः अवलम्बनीय है । बड़े २ पर्वत, नदी, तालाब, समुद्र एक प्रेम शक्तिसे ही पार किये जा सकते हैं । संसारकी अमूल्य, दुष्प्राप्य, सर्व-श्रेय वस्तुएँ प्रेमसे खरीदी जा सकती हैं । सबको अपना बनानेमें प्रेमसे बढ़कर संसारमें दूसरी चमत्कारी घूरी नहीं है ।

प्रेमान्वित हृदय सम्पूर्ण रत्नोंका भंडार है । समस्त गुणोंका सुरमित संस्थान है । अनेक विपत्तियोंका मर्दन करनेवाला सबको शान्तिपथ प्रदर्शक तथा चन्द्रकी तरह जगत्का आताप-हारी है । प्रेम विहीन हृदय शुष्क काष्ठकी तरह है, जो शीघ्र ही जलज्वला जा सकता है । प्रेम रहित जीवन मरुभूमि है, जहां पशु-पक्षि-गणोंको शान्ति पहुंचानेवाले समीरुह नहीं पैदा हो सकते, जहां पशुपक्षी गण अपनी तृप्ताकी नहीं बुझा सकते, जहां शान्तिमय मेघोंकी धारा नहीं गिरती, जहां सुरमित पुष्पावली जगत्को सर्वानन्दमयी सुरभि नहीं वितरण कर सकती । प्रेमविहीन हृदय सर्वापत्तियोंका निधि स्थान है, समस्त दुर्गुणोंका निवासस्थान है । समस्त शत्रुओंका उत्पादक है, सर्व सुख-रहित है, स्वयं दुःखी और संसारको दुःखी बनानेवाला है ।

प्रेमसम्पन्न व्यक्तिको क्रोध, मान, माया, लोभादि शत्रु बाधा नहीं डाल सकते । सिंहादि क्रां जीव क्रूरता करनेमें हिचकते हैं । संकट कभी पास नहीं फटकता, संसार उसे अपना लेता है । देवाङ्गना उसे अपना सर्वस्व बनानेको तर-सती हैं । लक्ष्मी उसके गलेमें वरमाला डाल देती है । स्वर्गीय सुख उसे अपना स्वामी बना लेते हैं । प्रेमसम्पन्न व्यक्ति समन्ततः स्वर्णमयी, आनन्दमयी, दयामयी, करुणामयी ही दृष्टि डालता है । उसकी दृष्टिसे पापाण सुवर्ण हो जाता है । उसका हृदय ब्रह्माकी तरह समस्त लोकको स्थान देनेमें सपर्य होनाता है । बड़े २ समुद्र, वन, दुर्ग सब उसके हृदयमें एक कौनेमें पड़े रहते हैं । सब कल्याणमयी चीजें उसके हृदयमें लोड़ा करनेको दौड़ती फिरती हैं । समस्त शान्ति, क्षमा, धैर्यादिगुण उसमें निभन्न होना चाहते हैं, यहां तककि स्वयं परमात्मन ऐसे हृदयमें अपना मंदिर बनाकर ध्यानस्थ रहनेमें विश्वव्यापीपना सार्थक समझते हैं, कारण कि विश्व तो उसीके हृदयमें भरा हुआ है । तब सब जगत्में व्याप्त होनेकी अपेक्षा तो उसीके हृदयमें व्याप्त होना अच्छा है । पल्लवोंको हारा हारा रखनेके लिये वृत्तकी जड़ोंको सरस बनाए रहनेमें ही बुद्धिमत्ता है ।

प्रेम क्या है ? प्रेम जीवनका श्रृंगार है । प्रेम गलेका हार है । प्रेम रत्नोंका भंडार है, प्रेम जीवनका सार है, प्रेम निर्मल जलकी धार है, प्रेमका न पारावार है । प्रेम महा वीर है । प्रेम बहुत ही धीर है । प्रेम सुरमित समीर है, प्रेम हृदयका कीर है । समस्त बलक



घोनेको प्रेम उज्ज्वल नीर है । परमात्माके अमियेकके लिये प्रेम सुस्वादु क्षीर है । द्वैत-भाव नष्ट करनेके लिए प्रेम तीक्ष्ण तीर है । प्रेम निरञ्जन है । प्रेम अज्ञानीके नेत्रोंको अंजन है । मलिन भावनाओंको नर्जरित करनेको मंजन है । प्राणियोंको शांति देनेको कुञ्जन है । पति भक्ता पूज्य देवियोंके रमनेको स्वर्गीय नन्दन बन है । दुःख दरिद्रताका मञ्जन है । अनेक आपत्तियोंसे खेदखिन हृदयको मनोरञ्जन है ।

प्रेम सुख है, प्रेम शान्ति है, प्रेम पिता है, प्रेम जगत् जननी है । प्रेम भ्राता प्रेम ही साता तब प्रेमसे ही मम नाता है ।

प्रेममें जाति भेद नहीं, प्रेममें किसीसे घृणा नहीं, प्रेममें कायरता नहीं, प्रेम, ईर्ष्या, कलह, दुष्मता, नीचता, दुष्टता, आदि सबसे रहित है । प्रेम ही हमारा शरीर, प्रेम ही चौर, प्रेम खानेको क्षीर है । प्रेमज्ञान नेत्रोंमें आंगनेमें संसार प्रेममय नजर आता है । उस स्मय भेदभाव नजर नहीं आते, उच्च नीचका भेद नहीं रहता, जाति पांति सब पीछे रह जाती हैं । मान रहता नहीं, किसीका अपमान होना नहीं । नष्ट भल सब प्रेमसे श्लाघित दृष्टिगत होता है । बेकार चीज कोई दिखती नहीं, तुच्छता किसीमें भासती नहीं । उद्वेगता पास दिखती नहीं । दूर कोई नजर आता नहीं, असत्य कोई दीखता नहीं । जहां देखो वहां प्रेमके फुवारे छूटते दिखाई पड़ते हैं ।

प्रेम किमसे सीखें ? प्रेम प्रकृतिसे सीखो, प्रकृतिके जीवोंसे सीखो, प्रकृतिकी प्रत्येक

रचनासे सीखो । प्रेम कमल और सूर्यसे सीखो । प्रेम कमल और मौंसे सीखो । प्रेम चक्रवा चक्रवीसे सीखो । प्रेम चन्द्रकमलिनीसे सीखो । प्रेम उदधि चन्द्रसे सीखो । प्रेम उलूक रजनीसे सीखो । प्रेम पतंग दीपकसे सीखो । प्रेम चुम्बक लोहेसे सीखो प्रेम मयूर मेघोंसे सीखो । प्रेम जल मीनसे सीखो । प्रेम चातक जलविंदुसे सीखो । प्रेम चकोर चन्द्रसे सीखो । मिलानेके लिये प्रकृतिके सपत्त पदार्थ तैयार हैं मर तुम सीखनेको भी तैयार होनेमें शिथिलता न करो । प्रेमका पाठ सीखो और अवश्य सीखो । सीखने योग्य ही है ।

प्रेम किसपर करें ?—प्रेम दुःखियोंसे करो । प्रेम सुखियोंसे करो । प्रेम राजासे करो । प्रेम रंकसे करो । प्रेम दुष्टसे करो । प्रेम सज्जनसे करो । प्रेम गाथा करो । प्रेम शेर पर करो । प्रेम तुच्छसे तुच्छ पर करो । प्रेम बड़ेसे बड़े पर करो । प्रेम कीड़ी पर करो । प्रेम हाथी पर करो । प्रेम मिट्टीसे, पत्थरसे, जलसे, अग्निसे, राजसे, दिनसे, उजलेसे, अंधेरेसे, उच्चसे, नीचसे, सबसे प्रेम करो । परवालोंसे प्रेम करो, बाहरवालोंसे प्रेम करो, देश वालोंसे प्रेम करो, विदेशवालोंसे प्रेम करो, अच्छेसे प्रेम करो, बुरेसे प्रेम करो । चन्द्र सूर्य इस प्रेम करनेके विषयमें अशुभा हैं । स्मशानमें प्रकाश करते, रानमहलमें प्रकाश करते, जंगलोंमें प्रकाश करते, भंगी, चमार, बमोर, ब्राह्मण, अश्विज, वैश्य, शूद्र सबके यहां प्रकाश करते आने तक प्रेममय प्रकाश करते आए और करते रहेंगे । इसी लिये जाना जाता है कि प्रेमका अन्त नहीं,



प्रेमको विश्राम स्थान नहीं, प्रेमका समय नहीं, जितना प्रेम बढ़ता जायगा प्रेमकी सामग्री उससे चौगुनी बढ़ती जायगी। हृदय तुम्हारा उससे भी विशाल और घीर वीर बनता चला जावेगा, प्रेमकी सीमा नहीं है। प्रेम अनन्त है। लोक शान्त, मर्यादित होनेसे ही हम कथंचित् प्रेमको शान्त कह सकते हैं।

प्रेममें कायरता करना बुरा है। आलस, करना खराब है। विपत्तियोंसे डरना अच्छा नहीं, क्योंकि प्रेम उन्नतशील, और औदार्य-गुण विशिष्ट व्यक्तिको ही चाहता है।

प्रेमका ध्येय (लक्ष्य) छोटा नहीं है। प्रेमका ध्येय विश्वको अपनानेका है। शान्ति प्राप्त करनेका, संतप्त हृदयोंको शीतल करनेका, स्वतन्त्रता प्राप्त करनेका, दुस्त्रियोंका दुःख हर-नेका, कर्म प्रबन्धसे विलग होनेका, आत्मस्वरूप प्राप्त करनेका, सदाचारी, साहसी, वीर बनने-का, विद्वज्वापी बननेका, दर्पणवत् निर्मल होनेका, जन्मभूमि पवित्र करनेका, विश्वभूमि श्रेष्ठ बनानेका, समस्त दुःख जलोंसे छूट आ-त्मीय सम्पत्ति प्राप्त करनेका, मोक्ष कन्यासे भाषण करनेका, उससे साथ अनन्तकाल रमण करनेका जो ध्येय है वह प्रेमसे प्राप्य है। यह नहीं कि प्रेमसे किसी ध्येयकी प्राप्ति न हो सके, मरकी प्राप्ति हो सकती है। ध्येय प्रा-प्तिमें संदेह नहीं है, संदेह है हमें अपने संघे विश्रामकी प्रेम होनामें। इसकी पूर्तिमें ध्येयकी पूर्ति है। इसलिये प्रेमी बनिये, प्रेम करना सीखिये, प्रेम करिये, प्रेम कराइये और प्रेममें ही लीन हो जाइये। आइये जल्दी आइये।

हृदयसे हृदय लगाइये, वैरभाव मिटाइये, संतप्त हृदयोंको प्रेम कटोरमें ऐक्य रस पिलाइये, तब सच्चे वीर कहलाइये.....

प्रिय प्रेमी गण ! धर्मोंमें भेद है तो रहने दो, विचारोंमें भेद है तो रहने दो, जातियोंमें भेद है तो रहने दो, शरीरोंमें भेद है तो रहने दो, आचरणोंमें भेद भी रहने दो और जिन जिन बातोंमें भेद है, रहने दो; पर प्रेममें भेद कभी न रहने दो। ये उपरोक्त भेद भी प्रेम भेदसे ही हो गये हैं प्रेम भेद नष्ट होते ही समस्त भेद नष्ट हो जावेंगे। प्राणियोंकी सामग्री प्रेमसे ही सरा बन सकती है।

अन्तमें मेरी प्रेम प्रार्थना है कि प्राणीमात्र प्रेममें निमग्न हो सुखानुभव करें। विश्वको प्रेम ही प्रेमसे परिपूरित कर देंगे और अपना जन्म कृतार्थ करें। प्रेम ही प्रेम संसारमें दिखाई पड़े, वस यही लेखककी भावना है।



तमारी यादगारीमां ! *

हरी कुर्यान छ-दगानी, तमारी यादगारीमां !
भगर भाइक ! भने आन-द ! तमारी यादगारीमां !
गुगारुं आनं छगर-गनी, लडु पदवी दीवानानी !
छतां भाइके ! भने लांछी ! तमारी यादगारीमां !
हमाये ना भन्नुं पोरु ! नदमां हई तो ब्हेरु !
“अरे ! ये तो आती प्याई !” तमारी यादगारीमां !
उछ आलम उछी परवा, अये भाइक ! वने भगवा !
अपुछु न्ने हछो करवा, तमारी यादगारीमां !
हदाये, ने कंछ सदेस-निगशाने वछु अदस !
रुछ पियारमां हम्भेछ, तमारी यादगारीमां !
तमाश नाभनी वसपीर, धीरावुं छं गरिब परवर !
हई न्ने अही सदादवपर ! तमारी यादगारीमां !
स्नेहयागी.

* टी. पी. कंधारीयानी शब्दप्रतिष्ठान अमृतसर

વડોદરા રાજ્યનો

જ્ઞાતિ સુધારણાનો કાંચદો.

મેવાડા, હુમડ, નૃસિંહપુરા અને
રાયકવાલ માઈઓને સૂચના.

(લેખક. શા. માતીલાલ ત્રી. માલવી-બાકશેલ)

હિંદુ સમાજનું પ્રજા સત્તાક તંત્ર એટલું
અધુરું હિન્નભિન્ન અને અબ્યવસ્થિત થઈ પડ્યું
છે કે હાલના પ્રગતિ કાળમાં ધર્મીએક સુશિ-
ક્ષિત વ્યક્તિએને જ્ઞાતિએના નામથી થતા
જેર ધ્વંસાદ, પશ્ચાત, મમત અને જુલમનો
લક્ષ્મી વખત વિના કામચુ ભોગ થયું પડે છે.
એ ક્યોઈ સર્વમાન્ય હોય તેને પુરવાર
કરવાને વધુ દૃષ્ટાંતોની જરૂર રહેતી નથી.
આ ઉપરથી આવી સ્થિતિ સુધારવા
અને જ્ઞાતિએને નામે થતા જુલમમાંથી
નિર્દોષ વ્યક્તિએને સરંક્ષણ આપવાના
શુભ હેતુથી શ્રીમંત સરકાર મહારાજ સયાજી-
રાય ગાયકવાડની આજ્ઞા અને ઇચ્છાનુસાર
અષ્ટ વી. ૨૩ માર્ચ સને ૧૯૧૭ની આજ્ઞા
પત્રિકામાં “વડોદરા રાજ્ય જ્ઞાતિ રિવાજ
સંબંધી નિયમનો સુસંદો” પ્રજાની જાણ
અને સૂચના માટે બહાર પાડવામાં આવ્યો
હતો. એ પછી ખીજાજ અકવાલીઆમાં તે કા-
પદાના સંબંધમાં પ્રજા તરફથી કેટલીક અરજો
વધા કેટલાક વર્તમાન (મુખાબ સમાચાર, સાંજ
વર્તમાન, હિંદુસ્તાન, ગુજરાતી, સયાજી વિજય,
પ્રજા બધુ આદિ રાજદાં અને અકવાલીક)
પત્રો દ્વારા તે કાપદાની વિરૂદ્ધ અને તરફેણમાં
કેટલીક સૂચનાઓ સાથે પુષ્કળ વિવેચન કર-
વામાં આવ્યું હતું, જે ઉપરથી શ્રીમંત સર-
કારે તેના કેટલાક શુભ હેતુઓ અને લક્ષ્મી
ધ્યાનમાં લઈ તેની કેટલીક આવશ્યકતાનો
સ્વીકાર કરી સદર કાપદાને ફાજદારી કાપદાના
સ્વરૂપમાંથી ફરી તેમાં કેટલોક સુધારો વધારો
કરી ખાસ તેને માટે જુદો કાપદો નહિ કરતાં

વડોદરા રાજ્ય (સંવત ૧૯૫૨નો ૨ જો) દિવાની
નિયમ સુધારોને ઇષ્ટ જાણવાથી તેમાં કેટલોક
સુધારો કરી સંવત ૧૯૭૩ના દિવાની નિયમ ૧૪
ની અંદર ૧ લી હુસ્તી કરી દિવાની કામ
ચલાવવાના નિયમની અન્વયે પ્રકરણ દશનો
વધારો કરી દિવાની નિયમની કલમ ૩૪૯
પછી નવીન બાબ ૨૦ તથા કલમો ૩૬૦
અને ૩૬૧ મુજબ શ્રીમંતના હજુર હુકમથી
તા ૬ સપ્ટેમ્બર ૧૯૧૭ ની આજ્ઞા પત્રિકા
માં ન્યાયમંત્રી વરદી-બહાર પાડવામાં
આવ્યો છે તે નીચે મુજબ—

બાબ ૨૦ નો. જ્ઞાતિ સંબંધી કમિયારો
વિષે-જ્ઞાતિ સંબંધી કયા રીતરિવાજ વધનકારક
નથી તે નીચે પ્રમાણે—

૩૬૦ નિયમની કલમ ૫ માં જણાવ્યા
પ્રમાણે જ્ઞાતિ રિવાજ સંબંધી પ્રશ્ન જેમાં
સમાયોક્ષ છે એવી કોઈ ફરિયાદના કામમાં તે
રીત અથવા રિવાજ

ક અનીતિ બરેલો કે રાજનીતિ વિરૂદ્ધ
હોય અથવા,

રા જ્ઞાતિના લોકો પીઠાતિક અને અભિવૃદ્ધિ
અથવા પ્રગતિને અડચણ-કારક હોય, જેમકે—

(૧) તેજ પેટા જ્ઞાતિમાં અમર અમુક
સ્થળ સીમામાંજ લઈ થઈ શકે એવો મિન
જરૂરીઆત પ્રતિજ્ઞા નાંખનારો હોય અથવા—

(૨) પાપભાલી થાય એવો ખર્ચાળ હોય,
અથવા—

(૩) દેશપર્વેટન કરવાની સ્વતંત્રતા ઉપર
મિન જરૂરીઆત અકુશ મુકનારો હોય.

તો તે રીત કિંવા રિવાજ બંધનકારક
ગણાય નહિ.

અપવાદ-પરંતુ કોઈ જ્ઞાતિ કે જ્ઞાતિના જ્ઞાતિ
રિવાજ સંબંધી નિયમ સરકાર તરફથી મંજૂર
કરાવી શકે તે પ્રમાણે તે નિયમોને અનુસરીને
ને ઠરાવ થઈ શકશે.



નિવંધની કલમ ૨ (૨) મુજબનો
અલ્પત્વાર કોને છે.

૩૬૧ નિવંધની કલમે ૯ ની પેટા કલમ
(૨) મુજબ ફરિયાદ લેવાનો અને તેનું કામ
ચલાવવાનો અખત્યાર હકુમતનાળી હરકોઈ પ્રાંત
ન્યાયાધિશની આપવામાં આવે છે.

જી બી. આંબેગાંવકર.
ન્યાયમંત્રી.

ઉપર જણાવ્યા પ્રમાણે જાતિ મુદ્દાઓ
નિવંધનો સમાવેશ-દિવાની કાયદામાં કરવામાં
આવ્યો છે. પરંતુ અપવાદ માં જણાવ્યા પ્ર-
માણે દરેક જાતિએ પોતાની જાતિના રીત
રિવાજો સરકાર તરફથી પહેલેથી મંજૂર કરાવી
લેવા જોઈએ, તે તે નિયમોને અનુસરી કાવ
ચક્ર સાકશે દરમ્યાન હાથ જાતિઓ ઉપર પો-
તાના સવાસોના નિદાલ પદ્ધતિસર અને કાયદે-
સર કેમ કરવા તે જણાવવાની આવી પહેલી
હોવાથી જાતિઓએ તેને અનુસરીને તે નિયમો
કરવાના કામે મદદ થાય તથા તે હેતુઓને
અવલંબીને જાતિઓને ઇન્સાફ કેમ આપવે
તે જાણતની સુચના આગેદર્શક જાહેરનામા
રૂપે ના. દિવાન સાકેમની સહીથી તા. ૭ સ-
પ્ટેમ્બર ૧૯૧૭ને રોજ પસિદ થયેલી તેના
કેટલોક સાર નીચે મુજબ પ્રગટ કરવામાં
આવે છે.—

૧. કાયદો ગુન્દો માને તે કૃત્યને માટે
જાતિએ શિક્ષા કરવી નહિ. (કાંઈ કૃત્ય જે તે
વખતે અમલમાં હોય તે કાયદા પ્રમાણે ગુન્દો
ગણાવું હોય તો તે જાણતમાં જાતિ તરફથી
શિક્ષા નહિ કરતાં કાયદા પ્રમાણે શિક્ષા કરા-
વવી જોઈએ.)

૨. શિક્ષા પ્રમાણ પ્રમાણમાં કરવી (જે
કૃત્ય બદલ શિક્ષા કરવાની તે તે કૃત્યના પ્રમા-
ણમાં કરવી જોઈએ.)

૩. કૃત્ય માટે દાગુજર કરવી.
(મિત મદદવતું અગર કુદરતી કૃત્ય હોય તો,

તે સંબંધમાં શિક્ષા નહિ કરતાં દરમુજર
કરવી જોઈએ.)

૪. ગંભીર સ્વરૂપનાં કૃત્યો માટે જાતિ બહિ-
ષ્કારની શિક્ષા કરવી. (જાતિ બહિષ્કૃત કરવાની
શિક્ષા વિશેષ ગંભીર પ્રકારની હોઈ જાતિ
બહિષ્કૃત થયેલા સખસના વારસા વિગેરે કુદરતી
હકોને હાનીકારક હોય છે. તેથી તેવી શિક્ષા
જે કૃત્યોને માટે કરવામાં આવે તે કૃત્યો પણ
ગંભીર સ્વરૂપનાં હોવાં જોઈએ.)

૫. ધર્મશાસ્ત્રના અલ્પસંખ્ય વધારાની જાણ-
તોમાં શિક્ષા કરવી નહિ. (ધર્મશાસ્ત્રના અનુ-
શાસન બહારની જાણતોમાં જાતિએ શિક્ષા
કરવી નહિ.)

૬. ટુંક સમયમાં ચોકશી કરવી.

(કાંઈ કામની જાતિની રૂઢીએ ચોકશી
કરવાની હોય તે ચોકશી કરવાને કારણે ઉત્પન્ન થયું
હોય ત્યાર પછી જોગ્ય ટુંક સમયમાં જોઈએ)

૭. ચોકશી વિષે રાજવાની સાચવેલી (કાંઈ
ચોકશી કેવળ દેવ ભાવથી અગર જાતિના કોઈ
સખસને નુકશાન કરવાના હેતુથી કરવામાં
આવતી નથી. એ વિષે ખાસ સાચવેલી રાખવી.)

૮. ચોકશી ન્યાયની પદ્ધતિ પ્રમાણે કરવી.
(જે સખસ સંબંધે ચોકશી કરવાની હોય તે
સ્વીકારેલી ન્યાયની પદ્ધતિ પ્રમાણે કરવી જોઈએ-
ક. તેના વિરુદ્ધ જે હકીકત હોય તેની તેને
લેખી સુચના આપવી. જ. તે હકીકતનો તેના
તરફથી જોગ્ય ખુલાશો કરવા માટે તેને જરૂર
મુદત આપવી. ય જાતિના લોકોને કારણેલી
રીતે એક જ બોલાવો તેમના સમક્ષ તે જે
ખુલાશો કરે અગર પુરાવો આપે તે લેવો
અને (ધ) એકદર હકીકતનો પૂર્ણ વિચાર
કરી લેખી કારાવ કરવો.)

૯. પંચ પ્રતિષ્ઠિત લઘુ વાકિફગાર હોય
જોઈએ. (કાંઈ પ્રસંગે જાતિ વિષયક તકરારોનો
નિર્ણય કરવાનું કામ પંચને સોંપવામાં આવે
ત્યારે પંચ તરીકે નિમેલા સખસો પ્રતિષ્ઠિત
તથા વાકિફગાર હોવા જોઈએ.)



૧૦. કૃત્યમાં વર્જનનો પળ સમાવેશ કરવો.
(ઉપર દર્શાવેલી કલ્પનામાં કૃત્યનો ખોધ કરનાર
સખ્દમાં વર્જનનો પણ સમાવેશ કરવો.)

૧૧. ઉપરની સુચના કરવાનો હેતુ-તા. ૬
માહે સપ્ટેમ્બર સન ૧૯૧૭ની આગા પત્રિકા
ભાગ ૨ના પૃષ્ઠ ૪૮ ઉપર પ્રસિદ્ધ કરેલી દિ-
વાની નિયમ કલમ ૩૬૦ નીચે આપેલા
અપવાદમાં ગાંતિઓએ પોતાની ગાંતિના નિયમો
સરકારથી મંજૂર કરાવી સેવા કરાવેલું છે તેથી
તેના નિયમો કબાના કામે ગાંતિઓને મદદ
થાય તથા ગાંતિના કરાવ વિરૂદ્ધ દિવાની ન્યાયા-
ધિશીમાં દાદ માગવાના પ્રસંગ ઓછા આવે
અને દદાય તેવો પ્રસંગ આવે તો ન્યાયાધિ-
શીને તકરારનો નિકાલ કરવા સુગમ થાય તે
માટે ઉપરની સુચનાઓ કરવામાં આવે છે.
તા. ૭ માહે સપ્ટેમ્બર સન ૧૯૧૭.

મનુષ્યાઇ જોન. દિવાન.

આ કામદારને આધારે હવે નીચે લખેલી
નતના કોઇ પણ ગાંતિના કામદાર કોઇ પણ
માણસને બંધનકારક ગણાશે નહિ.

૧. અનીતિ ભરેલા, ૨. પાપમાની થાય એવા
ખર્ચાળ, ૩. દરિયાપારની (પરદેશગમન) મુસા-
ફરી અટકાવનારા, ૪. રાજનીતિ વિરૂદ્ધ, ૫. શારીરિક
ખીલવણી તથા સાંસારિક ચડતી અટકાવનારા,
૬. આગળ વધવામાં આડખીલા ૩૫ ખીળ
કેમને અને ૭. પેટા ગાંતિમાંજ અગર અમુક
હદમાંજ લગન કરવાની ફરજ પાડનારા. વળી
એમ પણ કરાવેલું છે કે ગાંતિ સંબંધી પ્રશ્ન
જેમાં સમાયેલો હોય તેવી દરિયાદોની તપાસ
કોર્ટો પજુ કરી શકશે; વળી બંધનકારક નહિ
એવા કામદાર તોડનારનો જો ગાંતિ દંડ લે તો
પ્રાંત ન્યાયાધિશી હુકમનામું કરી આપી હુકમ-
નામાની બળવણીમાં તે દંડ ખર્ચ અને નુકશાની
સાથે દરિયાદોને પાછો અપાવી શકશે.

નોટ-ઉપર પ્રમાણે હજુર હુકમથી કરેલું-
કોઇ ગાંતિઓ સંબંધી તકરારો સરકારી અદા-
લતોમાં ચાલી શકશે. ૬ અપવાદમાં જણાવ્યા

પ્રમાણે દરેક ગાંતિએ સદર કામદારને માન આપી
તથા તેને અનુસરી પોતાની ગાંતિના રીત
રિવાજો તથા નિયમો સરકાર તરફથી મંજૂર
કરાવી લીધા હશે તો તેને અનુસરીને ગાંતિને
પોતાની તકરારો સાંભળવા અને તેનો નિકાલ
કરવાનો અધિકાર સરકારે સ્વીકારેલો છે, જેથી
એક રીતે આપણું ગાંતિ બંધારણ હાલની
કોલાહલ અવ્યવસ્થાને ખેંચતાણના જમાનામાં
નબ્તપ્રાયઃ થઇ જવાનાં બિન્હો દરેક સ્થળે
નમરે પડે છે, તે બંધારણને સજ્જન ને સુદ્ધ
કરવાની તક દરેક સમાજને પ્રાપ્ત થઇ છે,
જેના લાભ લેવો તે દરેક ગાંતિના હાથમાં
છે, તો તે નિયમાનુસાર ગાંતિ બંધારણ ને
નિયમોને માન આપી ઇન્સાફ આપવાનું શરૂ
કરશે તો કોર્ટ અને અપીલ કોર્ટને ગાંતિ સુ-
ધારાના કામદાર સંબંધે સત્તા આપવામાં આવી
છે ત્યાં જવાનો પ્રસંગ ઓછો આવશે.

આ કામદારો ગાયકવાડી રાજ્યમાં વસતી
તથા તે હદમાં લગન તેમજ ગાંતિમેળા વગેરે
પ્રસંગે આવી ન્યાતિ સંબંધે પંચ મારશલે કરાવ
કરતી હરકોણ ગાંતિ તથા સોજના સંજ્ઞાની આ-
પણી વીસા મેવાડા શાંતિ; ક્ષેત્ર, ડગલાં આદિ
ગંભીરા નુસીલકોર; આરણ પ્રાંતિજ વિભાગ
પૈકી ખેરાણ દેહગામ, આદિના દશા-વીસા
હુંમર; વ્યારા મહુવાના રાયકવાળ વગેરે
આપણી વધુકી જોન કોમને લાગુ છે.

નીચે લખ્યા પ્રમાણેના હાનિકારક રિવાજો
પૈકી કેટલાક ગુન્હાને પ્રાપ્ત થઈ શકે છે.

ચાલ્લમ, કજોડાં, કન્યાવિક્રય, વૃદ્ધ લગ્ન-આ ચારે
હાનિકારક રીવાજો માણસાઇ અને નીતિ વિરૂદ્ધ
છે. એટલુંજ નહિ પણ અનિતિને ઉત્તેજન
આપનાર અને ગાંતિના માણસોની શારીરિક
ખીલવણી તથા ચડતી ચલમાં વિધ ૩૫ છે.
સરકારે એટલા માટેજ પ્રતિબંધ કર્યો છે તે
આપણા કિતને માટેજ છે.

૨. ચાલ્લમ-કન્યાની ઉંમર ઓછામાં ઓછી
૧૨ ને વરની ઉંમર ૧૬થી ૧૮. તેથી ઓછી



ઊમરે લગ્ન કરનારનો નિર્બંધની કલમ ૫-પ્રમાણે ગુન્હે ગણી શકાય.

૩. વાલ્ક વૈવીશાલ વંધ થવાની જહર-આ રિવાજને ટકાવી રાખનાર મિથ્યા કુળાભિમાની-ઓજ છે. તેઓની માન્યતા એવી છે કે અમારાં બાળકો વખતે મોટા થઈ જતાં કુદરતી ખોડ આવવાથી બદશીકલ કે લુલાં લંગડાં થઈ જાય તો કુંવારા રહી જાય, એવા વિચારથી ઘોડીઓ (પારણી)માંથી પ્રુછાય તો અમેા કૃતાર્થ થયા. આવી રીતનાં નાનપણમાં કરેલાં વૈવીશાળ કુદરતી ખોડ આવવાં છતાં પણ છુટી શકતાં નથી. આવી રીતે વર વધૂના પ્રેમી જોડાંની છંછળીને આરંભ તેમનાં માઆપોના હાથથી થાય છે એટલે વર ન જાણે કન્યા તે શું ? અને કન્યા ન જાણે વર તે શું ? એવી રિવાતમાં તેમનાં વૈવીશાળ થતાં હોવાથી, તેમજ તેમાં વખતે કન્યાથી વરની ઊમર નાની જોવામાં આવે છે, જેથી આવાં બાળ વૈવીશાળ (બાળ વિવાહ) બંધ કરી વૈવીશાળ વખતે કન્યાની ઊમર ઓછામાં ઓછી ૬થી ૮ અને વરની ૯-૧૧ નો તફાવત રાખવો. આથી ઓછી ઊમરનાં બાળ વૈવીશાળ લગ્ન થતા પહેલાં અટકાવવા તથા તેમાં ફેરફાર કરી યોગ્ય જોડાં સાથે લગ્ન કરવા છુટ આપવી, અને આવાં બાળ વૈવીશાળ પણ નિર્બંધની કલમ ૫ પ્રમાણે ગુન્હેગાર ગણી શકાય.

કજોહાંવાઝાં વાઝલગ્ન-એટલે કન્યાની ઊમર ૮ થી ૧૦ વર્ષ અને વરની ઊમર ૩૦થી ૪૦. વળી કોઈ વખતે કન્યાની ઊમર ૧૩થી ૧૫ અને વરની ઊમર ૧૦થી ૧૧ સુધી. આવાં લગ્ન કનેડાં વાળાં લગ્ન ગણાય છે. આવાં લગ્ન કરનારે ફાજદારી ગુન્હે કર્યો ગણાય છે. વધત્રી જતી અનીતિ તથા તેનાં ખાનગ્ય પરિણામને દાખો દેવાને માટે કૃપાણુ સરકારે જે કાયદો કર્યો છે તેને વધારી લઈ તથા નેત્રે અનુસરીને તેમાં લગ્ન વૈવીશાળ (વિવાહ) થતાંની સાથે લગ્ન ધના પહેલાં

અટકાવવાની જરૂર છે. તેથી કૃપાદોષ છે. આવાં કનેડાંવાળાં લગ્ન, વિવાહ થયા પછીથી એટલે લગ્ન થતા પહેલાં અટકાવવાની જરૂર છે. આવા કનેડાંવાળાં લગ્ન વિવાહ થયા પછીથી એટલે લગ્ન થતાં પહેલાં બદલી ન શકે તો, તેને નિર્બંધની કલમ ૫ પ્રમાણે જ-વાજદાર ગણવા. આવાં લગ્ન વેળાસર અટકાવવાથી ગાતિમાં પડતી મુશ્કેલીઓ ઓછી થઈ હિંદુશાસ્ત્ર પ્રમાણે બાળ વિધવાને વિધવાપણાનું જે દુઃખ સહેવું પડે છે તે તેનાથી દુર થઈ શકશે.

૫. કન્યા વિક્રય-હુનિયામાં જન સંખ્યાને ઉપયોગી દરેક વસ્તુ જેવી કે ખોરાકી, પોસાકી, પશુ તેમજ બીજી કેટલીક ચીજો પૈસા લઈ વેચવામાં આવે છે તેવીજ રીતે કેટલીક ગા-તિઓમાં સ્વાર્થો મનુષ્યો પોતાની બાળાઓને તેના બલિધનના સુખને વિચાર નહિ કરતાં કોઈ પણ પૈસા આપે તેવા અયોગ્ય વૃદ્ધ વર સાથે એક પશુની માફક ધાતકીપણે લીલામ કરતા જોવામાં આવે છે. ના. હિંદીશ સરકારે આફ્રિકામાંથી ગુલામી ધધો બંધ કર્યો ત્યારે આપણી દયાણુ કામમાં છાની યા ઊંઝાડી રીતે બાળાઓનો વિક્રય થાય છે. ધણુ આફ્રિકાની વાત છે કે-તે વિક્રય બીજા કોઈને હાથે નહિ પણ તેમના માઆપોના હાથથીજ થતો જોવામાં આવે છે. આ દૃશ્ય માણુમાઇને રાજનીતિ વિરૂદ્ધ છે. માટે તેવું દૃશ્ય કરનારને નિર્બંધની કલમ ૫ ની પેઠા કલમ ૬ પ્રમાણે ગુન્હેગાર ગણવો.

૬. જુદલગ્ન-પુરૂષની ઊમર લગભગ ૪૯ થી ૫૦ થયા છતાં પહેલી વારની ઓને પુત્ર અને પુત્રીની સંતતિ (પ્રજા) હોવા છતાં મિથ્યા કુળાભિમાને કરી શરીરો લગ્ન કરવાની ખાએસ ધરાવતો હોય તેવા મનુષ્યને નિર્બંધની કલમ ૫ પ્રમાણે ગુન્હેગાર ગણવો. ઉપર જણાવ્યા પ્રમાણે કન્યાવિક્રય જેવા આશ્ચર્ય રિવાજને ટકાવી રાખનાર તથા નેને ઉનેજન



આપનાર વૃદ્ધ લક્ષ્મી દિગંધરની મહાપ્રજ્ઞ છે માટે તે સત્વરે અંધ થવાની જરૂર છે. તેવું કૃત્ય કરનારને કાયદા મુજબ યોગ્ય શાસન મળવું જોઈએ.

૭. એક સ્ત્રીની હયાતિ દરમ્યાન વાંજી-એક સ્ત્રીની હયાતિ દરમ્યાન તેને ત્રીસ વર્ષ પુરું થયા પહેલાં અગર પુત્ર અને પુત્રીના છતાં ફરજદારે અંધ કારણે સિવાય તેમજ હયાત સ્ત્રીની મંજુરી મેળવ્યા સિવાય તેમને તેને માટે પુરતો બંદોબસ્ત કર્યા સિવાય બીજી સ્ત્રી કરનારને ગુન્હો ગણવો.

૮. ફરજિયાત જમણવાંર-જેવી કે લગ્ન પ્રસંગે, સીમંત (અંધરણી) તેમજ મરણ પછી પાડેના ફરજિયાત ખર્ચો જેવા કે-જગણવાંર પ્રસંગે આખી ન્યાત જમાડવી, અમુક પગલાં લેવાઈ કરવું, અમુક પ્રસંગે અમુક ખર્ચ કરવો જોઈએ આના ફરજ પાડીને કરાવવામાં આવતા ખર્ચો કોઈપણ સમ્પત્તી રિથતિના પ્રમાણમાં પાયાવાલી થાય તેવા ખર્ચાળ હોય તો નિર્બંધની પેટા કલમ ૨ પ્રમાણે ગુન્હોના પાત્ર થઈ શકે.

ફટાણાં વિમસ્ત ગીત-આ પરાયણ અને અનીતિ ભરેલા તેમજ ભવિષ્યની પ્રજા ઉપર ધણી માટી અસર નીપજાવનારો રિવાજ સત્વરે અંધ થવાની જરૂર છે. એ પણ નિર્બંધની કલમ ૫ પ્રમાણે ગુન્હો ગણી શકાય.

૧૦. પેટા જાતિમાં અગર પેટા સમુદ્ધ અગર અમુક હદમાં લગ્ન કરવાની ફરજ પાડનારો જાતિનો કાયદો-હવેથી સરકારના કાયદા પ્રમાણે જાતિના કોઈપણ માણસને અંધનકારક ગણાશે નહિ.

૧૧. સાસુ સ્ત્રી માણે સપત્ની અને એક જ ધર્મની કન્યા એટલે દરેક જાતિની-કોન્ફેડેન્સ અને સમાજે સ્વીકારેલા નિયમાનુસાર તેવી તેવી જાતિની કન્યા લાવનારને ને આપનારને માટે જાતિ દંડ યા કોઈ બીજી સજા કરી શકવી હોય તો તે આ કાયદા પ્રમાણે કરી

શકે નહિ, અને કદાપિ કરે તો નિર્બંધની કલમ ૧ પ્રમાણે તેવી રીતનો દંડ યા સજા કરનાર ગુન્હોના પાત્ર થઈ શકશે-આવી રીતે અન્યાય મળવાથી ફરિયાદી હકુમતવાળા પ્રાંત ન્યાયાધિશીમાં અપીલ કરશે તેથી તે ન્યાયાધિશી ફરિયાદીને હકુમનામું કરી આપી-હકુમનામાની બજાવણીમાં તે દંડ ખર્ચ અને નુકશાની સાથે ફરિયાદીને તે પાછો આપાવી શકશે.

૧૨. મળ પ્રસંગે અયોગ્ય અને મર્યાદા રહિત કોઈ ક્રિયા-જેવી કે અમુક વિધવાએ ધણીના મરણ પછીથી જરૂર જનર કે જાહેર રસ્તા ઉપર જાણી છાતીએ કુટવું, મોટે સાંદેથી હાથપીટની છુમો પાડી રડવું, અથવા અમુક દિવસ સુધી અમુક રીતે રડવું યા શોક પાળવો યા બીલકુલ ઘરમાંથી બહાર નીકળવું નહિ, આવી ફરજ પાડનારા જાતિના રિવાજો શારીરિક શક્તિ તથા તન્દુરસ્તીની હાનિ કરનારા હોવાથી તેમને કંટલાક યોગ્ય સુધારો કરી તે રિવાજ જેમ જાને તેમ ચોક્કસ કરવો.

૧૩. દરિયાવારની મુલાકાતી (પરદેશ ગમન અટકાવનારા-સાર્વભૌમ બિટીશ સર્વેન્ટનાની શીતળ છાયા ભારતવર્ષમાં પ્રસાર્યા પછીથી આંખી ફનીયાના દરના મુલકો એટલે મુરોષ, અમેરિકા એશિયા; આફ્રિકા, અને આસ્ટ્રેલિયા વગેરે ખડોના મુલકો સાથે ભારતવર્ષ વ્યાપાર અને રાજકીય સંબંધથી જોડાયેલા જોવામાં આવે છે. ઉપર જણાવેલા સુધારામાં આગળ વધેલા મુલકોની પ્રજા દિન પ્રતિદિન વ્યાપાર ઉદ્યોગો દિમાં ઉન્નત દશાએ પહોંચતી જાય છે, વેપાર ઉદ્યોગોમાં વંધારે છુટાપણના નિયાર ધરાવવાવાળા પરદેશીઓની સામે હરીફાઈમાં ઉતરવાને માટે પરદેશગમનની ખાસ જરૂર છે. દિંદના કેટલાક કેળવણી ૧૭મી જાતની રાષ્ટ્રિય કેળવણી તેમજ આપાર ઉદ્યોગોદિને માટે ઇંગ્લેન્ડ, ફ્રાન્સ, અમેરિકા, ચીન, જાપાન આદિ, દરિયાવારના ને દરના મુલકોમાં જઈ-આવ્યા છે તેઓ જાતિથી બ્રૅટ થાય છે એવી આ



દેશના જુના વિચારના લોકોની માન્યતા હોય તેને લીધે તેવા પરદેશગમન કરી આવેલા કેટલાક સુશિક્ષિત કેળવણેલા સાહસિકોને જ્ઞાતિ બહિષ્કાર વગેરેની શિક્ષા ખમવી પડી છે, અને કેટલાકને તેવી શિક્ષા ખમવી પડેલી, જેથી ઔદ્યોગિક મારફતે તેમણે વ્યાજબી ન્યાય મેળવેલો છે, એવા અનેક દષ્ટાંતો સાચાને આધારે સિદ્ધ થઈ ચુક્યા છે, જેથી પરદેશગમન કરવાને હવે કોઈ બંધનતા બાધ નથી. કદાચ તેવી બાબતમાં કોઈ વાંધો હોય, અગર જ્ઞાતિ બહિષ્કારની શિક્ષા કરે તો તે નિર્જનની કલમ પ ની પેટા કલમ ૩ પ્રમાણે ગુન્હાને પાત્ર થઈ શકે.

૧૪. આગળ વધવામાં આદલ્લીલા રૂપ— ઉપર જણાવ્યા પ્રમાણે કેટલાક જ્ઞાતિ દિવાળી સાંસારિક ઉત્તરિને બદલે અધ્યાત્મિક પહોંચાડનાર ને જન સમાજની ચક્તી થવામાં વિશ્વ તેમજ આદમીલા રૂપ છે. તેને માટે મારો અભિપ્રાય એવો છે કે—

પ્રથમ તો આપણી કેટલીક કોમ સમૃદ્ધ અને પેટા સમૃદ્ધિમાં એવી રીતથી વહેંચાઈ ગયેલી છે કે—એક એક જ્ઞાતિની અંદર સો, પચાસ અને પચીસ પચીસ ધરના દિલગીરી ભરેલી હદ સુધીના સમૃદ્ધો અને તડ પડી ગયેલાં છે, જે એક બીજા સાથે મિથ્યાભિમાને કરી લગ્ન સંબંધથી જોડાઈ શકતા નથી. આવી સંકુચિત મર્પદાનું ન્યાં સુધી લેવું વિચાર કરી એક બીજા સાથે લગ્ન સંબંધથી જોડાઈ શકશે નહિ. ત્યાં સુધી જાગ-લગ્ન, દંતોડાં, દન્યાચિદ્રય, રૂદ્ધ લગ્ન આદિ દાનિકારક દિવાળી આદિ શકશે નહિ. તેને માટે તો દયાળુ ગાયકવાડ સરકારે જે જાત સુધારણાને કાયદો પસાર કર્યો છે તેને માન આપી આવાદમાં જણાવ્યા પ્રમાણે જ્ઞાતિ ઉત્તરિને માટે સમૃદ્ધ અને પેટા સમૃદ્ધે જોડાઈ લઈ ઉપર જણાવ્યા પ્રમાણે કેટલાક દાનિકારક દિવાળી આપણી જ્ઞાતિમાં છે તેમાં

યોગ્ય સુધારો કરી આપણી જ્ઞાતિના રીત રિવાજો સરકાર તરફથી મેંજુર કરાવી લેવા જોઈએ કે જેથી તે નિયમને અનુસરીને જ્ઞાતિ તરફથી તકરારો સાંભળા નિકાલ કરવાનું આપણને સુગમ થાય, તેમજ જ્ઞાતિ તરફથી તકરારો કોર્ટમાં જવા પામે નહિ.

હવે આ જ્ઞાતિ સુધારાના કાયદાને અનુસરી દરેક જ્ઞાતિના પંચે ન્યાય કેમ આપવો, તેના સંબંધમાં ના. દિવાળી સાહેબની સદી સાથે જે માર્ગદર્શક બહેરનામું પ્રસિદ્ધ થયેલું છે તેને અનુસરીને ઇન્સાફ આપવાની જરૂર છે.

હવે પંચે ઇન્સાફ કેવી રીતે આપવો તે સંબંધમાં જ્ઞાતિ તરફથી એક કમીટી નીમી તે મારફતે ગુન્હાની તપાસ તથા નિકાલ કેમ કરવો તે નીચે પ્રમાણે—

૧. પંચ પ્રતિષ્ઠિત ને વાકેફગાર હોવો જોઈએ.

૨. દરેક જ્ઞાતિના, દરેક રિવાજના અને ગામના વધુ મતે—સુઘ, પ્રતિષ્ઠિત પ્રમાણિક ને વાકેફગાર માણસને પેતાના તરફથી જ્ઞાતિ પંચ (કમીટી) માં નીમવો. આ પ્રમાણે ગામનાર નિભાયેલા મેંજરો નિર્ણય રથજે એકા મતવા પછી વધુ મતે તે મેંજરો તૈયારી જેને વધુ મત મળે તેને સરપંચ નીમવો.

૩. સરપંચે કમીટીના હાજર મેંજર રથજે જે સાદીઓની જુલ્યાની લેવાની હોય તે દરેકને એક જ બાતના સોગન આપી ગુન્હાની ચોક્કસી કરવી.

૪. આરોપીને સોગન ખવરાવવા નહિ.

૫. કમીટીના મેંજરો ચાલતા ગુન્હાની ચોક્કસી કરવામાં મદદગાર થઈ પડે એવા સવાસો સરપંચની મેંજુરી મેળવી પુછી શકશે.

૬. તેના તેજ સવાસો કરીથી વખત સુધાવનારા અગર નકામા દેશન કરી કંડાગો આપનારા, તેમજ કોઈની ઇન્જાતને દાની કરવાના સવાસો પુછવા સરપંચ ના પાડશે.

૭. તપાસ પુરી થયે સરપંચે સમગ્ર હાજર રહેલા મેંજરોના મત લઈ કે કરનાં વધુ, મંદ



મળે તો ગુન્હો સાખીત થયો, એમ કંથમાં લખી સરપંચ તરીકે તારીખ નાંખી પોતાની સહી કરી અને ગુન્હા માટે ઠરાવેલી સભા જણાવવી, એમ કંથમાં લખવું.

૮. કમીટીના મેમ્બરોએ તપાસ ન્યાયી હોય તે દરમ્યાન નકામી મરખાડ કરવી નહિ, કોઇની મરકરી યા તિરસ્કાર કરી હલકા પાડવા નહિ પણ એક ગૃહસ્થને છાજે તેવી ગંભીરગત ન્યાય અને ત્રવેક બુદ્ધિથી પક્ષપાત યા અન્યાય ન થવા પામે તેવી રીતે ચોખ્ખા અને પ્રમાણિકપણાથી નિસ્વાર્થપણે ઉમદા સ્વભાવથી જેમ અને તેમ જલહી કામનો પાર આવે ને કોઇપણ ન્યાય દીકાને પાત્ર ન થાય તેવી રીતે વર્તવું.

૯. સદર કમીટી યા પંચને કોઇ મનુષ્ય પક્ષપાત રીતે વર્તન કરતો માલુમ પડે તો તેને કમીટીમાંથી દુર કરી બીજા લાયક માણસની નીમણૂક કરવી.

૧૦. ફેટલીક ગાંતિઓમાં ગુન્હેગારના ખર્ચે પંચો ભરવાનો રિવાજ છે તે રૂઢિ કાઢી નાંખી પંચ બેઠું મળે ત્યારે તેને ખર્ચ પંચના ખર્ચથીજ કરવો. ગુન્હાને માટે કૃત્યના પ્રમાણમાં દંડ લેવો પણ તે ઇન્માફ તે ગાંતિના ખર્ચેજ કરવો. તેમજ ગાંતિ પંચે સહવાને સરખો ન્યાય મળે તેવી સંભાળ રાખવી. ના. દિવાન સાહેબની સહીથી ઉપર જણાવ્યા પ્રમાણે જે માર્ગદર્શક નહોતેનામું પ્રગટ થયેલું છે, તે મુજબ ગુન્હાના પ્રમાણે યોગ્ય ઇન્સાફ થઇ સભા થવી જોઇએ.

૧. બિન મહત્વનો ગુન્હો માફ કરવો.

૨. દેવપ્રાપ્તી અગર કોઇને ગુકચાન કરવાના ઇરાદાથી ચોક્કસી કરવામાં આવતી નથી એ વિશે ખાસ સાવચેતી રાખવી.

૩. આરોપી (ગુન્હેગાર) વિરૂદ્ધ જે હકીકત હોય તેની તેને લેખી ખબર આપવી.

૪. હકીકતનો તેની તરફથી યોગ્ય ખુલાસો થવા સુધી આપવી.

૫. ગાંતિના લોકોને ઠરાવેલી રીતે એકંત્ર બોલાવી તેમના સમક્ષ જે તે ખુલાસો કરે અગર પુરાવો આપે તે લખવો, અને એકંદર હકીકતનો પૂરું વિચાર કરી લેખી ઠરાવ આપવો.

૧૧. જે જે વખતે પંચની નબરમાં આવે તે વખતે તેટલી રકમનો દંડ પંચવાળાઓ કરી રાકે, તેવી રૂઢી બંધ કરી ગુન્હાના પ્રમાણમાં ઉપર જણાવ્યા પ્રમાણે અન્યાય તેમજ પક્ષપાત થવા પામે નહિ તેવી રીતે ન્યાય આપવો.

૧૨. નહિ વહેંચણુ થયેલા પુરવતી વિધવા માટે હાલની મોંઘવારી સ્થાનમાં લઇ યોગ્ય રકમનું પંદર કાયમ રાખી પછીથી ઓરાડો પોરાડોની રકમ નક્કી કરી આપવી. તેમ નહિ કરનારને ગાંતિએ યોગ્ય સજા કરવી.

૧૩. ઉપર પ્રમાણે ગાંતિના ગુન્હેગાર પાસેથી આવેલી દંડની રકમ અત્યુક સદર ઠેકાણે જમે રાખી તેના ઉપજ ખર્ચનો મોખો હિસાબ વાર્ષિક રિપોર્ટમાં પ્રગટ કરવો.

૧૪. ઉપર મુજબ દંડની આવેલી રકમમાંથી કે ભાગ ગાંતિ પંચના ખર્ચને માટે કાયમ રાખી બીજા નાણાં-ગાંતિના ગરીબ વિધવાઓને સ્કોલરશીપ, નીતિ પથે ચાલનાર ગાંતિની ગરીબ વિધવાને ગુપ્ત દાન વગેરે બીજાં ગાંતિહિવના કામમાં વાપરવા.

નોટ-આ સુચના કરવાનો હેતુ એ છે કે-ના. ગાયકવાડ સરકાર તરફથી ગાંતિ સુધારાને માટે જે કાયદો બહાર પડેલો છે તેના અપવાદમાં જણાવ્યા પ્રમાણે ઉપર જણાવ્યા પ્રમાણેના યોગ્ય સુધારો કરી આપણી ગાંતિના રીત રિવાજો, કાયદેસર રીતે સરકાર તરફથી અંતર કરાવી લેવાની જરૂર છે કે જેથી તે પદ્ધતિ પ્રમાણે દરેક ગાંતિ પોતાના પંચ મારફતે ન્યાય આપી શકે. તેને માટે આ સુચના આપવામાં આવી છે. જે સર્વના હિત માટે છે તેમ તેનું સર્વે ગાંતિ અનુકરણ કરશે એવી આશા રાખું છું. આ સંબંધી વધુ વિગત માફેતા. ૬ અક્ટોબર ૧૯૧૭ની આદાપત્રિકામાં જોવું.



શ્રાવકનાં વારં વ્રતો ।

પ્રિય ધર્મ જાણીયો,

આપણે જે શ્રાવકનાં નામ ધરાવતા હોઈ તે આપણે આપણાં વ્રતો એટલે પાળવાના કાયદાઓ શું શું છે તે ખાસ જાણવું જ નોંધએ. શ્રાવક કુલમાં આપણો જન્મ થયો એટલે એમ માનવું ન નોંધએ કે આપણે શ્રાવક છીએ. શ્રાવક કોણ ? જે બાર વ્રતોનું પૂર્ણ રીતે માન રાખીને પોતાનું વર્તન કયો જન્ય તેજ શ્રાવક છે. એ પાળનાર પછી બધે વાણીઓ, બ્રાહ્મણ, ક્ષત્રિય વા શૂદ્ર હોય, અરે શૂદ્ર તો શું પણ તે જે કદિ ને બંગી અગર દેડ પણ હોય તો તે વ્રતો ન પાળનાર શ્રાવક કરતાં એક છે. આ વ્રતો ખાસ શ્રાવકોના પાળે એવો કાંઈ ઇનકારો અપાયો નથી. એ તો જે પાળે તેનાં છે. દરિયાના પાણીનો માલિક કોણ ? ઉપયોગ કરનાર. તેવીજ રીતે આ વ્રતોને અનુસરી જે કર્તવ્ય કરે છે તેજ ખરો શ્રાવક છે. અહા ! પણ જેની બાહ્યોમાં પણ કેટલાક એવા પડયા છે કે અંગેતો કે જે વ્રતોનું આચારણ કરે છે, આચારણ નહિ તો કાંઈ પોતે છે તેના કરતાં ધર્માનુસાર રિચ-તિમાં રહે છે તેવાને પોતાની નાતમાં પણ લેતા નથી. આ ક્યાંનો ન્યાય ? હે જાણીયો ! જે શ્રાવક ધર્મ પાળવાને માંગતો હોય તેને તમે ક્યાં અગત્રો કરો છો ? શું બુઝી ગયા કે પુરાતન કાલમાં જેન ધર્મ સર્વે બાપક હતો. સર્વે જેની દત્તા તે વખતે શું કાંઈ નીચ ઉચ ધર્મો નહિ કરતા હતા ? હે જાણીયો ! આપણા આવા અજ્ઞાનને લઈને આપણે આપણી કામની ચકની થતાં અટકાવીએ છીએ. હા ! અજ્ઞોસની વાત છે કે આપણા જેનીજીની સંપન્ના કાલાનુક્રમે ધરતો જન્ય છે અને જન્ય રહે છે તે જે આવાજ વિચાર રાખી જપ્યા એમી રહે તો આપણી કામનો નાશ થતાં

વાર ન લાગે. જે તમે વૃદ્ધિ કરવા માંગતા હો તો શું તમને આ વિચારો અયોગ્ય લાગે છે ? યોગ્ય લાગતા હોય તો શા માટે અમલમાં મુકતા નથી ? બાર વ્રતો ક્યાં ક્યાં છે તેનો હવે વિચાર કરીશું.

વ્રતો બાર છે અને તેનાં ત્રણ ભાગ પાક-વામાં આવ્યા છે. તે અણુવ્રત, ગુણુવ્રત અને શિક્ષાવ્રત છે. આ ભાગોનાં પણ પેટા ભાગો છે. હવે આપણે પહેલાં વિચાર કરીશું કે અણુ-વ્રત એટલે શું ? હિંસા, જૂઠું, ચોરી, મૈથુન અને પરિગ્રહ એ પાંચ પાપોનો રચૂલપણે લાગ કરવો અને અણુવ્રત કહે છે,

હવે આપણે ગુણુવ્રત પર વિચાર કરીશું. મૂલગુણને વધારવા માટે દિગ્વ્રત, અનર્થદંડ, અને ભોગોપભોગ પરિમાણ એ ત્રણ “ગુણુવ્રત” છે. મઘ, માંસ, અને મધનો લાગ કરવો અને પાંચ અણુવ્રત ધારણ કરવાં એ આક શ્રાવકના મૂલગુણ છે.

શિક્ષાવ્રત ચાર છે.—૧ દેશવ્રતશિક્ષા, (૨) સામાયિક (૩) પ્રાપ્તોપવાસ, અને (૪) વૈયાટત.

આપણે વ્રતો કેટલાં અને કયાકયા એ વિષે જોઈ ગયા છીએ. હવે દરેકને બાદિત્રીથી તપાસીએ

અહિંસા અણુવ્રતનું લક્ષણ.

(૧) અહિંસા અણુવ્રત કોને કહે છે ? જે મન, વચન, અને કાયા વડે કરેલો, કરાવેલો અનુભોક્તા રૂપ વડે ચર પ્રાણી એટલે જે હિંદ્રિયાદિક તત્ત્વ પ્રાણીનો ઘાત ન કરવો તેને અહિંસા અણુવ્રત કહે છે. આના પાંચ અભિચાર છે—ચરીર છેલ્લું. જંધનમાં રાખવું, લાકડી વિગેરેથી મારવું, દંડથી વધારે માર બરડો, અને ખાવા પીવામાં દરેક વસ્તુ કરવી એ પાંચ રચૂલ હિંસા તપાસના અભિચાર છે.

જાણીયો ! આપણો ધર્મ ‘અહિંસા’ પર-એ ધર્મનોજ છે. અને તેવાજ અહિંસા એ ધર્મની ત્રીજી પડેલું પગાંધું છે. જન



ધીએ ચઢતાંજ આપણે વિચારીને પગ મુકવો કારણકે કદાચ અયોગ્ય પગલું મુકાય તો પડી જવાનો સંભવ રહે.

વિચારો કે આપણા (કહેવાતા) આવક ભાઇઓ કેવી રીતે આત્મન પાળે છે ?

શુભરાતી નવલકથા વનરાજી ચાવ-ડામાં તેના કર્તાએ જૈનોપર સખ્ત ટીકા કરી છે. કર્તા જણાવે છે કે “આવકો નાના છવને પાળે છે અને મોટા છવને મારે છે.” આ વાત મત્ત્ય કે અમત્ત્ય તે તો દરેક જૈન ભાઇએ પોતાના આચરણ પરજ વિચાર કરી માની લેવું, પણ એટલું તો ખરું કે કેવી નછવી ગીજને મોટી કરી દે છે, પોતાના લખાણને સુંદર બનાવવા અસત્યનું બાન રાખ્યા વિના કંઈ કંઈ લખી જાય છે.

હાખડો:-બધ્ય મહેલનું વર્ણન કરવા બેસશે તો લખશે કે તે પ્રાસાદના ઉપગના ભાગો ગર્ભન સાથે ગોટી કરતા હતા. શુ ખૂબી ? અવાચકને વાચક બનાવવો એ તો જાણે કંઈ છેજ નહિ. આખરે એટલું તો ખરું હોય કે એ મહેલ ઉંચો હતો. આવીજ રીતે કદાચ કવિએ તે વખતના જૈનોનું એ પ્રમાણે કંઈક અંશે વર્તન દર્શો તે ઉપરથી ખાસી એક પાનાની દેડકા તથા ધરડા માણસની વાત લખી મારી. આહું મરચું સરખું એટલે લખ્યું, બિય કોણ સત્યાસત્ય જોવા ગયું ? દાલગા એમાંનો કંઈક અંશે આપણામાં ઉતર્યો છે કે નહિ ? સાખીતી માટે જુલો આપણી સ્થિતિ.

પાંજરાપોળ-કલાણા શેડે આજે પાંજરા-પોલ ખોલી. પાજરાપોળ એટલે શું ? જનાવરોને રાખવાનું સ્થાન. ના, ના; તેમ નહિ અપંગ જનાવરો અથવા પોપક વગર ભૂખે મરતા દોરોને પાલન કરનારી સંસ્થા. એક અમેરીકને એક પાંજરાપોળ વપાસી અને પોતાનો તત જણાવ્યો કે-દર્દી રીમાતા હુંક મમય માટે જીંદગી નીમાવનારા હમેશને માટે ખોડ પામેલા દોરોને જીવતા રાખી તેમને દુઃખ દેવા

કરતાં હુંક સમયમાં મરી જઇ પોતાનાં દર્દી મુકત થાય એવા ઉપાયો લેવા જોઈએ. અપંગ ગાય કે જે ચાલી શકતી નથી તેને શા માટે રાખવી. આ ક્ષણમંથુર દુનિયાનો ત્યાગ એવા દોરોને પડેલો કરાવવો. વાહ ! શું ઉમદા વિચાર ! ભાઇઓ, કાંઈ એમને સમજવી શકારો ? કેમ નહિ. એ સાહેબને કહેવું કે તમે તો એમજ માનો છો કે આ દુનિયા છોડી કે થયું. પછી ખીજ દુનિયા. અહિં પાણું આવવું છે કેને ? પણ અમારા ધર્માનુસાર વેદની કર્મ ભોગવ્યા વગર છુટકો નથી. જ્યાં સુધી દુઃખ વેઠવાનું છે ત્યાં સુધી તો વેઠવુંજ પડે. અસાતા વેદનીય કર્મનો નાશ થયો કે બસ થયું. જો એ કર્મ પૂર્ણ રીતે ન ભોગવાય તો ખીજ જન્મમાં પણ એ ભોગવવાનું પડે, તો પછી દુઃખીની દયા લાવી સારવાર કરવામા વાધો શો ? આપણે પણ માદા પરીએ હીએ ત્યારે દુઃખ ચાય છે. શું તે વખતે તમે ઝેર અગર ઝેરી ચીજ ખવરાવવા તૈયાર થશો ખરા કે ? આવો જવાન કદાચ તે સાહેબને ન જુએ કારણ કે ક્યા વેરાગી અને ક્યા રાગી ? એમના વિચારો જુદા અને આપણા જુદા. હે ભાઇઓ ! તમે પણ તમારા વિચાર પ્રમાણે પાજરાપોળ સારી કે નકારી એ વિષે વિચાર કરજો.

પશુ છોડાવવા-પશુને કસાઇના હાથ-માથી બચાવ્યું એટલે જૈનો તો એમજ માને છે કે એને જમથી બચાવ્યું. આપણામાં પર્ય-પણના શુભ દિવસોમાં કસાઇ પાસેથી દોરો છોડાવા જાય છે. કસાઇઓ પણ ચેવી જાય છે, પણ પર્યપણ પહેલાંજ અપંગ મરવાની તૈયારીમા રહેલા વિગેરે દોરો ખરીદી લાવે છે અને વચ કરવાની જગ્યાએ એવી રીતે ગોઠવે છે કે જાણે હમણાજ કપાવાના. ત્યાં જૈનોનું જતું થાય, એટલે કસાઇ તો બસ એમજ કહેવાના કે “હમકો તો ખેયના હી નહી હે.” શેકજ એસા તૈસા દરીને પાંચ પચ્ચીસ દોરો છોડાવે અને કસાઇને મકો માગ્યા પૈસા આપે,



આથી તે બાઈ તવંગર થાય અને એજ મું-
ડીમાંથી વધારે જનવારો લાવી પોતાનો ઉદર
નિર્વાહ ચલાવે. વાહ ! કેવી દયા ? ભાઈઓ !
જે તમારામાં શક્તિ હોય તો કસાઈના બધાં
કોરો ખરીદી લો અને તેનાં છરા અને ધાતકી
લથીઆરો લઈ લો અને તેને બીજા ધધે લા-
ગવા ઉપદેશ આપો અથવા તમે પોતેજ તેને
ધધે લગાડવાનો પ્રયત્ન કરો નહિ તો પછી
કસાઈએને આવી રીતે ઉત્તેજનજ આપ્યાજવાથી
લાંબાંને બદલે તુકશાનજ તુકશાન થયા કરવાનું.

પક્ષિ-કેટલાક મુસલમાનો યા વાધરીઓ
પક્ષિઓને પગથી બંધે છે અને દયાળુ જોતોને
દહે છે કે અમુક રકમ આપો નહિ તો હમણા
એને મારી નાંખીશ. શેઠજી ગમરાય છે, ઝહી-
ડાય છે અને આખરે પૈસા આપી છોડાવે છે.
આપડાં આવાં પક્ષિ ક્યાં સગી જન્મ જવાની
પાસે રહી એવાં તો બચથી કંપી જાય છે
કે ઉડી જતાં ઉડી જતાં પડી જાય છે અને
પાછા દુખોના લાથમાં સપડાય છે. જો જો આ
જોનોની દયા !

મનુષ્યો પ્રત્યે દયા-એ તો સિદ્ધજ થશે
કે જ્યારે અવાચક પરપ્રાપ્તિ પ્રત્યે જોતો પોતાની
આટલી બધી દયા ખતાવે છે તો મનુષ્ય જા-
તિ પર કેટલી બતાવતા હશે. હિંસા કરવી
એટલે જીવથી દૂર કરવો એટલુંજ નહિ પણ
લાગણી પણ ન દુઃખાવી જોઈએ. આ રીતે
તો એવુંજ હોવું જોઈએ કે સર્વે સર્વેની દયા
કરે, પણ ક્યાં છે આવી દયા ? જુઓ કેટલી
વિધવાઓ દુઃખથી પીડાય છે ? ક્યાં ખતા-
વાય છે દયા ? દયા જો ખતાવાની હોત તો
વિધવાન અને તેવા પ્રથમ પગલાં લેવાય, પણ આપ-
ણામાં તો કેટલાક કન્યાવિક્રય કરે છે. જે શેઠ પણ
પક્ષીને છોડાવવા જાય છે તેજ શેઠ જો કે પેને
વ્યોતદ્દ હોય તો પણ દુનીયાના ભોગો ભોગવવાની
લાલસાથી નવી પત્નીને જવાબની દબાવવાને.
દંડાલો પણ ક્યાં એવા હોય છે ? શેઠ દલા-
લને વાત કરી કે દલાલ આમ તેમ મુશળની

મિચારી નિર્દોષ અજાન ખાળાને પરણાવી દે
છે. અજાણ્યા આવા પતિપત્નીને વરવહુ
નહિ પણ આપખેડીજ જાણે. જ્યારે સ્ત્રી
યુવાન થાય ત્યારે શેઠજી મરણ શય્યા
પર પડે. મિચારી ખાળા દુનિયાના મુખને
સંધવા છતાં ભોગવી શકતી નથી અને જ્યારે
શેઠજી ગયા કે રંડાય છે. આવા ખારીક-સમ-
યમાં જો તેઓને કાંઈ ધર્મનો અંશ હોય યા
પોતાના મનોબળ પર પૂર્ણ કાયુ હોય તોજ
તે નિષ્કલંકિત જીવન પસાર કરી શકે છે.
આવી તો માગેજ હોય છે. વળી કેટલીક
વિધવા પોતાનાં દુષ્ટ કર્તવ્યોથી ઉત્પન્ન થયેલાં
ખાળકોને પાચખાનામાં ફેંકી દે છે. ખચાવો
ખચાવો, દયાળુ જોતો ! આવી હિંસા થતી અટ-
કાવો. જ્યારે નાના જીવને ઉગારો છે ત્યારે
આવા જીવને ઉગારવા કેમ આગળ વધવો
નથી. શું કાંઈ તમે કરી શકતા નથી ? આનો
ફક્ત એજ ઉપાય છે કે આવાં કર્મોડાં થતાં
અટકાવો. અને પછી કાંઈ પાપોદ્યને લઈને
રંડાય તો તે માટે કાંઈ પ્રયત્ન કરો. આવી
વિધવાઓ કે જોએતે તેના સાસરીયાં કાંઈપણ
તેમની દરકાર રાખતાં નથી અને સખ્ત કામ
કરાવે છે. પૂરું ખાવાનું આપવા નથી તેમની
શું તમે દયા નહિ કરો ? અહિંસા પરમો ધર્મઃ
ક્યાં ગપો ? તેઓને માટે શ્રાવિકાશ્રમોમાં
ગોદવલ્લુ કરો. દુરાચારી થતાને સદાચારી
ખતાવો. જોતો ! આ પણ તમારોજ ધર્મ છે.

અહિંસા અણુવતના પાંચ અતિચાર-

આપજે અહિંસા અણુવતના અતિચાર આગળ
જોઈ ગયા હિંચે. તેમાં આવી ગયું કે હેદવું
ખાંધું વગેરે એમ પાંચ અતિચાર છે

હેદવું એટલે કાપવું. કાષ્ઠપણ પ્રાણીને
કાપવું નહિ. બાઈઓ, જરા કુતરના શીખીન
શો-નો આપજે વિચાર કરીશું ! તેઓ કુતરના
જોનાં કાન પૂડી ધર્યાદિ કાપી નાંખે છે. શું
એ અતિચાર નહિ ? કુદરત વિદુદ્ધ પગલું નહિ ?
શું કુદરતમાં અકલ ન હતી કે ? કુદરતને કાન



તથા પૂછી હોવાથી શું ખેડાણ દેખાય છે? ના ના. તેનામાં અક્ષલ હશે. પણ હાલની સુધરેલી પ્રજાને ખાંડા ગમે છે. બકા મનુષ્યોના સ્થેજ સ્થેજ કાન કાપ્યા હોય તો કેમ ખરાબ દેખાય? પૂછી જોજો શોખીનોને? પણ મનુષ્યો કયા કાપ્યા છે કે કાન કાપવા દે. એ તો કુતરા કમ અક્ષલ કે કાપવા દે છે, પણ નિર્દય રાક્ષસો આગળ ગરીબનું શું જોર?

આજકાલ જ્યાં ત્યાં હોમરૂલ અને સ્વતંત્રતા મંગાવ છે તો તેઓ બીજાને કેમ સ્વતંત્રતા નથી આપતા. પોપટ વિગેરે પક્ષિઓ જે વિશ્વના લોકોને મધુર ગાન સમજાવવા વત્સર રહે છે તેઓને આપસ્વાર્થા પોતેજ એકલા તેનો લાભ લે એવી આશાથી પંજરામાં પૂરે છે. આ કેટલા વખતની કેદ? જન્મ પર્વતની. આ પણ એક અતીચાર.

ચોરાગાડી રાખીને કેટલાક શેડીઆ આનાં અતીચાર કરે છે. શું પૈસાનો આવોજ ઉપયોગ! હે શેડીઆઓ! પહેલાં તમે તમારા ઘરમાં તમે જે અતીચાર કરો છો તે બંધ કરી બીજાં કરતાં હોય તે બંધ કરી બીજાં ન કરે તેનો ઉપદેશ દો.

વીજું સત્યાણુવત.

અહિંસાણુવત વિષે જોઈ ગયા છીએ. હવે આપણું બીજું વ્રત શું છે તે વિષે ત્રિચાર કરીશું- બીજું વ્રત સત્યાણુવત છે. સત્ય આણુવત એટલે સ્વૂલ અસત્ય પાપ બોલે નહિ તથા બીજાની પાસે બોલાવે નહિ અથવા જે સત્ય બાપણથી બીજાને કુખ ઉપજે એવું સત્ય બાપણ પણ બોલે નહિ તથા બીજાને બોલવાને પ્રેરે પણ નહિ. એના પણ પાંચ અતીચાર છે. ૧. ખોટા ઉપદેશ આપવો. ૨. કોઈની જાની વાત પ્રકટ કરી દેવી. ૩. ખોટા દસ્તાવેજ વગેરે લખવા. ૪. સોંપેલી વસ્તુ બૂલી જવાથી બોલો આપવી. ૫. મંત્ર બેદ પ્રકટ કરવો.

૨૬૦ આ વ્રતનું આચારણ કરવાથી સત્યવાદી હરિશ્ચંદ્રને અમર પંચાવિગણો અને

તેનું નામ અમર થયું. હે બધુઓ! જે આપણે ખારે વ્રતનું આચારણ કરીએ તો આપણી ખ્યાતિ કેવી થાય? જ્યારે એક વ્રત પાળવાથી દેવતાઓ પણ પ્રસન્ન થયા ત્યારે ખારે વ્રતો ધારણ કરવાથી કોણ પ્રસન્ન ન થાય? પણ અફસોસની વાત છે કે જે વ્રત પળાવું નથી. ઉલટું વિપરીત રીતેજ વપરાય છે.

કોઈ ચીજ આપણે જાણતા હોઈએ અને હકાર या નકાર કરીએ તો જુદું બોલ્યા એમ શું ન કહેવાય? ધારો કે એક વિદ્યાર્થીએ ચોરી કરી અને જ્યારે તેનો શિક્ષક આવી વર્ગ મંથે એમ પૂછે કે આ ચોરી કોણે કરી અને જ્યારે કોઈ બોલે નહિ ત્યારે એમ ન કહેવાય કે તે છોકરો જુદું બોલ્યો નથી? અસખત તે હકકડું જુદું બોલ્યો એમજ કહેવાય.

જુઓ કે ગરીબો તથા વગવગરના આદમી કેટલા રહેંસાય છે. ખોટી સાક્ષી પુરવી, ખોટા દસ્તાવેજો કરવા એ શું?

કાણેને કાણે કહેવો એ પણ અસત્યાણુવત છે. કોઈ આદમી બહેરો હોય અને તેને બહેરો બહેરો કહી ખીજવો એ પણ અસત્યાણુવત.

હિંદુસ્થાનની વ્યાપારિક સ્થિતિ જુઓ. કોઈને કોઈનો વિશ્વાસજ નહિ. જે આપણે નજીવી વસ્તુ ખરીદવાની હોય છે તો આપણે કેટલી સુધીજ વપડે છે. દુકાનદારને ત્યાં જઈએ અને બાવ પૂછીએ તો જે બે આનાની કીમત હોય તો કહેશે કે ચાર આના. આપણે પણ ખાત્રી હોય કે બેવડા ભાવ ઠોકે છે. આપણે ત્યારે કંડીશું કે દોઢ આનો. આખરે ૫૫ દશ મીનીટ એક બે દુકાને ધક્કા ખાધા બાદ આપણે બે આનેજ મેળવી છીશું. આથી ઉભયપક્ષને ગેરફાયદો થાય છે. વ્યાપારીનો તેમજ ખરીદનારનો અમૂલ્ય વખત જાય છે અને જે વ્યાપાર એક ભાવથી ૧ મીનીટમાં થાય તેજ વેપાર અસત્યથી ૧૦ મીનીટમાં થાય છે. મહેતે લોકો ખૂસો પારે કે વખત અમૂલ્ય છે. ગયો વખત પાટો આવતો નથી. દરેક વસ્તુમાં પણ દગો, શા માલ



વિલામતી છે. ખાસ લાંડનમાં જન્યો છે. રાખે તો વ્યાપારીને તેમજ ખેરીદનારને સુખ-
મત્યાદિ પ્રશંસનીય વચનો બોલી ખોટા મેતા પડે અને લાભ પણ વિશેષ મળે.
ધર્મના, જુઓપના તથા દાદાના સમ ખાધ ઇચ્છીશ દુકાનો બુલો. એકજ ભાવ. લેવું
નકલી માંસ ધરાકને પોરવે છે. તોલ ખોટા, હોય તો લો, નહિ તો ચાલ્યા નીવે. બસ એકજ
વચન ખોટા, માલ ખોટો, ત્યારે ખરું શું? ભાવ. આથીજ તેઓ ફાલી ગયા છે, માટે
પૈસા. બસ પૈસા ખરા છે કે ખોટા તેનોજ ભાષણો, હવે તમારાં વંત પાળવાનો વિચાર
વિચાર કરે. આવી પદ્ધતિ સુધારવાની ખાસ કરો અને હવે તમારી કોમને ઉદયમાં લાવો.
બંધ છે. એકજ ભાવ અને ચોખ્ખો માલ અપૂર્ણ.

મૃત્તમિષ્ટાન્ત્ર નિષેધ ।

સુળજો મિત્રો મારા આજ, મારે કરવું મોટું કાજ. દેક.
આજ કાલમાં ક્રિયા સર્વ તો, થાણ છે વધુ મારી;
કાઠું તેને કમ્મર વાંધી, જે છે ચાલ નટારી. સુળજો ૦ ૧.
રાત દિવસ જે સાથે રહીને, મદદ કરતો મારી;
મુઠા પછી તમે છાવા વેઠા, કહાં ગઈ સગાઈ. સુળજો ૦ ૨.
સ્વાર્થી સ્નેહી ઘણા દીસે છે, અલીલે આ જગમાંય;
વાઠ રાંધે કે વૃદ્ધ રાંધે તે, ઘરે નહિ મનમાય. સુળજો ૦ ૩.
નર હોવે કે નારી હોવે, હોવે પછી તે વાઠ;
પોતે તો વસ લાડુ સ્વાવા, મળે ગયો તે કૌલ. સુળજો ૦ ૪.
મનુષ્યનું જન્મ મર્ણ થાય છે, રહે પોકારી જેહ;
તેહ પછી તો છાવા વેઠા, શોક ગયો નિજ ગેહ. સુળજો ૦ ૫.
રાક્ષસ પેટી ઘણા ધયા છે, જમવામાં મશગૂલ;
ધર્મ ન જાણે મેદ ન જાણે, મય સાગરમાં ઢૂલે. સુળજો ૦ ૬.
સર્વ ત્રિધાનો જન્મ દિન આવે, કરો પૂનન ધુમધામ;
રોનારાને શાસ્ત્ર વાંચીને, સમજાવો મુલ્ય કામ. સુળજો ૦ ૭.
આજ ત્વચ્છો કરી કરીને, દાન કરો તે ઠામ;
મુલ્યાંન સાથે આવે, કર્યો હોય જે કામ. સુળજો ૦ ૮.
તોમ તમરો ઉદય થાશે, પાપ થશે વધુ દુર;
મોહન જૈની હેતે કહે છે, વંચ કરો રૈદી દૂર. સુળજો ૦ ૯.

વાળીસા મિત્ર મંડલી-વાળીસા.



આ તે લગ્ન કે મનુષ્ય યજ્ઞ !

(૧)

અસંખ્યાત હીપ સમુદ્રોથી સંગઠન થયેલી આ પૃથ્વી ઉપર મધ્યના જલુદિપમાં ભરતનામે એક દેવ છે, કે જેની અંદર હિંદુ લોકો પવિત્રપણે જીવન ગાળી રહેલા છે, તે દેવની અંદર પવિત્ર ભૂમિથી જન્યો અને અનેક શહેરોથી શોભી રહેલો એવો ગુર્જર નામે દેશ છે, તે દેશમાં એક સાજનપુર નામે શહેર આવી રહેલું છે, જેમાં નેના નામ પ્રમાણે સાજન અર્થાત્ સજ્જન મણુસો વસી રહેલા છે. વળી જેની અંદર અનેક સુવર્ણમય કલશોથી સુશોભિત એવાં જિન મંદિરો શોભી રહ્યા છે, કે જેની અનેક યાત્રીઓ યાત્રા કરે છે અને પુણ્યનો લાભ પ્રાપ્ત કરે છે. પ્રકૃતિ દેવીના સંહર્ષની તો શહેરમાં મણુજ નથી. વળી એ શહેરમાં તર નારીઓ ધર્મપૂર્વક જીવન ગાળી રહેલા છે. તેઓમાં ઘણા જાન ધર્મ પાલન કરનારા છે. તેઓમાં ધર્મ તરીકે બે પંચ પડેલા છે. જેમકે દિગંધર (દીશા રૂપી વસ્ત્રને ધારણ કરનાર, અર્થાત્ પરીઝલ સિવાયના નિર્ધર્મ), ચેતાધર (ક્ષેત્ર અર્થાત્ સદેહ વસ્ત્ર ધારણ કરનાર). તેમાંના દિગંધરોમાં પણ દ્રવ્યલોભુષિ ભટ્ટારકોના પ્રતાપથી બે ગઝ થયેલા છે. જેમકે મૂંગરાધ અને કાષ્ટાસધ. એવા મંને તરહના દિગંધર જોતો તે શહેરમાં વસી રહ્યા છે, જેમની જ્ઞાતિ ભરેવરો અર્થાત્ મેવાડાની છે. અત્રે જે બીના વર્ણવવાતી છે, તેમાં આવનાર પત્રો ઉપરનીજ જ્ઞાતિના છે. તેમાં તેમનું મૂળ વતન ઉપરતુજ શહેર છે, કે જ્યાં લગ્નાદિકે ક્રિયા કરાવવા તેમને આવવું પડે છે. જે વખતની ઘટના જન્યેલી છે, તે વખતે વૈશાખ માસનો દિવસ હતો. તાપ રાજ્યે સંપૂર્ણ અધિકાર ફેલાયો હતો. બપોરના પવનના સ્પર્શ ચાલી રહ્યા હતા. નગર જોતો જાગ

બગીચાનો આશ્રય લઈ બપોરના ગાળતા હતા, જેમાંના કોઇ હાસ્ય ચિત્રોદ કરી રહ્યા હતા, તો કોઇ ભાંગ દેવીને શ્વાવકાર આપતા હતા, તો કોઇ નિંદ્રા દેવીનું સેવન કરતા હતા તો કોઇ નીચ પુરુષો પરનિંદા આદિ કરી પાપનો બોલો લાવતા હતા, તો કોઇ ધર્મપ્રેમી મિત્રવિધાર કરી કાળ નિર્ગમન કરતા હતા. એવા સમયમાં ઉપરની જ્ઞાતિનો લક્ષગાળો આવી પહોંચ્યો, જેથી બહાર ગામથી લોકો આવી એકઠા થવા લાગ્યા ને છેવટે તમામ જોતો એક માસની કુરસદ મેળવી થેર તાળાં વાસી મનને આલ્હાદ આપતા પાટનગરમાં એકઠા થયા. તે વખતે શહેરની શોભા કંઈ જુદાજ પ્રકારની થઇ રહી હતી, એટલે કે વાટે કે ઘાટે, ચોરે કે ચોરે, હૂંશીરી કે બજારે, પુર કે પાદર, ગાગ કે વન, ઘર કે બહાર, જ્યાં ત્યાં જાસ પીળા ચાદલીયા અર્થાત્ લગનીયા જોતોજ નજરે પડતા હતા, જેમાંના ઘણા જાણ પોતાના ગામમાં જૈન મંદિર નહીં હોવાના કારણથી અગર હોય તોપણ અદાન નહીં હોવાના કારણથી પોતાને કોઇ હોય ન આપે જેથી મોટા મોટા કેસરીયા ચાંદલા કરી ફરતા હતા. બાકી નહોતા જતા તે મંદિરે કે નહોતી તેમની અદા, પણ લોકોને જણાવવાના બોરા આડંબરથી ચાલ્યા કરતા હતા અને સુખમાં કાળ વીતાડતા હતા. તે વખતે અનેક જમણો થતાં હોવાથી ગામની મજૂરીયા વર્ણને દળવા ખાડવાની રોજ દીક ચાલતી હતી અને જંગલનાં પંખીઓ જેવાં કે ગીધ, કાગડ, સમરી, વિગેરેને ખાવાનો ભક્ષ પણ દીક મળતો, જેથી તેઓ સતોષ પામી તેમની બાયામાં સુપ્ત આસીર્વાદ આપતાં, જેથી જોતોને બીજાં કોઇ ધર્મકાર્ય કરવાની જરૂર રહેતી નહિ અને દુઃકામાં તે કરતા પણ નહિ, પણ રાત્રે મંદિરના કંપાકંડમાં અગર એવી બીજી જગ્યાએ એકત્ર થઇ સહેજ વાતો અક્ષતી વિષેરાઇ જતા હતા, પણ નરેરા કરતા



કોઇ સભા કે નહોતું આપતું કોઇ બાપણ, જેથી એ સાતિ પછાત પડેલી હતી, કારણ કે -“તે સાતિ મૂળથી વહેમી ને વળી જૂને કર-ડયા” એમ કોઇ ધર્મના ઉંડા જ્ઞાનવાળો નહિ, તેમજ ને ઇંગ્લીશ-ભણેલા છે તેઓ તેા ધર્મશિક્ષણના અભાવે વદન નાસ્તિક થયેલા. કદાચ કોઇ ધાર્મિક લાગણીવાળા હશે તેા તે તેા બહાર પડનારજ નહિ, જેથી તેતું નામ કંઈજ નાહ. એ મત પ્રમાણે તેઓ ઉપવિતે રસ્તે ચઢી શકતા નહિ. તે મજ એવી સાતસો ધરની સાવિના પાટનગરમાં જ્યાં જન્મે મરણના ભદ્રરોકો પરચા પાથર્યા રહે છે, તેમ તેમના પંડિતો પણ હોય છે, તે છતાં ત્યાં નથી જૈન શાસ્ત્ર યોગ્યવાની શાળા કે નથી રાત્રિ પાઠશાળા. એ બાજવમાં મુસલમાનોને ધન્યવાદ ધરે છે કે તેમનાં જે ગામના પંદરેક ઘર હોય ત્યાં ઉડુંશાળા હોયજ, તેા તે પ્રમાણે આપણી સાતસો અરે જાણનાં બસો ઘર વચ્ચે એક પણ પાઠશાળા નહિ, તે શું શરમાવવાની વાત નથી? ખંડુઓ, ઉકે, તૈયાર થાઓ; પાઠશાળા બોલો અને તેમાં સમાના દરેકને પોતાના બાળકને જણાવવાની ફરજ પાડો. તેમ ભદ્રરોકોને શિક્ષણ આપવાની ફરજ પાડો કે જેનાથી શિક્ષકને પગાર જાયશે તેની સાથેજ આચાર્ય દ્વારા શિક્ષણ અપાશે તેથી બાળકો પણ હોશિયાર થશે, માટે તેને માટે અત્યારેજ ફરાવ ફરો અને પાઠશાળા સ્થાપન કરી બાળકોને જૈન દર્શનનું ઉંડું વકરય સમજાવો, તેજ વમારો ઉદય જલદી થશે,

(૨)

હવે મૂળ વાત પર જઈએ. ઉપરની ધમાસ જે વખતે ચાલી રહી છે, તે અરસામાં એક ભેદભર્યું લગન થવાનું હતું, જેનો મૂળ પ્રતિદાસ નીચે મુજબ છે:—

એક મહાસંગમ નામના ગામમાં રહેનો એક જોડા પુરુષ કે જેનું નામ ભીમાશા કરીને તું તેને એક કન્યા મોદ પંદર રાત્રીની

ઉમરની હતી. તેનું સગપણ કરવાનું હતું ને લાયક વર મળેના નહીં, જેથી ભીમાશા તેમજ તેમનાં પત્ની શ્રીમત્કોર ઉદાસ રહેતાં હતાં, તેજ અરસામાં (અર્થાત્ ઉપરના લગન અવસરની પહેલાં ચાર માસ પર) એક શાહપુર નામના ગામડામાં રહેતા શેઠ જ્યોતીસનદાસના પુત્ર ત્રિલોકચંદ કે જેની ઉમર ૪૮ વર્ષ લગ-બગની હતી, તેની સ્ત્રી મરણ પામી. તે મરનાર સ્ત્રી બીજાવારની હતી તેમ તેને ઘેર પુત્ર પુત્રીની સંવતિ પણ દીક હતી.

તે શ્રેષ્ઠી (ત્રીજવર) ને ત્યાં ઉપરના ભીમાશાએ પોતાની કન્યાનું સગપણ કરવા એક માણસને મોકલ્યો, તેને કહેલું કે બરોબર તપાસ કરી યોગ્ય વર હોય તેજ સગપણ કરજો, નહિતો પાછા આવજો, પણ આવનાર માણસે ત્રિલોક-ચંદના બાપે કંઈક કહ્યો તે છતાં પરાણે પરાણે સગપણ નહીં કયું. અરે! દીવો સાથે રાખી કુવામાં પડ્યો અથવા કહો કે પોતાના પગપર પોતેજ કંહારો ભાવે. આવી રીતે કામ કરી તે માણસ પોતાને ગામ ગયો. પંછી જ્યારે કન્યાના બાપને ખબર પડી કે વેરીશાળ કરેલો પુરુષ ૪૮ વર્ષની વૃદ્ધ ઉમરનો છે, તથા તેને બે ત્રણ સંતાન પણ છે, ત્યારે તેજો ઘણા દિલગીર થયાં, પણ તે ગાત્રિમાં બદામસ્ત હતો કે વેરીશાળ કરેલું જોડું મરે ત્યારે ખુદ પડે, જેથી લાચાર થયાં. સાવિના ગાંવા કંઠંગા રીવાજોને પણ બિ-દકાર છે કે જેનામાં ઉપરના જેવો અયોગ્ય લગ્નો થવા વખત આવે તે છતાં તે તોડવાનો ધારોજ નથી. તેમજ નાનપણમાં લગન સં-જંધમાં જોડી દે છે, જેથી કરી ઘણાં કુત્રેમાં જાને છે, જેનાથી સંસાર ધણીજ દુઃખમય બની જાય છે, અને આતે વંશવૃદ્ધિ પણ અટકે છે. માટે જોતો! વિચાર કરો અને આવાં સગ-પણ બંધ કરો તેની સાથે અયોગ્ય થયેલાં સગપણોને બીજા જગ્યાએ સગપણ કરવાની છૂટ આપો.

હવે સગપણ થયા પછી બંધી વાત જનજ-વામાં આવવાથી કન્યાનાં માખાપ દિલગીર થયા



તેની સાથે એમ પણ ધારીનેજ એકાં કે ક્યારે એમાંથી એકતું મૃત્યુ થાય કે-આપણને જન્મ વળે, પણ 'કરણી તેવી પાર ઉવરણી,' એ અનુસાર તેમ બન્યું નહિ, પણ જોડું કાયમ રયું. હવે લગ્નગાળો નજીકમાં આવવા લાગ્યો, તેમ તેમ કન્યાનાં માળાપ વધુ વધુ દિલ્લગીર થવા લાગ્યાં અને એ ચિંતાને લીધે એમનું શરીર ધણું શોષાવા લાગ્યું, પણ ઇલાજ હતો નહિ. એટલે કરે શું ?

ધીમે ધીમે વૈશાખ માસ આવી પડેલો અને કન્યા મોટી ઉમરની અથેલી, તેમજ ભર-વધાર બાંધાની હોવાથી લગ્ન લીધા મિલાય છુટકો નહિ. કારણ કહ્યું છે કે-જે પુરુષ રૂઝ પત્ની કન્યાને પોતાને ઘેર રાખે છે, તે પોતાના પ્રત સહિત બાલકત્વા નામના પાપમાં પડે છે. એ દૃષ્ટાંતને યાદ આણી કન્યાના આપે લગ્ન જોવાવવા જ્યોતિષીને આમંત્રણ કર્યું. જોશીએ આવી લગ્ન નક્કી કર્યું, પણ કન્યાના કર્મને દોષે કડકા કે પત્રી જોશીની જીભે લીધે લગ્નમાં ખામી હતી, તે જોશીના જાણનાં આવી નહિ અને ધીન મહુને લગ્ન દિ વસ મુકરર કર્યો, તે વરવજ પત્રિકામાં લખી કન્યાના સાસરે રવાના કરી આ તરફ કન્યા શિક્ષિત હોવાથી તે તેનો પતિ તરફ જ, અમ તેના જાણવામાં આવનાંથી છાતિદ્રાટ કંઈપાંન કરવા લાગી. તેમજ તેનાં માતા પિતા પણ ચુપ્ત રીતે રડવા હતાં, પણ ઇલાજ હતો નહિ.

લગ્ન દિવસ મુકરર થયા પછી કન્યાના જાપને એવા એ માણસોની ખોટ પડી કે જેના સિવાય તેને આવે નહિ તેમજ લગ્ન વખતે પણ તેઓની જરૂર પડત, પણ કર્મ જગત્તન છે, એ વાત ધ્યાનમાં રાખી લગ્ન કાર્યને માટે બન્ને પક્ષના માણસો પારનગરમાં પોતાના ગૃહ સંભાર સહિત આવી પડેલા અને ત્યાં કેવી રીતે રહેવા લાગ્યા તે વાત પાછળ આવી ગઈ છે.

હવે લગ્નજો (લગ્ન અવસરે) પાપક વડા પડી બન્ને ઘેર થવા લાગ્યાં, પણ એકે વર-

દના માણસો પ્રગલ્ભ હતા નહિ, પછી શુભ મુરતે બન્નેને ઘેર માંડવા મુહૂર્ત અર્થાત્ સંભારોપણ કર્યું, પણ ખીજાં લગ્નની માફક વાગ્ગનો ધ્વનિ તથા મંગલ ગીતો તો એકે વરફે હતાંજ નહિ, જેથી પ્રેક્ષકના મનમાં એમ થવા મિના રહેતું નહિ કે આ નીચ વર્ણના નાતરા કરનાં પણ ભૂડો બનાવ છે. લગ્નને દિવસે સવારથી કન્યાના રૂઢનનો પાર હતો નહિ. બન્નેએ પીડી યોળી અને મિથ્યાત્વી ચાલ, ગોત્રધો, શાંતક, કન્યાનું વરના ઘર પર એવો જમવા આવવું, કન્યાને ત્યાં વરનું જમવા જવું, વિગેરે કાર્ય થયા.

લગ્ન સમયે આપણા છુટકો વરરાજા એક નાચુક ઘોડા પર સ્વાર થઇ પાંચ માણસના સરધમ સહિત અપ્રસન્નતાથી કન્યાના માકરે આવી ઉપરિથત થયા. કલાક ઉશા રહ્યા પણ કન્યાની માતા પોંકવા આવે નહિ, કારણ કે પોતાની કન્યાને આવા રાક્ષસ જેવા પતિ સાથે પરણાવવા તેની હિંમત આ-કતી નહિ અને તે એટલી દુઃખતી હતી કે તેનાથી ઉશું પણ રહી શકતું નહિ તથા તે વખતે કન્યાનો આપ તો એવો જણાતો હતો કે કોઈ રમદાની માણસ હોય.

ધણું ધણું સમજાવ્યા પછી કન્યાની માતાએ ધુનને હડયે વરરાજાને પોંખીને મંડ-પમાં લીધા અને બાજઠ પર બેસાડયા. પ્રણે વખત થયો, પણ ગોર આગ્યો નહિ કારણ કે આખી ઝાતિમાં ગોર બે કે ત્રણ હતા. તેમજ તેને તે રાત્રે ત્રણ લગ્ન કરાવવાનાં હતાં, જેથી બીજી જગ્યાએ લગ્ન કરાવવા ગયો હતો. અણુઓ ! વિચાર કરો કે-તમારાં સંતાં-નોના લગ્ન ચોગ્ય મુરતે થતાં નથી, તો પત્નીથી સુખી ક્યાંથી થાય, કારણકે કેટલોક કાળ (ખપડ) એવો હોય છે કે જેમાં સાકું કાર્ય કરીએ તો તેનો વિનાશજ થાય છે, તો લગ્નનું એવ ક્યાંથી થાય ? અટે વિચાર કરો અને ગુરુદિયો, ગોરની રૂઢિ કરો, તેની સાથે ગોરને ચોખ વખતે આવવા ફરજ પડે, તેને વખતે



સુખી શ્રેણી ને સંસાર પશુ સુખમય નિવડશે, માટે ગોરને તો મુક્તિજ આપવા ફરજ પાડે. હવે લક્ષ વખત નીકળી ગયા પછી (કારણકે કન્યાનું ભાગ્યજ વાંકું હતું) ગોર આવી પહોંચ્યો. તેણે આવી એકાદ કવિતા બોલી (કારણકે તેને સંસ્કૃત જ્ઞાન હતું) નહિ, તેમ જીભ પણ લથડાવી હતી) કન્યાને પધરાવવાની તે વખતે કન્યા છાતીફાટ રૂદન કરતી હતી. પછી હાથનોડ (લાઠણોમાં પૂઝ વખતે કરવાની વિધિ) કરાવી વર કન્યાને હસ્ત મેલાપ કરાવ્યો અને અગ્નિના ફેરા વરકન્યાને ફેરવ્યા, તે વખતે ગોર બે ત્રણ શાદુલવિક્કિડીત છંદ ગુન્ઠરાત્રીમાં અશુદ્ધ બાપામાં બોલતો બોલતો હતો. જે વખતે વરરાત્રીએ કન્યાના હસ્તેતું અહણ્ય કર્યું, તે વખતે કન્યા કંપારી ખાઇ પડતી પડતી રહી ગઇ, તોપણ કંઈક હૃદયના માણસો પર તેમની કંઈ અસર થઈ નહિ. રંગ દીક જાગ્યો હતો કે લક્ષ વખતે પણ ગીત નહિ તેમ મંગલ ઘોષ નહિ. અહા ! શું કર્મ દેવતાનું તાત્પર્ય છે કે તેને લીધે માણસો આ દુનિયા રૂપી રંગ ભૂમિ પર ફેરા ફેરા બેસ કરી રહે છે. લક્ષ પૂર્વે થયું અને વરરાત્રી પોતાને ઘેર કન્યા સાહિત પધાર્યા. ધરતી પુત્રીઓ નવી માને દેખી આનંદ પામી, પણ નવી માના પેટમાં તેજ રેડાતું હતું. કન્યાને તેના બાપ પોતાને ઘેર તેડી ગયા.

(૩)

દિવાળી આવી. વધુ-પ્રવેશ કરાવવા અર્થાત્ વકુને તેડવા વરને બાઇ મહીપુર ગયો ને ત્યાંથી રડતી કઠળવી તે કન્યાને તેડી લાવ્યો. રાત્રે ગૃહસ્થ ધર્મની સાધનાને માટે કન્યા પતિના અયન સુવનમાં ગઇ, પણ પવિત્ર વીર્ય વૃદ્ધાવરણને લીધે નિસ્તેજ થયેલું હોવાથી કંઈ લાભ મેળવી શકી નહિ. આ પડેલાજ દિવસના સદ્વચન પછી કન્યાને પોતાપર ગુન્ઠરાત્રી દુઃખ તથા પૂર્વ પાત્રી યદ, પણ આ વખતે મામમાં અનુભવ હોવાથી તેમજ ધરમાં બીજાં માણસો

હોવાથી કંઈ થઈ શક્યું નહિ, પણ ફરીથી પીયેર જઇ આવ્યા પછી તો તે ઘડતી ને ગમતી પૂર્વ માહીતગાર. થઈ, જેથી તેથી શ્રેરીમાંની સ્ત્રીઓની સોખત કરવા લાગી, અને એમ કરતાં કરતાં તે સ્ત્રીઓએ તેને નીચ કૃત્ય કે જેને આપણે વ્યભિચાર કહીએ છીએ તે કરવા શીખવ્યું, અને તેણે પણ તે કૃત્ય કરવા શીખી કરવા માંડી, કારણકે તેને વૃદ્ધ પતિથી પૂર્વ સંતોષ મળતો નહિ, તેમ નીચ સ્ત્રીઓની શીખવણીથી તે તે કૃત્ય તરફ વળી. ધિક્કાર છે તેમને કે જે પોતે નીચ કૃત્ય કરી બીજાને પણ તેવાં કામ કરવા શીખવે છે. આ દુનિયા પરથી તેના માથુસો ક્યારે નાશ પામશે કે, જેથી લોકો આવાં કૃત્ય કરતાં બચશે.

ધીરે ધીરે તે સ્ત્રીએ લાપક જાતની તપાસ કરવા માંડી. ને તે તેને મળી પણ ગયો કે જે પણ એક જૈનજ હતો. અરે! તેને કંઈ કહેવો દીક પડશે કારણ કે જે પોતાની જ જાતની સ્ત્રીનું શીલ તોડવા હશે તથા છે. પછી તે સ્ત્રી તે તરણ સાથે દિવસો ગુન્ઠરવા લાગી. આ વાતની જ્ઞે કે તેના પતિને ખબર થઈ હતી, પણ પોતાનામાં શક્તિ હતી નહિ જેથી તે સમજીને કંઈ બોલતોજ નહિ.

પુત્રીના નીચ કર્મની જ્યારે તેની માતાને ખબર પડી, ત્યારે તે કંઈપાન કરવા લાગી કે મેં જુલથી મારી પુત્રીને વૃદ્ધ પુરુષ સાથે પરણાવી, જેથી તે પોતાના ધર્મ પર પાણી ફેરવવા લાગી. હાથ! અને ધિક્કાર છે, કે મેં આવી નીચ બુદ્ધિની પુત્રીને જન્મ આપ્યો. જે જન્મીને જન્મ્યા આપે તો સમાધાનક એવી રીતે રાત્રિ દિનના કંઈપાનને અંતે તે જન્મ કદનમા પડેથી ગઈ અર્થાત્ મરણને યરણ યઈ.

આ તરત પેલા તરણ પુરુષની સાથે તે સ્ત્રી દિવસો વીતાવતી હતી. પછી એક દિવસ જ્ઞે મેની હાસ્ય વિનંદ કરી રૂનાં હાં, તે હાસ્યને જડાને તરણે પ્રજ કયો કે વડાકા! આમ આપણે ગુપ્તપણે ક્યાં સુધી રહીશું.

ને હું આ ખોખલાને ડોકાણે કરી દઉં, તો આપણે મનમમતા ભોગ ભોગવીએ. અંતે કહ્યું કે વહાલા, એ વાત ખરી પણ તેમનો નાશ કેવી રીતે કરવો તે જણાવો તો પછી હામ રહેલ થઈ જાય. તરણે કહ્યું કે તું આજે તેને આ પડીકું બોજાવ, સાથે આ પત્તે (તે પુરો સોમવતું પડીકું તે દિવસે આવડું હતું) જેથી ચાર દિવસમાં ધીમે ધીમે પલ્લવીને તે ડોકા નાશ પામશે અને આપણા આ કૃત્યની કોઈને ખબર થશે નહિ. સાચી કે—ચાર દિવસના મંદ-વાડ પછીજ ડોકાનું મરણ થશે, ખોટું વારે આ હામ કરજે. હું હવે જઈ છું કારણ ડોકાને આવરોનો વખત થઈ ગયો છે. પછી તરણ પોતાને ઘેર ગયો. અને તે સ્ત્રીના પતિ ઘેર આવ્યો. એટલે જોગનમાં વિપત્તિ પ્રયોગ અનુભવ્યો. અરે ! પોતે પોતાની મેળે વિધવા થવા તૈયાર થઈ ! અરે ! નીચ ત્રિવલ મુખ ! વને વિહાર છે કે તું વારો અધિકાર જમાવી માથુંસ પાસે ન કરાવવાનાં કૃત્ય કરાવી બેસે છે. ચાર દિવસે એ દ્વાર ડોકા મરણ પામ્યો અને તરણ તેમજ તે કુલ સ્ત્રી પ્રસન્ન થયાં, પણ બહારના જોડા આડંબરથી તે સ્ત્રીએ છાતીકાઠ કહ્યાંવડ કરવા માંડ્યું અને પોતાના માતાપિતાને ગાળો દેવા માંડી કે જો કુલ મા-બાપ ! તમને બીજો મારો વર મળ્યો નહીં કે આવ્યા હુંક આયુષ્યવાળા સાથે મારું લગ્ન કરું ? જો તમને વર ન મળ્યો તો મને મારી નાંખવી હતી, પણ આવી વિધવા બનાવવી નહોતી.

(૪)

શેકની આખર ગામમાં કીક હતી. જેથી શેકો ઘણા દિવસોથી થયા અને સગાંવહાલાં કાણે આવવા લાગ્યાં, જેમાંનાં જે ખરી લગણી-વાળાં હતાં તે તો અવકરણથી રહતાં હતાં, પણ જે દેખાદેખી આવતાં હતાં તે તો હલકી તે સ્ત્રીના કૃત્યની વાતો કરતાં તે બાર-માનું ક્યારે થશે તે પૂછતાં. સ્ત્રીઓ ચક્રે

ચક્રે છાતી ખુલ્લી કરી ફૂટતી હતી ને રાજ્યાં ગાતી હતી. અહા ! કેવો નીચ સમય કે જે નંતોની સ્ત્રી પકડે રહી કોઈ પુરુષને પોતાનું મુખ પણ ખતાવતી નહિ, તેજ નંતોની સ્ત્રીઓ ચક્રે ને વળી પુરુષની કૃત્યને ઉઘાડી છાતી-એ ફૂટે છે. અહા ! કળીકાળ ! વને વિહાર છે, કે, તું જળને ડોકાણે સ્થળ ને સ્થળને ડોકાણે જળ બનાવવા બેઠો છે.

ચાર દિવસ મુધી શેકો કાણે આવવા લાગ્યાં, પણ પછી તો ધીમે ધીમે બંધ થયા, ને સ્ત્રીને ગામના નંતોએ બારમાની સામગ્રી કરવા સમગ્તવવા માંડી. અને સામગ્રી થઈને બારમાનો દિવસ નહી થયો, ને તે સુવાન સ્ત્રીના પતિનું બારમું ખાત્રા મામેગામધી સગાં-વહાલાં એકઠાં થયાં, ને જમી જમી પોતાને ઘેર ગયાં ને સ્ત્રીએ પણ ધીમે ધીમે શોકને વિહારથી આવવા માંડી.

તે સ્ત્રીનો બાપ તો પોતાની કન્યા રંડા-વાથી ઘણો ખેદખિન્ન થયો ને તેજ ચિંતામાં તે પણ ચાલુ પાડ્યો. અરે ! એકજ કન્યાના હૃદ સાથે લગ્ન થવાથી ચાર ગાણસો નાશ પામ્યાં ને હજુ કોણ જાણે શુંએ થશે ? જેમ જેમ દિવસો પીનવા ગયા તેમ તેમ સ્ત્રીએ શોક સમાપ્ત કરવા માંડ્યો ને આખરે પહેલાંની માફક પોતાના જરની સાથે છુટથી વ્યભિ-ચાર કરવા લાગી. આનાં આ કૃત્યથી તેની જોગમાની કન્યાઓ પણ ખેદખિન્ન થઈ બાપને ઘેર આવતી બંધ થઈ. આ વાત ધીમે ધીમે આખી ગામમાં ફેલાઈ ગઈ ને તેને ઘણા જણ સિખામણ દેવા આવ્યા, પણ યુવાની વિકાર સમાધી ન રાજવાથી કોઈની વાત ધ્યાનમાં લીધી નહિ ને ઇચ્છાનુસાર નીચ કૃત્ય કરવા લાગી. પુરુષ તે સ્ત્રીને તે ગામમાંથી નાશી જવાનું સ્વયંવતો હતો, પણ થતા કાળના મોટા આગળ કોઈ કાણું નથી, જેથી તેણે માન્યું નહિ કે તેને તે જરથી ગર્ભ રહ્યો તે તેણે. અહરે આવ કરવા ઘણી મહેનત લીધી, પણ



कार्य करनेमें कायर व डरपोक न हों—यदि शांतिसे धर्म पाळते हुए मरण भी होजाय या कोई मार भी डाले तौ भी कोई हर्ज नहीं है क्योंकि धर्मार्थ प्राण विज्ञेन शुभ गति का कारण है। ऐ दिगम्बर जैनियों! अपने पैरों खड़े हो—पर्वतराजकी भक्तिमें दृढ़ रहो कोई रोके स्को नहीं किंतु महान कष्ट सह कर धर्म पाळो। जिन टोंकोंसे तीर्थंकरोंने मुक्ति पाई है वे हर एक जैनको माननीय हैं—उनकी भक्ति करना अपना धर्म है—यदि कोई धर्म साधन न करने दे तो प्राणत्यागना भला है पर धर्मकी रूकावटका असमान अच्छा नहीं।

यदि कोई श्वेताम्बरी इसी रूकावट डालनेमें ही धर्म समझते हों तो सपने पर जो जैन धर्मसे कुछ भी विज्ञ है वह ऐसी रूकावट डाल कर अपने लिये महान अंतरायकर्मका बंध नहीं कर सकता। यदि महात्मा गांधीके समान सत्य पर कायम रहोगे व स्वयं दुःख सहोगे, दूसरोंको कष्ट न दोगे अवश्य तुम्हारे धार्मिक हकोंकी रक्षा होगी।

ब्रह्मचारी शीतलप्रसादजी ।

क्या 'अर्जुन' नहीं छूटेंगे ?

नया पण्डित अर्जुनलालजी सेठी काराग्रहकी घोर यातनाएँ सहते ही रहेंगे ? हमारे तन्त्र मन्त्र सब रखते ही रहेंगे, उनसे कुछ सकलता न होगी ? क्या साकारको उचित है कि वह निरपराध, धर्मशत्रुओं अशक्तों काराग्रहमें डालकर उसकी धार्मिक क्रियाओं और विचारोंमें विघ्न डाले ? जिन व्यक्तियों ने आनन्द अपने जीवनमें किसीका दुःख नहीं

विचार, जिसने समाजके हितके लिये सभा, समितियाँ खोलकर समाजका उपकार किया, आज वे ही पंच अर्जुनलाल सेठी काराग्रहकी यातनायें भोग रहे हैं।

प्यारे जैन जातिके वीरो ! यदि तुम अकलंककी सन्तान कहलाते हो, यदि तुम जातिके उद्धार करना चाहते हो, तो तुम ऐसी घोर निद्राकी त्यागो, उठो, जागो। सब जातियाँ अपनीर उन्नतिके लिये आगे पैर बढ़ा रही हैं, तुम भी कुछ कर डालोगे तो अच्छा है। तुम्हारी जातिका नेता, शिक्षाप्रेमी, धर्म श्रद्धालु, जैन समाजको जीवन अर्पण करनेवालेको क्यों नहीं अन्यायसे बचाते, अपनी न्यायरूपी कृपाणसे क्यों रक्षा नहीं करते, अन्न तन, मन, धनसे प्रण और ऐतयतासे यदि काम करोगे तो मैं दावेके साथ कह सकता हूँ कि आप अपने कार्यमें सकलता प्राप्त कर सकोगे। शिक्षा प्रेमीको तो क्या यदि आप चाहेंगे तो मुन्हेको भी हिलाकर उखाड़कर फेंक सकते हैं—एक महात्माका वचन है कि—

चारिनेन चारि हूँ दिशार्ते चारं कोन गहि,
मेरुको हिलायके उलारैं तो उलरि नाय ॥

इसलिये प्यारे मित्रो ! आप अपने हृदयमें प्रण और ऐतयताको रखकर काम करो। यही उन्नतिकी जड़ और सब सुखोंका मण्डार है। प्रण व ऐतयता करनेवालोंसे क्या क्या मित्र नहीं होता ? अर्थात् सब कार्य निष्ठा होमते हैं। भद्रः निष्ठातिष्ठति कविकाको हृदयका घोर आन्दोलन करो, यही मेरी मान्य है—



प्रण ।

वैर प्रीति करिवेकी मनमें राखै शक,
राज राव देखिके न छाती घात घाफरी ।
अपनी उमगकी निवादिवे की चाह जिदे,
एकसो दिग्वात तिन्हें वाघ और बाकरी ॥१॥
ठाकुर कहत मै विचार कईवार देख्यो,
यहै मरदानन की टक वात आररो ।
गही जौन गही जौन छाड़ी तौन डाड़ी दर्र,
करी तौन करी वात ना करो सो ना करे ॥१॥

प्रेमयुता ।

शामिलमे पीरमें शरीरमें न राखै मेद,
दिम्भयसे कपट उधारै तो उपरि जाय ।
ऐषो टान टानै तो बिना हू जन मन कीन्हे,
सापके जहरको उतारै तो उवरि जाय ॥
ठाकुर कहत कुछ कठिन न जानौ यह,
दिम्भत किये ते कहो कहा न सुपरि जाय ।
चारि जनों चारि दू दिसाँ चार कोन गदि,
मेदको हिलापके उत्तारै ता उत्तरि जाय ॥२॥

सतीशचन्द्र गुप्त, सूरत ।

“सेठ नवलचंद हीराचंद—

स्मारक फंड.”

जैन मंत्रने अधिकांशार्थी उत्पत्तिने मार्गे
द्वारनार युष्माध निवासी शैव नवनयद हीराचंद
अवेरीनी चाहरीरी कायम गणपत ने भटे रोड
हीराचंद शुभान्त जैन जोर्डि गने अगे जो
सवाभा आवेया 'शैव नवनयद हीराचंद
स्मारक फंड'मा निम्न विधित सङ्ग्रह्यो
तदर्थी नीचे प्रमाणे रक्ष्य नरनामा आवी
छे, जे सङ्ग आभासद रीति नीचे छीजे
२५१) श्रीमान शैव शुभगय नृपानन्द
१०१) श्री शैव सुजन्मल लक्ष्मण अवेरी
१०१) ,, शैव नाथारण्य
१२५) ,, शैव तुलसीदास तीर्थावनदास

१०१) श्री शैव नारददास अजानमल
५१) ,, ,, आयु शुभगद्वारदास जैनी
११) ,, ,, जैनी विष्णु भीक्षाराम
५१) ,, ,, मोहनदास सुनीवाल
५) ,, ,, गोरधनदास गगनवनदास
५१) ,, ,, भाधन रास अमरसी
५१) ,, ,, सुरममल मोक्षुभय सोलीसीट
५१) ,, ,, सुनीवाल हेमचंद नरीवाणा
४१) ,, ,, हाकिमदास जगवानदास अवेरी
४१) ,, ,, जयचंद मानचंद
३१) ,, ,, लक्ष्मणभाध भीमाचंदभाध
४१) ,, ,, लक्ष्मणभाध लक्ष्मणचंद मोहसी
२५) ,, ,, भयुदास लावण्य
२१) ,, ,, लक्ष्मण तीर्थावनदास
१३) ,, ,, नानचंद हस्तुरचंद मोदी
११) ,, ,, अमरतनाथ चिंतदास धामी
१५) ,, ,, भगनवाल दामोदर'रास
१५) ,, ,, मधुचंद लावण्यचंद मोहसी
५) ,, ,, नरमण्डा भगना चंद
७) ,, ,, भनीलक्ष्मणचंद पंडित
५) ,, ,, शंकर काशीनाथ सोनी
११) ,, ,, हस्तुरचंद जेयरदास
२१) ,, ,, जेसीगभध भणायद
१५) ,, ,, मधुसीमा जे. सी जे-३ जे
१७) ,, ,, भनसुभवाल तथा मोहनवाव
२) ,, ,, मोभयद आनरदास
२१) ,, ,, नारददास पद्मोतमदास
११) ,, ,, नाथुभाध हीरीदास
७) ,, ,, हीराचंद द्वारचंद
१५) ,, ,, अमनावाल जेभयद
१५) ,, ,, सी० आ० देशाध
१०) ,, ,, मोहनदास मोतीचंद
१५) ,, ,, प्रेमचंद धनभयद
१०) ,, ,, निहाचंद गीधरदास
७) ,, ,, भाजेचंद जेनाडा
७) ,, ,, बिहारीवाल
५) ,, ,, भावचंद अर्धदेव



- ૧૧) શ્રી શેઠ રાધુભાઈ દેવચંદ દોભાડા
 ૭) " " જૈન ગ્રંથ રત્નાકર કાર્યાશ્રય
 ૧૧) " " રામચંદ. મોતીચંદ
 ૫) " " નારણદાસ રજુડોદધસ
 ૩૧) " " મયુરદાસ મનજી
 ૧૧) " " ઝવેરલાલ શંકરલાલ
 ૫૧) " " પ્રેમચંદ મોતીચંદ
 ૫૧) " " રત્નચંદ ખીમચંદ સંઘવી
 ૫) " " રતીલાલ મગનલાલ દેશાઈ
 ૩) " " મોતીલાલ ધરમચંદ કોહારી
 ૩) " " કાલીદાસ કુલચંદ શાહ
 ૪) " " કેશવલાલ હાલાભાઈ શાહ
 ૧) " " એ. જી. પાટીલ
 ૨) " " દીપચંદ ભાઈચંદ શાહ
 ૨૧) " " મનોહરલાલ મુકંદીલાલ
 ૧૦૨) " " પ્રેમાનંદ નારણદાસ
 ૧૫) " " જોડાલાલ ત્રીકમદાસ
 ૫) " " માણિકલાલ ચામજી ઝંટકીઆ
 ૧૧) " " મણુપત ઉમરચંદ મોદી
 ૧૦) " " કેવળદાસ કીલાભાઈ
 ૨૫) " " એમ. એલ. વર્ધમાનચો
 ૫) " " મીમનલાલ નેમચંદ
 ૫) " " હરજીવનદાસ રામચંદ શાહ
 ૨) " " સી. એન. મહેતા
 ૨) " " ચંદુલાલ ચક્રચંદ
 ૨) " " એક બોદર
 ૫) " " એફ. જી. મહેતા
 ૩) " " ડી. પી. શાહ
 ૫) " " મોહનલાલ દલીપચંદ દેશાઈ
 ૭) " " મકનજી જુહાભાઈ મહેતા
 ૨) " " ખીમચંદ અમરચંદ હીવાન
 ૧) " " ચંદુલાલ અમરતલાલ
 ૨) " " મોહનલાલ પ્રેમચંદ શાહ
 ૧) " " એન. કે. શાહ
 ૧) " " સુનીલાલ શીવલાલ શાહ
 ૧) " " ડાલાભાઈ મગનલાલ પરીખ
 ૧) " " ભાઈલાલ કાળીદાસ શાહ
- ૪) શ્રી શેઠ દામોદરદાસ જગલાલ
 ૨) " " સી. એસ. સંઘવી
 ૨) " " વી. એમ. લાકડાવાળો
 ૧) " " આર. જી. ગુજર
 ૩) " " સી. એલ. મહેતા
 ૧૦) " " સાયમા મેવાડા પંચ
 ૩) " " મગનલાલ વલમજી
 ૨) " " હીમતલાલ વરજીવનદાસ
 ૨૦) " " એ. પી. લઠ્ઠો એમ. એ.
 ૨૫) " " માનાજીરાવ અને ખેરાજી બોધા
 ૨) " " શા. તલકચંદ નરોત્તમદાસ
 ૩) " " સીમનલાલ નરસિંહદાસ
 ૫) " " હી. વામ. આઝટેકર
 ૨૫) " " સુવેમાનજી ડોસાભાઈ
 ૫૧) " " અનુપચંદ માણિકચંદ
 ૨૧) " " કુંદનજી કપુરચંદ ધિયાવાળો
 ૫૧) " " મદાદોવ લક્ષ્મણ
 ૧૧) " " જગનલાલ બેદેચરદાસ
 ૧૧) " " સુનીલાલ વેણીદાસ
 ૨) " " નેમચંદ ઉમરચંદ
 ૧) " " એલ. એ. શાહ
 ૧૧) " " વલકચંદ સખારામ
 ૧) " " ડી. કે. શાહ
 ૧૧) " " મોતીચંદ ગીરધરલાલ સોલીસીટર
 ૧૫) " " રીખવદાસ મન્નાલાલ
 ૨૫) " " શીવજીભાઈ દેવશીભાઈ
 ૧૫) " " સુનીલાલ કાળીદાસ
 ૧) " " હોટાલાલ બેદેચરદાસ
 ૧) " " એ. સી. શાહ
 ૨૦) " " હોટાલાલ ઘેલાભાઈ ગાંધી
 ૨૫) " " જગત્તનદાસ જગન ધનજી
 ૨) " " એસ. પી. બ્રહ્મસુરીઆ
 ૧) " " જે. એમ. ગુજર
 ૨) " " એસ. એ. ફલતાણી
 ૨) " " બી. એ. ગોમાર
 ૨) " " મુલચંદ બેદેચરદાસ
 ૩) " " ગુજલ પી. એમ.

दिगंबर जैन

THE DIGAMBAR JAIN.

माना नृत्ताभिनिविधैश्च तत्तैः सत्प्रोषदेनैस्तुगविपणाभि ।

सद्योव्यपश्रित प्रवर्तताम्, दिगम्बर नैन समान माप्रम् ॥

वर्ष १० वॉ.

वीर संवत् २४८४. पाल्पुण मित्रम स० १९७४

अंक ४.

कीर स्मरणार्थक ।



ने शुभ दश,
हो मम हर्ष,
दर्शन देकर मुझे राखि दो,
प्रेम सुभाकी विमल काखि दो ॥१॥

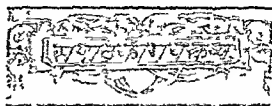
जाति उद्धार,
हृदय उद्धार
जाति उद्धारना मार्ग बताओ,
हृदय-समन्वयो शीघ्र मिलाओ ॥२॥

कृति सन्तान,
कृति विज्ञान,
कृति कृति सन्तान बनाओ,
कृति-गारता पाठ पढ़ाओ, ॥३॥

स्वर्ग-य तन,
नेने मंत्र,
हमें स्वर्ग-रही शीघ्र दिलाओ,
पढ़ी हमारा मन बनाओ ॥४॥

सुयोग दृष्टि,
सुयोग दृष्टि,
योग शास्त्रा पाठ बनाओ,
सुयोगका हृद गेह बनाओ ॥५॥

सतीशचन्द्र मल्ल-मुद्रा ।



करीब पान, उह वर्ष हुए जेनोंमें महानीर
नयतिना उत्सव

महावीर जय- नकी प्रथाका प्रादुर्भाव
तिका कर्तव्य । हुआ है और वह
उत्तरोत्तर बढ़ता जात

है, यह योग्य ही है । इस वर्ष भी यह शुभ
दिन आगामी चतुर्दशी १३ के दिन आ पड़ना
है । यह वही परम पवित्र दिन है जो आजसे
२५१६ वर्ष ऊपर कुड्डुर नगरमें अपने
चौबीसवें (अंतिम) तीर्थंकर श्री महावीर या
वर्द्धमान प्रभुने सिद्धार्थ राजाके गृहस्था मा
प्रिशलाके उत्तरों पत्नी लिया था और
स्थानपर जाग्रत हो गया था । हम
और अपने माना, पिता, प्रभाविका जना
मनाते ही है तो हमें हमारे महावीर प्रभु
जन्म दिनसे क्या भूत न ना चाहिये ? अभी भी
नहीं । नारायणोंके गुणोंका हमारे जन्मके
दिने उन्नती गयी मनाता था । वह ही है
और ऐसी यह नयति ने हमें [हम कहे